अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि
विवादस्तेषु केवलम्।

नमोऽस्तुरामाय ॐ नमोऽस्तुरामाय

ISSN 2249-751X

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं
चन्द्रार्कौ यत्रसाक्षिणौ॥

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

सन् 2024-25 ई.

* विक्रम संवत् 2081 * शक संवत् 1946 * जयहिंद संवत् 77-78

राजा मंगल

मन्त्री शनि

दैवज्ञ भूषण
पं. रामेश्वर दत्त रैणा
राज ज्योतिषी

चतुर्वार्षिक श्राद्ध पद्धति तथा कुम्भ महापर्व
(प्रयागराज) शाहीस्नान तिथियों सहित

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा
फलित एवं सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)
सहाचार्य (सेवानिवृत) ज्योतिष विभाग
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

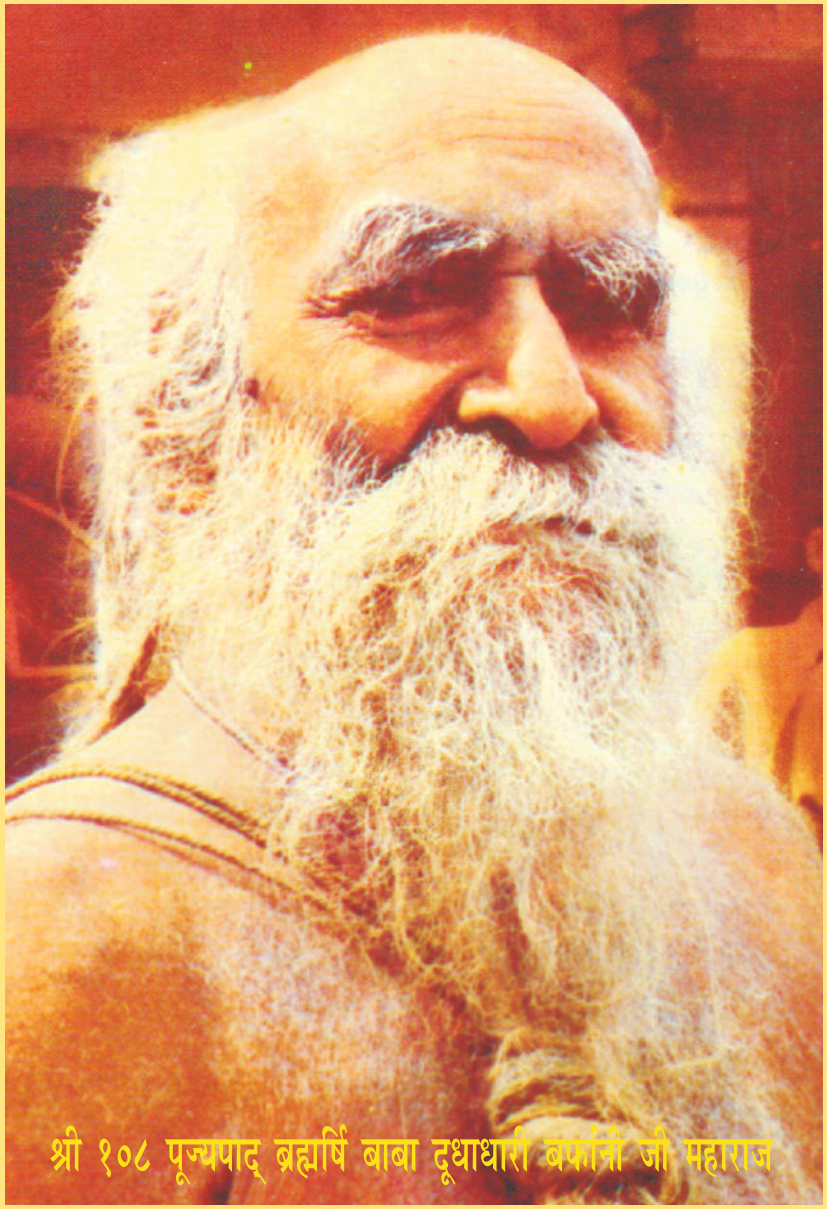

"ब्रह्मर्षि बाबादूधाधारी महात्मनां प्रशस्तिः।।"

श्री १०८ श्री ब्रह्मर्षिदूधाधारी प्रशस्तिः

दुग्धाधारी यतिवर प्रभुर्वैष्णवानन्दकारी
वेदोद्धारी प्रतिपदमहो विश्वतो यज्ञकारी।
सिद्धाचारी स शणवसनो बाल्यतो ब्रह्मचारी
ब्रह्मनन्दं जनयति हृदि स्मर्तुरुद्धारकारी।।१।।

नाम्नां धाम्नामुपधविरहेणाऽऽत्मसिद्धौ प्रसिद्धाः
पुण्यात्मानो द्विजसुरगवां सर्वदेवावधानाः।
यज्ञैरिष्ट्वा जनगणमनोहारि पर्जन्यहेते।
र्धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातं दधानाः।।२।।

दुग्धाधारिमहात्मनां द्विजकुले जातं शतं जन्मना-
मित्थं मे प्रतिभाति सन्मुखधिया यज्ञव्रताभ्यासतः।
नानातीर्थनिषेवणाद्गुरुकृपामासाद्यगोपालनाद्
देवानां सततार्चनात्षडक्षरजपादष्टाङ्गयोगार्जनात्।।३।।

वेदानां श्रवणाज्जगद्गुरुमुखान्मौनव्रतालम्बनात्
सच्छास्त्राचरणात्पुराण श्रवणात्पित्रर्चनान्नित्यशः।
गायत्र्याविधिवज्जपन्द्विजमुखान्नित्यं पुरश्चर्यया
श्रीतस्मार्तमखैः सदेह जगतः कल्याण सञ्चिन्तनात्।।४।।

ब्रह्मषिप्रवरा जगद्गुरुवरा दृष्ट्वैक दृष्टया जगत्
हस्त्राक्षं जितवन्त इत्थमपि ते जाताः सहस्त्राध्वराः।
नानातीर्थवनादिषु हिमजलाशय्यास्तपश्चर्यया
कृत्वाऽऽत्मानमतीव निर्मलमहो जगतां हिताय स्वयम्।।५।।

उड्डाङ्गासमवङ्ग मागधरवसाऽऽसाकेत काशी गया
जम्बू श्रीनगर सदूधमपुराम्बाराम आर्यश्रियम्।
राजौरी ह्यखनूर मानससरो जन्द्राह भड्डूगुढा
गङ्गायामुनसङ्गमं हरिहरद्वारोज्जयिन्याह्वयम्।।६।।

क्षेत्रं नैमिषिकं समेत्य वदरीक्षेत्रं कुरूणां वरम्
गामं गामहो सदर्षिप्रवराश्चान्त्ये स्मरन्तः प्रभुम्
न्यास्थञ्छ्री प्रभुदास वैष्णव कृते सत्कार्यभारं महत्
भारश्री वहताँ सतां प्रभुवरा जीवन्तु कल्पावधिम्।।७।।

इति विहारिलाल वाशिष्ठ प्रणीता
श्री १०८ श्रीब्रह्मर्षिदुग्धा धारिमहात्मनां
।। प्रशस्तिः समाप्ता ।।

ISSN 2249-751X

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि
विवादस्तेषु केवलम्।

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं
चन्द्रार्कौ यत्रसाक्षिणौ ॥

नमोऽस्तुरामाय ॐ नमोऽस्तरामाय

दृक्सिद्ध निरयन भारतीय

राजा मंगल

श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्

मन्त्री शनि

सन् 2024-25 ई.

* विक्रम संवत् 2081 * शक संवत् 1946 * जयहिंद संवत् 77-78

सलाहकार समिति :

श्रीमती कमलेश रैणा
शास्त्री, बी०एड०

डॉ० शिव प्रसाद रैणा
फलित ज्योततषाचार्य,
विद्यावारिधि (Ph.D)

पं० रविन्द्र रैणा
ज्योतिष विशारद्

डॉ० अव्यक्त रैणा
सिद्धान्त-फलित ज्योतिषाचार्य
विद्यावारिधि (Ph.D) वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ

डॉ० रामदास शर्मा
फलित ज्योततषाचार्य,
विद्यावारिधि (Ph.D)
सहायकाचार्य ज्योतिष

पं० विनय शास्त्री
ज्योतिष शास्त्री

श्री शुभाङ्ग रैणा

प्रधान सम्पादक :

डॉ० चन्द्रमौलि रैणा
फलित एवं सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (Ph.D.)
सहाचार्य (सेवानिवृत) ज्योतिष विभाग
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

सह-सम्पादक :

पं० पीयूष रैणा
ज्योतिर्विद,
अभियन्ता एवं तकनीकी विज्ञ
विविध सम्मान प्राप्त
श्री राघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, जम्मू

डॉ० के०एस० चाड़क
एम.एस., ज्योतिष विशारद्

सत्प्रेरका :

महामहिमोपाध्याय प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय
भू.पू. ज्योतिष विभागाध्यक्ष
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

स्व० प्रो० शुकदेव चतुर्वेदी
भू.पू. निर्देशिक ज्योतिष पाठ्यक्रम
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली-16

स्व० डॉ० विहारीलाल वसिष्ठ
भू.पू. अध्यक्ष ज्योतिष विभाग
केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रणवीर परिसर, जम्मू

पञ्चाङ्ग सज्जा विशेषज्ञ :
राजिन्द्र सौगुणियाँ

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान ट्रस्ट (पञ्जीकृत)
44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू, दूरभाष : 0191-3555681, मोबाईल : 09419194230, 6005569931
ई-मेल : drcmraina@gmail.com

प्रकाशन वर्ष : चतुर्विंशति

मूल्य : 155.00 रुपये

प्रकाशक : मल्होत्रा ब्रदर्ज, पक्का डंगा जम्मू दूरभाष : 94191-83231

All disputes within Jammu Jurisdiction of Courts.

© All rights reserved

॥ नमोऽस्तु रामाय ॥

श्रीदूधाधारी बर्फानी आश्रम

भूपतवाला, हरिद्वार-२४९४१०

परमाध्यक्ष— सन्तश्री प्रभुदासजी महाराज

दिनाङ्क - ०५/१०/२००३

शुभाशंसा

ज्योतिष शास्त्र में हमारे ऋषियों का अनुसन्धान चमत्कृत होता है। गणित, फलित सिद्धान्त आदि वर्गों में विभक्त इस शास्त्र की वैज्ञानिकता हमारे ही देश में नहीं, बल्कि दुनियाभर के लोग स्वीकार करते हैं। उसी प्रक्रिया में पञ्चाङ्गविधा को गणितीय आधार पर तैयार किया जाता है। लौकिक व्यवहारोपयोगी, दैनिक कृत्यों में सहयोगी यह पञ्चाङ्ग परिपाटी हमारे देश में बहुत ही लोकप्रिय है। इस परम्परा के पालन में विद्वान् ज्योतिषी डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन बड़े ही श्रम और लगन के साथ कर रहे हैं। वास्तव में इस विधा को आगे बढ़ाने से ऋषि ऋण का शोधन होता है। इनके पिता पं॰ श्री रामेश्वरदत्त जी रैणा एक ख्यातिप्राप्त राजपण्डित थे। अपने पितृचरण की कीर्तिशृङ्खला में श्री रैणा का यह कृत्य श्लाघनीय है। मैं श्रीराघवेन्द्र-पञ्चाङ्ग की सफलता हेतु अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए श्री चन्द्रमौलि रैणा के कल्याण हेतु आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। शुभमस्तु।

श्रीसीतारामचरणानुरागी

प्रभुदास

(सन्त प्रभुदास)

'श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्' के लोकार्पण समारोह में वायें से प्रो. चन्द्रमौलि रैणा, सम्पादक एवं गणितकर्त्ता 'श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्', पद्मश्री प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री जी, अध्यक्ष जम्मू कश्मीर विद्वत परिषद्, डॉ. शिवप्रसाद रैणा, ज्योतिर्विद, डॉ. वर्चस्काम शास्त्री, ज्योतिर्विद एवं सहायकाचार्य, प्रो. पुरुषोत्तम शास्त्री, भू.पू. अध्यक्ष संस्कृत विषाग, जम्मू विश्वविद्यालय, प्रो. रामबहादुर शुक्ल, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय।

जम्मू कश्मीर काशी विद्वत परिषद् द्वारा आयोजित संस्कृत सप्ताह में पूर्व मेयर श्रीमान चन्द्रमोहन गुप्ता जी को सम्मानित करते हुए– वायें से पद्मश्री प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री जी, सांसद श्री युगल किशोर जी, पूर्व मेयर श्री चन्द्रमोहन गुप्ता जी, प्रो. चन्द्रमौलि रैणा, जम्मू यात्री भवन के प्रधान श्री पवन शास्त्री जी।

जम्मू कश्मीर श्री काशी विद्वत् परिषद् द्वारा संस्कृत सप्ताह समारोह में ज्योतिर्विद डॉ. शिवप्रसाद रैणा जी को सम्मानित किया गया, वायें से पद्मश्री प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री जी, सांसद श्री युगल किशोर जी।

माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में ज्योतिष सम्मेलन में 'श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्' के गणितकर्त्ता एवं सम्पादक, प्रो. चन्द्रमौलि रैणा जी को सम्मानित करते हुए दायें से विश्वप्रसिद्ध ज्योतिर्विद, श्री अनिल वत्स जी, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रविन्द्र कुमार सिन्हा, देवभूमि हिमाचल के सुप्रसिद्ध हस्त रेखा विशेषज्ञ कै. लेखराज शर्मा, पञ्जाब के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद डॉ. विश्वा शास्त्री जी।

धर्मांतरण एक जटिल समस्या

आचार्य सतीश शास्त्री जी

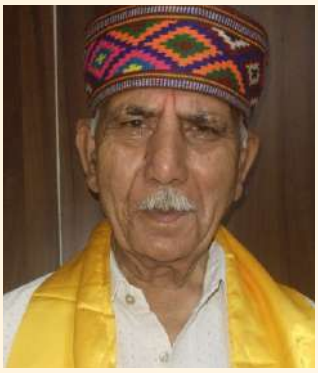

पं. रूपलाल शास्त्री जी

पं. राकेश शास्त्री जी

आप और हम सभी जानते हैं कि भारत में तीव्रता से धर्मांतरण हो रहा है। मुगल आक्रांताओं के आने के बाद तो लोगों ने इसे परम्परा बना लिया है। इससे पहले तो ऐसा बहुत कम था। यह भारत अखंड सनातन भारत था। सभी जानते हैं कि किसी भी देश, राष्ट्र की रीड़ की हड्डी उसका धर्म एवं संस्कृति होता है। जब धर्म डगमगाने लगेगा तो अन्य पंथ, धर्म पंथ के आधार पर देश खंडित करने का प्रयास करेंगे। ऐसा पहले भी हो चुका है और यह दुर्भाग्यपूर्ण है। यदि मौलवी, पादरी, हमारे भोले लोगों को धन का लालच देकर अपना धार्मिक भाषण देकर ऐसा कर सकते हैं। तो हमारे धर्माचार्य पण्डित, ब्राह्मण उन्हें ऐसा करने से क्यों नहीं रोक सकते। आज सभी धर्माचायों गुरुओं का कर्तव्य बनता है कि देश की सुरक्षा धर्म की सुरक्षा के लिए खड़े हों और अपने कर्तव्य का पालन करें। लोगों को ईसाई अथवा मुसलमान बनने से रोकें। मन्दिरों में अपने कार्यों में ऐसी स्वच्छता लोटे ताकि सनातन धर्म सबको प्रिय लगे। लोग परिवर्तित न हों। धर्म परिवर्तन करने वालों का सैलाव अब धर्मांतरन करने वालों के लिए आरक्षण की मांग कर रहा है। उन्होंने न्यायलय में मांग की है। उम्मीद है कि भारत के समस्त धर्माचार्य कभी भी ऐसा नहीं होने देंगे। सबको जागने की आवश्यकता है। अगर हम सतर्क नहीं हुए तो आने वाले समय में बहुत बड़ा खतरा हो सकता है। सनातन धर्म पथ परिषद् का पूर्ण प्रयास है कि सभी विद्वानों को संगठित करके ऐसे प्रयास किए जाएं।

सनातन धर्म पथ परिषद् केन्द्र पठानकोट

संस्थापक

राकेश शास्त्री

प्रधान आचार्य

सतीस शास्त्री

रूपलाल शास्त्री

पं. श्री मूलराज शास्त्री 'मल्हण' जी की जीवनी

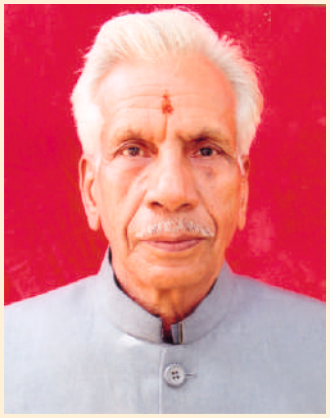

मूलराज शास्त्री 'मल्हण'

अखण्ड भारतवर्ष के शिरोमणि जम्मू-कश्मीर राज्य में अखनूर तहसील के खौड़ ब्लाक अन्तर्गत भारत पाक सीमा से सटे 'गरड़' (गरुड़) ग्राम है, जिसमें पूरे मल्हण ब्राह्मणों की बिरादरी बस्ती है। चिरकाल से पूर्वज गरड़ से जम्मू आकर कच्ची छावनी में किराये पर रहने लगे। महाराजा प्रताप सिंह के शासन काल में पिता श्री गंगाराम जी मल्हण 'खातिर त्वाजा महकमा' में कर्मचारी रहे। जन्म 28 मई 1940 ई. को हुआ। शैशव कच्ची छावनी में ही बीता। 1947 में विभाजन के बाद दीवान मन्दिर के अधिष्ठाता श्री देवी शरण जी के साथ घनिष्ठ मित्रता थी। उनके कहने पर पिता जी दीवान मन्दिर में आकर रहने लगे। लगभग 50 वर्ष यहीं बिताए। 1952 ई. में पिता जी ने श्री रघुनाथ संस्कृत विद्यालय में प्रवेश करवाया। यहीं अध्ययन करते हुए 1963 ई. में शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1963 ई. में ही नव निर्मित श्री हनुमान मन्दिर मोती बाजार में पुजारी का स्थान प्राप्त किया। यहाँ संस्कृत अनुरागियों को संस्कृत पढ़ाने का कार्यक्रम रखा गया। 1964 ई. में ओरियण्टल अकेडमी अफगान गली में अध्यापक के पद पर रहते 6 वर्ष तक अध्यापन किया। 1969 ई. में जम्मू कश्मीर शिक्षा विभाग में सेवा ग्रहण की। 1970 ई. में पं. श्री सन्तराम जी शास्त्री उपाध्याय मण्डाल की पुत्री उषा कुमारी के साथ विवाह बन्धन हुआ। 1978 ई. में साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1980-81 ई. में श्री रणवीर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान शास्त्री नगर जम्मू से शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) की परीक्षा प्रथम स्थान पा कर उत्तीर्ण की। 1982 ई. में सीनियर टीचर तथा 1985 ई. में मास्टर ग्रेड मिला। 1993 में लेक्चरर पद प्राप्त हुआ। 1996 ई. में दीवान मन्दिर से पलोड़ा में निवास स्थानान्तरण कर लिया।

अभिरुचि– संगीत, पेंण्टिग, शिल्प मूर्तिकला। सेवा निवृत्ति के बाद वैदिक कर्मकाण्ड के प्रशिक्षुओं को कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण देना। सरल संस्कृत प्रशिक्षण के लिए डॉ. हरिकृष्ण जी मल्होत्रा गली द्वारा प्रकाशित 'शिव शक्ति' पत्रिका में 20 से अधिक संस्कृत पाठ मुद्रित हुए।

1965-66 ई. तथा 2012 ई. में डोगरा ब्राह्मण सभा द्वारा प्रकाशित 'ब्रह्मवाणी' में एक लेख और एक कविता छपी। शिक्षा विभाग के डाइट द्वारा संचालित वर्कशाप में चतुर्थ कक्षा की हिन्दी पाठ्य पुस्तक में लड़कियों के लिए कविता छपी। 1967 ई. में अनौपचारिक रूप से प्रारम्भ में वैद्य विष्णु दत्त जी की दुकान के ऊपर 'विश्व हिन्दू परिषद' का कार्यालय स्थापित किया। तथा 1966 ई. के सम्मेलन की 'हिन्दू विश्व स्मारिका' पत्रिका को विभिन्न स्थानों व लोगों को वितरण किया। 1981-82 ई. में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा परेड ग्राऊँड में आयोजित विशाल हिन्दू सम्मेलन में 'संस्कृत सम्मेलन' हेतु आयोजक के रूप में कार्य सम्भाला। जिसमें विश्व हिन्दू परिषद् के उपाध्यक्ष पण्डित गुलाम दस्तगीर जी ने संस्कृत में सम्बोधित किया। भगवती वैष्णवी देवी की आराधना के लिए संस्कृत में 'वैष्णवी स्तोत्र' की रचना तथा बाबा श्री अमरनाथ स्तुति हिन्दी की रचना छाप कर वितरित की। भगवान् श्री परशुराम जी का संक्षिप्त जीवन परिचय डोगरा ब्राह्मण सभा द्वारा प्रकाशित कर वितरित किया गया। इसके अतिरिक्त भगवान् श्री परशुराम जी की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन गीतिका के रूप में छपवा कर वितरित की। वर्ष 2013, 14, 15 से श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्गम् में विभिन्न कर्मकाण्ड विषयों पर पूजा पद्धति प्रकाशित।

नोट :– गुप्त गंगा श्री देविका गौरव की संस्कृत श्लोक रचना छपी और श्रीराघवेन्द्रपञ्चाङ्गम् में भी छापी गई।

सम्मान– महामहिम राज्यपाल महोदय माननीय लोकसभा सदस्यों तथा गणमान्य जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में अभूतपूर्व योगदान हेतु सम्मानित। मान्यवर शास्त्री जी का 21-11-22 को शरीर शान्त हो गया।

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष परिवार श्रीमूलराज मल्हन, शास्त्री जी को भावभीनि श्रद्धञ्जलि अर्पित करते हुए उनके द्वारा बताए गये मार्ग पर सदैव अग्रसर रहेगा।

-सम्पादक

मुख्य समारोहों के कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण

SHREEPATI ASTRO VAASTU CONSULTANCY (REGD.)

International Astrology and Vaastu Conference
SMVD University - Katra (J&K)
20th, 21st January 2023.

Certified that Mr. / Ms.

Dr. Chander Mauli Raina

Lifetime Achievement Award

Participated successfully in the International Astrology and Vaastu Conference SMVD University - Katra (J&K)

We takes pleasure in awarding the Certificate and Memento of his/ her participation and extraordinary services to the cause of research and development of Astrology, Vaastu, Palmistry, Numerology, Spiritual Healing, Dharma, and other divine sciences on the occasion of the Astrology convention.

We deem, it a proud privilege to confer upon him / her honor and wishes to him / her all round success, prosperity, and long brilliant future.

Divya Pillai Harish
COO - International
Astrology Federation Inc-USA

Mr. Pradeep Kumar
CEO - International
Astrology Federation Inc-USA

Acharya Dr. Satpal Bhardwaj
Founder : Shreepati Astro Vastu
Consultancy (Regd.)

Prof. Dr. Vishwamurti Shastri
Padma Shree

Prof. Dr. Ravindra Kumar Sinha
Padma Shree
Vice Chancellor SMVD University

विषय सूची

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख व्रत पर्व त्योहार एवं अवकाश	12
2.	गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल	18
3.	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत	19
4.	एकादशी व्रत	19
5.	श्रीसत्यनारायण व्रत	19
6.	अमावस्याएँ	19
7.	पितृ पक्ष में श्राद्ध	20
8.	प्रदोष व्रत	20
9.	महापुरुषों के जन्मदिन	20
10.	जम्मू कश्मीर के मेले	21
11.	हिमाचल प्रदेश के मेले	21
12.	जैन व्रत पर्व व उत्सव	22
13.	दशमहाविद्या जयन्तियाँ	22
14.	पर्व श्री पिण्डोरी धाम (गुरुदासपुर)	22
15.	दशावतार जयन्तियाँ	23
16.	मुस्लिम त्यौहार	23
17.	क्रिश्चियन त्यौहार	23
18.	श्री कुलदेव बावा कैलख देव जी ठठ्र जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	23
19.	राहु काल वर्णन	23
20.	पञ्चक आरम्भ तथा समाप्ति काल	24
21.	पञ्चक विचार	24
22.	निरयण संक्रान्तियाँ	24
23.	गुरु-पर्व दश गुरु साहिबान	24
24.	श्रीकुलदेव रैणा विरादरी सूञ्जवाँ जम्मू के स्थायी कार्यक्रम	24
25.	सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टा मिनटों में	25
26.	नक्षत्र चरण प्रवेश वर्ष 2024-25	28
27.	राजा-मन्त्री आदि का विवरण	39
28.	'कालयुक्त' नामक संवत्सर का फल	39
29.	आर्द्राप्रवेश लग्न	41
30.	मेषादि जन्मलग्न शुभाशुभ फल	42
31.	शेयर बाजार वर्ष	45
32.	दैवज्ञ की दृष्टि से (वैश्विक परिदृष्य)	66
33.	कुंभ मेला तीर्थ राज प्रयाग 2025	73
34.	बारह राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश	79
35.	ग्रहण विवरण	100
36.	श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्ग ज्योतिष कार्यालय के नियम	102
37.	अथ शांतिः पाठः	103
	(1) आत्मपूजा	104

क्रमाङ्क विषय	पृष्ठ संख्या
(2) स्वस्तिवाचनम्	106
(3) श्री गौरीगणेशपूजा	108
(4) श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्	110
(5) ईशान कलश स्थापनम्	111
(6) नवग्रह पूजनम्	113
(7) ग्रहदक्षिण-पार्श्वेऽअधिदेवतास्थापनम्	114
(8) प्रत्यधिदेवतास्थापनं ग्रहाणां वामपार्श्वे	114
(9) ग्रहणामुत्तरे लोकपालानां स्थापनम्	114
(10) मण्डल बाह्ये इन्द्रादि दशदिक्पालानामावाह्नम्	115
(11) क्षमापनम्	116
(12) वैदिक अभिषक:	117
(13) विसर्जनम्	117
(14) श्रीसूर्यार्घ्यदानम्	118
38. चातुर्वार्षिक श्राद्ध पद्धति:	119
(1) श्राद्ध में कुछ पारिभाषिक शब्द	120
(2) चातुर्वार्षिक श्राद्ध विधि: (ब्राह्मण निमन्त्र)	121
(3) श्राद्ध विधान	123
(4) प्रतिज्ञा संकल्प	124
(5) पुरुष सूक्त से नारायण पूजा	124
(6) विष्णो-द्वादशनामस्तव:	127
(7) द्वितीय भाग पिण्डदान	132
(क) चातुर्वार्षिक श्राद्ध में पितरों के निमित्त	137
(1) शय्यापूजा एवं शय्यादान संकल्प	138
(2) श्राद्ध निमित्त गोदान	138
(3) गोपूजन	140
(4) भीष्म पितामह के लिये तर्पण	142
(5) सव्य होकर गोप्रार्थना	142
(6) गोदान संकल्प	143
(7) गोदान प्रतिष्ठा संकल्प	143
(8) गोप्रार्थना	143
(ख) कल्याणार्थ गोदान विधि:	144
39. दान में दी जाने वाली शय्या की दिशा	150
40. कर्म-वासना-जन्म	150
41. मलमास में करने योग्य कर्म	150
42. विवाह सम्बन्धी शास्त्रीय निर्णय	152
43. पुष्य योग का महत्व	153
44. सत्य-सनातन महिमा	153
45. धर्मलक्षण	154
46. पञ्चाङ्ग विवरण सन् 2024-25 ई.	155
47. तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (भा॰स्टै॰ टाईम) सन् 2024-25 ई.	179
48. चन्द्रोदयास्त सन् 2024-25 ई.	191
49. पञ्चांग विवरण का शेष भाग	203

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ संख्या
50.	नवग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र	206
51.	दीपावली पर्व मुहूर्त सन् 2024 ई.	207
52.	त्रयोदश दिवसीय पक्ष	208
53.	दैनिक ग्रह स्पष्ट	211
54.	होम में अग्निवास विचार	224
55.	शुभ विवाह मुहूर्त्त	225
56.	मुण्डन मुहूर्त्त	233
57.	शिलान्यास मुहूर्त्त	233
58.	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त	234
59.	जीर्ण (पुरातन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त	234
60.	नया-पुराना वाहन क्रय मुहूर्त्त	236
61.	विपिणि मुहूर्त्त	237
62.	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त	238
63.	सर्वदेवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त	238
64.	रामायण आदि कथा तथा चुनाव में खड़े होने के मुहूर्त्त	240
65.	श्रावण के सोमवार, रक्षाबन्धन निर्णय तथा श्रावणी उपाकर्म विधान	240
66.	वर-वधु अष्टकूट कुण्डली मिलान का ज्योतिष शास्त्रीय विवेचन	241
67.	गुण मिलान सारिणी	256
68.	जन्माक्षर चक्र	264
69.	नक्षत्रयोग कष्टावली	266
70.	विविधमुहूर्त्त	268
71.	अष्टकूट दोष परिहार	272
72.	विवाह संस्कार	276
73.	यात्रा मुहूर्त का विचार	281
74.	गृहारम्भमुहूर्त विचार	282
75.	जननाशौच एवं मरणाशौच की व्यवस्था	286
76.	विंशोत्तरी महादशा में सभी ग्रहों का प्रत्यन्तर	287
77.	विंशोत्तरी महादशान्तर्दशादिज्ञानाय चक्रम्	290
78.	विंशोत्तरीदशा योगिनीदशा ज्ञान चक्र	290
79.	वर्षफल निर्माण विधि	290
80.	वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)	292
81.	वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी	293
82.	गण्डमूलादि जन्म विचार	294
83.	विभिन्न अङ्गों पर पल्ली पतन विचार	295
84.	दैनिक लग्न सारिणी (जम्मू)	296-307
85.	ग्रहों के दान, दान समय, जन-संख्या, जपनीय-मन्त्र एवं हवनसमिधा ज्ञानार्थ-चक्र	308
86.	स्वप्न विचार	308
87.	कर्जे से मुक्ति पाने के लिए श्रीगणेशमन्त्र विधान	310
88.	ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम्	310
89.	प्रश्न करने का विधान (गर्गाचार्यमत से)	311
90.	नव ग्रहों की समिधाएँ	311

प्रमुख व्रत, पर्व, त्योहार एवं अवकाश (सन् 2024-25 ई॰)

जनवरी 2024

गण्डमूल 8:36 तक	1 जनवरी सोम
रुक्मिणी अष्टमी	4 जनवरी गुरु
जन्मश्री पार्श्वनाथजी (जैन)	6 जनवरी शनि
सफला एकादशी व्रत	7 जनवरी रवि
गण्डमूल 22:03 से, सरूप द्वादशी	8 जनवरी सोम
गण्डमूल, भौम प्रदोष व्रत, मासिक	9 जनवरी मंगल
शिवरात्रि व्रत	9 जनवरी मंगल
गण्डमूल 19:40 तक	10 जनवरी बुध
देवपितृकार्ये पौष अमावस, कुहूः	11 जनवरी गुरु
पंचक 23:35 से, लोहड़ी पर्व जम्मू,	13 जनवरी शनि
पंजाब, दिल्ली, हरियाणा	13 जनवरी शनि
माघ संक्रांति, निरयन उत्तरायण प्रारंभ	14 जनवरी रवि
रवियोग 10:22 बाद	14 जनवरी रवि
रवियोग 8:07 तक	15 जनवरी सोम
गण्डमूल 28:38 से, रवियोग	16 जनवरी मंगल
पंचक 27:34 तक, गण्डमूल,	17 जनवरी बुध
मार्तण्ड सप्तमी, श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयंती	17 जनवरी बुध
गण्डमूल 26:58 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	18 जनवरी गुरु
महारुद्रव्रत, स.सि.योग	18 जनवरी गुरु
रवियोग	19 जनवरी शुक्र
पुत्रदा एकादशी व्रत	21 जनवरी रवि
सुजन्म द्वादशी, स.सि. योग	22 जनवरी सोम
भौम प्रदोष व्रत, रवियोग	23 जनवरी मंगल
सुभाषचन्द्र बोस जयंती	23 जनवरी मंगल
श्रीसत्यनारायण व्रत, पौष पूर्णिमा,	25 जनवरी गुरु
माघ स्नान प्रारम्भ	25 जनवरी गुरु
भारतीय गणतंत्र दिवस, गण्डमूल 10:28 से 26 जन.	शुक्र
गण्डमूल 15:53 तक, सौभाग्यसुन्री व्रत	28 जनवरी रवि
श्रीगणेश संकट चतुर्थी व्रत (भुग्गा व्रत)	29 जनवरी सोम
वक्रतुण्ड चतुर्थी, चन्द्रोदय 21:20	

फरवरी

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	2 फरवरी शुक्र
श्रीगुरुहरराय जयन्ती	3 फरवरी शनि
गण्डमूल 7:54 से, पुण्यतिथि पं. रामेश्वर	5 फरवरी सोम
दत्त रैणा (राजज्योतिषी), अखनूर	5 फरवरी सोम
गण्डमूल 30:27 तक,	6 फरवरी मंगल
षट्तिला एकादशी व्रत	6 फरवरी मंगल
तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत	7 फरवरी बुध
मेरू त्रयोदशी (जैन),	8 फरवरी गुरु
मासिक शिवरात्रि व्रत	8 फरवरी गुरु
देवपितृकार्ये माघ (मौनी) अमावस	9 फरवरी शुक्र
8:03 बाद, महोदय योग 8:03 से	8 फरवरी गुरु
18:06 तक, स्नानदानादि महत्त्व,	8 फरवरी गुरु
स.सि.योग	8 फरवरी गुरु
पंचक शुरू 10:02, गुप्त नवरात्र शुरू	10 फरवरी शनि
श्रीवल्लभ जयन्ती	10 फरवरी शनि
बावा श्रीलालदयाल जयंती (ध्यानपुर)	11 फरवरी रवि
श्रीगौरी तृतीया व्रत	12 फरवरी सोम
श्रीगणेश तिल चतुर्थी व्रत	12 फरवरी सोम
फाल्गुन संक्रांति, रवियोग	13 फरवरी मंगल
स.सि. योग 12:35 तक	13 फरवरी मंगल
पंचक 10:43 तक, वसन्त पंचमी	14 फरवरी बुध
सरस्वती पूजनम्, वागेश्वरी जयंती	14 फरवरी बुध
स.सि. योग, रवियोग 9:26 तक	15 फरवरी गुरु
पुत्र सप्तमी व्रत, रथ-आरोग्यसप्तमी,	16 फरवरी शुक्र
श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, मर्यादा महोत्सव	16 फरवरी शुक्र
(जैन), श्री भीमाष्टमी	16 फरवरी शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी	17 फरवरी शनि
गुप्त नवरात्र समाप्त, श्रीदुर्गानवमी	18 फरवरी रवि
सायन सूर्य मीन में 9:43,	19 फरवरी सोम
वसन्तऋतु प्रारंभ, स.सि.योग 10:33 तक	19 फरवरी सोम
जया एकादशी व्रत, भीष्म द्वादशी	20 फरवरी मंगल
भीष्मतर्पणम्, तिल द्वादशी	20 फरवरी मंगल
प्रदोष व्रत	21 फरवरी बुध
गण्डमूल शुरू 16:43 से, गुरु पुष्ययोग,	22 फरवरी गुरु
स.सि. योग, श्रीगुरुहरराय जयंती	22 फरवरी गुरु
श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल, रवियोग	23 फरवरी शुक्र
माघ पूर्णिमा, माघस्नानपूर्ति	24 फरवरी शनि
गुरु रविदास जयंती, श्रीललिता जयंती,	24 फरवरी शनि
गण्डमूल 22:20 तक	24 फरवरी शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21:54,	28 फरवरी बुध
स.सि. योग 7:33 तक	28 फरवरी बुध

मार्च

रवियोग	2 मार्च शनि
गण्डमूल 15:55 से	3 मार्च रवि
जानकी व्रत, गण्डमूल	4 मार्च सोम
श्रीरामदास नवमी, गण्डमूल 16:00 तक	5 मार्च मंगल
विजया एकादशी व्रत (स्मार्त)	6 मार्च बुध
विजया एकादशी व्रत (वैष्णव)	7 मार्च गुरु
प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत,	8 मार्च शुक्र
स.सि. योग 10:41 तक,	8 मार्च शुक्र
पंचक प्रारंभ 21:20 से	8 मार्च शुक्र

देवपितृकार्येऽमावस फाल्गुन अमावस,	10 मार्च रवि
स्नानदानादि	10 मार्च रवि
पंचक 20:29 तक,	12 मार्च मंगल
श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती	12 मार्च मंगल
रवियोग	13 मार्च बुध
चैत्र संक्रांति, यज्ञवल्क्य जयंती	14 मार्च गुरु
रवियोग	15 मार्च शुक्र
होलाष्टक प्रारंभ, अन्नपूर्णाष्टमी	17 मार्च रवि
(17 मार्च से 25 मार्च तक होलाष्टक)	
रवियोग	18 मार्च सोम
रवियोग	19 मार्च मंगल
आमलकी एकादशी व्रत, रवियोग	20 मार्च बुध
गण्डमूल 22:38 से	20 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी, गण्डमूल,	21 मार्च गुरु
मेला श्री श्यामजी (खाटु)	21 मार्च गुरु
प्रदोष व्रत, गण्डमूल 28:27 तक	22 मार्च शुक्र
रवियोग	23 मार्च शनि
होलिका दहन (भद्रा बाद),	24 मार्च रवि
श्रीसत्यनारायण व्रत, रवियोग 7:34 तक	24 मार्च रवि
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत, होलाष्टक समाप्त,	25 मार्च सोम
होली पर्व, श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती	25 मार्च सोम
वसन्तोत्सव, होला मेला पौंटा साहब(हि.प्र.)	26 मार्च मंगल
सन्त तुकाराम जयंती	27 मार्च बुध
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21:41,	28 मार्च गुरु
श्रीनारायण जयंती	28 मार्च गुरु
श्रीरंगपंचमी, मेला गुरु रामराय (देहरादून),	30 मार्च शनि
मेला नवचण्डी(मेरठ),गण्डमूल 22:04 से	30 मार्च शनि
अप्रैल	
शीतला सप्तमी (पूजा अर्चना),	1 अप्रैल सोम
गण्डमूल 23:12 तक, रवियोग	1 अप्रैल सोम
पंचक 7:12 से, पापमोचिनी एकादशी व्रत	5 अप्रैल शुक्र
शनि प्रदोष व्रत, महावारूणी योग 10:19	6 अप्रैल शनि
से 15:39 तक, महावारूणी पर्व,	6 अप्रैल शनि
मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा),	7 अप्रैल रवि
मासिक शिवरात्रि व्रत	7 अप्रैल रवि
देवपितृकार्ये चैत्र सोमवती अमावस,	8 अप्रैल सोम
तीर्थ स्नान महात्म्य,	8 अप्रैल सोम
विक्रमी संवत् 2080 पूर्णम्, सूर्य ग्रहण	8 अप्रैल सोम
(भारत में दृश्य)	
अप्रैल	
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा	9 अप्रैल मंगल
श्री गौरी तृतीया	11 अप्रैल गुरु
सौभाग्य शयन व्रत	11 अप्रैल गुरु
शिवशक्ति पूजा	11 अप्रैल गुरु
श्रीलक्ष्मी पञ्चमी	12 अप्रैल शुक्र
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रैल शनि
सूर्य अश्विनी में रात्रि 9:03	13 अप्रैल शनि
श्रीदुर्गाष्टमी	16 अप्रैल मंगल
गण्डमूल 29:16 से	16 अप्रैल मंगल
श्रीदुर्गानवमी	17 अप्रैल बुध
श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त	17 अप्रैल बुध
कामदा एकादशी व्रत	19 अप्रैल शुक्र
गण्डमूल 10:57 तक	19 अप्रैल शुक्र
प्रदोष व्रत, महावीर जयंती (जैन)	21 अप्रैल रवि
भारतीय वैशाख आरंभ	21 अप्रैल रवि
श्रीसत्यनारायण व्रत	23 अप्रैल मंगल
पूर्णिमा व्रत, श्रीहनुमान जयंती	23 अप्रैल मंगल
वैशाख स्नानारम्भ:	23 अप्रैल मंगल
वैशाख कृष्ण प्रतिपदा	24 अप्रैल बुध
शुक्रास्त पूर्व में 19:03	24 अप्रैल बुध
गण्डमूल 27:03	26 अप्रैल शुक्र
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	27 अप्रैल शनि
चन्द्रोदय जम्मू 22:30	27 अप्रैल शनि
गण्डमूल 28:49 तक	28 अप्रैल रवि
अनुसूया जयन्ती	28 अप्रैल रवि
श्रीगुरु तेगबहादुर जयंती	29 अप्रैल सोम
श्रीगुरु अर्जुनदेव जयंती	30 अप्रैल मंगल
मई	
पञ्चक शुरू 14:30	2 मई गुरु
वरूथिनी एकादशी व्रत	4 मई शनि
प्रदोष व्रत	5 मई रवि
गण्डमूल 19:57 से	5 मई रवि
पञ्चक समाप्त 17:43	6 मई सोम
मासिक शिवरात्रि व्रत	6 मई सोम
वृहस्पति तारा अस्त	6 मई सोम
पश्चिम में 19:12	6 मई सोम
पितृकार्येऽमावस	7 मई मंगल
गण्डमूल 15:32 तक	7 मई मंगल
श्री टैगोर जयंती	7 मई मंगल
देवकार्येऽमावस	8 मई बुध
वैशाख शुक्ल प्रतिपदा	9 मई गुरु
शिवाजी जयंती	9 मई गुरु
श्रीगुरु अंगददेव जयंती	9 मई गुरु
श्री परशुराम जयन्ती	10 मई शुक्र
अक्षय तृतीय	10 मई शुक्र
श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती	12 मई रवि
श्रीरामानुज जयन्ती	13 मई सोम
ज्येष्ठ सङ्क्रान्ति	14 मई मंगल
सूर्य वृष में सायं 5:52	14 मई मंगल
गण्डमूल 13:05 से	14 मई मंगल
गंगोत्पत्ति:	14 मई मंगल
श्रीजानकी जयन्ती	16 मई गुरु
गण्डमूल 18:14 तक	16 मई गुरु
मोहिनी एकादशी व्रत	19 मई रवि
प्रदोष व्रत	20 मई सोम

भारतीय ज्येष्ठारम्भः	22 मई बुध
श्रीगुरु अमरदास जयन्ती	22 मई बुध
श्रीनृसिंह जयन्ती	22 मई बुध
श्री बुद्ध जयन्ती	23 मई गुरु
पूर्णिमा व्रत	23 मई गुरु
श्रीसत्यनारायण व्रत	23 मई गुरु
कूर्मोत्पत्तिः	23 मई गुरु
वैशाख स्नान पूर्तिः	23 मई गुरु
धर्म प्रीत्यर्थ जल कुम्भ दान	23 मई गुरु
ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा	24 मई शुक्र
श्रीनारद जयन्ती	25 मई शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	26 मई रवि
चन्द्रोदय जम्मू 22:15	26 मई रवि
गण्डमूल 10:26 तक	26 मई रवि
पञ्चक प्रारम्भ 20:05	29 मई बुध

जून

गण्डमूल 27:16 से	1 जून शनि
अपरा एकादशी व्रत	2 जून रवि
गुरु तारा उदय पूर्व में 23:59	2 जून रवि
पञ्चक समाप्त 25:40	2 जून रवि
गण्डमूल 24:05 तक	3 जून सोम
प्रदोष व्रत	4 जून मंगल
मासिक शिवरात्रि व्रत	4 जून मंगल
शनैश्चर जयन्ती	6 जून गुरु
देवपितृकार्येऽमावस	6 जून गुरु
वट सावित्री व्रत (मरूरूथले)	6 जून गुरु
ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा	7 जून शुक्र
श्रीराणाप्रताप जयन्ती	9 जून रवि
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून शुक्र
सूर्य मिथुन में रात्रि 12:25	14 जून शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी	14 जून शुक्र
धूमावती जयन्ती	14 जून शुक्र
श्री गंगा दशहरा	16 जून रवि
निर्जला एकादशी व्रत	18 जून मंगल
प्रदोष व्रत	19 जून बुध
वटसावित्री व्रतारम्भः	19 जून बुध
सायन सूर्य कर्क में	20 जून गुरु
सायन दक्षिणायन प्रारंभ 26:10	20 जून गुरु
वर्षा ऋतु प्रारम्भ	20 जून गुरु
श्रीसत्यनारायण व्रत	21 जून शुक्र
पूर्णिमा व्रत	22 जून शनि
सन्त कबीर जयन्ती	22 जून शनि
भा. आषाढ़ारम्भः	22 जून शनि
गण्डमूल 17:54 तक	22 जून शनि
श्रीगुरुहरगोविन्द जयन्ती	22 जून शनि
आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा (क्षय)	22 जून शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	25 जून मंगल
चन्द्रोदय जम्मू 22:29	25 जून मंगल

जुलाई

गण्डमूल 6:26 तक	1 जुलाई सोम
योगिनी एकादशी व्रत	2 जुलाई मंगल
प्रदोष व्रत	3 जुलाई बुध
मासिक शिवरात्रि व्रत	4 जुलाई गुरु
देवपितृकार्येऽमावस	5 जुलाई शुक्र
आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा	6 जुलाई शनि
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	6 जुलाई शनि
शुक्र तारा उदय पश्चिम में 5:34	7 जुलाई रवि
श्रीजगदीश रथ यात्रा	7 जुलाई रवि
स्कन्द षष्ठी	11 जुलाई गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी	14 जुलाई रवि
श्रीदुर्गा नवमी	15 जुलाई सोम
गुप्त नवरात्र समाप्त	15 जुलाई सोम
भढली नवमी	15 जुलाई सोम
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई मंगल
सूर्य कर्क में 11:17	16 जुलाई मंगल
निरयणदक्षिणायनारम्भः	16 जुलाई मंगल
हरिशयनी एकादशी व्रत	17 जुलाई बुध
गण्डमूल 27:13 से	17 जुलाई बुध
चतुर्मास व्रतारम्भः	17 जुलाई बुध
प्रदोष व्रत	19 जुलाई शुक्र
गण्डमूल 26:55 तक	19 जुलाई शुक्र
श्रीसत्यनारायण व्रत	20 जुलाई शनि
श्रीगुरु व्यास पूर्णिमा	21 जुलाई रवि
श्रावण कृष्ण प्रतिपदा	22 जुलाई सोम
श्रावण सोमवार नक्त व्रत शुरू	22 जुलाई सोम
पञ्चक प्रारम्भ 9:19	23 जुलाई मंगल
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	24 जुलाई बुध
चन्द्रोदय जम्मू 21:43	24 जुलाई बुध
गण्डमूल 14:30 से	26 जुलाई शुक्र
गण्डमूल 11:48 तक	28 जुलाई रवि
श्रीगुरुहरकिशन जयन्ती	29 जुलाई सोम
कामिका एकादशी व्रत	31 जुलाई बुध

अगस्त

प्रदोष व्रत	1 अगस्त गुरु
लोकमान्य तिलक जयन्ती	1 अगस्त गुरु
मासिक शिवरात्रि व्रत	2 अगस्त शुक्र
देवपितृकार्येऽमावस	4 अगस्त रवि
हरियाली अमावस गण्डमूल 13:26 से	4 अगस्त रवि
श्रावण शुक्ल प्रतिपदा	5 अगस्त सोम
गण्डमूल 17:44 तक	6 अगस्त मंगल
मधुस्रवा तृतीया	7 अगस्त बुध
दूर्वागणपति व्रत	8 अगस्त गुरु
नागपञ्चमी	9 अगस्त शुक्र
नागदंष्ट व्रत	9 अगस्त शुक्र
कल्की जयन्ती	10 अगस्त शनि
वर्णषष्ठी	10 अगस्त शनि
शीतला सप्तमी	11 अगस्त रवि
तुलसी जयन्ती	11 अगस्त रवि
श्रीदुर्गाष्टमी	12 अगस्त सोम

गण्डमूल 12:13 से	14 अगस्त बुध
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त गुरु
भाद्रपद संक्रान्ति	16 अगस्त शुक्र
सूर्य सिंह में रात्रि 7:43	16 अगस्त शुक्र
पवित्रा एकादशी व्रत	16 अगस्त शुक्र
प्रदोष व्रत	17 अगस्त शनि
रक्षाबन्धन (रक्खड़ी)	19 अगस्त सोम
पञ्चक प्रारम्भ 19:00	19 अगस्त सोम
पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण	19 अगस्त सोम
भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा	20 अगस्त मंगल
संकट चतुर्थी व्रत	22 अगस्त गुरु
गण्डमूल 22:06 से	22 अगस्त गुरु
चन्द्रोदय जम्मू 20:52	22 अगस्त गुरु
पञ्चक समाप्त 19:54	23 अगस्त शुक्र
गण्डमूल 18:06 तक	24 अगस्त शनि
हलषष्ठी	24 अगस्त शनि
शीतला व्रत	25 अगस्त रवि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (सबका)	26 अगस्त सोम
दूर्वाष्टमी	26 अगस्त सोम
गुग्गा नवमी	27 अगस्त मंगल
मेल रैणा बिरादरी सूञ्जवाँ (जम्मू)	27 अगस्त मंगल
अजा एकादशी	29 अगस्त गुरु
वत्स पूजा	30 अगस्त शुक्र
प्रदोष व्रत	31 अगस्त शनि
गण्डमूल 19:40 से	31 अगस्त शनि

सितम्बर

मासिक शिवरात्रिव्रत	1 सितम्बर रवि
पितृकार्येऽमावस	2 सितम्बर सोम
कुशाग्रहणी पिठोरी सोमवती अमावस	2 सितम्बर सोम
गण्डमूल 24:20 तक	2 सितम्बर सोम
देवकार्येऽमावस, श्रीशक्ति पूजा	3 सितम्बर मंगल
भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा	4 सितम्बर बुध
वराह जयन्ती	5 सितम्बर गुरु
हरितालिका जीत व्रत	6 सितम्बर शुक्र
सिद्धिविनायक व्रत	7 सितम्बर शनि
ऋषि पञ्चमी (नागपञ्चमी डुग्गर प्रदेश)	8 सितम्बर रवि
सूर्य षष्ठी व्रत, स्कन्द दर्शन	9 सितम्बर सोम
ललिता षष्ठी	9 सितम्बर सोम
गण्डमूल 20:04 से	10 सितम्बर मंगल
दधीचि जयन्ती	11 सितम्बर बुध
श्रीराधाष्टमी, श्रीगौरी पूजन	11 सितम्बर बुध
गण्डमूल 21:53 तक	12 सितम्बर गुरु
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	12 सितम्बर गुरु
श्री गौरी विसर्जनम्	12 सितम्बर गुरु
पद्मा एकादशी व्रत	14 सितम्बर शनि
श्रीवामन द्वादशी	15 सितम्बर रवि
प्रदोष व्रत	15 सितम्बर रवि
आश्विन संक्रान्ति	16 सितम्बर सोम
सूर्य कन्या में 7:41	16 सितम्बर सोम
पञ्चक प्रारम्भ 5:44 से	16 सितम्बर सोम
श्रीसत्यनारायण व्रत	17 सितम्बर मंगल
अनन्त चतुर्दशी व्रत	17 सितम्बर मंगल
श्राद्ध प्रारम्भ	17 सितम्बर मंगल
श्राद्ध पूर्णिमा दिवा 11:45 बाद	17 सितम्बर मंगल
महालयश्राद्धारम्भः	17 सितम्बर मंगल
पूर्णिमा व्रत	18 सितम्बर बुध
महेश्वर पूजन	18 सितम्बर बुध
प्रतिपदा श्राद्ध 8:04 बाद	18 सितम्बर बुध
आश्विन कृष्ण प्रतिपदा (क्षय)	19 सितम्बर गुरु
द्वितीया का श्राद्ध	19 सितम्बर गुरु
गण्डमूल 8:04 से	19 सितम्बर गुरु
तृतीया का श्राद्ध	20 सितम्बर शुक्र
गण्डमूल 26:43 तक	20 सितम्बर शुक्र
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	21 सितम्बर शनि
जम्मू चन्द्रोदय 20:45	21 सितम्बर शनि
चतुर्थी का श्राद्ध	21 सितम्बर शनि
पञ्चमी का श्राद्ध	22 सितम्बर रवि
भारतीय आश्विन प्रारम्भ	23 सितम्बर सोम
षष्ठी का श्राद्ध दिवा 1:51 से पूर्व	23 सितम्बर सोम
सप्तमी का श्राद्ध 12:39 बाद	24 सितम्बर मंगल
अष्टमी का श्राद्ध 12:39 बाद	24 सितम्बर मंगल
नवमी का श्राद्ध 12:11 बाद	25 सितम्बर बुध
सौभाग्यवतीनांश्राद्धम्	25 सितम्बर बुध
दशमी का श्राद्ध 12:21 तक	27 सितम्बर शुक्र
गण्डमूल 25:20 से	27 सितम्बर शुक्र
इन्द्रा एकादशी व्रत	28 सितम्बर शनि
एकादशी का श्राद्ध	28 सितम्बर शनि
द्वादशी का श्राद्ध	29 सितम्बर रवि
सन्यासिनांश्राद्धम्	29 सितम्बर रवि
गण्डमूल 30:19 तक	29 सितम्बर रवि
प्रदोष व्रत	30 सितम्बर सोम
त्रयोदशी का श्राद्ध	30 सितम्बर सोम
मासिक शिवरात्रि व्रत	30 सितम्बर सोम

अक्तूबर

चतुर्दशी का श्राद्ध	1 अक्तूबर मंगल
शस्त्रहतानांश्राद्धम्	1 अक्तूबर मंगल
सर्वपितृश्राद्ध	2 अक्तूबर बुध
श्राद्ध समाप्त	2 अक्तूबर बुध
देवपितृकार्येऽमावस	2 अक्तूबर बुध
श्रीगान्धी, लालबहादुर जयंती	2 अक्तूबर बुध
अश्विन शुक्ल प्रतिपदा	3 अक्तूबर गुरु
शारद् नवरात्र प्रारम्भ	3 अक्तूबर गुरु
घटस्थापनम्	3 अक्तूबर गुरु
अग्रसेन जयन्ती	3 अक्तूबर गुरु
मातामहश्राद्ध	3 अक्तूबर गुरु
उपाङ्गललिता व्रत	7 अक्तूबर सोम
गण्डमूल 26:25 से	7 अक्तूबर सोम
गण्डमूल 29:15 तक	9 अक्तूबर बुध
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	11 अक्तूबर शुक्र

श्रीदुर्गानवमी	12 अक्तूबर शनि
नवरात्र समाप्त	12 अक्तूबर शनि
विजयादशमी	12 अक्तूबर शनि
पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मार्त)	13 अक्तूबर रवि
पंचक प्रारम्भ 15:43	13 अक्तूबर रवि
पापांकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव)	14 अक्तूबर सोम
प्रदोष व्रत	15 अक्तूबर मंगल
शरत् पूर्णिमा	16 अक्तूबर बुध
श्रीसत्यनारायण व्रत	16 अक्तूबर बुध
कार्तिक सङ्क्रान्ति	17 अक्तूबर गुरु
सूर्य तुला में प्रातः 7:41	17 अक्तूबर गुरु
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	17 अक्तूबर गुरु
कार्तिक स्नान प्रारम्भ	17 अक्तूबर गुरु
पूर्णिमा व्रत	17 अक्तूबर गुरु
कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा	18 अक्तूबर शुक्र
गण्डमूल 13:26 तक	18 अक्तूबर शुक्र
श्रीगुरु रामदास जयन्ती	19 अक्तूबर शनि
कर्क चतुर्थी (करवाचौथ व्रत)	20 अक्तूबर रवि
चन्द्रोदय जम्मू 20:15	20 अक्तूबर रवि
स्कन्द षष्ठी	22 अक्तूबर मंगल
सायन सूर्य वृश्चिक में 27:45	22 अक्तूबर मंगल
हेमन्त ऋतु प्रारम्भ	22 अक्तूबर मंगल
भारतीय कार्तिकारम्भः	23 अक्तूबर बुध
अहोई अष्टमी	24 अक्तूबर गुरु
गण्डमूल 7:40 से	25 अक्तूबर शुक्र
गण्डमूल 12:24 तक	27 अक्तूबर रवि
रमा एकादशी व्रत	28 अक्तूबर सोम
गोवत्स द्वादशी	28 अक्तूबर सोम
प्रदोष व्रत, धनतेरस	29 अक्तूबर मंगल
धन्वन्तरी जयंती	29 अक्तूबर मंगल
यमाय दीपदान	29 अक्तूबर मंगल
मासिक शिवरात्रि व्रत	30 अक्तूबर बुध
रूप (नरक) चतुर्दशी	31 अक्तूबर गुरु
प्रभातस्नानम्	31 अक्तूबर गुरु

नवम्बर

दीपावली	1 नवम्बर शुक्र
देवपितृकार्येऽमावस	1 नवम्बर शुक्र
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा	2 नवम्बर शनि
गोवर्धन पूजा	2 नवम्बर शनि
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	2 नवम्बर शनि
भाईदूज (टिक्का)	3 नवम्बर रवि
विश्वकर्मा पूजा	3 नवम्बर रवि
यमुनास्नानम्	3 नवम्बर रवि
गण्डमूल 8:04 से	4 नवम्बर सोम
दूर्वागणपति व्रत	5 नवम्बर मंगल
सौभाग्य पञ्चमी	6 नवम्बर बुध
गण्डमूल 11:00 तक	6 नवम्बर बुध
गोपाष्टमी	9 नवम्बर शनि
पञ्चक प्रारम्भ 23:27	9 नवम्बर शनि
अक्षय नवमी	10 नवम्बर रवि
हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत	12 नवम्बर मंगल
तुलसी बिवाह	12 नवम्बर मंगल
गण्डमूल 29:41 तक	12 नवम्बर मंगल
चतुर्मास व्रत समाप्ति	12 नवम्बर मंगल
भीष्म पञ्चक प्रारम्भ	12 नवम्बर मंगल
प्रदोष व्रत, गण्डमूल	13 नवम्बर बुध
पञ्चक समाप्ति 27:11	13 नवम्बर बुध
वैकुण्ठ चतुर्दशी	14 नवम्बर गुरु
श्रीनेहरू जयन्ती (बालदिवस)	14 नवम्बर गुरु
गण्डमूल 24:33 तक	14 नवम्बर गुरु
श्रीसत्यनारायण व्रत	15 नवम्बर शुक्र
पूर्णिमा व्रत	15 नवम्बर शुक्र
मेला झिड़ी (कान्नाचक्क)	15 नवम्बर शुक्र
श्रीगुरूनानकदेव जयंती	15 नवम्बर शुक्र
भीष्म पञ्चक समाप्त	15 नवम्बर शुक्र
कार्तिक स्नानपूर्ति	15 नवम्बर शुक्र
पुष्कर यात्रा	15 नवम्बर शुक्र
मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा	16 नवम्बर शनि
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	16 नवम्बर शनि
सूर्य वृश्चिक में 7:30	16 नवम्बर शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	18 नवम्बर सोम
चन्द्रोदय जम्मू 21:50	18 नवम्बर सोम
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	18 नवम्बर सोम
गण्डमूल 15:35 से	21 नवम्बर गुरु
भारतीय मार्गशीर्ष प्रारंभ	22 नवम्बर शुक्र
श्रीभैरवाष्टमी	23 नवम्बर शनि
गण्डमूल 19:27 तक	23 नवम्बर शनि
उत्पन्ना एकादशी व्रत	26 नवम्बर मंगल
प्रदोष व्रत	28 नवम्बर गुरु
मासिक शिवरात्रि व्रत	29 नवम्बर शुक्र
पितृकार्येऽमावस	30 नवम्बर शनि

दिसम्बर

देवकार्येऽमावस	1 दिसम्बर रवि
गण्डमूल 14:24 से	1 दिसम्बर रवि
मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा	2 दिसम्बर सोम
गण्डमूल	2 दिसम्बर सोम
गण्डमूल 16:42 तक	3 दिसम्बर मंगल
पञ्चक प्रारम्भ 29:06	6 दिसम्बर शुक्र
नागपञ्चमी	6 दिसम्बर शुक्र
स्कन्दषष्ठी	6 दिसम्बर शुक्र
गण्डमूल 13:30 से	10 दिसम्बर मंगल
श्रीगीता जयन्ती	11 दिसम्बर बुध
मोक्षदा एकादशी व्रत	11 दिसम्बर बुध
पञ्चक समाप्त 11:47	11 दिसम्बर बुध
गण्डमूल	11 दिसम्बर बुध
गण्डमूल 9:52 तक	12 दिसम्बर गुरु
प्रदोष व्रत	13 दिसम्बर शुक्र
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	13 दिसम्बर शुक्र
श्रीदत्त जयन्ती	14 दिसम्बर शनि

पिशाचमोचन श्राद्ध	14 दिसम्बर शनि
श्रीसत्यनारायण व्रत	14 दिसम्बर शनि
पौषसङ्क्रान्ति	15 दिसम्बर रवि
सूर्य धनु में रात्रि 10:09	15 दिसम्बर रवि
पूर्णिमा व्रत	15 दिसम्बर रवि
पौष कृष्ण प्रतिपदा	16 दिसम्बर सोम
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	18 दिसम्बर बुध
चन्द्रोदय जम्मू 20:34	18 दिसम्बर बुध
गण्डमूल 24:58 से	18 दिसम्बर बुध
गण्डमूल 27:58 से	18 दिसम्बर बुध
गण्डमूल 27:47 तक	20 दिसम्बर शुक्र
सायन सूर्य मकर में	21 दिसम्बर शनि
शिशर् ऋतु प्रारम्भ	21 दिसम्बर शनि
सायन उत्तरायण प्रारंभ 14:40	21 दिसम्बर शनि
भारतीय पौष प्रारम्भ	22 दिसम्बर रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसम्बर बुध
सफला एकादशी व्रत	26 दिसम्बर गुरु
सुरूप द्वादशी	27 दिसम्बर शुक्र
प्रदोष व्रत	28 दिसम्बर शनि
गण्डमूल 22:13 से	28 दिसम्बर शनि
मासिक शिवरात्रिव्रत, गण्डमूल	29 दिसम्बर रवि
सोमवती देवपितृकार्येऽमावस, कूहू:	30 दिसम्बर सोम
गण्डमूल 23:57 तक	30 दिसम्बर सोम
पौष शुक्ल प्रतिपदा	31 दिसम्बर मंगल

जनवरी 2025

पञ्चक प्रारम्भ 10:47	3 जनवरी शुक्र
गण्डमूल 19:06 से	6 जनवरी सोम
पञ्चक समाप्त 17:50	7 जनवरी मंगल
गण्डमूल	7 जनवरी मंगल
गण्डमूल 16:30 तक	8 जनवरी बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	10 जनवरी शुक्र
प्रदोष व्रत	11 जनवरी शनि
श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत	13 जनवरी सोम
माघ स्नानारम्भ	13 जनवरी सोम
मकर संक्रान्ति	14 जनवरी मंगल
सूर्य मकर में 8:54	14 जनवरी मंगल
निरयण उत्तरायण शुरू	14 जनवरी मंगल
गण्डमूल 10:28 से	15 जनवरी बुध
सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गण्डमूल	16 जनवरी गुरु
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी (भुग्गा व्रत)	17 जनवरी शुक्र
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती	21 जनवरी मंगल
भारतीय माघारम्भ:	21 जनवरी मंगल
सुभाषचन्द्रबोस जयंती	23 जनवरी गुरु
पुण्यतिथि पं. रामेश्वर दत्त रैणा (राजज्योतिषी अखनूर)	24 जनवरी शुक्र
गण्डमूल 31:08 से	24 जनवरी शुक्र
षट्तिला एकादशी व्रत	25 जनवरी शनि
गण्डमूल	25 जनवरी शनि
तिल द्वादशी, गणराज्य दिवस	26 जनवरी रवि
गण्डमूल	26 जनवरी रवि
प्रदोष व्रत	27 जनवरी सोम
मासिक शिवरात्रि व्रत	27 जनवरी सोम
गण्डमूल 9:02 तक	27 जनवरी सोम
देवपितृकार्येऽमावस	29 जनवरी बुध
मौनी अमावस	29 जनवरी बुध
माघ शुक्ल प्रतिपदा	30 जनवरी गुरु
पञ्चक प्रारम्भ 18:35	30 जनवरी गुरु
श्रीबल्लभ जयन्ती	30 जनवरी गुरु
गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ	30 जनवरी गुरु
श्रीगौरी तृतीया व्रत	1 फरवरी शनि
तिल चतुर्थी	1 फरवरी शनि
वसन्त पञ्चमी	1 फरवरी शनि
गण्डमूल 24:52 से	2 फरवरी रवि
पञ्चक समाप्त 23:17	3 फरवरी सोम
गण्डमूल	3 फरवरी सोम
पुत्र सप्तमी, अचला सप्तमी	4 फरवरी मंगल
गण्डमूल 21:50 तक	4 फरवरी मंगल
श्रीभीमाष्टमी, दुर्गाष्टमी	5 फरवरी बुध
श्रीदुर्गानवमी	6 फरवरी गुरु
गुप्त नवरात्रे समाप्त	6 फरवरी गुरु
जया एकादशी व्रत	8 फरवरी शनि
श्रीभीष्म द्वादशी	9 फरवरी रवि
श्रीभीष्मतर्पणम्	9 फरवरी रवि
प्रदोष व्रत	10 फरवरी सोम
श्रीगुरुहरराय जयन्ती	10 फरवरी सोम
गण्डमूल 18:34 से	11 फरवरी मंगल
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फरवरी बुध
सूर्य कुम्भ में रात्रि 9:54	12 फरवरी बुध
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	12 फरवरी बुध
गण्डमूल, श्रीसत्यनारायण व्रत	12 फरवरी बुध
पूर्णिमा व्रत	12 फरवरी बुध
फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा	13 फरवरी गुरु
गण्डमूल 21:07 तक	13 फरवरी गुरु
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	16 फरवरी रवि
चन्द्रोदय जम्मू 21:49	16 फरवरी रवि
सायनसूर्य मीन में 15:15	18 फरवरी मंगल
वसन्त ऋतु प्रारम्भ	18 फरवरी मंगल
भारतीय फालगुनारम्भ:	20 फरवरी गुरु
गण्डमूल 15:54 से	21 फरवरी शुक्र
श्रीरामदाय जयन्ती	22 फरवरी शनि
गण्डमूल	22 फरवरी शनि
गण्डमूल 18:43 तक	23 फरवरी रवि
विजया एकादशी व्रत	24 फरवरी सोम
प्रदोष व्रत	25 फरवरी मंगल
महाशिवरात्रि व्रत	26 फरवरी बुध
पंचक प्रारम्भ 28:36	26 फरवरी बुध
देवपितृकार्येऽमावस	27 फरवरी गुरु
फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा	28 फरवरी शुक्र

मार्च

श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती	1 मार्च शनि
गण्डमूल 8:59 से	2 मार्च रवि
पञ्चक समाप्तिः 6:36	3 मार्च सोम
गण्डमूल 28:30 तक	3 मार्च सोम
यज्ञवल्क्य जयन्ती	4 मार्च मंगल
होलाष्टक प्रारम्भ	7 मार्च शुक्र
आमलकी एकादशी व्रत	10 मार्च सोम
गण्डमूल 24:51 से	10 मार्च सोम
प्रदोष व्रत, गण्डमूल	11 मार्च मंगल
गण्डमूल 28:05 तक	12 मार्च बुध
श्रीसत्यनारायण व्रत	13 मार्च गुरु
मेला श्रीश्याम जी (खाटु)	13 मार्च गुरु
होलिका दहन भद्रा बाद	13 मार्च गुरु
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र
सूर्य मीन में सायं 6:49	14 मार्च शुक्र
पूर्णिमा व्रत	14 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण प्रतिपदा	15 मार्च शनि
श्रीगणेश चतुर्थी व्रत	17 मार्च सोम
चन्द्रोदय जम्मू 21:30	17 मार्च सोम
शुक्र तारा अस्त पश्चिम में 18:37	20 मार्च गुरु
गण्डमूल 23:32	20 मार्च गुरु
शीतला पूजन, गण्डमूल	21 मार्च शुक्र
भारतीय चैत्रारम्भः	22 मार्च शनि
शुक्र तारा उदित पूर्व में	23 मार्च रवि
पापामोचिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)	25 मार्च मंगल
पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)	26 मार्च बुध
पञ्चक प्रारम्भ 15:14	26 मार्च बुध
प्रदोष व्रत	27 मार्च गुरु
मासिक शिवरात्रि व्रत	27 मार्च गुरु
देवपितृकार्येऽमावस	29 मार्च शनि
गण्डमूल 19:26 से	29 मार्च शनि
श्रीविक्रम संवत् 2081 सम्पूर्णम्	29 मार्च शनि

गण्डमूल

सन् 2024 ई.

आरम्भ काल (भा.स्टै. समय)	समाप्ति काल (भा.स्टै. समय)
2024 घ.मि.	**2024 घ.मि.**
16 अप्रैल 29:16	19 अप्रैल 10:57
26 अप्रैल 27:40	28 अप्रैल 28:49
5 मई 19:57	7 मई 15:32
14 मई 13:05	16 मई 18:14
24 मई 10:10	26 मई 10:36
1 जून 27:16	3 जून 24:05
10 जून 21:40	12 जून 26:12
20 जून 18:10	22 जून 17:54
29 जून 8:49	1 जुलाई 6:26
8 जुलाई 6:03	10 जुलाई 10:15
17 जुलाई 27:13	19 जुलाई 26:55
26 जुलाई 14:30	28 जुलाई 11:48
4 अगस्त 13:26	6 अगस्त 17:44
14 अगस्त 12:13	16 अगस्त 12:44
22 अगस्त 22:06	24 अगस्त 18:06
31 अगस्त 19:40	2 सितम्बर 24:20
10 सितम्बर 20:04	12 सितम्बर 21:53
19 सितम्बर 8:04	20 सितम्बर 26:43
27 सितम्बर 25:20	29 सितम्बर 30:19
7 अक्तूबर 26:25	9 अक्तूबर 29:15
16 अक्तूबर 19:18	18 अक्तूबर 13:26
25 अक्तूबर 7:40	27 अक्तूबर 12:24
4 नवम्बर 8:04	6 नवम्बर 11:00
12 नवम्बर 29:41	14 नवम्बर 24:33
21 नवम्बर 15:35	23 नवम्बर 19:27
1 दिसम्बर 14:24	3 दिसम्बर 16:42
10 दिसम्बर 13:30	12 दिसम्बर 9:52
18 दिसम्बर 24:58	20 दिसम्बर 27:47
28 दिसम्बर 22:13	30 दिसम्बर 23:57

सन् 2025 ई.

6 जनवरी 19:06	8 जनवरी 16:30
15 जनवरी 10:28	17 जनवरी 12:45
24 जनवरी 31:08	27 जनवरी 9:02
2 फरवरी 24:52	4 फरवरी 21:50
11 फरवरी 18:34	13 फरवरी 21:07
21 फरवरी 15:54	23 फरवरी 18:43
2 मार्च 8:59	3 मार्च 28:30
10 मार्च 24:51	12 मार्च 28:05
20 मार्च 23:32	22 मार्च 27:33
29 मार्च 19:26	31 मार्च 13:45

गण्डमूल विचार

अश्विनी चार चरण फलोदश

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	पिता को अशुभ	पिता को कष्ट
2.	धन/ऐश्वर्य वृद्धि	धनधान्य लाभ
3.	मन्त्री तुल्य	राजकाज में प्रतिष्ठा
4.	राज्य सम्मान	मान सम्मन

आश्लेषाचारचरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	शान्ति से शुभ	सुख समृद्धि
2.	धन/ऐश्वर्य नाश	सास को कष्ट
3.	माता को कष्ट	सास को कष्ट
4.	पिता को कष्ट	सास को कष्ट

मघाचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	माता को कष्ट	माता को कष्ट

2.	पिता को कष्ट	पिता को कष्ट
3.	सुख वृद्धि	धन समृद्धि
4.	धनधान्य प्राप्ति	धनधान्य प्राप्ति

ज्येष्ठाचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	बेड़े भाई को कष्ट	जेठ को कष्ट
2.	छोटा भाई को कष्ट	छोटी बहिन/देवर को कष्ट
3.	माता को कष्ट	माता/सास को कष्टप्रद
4.	स्वयं को कष्टप्रद	देवर को श्रेष्ठ, स्वयं कष्ट

मूलचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	पिता को कष्ट	श्वसुर को नेष्ट
2.	माता को कष्ट	सास को कष्ट
3.	धन हानि	परिवार में दोष
4.	शान्ति से सुख	शान्ति से सुख

रेवतीचार चरण फल

	पुल्लिङ्ग चरण	स्त्रीलिङ्ग चरण
1.	राजकार्य प्रतिष्ठा	राजकार्य प्रतिष्ठा
2.	मन्त्रीतुल्य	मन्त्रीतुल्य
3.	धन वृद्धि	धन/ऐश्वर्य वृद्धि
4.	स्वयं को कष्ट	स्वयं को कष्ट

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

सन् 2024 ई.

वैशाख	27 अप्रैल	चन्द्रोदय 22:30
ज्येष्ठ	26 मई	चन्द्रोदय 22:15
आषाढ़	25 जून	चन्द्रोदय 22:29
श्रावण	24 जुलाई	चन्द्रोदय 21:43
भाद्रपद	22 अगस्त	चन्द्रोदय 20:52
आश्विन	21 सितम्बर	चन्द्रोदय 20:45
कार्तिक (करवाचौथ)	20 अक्तूबर	चन्द्रोदय 20:15
मार्गशीर्ष	18 नवम्बर	चन्द्रोदय 21:50
पौष	18 दिसम्बर	चन्द्रोदय 20:34

सन् 2025 ई.

माघ (भुग्गा व्रत)	17 जनवरी	चन्द्रोदय 21:16
फाल्गुन	16 फरवरी	चन्द्रोदय 21:49
चैत्र	17 मार्च	चन्द्रोदय 21:30

एकादशी व्रत

सन् 2024 ई.

चैत्र शुक्ल पक्ष	19 अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष	4 मई
वैशाख शुक्ल पक्ष	19 मई
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	2 जून
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	18 जून
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	2 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	17 जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष	31 जुलाई
श्रावण शुक्ल पक्ष	16 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	29 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	14 सितम्बर
आश्विन कृष्ण पक्ष	28 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष	13 अक्तूबर (स्मार्त)
आश्विन शुक्ल पक्ष	14 अक्तूबर (वैष्णव)
कार्त्तिक कृष्ण पक्ष	28 अक्तूबर
कार्तिक शुक्ल पक्ष	12 नवम्बर
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	26 नवम्बर
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	11 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	26 दिसम्बर
पौष शुक्ल पक्ष	10 जनवरी 2025
माघ कृष्ण पक्ष	25 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	8 फरवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	24 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	10 मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	25 मार्च (स्मार्त)
चैत्र कृष्ण पक्ष	26 मार्च (वैष्णव)

पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत

सन् 2024 ई.

पूर्णिमा व्रत		श्री सत्यनारायण व्रत	
चैत्र	23 अप्रैल	चैत्र	23 अप्रैल
वैशाख	23 मई	वैशाख	23 मई
ज्येष्ठ	22 जून	ज्येष्ठ	21 जून
आषाढ़ (गुरुपूर्णिमा)	21 जुलाई	आषाढ़	20 जुलाई
श्रावण	19 अगस्त	श्रावण	19 अगस्त
भाद्रपद	18 सितम्बर	भाद्रपद	17 सितम्बर
आश्विन	17 अक्तूबर	आश्विन	16 अक्तू. (शरत्पूर्णिमा)
कार्तिक	15 नवम्बर	कार्तिक	15 नवम्बर
मार्गशीर्ष	15 दिसम्बर	मार्गशीर्ष	14 दिसम्बर
पौष	13 जन. 2025	पौष	13 जन. 2025
माघ	12 फरवरी	माघ	12 फरवरी
फाल्गुन	14 मार्च	फाल्गुन	13 मार्च

अमावस्याएं

(स्नान-दान, देव पितरादि तर्पणाय)

सन् 2024 ई.

वैशाख अमावस पितृकार्येऽमावस	7 मई
वैशाख अमावस (देवकार्येऽमावस)	8 मई
ज्येष्ठ अमावस	6 जून
आषाढ़ अमावस	5 जुलाई
श्रावण अमावस	4 अगस्त (हरियाली अमावस)
भाद्रपद अमावस (पितृकार्येऽमावस)	2 सितम्बर (कुशाग्रहणी अमावस)
भाद्रपद अमावस (देवकार्येऽमावस)	3 सितम्बर
आश्विन अमावस	2 अक्तूबर (सर्वपितृश्राद्ध)

कार्तिक अमावस	1 नवम्बर (दीपावली)
मार्गशीर्ष अमावस	1 दिसम्बर
पौष अमावस	30 दिसम्बर (सोमवती)

सन् 2025 ई.

माघ अमावस	29 जनवरी (मौनी अमावस)
फाल्गुन अमावस	27 फरवरी
चैत्र अमावस	29 मार्च

(**नोट** :- मध्याह्न काल व्यापिनी अमावस्या पितृकार्य तथा सूर्योदय व्यापिनी देवकार्य में ग्राह्य होती है।)

पितृ पक्ष में श्राद्ध

आयु वृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, सुख शान्ति वृद्धि के लिए श्रद्धा एवं सद्भावना से पितृ यज्ञ तथा श्राद्ध करना सर्वदा शुभफलदायक होता है। सन् 2024 ई॰ में श्राद्ध तिथियाँ निम्न प्रकार से हैं :–

पूर्णिमा का श्राद्ध	17 सितम्बर 11:45 बाद
प्रतिपदा का श्राद्ध	18 सितम्बर
द्वितीया का श्राद्ध	19 सितम्बर
तृतीया का श्राद्ध	20 सितम्बर
चतुर्थी का श्राद्ध	21 सितम्बर
पञ्चमी का श्राद्ध	22 सितम्बर
षष्ठी का श्राद्ध	23 सितम्बर दिवा 1:51 से पूर्व
सप्तमी का श्राद्ध	24 सितम्बर 12:39 तक
अष्टमी का श्राद्ध	24 सितम्बर 12:39 बाद
नवमी का श्राद्ध	25 सितम्बर 12:11 बाद
दशमी का श्राद्ध	27 सितम्बर 13:21 तक
एकादशी का श्राद्ध	28 सितम्बर
द्वादशी का श्राद्ध	29 सितम्बर
त्रयोदशी का श्राद्ध	30 सितम्बर
चतुर्दशी का श्राद्ध	1 अक्तूबर
सर्वपितृ श्राद्ध	2 अक्तूबर

नोट– सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध नवमी तिथि को ही करना चाहिए और चतुर्दशी को केवल शस्त्र, विष, अग्नि, दुर्घटनाओं आदि में जिनकी मृत्यु हुई हो उनका श्राद्ध करना चाहिए। चतुर्दशी तिथि को जिनकी सामान्य मृत्यु हुई हो उनका श्राद्ध अमावस्या के दिन करने का भी विधान है।

प्रदोष व्रत

सन् 2024 ई.

चैत्र शुक्ल पक्ष	21 अप्रैल
वैशाख कृष्ण पक्ष	5 मई
वैशाख शुक्ल पक्ष	20 मई
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	4 जून
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	19 जून
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	3 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	19 जुलाई
श्रावण कृष्ण पक्ष	1 अगस्त
श्रावण शुक्ल पक्ष	17 अगस्त
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	31 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	15 सितम्बर
आश्विन कृष्ण पक्ष	30 सितम्बर
आश्विन शुक्ल पक्ष	15 अक्तूबर
कार्त्तिक कृष्ण पक्ष	29 अक्तूबर
कार्त्तिक शुक्ल पक्ष	13 नवम्बर
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	28 नवम्बर
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	13 दिसम्बर
पौष कृष्ण पक्ष	28 दिसम्बर

सन् 2025 ई.

पौष शुक्ल पक्ष	11 जनवरी
माघ कृष्ण पक्ष	27 जनवरी
माघ शुक्ल पक्ष	10 फरवरी
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	25 फरवरी
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	11 मार्च
चैत्र कृष्ण पक्ष	27 मार्च

महापुरुषों के जन्मदिन

शहीदी भगत सिंह	23 मार्च शनि
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रैल रवि
श्री महावीर जयंती (जैन)	21 अप्रैल रवि
श्री वल्लभाचार्य जयंती	4 मई शनि
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती	7 मई मंगल
श्री छत्रपति शिवाजी जयंती	9 मई गुरु
श्री परशुराम जयंती	10 मई शुक्र
आद्य गुरु शंकराचार्य जी	12 मई रवि
स्वामी रामानुजाचार्य	13 मई सोम
श्री बुद्ध महात्मा जयन्ती	23 मई गुरु
श्री नारद जयन्ती	25 मई शनि
श्री महाराणा प्रताप	9 जून रवि
ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह	14 जून शुक्र
कबीर जयन्ती	22 जून शनि
श्री ध्यानू भगत जयंती	24 जून सोम
ऋषि वेदव्यास जयंती	21 जुलाई रवि
लोकमान्य गंगाधर तिलक जयंती	23 जुलाई मंगल
सन्त तुलसीदास जयंती	11 अगस्त रवि
सन्त ज्ञानेश्वर	26 अगस्त सोम
भक्त नवल (जोधपुर)	26 अगस्त सोम
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितम्बर रवि
श्री दधीचि जयंती	11 सितम्बर बुध
श्री चंद्र महाराज	12 सितम्बर गुरु
महाराजा हरि सिंह	21 सितम्बर रवि
महात्मा गाँधी, शास्त्री जी	2 अक्तूबर बुध

महाराजा अग्रसेन जयंती	3 अक्तूबर गुरु
श्री माधवाचार्य	13 अक्तूबर रवि
महाराजा गुलाब सिंह	21 अक्तूबर सोम
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तूबर मंगल
श्री धनवन्तरी	30 अक्तूबर बुध
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवम्बर बुध
श्री जवाहर लाल नेहरू जयंती	14 नवम्बर गुरु
श्रीगुरु नानक देव जयंती	15 नवम्बर शुक्र
लाला लाजपतराय (शहीद)	17 नवम्बर रवि
श्री साई बाबा	23 नवम्बर शनि
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसम्बर मंगल
श्री दत्तात्रेय जयन्ती	14 दिसम्बर गुरु
शहीद स. उधम सिंह जयंती	26 दिसम्बर गुरु

सन् 2025 ई.

स्वामी विवेकान्द जी	12 जनवरी रवि
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	21 जनवरी मंगल
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जनवरी गुरु
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	11 फरवरी रवि
गुरु रविदास जी	12 फरवरी बुध
स्वामी दयानन्द सरस्वती	23 फरवरी रवि
परमहंस रामकृष्ण जी	1 मार्च शुक्र
श्री चैतन्य महाप्रभु	14 मार्च रवि
सन्त तुकाराम जी	16 मार्च रवि

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जनवरी
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	16 फरवरी
मेला शिवरात्रि (पंजवटी दवलैड़) आर.एस.पुरा	8 मार्च
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	6-7 अप्रैल
गुप्तगंगा (अखनूर) समाह कुफ्फी	7 अप्रैल
नवरात्रे पर्व (कटड़ा)	9 से 17 अप्रैल
सेठ बिरादरी मेला (बाबा कैलखदेव ठठर)	13 अप्रैल
देविका स्नान	13 अप्रैल
बावा कांशीगिरी जयंती, सुंदरबनी	13-14 अप्रैल
मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)	16 अप्रैल
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	22 अप्रैल
मेला मानसर	12-13 जून
मेला क्षीर भवानी (कश्मीर, जानीपुर जम्मू)	14 जून
यात्रा धारलदा ऊधमपुर	16 जून
मेला वानसुलदेवता (रामबन) चम्बा	20-27 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	22 जून
माँ सरथल देवी यात्रा प्रारंभ (किश्तवाड़)	26 जून
मेला शारीक भवानी	27 जून
मेला चमलियाल	27 जून
मेला हरिप्रयाग (बनी-बसौली)	17 जुलाई
मेला ज्वालामुखी	20 जुलाई
मेला रुद्रगंगा, सोमेणी देसा (डोडा)	21 जुलाई
श्रावण शिवरात्रि गाँवचलाई (शिवपुरी,राजगढ़,रामबन)	2 अगस्त
मेला नागपंचमी (डोडा)	9 अगस्त
शोपियान यात्रा प्रारम्भ	17 अगस्त
दर्शन श्री अमरनाथ गुफा (कश्मीर)	19 अगस्त
मेला स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	19 अगस्त
कृष्ण-जन्माष्टमी (रामबन)	26 अगस्त
मेला गोगा नवमी, रैणा बिरादरी मेल	27 अगस्त
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	31 अगस्त से 1 सितम्बर
मेला पात (भद्रवाह)	8-10 सितम्बर
मेला आशापति, मार्त्तण्ड	1-2 अक्तूबर
मेला झिड़ी बाबा जित्तो (सामाचक्क)	15 नवम्बर
मेला पुरमण्डल	30 नवम्बर
मेला मथवार (बाबा बल्लो जी)	8 दिसम्बर
मेला वानसुल देवता (रामबन) चम्बा	21-28 दिसम्बर

हिमाचल प्रदेश के मेले

मेला नलवाढ़ (सुन्दरनगर)	17-22 मार्च
मेला नलवाढ़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रैल
मेला नयना देवी (विलासपुर)	9-17 अप्रैल
वालासुन्दरी (सिरमौर)	9-17 अप्रैल
ललवाढ़ (सुन्दरनगर)	11-16 अप्रैल
मेला लाहौल (मण्डी)	15 अप्रैल
मेला श्रीदुगाष्टमी (कांगड़ा देवी)	16 अप्रैल
मेला रोहरू (महासू)	19-20 अप्रैल
पीपल-जातर (कुल्लू)	28 से 30 अप्रैल
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मेला घाघरस (विलासपुर)	14 मई
मणिकरण (कुल्लू)	18-23 मई
मेला पशु (हमीरपुर)	20 मई
मेला शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मेला ग्राम पंचग्राई (विलासपुर)	29-30 मई
मेला श्यामा काली (सरकाघाट)	31 मई
मेला स्थूल मढोल	1-4 जून
मेला नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
मेला बाड़ी सोलन	14 जून
मेला भुन्तर (कुल्लू)	15-17 जून
मेला पीपलू (हमीरपुर)	17-18 जून
शूलिनी (सोलन)	21-23 जून
मेला टौणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	7 जुलाई

मेला नागिनी (नूरपुर)	16 जुलाई
मेला सिद्ध बावा शिब्बो (ज्वाली)	21 जुलाई
मेला मिञ्जरां (चम्बा)	28 जुलाई
मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	5-13 अगस्त
मेला चामुण्डा देवी	5-13 अगस्त
मेला नयना देवी (विलासपुर)	5-13 अगस्त
मेला गुग्गा नवमी (विलासपुर)	27 अगस्त
मेला बन्द्राल (कुल्लू)	27 अगस्त
मेला अम्बिकादेवी (सदर मण्डी)	1 सितम्बर
मेला महासू (शिलाई सिरमौर)	7-8 सितम्बर
हिमाचल गणेश उत्सव (ऊना)	7-17 सितम्बर
यात्रा मणिमहेश (चम्बा) शुरू	9 सितम्बर
मेला गुग्गामाड़ी (सुबाथू)	11-13 सितम्बर
मेला वामन द्वादशी (नाहन)	15 सितम्बर
मेला नलवाढ़ (चिच्चोट)	16-23 सितम्बर
मेला सायर (अर्की)	16-17 सितम्बर
मेला चामुण्डा देवी (कांगड़ा)	3-12 अक्तूबर
मेला बगलामुखी (वनखण्डी)	3-12 अक्तूबर
मेला रामलीला	3-12 अक्तूबर
मेला तारादेवी (शिमला)	11-13 अक्तूबर
मेला ज्वालामुखी	11-12 अक्तूबर
मेला शीतला माता (कांगड़ा	11 अक्तूबर
मेला दशहरा (अर्की)	12 अक्तूबर
मेला दशहरा (कुल्लू)	12-17 अक्तूबर
मेला कालीवाड़ी (शिमला)	31 अक्तूबर से 1 नव.
मेला बाबा रूद्रीनन्दनारी (ऊना)	11-15 नवम्बर
मेला रेणुका (सिरमौर)	12-13 नवम्बर
मेला जोगी पांगा (ऊना)	15 नवम्बर
बुढ़ी दीपावली (सिरमौर)	1-4 दिसम्बर

सन् 2025 ई.

मेला ब्रह्मा (कुल्लू)	20 जनवरी
मेला वसन्तपंचमी (विलासपुर)	2 फरवरी
मेला काठगढ़ (कांगड़ा)	26 फरवरी
मेला वैजनाथ (कांगड़ा)	26-27 फरवरी
मेला स्वर्ग आश्रम (नूरपुर)	26-27 फरवरी
महाशिवरात्रि मेला (मण्डी)	28 फरवरी से 6 मार्च
मेला बड़भागसिंह (ऊना)	7-14 मार्च
मेला बावा बालकनाथ (प्रारम्भ)	14 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	14-18 मार्च
मेला नलवाढ़ (विलासपुर)	17-22 मार्च
मेला नलवाढ़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मेला नलवाढ़ (सरकाघाट)	28 मार्च से 3 अप्रैल

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

ओली तप प्रारम्भ	15 अप्रैल
महावीर जयंती	21 अप्रैल
ओली तप समाप्त	23 अप्रैल
वरसी तप समाप्त	11 मई
केवलज्ञान दिवस	18 मई
मेला चक्रेशवरी देवी (सरहिन्द)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रारंभ	21 जुलाई
तेरापंथ स्थापनादिवस	21 जुलाई
जैन महोत्सव	2-4 अगस्त
पयुर्षण पर्व प्रारंभ	1 सितम्बर
संवत्सरी महापर्व	8 सितम्बर
श्रीकालू निर्वाण दिवस	9 सितम्बर
श्रीतुलसीपट्टारोहण	12 सितम्बर
श्री महावीर निर्वाण दिवस	1 नवम्बर
श्रीवीर संवत् 2551 प्रारंभ	2 नवम्बर
आचार्य श्री तुलसी जयन्ती	3 नवम्बर
ज्ञान पञ्चमी	6 नवम्बर
श्री महावीर दीक्षा दिवस	25 नवम्बर
मौनी एकादशी	11 दिसम्बर
आचार्य तुलसी दीक्षा दिवस	20 दिसम्बर
श्री पार्श्वनाथ जयंती	25 दिसम्बर

सन् 2025 ई.

मेरू त्र्योदशी जैन	27 जनवरी
मर्यादा महोत्सव जैन	4 फरवरी
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	12-14 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	21 मार्च
वरसी तप प्रारम्भ	22 मार्च

दशमहाविद्या जयन्ती

श्री महातारा जयंती	17 अप्रैल
श्री मातङ्गी जयंती	10 मई
श्री बगुलामुखी जयंती	16 मई
श्री छिन्नमस्तिका जयंती	22 मई
श्री धूमावती जयंती	14 जून
श्री महाकाली जयंती	26 अगस्त
श्री भुवनेश्वरी जयंती	15 सितम्बर
श्री कमला जयंती	19 अक्तूबर
श्री त्रिपुरभैरवी जयंती	14 दिसम्बर

सन् 2025 ई.

श्री ललिता जयंती	12 फरवरी

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयंती	16 फरवरी
होलिका दहन	24 मार्च
श्रीभगवत् नारायण जयंती	29 मार्च

श्री रामनवमी पर्व	17 अप्रैल
वैशाखी पर्व	13 अप्रैल
जानकी जयंती	16 मई
गंगा दशहरा	16 जून
गुरु पूर्णिमा	21 जुलाई
तुलसी जयंती पर्व	11 अगस्त
श्रीकृष्ण जयंती पर्व, नन्दोत्सव	26-27 अगस्त
महंत गुरु गोविंददास जयंती	27 अक्तूबर

दशावतार जयंतियाँ

श्री मत्स्यावतार जयंती	11 अप्रैल
श्री रामावतार जयंती	17 अप्रैल
श्री परशुराम जयंती	10 मई
श्री नृसिंहावतार जयंती	21 मई
श्री कूर्मावतार जयंती	23 मई
श्री बुद्धावतार जयंती	23 मई
श्री कल्कि अवतार जयंती	10 अगस्त
श्री कृष्णावतार जयंती	26 अगस्त
श्री वाराहावतार जयंती	6 सितम्बर
श्री वामनावतार जयंती	15 सितम्बर

मुस्लिम त्यौहार

उर्स ख़्वाजा मोईन्-उद्-दीन चिश्ती अजमेर	14-19 जन.
जन्म श्री हजरत अली	25 जनवरी
शबे-मिराज	8 फरवरी
शबे-बारात	26 फरवरी
रमज़ान (रोज़े शुरू)	12 मार्च
शहादत-ए-हजरत अली	1 अप्रैल
जमातुलविदा	5 अप्रैल
शबे-कदर	7 अप्रैल
ईद-उल-फितर (मीठी)	11 अप्रैल
ईदुलजुहा (बकरीद)	17 जून
मुहर्रम हिज़री 1445 प्रारंभ	8 जुलाई
मुहर्रम (ताजिया)	17 जुलाई
चेहलुम	25 अगस्त
शहादते-इमामहसन	3 सितम्बर
आखरी चहार, शम्बा	4 सितम्बर
ईदे-मिलाद	16 सितम्बर
ईदे-मौलाद	21 सितम्बर
11वीं शरीफ	15 अक्तूबर
सन् 2025 ई.	
उर्स मोईनुदीन चिश्ती (अजमेर)	2-7 जनवरी
जन्म श्रीहजरतअली	14 जनवरी
शब्बे मिराज	28 जनवरी
शब्बे वारात	14 फरवरी
रोजे शुरू	2 मार्च
शहादत-ए-हज़रतअली	22 मार्च
जमातुलविदा	28 मार्च
शबे-कदर	28 मार्च

क्रिश्चियन त्यौहार

सन् 2023 ई.

New Year	1 January
Epiphany	6 January
Septuagesima, Sunday	28 January
Quinquagesima, Sunday	10 Feburary
Ash Wednesday	14 Feburary
Palm Sunday	24 March
Good Friday	29 March
Easter Sunday	31 March
Rogation Sunday	5 May
Holy Thursday (Ascension Day)	9 May
Whit Sunday	19 May
Trinity Sunday	26 May
Corpus Cristi (Thursday)	30 May
First Sunday (In Advent)	1 December
Christmas Day	25 December

श्रीकुलदेव बावा कैलख देव जी

ठठ्र रायपुर, जम्मू के स्थायी कार्यक्रम

मेल सेठ ब्राह्मण बिरादरी
(13 अप्रैल 2024)

मेल फबा महाजन बिरादरी - बुद्धपूर्णिमा
(23 मई 2024)

मुण्डल मुहूर्त सेठ बिरादरी
(7 मई 2024)

वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी
(30 नवम्बर 2024)

शुभकार्यों में विवर्जित काल

राहुकाल

रविवार	:	सायं 4:30 से 6:00 तक
सोमवार	:	प्रात: 7:30 से 9:00 तक
मंगलवार	:	दोपहर 3:00 से 4:30 तक
बुधवार	:	दोपहर 12:00 से 1:30 तक
वृहस्पतिवार	:	दोपहर 1:30 से 3:00 तक
शुक्रवार	:	दिवा 10:30 से दो. 12:00 तक
शनि	:	प्रात: 9:00 से 10:30 तक

पञ्चक आरम्भ तथा समाप्ति काल
विक्रमी संवत् 2081 (सन् 2024 - 2025 ई. तक)

आरम्भ काल (भा.स्टै. समय)	समाप्ति काल (भा.स्टै. समय)
सन् 2024 ई. घ.मि.	**सन् 2024 ई. घ.मि.**
–	9 अप्रैल 7:32
2 मई 14:30	6 मई 17:43
29 मई 20:05	2 जून 25:40
25 जून 25:48	30 जून 7:34
23 जुलाई 9:19	27 जुलाई 13:00
19 अगस्त 19:00	23 जुलाई 19:54
16 सितम्बर प्रात: 5:44	20 सितम्बर प्रात: 5:16
13 अक्तूबर 15:43	17 अक्तूबर 16:20
9 नवम्बर 23:27	13 नवम्बर 27:11
6 दिसम्बर 29:06	11 दिसम्बर 11:47
सन् 2025 ई.	**सन् 2025 ई.**
3 जनवरी 10:47	7 जनवरी 17:50
30 जनवरी 18:35	3 फरवरी 23:17
26 फरवरी 28:36	3 मार्च प्रात: 6:36
26 मार्च 15:14	30 मार्च 16:34

पञ्चक विचार

धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्रान्त तक पञ्चक होते हैं। शास्त्र दृष्टि से पञ्चकों में लकड़ी काटना; लकड़ी खरीदना; दक्षिण दिशा की यात्रा; प्रेत दाह संस्कार; धातु संचय करना; दुकान-मकान का छत डालना; चटाई, चारपाई, सोफा, आदि का बनाना शुभ नहीं होता। पञ्चकों में यदि यह कार्य किए जाएँ तो उसमें पाँच गुणा हानि होती है। **ध्यान रहे–** विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधु प्रवेश, रक्षाबन्धन, भैया दूज, आदि पर्वों में शास्त्रकारों ने कहीं भी निषेध नहीं किया है। व्यर्थ में पञ्चकों के विषय में भ्रमित नहीं रहना चाहिए।

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल – सन् 2024-25 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास. वार	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रैल शनि	रात्रि 9:03	14:24 से 26:24 तक (दोपहर बाद)
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई मंगल	सायं 5:52	10:54 से 17:18 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून शुक्र	रात्रि 12:25	23:58 से शनौ 6:22 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुलाई मंगल	दिवा 11:17	सारा दिन
भाद्रपद संक्रान्ति	16 अगस्त शुक्र	रात्रि 7:43	दोपहर बाद 19:20 तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितम्बर सोम	रात्रि 7:41	संध्याकाल से मध्य रात्रि तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तूबर गुरु	प्रात: 7:41	दोपहर 13:25 तक
मार्गशीर्ष संक्रान्ति	16 नवम्बर शनि	प्रात: 7:30	दोपहर तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसम्बर रवि	रात्रि 10:09	रात्रि 10:09 से 28:10 तक
माघ संक्रान्ति	14 जनवरी (2024) मंगल	प्रात: 8:54	8:54 से रात्रि तक
फाल्गुन संक्रान्ति	13 फरवरी बुध	रात्रि 9:54	दिवा 3:00 से रात्रि 9:20 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र	सायं 6:49	दोपहर बाद से 24:30 तक

गुरु-पर्व दश गुरु साहिबान संवत् 2081 (सन् 2024-2025 ई.)

सद्गुरु साहिबान के नाम	जन्म दिन	
(1) गुरु नानक देव जी	15 नवम्बर	कार्त्तिक पूर्णिमा
(2) गुरु अंगद देव जी	9 मई	वैशाख शु. प्रतिपदा
(3) गुरु अमरदास जी	22 मई	वैशाख शु. चतुर्दशी
(4) गुरु रामदास जी	19 अक्तूबर	कार्तिक कृ. द्वितीया
(5) गुरु अर्जुन देव जी	30 अप्रैल	वैशाख कृ. षष्ठी
(6) गुरु हरगोविन्द जी	22 जून	ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा
(7) गुरु हरिराय जी	10 फरवरी 2025 ई.	माघ शु. त्रयोदशी
	.....	
(8) गुरु हरकिशन जी	29 जुलाई 2024	श्रावण कृ. नवमी
(9) गुरु तेग बहादुर जी	29 अप्रैल	वैशाख कृ. पञ्चमी
(10) गुरु गोविन्द सिंह जी	6 जनवरी 2025	पौष शु. सप्तमी

श्री कुलदेव रैणा विरादरी
सूञ्जवां जम्मू के स्थायी कार्यक्रम

देवमूर्तियों का स्थापना दिवस
(शनिवार, 27 अप्रैल 2024)

गुग्गा नवमी - मेल रैणा विरादरी, सूञ्जवां जम्मू
(मंगलवर, 27 अगस्त 2024)

कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा - मेल रैणा विरादरी, सूञ्जवां, जम्मू
(शुक्रवार, 15 नवम्बर 2024)

मल्ल माता स्थापना दिवस
(रविवार, 19 जनवरी, 2025)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश वक्री-मार्गी एवं उदयास्त घण्टा मिनटों में (सन् 2024-2025 ई॰)

सूर्य राशि प्रवेश

ता॰	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय
13	अप्रैल	अश्विनी	मेष	21:03
27	अप्रैल	भरणी	मेष	12:55
11	मई	कृत्तिका	मेष	07:01
14	मई	कृत्तिका	वृष	17:52
8	जून	मृग्शिरा	वृष	01:04
15	जून	मृग्शिरा	मिथुन	00:25
22	जून	आर्द्रा	मिथुन	00:05
5	जुलाई	पुनर्वसु	मिथुन	23:39
16	जुलाई	पुनर्वसु	कर्क	11:17
19	जुलाई	पुष्य	कर्क	23:10
2	अगस्त	आश्लेषा	कर्क	22:05
16	अगस्त	मघा	सिंह	19:43
30	अगस्त	पू.फा.	सिंह	15:45
13	सितम्बर	उ.फा.	सिंह	09:34
16	सितम्बर	उ.फा.	कन्या	19:41
27	सितम्बर	हस्त	कन्या	01:09
10	अक्तूबर	चित्रा	कन्या	14:05
17	अक्तूबर	चित्रा	तुला	07:41
24	अक्तूबर	स्वाती	तुला	00:41
6	नवम्बर	विशाखा	तुला	08:45
16	नवम्बर	विशाखा	वृश्चिक	07:30
19	नवम्बर	अनुराधा	वृश्चिक	14:52
2	दिसम्बर	ज्येष्ठा	वृश्चिक	19:07
15	दिसम्बर	मूल	धनु	22:09
29	दिसम्बर	पू.षा.	धनु	00:24
		सन् 2025 ई.		
11	जनवरी	उ.षा.	धनु	02:20
14	जनवरी	उ.षा.	मकर	08:54
24	जनवरी	श्रवण	मकर	04:43
6	फरवरी	धनिष्ठा	मकर	07:48
12	फरवरी	धनिष्ठा	कुंभ	21:54
19	फरवरी	शतभिषा	कुंभ	12:24
4	मार्च	पू.भा.	कुंभ	18:39
14	मार्च	पू.भा.	मीन	18:49
18	मार्च	उ.भा.	मीन	03:10

मंगल राशि प्रवेश

ता॰	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय
10	अप्रैल	पू.भा.	कुंभ	11:09
27	अप्रैल	उ.भा.	मीन	16:10
15	मई	रेवती	मीन	00:50
1	जून	अश्विनी	मेष	15:36
19	जून	भरणी	मेष	14:58
8	जुलाई	कृत्तिका	मेष	01:56
12	जुलाई	कृत्तिका	वृष	18:57
27	जुलाई	रोहिणी	वृष	04:36
16	अगस्त	मृगशिरा	वृष	04:33
26	अगस्त	मृगशिरा	मिथुन	15:22
6	सितम्बर	आर्द्रा	मिथुन	11:46
29	सितम्बर	पुनर्वसु	मिथुन	23:56
20	अक्तूबर	पुनर्वसु	कर्क	14:19
28	अक्तूबर	पुष्य	कर्क	15:55
		सन् 2025 ई.		
13	जनवरी	पुनर्वसु	कर्क	00:12
21	जनवरी	पुनर्वसु	मिथुन	10:00

बुध राशि प्रवेश

ता॰	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय
9	अप्रैल	रेवती	मीन	21:30
10	मई	अश्विनी	मेष	18:42
21	मई	भरणी	मेष	11:40
29	मई	कृत्तिका	मेष	16:14
31	मई	कृत्तिका	वृष	12:11
5	जून	रोहिणी	वृष	15:20
11	जून	मृगशिरा	वृष	22:11
14	जून	मृगशिरा	मिथुन	23:4
18	जून	आर्द्रा	मिथुन	00:08
24	जून	पुनर्वसु	मिथुन	08:12
29	जून	पुनर्वसु	कर्क	12:26
1	जुलाई	पुष्य	कर्क	08:34
9	जुलाई	आश्लेषा	कर्क	12:26
19	जुलाई	मघा	सिंह	20:45

22	अगस्त	आश्लेषा	कर्क	(वक्री)	06:38
4	सितम्बर	मघा	सिंह		11:21
14	सितम्बर	पू.फा.	सिंह		06:44
21	सितम्बर	उ.फा.	सिंह		15:06
23	सितम्बर	उ.फा.	कन्या		10:10
28	सितम्बर	हस्त	कन्या		21:09
6	अक्तूबर	चित्रा	कन्या		11:45
10	अक्तूबर	चित्रा	तुला		11:19
14	अक्तूबर	स्वाती	तुला		13:54
23	अक्तूबर	विशाखा	तुला		03:59
29	अक्तूबर	विशाखा	वृश्चिक		22:39
1	नवम्बर	अनुराधा	वृश्चिक		06:40
11	नवम्बर	ज्येष्ठा	वृश्चिक		06:22
9	दिसम्बर	अनुराधा	वृश्चिक	(वक्री)	00:42
24	दिसम्बर	ज्येष्ठा	वृश्चिक		08:24
			सन् 2025 ई.		
4	जनवरी	मूल	धनु		12:02
13	जनवरी	पू.षा.	धनु		20:35
21	जनवरी	उ.षा.	धनु		14:48
24	जनवरी	उ.षा.	मकर		17:37
30	जनवरी	श्रवण	मकर		22:03
7	फरवरी	धनिष्ठा	मकर		18:31
11	फरवरी	धनिष्ठा	कुंभ		12:53
15	फरवरी	शतभिषा	कुंभ		05:04
22	फरवरी	पू.भा.	कुंभ		09:49
27	फरवरी	पू.भा.	मीन		23:45
2	मार्च	उ.भा.	मीन		00:14

गुरु राशि प्रवेश

ता॰	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय	
17	अप्रैल	कृत्तिका	मेष		02:00
1	मई	कृत्तिका	वृष		12:55
13	जून	रोहिणी	वृष		05:36
20	अगस्त	मृगशिरा	वृष		16:14
28	नवम्बर	रोहिणी	वृष	(वक्री)	14:28

शुक्र राशि प्रवेश

ता॰	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय
14	अप्रैल	रेवती	मीन	04:32
24	अप्रैल	अश्विनी	मेष	23:58
5	मई	भरणी	मेष	19:41
16	मई	कृत्तिका	मेष	15:40
19	मई	कृत्तिका	वृष	08:42
27	मई	रोहिणी	वृष	11:56
7	जून	मृगशिरा	वृष	08:17
12	जून	मृगशिरा	मिथुन	18:29
18	जून	आर्द्रा	मिथुन	04:43
29	जून	पुनर्वसु	मिथुन	01:12
7	जुलाई	पुनर्वसु	कर्क	04:30
20	जुलाई	आश्लेषा	कर्क	18:02
31	जुलाई	मघा	सिंह	14:32
11	अगस्त	पू.फा.	सिंह	11:07
22	अगस्त	उ.फा.	सिंह	07:59
25	अगस्त	उ.फा.	कन्या	01:15
2	सितम्बर	हस्त	कन्या	05:12

13	सितम्बर	चित्रा	कन्या		02:51
18	सितम्बर	चित्रा	तुला		13:56
24	सितम्बर	स्वाती	तुला		01:11
5	अक्तूबर	विशाखा	तुला		00:12
13	अक्तूबर	विशाखा	वृश्चिक		06:00
16	अक्तूबर	अनुराधा	वृश्चिक		00:04
27	अक्तूबर	ज्येष्ठा	वृश्चिक		01:07
7	नवम्बर	मूल	धनु		03:31
18	नवम्बर	पू.षा.	धनु		07:59
29	नवम्बर	उ.षा.	धनु		15:28
2	दिसम्बर	उ.षा.	मकर		11:56
11	दिसम्बर	श्रवण	मकर		03:18
22	दिसम्बर	धनिष्ठा	मकर		22:17
28	दिसम्बर	धनिष्ठा	कुंभ		23:39
			सन् 2025 ई.		
4	जनवरी	शतभिषा	कुंभ		04:38
17	जनवरी	पू.भा.	कुंभ		07:41
28	जनवरी	पू.भा.	मीन		07:00
1	फरवरी	उ.भा.	मीन		08:25

शनि राशि प्रवेश

ता॰	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय	
3	अक्तूबर	शतभिषा	कुंभ	(वक्री)	15:02
27	दिसम्बर	पू.भा.	कुंभ		29:14
			सन् 2025 ई.		
29	मार्च	पू.भा.	मीन		21:41

राहु राशि प्रवेश

ता०	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय
8	जुलाई	उ.भा.	मीन	04:55
		सन् 2025 ई.		
16	मार्च	पू.भा.	कुंभ	19:32

केतु राशि प्रवेश

ता०	मास	नक्षत्र	राशि	प्रवेश समय
11	नवम्बर	उ.फा.	कन्या	00:14

jkgq dk u{k= jkf'k lapkj

rk- &ekl	u{k=&ikn	jkf'k	?k-fe-
06ebZ	jsorh-1½	09%37	
08 tqykbZ	mHkk-4½	07%17	
09 flRk	mHkk-3½	04%56	
11 uo	mHkk-2½	02%36	
13 tu 25	mHkk-1½	00%16	
16ekpZ	iwHkk-4½	21%56	

o'kZi;ZUr jkgqehu jkf'k ls xkspj djrs jgsaxsA

dsrq dk u{k= jkf'k lapkj

rk- &ekl	u{k=&ikn	jkf'k	?k-fe-
06ebZ	gLRk-3½	09%37	
08 tqykbZ	gLRk-2½	07%17	
09 flRk	gLRk-1½	04%56	
11 uo	mQk-4½	02%36	
13 tu	mQk-3½	00%16	
16ekpZ	mQk-2½	21%56	

o'kZi;ZUr dsrq dU;k jkf'k ls xkspj djrs jgsaxsA

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

7 दिसम्बर वक्री 5:04

24 फरवरी 2025 मार्गी 7:31

बुध

1 अप्रैल वक्री 27:44

25 अप्रैल मार्गी 18:23

5 अगस्त वक्री 10:26

28 अगस्त मार्गी 26:43

26 नवम्बर वक्री 8:12

15 दिसम्बर मार्गी 26:26

15 मार्च 2025 वक्री 12:16

गुरु

23 दिसम्बर 2023 से मार्गी

9 अक्तूबर 2024 वक्री 12:36

4 फरवरी 2025 मार्गी 15:11

शुक्र

4 सितम्बर 2023 से मार्गी

2 मार्च 2025 वक्री 6:07

13 अप्रैल 2025 मार्गी 6:33

शनि

4 नवम्बर 2023 से मार्गी

29 जून 2024 वक्री रात्रि 12:38

15 नवम्बर 2024 मार्गी 19:50

ग्रहों का उदयास्त

मंगल

सम्पूर्ण वर्ष उदय रहेगा।

बुध

वर्ष प्रारम्भ से अस्तगत

23 अप्रैल पूर्व में उदय 18:57

28 मई पूर्व में अस्त 11:20

24 जून पश्चिम में उदय 22:20

5 अगस्त पश्चिम में अस्त 27:25

26 अगस्त पूर्व में उदय 8:55

18 सितम्बर पूर्व में अस्त 8:14

30 अक्तूबर पश्चिम में उदय 17:25

29 नवम्बर पश्चिम में अस्त 17:20

10 दिसम्बर पूर्व में उदय 22:58

सनॅ 2025 ई.

16 जनवरी पूर्व में अस्त 23:53

22 फरवरी पश्चिम में उदय 18:18

18 मार्च पश्चिम में अस्त 16:48

गुरु

6 मई गुरु पश्चिम में अस्त 19:12

2 जून गुरु पूर्व में उदय 23:59

शुक्र

24 अप्रैल शुक्रास्त पूर्व में 19:03

7 जुलाई शुक्र उदय पश्चिम में 5:34

20 मार्च शुक्रास्त पश्चिम में 18:37

23 मार्च शुक्र उदय पूर्व में 23:20

शनि

सन् 2024 ई. में उदय रहेगा।

सनॅ 2025 ई.

25 फरवरी शनि पश्चिम में अस्त 15:45

7 अप्रैल शनि पूर्व में उदय 28:14

नक्षत्र चरण प्रवेश वर्ष 2024-25

नक्षत्र	तारीख अप्रैल 2024	समय
मूल-2	01 अप्रै	05:04
मूल-3	01 अप्रै	11:09
मूल-4	01 अप्रै	17:12
पू.षा.-1	01 अप्रै	23:12
पू.षा.-2	02 अप्रै	05:10
पू.षा.-3	02 अप्रै	11:05
पू.षा.-4	02 अप्रै	16:58
उ.षा.-1	02 अप्रै	22:49
उ.षा.-2	03 अप्रै	04:37
उ.षा.-3	03 अप्रै	10:23
उ.षा.-4	03 अप्रै	16:06
श्रवण-1	03 अप्रै	21:47
श्रवण-2	04 अप्रै	03:26
श्रवण-3	04 अप्रै	09:04
श्रवण-4	04 अप्रै	14:39
धनिष्ठा-1	04 अप्रै	20:12
धनिष्ठा-2	05 अप्रै	01:43
धनिष्ठा-3	05 अप्रै	07:12
धनिष्ठा-4	05 अप्रै	12:40
शतभिषा-1	05 अप्रै	18:07
शतभिषा-2	05 अप्रै	23:32
शतभिषा-3	06 अप्रै	04:55
शतभिषा-4	06 अप्रै	10:18
पू. भाद्रपद-1	06 अप्रै	15:39
पू. भाद्रपद-2	06 अप्रै	21:00
पू. भाद्रपद-3	07 अप्रै	02:20
पू. भाद्रपद-4	07 अप्रै	07:39
उ. भाद्रपद-1	07 अप्रै	12:58
उ. भाद्रपद-2	07 अप्रै	18:17
उ. भाद्रपद-3	07 अप्रै	23:35
उ. भाद्रपद-4	08 अप्रै	04:54
रेवती-1	08 अप्रै	10:12
रेवती-2	08 अप्रै	15:31
रेवती-3	08 अप्रै	20:51
रेवती-4	09 अप्रै	02:11
अश्विनी-1	09 अप्रै	07:32
अश्विनी-2	09 अप्रै	12:54
अश्विनी-3	09 अप्रै	18:17
अश्विनी-4	09 अप्रै	23:41
भरणी-1	10 अप्रै	05:06
भरणी-2	10 अप्रै	10:33
भरणी-3	10 अप्रै	16:02
भरणी-4	10 अप्रै	21:33
कृतिका-1	11 अप्रै	03:05
कृतिका-2	11 अप्रै	08:40
कृतिका-3	11 अप्रै	14:17
कृतिका-4	11 अप्रै	19:56
रोहिणी-1	12 अप्रै	01:38
रोहिणी-2	12 अप्रै	07:22
रोहिणी-3	12 अप्रै	13:09
रोहिणी-4	12 अप्रै	18:58
मृगशिरा-1	13 अप्रै	00:51
मृगशिरा-2	13 अप्रै	06:46
मृगशिरा-3	13 अप्रै	12:44
मृगशिरा-4	13 अप्रै	18:45
आर्द्रा-1	14 अप्रै	00:49
आर्द्रा-2	14 अप्रै	06:56
आर्द्रा-3	14 अप्रै	13:06
आर्द्रा-4	14 अप्रै	19:19
पुनर्वसु-1	15 अप्रै	01:35
पुनर्वसु-2	15 अप्रै	07:53
पुनर्वसु-3	15 अप्रै	14:15
पुनर्वसु-4	15 अप्रै	20:39
पुष्य-1	16 अप्रै	03:05
पुष्य-2	16 अप्रै	09:35
पुष्य-3	16 अप्रै	16:06
पुष्य-4	16 अप्रै	22:40
आश्लेषा-1	17 अप्रै	05:16
आश्लेषा-2	17 अप्रै	11:53
आश्लेषा-3	17 अप्रै	18:33
आश्लेषा-4	18 अप्रै	01:14
मघा-1	18 अप्रै	07:57
मघा-2	18 अप्रै	14:40
मघा-3	18 अप्रै	21:25
मघा-4	19 अप्रै	04:10
पू. फाल.-1	19 अप्रै	10:57
पू. फाल.-2	19 अप्रै	17:43
पू. फाल.-3	20 अप्रै	00:30
पू. फाल.-4	20 अप्रै	07:17
उ. फाल.-1	20 अप्रै	14:04
उ. फाल.-2	20 अप्रै	20:51
उ. फाल.-3	21 अप्रै	03:37
उ. फाल.-4	21 अप्रै	10:23
हस्त-1	21 अप्रै	17:08
हस्त-2	21 अप्रै	23:52
हस्त-3	22 अप्रै	06:36
हस्त-4	22 अप्रै	13:18
चित्रा-1	22 अप्रै	19:59
चित्रा-2	23 अप्रै	02:40
चित्रा-3	23 अप्रै	09:18
चित्रा-4	23 अप्रै	15:56
स्वाति-1	23 अप्रै	22:32
स्वाति-2	24 अप्रै	05:06
स्वाति-3	24 अप्रै	11:39
स्वाति-4	24 अप्रै	18:11
विशाखा-1	25 अप्रै	00:41
विशाखा-2	25 अप्रै	07:09
विशाखा-3	25 अप्रै	13:36
विशाखा-4	25 अप्रै	20:00
अनु-1	26 अप्रै	02:24
अनु-2	26 अप्रै	08:45
अनु-3	26 अप्रै	15:05
अनु-4	26 अप्रै	21:23
ज्येष्ठा-1	27 अप्रै	03:40
ज्येष्ठा-2	27 अप्रै	09:54
ज्येष्ठा-3	27 अप्रै	16:07

ज्येष्ठा–4	27 अप्रै	22:18	उ. भाद्रपद–1	04 मई	22:07	आर्द्रा–3	11 मई	22:15	श्रवण–1	28 मई	09:33
मूल–1	28 अप्रै	04:28	उ. भाद्रपद–2	05 मई	03:35	आर्द्रा–4	12 मई	04:19	श्रवण–2	28 मई	15:21
मूल–2	28 अप्रै	10:36	उ. भाद्रपद–3	05 मई	09:03	पुनर्वसु–1	12 मई	10:26	श्रवण–3	28 मई	21:07
मूल–3	28 अप्रै	16:42	उ. भाद्रपद–4	05 मई	14:30	पुनर्वसु–2	12 मई	16:36	श्रवण–4	29 मई	02:53
मूल–4	28 अप्रै	22:46	रेवती–1	05 मई	19:57	पुनर्वसु–3	12 मई	22:49	धनिष्ठा–1	29 मई	08:38
पू.षा.–1	29 अप्रै	04:49	रेवती–2	06 मई	01:24	पुनर्वसु–4	13 मई	05:05	धनिष्ठा–2	29 मई	14:22
पू.षा.–2	29 अप्रै	10:50	रेवती–3	06 मई	06:50	पुष्य–1	13 मई	11:23	धनिष्ठा–3	29 मई	20:06
पू.षा.–3	29 अप्रै	16:49	रेवती–4	06 मई	12:16	पुष्य–2	13 मई	17:45	धनिष्ठा–4	30 मई	01:49
पू.षा.–4	29 अप्रै	22:46	अश्विनी–1	06 मई	17:43	पुष्य–3	14 मई	00:09	शतभिषा–1	30 मई	07:31
उ.षा.–1	30 अप्रै	04:42	अश्विनी–2	06 मई	23:10	पुष्य–4	14 मई	06:36	शतभिषा–2	30 मई	13:13
उ.षा.–2	30 अप्रै	10:36	अश्विनी–3	07 मई	04:37	आश्लेषा–1	14 मई	13:05	शतभिषा–3	30 मई	18:54
उ.षा.–3	30 अप्रै	16:29	अश्विनी–4	07 मई	10:04	आश्लेषा–2	14 मई	19:37	शतभिषा–4	31 मई	00:34
उ.षा.–4	30 अप्रै	22:20	भरणी–1	07 मई	15:32	आश्लेषा–3	15 मई	02:11	पू. भाद्रपद–1	31 मई	06:14
मई 2024			भरणी–2	07 मई	21:01	आश्लेषा–4	15 मई	08:47	पू. भाद्रपद–2	31 मई	11:53
श्रवण–1	01 मई	04:09	भरणी–3	08 मई	02:31	मघा–1	15 मई	15:25	पू. भाद्रपद–3	31 मई	17:32
श्रवण–2	01 मई	09:57	भरणी–4	08 मई	08:01	मघा–2	15 मई	22:05	**जून 2024**		
श्रवण–3	01 मई	15:43	कृतिका–1	08 मई	13:33	ज्येष्ठा–3	24 मई	22:27	पू. भाद्रपद–4	31 मई	23:10
श्रवण–4	01 मई	21:28	कृतिका–2	08 मई	19:07	ज्येष्ठा–4	25 मई	04:32	उ. भाद्रपद–1	01 जून	04:48
धनिष्ठा–1	02 मई	03:11	कृतिका–3	09 मई	00:41	मूल–1	25 मई	10:36	उ. भाद्रपद–2	01 जून	10:25
धनिष्ठा–2	02 मई	08:52	कृतिका–4	09 मई	06:17	मूल–2	25 मई	16:38	उ. भाद्रपद–3	01 जून	16:03
धनिष्ठा.–3	02 मई	14:32	रोहिणी–1	09 मई	11:55	मूल–3	25 मई	22:39	उ. भाद्रपद–4	01 जून	21:39
धनिष्ठा–4	02 मई	20:11	रोहिणी–2	09 मई	17:35	मूल–4	26 मई	04:38	रेवती–1	02 जून	03:16
शतभिषा.–1	03 मई	01:49	रोहिणी–3	09 मई	23:17	पू.षा.–1	26 मई	10:36	रेवती–2	02 जून	08:52
शतभिषा–2	03 मई	07:25	रोहिणी–4	10 मई	05:01	पू.षा.–2	26 मई	16:32	रेवती–3	02 जून	14:28
शतभिषा–3	03 मई	13:00	मृगशिरा–1	10 मई	10:47	पू.षा.–3	26 मई	22:27	रेवती–4	02 जून	20:04
शतभिषा–4	03 मई	18:33	मृगशिरा–2	10 मई	16:35	पू.षा.–4	27 मई	04:21	अश्विनी–1	03 जून	01:40
पू. भाद्रपद–1	04 मई	00:06	मृगशिरा–3	10 मई	22:26	उ.षा.–1	27 मई	10:13	अश्विनी–2	03 जून	07:16
पू. भाद्रपद–2	04 मई	05:38	मृगशिरा–4	11 मई	04:19	उ.षा.–2	27 मई	16:05	अश्विनी–3	03 जून	12:52
पू. भाद्रपद–3	04 मई	11:08	आर्द्रा–1	11 मई	10:15	उ.षा.–3	27 मई	21:55	अश्विनी–4	03 जून	18:28
पू. भाद्रपद–4	04 मई	16:38	आर्द्रा–2	11 मई	16:14	उ.षा.–4	28 मई	03:45	भरणी–1	04 जून	00:05

भरणी-2	04 जून	05:41
भरणी-3	04 जून	11:19
भरणी-4	04 जून	16:56
कृतिका-1	04 जून	22:35
कृतिका-2	05 जून	04:14
कृतिका-3	05 जून	09:53
कृतिका-4	05 जून	15:34
रोहिणी-1	05 जून	21:16
रोहिणी-2	06 जून	02:59
रोहिणी-3	06 जून	08:43
रोहिणी-4	06 जून	14:29
मृगशिरा-1	06 जून	20:16
मृगशिरा-2	07 जून	02:05
मृगशिरा-3	07 जून	07:56
मृगशिरा-4	07 जून	13:48
आर्द्रा-1	07 जून	19:43
आर्द्रा-2	08 जून	01:39
आर्द्रा-3	08 जून	07:38
आर्द्रा-4	08 जून	13:39
पुनर्वसु-1	08 जून	19:42
पुनर्वसु-2	09 जून	01:48
पुनर्वसु-3	09 जून	07:56
पुनर्वसु-4	09 जून	14:07
पुष्य-1	09 जून	20:20
पुष्य-2	10 जून	02:36
पुष्य-3	10 जून	08:55
पुष्य-4	10 जून	15:16
आश्लेषा-1	10 जून	21:40
आश्लेषा-2	11 जून	04:06
आश्लेषा-3	11 जून	10:34
आश्लेषा-4	11 जून	17:05
मघा-1	11 जून	23:39
मघा-2	12 जून	06:14
मघा-3	12 जून	12:52
मघा-4	12 जून	19:31
पू. फाल.-1	13 जून	02:12
पू. फाल.-2	13 जून	08:54
पू. फाल.-3	13 जून	15:38
पू. फाल.-4	13 जून	22:23
उ. फाल.-1	14 जून	05:08
उ. फाल.-2	14 जून	11:54
उ. फाल.-3	14 जून	18:41
उ. फाल.-4	15 जून	01:27
हस्त-1	15 जून	08:14
हस्त-2	15 जून	15:00
हस्त-3	15 जून	21:45
हस्त-4	16 जून	04:29
चित्रा-1	16 जून	11:13
श्रवण-3	25 जून	03:14
श्रवण-4	25 जून	08:54
धनिष्ठा-1	25 जून	14:32
धनिष्ठा-2	25 जून	20:11
धनिष्ठा-3	26 जून	01:49
धनिष्ठा-4	26 जून	07:27
शतभिषा-1	26 जून	13:05
शतभिषा-2	26 जून	18:43
शतभिषा-3	27 जून	00:21
शतभिषा-4	27 जून	05:59
पू. भाद्रपद-1	27 जून	11:37
पू. भाद्रपद-2	27 जून	17:15
पू. भाद्रपद-3	27 जून	22:53
पू. भाद्रपद-4	28 जून	04:32
उ. भाद्रपद-1	28 जून	10:11
उ. भाद्रपद-2	28 जून	15:50
उ. भाद्रपद-3	28 जून	21:29
उ. भाद्रपद-4	29 जून	03:09
रेवती-1	29 जून	08:49
रेवती-2	29 जून	14:30
रेवती-3	29 जून	20:11
रेवती-4	30 जून	01:52
अश्विनी-1	30 जून	07:34
अश्विनी-2	30 जून	13:16
अश्विनी-3	30 जून	18:59

जुलाई 2024

अश्विनी-4	01 जुला	00:42
भरणी-1	01 जुला	06:26
भरणी-2	01 जुला	12:10
मघा-4	10 जुला	03:37
पू. फाल.-1	10 जुला	10:15
पू. फाल.-2	10 जुला	16:55
पू. फाल.-3	10 जुला	23:37
पू. फाल.-4	11 जुला	06:20
उ. फाल.-1	11 जुला	13:04
उ. फाल.-2	11 जुला	19:49
उ. फाल.-3	12 जुला	02:35
उ. फाल.-4	12 जुला	09:22
हस्त-1	12 जुला	16:09
हस्त-2	12 जुला	22:56
हस्त-3	13 जुला	05:42
हस्त-4	13 जुला	12:29
चित्रा-1	13 जुला	19:15
चित्रा-2	14 जुला	01:59
चित्रा-3	14 जुला	08:43
चित्रा-4	14 जुला	15:25
स्वाति-1	14 जुला	22:06
स्वाति-2	15 जुला	04:45
स्वाति-3	15 जुला	11:22
स्वाति-4	15 जुला	17:57
विशाखा-1	16 जुला	00:30
विशाखा-2	16 जुला	07:00
विशाखा-3	16 जुला	13:27
विशाखा-4	16 जुला	19:52
अनु-1	17 जुला	02:14
अनु-2	17 जुला	08:33
अनु-3	17 जुला	14:49
अनु-4	17 जुला	21:02
उ. भाद्रपद-2	25 जुला	21:48
उ. भाद्रपद-3	26 जुला	03:21
उ. भाद्रपद-4	26 जुला	08:55
रेवती-1	26 जुला	14:30
रेवती-2	26 जुला	20:06
रेवती-3	27 जुला	01:43
रेवती-4	27 जुला	07:21
अश्विनी-1	27 जुला	13:00
अश्विनी-2	27 जुला	18:40
अश्विनी-3	28 जुला	00:21
अश्विनी-4	28 जुला	06:04
भरणी-1	28 जुला	11:47
भरणी-2	28 जुला	17:32
भरणी-3	28 जुला	23:19

भरणी-4	29 जुला	05:06	मघा-1	05 अग	15:21	अनु-3	13 अग	23:34	आर्द्रा-2	28 अग	22:02
कृतिका-1	29 जुला	10:55	मघा-2	05 अग	21:54	अनु-4	14 अग	05:55	आर्द्रा-3	29 अग	04:12
कृतिका-2	29 जुला	16:45	मघा-3	06 अग	04:29	ज्येष्ठा-1	14 अग	12:13	आर्द्रा-4	29 अग	10:25
कृतिका-3	29 जुला	22:37	मघा-4	06 अग	11:06	ज्येष्ठा-2	14 अग	18:27	पुनर्वसु-1	29 अग	16:39
कृतिका-4	30 जुला	04:29	पू. फाल.-1	06 अग	17:44	ज्येष्ठा-3	15 अग	00:39	पुनर्वसु-2	29 अग	22:56
रोहिणी-1	30 जुला	10:23	पू. फाल.-2	07 अग	00:23	ज्येष्ठा-4	15 अग	06:47	पुनर्वसु-3	30 अग	05:14
रोहिणी-2	30 जुला	16:19	पू. फाल.-3	07 अग	07:04	मूल-1	15 अग	12:53	पुनर्वसु-4	30 अग	11:34
रोहिणी-3	30 जुला	22:15	पू. फाल.-4	07 अग	13:47	मूल-2	15 अग	18:55	पुष्य-1	30 अग	17:56
रोहिणी-4	31 जुला	04:13	उ. फाल.-1	07 अग	20:30	मूल-3	16 अग	00:54	पुष्य-2	31 अग	00:19
मृगशिरा-1	31 जुला	10:13	उ. फाल.-2	08 अग	03:15	मूल-4	16 अग	06:50	पुष्य-3	31 अग	06:44
मृगशिरा-2	31 जुला	16:13	उ. फाल.-3	08 अग	10:01	पू.षा.-1	16 अग	12:44	पुष्य-4	31 अग	13:11
मृगशिरा-3	31 जुला	22:15	उ. फाल.-4	08 अग	16:47	पू.षा.-2	16 अग	18:34	आश्लेषा-1	31 अग	19:39
अगस्त 2024			हस्त-1	08 अग	23:34	पू.षा.-3	17 अग	00:21	**सितम्बर 2024**		
मृगशिरा-4	01 अग	04:19	हस्त-2	09 अग	06:21	भरणी-1	24 अग	18:06	आश्लेषा-2	01 सित	02:09
आर्द्रा-1	01 अग	10:24	हस्त-3	09 अग	13:09	भरणी-2	24 अग	23:43	आश्लेषा-3	01 सित	08:41
आर्द्रा-2	01 अग	16:30	हस्त-4	09 अग	19:57	भरणी-3	25 अग	05:22	आश्लेषा-4	01 सित	15:14
आर्द्रा-3	01 अग	22:38	चित्रा-1	10 अग	02:44	भरणी-4	25 अग	11:02	मघा-1	01 सित	21:49
आर्द्रा-4	02 अग	04:48	चित्रा-2	10 अग	09:31	कृतिका-1	25 अग	16:45	मघा-2	02 सित	04:24
पुनर्वसु-1	02 अग	10:59	चित्रा-3	10 अग	16:18	कृतिका-2	25 अग	22:29	मघा-3	02 सित	11:02
पुनर्वसु-2	02 अग	17:11	चित्रा-4	10 अग	23:04	कृतिका-3	26 अग	04:16	मघा-4	02 सित	17:40
पुनर्वसु-3	02 अग	23:26	स्वाति-1	11 अग	05:49	कृतिका-4	26 अग	10:05	पू. फाल.-1	03 सित	00:20
पुनर्वसु-4	03 अग	05:41	स्वाति-2	11 अग	12:32	रोहिणी-1	26 अग	15:55	पू. फाल.-2	03 सित	07:01
पुष्य-1	03 अग	11:59	स्वाति-3	11 अग	19:14	रोहिणी-2	26 अग	21:48	पू. फाल.-3	03 सित	13:43
पुष्य-2	03 अग	18:18	स्वाति-4	12 अग	01:55	रोहिणी-3	27 अग	03:42	पू. फाल.-4	03 सित	20:26
पुष्य-3	04 अग	00:39	विशाखा-1	12 अग	08:33	रोहिणी-4	27 अग	09:39	उ. फाल.-1	04 सित	03:10
पुष्य-4	04 अग	07:02	विशाखा-2	12 अग	15:09	मृगशिरा-1	27 अग	15:38	उ. फाल.-2	04 सित	09:55
आश्लेषा-1	04 अग	13:26	विशाखा-3	12 अग	21:43	मृगशिरा-2	27 अग	21:39	उ. फाल.-3	04 सित	16:41
आश्लेषा-2	04 अग	19:52	विशाखा-4	13 अग	04:15	मृगशिरा-3	28 अग	03:41	उ. फाल.-4	04 सित	23:27
आश्लेषा-3	05 अग	02:20	अनु-1	13 अग	10:44	मृगशिरा-4	28 अग	09:46	हस्त-1	05 सित	06:14
आश्लेषा-4	05 अग	08:50	अनु-2	13 अग	17:11	आर्द्रा-1	28 अग	15:53	हस्त-2	05 सित	13:02

हस्त-3	05	सित	19:49	उ.षा.-1	13	सित	21:35	अश्विनी-3	20	सित	15:56
हस्त-4	06	सित	02:37	उ.षा.-2	14	सित	03:24	अश्विनी-4	20	सित	21:19
चित्रा-1	06	सित	09:25	उ.षा.-3	14	सित	09:09	भरणी-1	21	सित	02:43
चित्रा-2	06	सित	16:13	उ.षा.-4	14	सित	14:52	भरणी-2	21	सित	08:08
चित्रा-3	06	सित	23:00	श्रवण-1	14	सित	20:32	भरणी-3	21	सित	13:36
चित्रा-4	07	सित	05:47	श्रवण-2	15	सित	02:10	भरणी-4	21	सित	19:05
स्वाति-1	07	सित	12:34	श्रवण-3	15	सित	07:45	कृतिका-1	22	सित	00:36
स्वाति-2	07	सित	19:20	श्रवण-4	15	सित	13:18	कृतिका-2	22	सित	06:09
स्वाति-3	08	सित	02:05	धनिष्ठा-1	15	सित	18:49	कृतिका-3	22	सित	11:45
स्वाति-4	08	सित	08:48	धनिष्ठा-2	16	सित	00:18	कृतिका-4	22	सित	17:22
विशाखा-1	08	सित	15:31	धनिष्ठा-3	16	सित	05:44	रोहिणी-1	22	सित	23:02
विशाखा-2	08	सित	22:12	धनिष्ठा-4	16	सित	11:09	रोहिणी-2	23	सित	04:45
विशाखा-3	09	सित	04:51	शतभिषा-1	16	सित	16:33	रोहिणी-3	23	सित	10:30
विशाखा-4	09	सित	11:29	शतभिषा-2	16	सित	21:55	रोहिणी-4	23	सित	16:17
अनु-1	09	सित	18:04	शतभिषा-3	17	सित	03:15	मृगशिरा-1	23	सित	22:07
अनु-2	10	सित	00:38	शतभिषा-4	17	सित	08:35	मृगशिरा-2	24	सित	04:00
अनु-3	10	सित	07:09	पू. भाद्रपद-1	17	सित	13:53	मृगशिरा-3	24	सित	09:55
अनु-4	10	सित	13:38	पू. भाद्रपद-2	17	सित	19:11	मृगशिरा-4	24	सित	15:53
ज्येष्ठा-1	10	सित	20:04	पू. भाद्रपद-3	18	सित	00:28	आर्द्रा-1	24	सित	21:54
ज्येष्ठा-2	11	सित	02:27	पू. भाद्रपद-4	18	सित	05:44	आर्द्रा-2	25	सित	03:57
ज्येष्ठा-3	11	सित	08:48	उ. भाद्रपद-1	18	सित	11:00	आर्द्रा-3	25	सित	10:03
ज्येष्ठा-4	11	सित	15:06	उ. भाद्रपद-2	18	सित	16:16	आर्द्रा-4	25	सित	16:12
मूल-1	11	सित	21:22	उ. भाद्रपद-3	18	सित	21:32	पुनर्वसु-1	25	सित	22:23
मूल-2	12	सित	03:34	उ. भाद्रपद-4	19	सित	02:48	पुनर्वसु-2	26	सित	04:37
मूल-3	12	सित	09:43	रेवती-1	19	सित	08:04	पुनर्वसु-3	26	सित	10:54
मूल-4	12	सित	15:49	रेवती-2	19	सित	13:21	पुनर्वसु-4	26	सित	17:13
पू.षा.-1	12	सित	21:53	रेवती-3	19	सित	18:38	पुष्य-1	26	सित	23:34
पू.षा.-2	13	सित	03:53	रेवती-4	19	सित	23:56	पुष्य-2	27	सित	05:57
पू.षा.-3	13	सित	09:50	अश्विनी-1	20	सित	05:15	पुष्य-3	27	सित	12:23
पू.षा.-4	13	सित	15:44	अश्विनी-2	20	सित	10:35	पुष्य-4	27	सित	18:51
आश्लेषा-1	28	सित	01:20								
आश्लेषा-2	28	सित	07:52								
आश्लेषा-3	28	सित	14:26								
आश्लेषा-4	28	सित	21:01								
मघा-1	29	सित	03:38								
मघा-2	29	सित	10:16								
मघा-3	29	सित	16:56								
मघा-4	29	सित	23:36								
पू. फाल.-1	30	सित	06:19								
पू. फाल.-2	30	सित	13:02								
पू. फाल.-3	30	सित	19:46								

अक्तूबर 2024

पू. फाल.-4	01	अक्तू	02:30
उ. फाल.-1	01	अक्तू	09:16
उ. फाल.-2	01	अक्तू	16:02
उ. फाल.-3	01	अक्तू	22:49
उ. फाल.-4	02	अक्तू	05:35
हस्त-1	02	अक्तू	12:23
हस्त-2	02	अक्तू	19:10
हस्त-3	03	अक्तू	01:57
हस्त-4	03	अक्तू	08:45
चित्रा-1	03	अक्तू	15:32
चित्रा-2	03	अक्तू	22:19
चित्रा-3	04	अक्तू	05:06
चित्रा-4	04	अक्तू	11:52
स्वाति-1	04	अक्तू	18:38
स्वाति-2	05	अक्तू	01:23
स्वाति-3	05	अक्तू	08:07
स्वाति-4	05	अक्तू	14:51
विशाखा-1	05	अक्तू	21:33

विशाखा-2	06 अक्तू	04:14	धनिष्ठा-4	13 अक्तू	21:19	रोहिणी-2	20 अक्तू	14:03	पू. फाल.-4	28 अक्तू	08:37
विशाखा-3	06 अक्तू	10:55	शतभिषा-1	14 अक्तू	02:51	रोहिणी-3	20 अक्तू	19:36	उ. फाल.-1	28 अक्तू	15:24
विशाखा-4	06 अक्तू	17:33	शतभिषा-2	14 अक्तू	08:22	रोहिणी-4	21 अक्तू	01:12	उ. फाल.-2	28 अक्तू	22:11
अनु-1	07 अक्तू	00:11	शतभिषा-3	14 अक्तू	13:51	मृगशिरा-1	21 अक्तू	06:50	उ. फाल.-3	29 अक्तू	04:58
अनु-2	07 अक्तू	06:47	शतभिषा-4	14 अक्तू	19:18	मृगशिरा-2	21 अक्तू	12:31	उ. फाल.-4	29 अक्तू	11:46
अनु-3	07 अक्तू	13:21	पू. भाद्रपद-1	15 अक्तू	00:43	मृगशिरा-3	21 अक्तू	18:15	हस्त-1	29 अक्तू	18:34
अनु-4	07 अक्तू	19:54	पू. भाद्रपद-2	15 अक्तू	06:06	मृगशिरा-4	22 अक्तू	00:01	हस्त-2	30 अक्तू	01:21
ज्येष्ठा-1	08 अक्तू	02:25	पू. भाद्रपद-3	15 अक्तू	11:28	आर्द्रा-1	22 अक्तू	05:51	हस्त-3	30 अक्तू	08:09
ज्येष्ठा-2	08 अक्तू	08:54	पू. भाद्रपद-4	15 अक्तू	16:49	आर्द्रा-2	22 अक्तू	11:43	हस्त-4	30 अक्तू	14:56
ज्येष्ठा-3	08 अक्तू	15:21	उ. भाद्रपद-1	15 अक्तू	22:08	आर्द्रा-3	22 अक्तू	17:39	चित्रा-1	30 अक्तू	21:43
ज्येष्ठा-4	08 अक्तू	21:45	उ. भाद्रपद-2	16 अक्तू	03:27	आर्द्रा-4	22 अक्तू	23:37	चित्रा-2	31 अक्तू	04:30
मूल-1	09 अक्तू	04:08	उ. भाद्रपद-3	16 अक्तू	08:44	पुनर्वसु-1	23 अक्तू	05:39	चित्रा-3	31 अक्तू	11:15
मूल-2	09 अक्तू	10:28	उ. भाद्रपद-4	16 अक्तू	14:01	पुनर्वसु-2	23 अक्तू	11:43	चित्रा-4	31 अक्तू	18:00
मूल-3	09 अक्तू	16:46	रेवती-1	16 अक्तू	19:18	पुनर्वसु-3	23 अक्तू	17:51	**नवम्बर 2024**		
मूल-4	09 अक्तू	23:02	रेवती-2	17 अक्तू	00:33	पुनर्वसु-4	24 अक्तू	00:02	स्वाति-1	01 नव	00:44
पू.षा.-1	10 अक्तू	05:15	रेवती-3	17 अक्तू	05:49	पुष्य-1	24 अक्तू	06:16	स्वाति-2	01 नव	07:28
पू.षा.-2	10 अक्तू	11:25	रेवती-4	17 अक्तू	11:05	पुष्य-2	24 अक्तू	12:32	स्वाति-3	01 नव	14:10
पू.षा.-3	10 अक्तू	17:33	अश्विनी-1	17 अक्तू	16:20	पुष्य-3	24 अक्तू	18:52	स्वाति-4	01 नव	20:51
पू.षा.-4	10 अक्तू	23:38	अश्विनी-2	17 अक्तू	21:36	पुष्य-4	25 अक्तू	01:15	विशाखा-1	02 नव	03:31
उ.षा.-1	11 अक्तू	05:41	अश्विनी-3	18 अक्तू	02:52	आश्लेषा-1	25 अक्तू	07:40	विशाखा-2	02 नव	10:10
उ.षा.-2	11 अक्तू	11:41	अश्विनी-4	18 अक्तू	08:09	आश्लेषा-2	25 अक्तू	14:08	विशाखा-3	02 नव	16:47
उ.षा.-3	11 अक्तू	17:38	भरणी-1	18 अक्तू	13:26	आश्लेषा-3	25 अक्तू	20:38	विशाखा-4	02 नव	23:23
उ.षा.-4	11 अक्तू	23:33	भरणी-2	18 अक्तू	18:44	आश्लेषा-4	26 अक्तू	03:11	अनु-1	03 नव	05:58
श्रवण-1	12 अक्तू	05:25	भरणी-3	19 अक्तू	00:04	मघा-1	26 अक्तू	09:46	अनु-2	03 नव	12:32
श्रवण-2	12 अक्तू	11:15	भरणी-4	19 अक्तू	05:24	मघा-2	26 अक्तू	16:23	अनु-3	03 नव	19:04
श्रवण-3	12 अक्तू	17:01	कृतिका-1	19 अक्तू	10:46	मघा-3	26 अक्तू	23:01	अनु-4	04 नव	01:34
श्रवण-4	12 अक्तू	22:46	कृतिका-2	19 अक्तू	16:10	मघा-4	27 अक्तू	05:42	ज्येष्ठा-1	04 नव	08:04
धनिष्ठा-1	13 अक्तू	04:27	कृतिका-3	19 अक्तू	21:35	पू. फाल.-1	27 अक्तू	12:24	ज्येष्ठा-2	04 नव	14:31
धनिष्ठा-2	13 अक्तू	10:07	कृतिका-4	20 अक्तू	03:02	पू. फाल.-2	27 अक्तू	19:07	ज्येष्ठा-3	04 नव	20:58
धनिष्ठा.-3	13 अक्तू	15:44	रोहिणी-1	20 अक्तू	08:31	पू. फाल.-3	28 अक्तू	01:52	ज्येष्ठा-4	05 नव	03:22

मूल–1	05 नव	09:45	उ. भाद्रपद–3	12 नव	18:49	पुनर्वसु–1	19 नव	14:56	चित्रा–3	27 नव	18:07
मूल–2	05 नव	16:06	उ. भाद्रपद–4	13 नव	00:15	पुनर्वसु–2	19 नव	20:50	चित्रा–4	28 नव	00:52
मूल–3	05 नव	22:26	रेवती–1	13 नव	05:40	पुनर्वसु–3	20 नव	02:47	स्वाति–1	28 नव	07:36
मूल–4	06 नव	04:44	रेवती–2	13 नव	11:04	पुनर्वसु–4	20 नव	08:47	स्वाति–2	28 नव	14:18
पू.षा.–1	06 नव	11:00	रेवती–3	13 नव	16:27	पुष्य–1	20 नव	14:50	स्वाति–3	28 नव	21:00
पू.षा.–2	06 नव	17:15	रेवती–4	13 नव	21:49	पुष्य–2	20 नव	20:57	स्वाति–4	29 नव	03:39
पू.षा.–3	06 नव	23:27	अश्विनी–1	14 नव	03:11	पुष्य–3	21 नव	03:06	विशाखा–1	29 नव	10:18
पू.षा.–4	07 नव	05:38	अश्विनी–2	14 नव	08:32	पुष्य–4	21 नव	09:19	विशाखा–2	29 नव	16:54
उ.षा.–1	07 नव	11:47	अश्विनी–3	14 नव	13:52	आश्लेषा–1	21 नव	15:35	विशाखा–3	29 नव	23:29
उ.षा.–2	07 नव	17:54	अश्विनी–4	14 नव	19:13	आश्लेषा–2	21 नव	21:54	विशाखा–4	30 नव	06:03
उ.षा.–3	07 नव	23:59	भरणी–1	15 नव	00:33	आश्लेषा–3	22 नव	04:17	अनु–1	30 नव	12:34
उ.षा.–4	08 नव	06:02	भरणी–2	15 नव	05:53	आश्लेषा–4	22 नव	10:42	अनु–2	30 नव	19:04
श्रवण–1	08 नव	12:03	भरणी–3	15 नव	11:13	मघा–1	22 नव	17:10	**दिसम्बर 2024**		
श्रवण–2	08 नव	18:02	भरणी–4	15 नव	16:34	मघा–2	22 नव	23:40	अनु–3	01 दिस	01:33
श्रवण–3	08 नव	23:59	कृतिका–1	15 नव	21:55	मघा–3	23 नव	06:14	अनु–4	01 दिस	07:59
श्रवण–4	09 नव	05:54	कृतिका–2	16 नव	03:17	मघा–4	23 नव	12:49	ज्येष्ठा–1	01 दिस	14:24
धनिष्ठा–1	09 नव	11:48	कृतिका–3	16 नव	08:39	पू. फाल.–1	23 नव	19:27	ज्येष्ठा–2	01 दिस	20:47
धनिष्ठा–2	09 नव	17:39	कृतिका–4	16 नव	14:03	पू. फाल.–2	24 नव	02:07	ज्येष्ठा–3	02 दिस	03:08
धनिष्ठा–3	09 नव	23:28	रोहिणी–1	16 नव	19:28	पू. फाल.–3	24 नव	08:49	ज्येष्ठा–4	02 दिस	09:27
धनिष्ठा–4	10 नव	05:15	रोहिणी–2	17 नव	00:54	पू. फाल.–4	24 नव	15:32	मूल–1	02 दिस	15:45
शतभिषा–1	10 नव	11:00	रोहिणी–3	17 नव	06:22	उ. फाल.–1	24 नव	22:16	मूल–2	02 दिस	22:02
शतभिषा–2	10 नव	16:43	रोहिणी–4	17 नव	11:51	उ. फाल.–2	25 नव	05:02	मूल–3	03 दिस	04:17
शतभिषा–3	10 नव	22:24	मृगशिरा–1	17 नव	17:22	उ. फाल.–3	25 नव	11:49	मूल–4	03 दिस	10:30
शतभिषा–4	11 नव	04:03	मृगशिरा–2	17 नव	22:56	उ. फाल.–4	25 नव	18:36	पू.षा.–1	03 दिस	16:42
पू. भाद्रपद–1	11 नव	09:40	मृगशिरा–3	18 नव	04:31	हस्त–1	26 नव	01:24	पू.षा.–2	03 दिस	22:52
पू. भाद्रपद–2	11 नव	15:16	मृगशिरा–4	18 नव	10:09	हस्त–2	26 नव	08:12	पू.षा.–3	04 दिस	05:01
पू. भाद्रपद–3	11 नव	20:49	आर्द्रा–1	18 नव	15:49	हस्त–3	26 नव	15:00	पू.षा.–4	04 दिस	11:08
पू. भाद्रपद–4	12 नव	02:22	आर्द्रा–2	18 नव	21:31	हस्त–4	26 नव	21:47	उ.षा.–1	04 दिस	17:15
उ. भाद्रपद–1	12 नव	07:52	आर्द्रा–3	19 नव	03:17	चित्रा–1	27 नव	04:34	उ.षा.–2	04 दिस	23:20
उ. भाद्रपद–2	12 नव	13:21	आर्द्रा–4	19 नव	09:05	चित्रा–2	27 नव	11:21	उ.षा.–3	05 दिस	05:23

उ.षा.-4	05 दिस	11:25	भरणी-2	12 दिस	15:22	आश्लेषा-4	19 दिस	19:40	अनु-2	28 दिस	02:58
श्रवण-1	05 दिस	17:26	भरणी-3	12 दिस	20:52	मघा-1	20 दिस	02:00	अनु-3	28 दिस	09:25
श्रवण-2	05 दिस	23:26	भरणी-4	13 दिस	02:21	मघा-2	20 दिस	08:22	अनु-4	28 दिस	15:50
श्रवण-3	06 दिस	05:25	कृतिका-1	13 दिस	07:50	मघा-3	20 दिस	14:48	ज्येष्ठा-1	28 दिस	22:13
श्रवण-4	06 दिस	11:22	कृतिका-2	13 दिस	13:19	मघा-4	20 दिस	21:16	ज्येष्ठा-2	29 दिस	04:34
धनिष्ठा-1	06 दिस	17:18	कृतिका-3	13 दिस	18:48	पू. फाल.-1	21 दिस	03:47	ज्येष्ठा-3	29 दिस	10:52
धनिष्ठा-2	06 दिस	23:13	कृतिका-4	14 दिस	00:18	पू. फाल.-2	21 दिस	10:20	ज्येष्ठा-4	29 दिस	17:08
धनिष्ठा-3	07 दिस	05:07	रोहिणी-1	14 दिस	05:48	पू. फाल.-3	21 दिस	16:56	मूल-1	29 दिस	23:22
धनिष्ठा-4	07 दिस	10:59	रोहिणी-2	14 दिस	11:18	पू. फाल.-4	21 दिस	23:34	मूल-2	30 दिस	05:34
शतभिषा-1	07 दिस	16:50	रोहिणी-3	14 दिस	16:49	उ. फाल.-1	22 दिस	06:14	मूल-3	30 दिस	11:44
शतभिषा-2	07 दिस	22:40	रोहिणी-4	14 दिस	22:21	उ. फाल.-2	22 दिस	12:56	मूल-4	30 दिस	17:51
शतभिषा-3	08 दिस	04:29	मृगशिरा-1	15 दिस	03:54	उ. फाल.-3	22 दिस	19:39	पू.षा.-1	30 दिस	23:57
शतभिषा-4	08 दिस	10:17	मृगशिरा-2	15 दिस	09:29	उ. फाल.-4	23 दिस	02:23	पू.षा.-2	31 दिस	06:01
पू. भाद्रपद-1	08 दिस	16:03	मृगशिरा-3	15 दिस	15:04	हस्त-1	23 दिस	09:09	पू.षा.-3	31 दिस	12:04
पू. भाद्रपद-2	08 दिस	21:48	मृगशिरा-4	15 दिस	20:41	हस्त-2	23 दिस	15:55	पू.षा.-4	31 दिस	18:04
पू. भाद्रपद-3	09 दिस	03:32	आर्द्रा-1	16 दिस	02:20	हस्त-3	23 दिस	22:42	**जनवरी 2025**		
पू. भाद्रपद-4	09 दिस	09:15	आर्द्रा-2	16 दिस	08:00	हस्त-4	24 दिस	05:30	उ.षा.-1	01 जन	00:03
उ. भाद्रपद-1	09 दिस	14:56	आर्द्रा-3	16 दिस	13:42	चित्रा-1	24 दिस	12:17	उ.षा.-2	01 जन	06:01
उ. भाद्रपद-2	09 दिस	20:36	आर्द्रा-4	16 दिस	19:27	चित्रा-2	24 दिस	19:04	उ.षा.-3	01 जन	11:57
उ. भाद्रपद-3	10 दिस	02:15	पुनर्वसु-1	17 दिस	01:13	चित्रा-3	25 दिस	01:51	उ.षा.-4	01 जन	17:52
उ. भाद्रपद-4	10 दिस	07:53	पुनर्वसु-2	17 दिस	07:02	चित्रा-4	25 दिस	08:37	श्रवण-1	01 जन	23:46
रेवती-1	10 दिस	13:30	पुनर्वसु-3	17 दिस	12:54	स्वाति-1	25 दिस	15:22	श्रवण-2	02 जन	05:39
रेवती-2	10 दिस	19:06	पुनर्वसु-4	17 दिस	18:47	स्वाति-2	25 दिस	22:06	श्रवण-3	02 जन	11:30
रेवती-3	11 दिस	00:41	पुष्य-1	18 दिस	00:44	स्वाति-3	26 दिस	04:49	श्रवण-4	02 जन	17:21
रेवती-4	11 दिस	06:15	पुष्य-2	18 दिस	06:43	स्वाति-4	26 दिस	11:30	धनिष्ठा-1	02 जन	23:10
अश्विनी-1	11 दिस	11:48	पुष्य-3	18 दिस	12:45	विशाखा-1	26 दिस	18:09	धनिष्ठा-2	03 जन	04:59
अश्विनी-2	11 दिस	17:20	पुष्य-4	18 दिस	18:50	विशाखा-2	27 दिस	00:47	धनिष्ठा-3	03 जन	10:47
अश्विनी-3	11 दिस	22:51	आश्लेषा-1	19 दिस	00:58	विशाखा-3	27 दिस	07:23	धनिष्ठा-4	03 जन	16:35
अश्विनी-4	12 दिस	04:22	आश्लेषा-2	19 दिस	07:09	विशाखा-4	27 दिस	13:57	शतभिषा-1	03 जन	22:22
भरणी-1	12 दिस	09:52	आश्लेषा-3	19 दिस	13:23	अनु-1	27 दिस	20:28	शतभिषा-2	04 जन	04:08

शतभिषा-3	04 जन	09:54	रोहिणी-4	11 जन	06:47	उ. फाल.-1	18 जन	14:51	मूल-2	26 जन	14:39
शतभिषा-4	04 जन	15:39	मृगशिरा-1	11 जन	12:29	उ. फाल.-2	18 जन	21:28	मूल-3	26 जन	20:49
पू. भाद्रपद-1	04 जन	21:23	मृगशिरा-2	11 जन	18:12	उ. फाल.-3	19 जन	04:07	मूल-4	27 जन	02:57
पू. भाद्रपद-2	05 जन	03:08	मृगशिरा-3	11 जन	23:55	उ. फाल.-4	19 जन	10:48	पू.षा.-1	27 जन	09:02
पू. भाद्रपद-3	05 जन	08:51	मृगशिरा-4	12 जन	05:39	हस्त-1	19 जन	17:30	पू.षा.-2	27 जन	15:05
पू. भाद्रपद-4	05 जन	14:35	आर्द्रा-1	12 जन	11:24	हस्त-2	20 जन	00:14	पू.षा.-3	27 जन	21:05
उ. भाद्रपद-1	05 जन	20:18	आर्द्रा-2	12 जन	17:11	हस्त-3	20 जन	06:58	पू.षा.-4	28 जन	03:03
उ. भाद्रपद-2	06 जन	02:00	आर्द्रा-3	12 जन	22:58	हस्त-4	20 जन	13:44	उ.षा.-1	28 जन	08:58
उ. भाद्रपद-3	06 जन	07:43	आर्द्रा-4	13 जन	04:47	चित्रा-1	20 जन	20:30	उ.षा.-2	28 जन	14:52
उ. भाद्रपद-4	06 जन	13:25	पुनर्वसु-1	13 जन	10:38	चित्रा-2	21 जन	03:16	उ.षा.-3	28 जन	20:43
रेवती-1	06 जन	19:06	पुनर्वसु-2	13 जन	16:30	चित्रा-3	21 जन	10:03	उ.षा.-4	29 जन	02:33
रेवती-2	07 जन	00:48	पुनर्वसु-3	13 जन	22:24	चित्रा-4	21 जन	16:50	श्रवण-1	29 जन	08:20
रेवती-3	07 जन	06:29	पुनर्वसु-4	14 जन	04:19	स्वाति-1	21 जन	23:36	श्रवण-2	29 जन	14:06
रेवती-4	07 जन	12:09	पुष्य-1	14 जन	10:17	स्वाति-2	22 जन	06:22	श्रवण-3	29 जन	19:51
अश्विनी-1	07 जन	17:50	पुष्य-2	14 जन	16:16	स्वाति-3	22 जन	13:07	श्रवण-4	30 जन	01:34
अश्विनी-2	07 जन	23:30	पुष्य-3	14 जन	22:18	स्वाति-4	22 जन	19:51	धनिष्ठा-1	30 जन	07:15
अश्विनी-3	08 जन	05:10	पुष्य-4	15 जन	04:22	विशाखा-1	23 जन	02:34	धनिष्ठा-2	30 जन	12:56
अश्विनी-4	08 जन	10:50	आश्लेषा-1	15 जन	10:28	विशाखा-2	23 जन	09:15	धनिष्ठा-3	30 जन	18:35
भरणी-1	08 जन	16:29	आश्लेषा-2	15 जन	16:36	विशाखा-3	23 जन	15:55	धनिष्ठा-4	31 जन	00:13
भरणी-2	08 जन	22:09	आश्लेषा-3	15 जन	22:47	विशाखा-4	23 जन	22:32	शतभिषा-1	31 जन	05:51
भरणी-3	09 जन	03:48	आश्लेषा-4	16 जन	05:01	अनु-1	24 जन	05:08	शतभिषा-2	31 जन	11:27
भरणी-4	09 जन	09:28	मघा-1	16 जन	11:16	अनु-2	24 जन	11:41	**फरवरी 2025**		
कृतिका-1	09 जन	15:07	मघा-2	16 जन	17:35	अनु-3	24 जन	18:13	ातभिषा-3	31 जन	17:03
कृतिका-2	09 जन	20:46	मघा-3	16 जन	23:56	अनु-4	25 जन	00:41	ातभिषा-4	31 जन	22:39
कृतिका-3	10 जन	02:26	मघा-4	17 जन	06:19	ज्येष्ठा-1	25 जन	07:07	पू. भाद्रपद-1	01 फर	04:14
कृतिका-4	10 जन	08:05	पू. फाल.-1	17 जन	12:45	ज्येष्ठा-2	25 जन	13:31	पू. भाद्रपद-2	01 फर	09:49
रोहिणी-1	10 जन	13:45	पू. फाल.-2	17 जन	19:13	ज्येष्ठा-3	25 जन	19:52	पू. भाद्रपद-3	01 फर	15:24
रोहिणी-2	10 जन	19:26	पू. फाल.-3	18 जन	01:44	ज्येष्ठा-4	26 जन	02:10	पू. भाद्रपद-4	01 फर	20:58
रोहिणी-3	11 जन	01:06	पू. फाल.-4	18 जन	08:16	मूल-1	26 जन	08:26	उ. भाद्रपद-1	02 फर	02:33

उ. भाद्रपद-2	02 फर	08:07	आर्द्रा-3	09 फर	05:57	हस्त-4	16 फर	21:47	उ.षा.-1	24 फर	18:59
उ. भाद्रपद-3	02 फर	13:42	आर्द्रा-4	09 फर	11:54	चित्रा-1	17 फर	04:31	उ.षा.-2	25 फर	00:56
उ. भाद्रपद-4	02 फर	19:17	पुनर्वसु-1	09 फर	17:53	चित्रा-2	17 फर	11:16	उ.षा.-3	25 फर	06:50
रेवती-1	03 फर	00:52	पुनर्वसु-2	09 फर	23:53	चित्रा-3	17 फर	18:02	उ.षा.-4	25 फर	12:42
रेवती-2	03 फर	06:28	पुनर्वसु-3	10 फर	05:54	चित्रा-4	18 फर	00:49	श्रवण-1	25 फर	18:31
रेवती-3	03 फर	12:03	पुनर्वसु-4	10 फर	11:56	स्वाति-1	18 फर	07:35	श्रवण-2	26 फर	00:17
रेवती-4	03 फर	17:40	पुष्य-1	10 फर	18:01	स्वाति-2	18 फर	14:22	श्रवण-3	26 फर	06:01
अश्विनी-1	03 फर	23:17	पुष्य-2	11 फर	00:06	स्वाति-3	18 फर	21:08	श्रवण-4	26 फर	11:43
अश्विनी-2	04 फर	04:54	पुष्य-3	11 फर	06:14	स्वाति-4	19 फर	03:54	धनिष्ठा-1	26 फर	17:23
अश्विनी-3	04 फर	10:32	पुष्य-4	11 फर	12:23	विशाखा-1	19 फर	10:39	धनिष्ठा-2	26 फर	23:01
अश्विनी-4	04 फर	16:10	आश्लेषा-1	11 फर	18:34	विशाखा-2	19 फर	17:24	धनिष्ठा-3	27 फर	04:37
भरणी-1	04 फर	21:49	आश्लेषा-2	12 फर	00:46	विशाखा-3	20 फर	00:07	धनिष्ठा-4	27 फर	10:11
भरणी-2	05 फर	03:29	आश्लेषा-3	12 फर	07:01	विशाखा-4	20 फर	06:49	शतभिषा-1	27 फर	15:43
भरणी-3	05 फर	09:10	आश्लेषा-4	12 फर	13:17	अनु-1	20 फर	13:30	शतभिषा-2	27 फर	21:14
भरणी-4	05 फर	14:51	मघा-1	12 फर	19:35	अनु-2	20 फर	20:09	शतभिषा-3	28 फर	02:44
कृतिका-1	05 फर	20:33	मघा-2	13 फर	01:55	अनु-3	21 फर	02:46	शतभिषा-4	28 फर	08:13
कृतिका-2	06 फर	02:16	मघा-3	13 फर	08:17	अनु-4	21 फर	09:21	पू. भाद्रपद-1	28 फर	13:40
कृतिका-3	06 फर	07:59	मघा-4	13 फर	14:41	ज्येष्ठा-1	21 फर	15:54	पू. भाद्रपद-2	28 फर	19:07
कृतिका-4	06 फर	13:44	पू. फाल.-1	13 फर	21:07	ज्येष्ठा-2	21 फर	22:24	**मार्च 25**		
रोहिणी-1	06 फर	19:29	पू. फाल.-2	14 फर	03:35	ज्येष्ठा-3	22 फर	04:52	पू. भाद्रपद-3	01 मार्च	00:33
रोहिणी-2	07 फर	01:15	पू. फाल.-3	14 फर	10:04	ज्येष्ठा-4	22 फर	11:17	पू. भाद्रपद-4	01 मार्च	05:58
रोहिणी-3	07 फर	07:03	पू. फाल.-4	14 फर	16:36	मूल-1	22 फर	17:40	उ. भाद्रपद-1	01 मार्च	11:22
रोहिणी-4	07 फर	12:51	उ. फाल.-1	14 फर	23:09	मूल-2	23 फर	00:00	उ. भाद्रपद-2	01 मार्च	16:47
मृगशिरा-1	07 फर	18:40	उ. फाल.-2	15 फर	05:44	मूल-3	23 फर	06:17	उ. भाद्रपद-3	01 मार्च	22:11
मृगशिरा-2	08 फर	00:30	उ. फाल.-3	15 फर	12:21	मूल-4	23 फर	12:31	उ. भाद्रपद-4	02 मार्च	03:35
मृगशिरा-3	08 फर	06:21	उ. फाल.-4	15 फर	18:59	पू.षा.-1	23 फर	18:43	रेवती-1	02 मार्च	08:59
मृगशिरा-4	08 फर	12:13	हस्त-1	16 फर	01:39	पू.षा.-2	24 फर	00:51	रेवती-2	02 मार्च	14:24
आर्द्रा-1	08 फर	18:07	हस्त-2	16 फर	08:20	पू.षा.-3	24 फर	06:56	रेवती-3	02 मार्च	19:48
आर्द्रा-2	09 फर	00:01	हस्त-3	16 फर	15:03	पू.षा.-4	24 फर	12:59	रेवती-4	03 मार्च	01:13

अश्विनी-1	03 मार्च	06:39
अश्विनी-2	03 मार्च	12:05
अश्विनी-3	03 मार्च	17:32
अश्विनी-4	03 मार्च	23:00
भरणी-1	04 मार्च	04:29
भरणी-2	04 मार्च	10:00
भरणी-3	04 मार्च	15:31
भरणी-4	04 मार्च	21:04
कृतिका-1	05 मार्च	02:37
कृतिका-2	05 मार्च	08:13
कृतिका-3	05 मार्च	13:50
कृतिका-4	05 मार्च	19:28
रोहिणी-1	06 मार्च	01:08
रोहिणी-2	06 मार्च	06:50
रोहिणी-3	06 मार्च	12:33
रोहिणी-4	06 मार्च	18:18
मृगशिरा-1	07 मार्च	00:05
मृगशिरा-2	07 मार्च	05:54
मृगशिरा-3	07 मार्च	11:45
मृगशिरा-4	07 मार्च	17:37
आर्द्रा-1	07 मार्च	23:32
आर्द्रा-2	08 मार्च	05:28
आर्द्रा-3	08 मार्च	11:26
आर्द्रा-4	08 मार्च	17:26
पुनर्वसु-1	08 मार्च	23:28
पुनर्वसु-2	09 मार्च	05:32
पुनर्वसु-3	09 मार्च	11:38
पुनर्वसु-4	09 मार्च	17:46
पुष्य-1	09 मार्च	23:55
पुष्य-2	10 मार्च	06:06
पुष्य-3	10 मार्च	12:20
पुष्य-4	10 मार्च	18:34
आश्लेषा-1	11 मार्च	00:51
आश्लेषा-2	11 मार्च	07:10
आश्लेषा-3	11 मार्च	13:30
आश्लेषा-4	11 मार्च	19:52
मघा-1	12 मार्च	02:15
मघा-2	12 मार्च	08:40
मघा-3	12 मार्च	15:07
मघा-4	12 मार्च	21:36
पू. फाल.-1	13 मार्च	04:05
पू. फाल.-2	13 मार्च	10:37
पू. फाल.-3	13 मार्च	17:10
पू. फाल.-4	13 मार्च	23:44
उ. फाल.-1	14 मार्च	06:19
उ. फाल.-2	14 मार्च	12:56
उ. फाल.-3	14 मार्च	19:34
उ. फाल.-4	15 मार्च	02:14
हस्त-1	15 मार्च	08:54
हस्त-2	15 मार्च	15:35
हस्त-3	15 मार्च	22:18
हस्त-4	16 मार्च	05:01
चित्रा-1	16 मार्च	11:45
चित्रा-2	16 मार्च	18:30
चित्रा-3	17 मार्च	01:15
चित्रा-4	17 मार्च	08:01
स्वाति-1	17 मार्च	14:47
स्वाति-2	17 मार्च	21:33
स्वाति-3	18 मार्च	04:19
स्वाति-4	18 मार्च	11:06
विशाखा-1	18 मार्च	17:52
विशाखा-2	19 मार्च	00:37
विशाखा-3	19 मार्च	07:22
विशाखा-4	19 मार्च	14:07
अनु-1	19 मार्च	20:50
अनु-2	20 मार्च	03:32
अनु-3	20 मार्च	10:13
अनु-4	20 मार्च	16:53
ज्येष्ठा-1	20 मार्च	23:31
ज्येष्ठा-2	21 मार्च	06:08
ज्येष्ठा-3	21 मार्च	12:43
ज्येष्ठा-4	21 मार्च	19:15
मूल-1	22 मार्च	01:46
मूल-2	22 मार्च	08:14
मूल-3	22 मार्च	14:40
मूल-4	22 मार्च	21:03
पू.षा.-1	23 मार्च	03:23
पू.षा.-2	23 मार्च	09:41
पू.षा.-3	23 मार्च	15:56
पू.षा.-4	23 मार्च	22:09
उ.षा.-1	24 मार्च	04:18
उ.षा.-2	24 मार्च	10:25
उ.षा.-3	24 मार्च	16:28
उ.षा.-4	24 मार्च	22:29
श्रवण-1	25 मार्च	04:27
श्रवण-2	25 मार्च	10:22
श्रवण-3	25 मार्च	16:14
श्रवण-4	25 मार्च	22:03
धनिष्ठा-1	26 मार्च	03:49
धनिष्ठा-2	26 मार्च	09:33
धनिष्ठा-3	26 मार्च	15:14
धनिष्ठा-4	26 मार्च	20:53
शतभिषा-1	27 मार्च	02:30
शतभिषा-2	27 मार्च	08:04
शतभिषा-3	27 मार्च	13:36
शतभिषा-4	27 मार्च	19:05
पू. भाद्रपद-1	28 मार्च	00:34
पू. भाद्रपद-2	28 मार्च	06:00
पू. भाद्रपद-3	28 मार्च	11:24
पू. भाद्रपद-4	28 मार्च	16:48
उ. भाद्रपद-1	28 मार्च	22:09
उ. भाद्रपद-2	29 मार्च	03:30
उ. भाद्रपद-3	29 मार्च	08:50
उ. भाद्रपद-4	29 मार्च	14:08
रेवती-1	29 मार्च	19:26
रेवती-2	30 मार्च	00:44
रेवती-3	30 मार्च	06:01
रेवती-4	30 मार्च	11:18
अश्विनी-1	30 मार्च	16:35
अश्विनी-2	30 मार्च	21:52
अश्विनी-3	31 मार्च	03:09
अश्विनी-4	31 मार्च	08:27
भरणी-1	31 मार्च	13:45
भरणी-2	31 मार्च	19:04

राजा मन्त्री आदि का विवरण

ॐ श्री गणेशाय नमः

अथास्मिन् वर्षे सृष्टितो गताब्दाः १९५५८८५१२५, तत्र कृतयुगप्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुगप्रमाणम् १२९६०००, द्वापुरयुगप्रमाणम् ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ५१२५, भोग्यकलिः ४२६८७५, अथास्मिन् संवत्सरे श्रीमन्नृपतिवीर-विक्रमादित्यराज्यतो गताब्दाः संवत् २०८१, शाकः १९४६, अथास्मिन् वर्षे राजा **भौमः**। मन्त्री **शनिः**। सस्येशः **भौमः**। धान्येशो **रविः**। मेघेशोः **शुक्रः**। रसेशः **गुरुः**। नीरसेशः **भौमः**। फलेशः **शुक्रः**। घनेशः **चन्द्र**। दुर्गेशः **शुक्रः**। एतेदशाधिकारिणाः। तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये **रुद्रविंशतिकायां १२ काल नाम संवत्सरः** प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्कसमये गतमासादिः १/१४/२६/५३/४८, भोग्यमासादिः **१०/१५/३३/०६/१२ नासत्यदैवतं युगांतत्रवर्षनाम आश्विनः**। मेघनाम **आवर्तः**। रोहिणी निवासः समुद्रे। समयनिवासो **रजकगृहे**। समय विश्वा ०८ समयवाहनम् **वृषभः**। स्तंभाः **३ अन्नजलनृणानाम्**। सोमवत्यमा **१**, सोमवती पंचमी **१**, अंगारकी चतुर्थी **२**, भानुसप्तमी **२**, बुधाष्टमी **३**, रविदशमी **३**, समय मुहूर्ताः **३९०**, समयदिनानि **३५५**, तिथिक्षयः **१६**, तिथिवृद्धिः **११**, उत्पत्तिविश्वा **९६**, खपति विश्वा **१०८**, वर्षाविश्वा **०५**, धान्यम् **११**, तृणम् **०५**, शीतम् **१३**, तेजः **१७**, वायुः **१३**, वृद्धिः **१५**, क्षयः **१५**, विग्रहः **११**, ऐक्यम् **१०५**, शनिदृष्टिरुत्तरे। सत्यम् **१**, धर्म **१$\frac{१}{२}$**, पापं **१८** ग्रहण अभावोभारते।

राजा मन्त्री आदि का शास्त्रोक्त निर्णय

चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो वारः स उक्तो नृपतिस्तदाब्दे।
मेषप्रवेशे किल भास्करस्य यस्मिन्दिने स्यात्स तु राजमन्त्री।।
कर्कसंक्रान्तेर्यो वारः स अग्रधान्येश्वरः।
धनसंक्रान्तेर्यो वारः स पश्चिमधान्येश्वरः।।
कर्कप्रवेशे दिनपस्य उक्तं सस्यस्य नाथो मुनिभिः पुराणैः।
आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो मेघाधिपः प्रोक्तनविप्रवर्यैः।।
सिंहसंक्रान्तिवारेशो दुर्गेशः परिकीर्तितः।
कन्यासंक्रान्तिदिनपो धनेशः परिकीर्तितः।।
तुलाप्रवेशेऽह्नि यस्य वारो रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः।
चापप्रवेशे दिवसाधिनाथे धान्याधिपो वै कथितो मुनीन्द्रैः।।
नक्रसंक्रान्तिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः।
मीनसंक्रान्तिदिनपः फलेशः परिकीर्तितः।।

'कालयुक्त' नामक संवत्सर का फल

वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः।
सन्त्यथापि च संस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः।।
वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः।
सन्तीतयोऽपि सस्यानि प्रचुराणि वराणि च।। (क.सं. 29/67)

अतिवृष्टिः कालयुक्ते वत्सरे सुखिनो जनाः।
सततं सर्वसस्यानि सम्पूर्णाश्च तथा द्रुमाः।। (ना.सं.83/68)

कालयुगाब्दे संततं विवरिणाः सर्वधा त्रीशाः।
अध्वरनिरतो विप्राः क्वचित्क्वचित्चौरवह्निभयम्।।
(वृ.वा.सं. गुरू चाराध्याय-80)

कालयुक्त वर्ष में सभी मनुष्य सुखी रहें, अन्न की उपज अधिक हो किन्तु रोगों द्वारा लोग पीड़ित रहें, कश्यप ऋषि के अनुसार सभी प्राणी सुखी रहें। इतियों का भय होने पर भी अन्न वृद्धि हो, नारद ऋषि के अनुसार कालयुक्त वर्ष में उत्तम वर्षा जनवर्ग सुख, समस्त धरा धन-धान्य से परिपूर्ण तथा वृक्षों पर प्रचुर मात्रा में फल-फूल हों। ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के अनुसार कालयुक्त संवत्सर में समस्त राजगण निर्विरोध रहें, ब्राह्मण यज्ञों में तत्पर रहें, कहीं-कहीं चोर तथा अग्निकाण्ड भय हो। सभी ऋषियों के विचारों को समझते हुए इस वर्ष सभी प्राणी सुखी, भारतवर्ष उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त हो, अन्न, फल-फूलों, दूध दही, सभी खाद्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में हो, वैदिक संस्कृति का प्रचार हो विज्ञान में सफलता अवश्य हो किन्तु कहीं-कहीं पर राजनेताओं में परस्पर विरोधाभास होने के कारण सरकारी कामों में विघ्न हों, कार्य कुछ विलम्ब से सफल हों, चोरों का भय हो, सरकारी सम्पत्ति की हानि हो, दुर्घटनाओं तथा अग्निकाण्डों से जन धन की हानि हो। ब्राह्मण लोग यज्ञ, कथा वार्ताओं में संलग्न रहें सभी धर्मावलम्वि अपने-अपने धर्म का प्रचार करें और प्राणियों में मतमतान्तर भी बना रहेगा।

1. राजा मङ्गल का फल

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रहं च।
दुःखं प्रजाव्याधिवियोग पीडा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः।।

इस वर्ष का राजा मङ्गल है अतः सम्पूर्ण भारत वर्ष में अग्निकाण्डों से जनता पीड़ित हो, मनुष्यों की हानि हो, चोरों के डर से जनता व्याकुल रहे, राजाओं (मन्त्री

इत्यादि) में और प्रजा में व्याधि मध्यम वर्गीय प्रजा अधिक दु:खी रहे, परस्पर वियोग पीड़ा सहन करनी पड़े, वर्षा की कमी से फसलों की सामान्य हानि हो परन्तु फसलें अच्छी हो जाएं।

2. मन्त्री शनि का फल

रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विनय सं रहिता बहुदु:खदा:।
नजलदाजलदा जनता पदा जनपदेषु सुखंनधनं क्वचित्॥

इस वर्ष का मन्त्री शनि है अत: राजाओं में नम्रता न रहने से लोगों के लिए दु:खदायी रहें, सरकारी योजनाओं का सम्पूर्ण लाभ प्रजा को न मिले, मेघों द्वारा जल कम बरसे, फसलों में सामान्य हानि अवश्य हो महंगाई होने के कारण प्रजा के पास धन-धान्य तथा सुख की कमी हो।

3. संस्येश मङ्गल का फल

प्रथम धान्यपतौ धरणीसुते गजतुरङ्ग खरोष्ट्र गवामपि।
प्रभवदो बहुरोग धनो जलन समसौख्यकरं तुषधान्यहृत्॥

इस वर्ष सस्येश (अन्नका मालिक) मङ्गल अत: हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट और गाय बैलों में रोग की उत्पत्ति होगी, बाजार में नये-नये वाहनों की भरभार रहेगी, नई तकनीक से बने वाहन बाजार में सुलभता से उपलब्ध होंगे, अनुकूल वर्षा की कमी के कारण फसलों में सामान्य वृद्धि हो, कहीं-कहीं फसलों पर कुप्रभाव भी दिखाई देगा। जौ, गेहूं तथा चावलों की फसलें खराब हो सकती हैं परन्तु वाजरा, मक्का, मोठ इत्यादि की पैदावार अच्छी हो जाएगी।

4. धान्येश सूर्य का फल

पश्चाद्धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यंतदानहि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम्॥

धान्य भी अन्न का नाम है और सस्य भी अन्न ही का नाम है किन्तु गर्मी में जो जौ, गेहूं आदि होते हैं वह सस्य में समझे जाते हैं, और शीतकालीन फसलें जैसे मोठ, मूंग, बाजरा, मक्का इत्यादि को धान्य में समझते हैं, धान्येश सूर्य है अत: पश्चाद्धान्य (पीछे वाला धान्य) नहीं के बराबर हो, दालों के भावों में वृद्धि आएगी, राजाओं (मन्त्रियों) में विग्रह हो, प्रजा ज्वरादि रोगों से पीड़ित रहें।

5. मेधेश शुक्र का फल

भृगुसुतोजलदस्यपतिर्यदा जलमुचो जलदादि विशोभना:।
धननिधानयुताद्विजपालका नृपतयो जनता सुखदायका:॥

इस वर्ष में मेघेश (बादलों का स्वामी) शुक्र है अत: प्रचुर वर्षा के योग हैं, नदियों, तालाबों, वावलियों में प्रचुर जल रहेगा। ब्राह्मणों के पालक राजाओं के पास पर्याप्त धन-धान्य हो, प्रजा सुखी हो। कहीं-कहीं जल का आधिक्य होने से जन-धन की हानि भी हो सकती है।

6. रसेश बृहस्पति का फल

यदिगुरूरसपोजनसौख्यद: कमलवन्तिसरांसि तृणानिच।
जनपदाद्विजपूजन तत्परागज सुवाजिरथोष्ट्र युतानृपा:॥

इस वर्ष रसेश देवगुरु बृहस्पति है अत: प्रजा को सुखानुभूति हो, तृणादि की उत्पत्ति अच्छी हो, ब्राह्मणों के सेवा में प्रजा तत्पर रहे और राजाओं (मन्त्रियों) के पास सब प्रकार की सुख सुविधाओं की प्राप्ति बनी रहे, मन्त्रियों की प्रतिभा में वृद्धि हो।

7. नीरसेश मंगल का फल

नीरसेशोयदाभौम: प्रबालरक्तवाससाम्।
रक्तचन्दूनताम्रणामर्घवृद्धिर्दिनेदिने॥

नीरसेश मंगल है अत: लाल वर्ण की चीजें, चन्दन, ताम्बा इत्यादि के भावों में निरन्तर वृद्धि हो, सोना, चान्दी के भावों में ह्रास-वृद्धि होती रहेगी। व्यापारी वर्ग को समय समय पर लाभ होता रहेगा।

8. फलेश शुक्र का फल

यदि फलस्य पतो भृगजे धरामृदुकुमार महीरूहराशय:।
बहुफलानरनाथ सुभोगदाद्विजवरा: श्रुतिपाठपरायणा:॥

शुक्र फलों का स्वामी होने से पृथ्वी पर अनेक प्रकार के फलों फूलों, कोमल घास इत्यादि की वृद्धि हो, राजमन्त्रियों को उत्तम उत्तम भोग प्राप्त हों ब्राह्मण वेद पाठ परायन होकर यज्ञादि में रुचि लें, लोग ब्राह्मणों का अनुसरण करते हुए दान ध्यान में तत्पर होंगे।

9. धनेश चन्द्रमा का फल

धनपतिमृगलाञ्छनको यदा रसचय क्रयविक्रयतो धनम्।
वसनशालि सुगन्धरसं बहुद्रविणतैलयुतं नृप सौख्यदम्॥

धनेश चन्द्रमा हो तो क्रयविक्रय से धन संग्रह हो, व्यापारी वर्ग प्रसन्न रहे प्रचुर धनागम हो तथा नये-नये उद्योग अपने देश में उन्नति करें व्यवसाय में सभी प्रसन्न रहें विशेष रूप से वस्त्र, सुगन्धित तैल इतर, देसी घी का उत्पादन देश में अधिक हो, देश विदेशों में व्यापार की वृद्धि हो राजा लोग प्रतिष्ठा प्राप्त सुख ऐश्वर्य सम्पन्न हो।

10. दुर्गेश शुक्र का फल

नगरदेश विशेष पतिर्यदा भृगुसुतो बहुमत्यकरो मतः।
विनय वाणिजगेहसमः सुखोनगवने निटकेपिचदूरतः॥

शुक्र दुर्गेश हो तो भयानक विग्रह उत्पन्न हों, लोगों में मतमतान्तर हो तो लोग चल विचल हो जाएं, प्रजा में परस्पर दंगा-फसाद और अनेक प्रकार के वैर-विरोधों को वृद्धि हो, फिर भी देशाधियों तथा नराधियों को सुख हो, व्योपार में तथा घर में समान सुख हो, पर्वतों पर हरियाली हो।

रोहिणी निवासो तटे-तटे वृष्टिः सुशोभना
समय निवासो रंजक गृहे-रजके वृष्टिरुत्तमा
वापीकूप तडागानि नदीनद वनानि च।
जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजकै वेश्मनि॥

रोहिनी निवास तट पर है सुन्दर वर्षा के योग है समय का निवास रजक गृह में है उत्तम वृष्टि का योग बनता है। उत्तम वृष्टि का योग होने से फसले अच्छी होंगी, अन्न के भण्डार भरे रहेंगे प्रजा सुख का अनुभव करेगी। सुख साधनों की वृद्धि होगी। कुएं, तालाब, नदीनाले, दरियाओं में पानी पर्याप्त होगा। राजा, सस्येश, और नीरसेश मङ्गल है रसेश देवगुरु बृहस्पति है, मेघेश, फलेश और दुर्गेश इन तीनों अधिकारों को शुक्र ने प्राप्त किया है, मन्त्री पद शनि के पास है, धान्येश सूर्य और धनेश चन्द्रमा है। ग्रहों की उत्कृष्ट सभा में पाँच स्थान शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं तथा पाँच उपग्रहों को प्राप्त हुए परस्पर अधिकार साम्यता होने के कारण वर्षफल मध्यम होगा।

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

विक्रम संवत् 2081 सन् 2024 ई. में सूर्यनारायण आर्द्रा नक्षत्र में ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार तदनुसार 21 जून, 2024 को रात्रि 12:05 मिनट पर ज्येष्ठा/मूल नक्षत्र शुक्ल योग तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा, कालीन कुम्भ लग्न में प्रवेश करेंगे।

सूर्य आर्द्रा प्रवेश पूर्णिमा को हुआ है। अतः प्रजा के सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होंगे।

पौर्णमास्यां दिनेशस्वेदार्द्रा नक्षत्रगो भवेत्।
प्रजानां तर्हि विविधाः सम्पूर्णाः स्युमनोरथाः॥

आर्द्रा प्रवेश शुक्रवार और मूल नक्षत्र में होने के कारण स्त्री पुरुषों को कई प्रकार का भय और रोगों में वृद्धि हो फिर भी शुक्र के प्रभाव से शान्ति-पुष्टि से तुष्टि हो। शुक्ल योग बन जाने के कारण वर्षा प्रचुर मात्रा में होगी, फसलों के लिए शुभ रहेगा। किसान सन्तुष्ट रहें तथा धन-धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। आर्द्रा प्रवेश मध्यरात्रि में हुआ है अतः समस्त प्रजा सुखी हो, भोग-विलास से आनन्दित रहे आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त शुभ है बृहस्पति एवं शनि केन्द्र में हैं फलस्वरूप उपयोगी वर्षा में वृद्धि के साथ, साथ सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न हो।

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

21 जून सन् 2024 ई. रात्रि 12:05

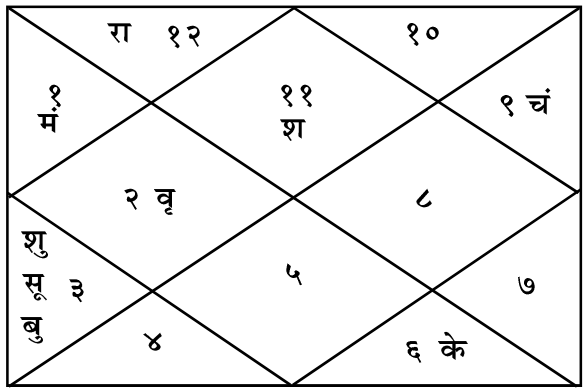

आय व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	02	11	02	11	14	02	11	02	14	08	08	14
व्यय	14	05	05	14	11	05	05	14	02	05	05	02

लाभ व्यय देखने की रीति :- अपनी राशि के लाभ खर्च अंकों को जोड़कर एक घटा कर 8 का भाग देने पर यदि 1, 2, 6, 7 बचें तो वर्ष उत्तम फलप्रद 3, 4, 5, 0 बचें तो वर्ष अधमफलप्रद जानें। **'शुभम्भूयात्'।**

मेषादि जन्मलग्न शुभाशुभ फल

मेषे लग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः।
सुधी स्वजनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः॥

मेष लग्न में उत्पन्न जातक उग्र स्वभाव, क्रोधी सुबुद्धियुक्त, अपने बान्धवों का हनन करने वाला, पराक्रमी तथा सबका प्रिय होता है, नेष्ट वर्ष- 4, 11, 16, 44, 58, विशेषदान पुण्य करते हुए दीर्घायु भोगता है।

पुराना प्रसूता गृह, निकास पूर्व की ओर, माता का सिर भी पूर्व में, रक्त वस्त्र धारण किया हो, प्रसव से पूर्व कुछ मीठा खाया हो, कष्ट अधिक हो, बच्चा तत्काल रोया, उपसूतिका 3 या 6 बच्चे का रंग गेहुंआ, सुन्दर नेत्र, वात-श्लेष्मा प्रकृति, कद सामान्य दृढ़ शरीर, वाणी चञ्चल हो!

वृष लग्न भवो लोके गुण भक्तः प्रियंवदः।
गुणी कृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजन प्रियः॥

वृष लग्न में उत्पन्न बालक लौकिक गुणों में प्रेम करने वाला, प्रिय वक्ता, गुणी, धनी, लोभी, वीर, समस्त जन समुदाय का प्यारा होता है, नेष्ट वर्ष 1, 2. 8.33, 44, 61, अन्न वस्त्रादि दान प्रिय, भोज्य, महामृत्युञ्जय जप के उपरान्त दीर्घायु भोगता है नया प्रसूति स्थान, निकास दक्षिण में, मुख्य द्वार पश्चिम में, माता का सिर दक्षिण में, प्रसव काल में श्वेत वस्त्र, माता ने प्रसव से पूर्व शुष्क अन्न रवाया, बच्चा उच्च स्वर से रोया, माता को सामान्य कष्ट, गोरामुखमण्डल लालिमायुक्त, कद लम्बा ढीला शरीर, अधोमुव प्रसव, उपसूतिका 3 या 4 हों।

मिथुनोदयों सञ्जातो मानी स्वजन वत्सलः।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्ररिमर्दकः॥

मिथुन लग्न में उत्पन्न वालक, मानी, स्वजनों का प्यारा स्वल्प त्यागी, भोगी, धनाढ्य, कामी, दीर्घसूत्री चिरक्रिया (देरी से कार्य करने वाला) शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष 4, 10, 14, 38, 57 देवार्चन गौदानादि से पूर्णायु हो। नया प्रसूता स्थान, गृह द्वार पश्चिम में, मुख्य द्वार उत्तर में माता का सिर पश्चिम में, पीले पुराने वस्त्र धारण किए हैं। प्रसव समय से पूर्व, कुछ नमकीन खाया हो, दाहिने अङ्ग में निशान, ज्वरादि से कष्ट, जन्म स्थान जमीन से ऊपर, बच्चा शीघ्र ही रोया, उपसूतिका 3 या 5, सुन्दर, सर्वगुण सम्पन्न, नेत्रों में कष्ट बल्गामी प्रकृति, चञ्चल स्वभाव, सामान्य कद, मन्द बुद्धि विलक्षण स्वभाविक प्रसव, महामृत्युञ्जय, रूद्राभिषेकादि से आयु श्रेष्ठ हो।

कर्क लग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जनप्रियः।
मिष्ठान्न पान भोगी च सुभाग्यः स्वजनप्रियः॥

कर्क लग्न में उत्पन्न जातक भोगी, धर्मात्मा, स्वजनप्रिय, मिष्ठान्न प्रिय, सुयशस्वी पारिवारिक जनों का प्रिय होता है, नेष्ट वर्ष- 4, 25, 40, 48, 62, जपदानादि करने से पूर्णायु हो प्रसूतिस्थान नवीन, द्वार उत्तर की ओर, प्रमुख द्वार पूर्व में, माता का सिर उत्तर में, प्रसव के समय लाल कुछ सफेद वस्त्र धारण किये हों, पिता को परेशानी, बच्चा दीर्घ स्वर से रोया, उपसूतिका 4 या 5 बालक का रंग गोरा, कद लम्बा, कोमलाङ्ग, चञ्चल नेत्र, वात श्लेष्म प्रकृति, मीठी वाणी, वामाङ्ग, में चिह्न, सामान्य प्रसव, दान पुण्य गोदान तथा भूमिदान से पूर्णायु भोग करे।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः।
स्वल्पोदरोऽल्प पुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः॥

सिंहलग्न में उत्पन्न बालक भोगी, शत्रुओं को पराजित करने वाला, कृशोदर, अल्प सन्तान से युक्त, उत्साही, युद्ध में पराक्रमी नेष्ट वर्ष- 5, 13, 28, 36, 48, सूर्यदेव की आराधना, विशेषदानपुण्य श्री विष्णु अराधना से आयु 83 वर्षों के आसपास हो प्रसूति द्वार पूर्व को, मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में, नया मकान माता का शिर पूर्व में, चित्र-विचित्र भोजन, कुछ लालवस्त्र धारण किया हो, शाक युक्त खट्टा खाया हो, पीड़ा अधिक भूमि पर जन्म, शिशु अधिक रोया, उपसूतिका 3 या 5 रंग गोरा, घने, केश, पीठ पर चिह्न, चेहरा सामान्य लम्बा, छोटा कद शरीर कोमल, प्रतिभा सम्पन्न, चञ्चल नेत्र, कफपित्त प्रकृति वाणी कर्कश, सामान्य प्रसव, आदित्य हृदय स्तोत्र पाठ, श्रीरघुनाथ पूजन दान पुण्यादि से समाज में प्रतिष्ठित हो।

कन्यालग्नभवो वालो नानाशास्त्र विशारदः।
सौभाग्यगुणसम्पन्नः सुन्दरा सुरतप्रियः॥

कन्या लग्न में उत्पन्न वालक शास्त्रों में निपुण, सौभाग्य गुण सम्पन्न, कामी विषयाशक्त होता है। नेष्ट वर्ष 4, 16, 23, 36, 55, छाया पात्र दान, गौदान, शिवजी की पूजा अर्चना से पूर्णायु हो। प्रसूत निवास पुराना, घर के दक्षिण भाग में प्रसव गृह द्वार उत्तर दिशा में, माता का सिर उत्तर में, वस्त्र पाण्डूरंग सफेद लाल, प्रसव से पूर्व मिष्ठान्न खाया, कष्ट अधिक, जन्म भूमि पर परन्तु कुछ उच्च स्थान पर, बच्चे का रंग गोरा, गाल व जंघा में चिह्न, दृष्टि उत्तम, प्रकृतिमान् वातकफ, कद सामान्य, सर्वाङ्ग सुन्दर, शरीर, सामान्य प्रसव हुआ हो।

तुला लग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीवनः।
विद्वान् सर्वकला भिज्ञो धनाढ्यो नरपूजितः॥

तुला लग्न में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, सत्कर्म में जीवन व्यतीत हो, शास्त्रों का ज्ञाता, सर्वगुण सम्पन्न तथा विद्वानों में पूजित होता है। नेष्ट वर्ष 3, 8, 15, 31, 35, 46, 62, 64 दान पुण्य, माता भगवती वैष्णवी की पूजा अर्चना से पूर्णायु हो प्रसूता स्थान नवीन, प्रसूति कक्ष पश्चिम भाग में, द्वार पूर्व में, माता का सिर पश्चिम में, प्रसव से पूर्व माता ने कुछ खाकर ठण्डा पानी पिया प्रसव में कष्ट, घर में कुछ झगड़ा भी हुआ, समतल भूमि पर जन्म, बच्चा धीमा रोया, उपसूतिकाएं 3 या 5, कोई कन्या भी शामिल हुई हो, शरीर कमजोर, चेहरा पीला, कद सामान्य से अधिक, चञ्चल नेत्र वाला हो।

वृश्चिकोदयसञ्जातः शौर्यवानतिदुष्टधीः।
विज्ञानज्ञानसम्पन्नः सुखी सद्विग्रहः सुधीः॥

वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक पराक्रमी, दुष्ट बुद्धि वाला विज्ञान ज्ञान सम्पन्न, सुखी, दिव्य शरीर युक्त सुविज्ञ होता है। नेष्ट वर्ष 3, 11, 28, 38, 52, 62 – महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजनादि से दीर्घायु हो। प्रसूति स्थान पुराना, द्वार उत्तर में, मुख्यद्वारः द्वार पूर्व की ओर माता का सिर, उत्तर या दक्षिण, पुराने वस्त्र लाल या दग्ध कुछ क्रोधपूर्ण सामान्य भोजन किया, प्रसव में अधिक कष्ट बच्चा धीमे रोया, उपसूतिकाएं 4 या 5, पिता को परेशानी काले घुंघराले बाल, रक्त पित्त, प्रकृति, कद सामान्य, सामान्य प्रसव हो।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान्सुधी
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः॥

धनुर्लग्न में उत्पन्न जातक नीतिका न, धार्मिक उत्तम बुद्धि वाला, कुलश्रेष्ठ विद्वान्, सब को पालने वाला होता है। नेष्ट वर्ष 2, 10, 18, 31, 38, 42 देवार्चन पूजा पाठ से श्रेय फलादेश होने हैं, प्रसूता स्थान नया, जन्म दक्षिण कोने में, गृहद्वार पूर्व दिशा में या उत्तर दिशा में, माता का सिर पूर्व में, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, प्रसव से पूर्व पक्वान भोजन वा कर ठण्डा जल पिया हो प्रसव में कष्ट अधिक, जन्म उच्च स्थान पर, बच्चा दीर्घ स्वर में रोया, उपसूतिकाएं 1 या 5, बच्चे का रंग गोरा, सुन्दर, चञ्चल, नेत्र छाती पर चिह्न, पित्तोष्ण प्रकृति, कद सामान्य हो।

मकरोदय सञ्जातो नीचकर्मा, बहुप्रजः।
लुब्धोऽलसो विनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः॥

मकर लग्न में, उत्पन्न बालक नीच कर्म करने वाला, अधिक सन्तानवान, लोभी, आलसी होने के कारण कार्य को नष्ट करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष 5, 13, 27, 36, 57, 62, 87 छाया पात्र, माषान्न तैलादि दान, रुद्राभिषेक करवाने से दीर्घायु हो। प्रसूति भवन पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण में जन्म, पश्चिम कोण में, माता का सिर पश्चिम में, वस्त्र पुराने विचित्र रंग, प्रसव से पहले नमकीन खाया तथा जल पिया हो, कष्ट सामान्य जन्म भूमि पर, बालक धीम से रोया, उपसूतिकाएं 1 या 5 बच्चे का रंग सांवला, केश घने, मस्तक ऊँचा कद दरमयाना सुन्दराङ्ग होता है।

कुम्भलग्नोदये जातश्च चञ्चल चित्तोऽतिसौहृदः।
परदाररतोनित्यं मृदुकायो महासुखी॥

कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक चञ्चल, चित्त, बहुत मित्रों वाला, कोमलाङ्ग तथा महासुखी होता है। नेष्ट वर्ष 2, 10, 28, 33, 48, 64 दान पुण्य से पूर्णायु भोगे। प्रसूती भवन कुछ पुराना कुछ नया, दक्षिण पश्चिम में द्वार, माता का शिर उत्तर या पश्चिम में हो, काले वस्त्र या मलिन वस्त्र पहने हों, प्रसव से पूर्व कषैला चटपटा कुछ खाया, पिता प्रसन्न के पश्चात घर में आए, प्रसव में कष्ट कम, बच्चा दीर्घ स्वर में रोया, उपसूतिकाएं 3 या 4, सामान्य कद, चञ्चल नेत्र, मस्तक लम्बा, मधुरवाणी सामान्य प्रसव हो।

मीनलग्नोदये जातो रत्न काञ्चनपूरितः।
अल्पकामोऽति दौर्वल्य दीर्घकालविचिन्तकः॥

मीन लग्न में उत्पन्न जातक रत्न, सोना चान्दी से परिपूर्ण स्वल्प कामी, कृशशरीर, विशेष चिन्तन करने वाला होता है। नेष्टवर्ष 1, 8, 18, 25, 18, गुरु, जन, देवार्चन इत्यादि से पूर्णर्णयु होती है। प्रसूति भवन कुछ नया कुछ पुराना, प्रसूता कक्ष का द्वार उत्तर में या दक्षिण में प्रमुव द्वार उत्तर में, माता का सिर उत्तर में, वस्त्र वसन्ती कुछ मलिन पिता के सानिध्य में, जन्म ऊँचे स्थान पर, प्रसव में कष्ट हुआ, जातक देर से रोया, उपसूतिकाएं 2 या 3 या 5, बच्चे का रंग गोरा, सुन्दर नाक चञ्चल नेत्रों कला, वात पित्त प्रकृति, जन्म, सामान्य प्रक्रिया से हुआ गोदान, रुद्राभिषेक महामृत्युञ्जय जप से विशेष सुख हो।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त/अन्युच्छया मुहूर्त

स्वयं सिद्ध मुहूर्त में चन्द्रमा, लग्न, वार, अन्य कुयोग स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं अतः इन अवसरों पर कोई भी माङ्गलिक कार्य करना शुभ होता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, जानकी नवमी, गङ्गा दशमी, निर्जला एकादशी, जन्माष्टमी, गुग्गा नवमी, विजयादशमी, दीपावली, देव प्रबोधिनी एकादशी तथा वसन्त पञ्चमी ये सभी स्वयंसिद्ध मुहूर्त हैं।

अत्यावश्यक में दिशाशूल विचार

रविवार को ताम्बूल (पान) सोमवार चन्दन अथवा गन्ध, मङ्गलवार को छाछ (मठ), बुधवार को पुष्प गुरुवार को दही, शुक्रवार को घृत और शनिवार को तिल अथवा तैल का दान करके यात्रा आरम्भ करें।।

नवरात्रों में देवी प्रतिष्ठा काल

प्रातः आवाहयेदेवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्।
प्रातः प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत्॥ (देवीपुराण)
भास्करोदयमारभ्य यावत्तु दशनाडिकाः।
प्रातः काल इति प्रोक्तं स्थापना रोपणादिष्विति॥

प्रातः काल ही देवी का आह्वान करें, प्रातः काल ही स्थापना, पूजन व विसर्जन करें। सूर्योदय से लेकर दस घटी, (चार घण्टे) पर्यन्त स्थापन व आरोपणादि कर्मों में प्रातः काल माना गया है।

शिववास जानने का प्रकार

तिथिं च द्विगुणी कृत्य पञ्चभिश्च समन्वितम्।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं शिववास उच्यते॥
एके कैलाश वासं च द्वितीये गौरि सन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढं चतुर्थे च सभास्थिते॥
पञ्चमे भोजनं चैव क्रीड़ायान्तु रसात्मके।
शून्ये श्मशानके चैव शिववासञ्च योजयेत्॥

वर्तमान तिथि को 2 से गुणा करके 5 जोड़ें, तत्पश्चात् 7 से भाग देवें, शेष 1 रहे तो शिववास कैलाश पर्वत पर, 2 में गौरी के पार्श्व में, 3 में वृषारूढ़, 4 में सभा में सामान्य 5 में भोजन में, 6 में क्रीड़ा तथा शून्य में श्मशान में शिव का वास होता है।

शिवार्चन के लिए शुभतिथियाँ

शुक्ल पक्ष	2, 5, 6, 7, 9, 12, 13, 14
कृष्ण पक्ष	1, 4, 5, 6, 8, 11, 12, 30

शिववास का फल

कैलाशे तु भवेत्सौख्यं गौर्यायान्तु शुभं वदेत्।
वृषभे च श्रियः प्राप्तिः क्रीड़ा सन्तापकारकः॥
"श्मशाने तु भवेन्मृत्युः शिववास फलं वदेत्"

कैलाश में शिववास हो तो सुखकारक, गौरी के साथ शुभप्रद, वृषभ पर आरूढ़ हो तो धान्य धन की प्राप्ति, क्रीड़ा में सन्तापकारक, सभा व भोजन में मध्यम फलप्रद तथा श्मशान में मृत्युप्रद होता है।

शेयर बाजार फल वर्ष सन् 2024–25 ई.

श्री प्रवीन कुमार जैन – जीवन परिचय

प्रवीन कुमार जैन

जातक तत्व के तृतीय विवेक के श्लोक 66 में महादेव पाठक ने बताया है कि यदि 'दशमेश का नवांशेश बुध हो तो जातक साहित्यिक गतिविधियों सम्बन्धित लेखक, अनुवादक, एकाउन्टेन्ट, ज्योतिषी, अध्यापक, गणितज्ञ, वकील तथा पुस्तक विक्रेता की वृति अपनाता है।' कन्या लग्न, श्रवण नक्षत्र, मकर राशि में जन्मे सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद श्री प्रवीन कुमार जैन के जीवन पर उक्त योग पूर्णतया घटित होता है। आपको बचपन से साहित्यिक कृतियों से लगाव रहा है। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रायः सभी सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं के अतिरिकत आपने अंग्रेजी भाषा के हस्ताक्षरों को पढ़ा। युवावस्था में मैकेनिकेल इन्जीनियरिंग के अतिरिक्त टैक्स्टाईल इन्जीनियरिंग तथा एम.बी.ए. (वित्त) में उपाधि प्राप्त की। रूचि बढ़ी तो संस्कृत तथा ज्योतिष विषय का विधिवत अध्ययन किया। गत् लगभग 25 वर्षों से आप ज्योतिष जगत में सक्रिय हैं। आप पंचाग कर्ता हैं, ज्योतिष विषयक मूर्धन्य लेखक हैं भूमंड़लीय ज्योतिष में निष्णात हैं। ज्योतिष जगत् की विभिन्न मासिक पत्रिकाओं में आपके हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती भाषाओं में आपके लेख निरन्तर प्रकाशित होते हैं। राष्ट्रीय पंचागों में प्रकाशित व्यापारिक भविष्यवाणियाँ तथा राजनैतिक आकलन आपकी विशेषता है। अब तक आपके लगभग 500 लेख तथा चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'शेयर मार्केट एस्ट्रोलाजी' तथा अन्य दो पुस्तकों पर कार्य प्रगति पर है।

प्रवीन कुमार जैन

हमारा शेयर बाजार का आकलन पूर्व में बहुचर्चित, सर्वत्र प्रशसिंत तथा सराहनीय रहा है। विभिन्न संचार माध्यमों से दिन प्रतिदिन अनेक पाठकों ने इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। पूर्व की भांति इस वर्ष 2024–25 के लिये प्रस्तुत शेयर बाजार का आकलन उन्हीं ज्योतिषीय सिंद्वातों, मतों, परम्पराओं तथा ग्रह गोचर पर आधारित है जिन की गणना के आधार पर किया गया

गत वर्षों की भांति हम इस आलेख में वर्ष के प्रत्येक आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स वार के लिये शेयर बाजार का आकलन प्रस्तुत कर रहे है तो उसका कारण जैसा कि हम पूर्व में भी कह चुके है, मात्र इतना है कि अनेक विद्वानों ने शेयर बाजार का लग्न वृश्चिक निर्धारित किया है। अपने संशोधन तथा शोध के उपरान्त हम भी इस निर्णय पर पहुंचे है कि आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स ग्रह का शेयर बाजार पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हमारा प्रयास सदैव शोधात्मक कार्य को प्रस्तुत करना रहा है ताकि वह अनेकानेक प्रकार से विद्वत जनों के लिये न केवल उपयोगी हो वरन् विचारोत्तेजक भी हो तथा विद्वान पाठकों को इस दिशा में और भी अधिक परिष्कृत रुप में कार्य करने के लिये प्रेरित करे। ध्यान रहे कि बाजार के आकलन में प्रतिशत में बताई गई तेजी मंदी इन्ट्राडे है, बाजार किसी दिन तेजी में जाने के उपरान्त भी पिछले दिन की तुलना में गिरकर बंद हुआ हो सकता है।

शेयर बाजार की वोलेटिलिटी एवं गिरावट : वर्ष 2024 में गुरु मेष राशि से वृष राशि में गोचर करेंगे। वर्ष में बैकिंग सैक्टर की परफारमेन्स पर प्रश्न चिन्ह लगेंगे। कुछ बैंक्स का परस्पर विलय होगा तो कई बैंक्स का निजीकरण होगा। 01 मई तक नेचुरल रबर तथा रबर उत्पादों में गिरावट से इस सैक्टर के उत्पादों में तेजी रहेगी। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स के अपनी मूल त्रिकोण राशि कुंभ से गोचर में खनिज क्षेत्र में नवीन खोज होगी। महत्वपूर्ण तथा मूल्यवान खनिज पदार्थों के भंडार मिलेंगे। माईनिंग, पैट्रोलियम, रिफाईनरीज के शेयर्स से अच्छा रिर्टन मिलेगा। रियल स्टेट सैक्टर का प्रदर्शन अच्छा रहेगा। एफ. एम. सी. जी. सैक्टर अच्छा परफार्म करेंगे। देश के सकल उत्पाद में इस सैक्टर का योगदान महत्वपूर्ण रहेगा। राहु नेपच्यून के मीन राशि से गोचर में मेडिसिन के क्षेत्र में नई खोज होगी। जीवन रक्षक नवीन औषधियों पर कार्य

होगा। हैल्थ सैक्टर में सुधार होगा। मेडिकल टूरिज्म बढ़ेगा। टैलीकम्युनिकेशन तथा आई टी सैक्टर में महत्वपूर्ण बदलाव होंगे। नये कायदे कानून बनेंगे। शेयर बाजार में स्थिरता का अभाव रहेगा।

शेयर बाजार 2024

01 जनवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.64 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष प्रतिशत 33.36 शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। 02 जनवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.64 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। 03 जनवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.64 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिग सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। 04 जनवरी : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 25.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर स्टील, माईनिंग काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे।

05 जनवरी :शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.64 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। 08 जनवरी : आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। इस सप्ताह में एडवांस चलने वाले शेयर्स अधिक होने पर भी संवेदी सूचंकाक निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 25.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। 09 जनवरी : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58. 31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 25.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे।

10 जनवरी :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16. 67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.69 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। 11 जनवरी : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.69 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे।

12 जनवरी : आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 25.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

15 जनवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 25.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, जिंक, जूट, टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

16 जनवरी : शेयर बाजार में घटबढ़ चलेगी। कोई स्पेस्फिक ट्रेंड नहीं बनेगा। 50. 00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 25.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, चाय, काफी डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में तेजी मिलेगी। 17 जनवरी : चलती लाईन बदलेगी। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहने के उपरान्त भी शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में तेजी मिलेगी। 18 जनवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर निगेटिव रहेंगे।

19 जनवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, लेदर इण्डस्ट्रीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

22 जनवरी : आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 25 जनवरी तक संवेदी सूचंकाक निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल

ब्रिवरीज, आयल शेयर्स नेवीगेशन फिशरीज सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

23 जनवरी : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पॉजिटिव रहेंगे।

24 जनवरी : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पॉजिटिव रहेंगे। रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

25 जनवरी : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.60 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पॉजिटिव रहेंगे। लेदर इण्डस्ट्री, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

26 जनवरी : गणतन्त्र दिवस

29 जनवरी : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.95 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पॉजिटिव रहेंगे। प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज में साधारण कामकाज होगा। 30 जनवरी :शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स के शेयरों में गिरावट रहेगी। 31 जनवरी : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33. 30 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 42.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज , आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, निगेटिव रहेंगे।

01 फरवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। .32.50 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 42.50 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

02 फरवरी : शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 25.00 . प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज सैक्टर्स में साधारण कामकाज होगा। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में तेजी रहेगी।

05 फरवरी : आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 08 फरवरी तक संवेदी सूचंकाक निगेटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे। टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स में साधारण कामकाज होगा।

06 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33. 50 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.50 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर, आयल, पेट्रोलियम, होटल, ब्रिवरीज , नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पॉजिटिव रहेंगे।

07 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33. 50 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.50 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज पॉजिटिव रहेंगी। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

08 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.50 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33. 50 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.50 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील माईनिंग सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे। मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

09 फरवरी: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। ...16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 41.65 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर मिल्स के शेयर्स में तेजी मिलेगी।

12 फरवरी: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 08.33 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 41.65 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर मिल्स के शेयर्स साधारण रहेंगे।

13 फरवरी: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 42.15 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.18

प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी।

14 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.68 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.97 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, लेदर इण्डस्ट्रीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट में गिरावट रहेगी। ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी।

15 फरवरी: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 08.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, लेदर इण्डस्ट्रीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट में गिरावट रहेगी। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

16 फरवरी: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33.50 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.17 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर साधारण रहेंगे।

19 फरवरी: आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 19 से 22 फरवरी तक संवेदी सूचंकाक निगेटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33.50 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.17 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर साधारण रहेंगे।

20 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

21 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.68 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

22 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

23 फरवरी: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, जिंक, जूट टोबैको, रबर, बैकिंग सैक्टर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

26 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 08.33 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 32.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 59.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग सैक्टर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे। शुगर सैक्टर साधारण रहेगा।

27 फरवरी: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 08.33 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 32.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 59.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग जिंक जूट टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में साधारण कामकाज होगा।

28 फरवरी:शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 08.33 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 32.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 59.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग जिंक जूट टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे। ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

29 फरवरी: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 08.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम, आयल, सीमेंट, बिल्ड़िंग,

लेदर, रियल एस्टेट, मारबल, माईनिंग तथा लेदर इण्डस्ट्रीज में गिरावट रहेगी। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

01 मार्च: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, सिल्क, काटन टैक्स्टाईल, शुगर गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

04 मार्च: आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। सिल्क, काटन टैक्स्टाईल, शुगर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

05 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.68 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। रबर तथा बैकिंग सैक्टर में गिरावट आयेगी। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर मिल्स सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

06 मार्च:शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर्स में तेजी रहेगी। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

07 मार्च: आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 08.33 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 74.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल, चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील सैक्टर्स सामान्य रहेंगे।

08 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सिल्क, काटन, टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स में तेजी आयेगी। कन्फैक्शनरी के शेयर्स में गिरावट रहेगी। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

11 मार्च: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सिल्क, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पॉजिटिव रहेंगे। जिंक जूट टोबैको, रबर, बैकिंग, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

12 मार्च: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.68 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में साधारण कामकाज होगा।

13 मार्च: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.80 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.50 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। पेट्रोलियम, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में साधारण कामकाज होगा।

14 मार्च: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 16.75 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.75 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.50 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर मिल सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। पेट्रोलियम, होटल्स, ब्रिवरीज, आयल नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

15 मार्च: शेयर बाजार पाजीटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.95 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल सैक्टर्स में तेजी रहेगी। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर मिल्स के शेयर्स में गिरावट रहेगी। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स साधारण रहेंगे।

18 मार्च: आज से बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 8.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 8. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

20 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर पाजिटिव रहेंगे। चाय काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

21 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

22 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

25 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16. 70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

26 मार्च: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.68 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.62 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

27 मार्च: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 30 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

28 मार्च: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 8. 30 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.03 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

29 मार्च: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 30 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

01 अप्रैल : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

02 अप्रैल : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.75 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 57.90 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

03 अप्रैल : बाजार का ट्रेंड बदलेगा।शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

04 अप्रैल : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 अप्रैल : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

08 अप्रैल : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.32

प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

09 अप्रैल : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

10 अप्रैल : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

11 अप्रैल : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 42.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 48.97 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

12 अप्रैल : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

15 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

16 अप्रैल : बाजार का ट्रेंड बदलेगा।शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर, स्टील, माईनिंग, काटन, टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

17 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज , आयल, नेवीगेशन फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

18 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

22 अप्रैल : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.80 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.20 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

23 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16. 67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज कमजोर रहेंगे।

25 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

26 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

29 अप्रैल :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।

चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

30 अप्रैल : बाजार का ट्रेंड बदलेगा।शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

01 मई:शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

02 मई:शेयर बाजार निगेटिव रहेगा।.33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजिटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

03 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्सटोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज, आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

06 मई: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

07 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.34 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.31 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

08 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 30 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

09 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज, आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजिटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

10 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 30 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.05 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

13 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

14 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज , आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पॉजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

15 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.63 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.04 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड

ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल तथा शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

16 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 34 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.34 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

17 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 30 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

20 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16. 67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.66 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज , आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

21 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.97 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज के शेयर निगेटिव रहेंगे।

22 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेगा। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव जायेगा।

23 मई:शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। ग्लास, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, चाय काफी डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स में तेजी रहेगी। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर निगेटिव रहेगा।

27 मई: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक जूट टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज के शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेगा।

28 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, पाजीटिव रहेगा। काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर निगेटिव रहेगा।

29 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेगा। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेगा।

30 मई: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेगा। पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज, आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर निगेटिव रहेगा।

31 मई: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेगा। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, आयल शेयर्स नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर निगेटिव रहेगा।

03 जून: चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेगा। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

04 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव

रहेंगे।टोबेको, रबर तथा बैकिंग कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर मिल्स सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, टोबेको, रबर, कन्फैक्शनरी, शुगर मिल्स, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

06 जून: बाजार का ट्रेंड बदलेगा।शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर मिल्स सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

07 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग, कन्फैक्शनरी, शुगर मिल्स सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

10 जून: बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन पॉजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

11 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

12 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

13 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

14 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे।08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष .58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगें।

17 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। चलती लाईन बदलेगी। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

18 जून:शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

20 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज , आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा

हैवी मशीनरी, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

21 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 जून: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.66 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

25 जून: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16. 67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.66 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

26 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

27 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 75.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग पाजीटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

28 जून: शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

01 जुलाई : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

02 जुलाई :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

03 जुलाई : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

04 जुलाई : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम कम्पनीज, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 जुलाई : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

08 जुलाई : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.32 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

09 जुलाई : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.35 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

10 जुलाई : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव

रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

11 जुलाई :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

12 जुलाई : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

15 जुलाई : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार में घटबढ़ चलेगी। रूझान तेजी का रहेगा। 41.62 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.03 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

16 जुलाई :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.62 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.06 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। पेट्रोलियम कम्पनीज, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

17 जुलाई :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, पेट्रोलियम, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

18 जुलाई :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.37 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल, हैवी मशीनरी, पेट्रोलियम सैक्टर्स, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 जुलाई :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 32 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.37 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। पेट्रोलियम, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

22 जुलाई :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।.41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16. 65 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.70 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

23 जुलाई : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.65 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.70 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 जुलाई :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग सैक्टर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, पेट्रोलियम, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

25 जुलाई :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

26 जुलाई : चलती लाईन बदलेगी।शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर निगेटिव रहेंगे।

29 जुलाई :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।

आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

30 जुलाई :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, पेट्रोलियम शेयर, होटल ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

31 जुलाई :शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, आयल एण्ड पेट्रोलियम, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

01 अगस्त : शेयर बाजार में घटबढ़ चलेगी। रूझान तेजी का रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

02 अगस्त : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 अगस्त :शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08. 33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

06 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

07 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। पेट्रोलियम तथा आयल सैक्टर, होटल, ब्रिवरीज सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

08 अगस्त : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

09 अगस्त : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

12 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

13 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.34 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, ग्लास, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

14 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज,

प्रीसीयस स्टोन, पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, आयल कम्पनीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

15 अगस्त : स्वतन्त्रता दिवस

16 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.34 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.01 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, पेट्रोलियम एण्ड आयल सैक्टर, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल सैक्टर्स, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

20 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

21 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00. प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

22 अगस्त : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, कन्फैक्शनरी, शुगर निगेटिव रहेंगे।

23 अगस्त : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, काटन टैक्स्टाईल, शुगर पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, कन्फैक्शनरी, निगेटिव रहेंगे।

26 अगस्त : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

27 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, काटन टैक्स्टाईल, शुगर पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

28 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

29 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

30 अगस्त : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

02 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव

रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

03 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

04 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 सितम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

06 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

09 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 64.60 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

10 सितम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर, पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

11 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम एण्ड आयल सैक्टर, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

12 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक जूट टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम एण्ड आयल सैक्टर, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

13 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम सैक्टर, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

16 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.60 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। पेट्रोलियम शेयर, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

17 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

18 सितम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 सितम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30. प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम एण्ड आयल सैक्टर, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

20 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.60 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

23 सितम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम सैक्टर, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

25 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

26 सितम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

27 सितम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

30 सितम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.70 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.30 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

01 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

02 अक्तूबर : गांधी जयन्ती

03 अक्तूबर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 33.35 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 49.98 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

04 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।.16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

07 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 16.67 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष

58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे।टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

08 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।.25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

09 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।.25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम सैक्टर, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

10 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा।25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर, बैकिंग, पेट्रोलियम सैक्टर, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

11 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। जिंक, जूट, टोबैको, रबर तथा बैकिंग, पेट्रोलियम तथा आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

14 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा।25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

15 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम, आयल, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

16 अक्तूबर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.68 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

17 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर, पेट्रोलियम, आयल, होटल ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

18 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 25.00 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 66.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

21 अक्तूबर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

22 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा।33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

23 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 58.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट कापर स्टील माईनिंग सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 अक्तूबर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा।शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर, पेट्रोलियम एण्ड आयलश, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल शुगर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

25 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

28 अक्तूबर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.34 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.66 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, चाय, काफी, डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

29 अक्तूबर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान पाजिटिव रहेगा। 33.32 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.68 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। सीमेंट, कापर, स्टील, माईनिंग, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

30 अक्तूबर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान पाजिटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

31 अक्तूबर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.00 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

01 नवम्बर : दीपावली

04 नवम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

06 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

07 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर, पेट्रोलियम एण्ड आयल, होटल, ब्रिवरीज, नेवीगेशन, फिशरीज, ग्लास, सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

08 नवम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, शुगर, काटन टैक्स्टाईल सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन निगेटिव रहेंगे।

11 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर निगेटिव रहेंगे।

12 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, काटन टैक्स्टाईल,शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

13 नवम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

14 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

15 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 50.02 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, टोबेको, रबर, बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

18 नवम्बर : शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। बाजार का ट्रेंड बदलेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। कन्फैक्शनरी, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट, लेदर, गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, निगेटिव रहेंगे।

19 नवम्बर : शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

20 नवम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार घटबढ़ में रहेगा। रूझान निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

21 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। गिल्ट एन्ड सिक्योरिटीज, जैम्स एण्ड ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, काटन टैक्स्टाईल, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

22 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

25 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

26 नवम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

27 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

28 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

29 नवम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय काफी डिस्टलरीज आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स शुक्र पाजीटिव सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव

02 दिसम्बर: बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 58.31 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.36 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी कन्फैक्शनरी, शुगर सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

03 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

04 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

05 दिसम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी, जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

06 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल, , हैवी मशीनरी, जैम्स, ज्वेलरीज, प्रीसीयस स्टोन, गवर्नमेन्ट पेपर्स, गिल्ट एज्ड सिक्योरिटीज सैक्टर्स पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

09 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल, हैवी मशीनरी सैक्टर्स, ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

10 दिसम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। चाय, काफी, डिस्टलरीज, आयरन एण्ड स्टील, मेटल तथा हैवी मशीनरी सैक्टर्स, ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

11 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

12 दिसम्बर: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

13 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

16 दिसम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

17 दिसम्बर: शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.68 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

18 दिसम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

19 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.67 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.33 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

20 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.70 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.65 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। ब्रीवरीज, होटल्स, पेट्रोलियम तथा आयल कम्पनीज, सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

23 दिसम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

24 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 25.00 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 33.35 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

25 दिसम्बर : क्रिसमस डे

26 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.68 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

27 दिसम्बर : शेयर बाजार निगेटिव रहेगा। 41.65 प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 16.68 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

30 दिसम्बर : बाजार का ट्रेंड बदलेगा। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग, कन्फैक्शनरी, रियल एस्टेट तथा लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

31 दिसम्बर : चलती लाईन बदलेगी। शेयर बाजार पाजिटिव रहेगा। 50.00 प्रतिशत प्रतिशत शेयर्स एडवांस रहेंगे। 08.33 प्रतिशत शेयरों में सामान्य कामकाज होगा। शेष 41.67 प्रतिशत शेयर्स निगेटिव रहेंगे। काटन टैक्स्टाईल, शुगर, टोबेको, रबर तथा बैकिंग सैक्टर पाजीटिव रहेंगे। सीमेंट, माईनिंग रियल एस्टेट कन्फैक्शनरी, लेदर सैक्टर्स निगेटिव रहेंगे।

शेयर बाजार का उपरोक्त संभावित रुख ग्रह गोचर पर आधारित है तथा बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया जा रहा है। बाजार स्थानीय परिस्थितियों के अतिरिक्त वैश्विक एवं स्थानिक राजनैतिक वातावरण, केन्द्र तथा प्रदेश सरकार की नीतियों आदि पर निर्भर करता है। बाजार में काम करने व्यापार करने से पूर्व बाजार का आकलन कर लेना हितावह है। ज्योतिषीय आधार पर किये गये व्यापार से होने वाले लाभ अथवा हानि के लिये लेखक, मुद्रक, प्रकाशक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं होंगे। बाजार की वार्षिक, अर्धवार्षिक रिर्पोट के लिये लेखक से उनके स्थायी आवास सी- 82 वल्लभ नगर, उमा नगर के सामने, नोविनो तरसाली रोड़, वड़ोदरा (गुजरात), पिन - 390009 मो 095 7433 7962 पर अथवा चउनउउल/हउंपसण्बवउ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

दैवज्ञ की दृष्टि से (वैश्विक परिदृष्य)

विहंगावलोकन: विश्व के प्रत्येक देश परअन्य देशो की राजनीति, राजनैतिक उलटफेर तथा सामरिक गतिविधियों के प्रभाव को हम वर्ष 2023 में रुस यूक्रेन के माध्यम से देश चुके है, इसमें किसी किन्तु परन्तु का स्थान ही बचता। इसके अतिरिक्त भी देश की दशा तथा दिशा पर उस देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति के आचार, विचार तथा ग्रह गोचर का प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है, अत: देश विशेष के साथ साथ उस देश के उच्च पदासीन अतिविशिष्ट एवं प्रभावशाली व्यक्तियों का ज्येतिषीय विश्लेषण भी आवश्यक हो जाता है। वर्ष 2024-25 की ग्रह दशा से उत्पन्न प्रभाव को इसी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारत: स्वतन्त्र भारत की वृष लग्न की कुंड्ली के व्यय भाव से गुरु के गोचर में देश विरोधी तत्वों तथा आंतकवाद पर नियन्त्रण के सफल प्रयास होंगे। आटो सैक्टर की प्रगति होगी। औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादन बढ़ने से देश की जी.डी.पी. में सुधार होगा। व्यय बढ़ेगा। अधिकांश व्यय इन्फ्रास्ट्रक्चर पर होगा। धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। दशम भाव में स्थित कुंभ राशि से शनि के गोचर का समय न तो अत्याधिक अच्छा रहेगा न बुरा, सामान्य रहेगा। खाद्यान्न भंडारों तथा आर्थिक विषयों की स्थिति चिन्ताजनक बनेगी। मित्र देशों की स्थिति भी असामान्य रहेगी। जनसामान्य के लिये समय कष्ट पूर्ण रहेगा। कोर्ट कचहरी में मुकद्दमों की संख्या बढ़ेगी। लिटिगेशन होंगे। कई कम्पनीज तथा बैक्स का परस्पर विलय होगा। बड़े औद्योगिक घराने कई कम्पनीज का अधिग्रहण करेंगे। स्केम्स का खुलासा होगा। समुद्री क्षेत्रों में दुर्घटनायें बढ़ेगी।

राष्ट्रपति भारत सरकार श्रीमती द्रोपदी: राष्ट्रप्रमुख की ग्रह स्थिति राष्ट्र के भविष्य की दशा तथा दिशा निर्धारित करती है। श्रीमती द्रोपदी मुर्मू जन्म 20 जून 1958 समय मध्य रात्रि 00.00 मयूरभंज (उड़ीसा पुष्य नक्षत्र-1) में हुआ था। राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू जी की मीन लग्न की कुंड्ली के प्रथम लग्न भाव में भाग्येश मंगल मित्र भाव से विराजमान है। वर्गोत्तमी लग्नेश गुरु से दृष्ट है। वर्तमान में आप जन्म नक्षत्र पुष्य से पांचवे नक्षत्र की महादशा में हैं। जुलाई 2024 तक जन्म से तीसरे नक्षत्र तथा इसके बाद संवत् 2081 के अन्त तक जन्म से चतुर्थ नक्षत्र की अन्तर्दशा में रहेगी। फरवरी 2024 तक चतुर्थ भाव में स्थित सूर्य महादशा तथा बुध अन्तर्दशा की अवधि में विरोध के उपरान्त भी कुछ कठोर निर्णय लेने की प्रवृति रहेगी। परन्तु वर्ष कुंडली के अनुसार जून मास तक गम्भीर निर्णय लेने में अस्थिरता परीलक्षित होगी। निकटतम सहयोगियों के कार्यों से असन्तुष्ट रहेगी, कष्ट अनुभव करेंगी। परराष्ट्रों से सम्बन्ध सुधारने की दिशा में प्रयास होंगे, महत्वपूर्ण समझोते होंगे। विदेश व्यापार बढ़ेगा। षष्ठेश सूर्य महादशा में केतु अन्तर्दशा की अवधि में 05 जुलाई 2024 तक महादशानाथ से एकादश स्थान पर स्थित केतु से राष्ट्रीय सकल उत्पाद बढ़ेगा। राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाओं पर कार्य होगा। इलेक्शन सम्बन्धित महत्वपूर्ण निर्णय लिये जायेगें। 05 जुलाई 2024 से स्वास्थय के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता रहेगी।

वर्ष कुंडली के पचंम भाव में अपनी कुंभ राशि में विराजमान वक्री शनि धनेश, सप्तमेश मंगल से दृष्ट होकर शिक्षा विभाग, शेयर मार्केट, शिक्षण संस्थानों तथा एन्टरटेन्मेन्ट सैक्टर का प्रभावित कर रहा है। सैन्य तथा पुलिस विभाग के हित में निर्णय होंगे। सत्तापक्ष लाभान्वित होगा। मंगल स्वयं धनेश होने से सामरिक उपकरणों तथा उत्पादनों पर व्यय बढ़ेगा। नवम भाव में चन्द्रमा से युत सूर्य से देख का धार्मिक वातावरण बलवती रहेगा। धार्मिक स्थानों की यात्रा करेंगी। राजकीययात्राओं होगी।सूर्य चन्द्र युति से देश में आर्थिक उन्नति होगी। अष्टम भाव में केतु युत मुंथा सूर्य, शुक्र तथा बुध की गुप्त शत्रु दृष्टि, चन्द्रमा की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा गुरू की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि से वर्ष उथलपुथल भरा रहेगा।

प्रधान मंत्री भारत सरकार श्री नरेन्द्र मोदी : श्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्म 17 सित. 1950 पूर्वान्ह 11.00 बजे गुजरात के महसानानगर में हुआ था। वृश्चिक लग्न के कुड्ली में लग्नेश मंगल, भाग्येश चन्द्रमाके साथ युति में है। सप्तमेश-व्ययेश शुक्र वर्गोत्तमी है। आलोच्य वर्ष में आपमंगल महादशा में गुरु तथा शनि की अन्तर्दशाओं में होंगे।वर्ष कुंडली के प्रथम भाव लग्न भाव के स्वामी का चतुर्थेश शुक्र से परिवर्तन योग बना है। द्वितीयेश बुध का तृतीयेश बुध के साथ परिवर्तन योग है। मूल त्रिकोणी शनि अष्टम भाव में है। चतुर्थ भाव में चन्द्रमा केतु से तथा दशम भाव में गुरू राहु से पीड़ित है। देश में प्राय: ही अमन शांति का वातावरण रहेगा। कला-कौशल क्षेत्र की उन्नति होगी। उद्योग व्यापार बढ़ेगा। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में प्रगति होगी। शनि की स्थिति से तथा घोटाले प्रकाश में आयेंगे। मजदूर वर्ग तथा रेलवे में असंतोष रहेगा। हड़ताल आदि की सम्भावना रहेगी। चुनावों में सफलता मिलेगी परन्तु पार्टी पॉलिटिक्स

बढ़ेगी। अपने निकटतम व्यक्तियों से विश्वासघात होगा। कतिपय निर्णयों से विवाद सृजित होगा। विदेश नीति पर प्रश्न उठेंगे। वर्ष कुंडली में छठे भाव में विराजमान मुंथा पर चन्द्रमा, वक्रीशनि तथा केतु की गुप्त स्नेह दृष्टि, बुध, वक्री गुरू तथा राहु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि तथा सूर्य मंगल की गुप्तशत्रु दृष्टि में है। वर्ष में विरोधी पक्ष सशक्त होगा। कतिपय निर्णयों पर पुन: विचार की आवश्यकता रहेगी।

श्री अमितशाह गृह मन्त्री : 22 अक. 1964 प्रात: 5:25 पर मुम्बई (महाराष्ट्र) में जन्में श्री अमित शाह की कन्या लग्न की कुंड़ली में लग्नेश अस्तावस्था में व्ययेश सूर्य के साथ द्वितीय भाव में युति में है। वर्ष में आप जन्म नक्षत्र से छठे नक्षत्र में, गुरू महादशा में शनि की अन्तर्दशा में रहेंगे। गुरू भाग्य भाव में वक्रावस्था में स्थित चतुर्थेश-सप्तमेश ग्रह है नवमांश कुडली में अष्टम भाव में शनि की मकर राशि में नीच भाव से स्थित है। अन्तर्दशानाथ शनि वक्रावस्था में छठे भाव में अपनी मूल त्रिकोण राशि कुंभ में महादशानाथ से दशम स्थान पर है। पंचम भाव पर वक्री गुरू की नीच दृष्टि के प्रभाव से पार्टी के कार्यों तथा चुनावों में अत्याधिक परिश्रम करना होगा। कई अवसरों पर अति कठोर निर्णय लेने होंगे। तथापि स्वीकार्यता में न्यूनता दृष्टि गोचर होगी।

वर्ष कुंडली के लग्न भाव में तुला राशि में स्थित सूर्य मंगल तथा बुध तृतीयेश-षष्ठेश बुध से दृष्ट होने से देश राजकीय वातावरण पूरी तरह बदलेगा। समाचार पत्रों तथा सवांद दाताओ पर मान हानि के मुकद्दमें होंगे। तीव्र वाद विवाद होंगे। किसी अन्य देश से विवाद चरम पर होगे। दंगे हड़ताल आदि होंगे। सार्वजनिक असंतोष बढ़ेगा। परन्तु एकादश भाव में शुक्र की स्थिति समाधानकार रहेगी। महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित होंगे। पक्ष भेद नहीवत् रहेगा। स्केम्स पर त्वरित कार्यवाही होगी।

एकादश भाव में सूर्य की सिंह राशि में स्थितशुक्र युत मुंथा पर सूर्य बुध मंगल तथा केतु की गुप्त स्नेह दृष्टि, राहु गुरू की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि कार्यों में वांछित सफलता देगी। आगामी चुनावों में अपनी महादशा तथा अन्तर्दशा तथा मुंथा के प्रभाव से अपेक्षित सफलता मिलेगी। मुंथेश सूर्य की मुंथा पर गुप्त स्नेह दृष्टि से मुंथा शुभफलदायक हो गई है तथापि मुंथेश हीन बली होने से तथा मुंथा राहु शुभ फलों में न्यूवता दृष्टि गोचर होगी।

श्री राजनाथ सिंह: 12 फरवरी 1950 रात्रि 1:36:56 पर उत्तर प्रदेश की धर्मनगरी वाराणसी में जन्में श्री राजनाथ सिंह की वृश्चिक लग्न की कुंड़ली में लग्नेश तथा अन्तर्दशा नाथ मंगल आय भाव में अपने शत्रु बुध की कन्या राशि में अतिशत्रु भाव से विराजमान है। वर्ष 2024 में आप गुरू महादशानाथ में गुरू अन्तर्दशा में रहेंगे। गुरू कुंडली का द्वितीयेश पंचमेश है, तृतीय परिश्रम-पराक्रम भाव में शनि की मकर राशि में नीच भाव से विराजमान, सूर्य सानिध्य में अस्त ग्रह है। सप्तमेश वक्री शुक्र तथा अष्टमेश बुध से युत है। वर्ष में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें रहेगी। अपनी राजनैतिक सूझबूझ तथा बुद्धि चातुर्य का समुचित लाभ नही मिलेगा। अनेक अवसरों पर विवाग्रस्त होंगे।

तृतीय भाव में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र युत मुंथा गुरू की गुप्तशत्रु तथा चन्द्रमा और राहु की गुप्त स्नेह दृष्टि में है। चतुर्थ भाव स्थित मुंथेश शनि की वर्ष कुंडली के लग्न भाव पर दशम गुप्त शत्रु दृष्टि के प्रभाव से डिफेंस क्षेत्र की मेक इन इण्डिया योजना प्रभावित होगी। अपेक्षित प्रगति में न्यूनता रहेगी। गुरू पर शनि की दृष्टि से रक्षा क्षेत्र में उदासीनता परीलक्षित होगी। कोई अप्रिय निर्णय प्रतिष्ठा को प्रभावित करेगा।

श्री योगी आदित्यनाथ: 05 जून 1972 समय मध्यान्ह 12:00 बजे, उत्तराखंड़ के गढ़वाल में जन्मे योग आदित्यनाथ की सिंह लग्न की कुंड़ली का स्वामी ग्रह सूर्य दशम राज्य भाव में षष्ठेश -सप्तमेश शनि तथा आयेश द्वितीयेश बुध के साथ विराजमान है। प्रथम लग्न भाव, व्ययेश चन्द्रमा की सप्तम दृष्टि तथा पंचमेश - अष्टमेश वक्री गुरू की पूर्ण नवम दृष्टि में हैं ।

17 फरवरी 2024 से आप शुक्र महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में होंगे। शुक्र कुंडली का तृतीयेश दशमेश ग्रह है, वक्रावस्था में आय भाव में बुध की मिथुन राशि में विराजमान है। गुरू की सप्तम दृष्टि से दृष्ट है, योगकारी ग्रह मंगल से युत है। शुक्र अन्तर्दशा में रेवेन्यू बढ़ने के उपरान्त भी प्रदेश के बजट पर प्रेशर रहेगा, कर्ज बढ़ेगा। शैक्षणिक तथा धार्मिक संस्थाओं के उन्नयन पर कार्य होगा। शैक्षणिक सेलेब्स में परिवर्तन होगा। विभिन्न वर्गो के मध्य सामंजस्य स्थापित करने तथा सहयोग स्थापित करने की दिशा में प्रगति होगी। उद्योग धंधों की स्थिति में सुधार होगा। नये इन्वेस्टमेन्ट के प्रयासों में सामान्य सफलता मिलेगी।

वर्ष प्रवेश कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मुंथा, वर्षेश शनि की गुप्त स्नेह दृष्टि, मंगल की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि, राहु तथा केतु की गुप्त शत्रु दृष्टि में है। मुंथेश गुरू छठे भाव मेंशनि की गुप्त शत्रु दृष्टि, राहु की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा केतु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि

में है। मुंथा हीन बली तथा वर्षेशशनि मध्यम बली है। तथापि वर्षेशशनि की गुप्त स्नेह दृष्टि में होने से मुंथा का शुभफल प्रदायक रहेगी। विरोधी पक्ष पर प्रभाव रहेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कृत कार्यो में सफलता मिलेगी।

त्रिपताका चक्र में चन्द्र के गुरू, शुक्र राहु तथा केतु से वेध में तीर्थ यात्रा आदि कार्यों में व्यय होगा। विवादों में सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। विरोधी पक्ष पर प्रभुत्व रहेगा। चुनावों में सफलता मिलेगी। धन लाभ राज्य लाभ होगा। तथापि राहु तथा केतु से वेध में कतिपय कार्यों से कीर्ति क्षय होगी। असफलता हाथ लगेगी। शरीर अस्वस्थ रहेगा। मन में दूषित विचार आयेंगे।

श्रीमती सोनिया गांधी : 09 दिस 1946 रात्रि 21:30 पर तूरीन इटली में जन्मी श्रीमती सोनिया गांधी की कर्क लग्न की कुड़ली का स्वामी ग्रह चन्द्रमा व्यय भाव में बुध की मिथुन राशि में योगकारी ग्रह पंचमेश - आयेश मंगल तथा षष्ठेश - भाग्येश गुरू की नवम दृष्टि से दृष्ट है। वर्ष 2024 में विशोंत्तरी दशा के अनुसार यह समय शुक्र महादशा में चन्द्रमा अन्तर्दशा चलेगी। शुक्र सुख भाव में अपनी तुला राशि में गुरू से युत है। लग्नेश चन्द्रमा व्यय भाव में बुध की मिथुन राशि में समभाव से विराजमान है। महादशानाथ से नवम स्थान पर, व्यय भाव में विराजमान लग्नेश स्वास्थय सम्बन्धी चिन्तायें देगा। पार्टा पॉलटिक्स सम्बन्धी मानसिक तथा शारीरिक चिन्ताये बनी रहेंगी। एक्टिव पॉलटिक्स में सक्रियता कम होगी।

वर्षेश मंगल सप्तम भाव में सूर्य सानिध्य में अस्त सप्तमेश- द्वादशेश है, शनि की गुप्त शत्रु दृष्टि, केतु की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा राहु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में है। अष्टम भाव में गुरू की धनु राशि में बुध युत मुंथा पर चन्द्रमा, शुक्र तथाशनि की गुप्त मित्र दृष्टि, राहु केतु की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा व्यय भाव स्थित मुंथेश गुरू की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि है। मुंथेश तथा वर्षेश सामान्य बली है। वर्ष में श्रीमती गांधी की विदेश यात्रा के दौरान शल्य चिकित्सा होगी। विश्वासपात्र सहयोगगियों का अभाव रहेगा। वरिष्ठ नेता पार्टी से अलग होगे। मुंथा, मुंथेश से दृष्ट होने से अनिष्ट से बचाव होगा। श्रीमती गांधी विवादों में सफलता प्राप्त करेगी। कीर्ती प्रतिष्ठा अर्जित करेगी। विरोध पक्ष पर विजयी रहेंगी। व्यय स्थान पर, बुध तथा शनि से दृष्ट वक्री मुंथेश गुरू की स्थिति आर्थिक सदर्भो में उत्तम नही कही जा सकती। इसके प्रभाव से धन संग्रह कम होगा। चुनावी चन्दा कम मिलेगा। हानि अधिक होगी।

त्रिपताका चक्र में चन्दमा मंगल गुरू शुक्र तथा शनि से वेधित है। अत: वर्ष में रक्त विकार,शारीरिक कष्ट से पीड़ित रहेगी। चोट लगने का भय रहेगा। विरोधी पक्ष से भय रहेगा। गुरू से वेध में विवादो तथा कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता मिलेगी। शुक्र से वेध में राज्यलाभ होगा। चुनावी जीत होगी। शनि से वेध में छुद्र प्रवुति के लोगो से हानि होगी। निकटतम सहयोगियो से विश्वास घात होगा।

श्री राहुल गांधी : 18 जून 1970 रात्रि 21:52 पर दिल्ली में जन्में श्री राहुल गांधी की मकर लग्न की कुंड़ली में बुध तथा वक्री गुरु वर्गोत्तमी है। लग्नेश, शनि चतुर्थ भाव में अपनी नीच राशि मेष में विराजमान है। चन्द्रमा नीच राशि में आय में स्थित है। आलोच्य वर्ष में 16 अक्तूबर 2024 तक मंगल महादशा में राहु के अन्तर में तथा इसके बाद गुरू अन्तर्दशा में रहेंगे। चतुर्थेश- आयेश मंगल, छठे रोग तथा शत्रु भाव में सूर्य सानिध्य में अस्त है तथा लग्न स्थान में स्थित शनि की मकर राशि को अष्टम उच्च दृष्टि से देख रहा है। अन्तर्दशानाथ राहु महादशानाथ मंगल से नवम स्थान पर द्वितीय वाणी के भाव में है अत: श्री राहुल गांधी की नेतृत्व क्षमता बढ़ेगी। वक्तव्यों में उग्रता तथा आक्रमकता रहेगी तथापि गुरू अन्तर्दशा में व्यक्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगेंगे।

वर्ष कुंडली का वर्षेशशनि है। मुंथा नवम भाव में चन्द्रमा की राशि में विराजमान है।मुंथेश चन्द्रमा व्यय भाव में शुक्र की तुला राशि में चन्द्रमा की गुप्तशत्रु दृष्टि, सूर्य, बुध, शुक्र, शनि की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में है। मुंथा मध्य बली है। वर्षेश शनि पूर्ण बली है, चतुर्थ भाव में अपनी कुंभ राशि में विराजमान है। बली वर्षेश के प्रभाव से पिछड़े वर्ग तथा दलितों का सपोर्ट मिलेगा। चुनावों में जीत मिलेगी। राजनैतिक छवि में सुधार होगा। कांग्रेस शासित राज्यों में जनकल्याण की अनेक योजनायें प्रारम्भ होगी।

मुंथा चन्द्रमा की कर्क राशि में चन्द्रमा से दृष्ट होने से धैर्य तथा यश में वृद्धि होगी। स्वास्थय उत्तम रहेगा। तथापि मुंथा की व्यय भाव में स्थिति से श्री गांधी का अपने विचारों तथा कार्यो का परिश्रम के अनुकूल अपेक्षित परिणामों में न्यूनता रहेगी।

श्रीअरविन्द केजरीवाल: 16 अगस्त 1986 रात्रि 00:30 पर हरियाणा राज्य के सिवानी में जन्में श्री केजरीवाल की वृष लग्न की वर्गोत्तमी कुंड़ली का स्वामी शुक्र पंचम भाव में अपनी नीच राशि कन्या में तथा नवंमाश लग्न में अपनी वृष राशि में स्थित है। वर्गोत्तमी लग्न आपको उच्च मनोबल प्रदान कर रहा है। 20 अप्रैल 2024 तक आप चन्द्र महादशा में बुध, 19 नवम्बर 2024 तक केतु तत्पश्चात शुक्र अन्तर्दशाओं में रहेंगे।

महादशानाथ से चन्द्रमा से षड़ाष्टक योग बना रहे बुध अन्तर्दशा की अवधि में आर्थिक तथा पार्टी समर्थक एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की कमी अनुभव होगी। केतु अन्तर्दशा में अन्य विपक्षी दलों का सशर्त सहयोग तथा समर्थन मिलेगा। शुक्र अन्तर्दशाओं में समर्थको के अन्य दलों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेने के उपरान्त भी स्थित लाभदायक रहेगी।

वर्ष कुंडली का वर्षेश तथा मुंथेश बुध मध्यबली है, मुंथा नवम भाव में तथा मुंथेश एकादश आय भाव में विराजमान है। मुंथा मंगल, बुध, राहु तथा गुरू की गुप्त स्नेह दृष्टि, शनि तथा केतु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में है। मुंथेश राहु तथा गुरू की गुप्त स्नेह दृष्टि से दृष्ट है। मुंथेश दृष्ट मुंथा की भाव स्थिति से श्री केजरीवाल की यश प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इलेक्शन परफारमेन्स अच्छी रहेगी।

श्री शिव राज सिंह चौहान: 05 मई 1959 मध्यान्ह 12.00 पर मध्यप्रदेश के सीहोरनगर में जन्में मध्यप्रदेश के वर्तमान मुख्य मन्त्री श्री चौहान की कर्क लग्न की कुंड़ली का स्वामी चन्द्रमा भाग्य भाव में गुरु की मीन राशि में केतु तथा बुध के साथ विराजमान है। भाग्येश वक्री गुरू से दृष्ट है। आलोच्य वर्षावधि में आप राहु महादशा में शनि की अन्तर्दशा में रहेंगे। महादशानाथ राहु तीसरे भाव में बुध की कन्या राशि में स्वगृही है, शुभफलकारक है, अन्तर्दशानाथ सप्तमेश - अष्टमेश शनि की पूर्ण दशम दृष्टि से दृष्ट हैं, महादशानाथ सेशनि की केन्द्र स्थिति शुभ है। श्री चौहान साहस तथा परिश्रम के साथ विपक्षी नेताओं और दलों पर प्रभाव स्थापित करने तथा उनका सहयोग प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। शनि की छठे भाव में स्थिति शुभफलकारक है। पार्टी तथा संगठन में नई जिम्मेदारियां मिलेगी। शनि के अष्टकवर्ग से शुभ फलो की पुष्टि हो रही है। अन्तर्दशा की अवधि मेंस्वास्थय सम्बन्धी समस्यायें समाप्त होंगी। निरर्थक योजनाओ पर व्यय होगा। व्यर्थ यात्रायें होगी, अपेक्षित लाभ नही होगा।प्रदेश की देनदारियां बढ़ेगी।

वर्ष कुंडली में मुंथा दशम कर्म भाव में गुरू की धनु राशि में विराजमान है। चन्द्रमा मंगल, राहु तथा केतु की गुप्तशत्रु दृष्टि, शनि की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा सूर्य, शुक्र की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि से दृष्ट है दशम भाव में मुंथा की स्थित शुभ है। वर्षेश तथा मुंथेश दोनो ही पद गुरू के पास है। अस्त मुंथेश शनि की शत्रु दृष्टि में होने से अपना पूर्ण शुभ फल देने में असमर्थ रहेगा। विरोधी पक्ष पर मध्यम प्रभाव रहेगा। यश, प्रतिष्ठा, पद स्वामित्व, धन, स्थान आदि का सामान्य मिलेगा।

सुश्री ममता बनर्जी : 05 जनवरी 1955 मध्यान्ह 12.00 बजे, कलकत्ता नगर में जन्मी सुश्री ममता बनर्जी की मेष लग्न की कुंड़ली में बुध तथा उच्चस्थ गुरु वर्गोत्तमी है। चन्द्रमा द्वितीय भाव में उच्चराशि वृष में स्थित है, शनि उच्च राशि तुला में सप्तम भाव में विराजमान है। लग्नेश मंगल, आय भाव में शनि की कुंभ राशि में स्थित है।

02 फरवरी 2024 तक आपशनि महादशा में राहु की अन्तर्दशा में रहेगी। महादशानाथ शनि सप्तम केन्द्र भाव से तृतीय दृष्टि से अन्तर्दशानाथ राहु को देख रहा है। 02 फरवरी 2024 तक शुभ तथा अशुभ फल समान रहेंगे। जनसामान्य के बीच जाकर कार्य करने का लाभ मिलेगा। 02 फरवरी 2024 से प्रारम्भ अन्तर्दशानाथ गुरू महादशानाथ शनि की दशम दृष्टि में हैं । चतुर्थ भाव में अपनी उच्च राशि में स्थित अन्तर्दशानाथ गुरू पर बली शनि की दृष्टि से सुश्री ममता बनर्जी को उच्च तथा पिछड़े एवं निम्न वर्ग सभी का समर्थन मिलेगा। शनि के कुंभ राशि से गोचर में कई अवसरों पर असफलता का सामना करना पड़ेगा। प्रतिष्ठा दांव पर लगेगी। मन विभिन्न आशंकाओ से घिरा रहेगा। किसी स्केन्डल में नाम घसीटा जायेगा। अपमानजनक स्थितयां बनेगी। व्यर्थ कार्यों में समय नष्ट होगा। यात्रायें अधिक होगी। विभिन्न स्थानो पर भ्रमण करेंगी। शनि के कुंभ राशि से गोचर में कई अवसरों पर असफलता का सामना करना पड़ेगा। प्रतिष्ठा दांव पर लगेगी। मन विभिन्न आशंकाओं से घिरा रहेगा। किसी स्केन्डल में नाम घसीटा जायेगा। अपमानजनक स्थितयां बनेगी। व्यर्थ कार्यों में समय नष्ट होगा। यात्रायें अधिक होगी। विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करेंगी।

वर्ष कुंडली में मुंथा तृतीय भाव में बुध, शुक्र तथा राहु की गुप्त स्नेह दृष्टि में, चन्द्रमा एवं गुरू की शत्रु दृष्टि में, केतु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में है। मुंथेश तथा वर्षेश दोनों का अधिकार शनि के पास है। शनि चतुर्थ भाव में मध्य बली है। सूर्य मंगल तथा गुरू की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा बुधशुक्र की गुप्त शत्रु दृष्टि से दृष्ट है। वर्ष में सामान्यशुभ फल मिलेंगे। अपने परिश्रम से यश प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी। अपने वर्ग का सहयोग रहेगा। राज्यकार ग्रह सूर्य पर गुरू की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि, चन्द्रमा तथा वषेश शनि की गुप्त स्नेह दृष्टि से चुनावी सफलता मिलेगी।

श्री दिग्विजय सिंह : 08 सित. 1950 मध्यान्ह 13:50 पर मध्यप्रदेश के इन्दौरनगर में जन्में श्री सिंह की धनु लग्न की कुड़ली में लग्नेश गुरु वक्री अवस्था में तृतीय भाव में शनि की कुंभ राशि में स्थित है। वक्री बुध दशम भाव में अपनी उच्च राशि कन्या

में है। सूर्य अपनी सिंह राशि में भाग्य भाव में, चन्द्रमा अपनी कर्क राशि में अष्टम भाव में स्थित है।

वर्ष 2024 में आप चन्द्रमा महादशा में बुध अन्तर्दशा में रहेंगे। पुष्कर नवांश स्थित, अन्तर्दशानाथ बुध महादशानाथ अष्टतेश चन्द्रमा से तृतीय स्थान परराज्य भाव में विराजमान है। अपने परिश्रम तथा राजनैतिक कौशल से श्री सिंह सत्ता, पद प्रतिष्ठा के केन्द्र बिन्दु रहेंगे। वर्ष कुंडली में मुंथा पंचम भाव में शनि की मकर राशि में है। मंगल की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि, राहु, केतु तथा गुरू की गुप्त शत्रु दृष्टि में है। मुंथेश शनि छठे भाव में वक्रावस्था में राहु, गुरू की गुप्त स्नेह दृष्टि में, चन्द्रमा, केतु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में है। वर्ष स्वामी भी शनि ही है, मध्यम बली है। छठे स्थान पर आने से आर्थिक असतुंलन बनायेगा। स्वास्थ्य निर्बल रहेगा। पार्टी संगठन में स्वीकार्यता रहेगी।

सुश्री मायावती : 15 जनवरी 1956 रात्रि 19:50 पर उत्तरप्रदेश के दौलतपुर में जन्मी सुश्री मायावती की कर्क लग्न की कुंड़ली का स्वामी चन्द्रमा सप्तम भाव में शनि की मकर राशि में मित्र भाव से, सूर्य तथा बुध युत है। सप्तमेशशनि की तृतीय दृष्टि में है। धनेश सूर्य वर्गोत्तमी है। मंगल पंचम भाव में स्वगृही हैं।

वर्ष 2024 में आप बुध महादशा में राहु अन्तर्दशा में रहेंगी। महादशानाथ बुध तृतीयेश - व्ययेश है। सूर्य युत, शनि की तीसरी दृष्टि में है। अन्तर्दशानाथ राहु, महादशानाथ बुध से एकादश स्थान पर पंचम भाव में है। ग्रहो की भाव स्थिति से वर्ष में परिश्रम अधिक होगा। उत्तम तथा शुभ फलों में अपेक्षाकृत न्यूनता रहेगी। व्यर्थ के विवादों में घिरेंगी। मिथ्या आरोपों से प्रताड़ित होगी। मानसिक तनाव बढ़ेगा। स्थाई सम्पत्ति तथा अर्जित प्रापर्टी हाथ से निकलेगी। पार्टी के सदस्यो, विधायकों तथा सांसदों का साथ नही मिलेगा। स्वास्थय चिन्ताजनक रहेगा। शनि की साढ़ेसाती होने सेस्वास्थ्य खराब होगा। बैंक बैलेंस गिरेगा। पार्टी में स्वयं का अस्तित्व खत्म जैसा होता अनुभव होगा।

मुंथा चतुर्थ भाव में चन्द्रमा तथा राहु से युत है। सूर्य की गुप्त स्नेह दृष्टि में तथा मंगल बुध की गुप्तशत्रु दृष्टि में एवं शुक्र की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में है। मुंथेश गुरू पंचम भाव मेंशनि की गुप्त स्नेह दृष्टि में, मंगल बुध की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में, सूर्य की गुप्तशत्रु दृष्टि में है, मध्यम बली हैं। चतुर्थ भाव की मुंथा अशुभफलकारी रहती है तथापि मंगल बुध तथा गुरू की गुप्त स्नेह दृष्टि तथा शुक्र की गुप्त शत्रु दृष्टि से दृष्ट पूर्ण बली वर्षेश शनि के प्रभाव से अपने वर्ग का समर्थन प्राप्त करेगी। अपने क्षेत्र तथा समुदाय में विजयी होगी। स्वयं के वोट बैंक के प्रभाव से सत्ता के केन्द्र बिंदु में रहेगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। विरोध बढ़ेगा। स्वभाव में निरूद्यमता रहेगी। मुंथेश गुरू है। वर्षेश शनि पर्याप्त बली है।

श्री लालू प्रसाद यादव: 11 जून 1948 रात्रि 3:07 गोपालगंज (बिहार) में जन्में श्री लालू प्रसाद यादव की मेष लग्न की कुंड़ली का लग्नेश मंगल पंचम भाव में भाव में सूर्य की सिंह राशि में मित्र भाव से स्थित है। मूल त्रिकोण राशि स्थित भाग्येश वक्री गुरु की नवम दृष्टि से दृष्ट है।

वर्ष 2024 में आप अक्तूबर तक राहु महादशा में राहु अन्तर्दशा में होंगे। महादशानाथ राहु, गुरु की पंचम तथा शनि की दशम दृष्टि से दृष्ट होने के प्रभाव से राहु महादशा में राहु अन्तर्दशा में प्राय: अशुभ फल होंगे। जायदाद तथा वसीयत सम्बन्धी विवाद होंगे। पारिवारिक सुख शांति भंग होगी। वाहन अथवा चतुष्पद सेएक्सीड़ेन्टकी सम्भावना रहेगी। स्वास्थय गम्भीर रूप से प्रभावित होने से जीवन पर संकट रहेगा। कभी स्वास्थ्य सुधरता दिखाई पड़ेगा तो कभीस्थिति गम्भीर होगी। मिथ्या आरोप पीछा नही छोड़गे।किन्ही आरोपो से प्रताड़ित होंगे। भागदौड़ चलती रहेगी।

अक्तूबर 2024 के पश्चात् महादशााथ राहु से नवम स्थान पर स्थित वक्री गुरू अन्तर्दशा की अवधि में राजनैतिक कैरियर समाप्त प्राय: रहेगा। स्वास्थय निर्बल रहेगा। प्राय: ही स्वास्थय के कारण लम्बी दूरी की यात्राये, विदेश यात्रायें होगी। मुंथा आय भाव में सिंह राशि में तथा मुंथेश सूर्य- बुध गुरू शुक्र से युत अष्टम भाव मेंशनि की गुप्तशत्रु दृष्टि तथा राहु एवं चन्द्रमा की गुप्त स्नेह दृष्टि में है। मुंथा आरोग्यकारी तथा मित्रों से सहायक रहेगी। वर्षेश मंगल की मुंथा पर प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि है। वर्षेश मंगल पूर्ण बली होने से शल्य क्रिया के पश्चात स्वास्थ्य लाभ करेंगे।

श्रीअखिलेश यादव: 01 जुलाई 1973 मध्यान्ह 12:00 पर उत्तरप्रदेश के सैफई नगर में जन्में अखिलेश यादव की कन्या लग्न की कुड़ली का लग्नेश बुध आय भाव में, चन्द्रमा की कर्क राशि में भाग्येश शुक्र के साथ विराजमान वक्री गुरु की उच्च दृष्टि से दृष्ट है। मार्च 2024 तक केतु महादशा में बुध अन्तर्दशा में रहने के बाद शुक्र महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा को प्राप्त होंगे। केतु दशम राज्य भाव में सूर्य, अस्त चन्द्र तथा शनि से युत है। अत: मार्च 2024 तक शासकीय वर्ग से मतभेद रहेंगे। हानि उठानी पड़ेगी। गुरू गोचर में राजनीति के धुरंधरों के सम्पर्क में आयेंगे। शुक्र कुंडली का भाग्येश

है आय भाव में लग्नेश बुध से युत तथा वक्री गुरू की उच्च दृष्टि में है। बुधशुक्र की युति से शुभ परिणाम में होंगे। राजनैतिक क्षेत्र में कद बढ़ेगा। शनि का गोचर अपेक्षाकृत अशुभ रहेगा।

वर्ष कुंडली में मुंथा गुरू की धनु राशि में तृतीय भाव में शनि की गुप्त स्नेह दृष्टि, चन्द्र मंगल की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि तथा केतु की गुप्त शत्रु दृष्टि में है। मुंथेश गुरू अष्टम भाव में केतु की प्रत्यक्ष स्नेह, बुध की गुप्त स्नेह तथा शनि की गुप्त शत्रु दृष्टि में है। वर्ष स्वामी शुक्र नवम भाव में सूर्य सानिध्य में अस्त तथा मध्य बली है, वक्री शनि की प्रत्यक्ष स्नेह, चन्द्रमा तथा मंगल की गुप्त स्नेह तथा राहु की गुप्त शत्रु दृष्टि में है। श्री यादव अपनी राजनैतिक कुशलता तथा परिपक्वता का परिचय देंगे। पार्टी का समर्थन प्राप्त करेंगे। सत्तारूढ़ दल के पक्ष में आने में देर नही करेंगे।

भारतीय जनता पार्टी : भारतीय जनता पार्टी का वर्तमान गठन 06 अप्रैल 1980 पूर्वान्ह 11:40 पर भारत की राजधानी दिल्ली में हुआ था। वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी तथा बी. जे. पी की कुंड़ली में दो ग्रह चन्द्रमा तथा शनि की स्थिति समान होने से दोनो एक दूसरे के पर्यायवाची बने है। पार्टी की कुंडली में लग्नेश बुध, भाग्य भाव में शनि की कुंभ राशि में केतु युत है। चन्द्र गुरु का गजकेसरी योग तथातृतीयेश सूर्य का दशमेश गुरु से परिवर्तन योग दृष्टव्य है। व्यय भाव में अपनी वृष राशि में स्थित शुक्र पर शनि की दृष्टि से बी. जे. पी. के नेतृत्व में पराराष्ट्रो से सम्बन्धों में गरिमा आई है। भाग्येश शनि की पंचमेश पर दृष्टि तथा भाग्येश की दशमेश से युति से राजयोग बने है।

मार्च 2024 तक पार्टी चन्द्र महादशा में शनि अन्तर्दशा में रहेगी।इस अवधि में धार्मिक संस्थाओं की उन्नति होगी। विदेश व्यापार बढ़ेगा। पिछड़े तथा अन्त्यज वर्ग के हितार्थ कार्य होंगे। विधर्मियों को साथ लेने की दिशा में सशक्त प्रयास होंगे। पार्टी से कई विधायक, सांसद अलग होंगे तो कई दूसरे दलों से बी. जे. पी. में आयेंगे। कार्य क्षेत्र में कई प्रोजेक्टस में विलम्ब होगा, कुछ प्रोजेक्ट अधूरे रहेंगे। धनेश की छठे भाव में स्थिति से वित्तीय अनियमितायें सामने आयेंगी। विपक्ष का विरोध बढ़ेगा। गुरु का मेष राशि से तथा शनि का कुंभ राशि से गोचर कठिनाईयां बढ़ायेगा। नये राजनैतिक समीकरण बनेंगें। पार्टी मेंअन्य दलो के कद्दावर नेता आयेंगे। आदिवासी बहुल क्षेत्रों में पार्टी की पैंठ बढ़ेगी।

मार्च 2024 के बाद से चन्द्र महादशा में बुध अन्तर्दशा की अवधि में देश की सामान्य स्थिति में सुधार के लिये आंतरिक व्यवस्था पर भार दिया जायेगा। राष्ट्र की उन्नति तथा उत्थान के लिये किये जा रहे प्रयासों में नेतृत्व सफल रहेगा। आवासीय योजनाओं को गति मिलेगी। सरफेश तथा सी ट्रांसपोर्ट की स्थिति में विशेष सुधार के प्रयास होंगे। कृषि क्षेत्र में मौसम में अत्याधिक बदलाव के कारण सामान्य सफलता मिलेगी। व्यापार व्यवसाय की उन्नति के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन होंगे।

मंगल, शनि तथा चन्द्रमा से युत मुंथा छठे भाव में वर्षेश शनि की कुंभ राशि में स्थित है।वर्ष लग्न से छठे स्थान पर स्थित मुंथा का फल शुभ नही होता। विरोध तथा विरोधी पक्ष से अच्छी टक्कर मिलेगी। अपने कृत कार्यों से हानि होगी। वर्षेश शनि मध्यम बली है। वक्री बुध तथा गुरू की स्नेह दृष्टि में है। इलैक्शन में अन्तयज तथा पिछड़े वर्ग के वोट प्रतिशत में कमी रहेगी। कई स्थानों पर अल्प मार्जिन से विजय होगी।

कांग्रेस (आई) : पार्टी का वर्तमान गठन 22 नवम्बर 1969 प्रात: 09:40 पर बैगलोर में हुआ था।वर्ष 2024 में कांग्रेस पार्टी राहु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में रहेगी। राहु तृतीय भाव में मित्र शनि की कुंभ राशि में स्वराशिस्थ है। शुक्र आय भाव में लग्नेश से युत, महादशानाथ से त्रिकोणस्थ है। सूर्य बुध से युत होने से कांग्रेस बौद्धिक मंथन में रहेगी। दशम राज्य भाव में पुष्कर नंवाश में स्थित हर्षल से कई राज्यों में कंग्रेस का प्रदर्शन बेहतर रहेगा। व्यय भाव में केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान के स्वामियों की युति से अनेक स्थानों पर जनसमर्थन मिलेगा, सफलता हाथ लगेगी। व्यय भाव में स्थित अस्त सप्तमेश बुध से गठबंधन असफल रहेगा। मुकदमों तथा कोर्ट कचहरी के चक्कर लगेंगे।

वर्ष कुंडली के अष्टम भाव में स्थित मुंथा पर गुरू की गुप्त स्नेह दृष्टि, शनि की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि, चन्द्रमा, राहु, केतुशुक्र की गुप्त शत्रु दृष्टि पड़ रही है। पूर्ण बली वर्षेश मंगल प्रथम लग्न भाव में शनि की गुप्त शत्रु दृष्टि, शुक्र केतु की गुप्त स्नेह दृष्टि, तथा चन्द्रमा, राहु की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में रहने से वर्ष में राजनैतिक सफलता का नया अध्याय प्रारम्भ होगा।

समाजवादी पार्टी: 04 अक्तूबर 1991 समय 00:00 दिल्ली वर्ष 2024 में स्थापित मिथुन लग्न की समाजवादी पार्टी, षष्ठेश-आयेश मंगल की महादशा में रहेगी। सितम्बर 2024 तक बुध अन्तर्दशा की अवधि में तत्पश्चात केतु अन्तर्दशा में आयेश मंगल तथा लग्नेश बुध के त्रिकोण योग में अन्य दलों से महत्वपूर्ण समझोते होंगे। कई समर्पित व्यक्तियों के पार्टी में आ जाने से विरोधियों का मुंह बंद होगा। अपने परम्परागत वोट बैंक का सहयोग

लेने में पार्टी सफल रहेगी। राजनैतिक स्थिति मजबूत बनेगी। महत्वपूर्ण सीट पर जीत दर्ज होगी। लग्न भाव में मंगल तथा केतु की युति से केतु अन्तर्दशा में पार्टी का नेतृत्व एग्रेसिव रहेगा। अन्य पाटियों के गठबन्धन से अलग होकर आक्समिक रूप से लाभान्वित होगा।

शनि की मकर राशि में अष्टम भाव में स्थित मुंथा पर सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध की प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि में, वक्री गुरू, मंगल, राहु, केतु की गुप्त शत्रु दृष्टि है। वरिष्ठ नेताओं तथा युवा कार्यकर्ताओ से मतान्तर रहेगा। विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा। वर्षेश पूर्ण बली बुध द्वितीयेश चन्द्रमा की प्रत्यक्ष स्नेह में है, मुंथा पर भी प्रत्यक्ष स्नेह दृष्टि होने से अष्टमस्थ मुंथा के अरिष्ट फलों में न्यूनता रहेगी। पार्टी आरोपों तथा आक्षेपों का समुचित तथा सारगर्भित प्रतिवाद करेगी। सत्ता के समीप रहकर सरकार के गठन में भागीदारी करेगी। मुंथा की पृष्ठ भाग में स्थितिशुभ नही है।

चीन : आर्थिक महाशाक्ति बनने के इच्छुक चीन की मकर लग्न की कुड़ली के द्वितीय भाव में स्थित कुंभ राशि से शनि के गोचर में अपनी सार्वभौमिक सत्ता बनाये रखने के लिये नवीन प्रोजेक्टस पर व्यय करेगा। नये इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण द्रुतगति से करेगा। आर्थिक स्थिति में अनिष्ट परिणाम होंगे। बैंकिग तथा स्टाक मार्केट की स्थिति असंतोषजनक रहेगी। अलोकप्रिय टैक्स लगाया जायेगा। माईनिंग क्षेत्र में दुर्घटना होगी। भवन आदि गिरने की घटनाये घटित होगी। कामगार वर्ग में असन्तोष व्याप्त होगा। समाचार पत्रो तथा मीडिया के विभिन्न अंगो के माध्यम से प्रचार प्रसार चरम पर होगा। किसी उच्च पदस्थ व्यक्ति की मृत्यु होगी। नियम कायदे कानूनों में बदलाव होगा। विदेशो के विरूद्ध गुप्त कार्यवाही तथा स्पाईगि में बढ़ोत्तरी होगी। किन्ही देशो से इस सम्बन्ध में बयान जारी किये जायेंगे। अन्य देशों को दिये जाने वाले आर्थिक सहयोग में हानि होगी। बैंक रिजर्व में कमी आयेगी। राष्ट्रपति अथवा अन्य कोई प्रभावशाली राजनेता स्वास्थय सम्बन्धी समस्याओं से घिरेगा। मानसिक तनाव का सामना करेगा। वैश्विक स्तर पर अनेक देशो से विरोध होगा। एक्सपोर्ट गिरेगा। देश को मंदी से सामना करना होगा। अन्य देश चीन के राष्ट्रीय वातावरण से लाभ उठाने में अग्रसर होंगे।

श्रीलंका : श्री लंका की आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहेगी। पार्लियामेन्ट में राजनेताओं के लोकलुभावन परन्तु महत्वपूर्ण भाषण होंगे, वायदे होंगे। नये नियम कानून बनेंगे। देश पुन: वर्ल्ड बैंक की सहायता लेगा। कर्ज में डूबेगा। उद्योग धंधों की उन्नति होगी। टूरिज्म के विकास का कार्य होगा तथा उसका लाभ भी मिलेगा। सत्तापक्ष को विरोधी पक्ष का साथ मिलेगा। सैनिक अभ्यास तथा युद्ध अभ्यास चलेंगे। विदेश नीति उलझी हुई रहेगी तथापि विदेश सम्बन्धों में प्रगति होगी। विदेश व्यापार बढ़ेगा। नये नये प्रश्न सामने आयेंगे। कामगार वर्ग में असंतोष बढ़ेगा। किसी स्थान पर हाई राईज गिरने की दुर्घटना घटित होगी।

नेपाल: शिक्षा, राष्ट्रीय व्यापार, शास्त्रीय विषयों की प्रगति होगी। बौद्धिक प्रगति का अनुकूल अवसर रहेगा। सत्ताधीशों की राजकीय यात्रायें अधिक होगी। प्रशासन के लिये समय अनुकूल रहेगा। मंत्रिमंडल, एवियेशन पर ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी। विदेश व्यापार के लिये नई संस्था गठित होगी। सैन्य बल तथा अस्त्रशस्त्रों युद्धक सामग्रियों पर विचार होगा। सत्ताधीशों का समय अनुकूल रहेगा। पक्ष भेद नहीवत रहेगा। महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित होंगे। किसी राजकीय सेलेब्रेटी के आक्समिक निधन का योग रहेगा। धार्मिक विषयो को लेकर तीव्र मतभेद रहेगे। समन्वय के लिये धर्मार्थ संस्था का निर्माण होगा। समाज की स्थिति समाधानकारक रहेगी। प्रवासियों के लिये समय कठिन रहेगा। मजदूर वर्ग में असंतोष रहेगा। मनोरजन के क्षेत्र में दुर्घटना का योग रहेगा।

अमेरिका: वर्ष 2024-25 में अमेरिका अपनी विदेश नीति के चलते अन्य राष्ट्रो साथ विवादों में रहेगा। विदेशों में आक्रमणकारी प्रवृति रहेगी। नये कानून बनाने तथा पास कराने में मतभेदो का समाना करेगा। रेवेन्यू तथा जी. डी. पीत्र में इजाफा होगा। विदेश व्यपार बढ़ेगा। विशेष रूप से आयुध उपकरणो का उत्पादन तथा बिक्री पर जोर रहेगा। साहित्य अथवा प्रकाशन क्षेत्र के किसी सेलेब्रेटी का अवसान होगा। अग्निकांड से हानि होगी।

रूस: विदेश नीति में परिवर्तन होगा। कई देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की दशा में कार्य होगा। उद्योगों में हड़ताल होगी। मजदूर वर्ग में असंतोष बढ़ेगा। राजकीय वातावरण बदलेगा। राजकीय प्रकरणों में अत्याधिक परिवर्तन होगा। सत्तापक्ष तथा प्रजा में मतभेद रहेगा। नवल फोर्सज तथा जहाजरानी में दुर्घटनायें घटित होगी। किसी गण्मान्य पुरूष के जीवन पर संकट रहेगा। चल रहे युक्रेन युद्ध के सिमटने की सम्भावना नहीवत रहेगी। किसी अन्य देश से युद्ध अथवा विवाद होने की सम्भावना से इन्कार नही किया जा सकता। धोखाधड़ी तथा तीव्र मतभेदों के मामले बनेंगे। मीडिया पर्सन्स पर मानहानि के मुकदमें होंगे अथवा समाचार पत्र बंद होंगे। ग्रे वार-साईबर क्राईम बढ़ेंगे। विदेशी जासूसी के प्रकरणों का भंड़ाफोड होगा। टैक्स रिस्ट्रक्चरंगि होगी। एक्सपोर्ट बढ़ेगा। संक्रामक रोग से प्रजा पीड़ित होगी।

कुंभ मेला तीर्थ राज प्रयाग 2025

कुम्भ पर्व की प्राचीनता पुराणों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। वेदों में तत्सम्बन्धी अनेक सूत्र मिलते है। ऋगवेद (10-89-7) के मंत्र **'जघान वृत्रं स्वधि तिर्वनेव रूरोज पुरो अदरन्न सिन्धून। बिभेद गिरिं नवभिन्न कुम्भभा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः।।'** में स्पष्टया कहा है कि कुम्भ पर्व में जाने वाला मनुष्य दान, होमादि सत्कर्मो से स्वयं के पापों को वैसे ही नष्ट कर देता है जैसे कि कुल्हाड़ी वनों को नष्ट कर देती है। पाप उसी प्रकार नष्ट हो जाते है जिस प्रकार वर्षा से कच्चा घड़ा। अथर्ववेद के मंत्र 19-53-3 में कुंभ पर्व कब होता है यह कहकर **'पूर्णकुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः। स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यकालं तमाहुः परमे व्योमन्।।'** बताया गया है कि पूर्ण कुम्भ बारह वर्षों के बाद देखा जाता है। परन्तु इन सब से कुंभ के प्रारम्भ होने का समय स्पष्ट नहीं होता। लिखित इतिहास में ईसा से 302 वर्ष पूर्व प्रयागराज में आयोजित पर्व का उल्लेख मेगस्थनीज के संसमरणों में मिलता है। प्रयागराज में ईसा के 299 वर्ष बाद आये फाहियान तथा ईसा के 629 वर्ष बाद के यात्री हुएनसांग ने अपने अपने ढंग से कुंभपर्व का वर्णन किया है।

चीनी यात्री हुएनसांग ने अपने यात्रा वृतान्त में लिखा है कि '75 दिनों तक चलने वाले एक धार्मिक आयोजन के प्रथम दिवस हजारों व्यक्ति धार्मिक भावनाओं के वशीभूत होकर एकत्रित हुए थे, जिसमें राजा से लेकर रंक तक, समाज का हर वर्ग उपस्थित था। तत्कालीन सम्राट, महाराजा हर्षवर्धन (590 ई.पू. से 647 ई. तक) अपने आमात्यों, कर्मचारियों के साथ थे तो वहीं पर दार्शनिक, बुद्धिजीवियों, धनिकों, साधु सन्तों की उपस्थिति भी दर्शनीय थी।' प्रतिवर्ष माघ मास में एक मास का कल्पवास होने के कारण यह तो स्पष्ट हो जाता है कि चीनी यात्री द्वारा प्रयागराज के कल्पवास के विषय में कहा जा रहा है परन्तु यह वक्तव्य कुंभ मेला के विषय में है, इस कथन से यह स्थापित नहीं किया जा सकता। इस का विस्तार अंग्रेज इतिहासकार विन्सेन्ट स्मिथ ने किया। उसने लिखा कि गंगा तथा यमुना नदी के संगम पर, यह मेला लगता है वहाँ सम्राट हर्ष वर्धन प्रत्येक पाचवें वर्ष में इसी प्रकार से दान किया करता था। जिस घटना का उल्लेख हुएनसांग ने किया है वह सम्राट की दान परम्परा में छठवें क्रम का था।' हुएनसांग और विन्सेन्ट ने जिस कुंभ मेले का वर्णन किया है वह ईस्वी सन 644 में आयोजित हुआ था। गुरू वृश्चिक राशि में होने से वस्तुतः यह महाकुंभ या पूर्ण कुंभ नहीं वरन अर्ध कुंभ था तथा इससे पूर्व और परा के कुंभ पूर्ण कुंभ होने से विन्सेन्ट ने हर्षवर्धन द्वारा प्रत्येक पांच वर्ष पर सर्वस्व दान देना लिख दिया हो, ऐसा प्रतीत होता है।

ई. सन् 1895 के कुम्भ पर्व के अवसर पर प्रयागराज सिविल लाईन्स में रहकर भी कुम्भ को न देख पाने का अवसर प्रसिद्ध अमेरिकन हास्यलेखक माक्र ट्वेन के नाम है। इसका उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक **'मोर ट्रेम्प्स एबरोड'** में किया गया है। सन् 1310 में मुस्लिम इतिहासकार रशीदुदीन ने, सन 1765 में डच मिशनरी टिफनथेलर ने, 1865 में ब्रिटिश इतिहासकार कनिंघम ने प्रयागराज कुंभपर्व पर अपनी उपस्थिति के पश्चात कुम्भ के विषय में विस्तारपूर्वक लिखा है। देश स्वतन्त्र होने के पश्चात मिस इलेनोर रूजवेल्ट ने तो त्रिवेणी पर पारम्परिक विधि से दूध अर्पण किया था।

हुएन सांग और विन्सेन्ट दोनों ही कुंभ मेला कब, कहाँ तथा सर्वप्रथम किसके द्वारा आयोजित किया गया इसका कोई अधिकारिक उल्लेख नहीं कर सके थे। तथापि इतना तो निश्चित है कि गंगा-यमुना के संगम स्थान पर कुंभ आयोजन की परम्परा अतिप्राचीन है, फिर भले ही इसका वर्णन कुंभ मेला न कह कर किसी और रूप में किया जाता रहा हो। इतिहासकारों का मत है कि कुंभ के वर्तमान स्वरुप का प्रवर्तन भगवान शंकराचार्य द्वारा धार्मिक संस्कृति को सुदृढ़ करने के लिये किया गया था। अतः कुंभ पर्व मुख्यतः साधुओं का माना जाता रहा है।

पौराणिक कथायें: समुद्र मंथन से प्राप्त अमृतकलश से कुम्भपर्व सम्बन्ध सर्वविदित है। विभिन्न पुराणों में अमृत प्राप्ति के लिये समुद्र मंथन की कथायें विभिन्न रूपों में प्राप्त होती है। स्कन्दपुराण माहेश्वर खण्ड की कथा के अनुसार इन्द्र द्वारा देवगुरू बृहस्पति के अनादर के फलस्वरूप स्वर्गलोक की राज्य लक्ष्मी नष्ट होकर पाताल और फिर समुद्र में समा गई। उसे पुनः प्राप्त करने के लिये देवताओं और दानवों ने समुद्र मंथन किया, अनेक सम्पदाओं के साथ अमृत कलश प्राप्त किया।

दूसरी कथा में बृहस्पति के स्थान पर दुर्वासा मुनि का उल्लेख मिलता है। अन्य तीसरी कथा के अनुसार प्रजापति कश्यप की पत्नियों - वनिता तथा कद्रु के मध्य सूर्य रथ के अश्वों के रंग को लेकर विवाद था। वनिता का कहना था कि अश्व श्वेत रंग के है जबकि कद्रु का कहना था कि अश्वों का रंग काला है। तय हुआ कि अश्वों को साक्षात देखा जाय और जो जीत जाये, हारने वाली उसकी दासी बन कर रहे। जीतने की आंकक्षा

१६- दारागंज-अलोपी देवी, १७- अनन्त माधव, १८- मनोहर माधव, १९- असि माधव, २०- वेणी माधव,
२१- दशाश्वमेध घाट, बड़े गणेश-ओंकार गणपति, २२- नागवासुकि/ वासुकिह्रद/भोगवती, २३- कोटितीर्थ,
२४- हनुमत् निकेतन, २५- भरद्वाजाश्रम, २६- मानस (मन सइता नदी)

ब्रह्मा जी के यज्ञ की उत्तरवेदी के तीर्थ

ब्रह्मा जी के यज्ञ की पश्चिमवेदी के तीर्थ -

०७- अक्षयवट में- अक्षय माधव वट माधव, मूल माधव
०८- बड़े हनुमान् जी
०९- सरस्वती/ब्रह्म कुण्ड
१०- ऋणमोचन, विरज
११- कम्बल-अश्वतरनाग
१२- निरुजक
१३- मनकामेश्वर
१४- कल्याणी देवी
१५- ललिता देवी

ब्रह्मा जी के यज्ञ की पूर्ववेदी प्रतिष्ठानपुरी, झूसी के तीर्थ -

१- समुद्रकूप, खण्डहर किला, हनुमान् गुफा,
२- सन्ध्यावट, संकष्टहर माधव सन्ध्यावट में,
३- वेणीमाधव (परमानन्द आश्रम),
४- हंसकूप/हंसमन्दिर, हंसप्रपत्तन, उर्वशी-पुलिन,
५- शंख माधव, ६- दुर्वासा आश्रम

दक्षिणदिशाक्षेत्र तीर्थ (अरैल)

२७-नागबहुमूलक, २८-अग्नि, २९-धर्मराज, ३०-हरवन, ३१-अनरक, ३२-वासरक, ३३- सोमेश्वर, ३४-चक्र माधव, ३५-आदिवेणी माधव, ३६-बिन्दु माधव, ३७-गदा माधव, ३८-पद्म माधव।

प्रयागराज के तीर्थ एवं स्थानों के विवरण के लिये देखें अध्याय- ७ और १४

से कद्रू ने अपने सर्प पुत्रों को अश्वों के शरीर पर लिपट जाने की आज्ञा दी। फलत: अश्व काले दीख पड़ने लगे और वनिता कद्रू की दासी बन गई। दासत्व से मुक्ति के लिये कद्रू ने नागलोक से अमृतकलश लाकर देने की शर्त रख दी। वनिता पुत्र गरूड़ नागलोक से अमृतकलश लेकर अपने पिता प्रजापति कश्यप के पास गंधमादन पर्वत की और उड़ चला। नागराज वासुकी ने गरूड़ से अमृत कलश छीनने के चार प्रयास किये। इस प्रयास में जिन चार स्थानों – प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन में अमृत छलका, उन चार स्थानों पर कुम्भ आयोजित होता है।

कुम्भपर्व का महत्व: कुंभ महापर्व की कथा मात्र देवों तथा दानवों के समुद्र मंथन कर अमृत प्राप्त करने की कथा नहीं है। इसके मूल में सामाजिक चेतना तथा संस्कृति का संदेश अत्यन्त गूढ़ रुप से छुपा है। जब जब शासक वर्ग सत्ता के मद में चूर होकर भोग विलास में लिप्त हो गुरुओं तथा पूजनीयों का अपमान करने लगते है तब तब वे श्री विहीन हो जाते है। उनकी सम्पत्ति, शक्ति, विचार क्षमता उन्हें त्याग देती है। यही तो इन्द्र द्वारा देवगुरु बृहस्पति अथवा दुर्वासा ऋषि के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण देवताओं के साथ हुआ था और उनकी श्री सम्पत्ति उन्हें त्याग कर समुद्र में लोप हो गई।

पर्व के साथ अनेक किंवदतियां भी समय समय पर जुड़ती रही है। सर्वाधिक प्रचलित किंवदंति के अनुसार भगवान आद्यशंकराचार्य जी ने कुम्भपर्व की स्थापना की, पश्चात् उनकी शिष्य मण्डली ने कुम्भ को अपने धर्म प्रचार का मुख्य साधन समझ कर इसका विस्तार किया, जिसके फलस्वरूप कुम्भपर्व मनाया जाता है। 2. सनक-सनन्दादि महर्षि हरिद्वार, प्रयागादि तीर्थ क्षेत्रों में 12-12 वर्षों के अन्तराल पर उपस्थित होते थे। अत: तभी से कुम्भपर्व मनाया जाने लगा। 3. योगियों के अभ्यास की अवधि 12 वर्ष होती है। अपने साधकों से मिलने की सुविधा के लिये हरिद्वारादि तीर्थो में कुंभपर्व का प्रचार हुआ। 4. समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृतकलश का बंटवारा तीर्थराज प्रयाग में हुआ था। उसी के स्मृति स्वरूप कुम्भपर्व मनाया जाता है। 5. कुम्भपर्व को साधु महात्माओं का धर्मसम्मेलन भी कहा जाता है। ईसा के जन्म से लगभग 450 वर्ष पूर्व प्रयागराज में कुम्भ के अवसर महात्मा बुद्ध का आगमन हुआ था। उस पर अवसर पर दिये गये बौद्ध धर्म के उपदेशों के कारण कुछ व्यक्ति इसे बौद्धों की परम्परा में मानते है।

कथायें भिन्न हो सकती है, है भी परन्तु परिणाम सब का समान हुआ। देवताओं की श्री, शक्ति, सम्पन्नता उन्हें त्याग कर समुद्र में विलुप्त हो गई। शक्ति विहीन देवता समुद्र से अपनी सम्पत्ति प्राप्त करने में असमर्थ थे। तभी उन्होंने दानवों की सहायता एक संधि के अन्तर्गत समुद्र मंथन किया। आत्ममंथन करने अर्थात आत्मशुद्धि का मार्ग, जिसे आधुनिक प्रबन्ध विशेषज्ञ SWOT Analysis कहते है – अपनाने से स्वयं के कृत्य अकृत्य स्वयं को ही डराने लगते है, तब स्वयं में आमूलचूल परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है परन्तु कोई बिरला ही इसमें सफल हो पाता है। इस विष को पी जाना सामान्य व्यक्ति का कार्य नहीं है। समुद्र मंथन के प्रथम चरण में निकला कालकूट विष पीना भी किसी के लिये सम्भव नहीं था। उसे तो सदाशिव भोलेशंकर ही आत्मसात कर सकते थे और उन्होंने किया भी। मंथन की प्रक्रिया के अगले चरणों में देवताओं की विलुप्त निधियां – जिन्हें अब हम रत्न कहते है क्रमश: प्रगट होने लगी। पुष्पक विमान, ऐरावत हाथी, पारिजात वृक्ष, रम्भा नाम की अप्सरा, कौस्तुभ मणि, बाल चन्द्रमा, कुण्ड़ल, धनुष, शार्ग धनुष, कामधेनु गाय, उच्चैश्रवा अश्व, भगवती लक्ष्मी, विश्वकर्मा तथा अन्त में अमृत कलश के साथ धन्वन्तरी प्रगट हुए। पुराण भेद से किन्हीं स्थानों पर रत्नों में शंख, पारिजात आदि का भी उल्लेख मिलता है। स्कन्द पुराण (गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण वि.सं 2076 पृष्ठ -22) के अनुसार ऐरावत हाथी के साथ साथ श्वेत वर्ण के चौसठ हाथी प्रगट हुए थे। उसके बाद समुद्र गर्भ से मदिरा, भांग, काकड़ासिंगी, लहसुन, गाजर, अत्याधिक उन्मादकारक धतूर तथा पुष्कर आदि बहुत सी वस्तुयें प्रगट हुई। विष्णु पुराण में समुद्र मंथन से अप्सराओं की प्राप्ति भी बताई गई है।

लक्ष्मी: कौस्तुभपारिजातकसुराधन्वन्तरिश्चन्द्रमा:।
गाव: कामदुहा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगना:।।
अश्व: सप्तमुखो विषं हरिधनु: शंखोमृतं चाम्बुधे।
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिन कुर्यात्सदा मंगलम्।।

अमृत प्राप्ति के लिये देव तथा दानवों में बारह दिनों तक निरन्तर युद्ध चला था। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्षों के तुल्य होते है अत: कुम्भपर्व भी बारह ही होते है। ब्रह्मा जी अथर्ववेद के मंत्र 4-34-7 में कहते है: **'चतुर: कुम्भांश्चतुर्धा ददामि'** चार कुंभ पर्वों का निर्माण चार स्थानों (**प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक**) तीर्थों में करता हूँ। यह चार स्थान मृत्युलोक के लिये है।शेष आठ कुंभ पर्व देवलोक में है, मनुष्यों के लिये अगम्य है।

देवानां द्वादशाहोभिर्मत्यैर्द्वादशवत्सरै:।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादश संख्यया।।
पापनपनुत्तये नृणां चत्वारि भुवि भारते।
अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता देवैर्गम्या न चैतरै:।।

कुंभ का स्वरूप: कुंभ का स्वरूप कैसा है तथा उसमें किन किन देवों का निवास है, इसका वर्णन करते हुए कहा गया कि:

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।
मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋगवेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।

अर्थात कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रूद्र, मूल में ब्रह्मा, मध्य भाग में मातृगण, कुक्षि में सभी पहाड़, समुद्र तथा पृथ्वी समाहित है। सभी अंगो के साथ **ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अर्थवेद** भी कुंभ में स्थित है। तात्पर्य कि ब्रह्माण्ड कुंभ स्वरूप है।

कुम्भ प्रार्थना का मन्त्र :

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।

'हे कुम्भ! देवदानव के विवादरूप में समुद्र मथे जाने पर तुम्हारी उत्पत्ति हुई, जिसे साक्षात भगवान विष्णु ने धारण किया। उस तुम्हारे जल में समस्त तीर्थ, समस्त देवता, समस्त प्राणी, प्राण आदि स्थित रहते है। तुम साक्षात शिव, विष्णु और ब्रह्मा हो। आदित्य, वसु, रूद्र, सपैतृक, विश्वेदेव आदि समस्त कार्यो के फलप्रद देवता तुम्हारे में सर्वदा स्थित है।'

कुंभ पर्व का समय: कुंभ महापर्व का आधार सूर्य, चन्द्रमा तथा देवगुरु बृहस्पति का गोचर है। अमृत कलश की रक्षा के समय जिन जिन राशियों पर, कलश की रक्षा करने वाले चन्द्र, सूर्य, गुरू आदि ग्रह गोचर करते है, उस समय कुम्भ पर्व का योग होता है। **हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन** तथा **नासिक**, इन चार स्थानों पर प्रत्येक बारह वर्षों बाद, निर्धारित क्रमानुसार कुंभ पर्व आता है। मेष के गुरू में जब सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों शनि की मकर राशि में हो तब प्रयाग राज में कुंभ होता है।

मेषराशिं गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्यां तदा योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके। (स्कन्द पुराण)

इसके पश्चात् गुरू जब सिंह राशि पर तथा सूर्य अपनी उच्च राशि मेष में होते है तब तब उज्जैन में कुंभ होता है, और जब गुरू तथा सूर्य दोनों ही सिंह राशि पर हो तब नासिक में कुंभपर्व होता है। गुरू जब शनिदेव की मूल त्रिकोण राशि कुंभ पर तथा सूर्य अपनी उच्च राशि मेष हो तब तब हरिद्वार में कुंभपर्व आता है।

अर्धकुम्भ, जिसे अब कुंभ के नाम से जाना जाने लगा है वह पर्व हरिद्वार तथा प्रयागराज में ही आयोजित होता हैं, उज्जैन तथा नासिक में नहीं। वस्तुतः जब हरिद्वार में अर्धकुंभ होता है तब नासिक में महाकुंभ तथा प्रयागराज में अर्धकुंभ के समय उज्जैन का कुंभ होता है। पुराणों में जहां कहीं भी कुंभ पर्व का उल्लेख हुआ है वह पूर्ण कुंभ (महाकुंभ) का हैं अर्ध कुंभ का उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता। माना जाता है कि अर्धकुंभ का प्रवर्तन चारों शंकराचार्यों द्वारा मुगलों के समय धर्म रक्षार्थ हुआ था।

मेष के सूर्य तथा कुंभ के गुरु में हरिद्वार में, वृषभ के गुरु तथा मकरस्थ सूर्य होने पर प्रयाग में (किसी के मत से मेष में गुरू होने पर), सिंह राशि स्थित गुरु तथा सूर्य में नासिक में एवं सिंहस्थ गुरु तथा मेष राशि में सूर्य होने पर उज्जैन में कुंभ होता है। प्रयाग, उज्जैन, नासिक तथा हरिद्वार में कुंभ महापर्व का यही आधार है। प्रायः यही भ्रमवश कहा जाता है कि कुंभ आयोजन प्रति बारह वर्ष की अवधि पर होता है। परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। वास्तव में कुंभ देवगुरु बृहस्पति तथा सूर्य की राशि विशेष परीस्थिति के अनुसार मनाये जाने के कारण के कभी ग्यारहवें तो कभी बारहवें वर्ष में आयोजित होता है। सभी कुंभ महापर्वों में प्रयाग कुंभ को विशेष महत्व दिया गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार :

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ।
कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभे।।

अर्थात वृष राशि पर बृहस्पति हो और जिस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते है उस योग को कुम्भ योग कहते है। ऐसा योग प्रयाग के लिये अतिदुर्लभ होता है। अन्यत्र भी कहा है:

माघो वृषगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमायां च ततो योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके।।

उस माघ मास में अमावस्या के दिन बृहस्पति वृष राशि पर हो, सूर्य तथा चन्द्र मकर राशि में हो तब कुंभ योग समस्त तीर्थो के नायक प्रयागराज में होता है।

वैमत्य : प्रयागराज में कुम्भपर्व सम्बन्धित प्राप्त दो श्लोक ऊपर कहे जा चुके है। एक श्लोक के अनुसार मेष के गुरु तथा मकरस्थ सूर्य होने पर तथा दूसरे में वृषभ के गुरु तथा मकरस्थ सूर्य होने पर प्रयागराज में कुम्भपर्व होना कहा गया है। वर्ष 2025 में मनाया जाने वाले कुंभ पर्व के समय बृहस्पति वृष राशि में होंगे। प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि गत वर्ष जब बृहस्पति मेष राशि में थे तब उस कुम्भ महापर्व क्यों आयोजित नहीं हुआ।

इस प्रकार की स्थिति इससे पूर्व भी सवंत् 2021 तथा सवंत् 2022 में बन चुकी है। सवंत् 2021 में माघी अमावस्या के दिन बृहस्पति मेष राशि में थे परन्तु कुम्भ पर्व सवंत् 2022 में बृहस्पति के वृष राशि में होने पर आयेजित हुआ। वैमत्य निराकरण के लिये सवंत् 2021 में साधु-सन्तों तथा विद्वानों की धर्मसभा हुई। निर्णय हुआ कि कुम्भ पर्व प्रति 12 वें वर्ष में मनाया जाता है परन्तु गुरू की स्थिति के कारण 11 वें वर्ष में भी मनाया जाता है। इस निर्णय और चर्चा के सन्दर्भ से परमपूज्य श्री स्वामी करपात्री जी महाराज ने **'धर्मकृत्योपयोगी तिथ्यादि निर्णयः कुम्भपर्व-निर्णयश्च'** लिखी जो उसी वर्ष अखिल भारतीय धर्मसंघ वाराणसी ने प्रकाशित की थी।

अपि च एक प्राचीन श्लोक में कहा गया है **'यदा स्यातां नक्रे दिनकरनिशेशौ खगवरौ। सुमन्त्री देवानां रपिसुतयुतोऽमां खलु यदा।। श्रुतिर्विश्वं माघो शमयति च विश्वाघमखिलं त्रिवेणी कुम्भोऽस्मिन् ननु नरक पातश्च न भवेत।।'** इस श्लोक के अनुसार प्रयाग कुम्भपर्व के पूर्ण योग के लिये माघी अमा मेष अथवा वृष के गुरू तथा श्रवण अथवा धनिष्ठा नक्षत्र के पूर्वार्द्धजन्य मकर राशि में सूर्य तथा चन्द्रमा का होना आवश्यक है। **'श्रुतिर्विश्वं माघे शमयति च विश्वाघमखिलं'** विश्वाघशमन तथा नरकपाताभाव श्रवण तथा धनिष्ठा में ही बताया है, उत्तराषाढ़ में नहीं।

अतः कुंभ पर्वों में हरिद्वार को छोड़कर शेष तीनों कुम्भपर्वों- प्रयागराज, उज्जैन तथा नासिक में बृहस्पति के भोगकाल के लिये दो दो राशियां नियत कर दी गई है। कारण कि एक राशि में बृहस्पति का भोगकाल तेरहमास का होता है। यदि एक ही राशि नियत होती तो कुंभपर्व तेरहवें मास में होता। तथापि चौरासी वर्षों में छः कुम्भपर्व बारह-बारह वर्षों के अन्तराल पर तथा एक ग्यारहवें वर्ष में होता है।

कुम्भ स्नानः कुम्भ योग में स्नान करने वाला मनुष्य अमृत्व प्राप्त करता है। उसकी मुक्ति हो जाती है। ऐसे मनुष्य को देवगण उसी प्रकार नमस्कार करते है जिस प्रकार कोई निर्धन, धनी को। यह स्कन्द पुराण में कहा गया है।

तान्येव यः पुमान् योगे सोऽमृतत्वाय कल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रंङ्का धनाधिपान्।।

प्रयागराज की महिमा मत्स्य पुराण, दुर्वासा पुराण, पद्मपुराण आदि में वर्णित है। तीर्थराज प्रयाग में कुंभ पर्व पर स्नान का विशेष महत्व है। कार्तिक मास में एक हजार बार गंगा स्नान करने से अथवा माघ मास में सौ बार गंगा स्नान करने से अथवा वैशाख मास में करोड़ बार नर्मदा स्नान करने से जो फल मिलता है वहीं फल प्रयागराज में एकबार गंगा स्नान करने से प्राप्त होता है।

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघो स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्।।
अपि च
अश्वमेघसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्।।

हजार अश्वमेघ करने, सौ वाजपेय यज्ञ करने तथा लाखबार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल मिलता है वह फल केवल प्रयाग में स्नान करने मात्र से मिल जाता है। प्रयाग के कुंभ योग के काल में त्रिवेणी में स्नान का महत्व बताते हुए कहते है कि:

प्रयागे माघ मासे तु त्रयहं स्नानस्य यद्भवेत्।
नाश्वमेघसहस्त्रेण तत्फलं लभते भुवि।।

प्रयागराज में माघ मास में त्रिकाल - प्रातः मध्यान्ह तथा सांय काल में स्नान से जो फल मिलता है वह फल पृथ्वी पर हजार अश्वमेध करने पर भी प्राप्त नहीं होता। तीर्थराज प्रयाग के महत्व स्थापित करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है:

तहाँ होई मुनि रिषय समाजा। जांहि जे मज्जनतीरथराजा।।
मज्जहि प्रात समेत उछाहा। कहहिं परसपर हरि गुन गाहा।
ब्रह्म निरूपन धरम बिधि बरनहिं तत्त्व विभाग।
कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग।।

कल्पवास : माघ मास में सौर मास की मकर संक्रांति से कुंभ संक्रांति तक का समय कल्पवास का माना जाता है। अन्य मत से चान्द्रमास के अनुसार माघ मास का समय कल्पवास का कहा गया है। कल्पवास का अर्थ मात्र इस अवधि में तीर्थराज में निवास करना भर नहीं है, विधि विधान से निवास करना कल्पवास है। मत्स्य पुराण में कहा है कि तेल से स्नान, तिलों से उदवर्तन, तिलों से होम, तिलों से तर्पण, तिल का भोजन और तिल का दान, यह छः तिल पापों का नाश करते है- **'तिलस्नायी तिलोद्वर्त्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिल भुक् तिलदाता च षटतिलाः पापनाशनाः'।** भविष्य पुराण में कहा है कि प्रतिदिन तिल तथा आवला दान करें **'तैलआमलकाश्चैव तीर्थेदेयास्तु नित्यशः'।**

इस वर्ष श्रद्धालुगण, तीर्थराज प्रयाग में पौष शुक्ल पूर्णिमा तदानुसार 13 जनवरी 2025 से माघ शुक्ल पूर्णिमा 12 फरवरी 2025 तक कल्पवास करें। माघ स्नान के लिये दुर्वासा पुराण (उत्तर।13-14) में दिये गये मंत्र **'मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव।। स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।।'** का जप करें।

प्रयागराज में कुभपर्व पर स्नान की महत्वपूर्ण तिथियांः-

- **पौष शुक्ल पूर्णिमा : 13 जनवरी 2025**
- **प्रथम शाही स्नान : 14 जनवरी 2025 :** माघी मकर संक्रातिः सूर्य नारायण के उत्तरायण में प्रवेश की तिथि है। इस दिन से देवों की उपासना का पूर्णकाल प्रारम्भ हो जाता है। यही समय परा अपरा विद्या की प्राप्ति का काल है, साधना का सिद्धकाल है। देव प्रतिष्ठा, गृह निर्माण आदि के लिये पुनीत काल माना जाता है। यही पितरों की तिलांजलि का श्राद्ध काल है। महाभारत में भी भीष्म पितामह को सूर्यनारायण के उत्तरायण में आने की प्रतीक्षा थी। मकर संक्रांति के दिन स्वास्थय वर्धन तथा सर्व कल्याण के लिये तिल का छह प्रकार से प्रयोग पर्व के दिन एवं सूर्यनारायण की उत्तरायण की दशा में पुण्यदायक होता है। संगम का स्नान पुण्य देने वाला है।
- **षटतिला एकादशी स्नान : 25 जनवरी 2025**
- **द्वितीय शाही स्नान 29 जनवरी 2025 :** माघी अमावस्या, माघ कृष्ण पक्ष अमावस्या मौनी अमावस्या कही जाती है। इस तिथि में सदाचारी तथा मौन रहकर ज्ञान प्राप्ति का विशेष महत्व है। माघ मास में त्रिवेणी का स्नान अतिफलदायक होता है। अमावस्या माघ मास का सर्वश्रेष्ठ पर्व है।
- **तृतीय शाही स्नान, वंसत पचंमी 02 फरवरी 2025:** माघ मास की शुक्ल पंचमी वंसत पंचमी है। इसका दूसरा नाम श्री पंचमी है। सरस्वती देवी के साथ साथ इस तिथि को धन सम्पदा की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी, विष्णु भगवान की पूजा विधि में शास्त्रों में विहित है। इस तिथि में रति-कामदेव की पूजा तथा महोत्सव का भी विधान है। संगम स्नान एवं दान पुण्य का विशेष महत्व है।
- **रथ सप्तमी : 04 फरवरी 2025**
- **जया एकादशी, भीष्म एकादशी : 08 फरवरी 2025**
- **माघी पूर्णिमा - 12 फरवरी 2025** माघ मास की पूर्णिमा तिथि को तीर्थस्थलों में स्नान दान आदि के लिये फलदायिनी बताया गया है।
- **महाशिवरात्रि स्नान 26 फरवरी 2025:**
- **कुंभ संक्रांति पुण्य काल : मध्यान्ह 12:17 से सांय 17:54 तक, संक्रांति महापुण्य काल : सांय 16:02 से सांय 17:54 तक,**

कुम्भ पर्व में पालन योग्य कर्तव्य : कुम्भ पर्व स्थान में जब तक निवास करें तब तक निष्कपट सरल हृदय, स्वार्थ रहित धर्मपरायण होकर रहें। निरन्तर भगवान का स्मरण करें। कहा भी है:

ब्रह्मचारी वसन्मासं पितृदेवांश्च तर्पयेत।
गंगा यमुनयौश्चैव संगमे स्नानमाचरेत।।

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए जो प्राणी एक मास तक अर्थात माघ मास में कल्पवास करता है तथा पितरों एवं देवताओं का तर्पण करता है, प्रतिदिन गंगा-यमुना के संगम पर विधिपूर्वक स्नान करता है, वह परम कल्याण को प्राप्त होता है।

आत्म मंथन करें, दूसरे के दोषों को न देखें। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें। तीर्थ क्षेत्र से बाहर न जाये। पान, भांग, अफीम, गांजा, शराब आदि मादक पदार्थों का सेवन न करें। दीन दुखियों की अन्न-वस्त्र से सहयता करे परन्तु स्वयं किसी से दान न लें।

स्नान करने के पश्चात् सन्ध्या तर्पणादि से निवृत होकर गणपतिपूजन पूर्वक, कलश की स्थापना करें। श्रद्धाभक्ति से कुम्भ का षोड़शोपचार पूजन करें। यथाशक्ति कलश में घी भरकर सुपात्र योग्य विद्वानों को घी कलश का दान करे। जय सीता राम।

बारह-राशियों का मासगत वार्षिक फलादेश सन् ई० 2024

ज्योतिर्विद प्रवीनकुमार जैन

जनवरी 2024

मेष राशि : 07 जनवरी से मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। कार्यों में विघ्न बाधाऐं आयेगी। यात्रांओं में असुविधा तथा हानि होगी। खानपान बिगड़ेगा। सम्बन्धियों तथा सहोदरों से वैमनस्य रहेगा। तीसरे सप्ताह में 15 जनवरी से परिस्थितियों में बारम्बार परिवर्तन होगा। शासकीय कार्यों में त्रुटि होगी। चिन्तायें बढ़ेगी। अचानक स्थान परिवर्तन होगा। स्वभाव विचित्रतापूर्ण तथा चिड़चिड़ा रहेगा। मन अन्जाने से भय से ग्रसित रहेगा। स्वभाव में कर्तव्य शून्यता आयेगी। वैवाहिक सुख में न्यूनता रहेगी। विद्याध्ययन में बाधा आयेगी। 18 जनवरी से स्वास्थय लाभ होगा। भोगोपभोग की बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होंगी। चिरस्थाई लाभ प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। भाईयों का स्नेह तथा सहयोग रहेगा। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्राये करेंगे। शुभ दिन : 02, 09, 16, 18, 25, 27, 30 अशुभ दिन : 05, 07, 11, 13, 20, 22

वृष राशि : 07 जनवरी से सन्तान सुख में कमी रहेगी। आय के साधन सीमित रहेंगे। विरोध बढ़ेगा। असफलता से मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। 15 जनवरी से अकारण ही धन तथा पुण्य की हानि होगी। आय में कमी आयेगी। रोगों का प्रकोप होगा। मन अज्ञात कारणों से भयग्रस्त, निराश तथा खिन्न रहेगा। किसी प्रियजन से अलग रहना होगा। 18 जनवरी से सुखों सभी प्रकार कार्यों में व्यवधान आयेंगे। सुखोपभोग तथा विलासिता का अभाव रहेगा। परिवार में आर्थिक संकट रहेगा। शिक्षा में अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 02, 09, 13, 16, 18, 30 अशुभ दिन : 05, 07, 11, 20, 22, 25, 27

मिथुन राशि : 07 जनवरी से आय में गिरावट आयेगी। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। धन हानि होगी। आर्थिक स्थिति कठिन बनेगी। दाम्पत्य जीवन में विवाद होंगे। मनमुटाव तथा वैचारिक मतभेद रहेंगे। मन चिंताग्रस्त रहेगा। 15 जनवरी से विरोधियों से विवाद होंगे। खांसी आदि कफजन्य बीमारियों, उच्च रक्त चाप अथवा ज्वर से कष्ट होगा। शासन प्रशासन से भय की स्थिति बनेगी। दाम्पत्य सुख में बाधा आयेगी। भय तथा अपमान की स्थिति बनेगी। 18 जनवरी से आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। जीवनयापन सुगम बनेगा। सन्तोषजनक आजीविका प्राप्त होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। वांछित प्राप्ति का सुख रहेगा। महिला वर्ग का सहयोग मिलेगा। शुभ दिन : 02, 05, 07, 09, 13, 16, 20, 22 अशुभ दिन : 11, 18, 25, 27, 30

कर्क राशि : 07 जनवरी से अध्ययन-अध्यापन में प्रगति होगी। लेखन, संगीत अथवा वाद्य कला में ख्याति प्राप्त करेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। मान-सम्मान में वृद्धि से मन प्रसन्न रहेगा। 15 जनवरी के बाद मासान्त तक थका देने वाली यात्रांओं का कष्ट रहेगा। दुर्घटनाओं का भय रहेगा। कार्यों में असफलता रहेगी। परिवारजनों एवं मित्रों से मतभेद एवं विवाद होगा। जीवन साथी तथा संतान किसी रोग से पीडित् होगी। अपच, उदर विकार रहेगा। सन्तान से अथवा सन्तान के कारण कष्ट होगा। दाम्पत्य जीवन में बाधा रहेगी। किसी अन्जानी-अनचाही विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। विरोधी पक्ष प्रबल होगा। परिस्थितियों के वशीभूत होकर समझोतों के लिये विवश होना पड़ेगा। शुभ दिन: 02, 05, 07, 18, 22, 25, 30 अशुभ दिन : 09, 11, 13, 16, 20, 27

सिंह राशि : आक्समिक रुप से झगड़े झंझटों में फंसेंगे। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। मानसिक तथा शारीरिक कष्ट रहेगा। उच्च ताप अथवा गर्मी के कारण शरीर में शिथिलता आयेगी। जीवन साथी तथा सतांन से अनबन होगी। घर परिवार से अलग रहना पड़ सकता है। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी। 15 जनवरी के बाद से कार्यों में सफलता मिलेगी। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। आय के नये मार्ग बनेंगे। विभिन्न स्रोत्रों से आय होगी। आर्थिक स्थिति सबल बनेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 02, 07, 16, 18, 20, 30 अशुभ दिन : 05, 09, 11, 13, 22, 25, 27

कन्या राशि : परिवार की वरिष्ठ महिलाओं, उच्च पदस्थ व्यक्तियों से मनमुटाव होगा, मतभेद बनेंगे। धनागम में कठिनाईयां उत्पन्न होगी। आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। भूमि-भवन के कार्यों में असफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति की हानि होगी। पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। वाद विवादों के कारण जीवन साथी का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। मन किसी के प्रति आसक्त होगा। मन व्यग्र रहेगा। स्वास्थय विपरीत रुप से प्रभावित होगा।

विरोधी पक्ष प्रबल होगा। स्वभाव की नम्रता से बाधांओं तथा अवरोधों का समाधान होगा। मित्रों तथा परिवारजनों का असहयोग रहेगा। शुभ दिन : 02, 07, 09, 13, 20 अशुभ दिन : 05, 11, 16, 18, 22, 25, 27, 30

तुला राशि : मानसिक भय दूर होगा। पारिवारिक सुख शांति रहेगी। परिश्रम तथा साहस से कार्यों में सफलता मलेगी। आय के नवीन साधन बनेंगे। यात्रांओं से लाभ होगा। भू-सम्पत्ति के मामलो में लाभ मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। विरोधियों पर प्रभाव स्थापित करने में सफलता मिलेगी। 18 जनवरी के बाद परिश्रम तथा साहस की हानि होगी। सहोदरों, आधीनस्थों तथा सहायकों से मतभेद होंगे। मान-सम्मान की हानि होगी। भाग्योदय में अवरोध आयेगा। शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। रोजी रोजगार तथा कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। व्यवसायिक लाभ मिलेगा। धार्मिक कार्यों में मन नहीं लगेगा। शुभ दिन : 05, 07, 09, 11, 18, 22, 25 अशुभ दिन : 02, 13, 16, 20, 27, 30

वृश्चिक राशि : 07 से 18 जनवरी तक सम्बन्धों के कारण से आर्थिक हानि होगी। बहुमूल्य वस्तु खोने से मन चिंतित रहेगा। अपने व्यवहार, अत्याधिक वाचालता तथा वाकचातुर्य से हानि उठायेंगे। सम्मानित व्यक्तियों से मतभेद होंगे। मान, प्रतिष्ठा की हानि होगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर हाथ से निकलेगा। शिक्षा में धीमी प्रगति को अंसतोष रहेगा। 18 जनवरी से आय वृद्धि होकर आर्थिक लाभ मिलेगा। प्रशासकीय लाभ मिलेगा। पद प्रतिष्ठा मबढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्त होगी। शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। स्वास्थय उत्तम रहेगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। विरोधी परास्त होंगे। शुभ दिन : 09, 13, 20, 22, 25, 27 अशुभ दिन : 02, 05, 07, 11, 16, 18, 30

धनु राशि : अपव्यय रहेगा। बातचीत में अभद्र भाषा का प्रयोग करेंगे। झगड़े झंझट बढ़ेंगे। सम्बन्ध खराब होंगे। खानपान बिगड़ेगा। दुर्जनों-दुष्टों से मित्रता होगी। अपमानजनक स्थितियां बनेगी। 15 जनवरी से मास के अन्त तक दुर्जन तथा निम्न स्तरीय व्यक्तियों से दूरी बनेगी। विचारों में सात्विकता तथा स्वभाव में नम्रता आयेगी। निकटस्थ व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा। मानसिक शांति मिलेगी। स्वास्थय लाभ होगा। अविवाहितों का विवाह का योग बनेगा। विवाहितों को सन्तान लाभ होगा। विद्याथियों को शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। कार्य, व्यापार, व्यवसाय में उन्नति होगी। तरल पदार्थों, सुगन्धित द्रव्यों, श्रंगारिक वस्तुओं तथा सौन्दर्य प्रसाधनों से लाभ होगा। शुभ दिन : 05, 07, 13, 18, 22, 25, अशुभ दिन : 02, 09, 11, 16, 20, 27, 30

मकर राशि : धन एवं सुख की हानि होगी। मन असन्तुष्ट रहेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। व्यर्थ वाद विवादों में फंसेंगे। कार्यों में अवरोध आयेगे, हानि होगी। असफलता से पद हानि का भय रहेगा। विरोधी प्रबल होंगे। सम्बन्धियों से अनबन होगी। अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थय खराब होगा। परिवार से दूर किसी सुदूर स्थान पर रहना होगा। निरर्थक यात्रांओं में थकावट से कष्ट रहेगा। शिक्षा में विघ्न रहेगा। मान-सम्मान में कमी आयेगी। नगण्य सी बातों पर उत्तेजित होंगे। चोट लगने का भय रहेगा। 18 जनवरी से आर्थिक लाभ होगा। नया सहयोग क्रियान्वित होगा। धन तथा भोग- विलास के साधन प्राप्त होंगे। वस्त्रों अथवा सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। शुभ दिन : 05, 07, 11, 13, 22, 25, 27, अशुभ दिन : 02, 09, 16, 18, 20, 30

कुंभ राशि : 15 जनवरी तक स्वास्थय निर्बल रहेगा। यश तथा मान सम्मान की हानि होगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। पारिवारिक सुख शांति में कमी रहेगी। मतभेद तथा विवादों से आर्थिक हानि होगी। कार्य स्थल पर, रोजी रोजगार में कठिन कार्यकारी परिस्थितिया बनेंगी। 15 जनवरी से पारिवारिक सुख रहेगा स्थान लाभ होगा। सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। पद प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नौकरीपेशा वर्ग में तथा स्व रोजगार कर रहे व्यक्तियों को नई अपोरचुनिटीज मिलेगी। प्रशासनिक सहयोग मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। आर्थिक उन्नति होगी। बन्धु बान्धवों तथा मित्रों से मधुर सम्बन्ध बनेंगे। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। शुभ दिन : 02, 09, 11, 13, 25, 30 अशुभ दिन : 05, 07, 16, 18, 20, 22, 27

मीन राशि : 18 जनवरी तक कोई पद मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विरोधी परास्त होंगे। व्यवसायिक सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। वरिष्ठों का अनुग्रह रहेगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। सामाजिक कार्यों में मिथ्या अपवाद के शिकार होंगे। खानपान बिगड़ेगा। किसी के दुर्व्यवहार से कष्ट होगा। मन अशान्त रहेगा। 18 जनवरी से शरीर में निर्बलता आयेगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। धन हानि होगी। शुभ दिन : 02, 05, 11, 13, 16, 18, 25, 27, 30 अशुभ दिन : 07, 09, 20, 22

फरवरी 2024

मेष राशि : पहले सप्ताह में वाक्चातुर्य से व्यवसायिक सफलता मिलेगी। सामाजिक कार्यों में समय देगे। खानपान बिगड़ेगा। मन अशान्त रहेगा। दूसरे सप्ताह में स्वास्थ्य खराब होगा। विदेश अथवा सुदूर स्थान की यात्रा होगी। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। इसके बाद शारीरिक दुर्बलता दूर होगी। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। विरोधियों से छुटकारा मिलेगा। मतभेद समाप्त होंगे। मन प्रसन्न रहेगा।

स्वास्थय लाभ होगा। चतुर्थ सप्ताह में यश तथा मान सम्मान की हानि होगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। शुभ दिन : 01, 06, 12, 14, 21, 23, 26, 28 अशुभ दिन : 04, 08, 10, 16, 18

वृष राशि : 01 से 13 फरवरी के मध्य मिथ्या अपवाद के भय से मन संतप्त रहेगा। कार्यों में विघ्न बाधायें आयेगी। यात्रांओं में असुविधा तथा हानि होगी। शारीरिक निर्बलता तथा थकान रहेगी। कार्यों पर सुचारु रुप से ध्यान नहीं दे पायेगे। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। 13 से 20 फरवरी में आर्थिक लाभ मिलेगा। प्रतिष्ठितकार्य के सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। पदोन्नति का अवसर आयेगा। शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। देश के अन्दर ही लम्बी दूरी की यात्राये करेंगे। बहुमूल्य वस्तुये प्राप्त होंगी। 20 फरवरी से वाक्‌चातुर्य हानि करेगा। व्यवसायिक रुप से असफल रहेंगे। दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी। मास के अन्त में व्यवहार कुशलता बढ़ेगी। मिथ्या अपवादों से छुटकारा मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ दिन : 10, 12, 14, 26 अशुभ दिन : 01, 04, 06, 08, 16, 18, 21, 23, 28

मिथुन राशि : 01 से 12 फरवरी के मध्य सन्तान सुख में कमी आयेगी। सन्तान योग में विलम्ब रहेगा। मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। लोन चुकाने में अनेक कठिनाईयां अनुभव करेंगे। स्थान परिवर्तन होगा। धारदार वस्तु से चोट लगने का भय रहेगा। 12 फरवरी से कष्टों से मुक्ति मिलेगी। सुखोपभोग तथा विलासिता की सामग्री में वृद्धि होगी। परिवार से सहयोग मिलेगा। शिक्षा में रुचि रहेगी। 13 से 20 फरवरी के मध्य अकारण ही धन हानि होगी। मन अज्ञात कारणों से भयग्रस्त रहेगा। प्रयत्नों में असफलता से निराशा तथा खिन्नता रहेगी। आत्मविश्वास गिरेगा। किसी प्रियजन से अलग रहना होगा। 20 फरवरी से विघ्न बाधांओं का समाधान होगा। लाभकारी यात्रांयें होंगी। कार्य सुचारु रुप सम्पन्न होंगे। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ दिन : 01, 04, 12, 14, 16, 18, 28 अशुभ दिन : 06, 08, 10, 21, 23, 26

कर्क राशि : 01 से 05 फरवरी के मध्य दाम्पत्य जीवन के विवाद समाप्त होंगे। मतभेदों का सम्मानजनक समाधान मिलने से जीवन आनन्दमय रहेगा। प्रशासनिक लाभ मिलेगा। स्वास्थय में सुधार होगा। मन तथा शरीर उर्जान्वित रहेंगे। प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सहयोग मिलेगा। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ होगा। 05 फरवरी से अपव्यय होगा, सुखोपभोग में कमी आयेगी। जीवनसाथी के स्वास्थय में गिरावट आयेगी। 12 फरवरी से आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। इच्छित वस्तु प्राप्त होगी। शासन -प्रशासन तथामहिलाओं वर्ग का सहयोग मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। राजकीय पुरस्कार मिलेगा। 20 फरवरी से सतांन के दायित्वों की पूर्ति में बाधा आयेगी। आय साधन सीमित होंगे। विरोधी मुखर होंगे। कार्यों में असफलता से मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 01, 04, 06, 14, 16, 18, 21, 26 अशुभ दिन : 08, 10, 12, 23, 28

सिंह राशि : आर्थिक अवनति होगी। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। अध्ययन में अरुचि रहेगी। विरोधी मुखर होंगे। बहुमूल्य धातुओं की हानि होगी। कोर्ट कचहरी के मामलों में विपरीत परिणाम मिलेंगे। परिस्थितियों के वशीभूत होकर समझोतों के लिये विवश होना पड़ेगा। के कारण कष्ट रहेगा। दाम्पत्य सुख बाधित होगा। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। दुर्घटनाओं का भय रहेगा। मन चिंताग्रस्त रहेगा। सुखो की हानि होगी। प्रशासनिक भय रहेगा। शारीरिक शिथिलता बढ़ेगी। शुभ दिन :01, 04, 12, 14, 16, 23, 26, 28 अशुभ दिन : 06, 08, 10, 18, 21

कन्या राशि : आक्समिक झगड़े झंझटों में फंसेंगे। घर परिवार से अलग रहना पड़ सकता है। उच्च ताप के कारण शरीर शिथिल रहेगा। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता होंगे। दूसरे सप्ताह से रोग मुक्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विधि सम्मत कार्यों में समय देंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि होगी। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता मिलेगी। विग्रह, झंझट समाप्त होंगे। उपहार मिलेगा। मन किसी के प्रति आसक्त होगा। तीसरे सप्ताह के प्रारम्भ से प्रशासनिक अड़चनें बढ़ेगी। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी। मन खिन्न रहेगा। आर्थिक अवनति होगी। शुभ दिन : 04, 06, 12, 16, अशुभ दिन : 01, 08, 10, 14, 18, 21, 23, 26, 28

तुला राशि : मातृ तुल्य महिलाओं से मनमुटाव होगा। आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। भूमि-भवन के कार्यों में असफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति की हानि होगी। पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। दूसरे सप्ताह से पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। मन प्रफुल्लित रहेगा। मनमानी करने से बचे अन्यथा हानि होगी। तीसरे सप्ताह से मन भ्रमित रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का ह्रास होगा। प्रशासनिक अधिकारियों से वाद विवाद होंगे। यात्रांओं में दुर्घटना का भय बनेगा। आक्समिक रूप से किसी झंझट में फंसेंगे। प्रेम प्रकरण, कार्यों तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी। शुभ दिन : 06, 08, 14, 18, 21 अशुभ दिन : 01, 04, 10, 12, 16, 23, 26, 28

वृश्चिक राशि : 01 फरवरी से परिश्रम तथा साहस से कार्यों में सफलता मिलेगी। आय के नवीन साधन बनेंगे। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। पारिवारिक सुख शांति रहेगी। 05 फरवरी से धनागमन बाधा रहेगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। विरोधी प्रभावी होंगे। कार्यों

की असफलता से मन में उत्साह तथा उंमग का अभाव रहेगा। मान-पद तथा प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रशासन तथा प्रशासनिक कर्मियों का कोपभाजन होंगे। तार्किक क्षमता वाद विवाद में परिवर्तित हो जायेगी। आत्मविश्वास गिरेगा। धातुओं के व्यापार में किसी बहुमूल्य धातु के कारण हानि होगी। 12 फरवरी से रोजी रोजगार तथा कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। व्यवसायिक लाभ मिलेगा। भू-सम्पत्ति तथा यात्रांओं से लाभ होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। 20 फरवरी से शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। विभिन्न कारणों से हानि होगी। आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। वैचारिक मतभेद होंगे। पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। शुभ दिन : 06, 10, 16, 21, 23, अशुभ दिन : 01, 04, 08, 12, 14, 18, 26, 28

धनु राशि : 01 फरवरी से आर्थिक हानि का योग रहेगा। सुखोपभोग में कमी आयेगी। वाचालता तथा वाकचातुर्य से हानि होगी। शिक्षा में धीमी प्रगति का अंसतोष होगा। 05 फरवरी से कार्य में सफलता मिलेगी। राजकीय भय समाप्त होगा। चोरी अथवा अग्निकांड् से बचाव होगा। बहुमूल्य उपहार मिलेगा। सन्तान योग बनेगा। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क होगा। 20 फरवरी से पारिवारिक कलह बढ़ेगी। परिश्रम तथा साहस में कमी रहेगी। आय के साधन कम होंगे तथा अपव्यय अधिक रहेगा। मन भयग्रस्त रहेगा। शुभ दिन :01, 04, 10, 14, 18, 21, 26 अशुभ दिन : 06, 08, 12, 16, 23, , 28

मकर राशि : 01 फरवरी से आर्थिक उन्नति होगी। बन्धन मुक्त होंगे। पारिवारिक मतभेद तथा विवाद समाप्त होंगे। सम्बन्धों में सुधार होगा। 05 फरवरी से कार्यों में सफलता का सुख मिलेगा। शरीर स्वस्थ रहेगा। आपरेशन अथवा चोट लगने की आशंका दूर होगी। अग्निकांड अथवा फूड प्वायजनिंग से बचाव होगा। असामाजिक तत्वों से पीछा छूटेगा। यात्रांओं से लाभ होगा। 12 फरवरी से सुख एवं धन की हानि होगी। मन भोग विलास से हटेगा। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। सन्तान सुख में बाधा आयेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। व्यापार-व्यवसाय में अवनति होगी। तरल पदार्थो, सुगन्धित द्रव्यों, श्रंगारिक वस्तुओं तथा सौन्दर्य प्रसाधनों के कारोबार में हानि होगी। 13 फरवरी से मानसिक शांति मिलेगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। अति प्रिय एवं निकटस्थ व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा। बहुमूल्य उपहार मिलेगा। सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। विद्या में प्रगति होगी। शुभ दिन : 04, 08, 10, 12, 18, 21, 23 अशुभ दिन : 01, 06, 14, 16, 26, 28

कुंभ राशि : 01 फरवरी से मन असंन्तुष्ट रहेगा। विवादों में हानि होगी। असफलता से पद हानि का भय रहेगा। विरोधी प्रबल होंगे। सम्बन्धियों से अनबन होगी। स्वास्थय में गिरावट आयेगी। रक्तचाप अथवा हृदय रोग का भय बनेगा। शिक्षा में विघ्न रहेगा। परिवार से दूर किसी सुदूर स्थान पर रहना होगा। सन्तान से कष्ट रहेगा। निरर्थक यात्रांओं में थकावट से कष्ट रहेगा। किसी भी नगण्य बात पर उत्तेजित होंगे। 20 फरवरी से अपव्यय से बचेंगे। आर्थिक लाभ होगा परन्तु कार्यों का विघ्न बाधाये बनी रहेगी। चोट लगने का भय रहेगा। नया सहयोग क्रियान्वित होगा। विवादों से छुटकारा मिलेगा। पारिवारिक मतभेद समाप्त होंगे। सम्बन्धों में सुधार होगा। मान सम्मान बढ़ेगा। शुभ दिन : 06, 10, 14, 21, 26, 28 अशुभ दिन : 01, 04, 08, 12, 16, 18, 23

मीन राशि : 01 फरवरी से स्वास्थय निर्बल रहेगा। यश प्रतिष्ठा की हानि होगी। सन्तान सुख में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। 05 फरवरी से स्थाई सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। भूमि-भवन से लाभ के लिये उत्तम समय है। कोर्ट कचहरी में इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। मुकद्दमों में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। 13 फरवरी के बाद स्थान परिवर्तन होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव आयेगा। कार्य स्थल पर कठिन परिस्थितिया उत्पन्न होगी। नौकरीपेशा वर्ग में टर्मिनेशन सस्पेन्शन तथा स्व रोजगार कर रहे व्यक्तियों को रोजगार हानि का सामना करना पड़ेगा। प्रशासनिक भय बनेगा। व्यय अधिक रहेगा। शिक्षा में विघ्न रहेगा। शुभ दिन : 01, 08, 10, 12, 14, 23, 26, 28 अशुभ दिन : 04, 06, 16, 18, 21

मार्च 2024

मेष राशि : 07 से 14 मार्च के मध्य शुभाशुभ के मिश्रित फल होंगे। व्यवसाय तथा अन्य कार्यों में अपेक्षित सफलता न मिलने के उपरान्त भी आर्थिक लाभ मिलेगा। पदोन्नति का योग बनेगा। विरोध तथा विरोधी समाप्त प्राय: होंगे। महिलाओं से हानि होगी। दाम्पतय जीवन में मतभेद होंगे। प्रेम सम्बन्धों में अवरोध रहेंगे। स्वास्थय में सुधार होगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। 14 मार्च से 26 मार्च के मध्य स्थान लाभ होगा। सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। कार्य क्षेत्र में नई अपोरचुनिटीज मिलेगी। प्रशासनिक सहयोग मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। भूमि-भवन से लाभ के लिये उत्तम समय है। पारिवारिक सुख रहेगा। शरीर निरोगी रहेगा। नया सहयोग क्रियान्वित होगा। 26 मार्च से अपव्यय रहेगा। सम्बन्धों में हानि होगी। झगड़े झंझट बढ़ेंगे। खानपान बिगड़ेगा। चोट लगने, किसी वस्तु की चोरी होने अथवा खोने का भय रहेगा। सफेद वस्तुओं के व्यवसाय में हानि होगी। शुभ दिन : 04, 08, 10, 12, 19, 24, 27 अशुभ दिन : 02, 06, 14, 17, 22, 29, 31

वृष राशि : 14 मार्च तक स्वास्थय निर्बल रहेगा। यश तथा मान सम्मान की हानि होगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। धन हानि

होगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। विदेश अथवा सुदूर स्थान की यात्रा होगी। 14 मार्च से वरिष्ठो का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यर्थ के वाद विवादों की समाप्ति के बाद से कार्यों में प्रगति होगी। पदोन्नति का योग बनेगा। घर-परिवार में आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव होगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थय में सुधार होगा। प्रेम सम्बन्धों में प्रगति होगी। शुभ दिन : 02, 08, 10, 12, 24, 29 अशुभ दिन : 04, 06, 14, 17, 19, 22, 27, 31

मिथुन राशि : 26 मार्च तक व्यवसायिक सफलता का योग है। प्रतिष्ठितकार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। पदोन्नति का योग बनेगा। बहुमूल्य वस्तुये प्राप्त होंगी। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वरिष्ठो एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में में स्थाईत्व रहेगा। दाम्पत्य सुख रहेगा। लम्बी दूरी की यात्राये करेंगे। सामाजिक कार्यों में समय देगे। खानपान बिगड़ेगा। किसी के दुर्व्यवहार से मन अशान्त रहेगा। स्वास्थय उत्तम रहेगा। 26 मार्च से मतभेद तथा विवाद बढ़ेंगे। प्रबल विरोध होगा। धन हानि होगी। यश, मान सम्मान की हानि होगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। शरीर में निर्बलता आयेगी। शुभ दिन : 02, 10, 12, 14, 17, 27, 29, 31 अशुभ दिन : 04, 06, 08, 19, 22, 24,

कर्क राशि : 07 से 26 मार्च तक छिद्रान्वेषण की प्रवृति रहेगी। मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। मान-सम्मान पर आंच आयेगी। वैमनस्य बढ़ेगा। मन संतप्त रहेगा। यात्रांओं में असुविधा तथा हानि होगी। खानपान बिगड़ेगा। आत्मविश्वास गिरेगा। प्रियजनों से अलग रहना होगा। ऋण चुकाने में कठिनाईयां आयेगी। धारदार वस्तु से चोट लगेगी। तेज ज्वर से पीड़ा होगी। स्थान परिवर्तन होगा। 26 मार्च से मास के अन्त तक वाक्चातुर्य से विरोधी परास्त होंगे। व्यवसायिक सफलता मिलेगी। अधिकार क्षेत्र तथा जिम्मेदारियां बढ़ेगी। शासकीय माध्यम से भाग्योन्नति होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। आरोग्य रहेगा। लम्बी दूरी की यात्रायें करेंगे। वैभवी सामग्री की वृद्धि होगी। शिक्षा में रुचि रहेगी। शुभ दिन : 02, 04, 06, 12, 17, 19, 24, 29, 31 अशुभ दिन : 08, 10, 14, 22, 27

सिंह राशि : 07 से 14 मार्च के मध्य शुभाशुभ के मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। सन्तोषजनक आजीविका प्राप्त होगी। जीवनयापन सुगम बनेगा। महिलाओं वर्ग का सहयोग मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। वांछित प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। मासान्त तक कार्यों में असफलता से मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। छिद्रान्वेषण की प्रवृति रहेगी। सन्तान सुख में कमी रहेगी। सन्तान योग में विलम्ब रहेगा। शासन-प्रशासन से भय की स्थिति बनेगी। किन्हीं कारणों से राजकीय दंड़ का भुगतान करना होगा। व्यय बढ़ेगा। जीवनसाथी के स्वास्थय में गिरावट से दाम्पत्य सुख में बाधा रहेगी। यात्रांओं में असुविधा तथा हानि होगी। खानपान बिगड़ेगा। मास का अन्तिम दिन अपेक्षाकृत शुभ रहेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। शुभ दिन : 02, 06, 10, 12, 14, 17, 22, 24, 27 अशुभ दिन : 04, 08, 19, 29, 31

कन्या राशि : 26 मार्च तक वाद-विवाद, कोर्ट-कचहरी के मामलो में सफलता मिलेगी। अपनी शर्तों पर समझोता करेंगें। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख सहयोग मिलेगा। विपत्तियों से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। विरोध समाप्त होगा। व्यवसायिक उन्नति होगी। आय के नवीन साधनों से धनागमन उत्तम रहेगा। लम्बी यात्रांओं में लाभ मिलेगा। 26 मार्च के बाद बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। धन हानि होगी।यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। मन चिंताग्रस्त रहेगा। मास का अन्त सुखद रहेगा। किसी स्थान पर सम्मानित होंगे। स्वास्थय लाभ होगा। इछित वस्तु प्राप्त होगी। महिलाओं का सहयोग मिलेगा। शुभ दिन : 02, 04, 14, 24, 29, 31 अशुभ दिन : 06, 08, 10, 12, 17, 19, 22, 27

तुला राशि : 15 मार्च तक दैनिक उपभोग की सामग्री के साथ साथ विलासिता की सामग्री क्रय होगी। आर्थिक प्रगति होगी। सन्तान के प्रति दायित्वों की पूर्ति होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग बनेगा। प्रेमी युगलों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। मन प्रसन्न रहेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। किसी नवीन विषय का अध्ययन होगा। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। 15 से 26 मार्च के मध्य आर्थिक स्थिति निर्बल रहेगी। समय से पैमेन्ट नहीं आयेगा। असफलता से मानसिक शांति भंग होगी। अपच तथा पाचन सम्बन्धी रोग होगा। अनुचित इच्छाओं के विचार बनेगे। सन्तान के कारण कष्ट होगा। प्रशासनिक अड़चने बढ़ेगी। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी।

26 मार्च से मतभेदों का सम्मानजनक मिलेगा। प्रशासनिक सहयोग रहेगा। स्वास्थय में सुधार होगा। मन तथा शरीर उर्जान्वित रहेंगे। प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सहयोग मिलेगा। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ होगा। अनचाही विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। आर्थिक लाभ होगा। मन प्रसन्न रहेगा। अपनी शर्तों पर व्यवसायिक समझोते करेंगें। शुभ दिन : 04, 06, 12, 17, 19, 31 अशुभ दिन : 02, 08, 10, 14, 22, 24, 27, 29

वृश्चिक राशि : 07 से 14 मार्च तक सुख, वैभव तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। सफलता साथ देगी।श्शरीर तथा मन प्रफुल्लित रहेगा। स्वभाव में जिद् तथा अहम बढ़ेगा। मनमाने व्यवहार से हानि होगी। 07 से 15 मार्च के मध्य आक्समिक रुप से झगड़े झंझटों में फंसेंगे। अधिकारियों से विवाद होगा। शरीर में शिथिलता आयेगी। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफल होंगे।

अपव्यय होगा। मन व्यग्र रहेगा। दुर्घटना का भय बनेगा। 15 मार्च से मास के अन्त तक पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विधि सम्मत कार्य सम्पन्न करने में रुचि बनेगी। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि अनुभव करेंगे। रोगों से छुटकारा मिलेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। प्रेमी युगलो में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। शिक्षा में प्रगति होगी। कला क्षेत्र में ख्याति मिलेगी। शुभ दिन : 08, 14, 19, 22 अशुभ दिन : 02, 04, 06, 10, 12, 17, 24, 27, 29, 31

धनु राशि : 07 से 14 मार्च तक भूमि-भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति बढ़ेगी। उच्च पदस्थ व्यक्तियों से मित्रता होगी। पारिवारिक सुख रहेगा। रोजी रोजगार तथा कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। स्वभाव में आलस्य आयेगा। शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। समय कुसमय का खानपान होगा।यात्रांओं में असुविधा होगी। 15 मार्च से मास के अन्त तक आरोग्य उत्तम रहेगा। कार्यों में सफलता से मन में उत्साहित रहेगा। प्रशासन तथा प्रशासनिक कर्मियों से सहायता मिलेगी। तार्किक क्षमता का लाभ मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी बहुमूल्य धातु की प्राप्ति होगी। धातुओं के व्यापार से लाभ होगा। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी। झगड़े झंझटों बचकर रहें। शुभ दिन : 02, 06, 08, 12, 17, 19, 24, 27, 29 अशुभ दिन : 04, 10, 14, 22, 31

मकर राशि : मास में प्राय: शुभ फल होंगे। आय बढ़ेगी। मान सम्मान बढ़ेगा। पद प्रतिष्ठा मिलेगी। प्रशासकीय लाभ मिलेगा। स्वास्थय उत्तम रहेगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त होगी। उच्चाधिकारियों से सम्पक्र बनेंगे। पुत्र तथा मित्रों के माध्यम से धन लाभ होगा। शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। परिश्रम के अनुरुप परिणाम मिलेंगे। स्थाई सम्पत्ति अर्जित करेंगे। कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। मास के अन्तिम दिन आर्थिक हानि के प्रति सचेत रहे। शुभ दिन : 06, 08, 10, 17, 19, 22, 27, 29 अशुभ दिन : 02, 04, 12, 14, 24, 31

कुंभ राशि : 26 मार्च तक वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। धन धान्यादि का लाभ मिलेगा। बहुमूल्य उपहार प्राप्त होगा। सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य रहेगा। कार्यों में सफलता का सुख रहेगा। आपरेशन अथवा चोट लगने की आशंका दूर होगी। फूड प्वायजनिंग से बचाव होगा। यात्रांओं से लाभ मिलेगा। असामाजिक तत्वों से पीछा छूटेगा। मानसिक शांति मिलेगी। 26 मार्च से पारिवारिक कलह बढ़ेगी। मन भयग्रस्त रहेगा। परिश्रम में कमी रहेगी। व्यय अधिक होगा। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। सन्तान सुख में बाधा आयेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। सौन्दर्य प्रसाधनों के व्यापार तथा कारोबार में हानि उठायेंगे। शुभ दिन : 04, 08, 10, 12, 19, 24, 31 अशुभ दिन : 02, 06, 14, 17, 22, 27, 29

मीन राशि : 07 से 14 मार्च के मध्य अपव्यय से बचेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। पारिवारिक मतभेद समाप्त होंगे। व्यवहार में सौम्यता आयेगी। सम्बन्धों में सुधार होगा। नया सहयोग क्रियान्वित होगा। विवादों से छुटकारा मिलेगा। चोट लगने का भय रहेगा। किसी वस्तु के खोने का भय रहेगा। सफेद वस्तुओं के व्यापार से हानि होगी।14 मार्च से स्वास्थय में सुधार होगा। रक्तचाप अथवा हृदय रोग की सम्भावना समाप्त होगी। पारिवारिक उलझने दूर होगी। यात्रांओं से लाभ होगा। 26 मार्च से सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। अविवाहितों का विवाह योग रहेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी। अध्ययन में सफलता मिलेगी। सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से आय होगी। शुभ दिन : 06, 10, 12, 24, 27 अशुभ दिन : 02, 04, 08, 14, 17, 19, 22, 29, 31

अप्रैल 2024

मेष राशि : 13 अप्रैल तक असफलता से पद हानि का भय रहेगा। कार्यों में अवरोध आयेगे, हानि होगी। व्यर्थ के वाद विवादों में फंसेंगे। मन में असंतोष रहेगा। भोजन के प्रति अरुचि रहेगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। शिक्षा में विघ्न आयेगा। व्यय बढ़ेगा। 14 अप्रैल से मानसिक व्यथा समाप्त होगी। स्वास्थय में सुधार होगा। पारिवारिक उलझने दूर होगी। घर-परिवार का सुख रहेगा। आर्थिक लाभ होगा। यात्रायें सफल होगी। मन भोग विलास की ओर झुकेगा। आमोद प्रमोद के साधन प्राप्त होंगे। अविवाहितों का विवाह योग बनेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। श्रंगारिक वस्तुओं से आय होगी। शुभ दिन : 09, 15, 20, 23, 28 अशुभ दिन : 03, 05, 07, 11, 13, 18, 25, 30

वृष राशि : 13 अप्रैल तक पारिवारिक मतभेद रहेंगे। विवाद बढ़ेंगे। स्वास्थय निर्बल रहेगा। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। व्यय बढ़ेगा। 13 अप्रैल से पारिवारिक सम्बन्धों में सुधार होगा। सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। कार्य स्थल पर कार्यकारी परिस्थितिया बनेंगी। नई अपोरचुनिटीज मिलेगी। सम्मानजनक स्थितियां बनेगी। व्यय पर नियन्त्रण होगा। आँखों तथा उदर सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिलेगी। भूमि-भवन से लाभ के लिये उत्तम समय है। कोर्ट कचहरी में इच्छित परिणाम आयेगा। महत्वांकाक्षी तथा महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। परन्तु नया अनुबध मिलने अथवा

नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। शुभ दिन : 05, 07, 09, 20, 25 अशुभ दिन : 03, 11, 13, 15, 18, 23, 28, 30

मिथुन राशि : 13 अप्रैल तक व्यवसायिक रुप से असफल रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सुख में कमी रहेगी। वाक्चातुर्य तथा व्यवहार कुशलता बढ़ेगी। मिथ्या अपवादों से छुटकारा मिलेगा। 13 अप्रैल से वरिष्ठां का अनुग्रह रहेगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। मांगलिक कार्य पूर्ण होने की प्रसन्न्ता रहेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। महिलाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त करेंगे। विदेश अथवा सुदूर स्थान की यात्रा होगी। जंक फूड़ आदि से बचकर रहे तो स्वास्थय ठीक रहेगा। अनेतिक तथा नियम विरुद्ध कार्यों से बचकर रहे। शुभ दिन : 07, 09, 11, 13, 23, 25, 28, अशुभ दिन : 03, 05, 15, 18, 20, 30

कर्क राशि : 23 अप्रैल तक कार्य सुचारु रुप सम्पन्न होंगे, अवरोधों का समाधान होगा। लाभकारी यात्रायें होंगी। अपवाद की स्थिति समाप्त होगी। पदोन्नति होगी। स्वास्थय उत्तम रहेगा। सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। इसके बाद निर्बलता से थकान बनेगी तथा कार्यों पर सुचारु रूप से ध्यान नहीं दे पायेगे। अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति निर्बल रहेगी। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। विरोध एवं विरोधी प्रभावी होंगे। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। शुभ दिन : 09, 11, 13, 15, 20, 25, 28 अशुभ दिन : 03, 05, 07, 18, 23, 30

सिंह राशि : 23 अप्रैल तक सन्तान सुख में कमी रहेगी। सन्तान योग में विलम्ब रहेगा। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। प्रयत्नों में असफलता से निराशा तथा खिन्नता रहेगी। वरिष्ठों से मतभेद होगा। मन अशांत रहेगा। आत्मविश्वास गिरेगा। प्रियजनों से अलग रहना होगा। भोजन से अरुचि रहेगी। शासकीय प्रताड़ना होगी। यात्रायें निरस्त होंगी। अन्तिम सप्ताह में रुकावट तथा बाधाऐं समाप्त होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। रोग मुक्त होंगे। ऋण का भुगतान होगा। दुर्घटना से बचाव होगा। स्थान लाभ होगा। पारिवारिक सुख रहेगा। शुभ दिन : 03, 07, 11, 13, 18, 20, 23, 30 अशुभ दिन : 05, 09, 15, 25, 28,

कन्या राशि : 24 अप्रैल तक आर्थिक स्थिति कठिन रहेगी। दाम्पत्य जीवन में विवाद होंगे। मनमुटाव तथा वैचारिक मतभेद रहेंगे। शरीर निस्तेज रहेगा शिथिलता बढ़ेगी। प्रशासनिक भय रहेगा। राजकीय दंड़ का भुगान करना होगा। यात्राओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। मन चिंताग्रस्त रहेगा। कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। व्यय बढ़ेगा। 24 अप्रैल से कष्ट मुक्त होंगे। आर्थिक सुख सहयोग मिलेगा। शिक्षा में रुचि रहेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। पदोन्नति का योग रहेगा। शुभ दिन : 05, 20, 25, 28, अशुभ दिन : 03, 07, 09, 11, 13, 15, 18, 23, 30

तुला राशि : कार्यों में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। आर्थिक उन्नति होगी। अध्ययन-अध्यापन में रुचि रहेगी। कला क्षेत्र में ख्याति मिलेगी। सामाजिक मान-सम्मान बढ़ेगा। विरोधी परास्त होंगे। 13 अप्रैल से व्यवसायिक बाधांओं का सामना करना पड़ेगा। असफलता मिलेगी। मतभेद एवं विवाद होंगे। सन्तान रोग पीड़ित होगी। थकादेने वाली यात्रांओं से कष्ट रहेगा। जीवनयापन के लिये कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। आजीविका परिश्रम से प्राप्त होगी। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। 23 अप्रैल से आय के नवीन साधन बनेंगे। बहुमूल्य धातु मिलेगी। रोगों से छुटकारा मिलेगा। विरोधियों पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होंगे। विवादों का अन्त होगा। प्रभाव में वृद्धि होगी। कोर्ट कचहरी के मामलो में इच्छित परिणाम आयेगे। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ दिन : 03, 09, 13, 15, 28, 30 अशुभ दिन : 05, 07, 11, 18, 20, 23, 25

वृश्चिक राशि : कार्यों में सफलता मिलेगी। मानसिक तथा शारीरिक रुप से उर्जान्वित रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे। झगड़े झंझटों से बचाव होगा। जीवन साथी तथा सतांन से सहयोग मिलेगा। घर परिवार का सुख रहेगा। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में प्रगति होगी। 13 अप्रैल से सुख समृद्धि में कमी रहेगी। धन-धान्य की हानि होगी। रोग ग्रस्त होंगे। प्रशासनिक अड़चने बनेगी। पद प्रतिष्ठा की हानि होगी। अनुचित इच्छाओं के विचार बनेंगे। अवैधानिक तथा असामाजिक कार्यों में रुचि होगी। सन्तान के कारण कष्ट होगा। 24 अप्रैल से विरोध समाप्त होगा। विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। विभिन्न कार्यों से लाभ होगा। वाद विवाद में सफलता मिलेगी, अपनी शर्तो पर समझोता करेंगें। सहयोगियों के साथ वैचारिक साम्यता रहेगी। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता मिलेगी। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शुभ दिन : 05, 11, 15, 18 अशुभ दिन : 03, 07, 09, 13, 20, 23, 25, 28, 30

धनु राशि : भूमि -भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। उच्च पदस्थ व्यक्तियों से मित्रता होगी। पारिवारिक सुख रहेगा। व्यय नियन्त्रित रहेगा। भ्रम की स्थिति का निवारण होगा। मन में स्थिरता आयेगी। वार्तालाप से प्रशासनिक अधिकारियों को संतुष्ट करने में सफलता मिलेगी। आत्मविश्वास से व्यक्तित्व में प्रखरता आयेगी। यात्रांओं में दुर्घटना से बचाव होगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। अधिकार क्षेत्र में वृद्धि होगी। प्रेमी युगलो में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय

परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। 23 अप्रैल से स्वजनों से विरोध होगा। मानसिक रुप से स्वयं को असहाय अनुभव करेंगे। ज्वर पीड़ित होंगे। स्थान परिवर्तन होगा। शुभ दिन : 05, 09, 13, 20, 23, 25 अशुभ दिन : 03, 07, 11, 15, 18, 28, 30

मकर राशि : व्यय अधिक रहेगा। परिश्रम तथा साहस में कमी रहेगी। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। मन भयग्रस्त रहेगा। सुख शांति का अभाव रहेगा। यात्रांओं में असुविधा होगी। सहयोगियों के कारण अवरोध बनेंगे। भू-सम्पत्ति के मामलो में अवरोध बनेंगे। स्वास्थय निर्बल रहेगा। विरोधी प्रभावी होंगे। असफलता से मन में निराशा आयेगी। ताक्रिक क्षमता वाद विवाद में परिवर्तित हो जायेगी। आत्मविश्वास डगमगायेगा। प्रशासन तथा प्रशासनिक कर्मियों का कोपभाजन होंगे। किसी बहुमूल्य धातु के कारण हानि होगी। 24 अप्रैल से आर्थिक लाभ मिलेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। स्वभाव की जिद्द तथा अहम से बचकर रहे। शुभ दिन : 03, 05, 07, 13, 15, 18, 23, 25, 30 अशुभ दिन : 09, 11, 20, 28

कुंभ राशि : प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। रोगों से मुक्ति मिलेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। अपने सद्व्यवहार से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। परिश्रम के अनुरुप परिणाम मिलेंगे। प्राय: ही सभी कार्य सफल होंगे। आर्थिक उन्नति होगी। दुर्जनों से पीछा छूटेगा। राजकीय भय समाप्त होगा। चोरी अथवा अग्निकांड से बचेंगे। रोजी रोजगार तथा कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। व्यवसायिक लाभ मिलेगा। 24 अप्रैल के बाद सहायको से मतभेद होंगे। भाग्योदय में अवरोध आयेगा। शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। शुभ दिन : 05, 07, 09, 15, 20, 28 अशुभ दिन : 03, 11, 13, 18, 23, 25, 30

मीन राशि : अपव्यय से बचेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। मतभेद समाप्त होंगे। सम्बन्धों में सुधार होगा। विवादों से छुटकारा मिलेगा। बातचीत में सौम्यता आयेगी। 13 अप्रैल से धन हानि के प्रति सावधान रहे। अति प्रिय एवं निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा मिल सकता है। स्वभाव में नम्रता बनाये रखें। प्रशासकीय कारणों से हानि होगी। शिक्षा तथा अध्ययन से मन हटेगा। पदावनति का भय रहेगा। स्वास्थय गिरेगा। बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। मास के अन्त में शरीर स्वस्थ रहेगा। आपरेशन की आशंका दूर होगी। फूड प्वायजनिंग से बचाव होगा। पारिवारिक सुख शांति रहेगी। कार्यों में सफलता का सुख रहेगा। यात्रांओं से लाभ मिलेगा। शुभ दिन : 03, 07, 09, 11, 18, 20, 23, 30 अशुभ दिन : 05, 13, 15, 25, 28

मई 2024

मेष राशि : अपव्यय से बचेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। बन्धन मुक्त होंगे। पारिवारिक मतभेद समाप्त होंगे। विवादों से छुटकारा मिलेगा। सम्बन्धों में सुधार होगा। 14 मई से धन हानि के प्रति सावधान रहे। अति प्रिय एवं निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा मिल सकता है। विचार पूर्वक कार्य करे। 19 मई से प्रशासकीय लाभ मिलेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। विरोधी परास्त होंगे। मास के अन्त में धन-धान्यादि की हानि होगी। आर्थिक हानि का योग रहेगा। किसी बहुमूल्य वस्तु के खोने से मन चिंतित रहेगा। सम्मानित व्यक्तियों से वैचारिक मतभेद होंगे। अत्याधिक वाचालता तथा वाकचातुर्य से हानि होगी। शिक्षा की धीमी प्रगति से अंसतोष होगा। शुभ दिन : 06, 08, 13, 15, 18, 20, 23, 25, 27 अशुभ दिन : 02, 04, 10, 29, 31

वृष राशि : आर्थिक लाभ मिलेगा। व्यर्थ के वाद विवादों की समाप्ति के बाद से कार्यों में प्रगति होगी। पदोन्नति का योग बनेगा। मित्रों तथा सम्बन्धियों का सानिध्य तथा सहयोग मिलेगा। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थय में सुधार होगा। रक्तचाप अथवा हृदय रोग की सम्भावना समाप्त होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। अविवाहितों का विवाह योग बनेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। व्यापार में उन्नति होगी। सुगन्धित द्रव्यों, श्रंगारिक वस्तुओं से आय होगी। यात्रांओं से लाभ होगा। स्वभाव में विनम्रता रहेगी। मास के अन्त में धन हानि तथा बन्धन का भय रहेगा। बैक बाईटिंग से दूर रहना श्रेयस्कर रहेगा। शुभ दिन : 04, 06, 18, 23, 31 अशुभ दिन : 02, 08, 10, 13, 15, 20, 25, 27, 29

मिथुन राशि : पारिवारिक मतभेद रहेंगे। धन हानि होगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। 14 मई से स्थान लाभ होगा। सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। पारिवारिक सुख रहेगा। प्रशासनिक सहयोग मिलेगा। महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। कार्यस्थल पर नई अपोरचुनिटीज मिलेगी परन्तु नया अनुबंध मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। व्यर्थ के वाद विवादों की समाप्ति के बाद से कार्यों में प्रगति होगी। सफलता के पश्चात् पदोन्नति का योग बनेगा। आँखों तथा उदर सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिलेगी। स्वास्थय में सुधार होगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 06, 08, 10, 20, 23, 25, 31 अशुभ दिन : 02, 04, 13, 15, 18, 27, 29

कर्क राशि : व्यवसायिक सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। खानपान बिगड़ेगा। किसी के दुर्व्यवहार से मन अशान्त रहेगा। 14 मई से आर्थिक हानि होगी। घर में कोई आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव निरस्त होने से मन उदास रहेगा। वरिष्ठो से मतभेद होंगे। मन में कुविचार आयेंगे। 19 मई से कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग रहेगा। मान सम्मान में वृद्धि होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति होगी। श्शुभ कार्यों में प्रवृति रहेगी। शुभ दिन : 06, 08, 10, 13, 25 अशुभ दिन :02, 04, 15, 18, 20, 23, 27, 29, 31

सिंह राशि : मिथ्या अपवाद से मन संतप्त रहेगा। समस्त कार्यों में विघ्न बाधाऐं आयेगी। यात्रांओं में हानि होगी। सहोदरों से वैमनस्य रहेगा। 14 मई से वरिष्ठो एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। प्रतिष्ठित कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। पदाधिकार बढ़ेगा। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। पद प्रतिष्ठा, मान-सम्मान में वृद्धि होगी। 19 मई श्से शरीर में निर्बलता आयेगी। धन हानि होगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। मास के अन्त में वाक्चातुर्य से कार्यों के अवरोध समाप्त होंगे। सामाजिक कार्यों में समय देगे। शुभ दिन : 04, 08, 10, 13, 15, 18, 20, 25, 27, 31 अशुभ दिन :02, 06, 23, 29

कन्या राशि : आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। आत्मविश्वास गिरेगा। सन्तान सुख में कमी रहेगी। सन्तान योग में विलम्ब होगा। आय साधन सीमित होंगे। मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। किसी प्रियजन से अलग रहना होगा। वरिष्ठों मित्रों तथा सहोदरों से विरोध होगा। शासकीय प्रताड़ना होगी। यात्रायें निरस्त होंगी।खानपान बिगड़ेगा। सम्बन्धियों तथा सहोदरों से वैमनस्य रहेगा। धर्म तथा शास्त्रीय संदर्भो से विरक्ति रहेगी। शुभ दिन : 02, 04, 08, 18, 23, 25, 29, 31 अशुभ दिन :06, 10, 13, 15, 20, 27

तुला राशि : धनागम बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। दाम्पत्य जीवन के विवाद समाप्त होंगे। मतभेदों का सम्मानजनक समाधान मिलने से जीवन आनन्दमय रहेगा। प्रशासनिक लाभ मिलेगा। स्वास्थय में सुधार होगा। मन तथा शरीर उर्जान्वित रहेंगे। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ होगा। 14 मई से कार्यों में व्यवधान आयेंगे। असफलता से मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। शासन-प्रशासन से भय की स्थिति बनेगी। किन्हीं कारणों से राजकीय दंड़ का भुगतान करना होगा। आय साधन सीमित होंगे। भय तथा अपमान की स्थिति बनेगी। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। व्यय की अधिकता रहेगी। दाम्पत्य जीवन में बाधा आयेगी। सन्तान सुख में कमी आयेगी। शिक्षा में अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 10, 13, 25, 27 अशुभ दिन : 02, 04, 06, 08, 15, 18, 20, 23, 29, 31

वृश्चिक राशि : अध्ययन में रुचि रहेगी। लेखन, संगीत, वाद्य कला में ख्याति प्राप्त होगी। सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। मान-सम्मान बढ़ेगा। 14 मई से कार्यों में अवरोध आयेंगे। व्यवसायिक बाधांओं का सामना करना पड़ेगा। सन्तान पीड़ित होगी। जीवन साथी से वैमनस्य होगा। यात्रांओं में कष्ट रहेगा। अपच तथा कब्ज आदि से पीड़ित होंगे। 19 मई से आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। सन्तोषजनक आजीविका प्राप्त होगी। महिलाओं वर्ग का सहयोग मिलेगा। जीवनयापन सुगम बनेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। वांछित प्राप्ति का सुख रहेगा। मास के अन्त में धन हानि होगी। प्रशासनिक भय रहेगा। शिथिलता बढ़ेगी। मन चिंताग्रस्त रहेगा। शुभ दिन : 02, 08, 13, 15 अशुभ दिन :04, 06, 10, 18, 20, 23, 25, 27, 29, 31

धनु राशि : आक्समिक रुप से विवाद ग्रस्त होंगे। घर परिवार से अलग रहना पड़ सकता है। उच्च ताप के कारण शरीर में शिथिलता आयेगी। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफल रहेंगे। मानसिक शांति भंग होगी। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी। प्रशासनिक अड़चने बढ़ेगी। 19 मई से विरोध समाप्त होगा। विवादों में अपनी श्शर्तो पर समझोता करेंगे। विभिन्न मार्गों से लाभ मिलेगा। सहयोगियों के साथ वैचारिक साम्यता रहेगी। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। अन्जानी-विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। आर्थिक उन्नति होगी। पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन में रुचि रहेगी। वैभवी सामग्री क्रय करेंगे। शुभ दिन : 02, 04, 06, 10, 15, 18, 23, 25, 29, 31 अशुभ दिन :08, 13, 20, 27

मकर राशि : स्वयं तथा सन्तान का स्वास्थय विपरीत रुप से प्रभावित होगा। भ्रमवश अधिकारियों से विवाद करेंगे। यात्रांओं में दुर्घटना का भय बनेगा। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। अपव्यय होगा। 19 मई से अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। आय के नये मार्ग बनेंगे। धन-धान्य वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग बनेगा। प्रेमी युगलो में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। मास के अन्त में योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। आक्समिक विवाद होगा। मतभेद होंगे। घर परिवार से अलग रहना पड़ सकता है। शरीर में शिथिलता आयेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी। शुभ दिन : 02, 04, 08, 13, 15, 20, 23, 29, 31 अशुभ दिन :06, 10, 18, 25, 27

कुंभ राशि : विरोधियों से त्रस्त रहेंगे। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। मानसिक तथा शारीरिक व्यथायें बढ़ेगी। भयग्रस्त रहेगा। परिश्रम तथा साहस में कमी आयेगी। आय के साधन कम होंगे, अपव्यय अधिक रहेगा। आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण रहेगी। भू-सम्पत्ति के मामलो में अवरोध बनेंगे। यात्रांओं में असुविधा होगी। नम्रता से बाधांओं तथा अवरोधों का निवारण कर सकेंगे। मास का अन्त श्शुभ फलो के साथ होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्थाई सम्पत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्च पदस्थ व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। शुभ दिन : 02, 04, 06, 13, 18, 25, 29, 31 अशुभ दिन :08, 10, 15, 20, 23, 27

मीन राशि : किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। अपने सद्व्यवहार से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। वाकचातुर्य का लाभ मिलेगा। बहुमूल्य उपहार मिलेंगे। सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। विद्या में प्रगति होगी। रोगों से मुक्ति मिलेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। पुत्र तथा मित्रों के माध्यम से धन लाभ होगा। आरोग्य रहेगा। मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। 19 मई से काय सम्बन्धी विवाद समाप्त होंगे। व्यवसायिक लाभ मिलेगा। आलस्य करेंगें आधीनस्थो तथा सहायको से मतभेद होंगे। मान- सम्मान की हानि होगी। शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। मास के अन्त में पारिवारिक कलह बढ़ेगी। अपव्यय अधिक रहेगा। शुभ दिन : 04, 06, 08, 15, 18, 27, 31 अशुभ दिन : 02, 10, 13, 20, 23, 25, 29

जून 2024

मेष राशि : कार्यों में असफलता का सामना करना पड़ेगा। यात्रांओं में कष्ट होगा। विभिन्न उपद्रवों से मन खिन्न रहेगा। पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे। स्वास्थय निर्बल रहेगा। आपरेशन अथवा चोट लगने का भय रहेगा। 12 जून से परिश्रम का परिणाम मिलेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। आय के नवीन साधन बनेंगे। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। भाग्योदय का सुख मिलेगा। उच्चाधिकारियों से सम्पक्र बनेंगे।शासकीय सहायता प्राप्त करेंगे। रोगों से मुक्ति मिलेगी। धन प्राप्ति के उपरान्त भी आर्थिक कठिनाई अनुभव करेंगे। रोजी रोजगार तथा कार्यालय में उलझने रहेगी। व्यवसायिक हानि के प्रति सचेत रहे। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। मास के अन्त में आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। धनागम में कठिनाईयां उत्पन्न होगी। विभिन्न माध्यमों तथा कारणों से हानि होगी। स्थाई सम्पत्ति की हानि होगी। पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। शुभ दिन : 03, 05, 09, 14, 17, 19, 21, 30 अशुभ दिन : 07, 11, 23, 26, 28

वृष राशि : आर्थिक लाभ मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। दाम्पत्य जीवन के मतभेद समाप्त होंगे। घर परिवार तथा सन्तान का सुख रहेगा। रोग मुक्त रहेंगे। अध्ययन में रुचि रहेगी। शिक्षा में प्रगति होगी। बहुमूल्य उपहार मिलेगा। सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाकचातुर्य से विरोधी परास्त होंगे। 15 जून से निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा होगा। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। मन भयग्रस्त रहेगा। विचारों में धूर्तता आयेगी। परिश्रम के अनुरुप परिणाम नहीं मिलेगा। कृषि तथा वाणिज्य दोनों ही से हानि होगी अत: विचार पूर्वक कार्य करे। धन हानि के प्रति सावधान रहे। स्वभाव की कठोरता पर नियन्त्रण रखे। शुभ दिन : 03, 14, 19, 21, 28, 30 अशुभ दिन : 05, 07, 09, 11, 17, 23, 26

मिथुन राशि : भूमि-भवन से लाभ के लिये उत्तम समय है। भूमिभवन का लाभ होगा। धनागमन रहेगा। व्यापार में उन्नति होगी। वैभवी साधन मिलेंगे। सुगन्धित द्रव्यों से आय होगी। आय में वृद्धि होगी। स्वास्थय उत्तम रहेगा। चले आ रहे मुकद्दमों में विजय प्राप्त होगी। कोर्ट कचहरी के मामलो में इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। सहोदरों से लाभ होगा। अविवाहितों का विवाह बनेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। 14 जून से अपव्यय होगा। चुगलखोरों से हानि तथा बन्धन का भय रहेगा। पारिवारिक जनों से विरोध होगा। सम्बन्धों की हानि होगी। झगड़े झंझट बढ़ेंगे। खानपान अस्त व्यस्त होगा। उदर विकार होगा। स्वास्थय बिगड़ेगा। परिवार से दूर किसी सुदूर स्थान पर रहना होगा। कार्यों में अवरोध बनेंगे। उलझने बढ़ेगी। आयेगी। निरर्थक यात्रांओं में थकावट से कष्ट होगा। किसी भी नगण्य बात पर उत्तेजित होंगे। मास के अन्त में सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी। बहुमूल्य उपहार मिलेगा। शुभ दिन : 03, 05, 07, 17, 19, 21, 30 अशुभ दिन : 09, 11, 14, 23, 26, 28

कर्क राशि : कार्यस्थल पर कठिन परिस्थितियों का सामना पड़ेगा। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। अपौष्टिक पदार्थों - जंक फूड़ आदि के भोजन से स्वास्थ्य खराब होगा। विदेश अथवा सुदूर स्थान की यात्रा होगी। 12 जून से कार्यों में प्रगति होगी। भय एवं आशंका समाप्त होगी। आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। नया अनुबंध मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में समय लगेगा। सफलता के पश्चात् पदोन्नति का योग बनेगा। महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। स्वास्थय में सुधार होगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थान लाभ होगा। सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। कार्य क्षेत्र में नई अपोरचुनिटीज मिलेगी। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। रोग मुक्त रहेंगे। मास के अन्त में बैक बाईटिंग से बच कर रहे अन्यथा झंझट होंगे। शुभ दिन : 03, 05, 07, 09, 19, 21, 30 अशुभ दिन : 11, 14, 17, 23, 26, 28

सिंह राशि : शारीरिक निर्बलता से कार्यों पर सुचारु रुप से ध्यान नहीं दे पायेंगे। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। 12 जून से व्यवसायिक सफलता मिलेगी। व्यर्थ के वाद विवादों की समाप्ति के बाद से कार्यों में प्रगति होगी। पदोन्नति का योग बनेगा। महिलाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। प्रशासन तथा सहकर्मियों का सहयोग रहेगा। वरिष्ठो का अनुग्रह प्राप्त होगा।घर- परिवार में मांगलिक उत्सव होगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 05, 07, 09, 11, 14, 21, 23, 28 अशुभ दिन :03, 17, 19, 26, 30

कन्या राशि : पारिवारिक जीवन में बाधा आयेगी। स्थान परिवर्तन होगा। किसी धारदार वस्तु से चोट लगेगी। ज्वर ग्रस्त होंगे। प्रत्येक कार्य में रुकावट तथा अवरोध आयेंगे। ऋण को चुकाने में कठिनाईयां रहेगी। 12 जून श्से आर्थिक लाभ मिलेगा। वाक्चातुर्य से विरोधियों के साथ मतभेद समाप्त होंगे। महिलाओं का सहयोग मिलेगा। व्यवसायिक सफलता मिलेगी। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख मिलेगा। 15 जून से आर्थिक हानि होगी। किसी के दुर्व्यवहार से कष्ट होगा। मन अशान्त रहेगा। स्वास्थय गिरेगा। प्रतिष्ठितकार्य में असफलता से वरिष्ठो का कोपभाजन बनेंगे। नया अनुबध हाथ से निकेलेगा। पदावनति होगी। प्रतिष्ठा की हानि होगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। शुभ दिन : 05, 14, 19, 21, 23, 26 अशुभ दिन :03, 07, 09, 11, 17, 28, 30

तुला राशि : व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। वैभवी वस्तुयें क्रय करेंगे। स्वास्थय में सुधार होगा। 12 जून से भोगोपभोग की वस्तुओं से स्वास्थय खराब होगा।खानपान बिगड़ेगा। कार्यों में अवरोध आयेगे। प्रशासकीय प्रताड़ना होगी। भाईयों तथा मित्रों से विरोध होगा। यात्राये निरस्त होंगी। मिथ्या अपवाद तथा बहुमूल्य वस्तु खोने का भय रहेगा। 15 जून से वैचारिक मतभेद समाप्त होंगे। मिथ्या अपवादों से छुटकारा मिलेगा। स्वास्थय सुधरेगा। धन लाभ होगा। अकारण भय का निवारण होगा। किये गये प्रयत्नों में सफलता प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। मानसिक शांति मिलेगी। 29 जून से दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी। अत्याधिक वाक्चातुर्य से हानि होगी। विरोधियों को अवसर मिलेगा। सामाजिक कार्यों से बचने का प्रयास रहेगा। मिथ्या अपवादों छुटकारा मिलेगा। शुभ दिन : 07, 09, 21, 23 अशुभ दिन : 03, 05, 11, 14, 17, 19, 26, 28, 30

वृश्चिक राशि : आय के नवीन साधन बनेंगे। धनागमन उत्तम रहेगा। बहुमूल्य धातुओं का लाभ होगा। कोर्ट कचहरी के मामलो में सफलता मिलेगी। विवादों का अन्त होगा। मान-प्रतिष्ठा मिलेगी। विलासिता की सामग्री में वृद्धि होगी। परिवार से आर्थिक सुख सहयोग मिलेगा। शिक्षा में रुचि रहेगी। 14 जून से सन्तान सुख में कमी रहेगी। सन्तान योग में विलम्ब रहेगा। आय साधन सीमित होंगे। मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। किन्हीं कारणों से राजकीय दंड़ का भुगतान करना होगा। व्यय बढ़ेगा। मास के अन्त में बाधांओं का समाधान होगा। लाभकरी यात्रायें होंगी। अपवाद की स्थिति समाप्त होगी। मन प्रसन्न रहेगा। सम्बन्धियों तथा सहोदरों का सहयोग रहेगा। शुभ दिन : 05, 09, 11, 26 अशुभ दिन :03, 07, 14, 17, 19, 21, 23, 28, 30

धनु राशि : अनुचित इच्छाओं तथा आंकाक्षाओं के विचार से अवैधानिक कार्यों में रुचि होगी। सन्तान की बीमारी से अथवा सन्तान के कारण कष्ट होगा। आय में कमी रहेगी। आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। कार्य स्थल पर कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। महिलाओं के कारण हानि, शोक तथा अपमान की स्थिति बनेगी। दाम्पत्य जीवन में विवाद होंगे। मनमुटाव तथा वैचारिक मतभेद रहेंगे। मन चिंताग्रस्त रहेगा। मास के अन्त में स्थिति में परिवर्तन होगा। आय के नये साधन बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। सन्तान सुख मिलेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। फिर भी मन अशांत रहेगा। शुभ दिन : 03, 07, 11, 14, 19, 26, 28, 30 अशुभ दिन : 05, 09, 17, 21, 23

मकर राशि : पारिवारिक समस्याओं के कारण बन्धु बान्धवों से विरोध रहेगा। भूमि-भवन तथा स्थाई सम्पत्ति सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न होगी। स्थान परिवर्तन होगा। ज्वर पीड़ित होंगे। मानसिक रुप से स्वयं को असहाय अनुभव करेंगे। 12 जून से साझेदारों के साथ वैचारिक साम्यता रहेगी। वाद विवाद में सफलता मिलेगी। अपनी श्शर्तो पर समझोता करेंगे। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। अनचाही विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। 14 जून से प्रशासनिक अड़चने बढ़ेगी। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी। आर्थिक स्थिति कठिन रहेगी। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा।शरीर निस्तेज रहेगा शिथिलता बढ़ेगी। शिक्षा में अवरोध बनेगा। अध्ययन से अरुचि रहेगी। शांति भंग होगी। मन खिन्न रहेगा। शुभ दिन : 09, 11, 14, 17, 26, 28, 30 अशुभ दिन :03, 05, 07, 19, 21, 23

कुंभ राशि : परिश्रम के अनुरुप सफलता न मिलने से मन निराश होगा। उत्साह तथा उंमग का अभाव रहेगा। प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आत्मविश्वास ड़गमगायेगा। ताक्रिक क्षमता वाद विवाद में परिवर्तित हो जायेगी। किसी बहुमूल्य धातु के कारण हानि होगी।12 जून श्से व्यवहारिक समाधान मिलेगा। कार्यों में सफलता से उत्साह बढ़ेगा।धनागमन में सुधार होगा। मन किसी के प्रति आकर्षित होगा। किसी प्रिय वस्तु का लाभ मिलेगा।

14 जून से भ्रम की स्थिति बनने से विवाद ग्रस्त होंगे। शरीर में शिथिलता आयेगी।योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी। घर परिवार से अलग रहना पड़ सकता है। अपव्यय होगा। यात्रांओं में दुर्घटना का भय रहेगा। अध्ययन में रुचि का अभाव रहेगा। शुभ दिन : 03, 09, 14, 21, 28, 30 अशुभ दिन : 05, 07, 11, 17, 19, 23, 26,

मीन राशि : परिश्रम के अनुरुप परिणाम मिलेंगे। प्राय: ही सभी कार्य में सफल होंगे। दुर्जनों से पीछा छूटेगा। राजकीय भय समाप्त होगा। चोरी अथवा अग्निकांड़ से बचेंगे। 12 जून से इच्छाओ, आंकक्षाओं की पूर्ति में अवरोध बनेंगे। आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण रहेगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। परन्तु स्वभाव की नम्रता से बाधांओं तथा अवरोधों को दमन करने में सफलता मिलेगी। 14 जून से मातृ तुल्य महिलाओं का आर्शीवाद रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धनागम बढ़ेगा। विभिन्न माध्यमों से लाभ मिलेगा। भूमि –भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। 15 जून से सुख शांति का अभाव रहेगा। समय कुसमय का खानपान होगा। व्यसनों से लगाव रहेगा। यात्रांओं में असुविधा होगी। जीवन साथी से मतभेद होंगे। मानहानि होगी। सहयोगियों के कारण अवरोध बनेंगे।घर परिवार से अलग रहने की स्थिति बनेगी। शरीर शिथिल रहेगा। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी।शुभ दिन : 03, 05, 11, 14, 17, 23, 28, 30 अशुभ दिन :07, 09, 19, 21, 26

जुलाई 2024

मेष राशि : मासारम्भ में आंकक्षाओं की पूर्ति में अवरोध आयेगे। आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण रहेगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। वाद विवादों के कारण सहयोग नहीं मिलेगा। मित्रों से दूरी बढ़ेगी। 12 जुलाई के बाद से प्राय: ही सभी कार्य में योजनाओं के अनुरुप सफल होंगे। राजकीय भय समाप्त होगा। मानसिक तथा शारीरिक दृढ़ता रहेगी। शारीरिक व्यथायें समाप्त होगी। झगड़े झंझटों से बचाव होगा। परिश्रम के अनुरुप परिणाम मिलेंगे। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। आय के नये मार्ग बनेंगे। विभिन्न स्रोत्रो से आय के कारण आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। चोरी अथवा अग्निकांड़ से बचेंगे। यात्रांओं से लाभ होगा। भू–सम्पत्ति अर्जित होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। घर परिवार में सुख शांति बनेगी। प्रेम प्रकरणो तथा वार्ताओं में प्रगति होगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग बनेगा। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 02, 06, 09, 11, 14, 16, 19, 21, 27 अशुभ दिन : 04, 23, 25, 29, 31

वृष राशि : रोजी रोजगार तथा कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। व्यवसायिक लाभ मिलेगा। परिश्रम में कमी से भाग्योन्नति में बाधा रहेगी। शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। 12 जुलाई से आपरेशन अथवा चोट लगने की आशंका दूर होगी। शरीर स्वस्थ रहेगा। बन्धु बान्धवों का सहयोग मिलेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। यात्रांओं से लाभ मिलेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। असामाजिक तत्वों से पीछा छूटेगा। मन प्रसन्न रहेगा। 16 जुलाई से स्वास्थ्य गिरेगा। उच्चाधिकारियों से मतभेद होंगे। आर्थिक हानि होगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर हाथ से निकलेगा।। अपने व्यवहार से कार्यों की हानि करेंगे। 19 जुलाई से भूमि –भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति की वृद्धि होगी। मास के अन्त में स्वभाव की नम्रता से बाधांओं तथा अवरोधों का समाधान होगा। शुभ दिन : 04, 11, 16, 25, 27 अशुभ दिन :02, 06, 09, 14, 19, 21, 23, 29, 31,

मिथुन राशि : प्रशासकीय लाभ मिलेगा। स्वास्थय उत्तम रहेगा। पद प्रतिष्ठा मिलेगी। शिक्षा तथा अध्यययन में प्रगति होगी। उपहार मिलेगा। सम्मानित होंगे। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। मतभेद समाप्त होंगे। घर परिवार, सन्तान का सुख रहेगा। 16 जुलाई से व्यवसायिक लाभ के उपरान्त भी आय के साधन कम होंगे तथा अपव्यय अधिक रहेगा। कार्यस्थल के विवाद समाप्त होंगे। परिश्रम तथा साहस में कमी आयेगी। धन हानि के प्रति सावधान रहे। अति प्रिय एवं निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा मिलेगा। आँखों में कष्ट होगा। भाग्योदय में अवरोध से मन भयग्रस्त रहेगा। शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। शुभ दिन : 02, 04, 14, 16, 19, 21, 25, 27, 29, 31 अशुभ दिन : 06, 09, 11, 23

कर्क राशि : भूमिभवन के कार्यों में हानि होगी। चले आ रहे मुकद्दमों में विपरीत परिणाम होंगे।धनागमन प्रभावित होगा। व्यवसायिक अवनति होगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। विवाहितो के सन्तान सुख में बाधा आयेगी। सौन्दर्य प्रसाधनों के व्यापार तथा कारोबार से हानि होगी। 16 जुलाई से स्वास्थय में सुधार होगा। वाकचातुर्य से नये प्रोजेक्टस मिलेंगे। आर्थिक लाभ होगा। मान–सम्मान मिलेगा। कार्यों में सफल होंगे। यात्रांओं से लाभ होगा। शिक्षा में प्रगति होगी। मास के अन्त में प्रशासकीय कारणों से हानि होगी। परीक्षाओं के परिणाम प्रतिकूल रहेंगे। शुभ दिन : 02, 04, 06, 19, 29 अशुभ दिन :09, 11, 14, 16, 21, 23, 27, 31

सिंह राशि : कार्यों में प्रगति होगी परन्तु आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। नया अनुबन्ध मिलने में अंवाछित देरी होगी। महत्वांकाक्षी तथा महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। सफेद वस्तुओं के व्यापारी लाभ में रहेंगे। 12 जुलाई से कार्यस्थल पर अनुकूल परिस्थितियां

बनेगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। पद प्रतिष्ठा मिलेगी। यात्रायें निरस्त होगी। प्रशासनिक सहयोग मिलेगा। नई अपोरचुनिटीज मिलेगी। मतभेद समाप्त होंगे। सम्बन्धों में सुधार होगा। बातचीत सौम्यता आयेगी। मास के अन्त में सन्तान सुख में बाधा आयेगी। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। शुभ दिन : 02, 04, 06, 09, 11, 19, 21, 25, 29, 31 अशुभ दिन : 14, 16, 23, 27

कन्या राशि : व्यवसाय में असफल रहेंगे। आर्थिक हानि होगी। महिलाओं से हानि होगी। प्रेम सम्बन्धों में उष्मा का अभाव रहेगा। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। मित्रों तथा सहकर्मियों से सहयोग की अपेक्षा करना व्यर्थ होगा। 16 जुलाई से वरिष्ठो का अनुग्रह प्राप्त होगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। कार्यों में प्रगति होगी। धन लाभ होगा। पदोन्नति का योग बनेगा।घर में मांगलिक उत्सव होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। नया सहयोग क्रियान्वित होगा। शुभ दिन : 02, 06, 09, 11, 19, 23, 25, 29 अशुभ दिन :04, 14, 16, 21, 27,

तुला राशि : प्रत्येक कार्य में रुकावट तथा बाधाऐं बनती दिखाई पड़ेगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। शरीर में निर्बलता आयेगी। विरोधी प्रभावी होंगे। लोन रिपेमेन्ट में कठिनाई आयेगी। तेज ज्वर से पीड़ा होगी।धारदार वस्तु से चोट लगेगी। स्थान परिवर्तन होगा। पारिवारिक जीवन में बाधा रहेगी। 16 जुलाई से प्रतिष्ठितकार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य रहेगा। पदोन्नति का योग बनेगा। 19 जुलाई से विवादग्रस्त होंगे। मतभेद बढ़ेंगे। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। यश तथा मान सम्मान की हानि होगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। मास के अन्त में आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग रहेगा। शुभ दिन : 04, 06, 11, 19, 21, 23, 27 अशुभ दिन : 02, 09, 14, 16, 25, 29, 31

वृश्चिक राशि : अपव्यय होगा। प्रिय वस्तु की हानि होगी। शासकीय प्रताड़ना मिलेगी। भाईयों तथा मित्रों से विरोध होगा। यात्रायें निरस्त होंगी। शारीरिक कष्ट रहेगा। अकारण ही धन तथा पुण्य की हानि होगी। आत्मविश्वास गिरेगा। मन अज्ञात कारणों से भयग्रस्त रहेगा। वाक्चातुर्य से हानि होगी। प्रियजनों से अलग रहना पड़ेगा। जीवनसाथी के स्वास्थय में गिरावट आयेगी। दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी। भोगोपभोग की वस्तुओं स्वास्थ्य खराब होगा। मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा से शरीर में निर्बलता आयेगी। विरोध एवं विरोधी प्रभावी होंगे। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। शुभ दिन : 06, 09, 11, 29, 31 अशुभ दिन :02, 04, 14, 16, 19, 21, 23, 25, 27

धनु राशि : आय के नवीन साधनों से धनागमन उत्तम रहेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। कष्ट मुक्त होंगे। सुखोपभोग का अवसर मिलेगा। आर्थिक सुख सहयोग रहेगा। विवादों का अन्त होगा। शिक्षा में प्रगति होगी। सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। आनन्दोदत्सव होंगे। 16 जुलाई से शासन -प्रशासन से भय की स्थिति बनेगी। किन्हीं कारणों से राजकीय दंड़ का भुगतान करना होगा। भय तथा अपमान की स्थिति बनेगी। व्यय बढ़ेगा। 19 जुलाई स विघ्न बाधांओं का समाधान होगा। कार्य सुचारु रुप सम्पन्न होंगे। प्रतिष्ठा मिलेगी। उपहार मिलेगा। भाग्योन्नति का सुख रहेगा। लम्बी दूरी की यात्रांओं से लाभ होगा। शुभ दिन : 04, 09, 16, 19, 23, 25, 27, 29 अशुभ दिन :02, 06, 11, 14, 21, 31

मकर राशि : व्यवसायिक बाधांओं का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। आजीविका परिश्रम से प्राप्त होगी। जीवन साथी के रोगग्रस्त होने की सम्भावना रहेगी। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। महिलाओं के कारण अपमान की स्थिति बनेगी। आयेगी। कुसमय का भोजन होगा। पाचन सम्बन्धी रोग होगा। सन्तान के कारण कष्ट होगा। असंवैधानिक तथा असामाजिक कार्यों में रुचि होगी। यात्रांओं में कष्ट रहेगा। 19 जुलाई से आय के नये साधन बनेंगे। बुद्धि चातुर्य से कार्यों में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। सन्तान सुख रहेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। सुखोपभोग में वृद्धि होगी। शिक्षा में प्रगति होगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। फिर भी मन में अशांति रहेगी। भोजन से अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 06, 09, 11, 14, 16, 23, 25 अशुभ दिन :02, 04, 19, 21, 27, 29, 31

कुंभ राशि : वाद विवाद में सफलता मिलेगी। अपनी शर्तो पर समझोता करेंगे। सहयोगियों के साथ वैचारिक साम्यता रहेगी। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। अन्जानी विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विधि सम्मत कार्य सम्पन्न करने में रुचि बनेगी। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। प्रशासनिक सहयोग प्राप्त होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि अनुभव करेंगे।19 जुलाई से शरीर निस्तेज रहेगा शिथिलता बढ़ेगी। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ न मिल पाने से मन चिंताग्रस्त रहेगा। मास के अन्त में किसी स्थान पर सम्मानित होंगे। महिला वर्ग का सहयोग मिलेगा। वांछित प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। शुभ दिन : 11, 14, 23, 27, 29 अशुभ दिन :02, 04, 06, 09, 16, 19, 21, 25, 31

मीन राशि : विघ्न बाधांओं का व्यवहारिक समाधान प्राप्त होगा। कार्यों में सफलता से मन उत्साहित रहेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। पद, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। प्रशासन तथा प्रशासनिक कर्मियों से सहायता मिलेगी। उपहार अथवा किसी प्रिय वस्तु

का लाभ मिलेगा। वात् रोगों से राहत रहेगी। धातुओं के व्यापार से लाभ होगा। 16 जुलाई से अपव्यय होगा। मन व्यग्र रहेगा। चित्त चंचल एवं चलायमान रहेगा। भ्रम की स्थिति बनेगी। स्वास्थय विपरीत रुप से प्रभावित होगा। अधिकारियों से विवाद होंगे। यात्रांओं में दुर्घटना का भय बनेगा। 19 जुलाई से वाद विवाद में सफलता मिलेगी। अपनी श्शर्तो पर समझोता करेंगे। कला क्षेत्र में ख्याति मिलेगी। मान-सम्मान मिलेगा। वैभवी सामग्री क्रय करेंगे। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। अध्ययन में रुचि रहेगी। शुभ दिन : 02, 11, 21, 29, 31, अशुभ दिन :04, 06, 09, 14, 16, 19, 23, 25, 27

अगस्त 2024

मेष राशि : मन किसी के प्रति आसक्त रहेगा। अपव्यय होगा। भ्रम की स्थिति उत्पन्न बनेगी। मन व्यग्र रहेगा। मित्रों एवं हितेषियों से असुविधा होगा। स्वयं तथा सन्तान का स्वास्थय विपरीत रुप से प्रभावित होगा प्रशासनिक अधिकारियों से विवाद होंगे। यात्रांओं में दुर्घटना का भय बनेगा। आर्थिक संतुलन बिगड़ेगा। भूमि -भवन के कार्यों में असफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति की हानि होगी। पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। स्वास्थय निर्बल रहेगा। आत्मविश्वास गिरेगा। धातुओं के व्यापार में किसी बहुमूल्य धातु के कारण हानि होगी। मास के अन्त में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विवादों में सफलता मिलेगी। अपनी श्शर्तो पर समझोता करेंगे। साझेदारों के साथ वैचारिक साम्यता आयेगी। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। अनचाही विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शुभ दिन : 03, 10, 13, 15, 17, 25, 30 अशुभ दिन : 05, 08, 19, 21, 23, 28

वृष राशि : घर परिवार में झगड़े झंझटों के कारण सुख शांति का अभाव रहेगा। जीवन साथी से मतभेद होंगे। समय कुसमय का खानपान होगा। मानसिक व्यथायें बढ़ेगी। यात्रांओं में असुविधा होगी। भू-सम्पत्ति के मामलो में अवरोध बनेंगे। मानहानि होगी। अपव्यय रहेगा। 25 अगस्त से विघ्न बाधांओं का व्यवहारिक समाधान प्राप्त होगा। कार्यों में सफलता से उत्साह बढ़ेगा। मानसिक दृढ़ता बनेगी। परिश्रम के अनुरुप परिणाम मिलेंगे। धनागमन में सुधार होगा। उपहार मिलेगा। दुर्जनों से पीछा छूटेगा। राजकीय भय समाप्त होगा। चोरी अथवा अग्निकांड़ से बचेंगे। शुभ दिन : 08, 13, 21, 23, 28 अशुभ दिन :03, 05, 10, 15, 17, 19, 25, 30

मिथुन राशि : 16 अगस्त से चले आ रहे रोगों से मुक्ति मिलेगी। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बनेंगे। मान, सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। धन लाभ होगा। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। अपने सद्व्यवहार से कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। बहुमूल्य वस्तुओं का उपहार मिलेगा। सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। सुख, वैभव तथा ऐश्वर्य बढ़ेगा। वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। विद्या में प्रगति होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। मनमाने व्यवहार से हानि होगी। 26 अगस्त आपरेशन अथवा चोट लगने का भय बनेगा। दाम्पत्य सुख में बाधा रहेगी। पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे। कार्यों में असफलता का सामना करना पड़ेगा। यात्रांओं में कष्ट होगा। विभिन्न उपद्रवों से मन में खिन्न रहेगा। शुभ दिन : 03, 05, 10, 13, 15, 21, 23, 25, 28 अशुभ दिन :08, 17, 19, 30

कर्क राशि : अपव्यय से बचेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। बन्धन में रहने का भय समाप्त हेगा। कृषि तथा वाणिज्य दोनों ही से लाभ होगा। दुष्ट व्यक्तियों से दूरी बनेगी। मानसिक शांति मिलेगी। सर दर्द एवं नेत्र पीड़ा समाप्त होगी। निकटस्थ व्यक्तियों से सहयोग मिलेगा। पारिवारिक मतभेद समाप्त होंगे। स्वभाव में नम्रता आयेगी। बातचीत सौम्यता रहेगी। व्यवसायिक लाभ मिलेगा। कार्यालय के विवाद समाप्त होंगे। आर्थिक कठिनाई से बचेंगे। 26 अगस्त से शासकीय सहायता में विलम्ब होगा। व्यय बढ़ेगा। परिश्रम तथा साहस में कमी आयेगी। भाग्योदय में अवरोध बनेगा। सहायको से मतभेद होंगे। किसी कारणवश घर से दूर रहना होगा। धार्मिक कार्यों में मन नहीं लगेगा। उच्च रक्तचाप से कष्ट होगा। मान-सम्मान की हानि होगी। सन्तान के कारण कष्ट रहेगा। शुभ दिन : 03, 05, 19, 23, 25, 30 अशुभ दिन :08, 10, 13, 17, 21, 28

सिंह राशि : यात्रांओं से लाभ होगा। पारिवारिक उलझने दूर होगी। घर-परिवार का सुख रहेगा। शारीरिक पीड़ा एवं मानसिक व्यथा समाप्त होगी। स्वास्थय में सुधार होगा। आर्थिक लाभ होगा। कार्यों में प्रगति होगी। सफलता मिलेगी। पदोन्नति का योग बनेगा। स्वभाव में विनम्रता रहेगी। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफल रहेंगे। भूमिभवन का लाभ होगा। भूमि-भवन से लाभ के लिये उत्तम समय है। मुकद्दमों में विजयी रहेंगे। कोर्ट कचहरी मे इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब होगा। मास के अन्त में प्रशासकीय कारणों से हानि होगी। आय में कमी रहेगी। स्वास्थय गिरेगा। अध्ययन से मन हटेगा। शुभ दिन : 03, 05, 08, 10, 15, 17, 21, 30 अशुभ दिन :13, 19, 23, 25, 28

कन्या राशि : कार्य स्थल पर, रोजी रोजगार में कठिन परिस्थितिया उत्पन्न होगी। प्रशासनिक भय रहेगा। टर्मिनेशन सस्पेन्शन का सामना करना पड़ेगा। स्थान परिवर्तन होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव रहेगा। व्यय बढ़ेगा। मित्रों से सम्बन्ध खराब होंगे। 22 अगस्त से स्थिति में सुधार होगा। अनुकूल परिस्थितियां बनेगी।शुभ कार्यों में प्रवृति रहेगी। विरोधी पराजित होंगे। अविवाहितों का विवाह का योग रहेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। शिक्षा तथा अध्ययन में सफलता मिलेगी। आमोद प्रमोद के साधन प्राप्त होंगे। व्यापार में उन्नति होगी। सौन्दर्य प्रसाधनों

के माध्यम से आय होगी।यात्राये निरस्त होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 08, 15, 19, 21, 25 अशुभ दिन :03, 05, 10, 13, 17, 23, 28, 30

तुला राशि : घर में किसी आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव से मन प्रसन्न रहेगा। आर्थिक लाभ होगा। पद, प्रतिष्ठा, मान सम्मान में वृद्धि होगी। वरिष्ठो का अनुग्रह रहेगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। रोग मुक्त रहेंगे। तीसरे सप्ताह में वाक्चातुर्य से प्रतिष्ठा की हानि होगी। मन अशान्त रहेगा। व्यवसायिक रुप से असफल रहेंगे। विरोधियों को अवसर मिलेगा। सामाजिक कार्यों से बचने का प्रयास रहेगा। अन्तिम सप्ताह में व्यवहार कुशलता से कार्यों में प्रगति होगी। मिथ्या अपवादों छुटकारा मिलेगा। मन प्रसन्न रहेगा। 25 अगस्त से भय एवं आशंका समाप्त होगी। महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। नया अनुबंध मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। कार्यस्थल अथवा कार्यभार में परिवर्तन होगा। शुभ दिन : 03, 08, 17, 28, 30 अशुभ दिन : 05, 10, 13, 15, 19, 21, 23, 25

वृश्चिक राशि :16 अगस्त से धन लाभ मिलेगा। उत्तम स्वास्थय का सुख मिलेगा। वरिष्ठ, सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। प्रतिष्ठितकार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। पदोन्नति होगी। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पद प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान में वृद्धि होगी। लाभकरी यात्रांयें होंगी। सहोदरों का सहयोग रहेगा। दाम्पतय जीवन का सुख रहेगा। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। मास के अन्त में प्रत्येक कार्य में रुकावट तथा बाधाऐं बनती दिखाई पड़ेगी। कैश लो बिगड़ेगा। लोन रिपेमेन्ट में कठिनाई रहेगी। धारदार वस्तु से चोट लगेगी। स्थान परिवर्तन होगा। शुभ दिन : 05, 08, 10, 21, 25 अशुभ दिन :03, 13, 15, 17, 19, 23, 28, 30

धनु राशि : प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। मिथ्या अपवादों से छुटकारा मिलेगा। अकारण भय का निवारण होगा। विरोधी परास्त होंगे। प्रयत्नों में बुद्धि चातुर्य से सफलता मिलेगी। मानसिक शांति मिलेगी। आय के नये साधन बनेंगे। धन लाभ होगा। स्वास्थय सुधरेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। किसी प्रियजन से सम्पक्र होगा। सन्तान सुख रहेगा। योग्य व्यक्तियों को सन्तान लाभ होगा। मन प्रसन्न रहेगा। मास के अन्त में शरीर में निर्बलता आयेगी। नेत्र तथा उदर रोगों से पीड़ा होगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। जीवन साथी से मनोमालिन्य रहेगा। अपव्यय होगा। सन्तान से वैचारिक मतभेद रहेगा। शुभ दिन : 05, 08, 13, 15, 19, 21, 23, 25, 28 अशुभ दिन : 03, 10, 17, 30

मकर राशि : विवाद समाप्त होंगे। भय तथा अपमान की स्थिति समाप्त होगी। बीमारियों से छुटकारा मिलेगा। शासन -प्रशासन का सहयोग मिलेगा। राजकीय पुरुस्कार मिलेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। तीसरे सप्ताह से शरीर निस्तेज रहेगा शिथिलता बढ़ेगी। भोगोपभोग की वस्तुओं से हानि होगी। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। भाईयों तथा मित्रों से मनमुटाव तथा वैचारिक मतभेद रहेंगे। प्रशासकीय प्रताड़ना मिलेगी। यात्राये निरस्त होंगी। बहुमूल्य धातुओं की हानि होगी। उत्सव निरस्त होंगे। कोर्ट कचहरी के मामलो में विपरीत परिणाम मिलेंगे। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। मान-प्रतिष्ठा तथा प्रभाव में कमी आयेगी। शुभ दिन : 05, 10, 13, 19, 21 अशुभ दिन :03, 08, 15, 17, 23, 25, 28, 30

कुंभ राशि : व्यवसायिक बाधांओं का सामना करना पड़ेगा। थकादेने वाली यात्रांओं से कष्ट रहेगा। कार्यों में असफलता, धन तथा मान हानि के कारण मन में क्लेश रहेगा। सन्तान रोग पीड़ित होगी। अध्ययन-अध्यापन से अरुचि रहेगी। चतुर्थ सप्ताह से कष्ट मुक्त होंगे। शरीर स्वस्थ रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। वैभवी वस्तुयें क्रय करेंगे। विधि सम्मत कार्यों में समय देंगे। परिवार से सुख तथा सहयोग मिलेगा। अनुचित इच्छाओं तथा आंकाक्षाओं तथा विचारों से छुटकारा मिलेगा। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। सन्तान की प्रगति की प्रसन्नता रहेगी। विग्रह तथा झंझट समाप्त होंगे। मानसिक शांति मिलेगी। शिक्षा में रुचि रहेगी। शुभ दिन : 03, 08, 10, 19, 21, 23 अशुभ दिन :05, 13, 15, 17, 25, 28, 30

मीन राशि : विरोधियों पर प्रभावी नियन्त्रण से स्थिति में सुधार होगा। प्रशासनिक सहयोग प्राप्त होगा। मान, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। सुख समृद्धि बढ़ेगी। धन-धान्य का लाभ होगा। आरोग्य उत्तम रहेगा। मानसिक शांति बनेगी। तीसरे सप्ताह में आक्समिक रुप से किसी झगड़े झंझट में फंसेंगे। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। जीवन साथी तथा सतांन से मतभेद होगा। योजनाओं के अनुरूप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफलता मिलेगी। घर परिवार से अलग रहने की स्थिति बनेगी। चतुर्थ सप्ताह में पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि अनुभव करेंगे। रोगों से छुटकारा मिलेगा। परन्तु स्थाई सम्पत्ति सम्बन्धी समस्यायें बनी रहेगी। शुभ दिन : 08, 13, 21, 25, 28 अशुभ दिन :03, 05, 10, 15, 17, 19, 23, 30

सितम्बर 2024

मेष राशि : दूसरे सप्ताह तक मानसिक तथा शारीरिक रुप से स्वस्थ रहेंगे। उर्जान्वित रहेंगे। झगड़े झंझटों से बचाव होगा।घर परिवार का सुख मिलेगा। योजनाओं के अनुरुप कार्य सफल होंगे। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में प्रगति होगी। इसके बाद से कड़ा परिश्रम होगा। प्रशासनिक अड़चने बढ़ेगी। विरोधी प्रभावी रहेंगे। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी। मान, पद प्रतिष्ठा की हानि के भय से मानसिक शांति भंग होगी। मन खिन्न रहेगा।

आर्थिक कठिनाईयां बढ़ेगी। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। अध्ययन-अध्यापन से अरुचि रहेगी। सामाजिक मान-सम्मान में कमी आयेगी। रोग पीड़ित होंगे। शुभ दिन : 06, 09, 11, 14, 18, 20, 22, 26 अशुभ दिन : 01, 04, 16, 24, 29

वृष राशि : आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विभिन्न माध्यमों से लाभ मिलेगा। धनागम बढ़ेगा। भूमि -भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति बढ़ेगी। उच्च पदस्थ व्यक्ति से मित्रता होगी। पारिवारिक जीवन का सुख मिलेगा। तीसरे सप्ताह से अपव्यय होगा। मन व्यग्र रहेगा। भ्रम की स्थिति बनेगी। शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का ह्रास होगा। हितेषियों से असुविधा होगा। स्वास्थ विपरीत रुप से प्रभावित होगा। विरोधी पक्ष प्रबल रहेगा। प्रशासनिक अधिकारियों से विवाद होगा।यात्रांओं में दुर्घटना की आशंका रहेगी। मास के चतुर्थ सप्ताह से विरोध समाप्त होगा। अपनी शर्तों पर समझोता करेंगे। विभिन्न मार्गों से लाभ मिलेगा। वैचारिक साम्यता रहेगी। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। अनचाही विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में प्रगति होगी। शुभ दिन : 04, 09, 11, 18, 20, 24, 29 अशुभ दिन : 01, 06, 14, 16, 22, 26

मिथुन राशि : तीसरे सप्ताह के अन्त तक परिश्रम तथा साहस में कमी रहेगी। आय के साधन कम होंगे। अपव्यय अधिक रहेगा। विरोधियों से त्रस्त रहेंगे। सुख शांति का अभाव रहेगा। समय कुसमय का खानपान होगा। व्यसनों से लगाव बढ़ेगा।यात्रांओं में असुविधा होगी। भू-सम्पत्ति के मामलो में सहयोगियों के कारण अवरोध बनेंगे। चतुर्थ स्पताह से विघ्न बाधांओं का व्यवहारिक समाधान प्राप्त होगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी व्यक्ति के प्रति मन में आकर्षण रहेगा। उपहार अथवा प्रिय वस्तु प्राप्त होगी। वात् रोगों से राहत रहेगी। भूमि -भवन के कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थाई सम्पत्ति अर्जित होगी। विद्वत्जनों से मित्रता होगी। पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। शुभ दिन : 01, 06, 09, 11, 20, 22, 29 अशुभ दिन :04, 14, 16, 18, 24, 26

कर्क राशि : सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। विद्या में प्रगति होगी। तीसरे सप्ताह में इच्छित कार्य पूर्ण होंगे। आर्थिक लाभ मिलेगा। सुख, वैभव मिलेगा। स्वभाव में जिद् तथा अहम बढ़ेगा। अपने मनमाने व्यवहार से कार्यों की हानि करेंगे। उच्चाधिकारियों से मतभेद बनेंगे। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर हाथ से निकलेगा। चतुर्थ सप्ताह में परिश्रम तथा साहस में कमी रहेगी। विरोधियों से होंगे। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। शुभ दिन : 01, 11, 16, 20, 22, 26 अशुभ दिन :04, 06, 09, 14, 18, 24, 29

सिंह राशि : अपव्यय से बचेंगे। आर्थिक उन्नति होगी। बन्धन मुक्त रहेंगे। मतभेद समाप्त होंगे। विवादों से छुटकारा मिलेगा। सम्बन्धों में सुधार होगा। बातचीत सौम्यता आयेगी। सम्मान बढ़ेगा। तीसरे सप्ताह के प्रारम्भ में धन हानि के प्रति सावधान रहे। प्रिय एवं निकटस्थ व्यक्तियों से धोखा मिलने का योग है। इसके बाद मास के अन्त तक प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। वाकचातुर्य से लाभ मिलेगा। विद्या में प्रगति होगी। बहुमूल्य वस्तुये प्राप्त होगी। सुखोपभोग की वस्तुओं का संग्रह होगा। शुभ दिन : 01, 04, 11, 14, 18, 22, 24, 26, 29 अशुभ दिन : 06, 09, 16, 20

कन्या राशि : कार्यों में प्रगति होगी। सफलता के पश्चात् पदोन्नति का योग बनेगा। विरोध समाप्त प्राय: रहेगा। स्वास्थय में सुधार होगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। यात्रांओं से लाभ होगा। स्वभाव में विनम्रता रहेगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। प्रशासकीय लाभ मिलेगा। स्वास्थय उत्तम रहेगा। अपव्यय से बचेंगे। बहुमूल्य उपहार मिलेगा। शुभ दिन : 01, 04, 09, 11, 14, 16, 18, 20, 22, 29 अशुभ दिन : 06, 24, 26

तुला राशि : नौकरीपेशा वर्ग में टर्मिनेशन सस्पेन्शन तथा स्व रोजगार कर रहे व्यक्तियों को रोजगार हानि का सामना करना पड़ेगा। पद हानि होगी। स्थान परिवर्तन होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। पारिवारिक सुख में कमी रहेगी। स्वास्थय निर्बल रहेगा। नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। सौन्दर्य प्रसाधनों के व्यापारी हानि उठायेंगे। भोजन में अरुचि रहेगी। वाद विवादों से कार्यों में अवरोध आयेगे, हानि होगी। अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थय में गिरावट आयेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। शुभ दिन : 14, 24 अशुभ दिन :01, 04, 06, 09, 11, 16, 18, 20, 22, 26, 29

वृश्चिक राशि : व्यर्थ वाक्चातुर्य से पद प्रतिष्ठा की हानि होगी। विरोधियों को अवसर मिलेगा। व्यवसायिक रुप से असफल रहेंगे। सामाजिक कार्यों से बचने का प्रयास रहेगा। मिथ्या अपवादों छुटकारा मिलेगा। तीसरे सप्ताह से व्यवहार कुशलता बढ़ेगी। कार्यों में प्रगति होगी। वरिष्ठो का अनुग्रह रहेगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। प्रतिष्ठा मिलेगी महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। आध्यात्मिक अथवा मांगलिक उत्सव सम्पन्न होगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। नया अनुबंध मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। सफेद वस्तुओं के व्यापारी लाभ में रहेंगे। सन्तान सुख रहेगा। शुभ कार्यों में प्रवृति रहेगी। शुभ दिन : 01, 04, 06, 29 अशुभ दिन : 09, 11, 14, 16, 18, 20, 22, 24, 26

धनु राशि : कार्यों के अवरोध समाप्त होंगे। मिथ्या अपवाद की स्थिति समाप्त होगी। यात्रांओं से लाभ होगा। प्रतिष्ठितकार्य के सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। पदोन्नति होगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पारिवारिक सुख समृद्धि रहेगी। सहोदरों का सहयोग रहेगा। प्रतिष्ठा मिलेगी। स्वास्थय उत्तम रहेगा। महिलाओं के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। सामाजिक कार्यों में समय देगे। किसी के दुर्व्यवहार से कष्ट होगा। मन अशान्त रहेगा। शुभ दिन : 01, 04, 09, 11, 16, 18, 20, 22, 24, 29 अशुभ दिन : 06, 14, 26

मकर राशि : कार्यों में असफलता से विरोधी मुखर होंगे। मन खिन्न तथा अशांत रहेगा। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। सन्तान सुख में कमी रहेगी। भोजन से अरुचि रहेगी। तीसरे सप्ताह में प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। मिथ्या अपवादों से छुटकारा मिलेगा। आय बढ़ेगी। स्वास्थय सुधरेगा। सफलता मिलने से आत्मविश्वास बढ़ेगा। किसी प्रियजन से सम्पक्र होगा। चतुर्थ सप्ताह में शरीर में निर्बलता आयेगी। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। यात्रांओं में असुविधा तथा हानि होगी। शुभ दिन : 01, 04, 06, 16, 18, 20, 26, 29 अशुभ दिन : 09, 11, 14, 22, 24

कुंभ राशि : धन हानि होगी। दाम्पत्य जीवन में विवाद होंगे। शरीर निस्तेज रहेगा शिथिलता बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति कठिन रहेगी। विरोधी स्वर बुलंद होंगे। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। प्रशासनिक भय रहेगा। राजकीय दंड़ का भुगतान करना होगा। किसी बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। यात्राये निरस्त होंगी। सन्तान योग में विलम्ब रहेगा। आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति खराब होगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। भोजन में अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 01, 04, 11, 18, 20 अशुभ दिन : 06, 09, 14, 16, 22, 24, 26, 29

मीन राशि : कार्यों में सफलता मिलेगी। मतभेदों का सम्मानजनक समाधान मिलेगा। कला क्षेत्र में ख्याति मिलेगी। व्यवसायिक उन्नति होगी। प्रशासनिक लाभ मिलेगा। संचित धन की स्थिति संतोषजनक होगी। विवादों का अन्त होगा। जीवन साथी से सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आयेगी। सन्तान सुख मिलेगा। मास के मध्य में सुखोपभोग तथा विलासिता की का अभाव रहेगा। आर्थिक कठिनाई आयेगी। अन्त में अपेक्षित सहयोग मिलेगा। सभी प्रकार से शुभ फल होंगे। स्वास्थय में सुधार होगा। मन तथा शरीर उर्जान्वित रहेंगे। लम्बी यात्रांओं में लाभ मिलेगा। अध्ययन-अध्यापन में रुचि रहेगी। शुभ दिन : 01, 04, 09, 18, 22, 29 अशुभ दिन : 06, 11, 14, 16, 20, 24, 26

अक्तूबर 2024

मेष राशि : संचित धन की स्थिति संतोषजनक होगी। प्रशासनिक लाभ मिलेगा। प्रत्येक कार्य में अपेक्षित सहयोग मिलेगा। स्वास्थय में सुधार होगा। यात्रांओं तथा व्यवसाय से लाभ होगा। मन तथा शरीर उर्जान्वित रहेंगे। अवरोधों का समाधान होने से मन प्रसन्न रहेगा। तीसरे सप्ताह में सुखोपभोग तथा विलासिता में कमी रहेगी। सन्तान रोग पीड़ित होगी। व्यवसायिक बाधांओं का सामना करना पड़ेगा।यात्रांओं से कष्ट रहेगा। शिक्षा में व्यवधान आयेंगे। तीसरे सप्ताह से स्थाई सम्पत्ति सम्बन्धी समस्यायें बनेगी। स्थान परिवर्तन स्थगित होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि अनुभव करेंगे। रोगों से छुटकारा मिलेगा। मास के अन्त में भ्रम की स्थिति बनेगी। भोजन में अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 01, 04, 06, 09, 11, 17, 19, 24, 28 अशुभ दिन : 13, 15, 21, 26, 31

वृष राशि : शिक्षा तथा पढ़ने में अरुचि रहेगी। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। आर्थिक अवनति होगी। सामाजिक मान-सम्मान में कमी आयेगी। विरोधी स्वर मुखर होंगे। आर्थिक कठिनाईयां बढेगी। कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। आजीविका परिश्रम से प्राप्त होगी। जीवन साथी के रोगग्रस्त होने की सम्भावना रहेगी। स्वयं भी जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग से पीड़ित होंगे। महिलाओं के कारण हानि, शोक तथा अपमान की स्थिति बनेगी। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी। प्रशासनिक अड़चने बढ़ेगी। तीसरे सप्ताह से प्रत्येक कार्य में सफलता मिलने से मन में उत्साह रहेगा। परिश्रम का फल मिलेगा। प्रशासन तथा प्रशासनिक कर्मियों से सहायता मिलेगी। ताक्रिक क्षमता का लाभ मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी बहुमूल्य धातु की प्राप्ति होगी। धातुओं के व्यापार से लाभ होगा। मास के अन्त में धन हानि होगी। आर्थिक स्थिति कठिन रहेगी। दाम्पत्य जीवन में विवाद होंगे। शरीर में शिथिलता आयेगी। यात्रांओं तथा व्यवसाय से अपेक्षित लाभ नहीं होगा। मन चिंताग्रस्त रहेगा। शुभ दिन : 01, 06, 09, 11, 15, 17, 19, 26, 28 अशुभ दिन :04, 13, 21, 24, 31

मिथुन राशि : आक्समिक रुप से किसी झगड़े झंझट में फंसेंगे। घर परिवार से अलग रहना पड़ेगा। गर्मी के कारण शरीर शिथिल रहेगा। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में असफल रहेंगे। दूसरे सप्ताह से विरोध समाप्त होगा। विभिन्न मार्गों से लाभ मिलेगा। वाद विवाद में सफलता मिलेगी। अपनी शर्तो पर समझोता करेंगे। अनचाही विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। तीसरे सप्ताह से व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। मानसिक शक्ति में दृढ़ता परीलक्षित होगी। आत्मविश्वास से व्यक्तित्व में प्रखरता आयेगी। यात्रांओं में दुर्घटना से बचाव होगा। चतुर्थ सप्ताह से परिश्रम के अनुरुप परिणाम प्राप्त नहीं होगा। वाणी में कठोरता आयेगी। अग्निकांड़ से धन सम्पत्ति की हानि होगी। पाचन तंत्र

बिगड़ेगा। अध्ययन-अध्यापन से अरुचि रहेगी। शुभ दिन : 04, 09, 13, 24, 26, 28, 31 अशुभ दिन : 01, 06, 11, 15, 17, 19, 21

कर्क राशि : आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भूमि -भवन के कार्यों में सफलता मिलेगीतथा स्थाई सम्पत्ति की वृद्धि होगी। उच्च पदस्थ व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक सुख रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। योग्य व्यक्तियों का सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। विरोधी परास्त होंगे। मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। विलास की वस्तुओं में रुचि होगी।प्रेमी युगलो में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। समय कुसमय का खानपान होगा। यात्रांओं में असुविधा होगी। भू-सम्पत्ति के मामलो में अवरोध आयेगे। शल्य क्रिया का भय बनेगा। असामाजिक तत्वों से पीड़ा रहेगी। कार्यों में असफलता का सामना करना पड़ेगा। यात्रांओं में कष्ट होगा। विभिन्न उपद्रवों से मन खिन्न रहेगा। मास के अन्त में मानसिक तथा शारीरिक रुप से स्वस्थ रहेंगे। योजनाओं के अनुरुप कार्यों में सफताल मिलेगी। प्रेम प्रकरण तथा वार्ताओं में प्रगति होगी। शुभ दिन : 09, 17, 19 अशुभ : 01, 04, 06, 11, 13, 15, 21, 24, 26, 28, 31

सिंह राशि : परिश्रम तथा साहस में कमी रहेगी। आय के साधन कम होंगे तथा अपव्यय अधिक रहेगा। पारिवारिक कलह बढ़ेगी। मन भयग्रस्त रहेगा। दूसरे सप्ताह से मनोकामनायें पूर्ण होगी। वैभव तथा ऐश्वर्य बढ़ेगा। सफलता साथ देगी। स्वभाव में जिद् तथा अहम आयेगा। मनमाने व्यवहार से हानि होगी। जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। सामान्य जनों से सम्पक्र तथा प्रेम बढ़ेगा। मित्रों तथा परिवारजनों का सहयोग मिलेगा। तीसरे सप्ताह से स्वास्थ्य खराब होगा। उच्चाधिकारियों से मतभेद बनेंगे। अपने व्यवहार से कार्यों की हानि करेंगे। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर हाथ से निकलेगा। सन्तान के कारण आर्थिक हानि होगी। चतुर्थ सप्ताह से व्यय पर नियन्त्रण बनेगा। रोग मुक्त रहेंगे। स्थाई सम्पत्ति मिलेगी। विद्वत्जनों से मित्रता होगी। पारिवारिक जीवन का सुख रहेगा। शुभ दिन : 01, 09, 11, 15, 21, 24, 26, 28, 31 अशुभ दिन :04, 06, 13, 17, 19

कन्या राशि : आर्थिक हानि का योग रहेगा। किसी बहुमूल्य वस्तु के खोने का कष्ट होगा। मन चिंतित रहेगा। सुखोपभोग में कमी आयेगी। सम्मानित व्यक्तियों से मतभेद होंगे। अत्याधिक वाचालता तथा वाकचातुर्य से हानि होगी। विद्या प्राप्ति तथा शिक्षा की धीमी प्रगति से अंसतोष होगा। तीसरे सप्ताह से परिश्रम अधिक होगा। आय होने के उपरान्त भी आर्थिक कठिनाई अनुभव करेंगे। रोजी रोजगार तथा कार्यालय में उलझने रहेगी। व्यवसायिक हानि होगी। मित्रों के माध्यम से विरोध समाप्त होगा। भाग्योदय होगा। दुष्ट व्यक्तियों से दूरी बनेगी। चतुर्थ सप्ताह से भूमिभवन के कार्यों में हानि होगी। धनागमन प्रभावित होगा। स्वास्थय निर्बल रहेगा। चले आ रहे मुकद्दमों में विपरीत परिणाम होंगे। मास के अन्त में परिश्रम से कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। शुभ दिन : 01, 04, 06, 09, 11, 13, 15, 17, 19, 28, 31 अशुभ दिन : 21, 24, 26

तुला राशि : चुगलखोरों से सावधान रहे। स्वयं भी बैक बाईटिंग से दूर रहे। अपव्यय रहेगा। धन हानि तथा बन्धन का भय रहेगा। सम्बन्धों में हानि होगी। झगड़े झंझट बढ़ेंगे। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब होगा। आय में कमी रहेगी। प्रशासकीय कारणों से हानि होगी। शिक्षा तथा अध्यययन से मन हटेगा। बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। विरोधी मुखर रहेंगे। तीसरे सप्ताह से स्वास्थय में सुधार होगा। हृदय रोग की सम्भावना समाप्त होगी। पारिवारिक उलझने दूर होगी। सप्ताह के अन्त में कार्यस्थल पर कठिन परिस्थितियों का सामना पड़ेगा। विदेश अथवा सुदूर स्थान की यात्रा होगी। कार्यों में असफलता से मन खिन्न रहेगा। अत्याधिक वाचालता तथा वाकचातुर्य से हानि होगी। विद्या प्राप्ति तथा शिक्षा में धीमी प्रगति से अंसतोष होगा। शुभ दिन : 09, 11, 21, 28 अशुभ: 01, 04, 06, 13, 15, 17, 19, 24, 26, 31

वृश्चिक राशि : व्यर्थ के वाद विवादों में फंसेंगे। विरोधी प्रबल होंगे। सम्बन्धियों से अनबन होगी। अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थय गिरेगा। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। सन्तान सुख में बाधा आयेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। आमोद प्रमोद में कमी रहेगी। व्यवसाय में अवनति होगी। तरल पदार्थो के कारोबार में हानि होगी। रोजगार हानि से स्थान परिवर्तन होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। चतुर्थ सप्ताह से कार्यस्थल अथवा कार्यभार में स्थायीत्व रहेगा। कार्य सुचारु रुप से सम्पन्न होंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। मास के अन्त में बन्धन भय रहेगा। अपव्यय होगा। शुभ दिन : 01, 28 अशुभ दिन : 04, 06, 09, 11, 13, 15, 17, 19, 21, 24, 26, 31

धनु राशि : नियम विरुद्ध कार्यों में प्रवृति रहेगी।यश -प्रतिष्ठा की हानि होगी। मतभेद होंगे। विवाद बढ़ेंगे। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा। तीसरे सप्ताह से कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण वस्तु प्राप्त होगी। भय समाप्त होगा। नया अनुबंध मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। मास के अन्त में वरिष्ठो का अनुग्रह प्राप्त होगा। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। व्यर्थ के वाद विवाद समाप्त होंगे। पदोन्नति का योग बनेगा। शिक्षा तथा शैक्षणिक कार्यों में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 01, 06, 09, 13, 15, 17, 19, 26, 28 अशुभ दिन : 04, 11, 21, 24, 31

मकर राशि : प्रतिष्ठितकार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। व्यवहार कुशलता बढ़ेगी। मिथ्या अपवादों छुटकारा मिलेगा। परन्तु अत्याधिक वाक्चातुर्य से हानि होगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। प्रेम सम्बन्धों में सफलता मिलेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। स्वास्थय सुख रहेगा। चतुर्थ सप्ताह से सुखोपभोग में कमी आयेगी। जीवनसाथी का स्वास्थय खराब होगा। पारिवारिक सुख शांति का वातावरण भंग होगा। सन्तान प्राप्ति में विलम्ब रहेगा।धन हानि होगी। नियम विरुद्ध कार्यों की प्रवृति बनेगी। शुभ दिन : 01, 04, 09, 13, 17, 19, 24, 26, 31 अशुभ दिन : 06, 11, 15, 21, 28

कुंभ राशि : मतभेद समाप्त होंगे। विघ्न बाधांओं का समाधन होगा। विरोधियों से छुटकारा मिलेगा। लाभकारी यात्रायें होंगी। सहकर्मियों का सहयोग रहेगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। तीसरे सप्ताह में मन अज्ञात कारणों से भयग्रस्त रहेगा। आत्मविश्वास गिरेगा। किसी प्रियजन से अलग रहना होगा। बहुमूल्य धातुओं की हानि होगी। कोर्ट कचहरी के मामलो में विपरीत परिणाम मिलेंगे। मास के अन्त में वाक्चातुर्य उत्तम रहेगा। व्यवसायिक सफलता मिलेगी। सामाजिक कार्यों में समय देगे। शुभ दिन : 01, 09, 15, 17, 19, 21, 24, 28, 31 अशुभ दिन : 04, 06, 11, 13, 26

मीन राशि : सन्तान सुख में कमी रहेगी। सन्तान योग में विलम्ब होगा। आय सीमित रहेगी। बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। शासकीय प्रताड़ना मिलेगी। बुद्धि चातुर्य काम नहीं करेगा। यात्राये निरस्त होंगी। भोजन से अरुचि रहेगी। तीसरे सप्ताह से स्थिति में परिवर्तन होगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। कार्यों के शुभ परिणाम मिलेगे। विवाद समाप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शरीर स्वस्थ रहेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। मास के अन्त में मिथ्या अपवाद का भय रहेगा। यात्रांओं में असुविधा तथा हानि होगी। शुभ दिन : 04, 11, 15 अशुभ दिन : 01, 06, 09, 13, 17, 19, 21, 24, 26, 28, 31

नवम्बर 2024

मेष राशि : शासन-प्रशासन से भय की स्थिति बनेगी। राजकीय दंड का भुगतान करना होगा। आंकाक्षा पूर्ति में व्यवधान रहेगा। स्वास्थय बिगड़ेगा। भोगोपभोग की वस्तुओं से हानि होगी। भाईयों तथा मित्रों से विरोध होगा। यात्रांये निरस्त होंगी। विरोधियों से झगड़ा होगा तथा कष्ट रहेगा। कफजन्य बीमारियों से पीड़ित होंगे। दाम्पत्य जीवन में बाधा आयेगी। भय तथा अपमान की स्थिति बनेगी। व्यय बढ़ेगा। शुभ दिन : 02, 05, 07, 14, 16, 20, 25, 30 अशुभ दिन : 09, 12, 18, 27

वृष राशि : सुखोपभोग तथा विलासिता की सामग्री में वृद्धि होगी। व्यवसायिक उन्नति होगी। परिवार से आर्थिक सुख सहयोग मिलेगा। आर्थिक उन्नति होगी। कष्ट मुक्त होंगे। मतभेद समाप्त होंगे। वाद- विवादों का अन्त होगा। सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आयेगी। कार्यों में सफलता का सुख रहेगा। लम्बी यात्रांओं में लाभ मिलेगा। शिक्षा में रुचि रहेगी। सन्तान सुख मिलेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। धन तथा मान सम्मान की वृद्धि होगी। शुभ दिन : 02, 07, 14, 25 अशुभ दिन :05, 09, 12, 16, 18, 20, 27, 30

मिथुन राशि : जीवनयापन के लिये कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक कठिनाईयां बनी रहेगी। आजीविका परिश्रम से प्राप्त होगी। विवाद होंगे, अपमान जनक स्थिति बनेगी। जीवन साथी के रोगग्रस्त होने की सम्भावना रहेगी। किसी प्रिय वस्तु की हानि होगी। महिलाओं से व्यवहार में सावधानी अपेक्षित रहेगी। तीसरे सप्ताह से कार्यों में सफलता मिलेगी। सुख समृद्धि में बढ़ेगी। धन-धान्य का लाभ होगा। प्रशासनिक सहयोग प्राप्त होगा। विरोधियों पर प्रभावी नियन्त्रण से स्थिति में सुधार होगा। पदोन्नति होगी। मानसिक शांति मिलेगी। आरोग्य उत्तम रहेगा। शुभ दिन : 05, 07, 12, 14, 16, 18, 20, 25, 27, 30 अशुभ दिन : 02, 09

कर्क राशि : विरोध समाप्त होगा। वाद विवाद में सफलता मिलेगी। अपनी शर्तों पर समझोता करेंगे। सन्तान के कार्यों से प्रसन्नता होगी। अन्जानी विपत्ति से छुटकारा मिलेगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। वैचारिक साम्यता बढ़ेगी। तीसरे सप्ताह से भ्रम की स्थिति उत्पन्न होगी।शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का ह्रास होगा। अपव्यय होगा। स्वास्थय विपरीत रुप से प्रभावित होगा। अधिकारियों से मतभेद होगा। यात्रांओं में दुर्घटना का भय बनेगा। मन किसी के प्रति आसक्त रहेगा। शुभ दिन : 12, 27, 30 अशुभ दिन :02, 05, 07, 09, 14, 16, 18, 20, 25

सिंह राशि : अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति होगी। योग्य व्यक्तियों को सन्तान प्राप्ति का योग रहेगा। आर्थिक स्थिति सबल रहेगी। प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। वैभवी वस्तुओं में रुचि होगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। प्रेमी युगलो में प्रगाढ़ता आयेगी। तीसरे सप्ताह से सुख शांति का अभाव रहेगा। समय कुसमय का खानपान होगा। यात्रांओं में असुविधा होगी। व्यसनों से लगाव रहेगा। भू-सम्पत्ति के मामलो में अवरोध आयेंगे। जीवन साथी से मतभेद होंगे। शरीर में निर्बलता आयेगी। शुभ दिन : 05, 12, 16, 18, 20, 25, 27 अशुभ दिन :02, 07, 09, 14, 30

कन्या राशि : आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण रहेगी। स्वभाव की नम्रता से सफलता मिलेगी। सामान्य जनों से दूरी बढ़ेगी। मित्रों तथा परिवारजनों का असहयोग रहेगा। तीसरे सप्ताह से स्वास्थ्य खराब होगा। उच्चाधिकारियों से मतभेद बनेंगे। मित्रों के मान, सम्मान की हानि होगी। सन्तान सुख में बाधा रहेगी। आर्थिक हानि होगी। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर हाथ से निकलेगा। सम्बन्धों के प्रति सचेत रहे। शुभ दिन : 05, 09, 12, 14, 16, 25 अशुभ दिन :02, 07, 18, 20, 27, 30

तुला राशि : परिश्रम तथा साहस में वृद्धि होगी। रोजी रोजगार तथा कार्यालय में उलझने रहेगी। व्यवसायिक हानि होगी। धन प्राप्ति के उपरान्त भी आर्थिक कठिनाई अनुभव करेंगे। शासकीय सहायता मिलने के बाद भाग्योदय का सुख मिलेगा। तीसरे सप्ताह से निम्न स्तरीय व्यक्तियों से दूरी बनेगी। नेत्र पीड़ा दूर होगी। मानसिक शांति मिलेगी। निकटस्थ व्यक्तियों से सहयोग मिलेगा। स्वभाव में नम्रता रहेगी। आधीनस्थो का सहयोग रहेगा। मान- सम्मान बढ़ेगा। विरोधी परास्त होंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। शुभ दिन : 02, 05, 07, 09, 18, 20, 25, 30 अशुभ दिन :12, 14, 16, 27

वृश्चिक राशि : प्रशासकीय लाभ मिलेगा। आय बढ़ेगी। आर्थिक लाभ होगा। सफलता मिलने का सुख रहेगा। मान सम्मान बढ़ेगा। कला क्षेत्र, शिक्षा तथा अध्ययन में रुचि रहेगी। स्वास्थय उत्तम रहेगा। बहुमूल्य वस्तुयें प्राप्त करेंगे। विरोध समाप्त होगा। मानसिक व्यथा समाप्त होगी। हृदय रोग की सम्भावना समाप्त होगी। पारिवारिक उलझने दूर होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। यात्रांओं से लाभ होगा। शुभ दिन : 16, 18, 25 अशुभ दिन :02, 05, 07, 09, 12, 14, 20, 27, 30

धनु राशि : विरोधी प्रभावी रहेंगे। सुख एवं धन की हानि होगी। मन भोग विलास की से हटेगा। वैभवी साधनों में कमी रहेगी। अविवाहितों के विवाह में विलम्ब रहेगा। सन्तान सुख में बाधा आयेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। तरल पदार्थो, सुगन्धित द्रव्यों के व्यवसायी हानि में रहेंगे। तीसरे सप्ताह से स्थिति में परिवर्तन होगा। स्थान लाभ होगा। पारिवारिक सुख रहेगा। सुदूर स्थान की यात्रा निरस्त होगी। नई अपोरचुनिटीज मिलेगी। प्रशासनिक सहयोग मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उदर सम्बन्धी रोगों से मुक्त होंगे। शुभ दिन : 02, 05, 12, 14, 16, 30 अशुभ दिन :07, 09, 18, 20, 25, 27

मकर राशि : महत्वांकाक्षी वस्तु प्राप्त होगी। भय एवं आशंका समाप्त होगी। कार्यों में प्रगति होगी परन्तु आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। नया अनुबंध मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। भोग- विलास के साधनों में कमी बनेगी। सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा। तीसरे सप्ताह से घर- परिवार में मांगलिक उत्सव निरस्त होने से मन उदास रहेगा। आर्थिक हानि होगी। वरिष्ठो से मतभेद होंगे। प्रतिष्ठा में कमी आयेगी। मन में कुविचार आयेंगे। रोग ग्रस्त होंगे। शुभ दिन : 02, 05, 09, 12, 16, 20, 27, 30 अशुभ दिन :07, 14, 18, 25

कुंभ राशि : व्यवसाय में असफल होंगे। आर्थिक हानि होगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। महिलाये हानि का कारण बनेगी। प्रेम सम्बन्धों में प्रगति का अभाव रहेगा। मित्रों तथा सहकर्मियों से सहयोग की अपेक्षा करना व्यर्थ रहेगा। तीसरे सप्ताह से सम्मानित व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। प्रतिष्ठितकार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। पदोन्नति होगी। उत्तम स्वास्थय का सुख रहेगा। पारिवारिक सुख समृद्धि बढ़ेगी। मान-सम्मान मिलेगा। शुभ दिन : 09, 12, 16, 18, 20, 25, 27 अशुभ दिन :02, 05, 07, 14, 30

मीन राशि : मतभेद समाप्त होंगे। मानसिक व्यथा एवं शारीरिक पीड़ा समाप्त होगी। विरोधियों से छुटकारा मिलेगा। शारीरिक दुर्बलता दूर होगी। आर्थिक लाभ मिलेगा। महिलाओं वर्ग का सहयोग रहेगा। तीसरे सप्ताह से मिथ्या अपवाद से आरोपित होंगे। धन तथा पुण्य की हानि होगी। मन अशांत तथा भयग्रस्त रहेगा। असफलता से निराशा तथा खिन्नता रहेगी। आत्मविश्वास गिरेगा। किसी प्रियजन से अलग रहना होगा। शुभ दिन : 07, 09, 16, 20, 25 अशुभ दिन :02, 05, 12, 14, 18, 27, 30

दिसम्बर 2024

मेष राशि : पहले सप्ताह में शरीर निर्बल रहेगा। धन हानि होगी। विरोधी प्रभावी रहेंगे। महिलाओं के कारण कलह एवं कष्ट की स्थिति बनेगी। दूसरे सप्ताह से स्वास्थय सुधरेगा। प्रयत्नों में सफलता प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। आय बढ़ेगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। प्रियजनों से सम्पक्र होगा। मित्रों तथा सहोदरों का सहयोग प्राप्त होगा। मिथ्या आरोपो से छुटकारा मिलेगा। पद प्रतिष्ठा मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। प्रेम सम्बन्धों में प्रगति होगी। शुभ दिन : 02, 04, 09, 11, 13, 17, 20, 22, 25, 27, 29 अशुभ दिन : 07, 15

वृष राशि : पहले दो सप्ताहों में भोगोपभोग की वस्तुओं से हानि होगी। स्वास्थय बिगड़ेगा। बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। प्रशासकीय प्रताड़ना होगी। भाईयों तथा मित्रों से विरोध होगा। यात्राये निरस्त होंगी। तीसरे सप्ताह से कार्यों का शुभ परिणाम मिलेगा। विवाद समाप्त होंगे। उच्च रक्त चाप से छुटकारा मिलेगा। व्यय पर नियन्त्रण रहेगा। भय तथा अपमान की स्थिति समाप्त होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख रहेगा। मास के अन्त में शरीर में निर्बलता आयेगी। कष्ट की स्थिति बनेगी। शुभ दिन : 09, 11, 22 अशुभ दिन : 02, 04, 07, 13, 15, 17, 20, 25, 27, 29

मिथुन राशि : व्यवसायिक बाधांओं का सामना करना पड़ेगा। कार्यों में व्यवधान आयेंगे। असफलता मिलेगी। आर्थिक संकट बनेगा। सुखोपभोग का अभाव रहेगा। शिक्षा में अरुचि रहेगी। सन्तान रोग पीड़ित होगी। स्वयं भी अपच, उदर विकार आदि से पीड़ित होंगे। थका देने वाली यात्रांओं से कष्ट रहेगा। बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। शासकीय प्रताड़ना होगी। भाईयों तथा मित्रों से विरोध होगा। शुभ दिन : 04, 07, 09, 13, 15, 17, 20, 25, 27, 29 अशुभ दिन : 02, 11, 22

कर्क राशि : आजीविका प्राप्त होगी। आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। जीवनयापन सुगम बनेगा। रोगों से छुटकारा मिलेगा। वांछित प्राप्त होने से मन प्रसन्न रहेगा। महिलाओं

वर्ग का सहयोग मिलेगा।तीसरे सप्ताह से सुख समृद्धि में कमी आयेगी। धन-धान्य की हानि होगी। प्रशासनिक अड़चने बढ़ेगी। प्रबल विरोध होगा। स्थिति नियन्त्रण से बाहर होगी। मास के अन्त में कष्टों से मुक्ति मिलेगी। परिवार का सहयोग मिलेगा। आर्थिक लाभ होगा। शिक्षा में रुचि रहेगी। शुभ दिन : 13, 17, 25, 29 अशुभ दिन : 02, 04, 07, 09, 11, 15, 20, 22, 27

सिंह राशि : विरोधी बढ़ेंगे। विरोधी पक्ष प्रबल होगा। परिस्थितियों के वशीभूत होकर समझोतों के लिये विवश होना पड़ेगा। के कारण कष्ट होगा। अनचाही विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं का भय रहेगा। तीसरे सप्ताह से व्यय पर नियन्त्रण होगा। भ्रम की स्थिति का निवारण होगा। मन में स्थिरता आयेगी। मानसिक दृढ़ता बढ़ेगी। आत्मविश्वास बढ़ेगा। अधिकारियों को संतुष्ट करने में सफल होंगे। इच्छित वस्तु प्राप्त होगी। आर्थिक कठिनाईयां समाप्त होंगी। स्वास्थय सुख रहेगा। दुर्घटना से बचाव होगा। महिलाओं वर्ग का सहयोग मिलेगा। शुभ दिन : 02, 04, 09, 11, 13, 17, 22, 25, 27, 29 अशुभ दिन : 07, 15, 20

कन्या राशि : विघ्न बाधांओं का व्यवहारिक समाधान प्राप्त होगा। कार्यों में सफलता से उत्साह एवं उमंग बढ़ेगा। धनागमन में सुधार होगा। किसी के प्रति मन में आसक्ति आयेगी। उपहार मिलेगा। रोगों से राहत रहेगी। मन प्रफुल्लित रहेगा। तीसरे सप्ताह से घर परिवार के झंझटों से कारण सुख शांति का अभाव रहेगा। समय कुसमय का खानपान होगा। यात्रांओं में असुविधा होगी। भू-सम्पत्ति के मामलो में अवरोध रहेंगे। मास के अन्त में विवादों में सफलता मिलेगी। वैचारिक साम्यता बढ़ेगी। सन्तान सुख रहेगा। विपत्तियों से छुटकारा मिलेगा। यात्रांओं में दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शुभ दिन : 02, 09, 13, 29 अशुभ दिन : 04, 07, 11, 15, 17, 20, 22, 25, 27

तुला राशि : आर्थिक लाभ मिलेगा। सुख, वैभव के साथ साथ स्वभाव में जिद् तथा अहम बढ़ेगा। मनमाने कार्यों से हानि होगी। जीवन साथी का सहयोग रहेगा। रोग मुक्त होंगे। उच्चाधिकारियों के सम्पक। में आयेंगे। किसी नये स्थान पर कार्यभार सभांलने का अवसर प्राप्त होगा। सद्व्यवहार से कार्यों में सफलता मिलेगी। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति सबल होगी। सन्तान सुख रहेगा। योग्य व्यक्तियों का सन्तान योग बनेगा। प्रेमी युगलो में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। मनोरंजनों में समय व्यतीत होगा। शुभ दिन : 02, 04, 07, 13, 15, 17, 22, 27, 29 अशुभ दिन : 09, 11, 20, 25

वृश्चिक राशि : रोजी रोजगार तथा कार्यालय में उलझने रहेगी। व्यवसायिक हानि होगी। आर्थिक कठिनाई अनुभव करेंगे। तीसरे सप्ताह से निकटतम व्यक्तियों का सहयोग रहेगा। शासकीय सहायता मिलेगी। भाग्योदय होगा।मास के अन्त में आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। सुख, वैभव में कमी आयेगी। मित्रों तथा परिवारजनों का असहयोग रहेगा। स्वभाव की नम्रता से बाधांओं तथा अवरोधों को दमन करने में सफलता मिलेगी। शुभ दिन : 13, 20, 22, 29 अशुभ दिन : 02, 04, 07, 09, 11, 15, 17, 25, 27

धनु राशि : सन्तान प्राप्ति में विलम्ब होगा।आय में कमी आयेगी। प्रशासकीय कारणों से हानि होगी। बहुमूल्य वस्तु की हानि होगी। शिक्षा तथा अध्ययन से मन हटेगा। समय कुसमय भोजन से स्वास्थय गिरेगा। शारीरिक सौष्ठव तथा सौन्दर्य में कमी आयेगी। विरोधी मुखर रहेंगे। सुदूर स्थान पर रहना होगा। पारिवारिक उलझने बढ़ेगी। निरर्थक यात्रांओं में थकावट से कष्ट रहेगा। किसी भी नगण्य बात पर उत्तेजित होंगे। मास के अन्त में व्यवसायिक लाभ मिलेगा। विवाद समाप्त होंगे। आर्थिक कठिनाई से बचेंगे। शुभ दिन : 02, 04, 07, 09, 11, 13, 17, 20, 27, 29 अशुभ दिन : 15, 22, 25

मकर राशि : व्यापार में उन्नति होगी। सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से आय होगी। मन भोग विलास की ओर आकर्षित होगा। अविवाहितों का विवाह का योग बनेगा। वैभवी साधन मिलेंगें। तीसरे सप्ताह में प्रशासनिक भय बनेगा। स्थान परिवर्तन होगा। सुदूर स्थान की यात्रा होगी। रोजगार हानि का सामना करना पड़ेगा। मित्रों से सम्बन्ध खराब होंगे। मास के अन्त में सन्तान सुख रहेगा। अधिकार क्षेत्र बढ़ेगा। पदोन्नति होगी। शिक्षा तथा अध्ययन में प्रगति होगी। शारीरिक स्वास्थय उत्तम रहेगा। बहुमूल्य उपहार मिलेगा। शुभ दिन : 07, 17, 20, 27 अशुभ दिन : 02, 04, 09, 11, 13, 15, 22, 25, 29

कुंभ राशि : कार्यों में प्रगति होगी। महत्वांकाक्षी वस्तु मिलेगी। नया अनुबध् मिलने अथवा नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। आर्थिक लाभ में विलम्ब रहेगा। कपड़े के व्यापार से लाभ होगा। वरिष्ठो का अनुग्रह रहेगा। मांगलिक उत्सव होगा। रोग मुक्त होंगे। प्रशासकीय सहयोग मिलेगा। मास के अन्त में विरोधी प्रभावी रहेंगे। मन भोग विलास से हटेगा। अविवाहितों के विवाह में अवरोध रहेगा। सन्तान सुख में कमी रहेगी। शिक्षा तथा अध्ययन में व्यवधान होगा। सौन्दर्य प्रसाधनों के कारोबार में हानि होगी। शुभ दिन : 07, 09, 11, 13, 15, 17, 22, 25 अशुभ दिन : 02, 20, 27, 29

मीन राशि : प्रतिष्ठित कार्यों में असफल रहेंगे। वरिष्ठों एवं सम्मानित व्यक्तियों का कोपभाजन बनेंगें। आर्थिक हानि होगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद होंगे। महिलाओं से हानि होंगी। प्रेम सम्बन्धों में स्थिरता आयेगी। मित्रों तथा सहकर्मियों से सहयोग में निराशा हाथ लगेगी। स्वास्थय गिरेगा। नया अनुबंध हाथ से निकेलेगा। पदावनति का भय रहेगा। नया प्रोजेक्ट शुरु होने में अंवाछित देरी होगी। मास का अन्त शुभ तथा सुखद रहेगा। कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण सफलता मिलेगी। कपड़े के व्यापार से लाभ होगा। शुभ दिन : 04, 17, 22 अशुभ दिन : 02, 07, 09, 11, 13, 15, 20, 25, 27, 29

ग्रहण विवरण विक्रमी संवत् 2081 (सन् 2024-25 ई॰)

विक्रमी संवत् 2081 का प्रारम्भ खग्रास सूर्य ग्रहण में तथा समापन भी 29 मार्च 2025 के खण्डग्रास सूर्यग्रहण के साथ होगा। सन् 2024 ई. में भू-मण्डल पर दो सूर्य ग्रहण तथा दो चन्द्र ग्रहण संघटित होंगे। सन् 2025 ई. में जनवरी से मार्च 2025 ई. के मध्य एक खग्रास चन्द्र ग्रहण तथा एक खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा।

23 अप्रैल तथा 17 अक्तूबर 2024 ई. के चन्द्र ग्रहण पृथ्वी के किसी भी भाग में घटित नहीं होंगे। 28 फरवरी 2025 ई. का सम्भावित सूर्य ग्रहण नहीं होगा।

खग्रास सूर्य ग्रहण 8 अप्रैल 2024 ई.

यह ग्रहण पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका, पैसेफिक, अटलाण्टिका तथा आर्कटिक में दृश्य होगा। मैकस्किो, यू.एस.ए., टैक्सास, शिकागो, अर्लिण्टन, कनाडा का बर्लिण्टन, हेमिल्टन, किंगस्टन, मोण्ट्रियल, क्यूवैक, हवाना, न्यूयार्क, टोरेण्टो, डेट्रायर में दिखाई पड़ेगा। ग्रहण स्पर्श भारतीय मानक समयानुसार 8 अप्रैल रात्रि 21:12 बजे दक्षिणी पैसफिक सागर से होगा तथा मैक्सिको के माजाटलान सिनोला में सब से पूर्व खग्रास रूप में दिखाई पड़ेगा। इस ग्रहण मोक्ष 9 अप्रैल रात्रि 2:22 पर होगा। यह खग्रास सूर्य ग्रहण भारत में दिखाई न पड़ने से इसका धार्मिक महत्त्व नहीं है।

ग्रहण प्रारम्भ : 8 अप्रैल 2024 रात्रि 21:12 (भा.मा.स.)
ग्रहण मध्य : 8 अप्रैल रात्रि 23:47 (भा.मा.स.)
मोक्ष : 9 अप्रैल रात्रि 2:22 (भा.मा.स.)
मेग्नीट्यूट : 1:0565
खग्रास ग्रहण अवधि : 4 मिनट 28 सैंकण्ड
ग्रहण सम्पूर्ण अवधि : 5 घण्टा 10 मिनट

खग्रास सूर्य ग्रहण का प्रभाव

भारतीय नेताओं के कार्यशैली पर गम्भीर आरोप प्रत्यारोप लगाने की सम्भवना है, यहाँ ग्रहण दृष्टिगोचर होगा। उन देशों में अनेक भागों में, अभिमानी/क्रोधी नेताओं के कारण अशान्ति का वातावरण बनेगा। महिला नेताओं को ध्यानपूर्वक व्यवहार करना होगा। सभी प्रकार के यूनानी, आयुर्वेदिक औषधियां, सोन, चान्दी तथा अन्य उपयोगी वस्तुएं महंगी होंगी, व्यापारी वर्ग घी, तैल, मूंग, उड़द, अफीम इत्यादि वस्तुओं का संग्रह करेंगे तथा प्रचुर धन कमाएंगे, आर्थिक अपराध तथा साइबर क्राईम बढ़ेंगे, सैन्य वर्ग और वैदिक जन पीड़ित हांगे, उपयोगी वर्षा की कमी होगी।

पीयूष रैणा
अभियन्ता

विभिन्न राशियों पर ग्रहण का प्रभाव

मेष – धन हानि	वृष – धन का लाभ
मिथुन – मानसिक तनाव	कर्क – चिन्ता, धन हानि
सिंह – सुख समृद्धि	कन्या – पति/पत्नी वियोग
तुला – शरीर कष्ट	वृश्चिक – निन्दा अपमान
धनु – सर्वसिद्धि	मकर – धन का लाभ
कुंभ – धन की हानि	मीन – चोट, वैमनस्य

खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण 18 सितम्बर 2024 ई.

ग्रहण प्रारम्भ : 00:06:11 (भा.मा.स.)
ग्रहण मध्य : 8:14 (भा.मा.स.)
मोक्ष : 10:17 (भा.मा.स.)
मग्नीट्यूट : 0.085
ग्रहण अवधि : 04:06 (घ.मि.)

18 सितम्बर 2024 का खण्डग्रास चन्द्रग्रहण यूरोप, एशिया अधिकांश भागों में अफ्रीका, उत्तरी/दक्षिणी अमेरिका, पैसेफिक, अटलाण्टिक तथा हिन्द महासागर, आर्कटिक में दिखाई पड़ेगा।

भारत में जयपुर, कोटा, उदयपुर, जामनगर, महसाना, सूरत, बड़ौदरा, अहमदावाद, सोलापुर, जलगांव, सांगली, दादरनागर हवेली, मुंबई तथा मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर तथा पाकिस्तान के कराची में ग्रहण दिखाई पड़ेगा। चन्द्रमा क्षितिज से नीचे होने के कारण ग्रहण दिल्ली, हरियाणा, पञ्जाब, जम्मू कश्मीर में दिखाई नहीं पड़ेगा।

चन्द्रग्रहण के प्रभाव से वैश्विक स्थिति चिन्ताजनक रहेगी, सामान्य वर्षा, कहीं-कहीं असामान्य वर्षा होगी, चावल इत्यादि की फसल खराब होने के उपरान्त भी कृषि उत्पादन सन्तोषप्रद रहेगा। चावल, ज्वार आदि सफेद धान्यों, चान्दी, श्वेत धातुओं मलमल, चना, तिल, रूई, कपास, सोना, पीतल इत्यादि

धातुएं महंगी होंगी। सोना, चान्दी, ताम्बा, घी, तैल, गुड़, खाण्ड, ज्वार, बाजरा, मोठ, चना, कपास, कपड़ा, लवंग, अफीम, सुपारी, लाल रंग के वस्त्रों के स्टाक से लाभ मिलेगा। आर्थिक उन्नति प्रत्यक्ष दिखाई देगी, भय और रोग समाप्त होंगे। महिलाओं में गर्भ धारण सम्बन्धी कष्टों की तथा गर्भपात की घटनाओं में वृद्धि होगी, नेत्र तथा अतिसार रोगों का प्रकोप बनेगा, सरकारी कार्यों में वृद्धि आएगी।

विभिन्न राशियों पर ग्रहण का प्रभाव

मेष – हानि	वृष – धन की प्राप्ति
मिथुन – विनाश, कष्ट	कर्क – चिन्ता, शरीर कष्ट
सिंह – सर्व सुख, समृद्धि	कन्या – पति/पत्नी विवाद
तुला – रोग उत्पत्ति	वृश्चिक – निन्दा का भय
धनु – सर्व सिद्धि	मकर – लाभ
कुंभ – हानि, चिन्ता	मीन – शारीरिक कष्ट

कङ्कणाकृति सूर्यग्रहण 2 अक्तूबर 2024 ई.

कंकणाकृति सूर्यग्रहण दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भागों पैसेफिक, अटलाण्टिक एवं आर्कटिक में दृष्टिगोचर होगा। चिली, पेरू, होनोलूलू, फाकोफो, अण्टार्कटिका, अर्जेण्टिना, ब्यूनस आर्यस, वेका आईलैण्ड, फ्रेंच, पोलीनेशिया में आंशिक सूर्यग्रहण दिखाई देगा। भारत में ग्रहण दिखाई न पड़ने से इसका धार्मिक महत्त्व नहीं होगा।

ग्रहण पर देवगुरु वृहस्पति की दृष्टि से शुभ फल प्राप्ति होगी। वैश्विक क्षेम तथा सुभिक्ष की स्थिति बनेगी, चावल की फसल खराब होगी, कृषि में उपयोगी वर्षा न होने से सामान्य हानि परन्तु धान्यों के मूल्यों में कमी देखी जाएगी। सोना, पीतल आदि धातु, चाबल, चना, मूंग, कपास, रूई, घी, तैल आदि सभी वस्तुओं में तेजी बनेगी। सोना, मजीठ, सुपारी, जवार, बाजरा, मोठ, चना, कपास, लौंग, अफीम तथा रक्त वर्ण की वस्तुओं के संग्रह से लाभ होगा। शिल्पकारों, काष्ठ एवं फरनीचर के निर्माता एवं व्यापारी, चिकित्सक समुदाय की स्थिति खराब होगी। तस्करों का उपद्रव बढ़गा। युद्ध-महामारी तथा अन्य उपद्रवों से सत्ता शिखर पर बैठे व्यक्तियों तथा विद्वानों को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। स्त्रियों के गर्भ सम्बन्धी समस्याएं बढ़ेंगी। आम जनता शासकों की अनीतियों से पीड़ित होगी।

ग्रहण प्रारम्भ : 2 अक्तूबर रात्रि 21:13 (भा.मा.स.)
ग्रहण मध्य : 3 अक्तूबर रात्रि 00:15 (भा.मा.स.)
मोक्ष : 3 अक्तूबर रात्रि 3:17 (भा.मा.स.)
मेग्नीट्यूड : 1.057
समयावधि : 6 घण्टे 4 मिनट

विभिन्न राशियों पर ग्रहण का प्रभाव

मेष – शरीर कष्ठ	वृष – मान हानि
मिथुन – सर्व सिद्धि	कर्क – धन लाभ
सिंह – हानि	कन्या – घात
तुला – हानि	वृश्चिक – धन की प्राप्ति
धनु – कष्ट एवं निन्दा	मकर – चिन्ता
कुंभ – सर्व सौख्य	मीन – पति/पत्नी वियोग

खग्रास चन्द्र ग्रहण 14 मार्च 2025 ई.

खग्रास चन्द्र ग्रहण यूरोप, एशिया महाद्वीप के अधिकांश भागों में आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश भागों, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, पैसेफिक, उटलाण्टिक एवं आर्कटिक में दृश्य रहेगा।

कांसाब्लाका, डबलिन, लिस्बन, पेरू, न्यूयार्क, होनोलूलू, सेनफ्रांसिस्को, मोण्ट्रायल, ब्राजील, ब्यूनस आयर्स, हवाना लोस, ऐंजेलस, शिकागो, ग्वेटामाला, डेट्रायट, मैक्सिको, सेण्टिगो, बुडापेस्ट, टोक्योरोम, स्टाक होम, एर्थेसमेडरिड, पेरिस, ब्रस्लस, अमेस्टरडम, लागोस में ग्रहण दिखाई पड़ेगा परन्तु खग्रास के रूप में नहीं। ग्रहण भारत में दृश्य न होने से इसका धार्मिक महत्त्व नहीं है।

प्रजा में सुभिक्ष परन्तु वैदिक विद्वतवर्ग पीड़ित रहेगा। उपयोगी वर्षा हो जाने के कारण कृषि-उत्पादन उत्तम होगा। मूंग आदि द्विदल, चान्दी, मोती सभी प्रकार की धातुएं, श्वेत वस्त्र, धान्य, किराना, रसकस, सभी प्रकार के हर्वल्स, यूनानी तथा आयुर्वेदिक औषधियां महंगी होंगी। ग्रहण का प्रभाव लगभग सात दिन तक रहगा। रूई चाबल तथा चना के संग्रह से लाभ मिलेगा। शिपिंग तथा एण्टरटेनमेण्ट इण्डस्ट्री के कामकाज पर बुरा प्रभाव होगा। सत्ता के केन्द्र बिन्दुओं के लिए संघर्ष के साथ-साथ किन्हीं स्थानों पर उपद्रव होंगे, कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिक व्यक्ति हानि उठायेंगे।

ग्रहण स्पर्श : 9:27 (भा.मा.स.)
ग्रहण प्रारम्भ : 10:40 (भा.मा.स.)
खग्रास ग्रहण : 11:56 (भा.मा.स.)

ग्रहण मध्य : 12:29 (भा.मा.स.)
ग्रहण समाप्त : 13:01 (भा.मा.स.)
मोक्ष : 15:30 (भा.मा.स.)
मेग्नीट्यूड : 1:178
ग्रहण अवधि घ. 06:03 मि.

विभिन्न राशियों पर ग्रहण का प्रभाव

मेष – निन्दा भय	वृष – सर्व सिद्धि
मिथुन – धन लाभ	कर्क – हानि
सिंह – कष्ट, निन्दा भय	कन्या – धन हानि
तुला – धन की प्राप्ति	वृश्चिक – शरीर कष्ट, हानि
धनु – चिन्ता तथा भय	मकर – सर्व सौख्य
कुंभ – पति/पत्नी वियोग	मीन – शरीर कष्ट

खग्रास सूर्यग्रहण 29 मार्च 2025 ई.

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण यूरोप, एशिया, महाद्वीप के उत्तरी भाग उत्तर पश्चिम अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका के अधिकांश भागों में, दक्षिण अमेरिका के उत्तरी भागों, अटलाण्टिक एवं आर्कटिक में दृश्य रहेगा। कुछ प्रमुख शहरों– हेमिल्टन, पोण्टाडेलागाडा, हेलिक्स, सेण्टपियरे, न्यूयार्क डबलिन, पेरिस, डगलस, लन्दन, मोण्ट्रियालड ओशिका सूर्यग्रहण दिखाई पड़ेगा। भारत में दिखाई न पड़ने से इसका धार्मिक महत्त्व नहीं हे।

ग्रहण प्रारम्भ : 14:21 (भा.मा.स.)
ग्रहण मध्य : 16:17 (भा.मा.स.)
मोक्ष : 18:14 (भा.मा.स.)
मेग्नीट्यूड : 0.938

ग्रहणग्रस्त देशों में अनेक प्रान्तों में अशान्ति रहेगी। चित्रकार, फोटोग्राफर, लेखक, भवन निर्माताओं, शिल्पियों, सेक्स वर्कस (वेश्यावृत्ति) एवं रूपजीवियों, मिमिक्री (नकलची) आर्टिस, नाटककारों का समय कष्टपूर्ण रहेगा। सोना तथा अन्य नित्योपयोगी वस्तुओं में तेजी आएगी। वर्षाकाल में बाढ़ आदि से हानि, समुद्रतट निवासी अधिक कष्ट में आएंगे। कपास, रूई, कपड़ा, चांदी, मोती, सुपारी, नारियल, हींग, फल, घी, गुड़, खाण्ड, ताम्बा, मूंगा, गेहूँ, चाबल इत्यादि का संग्रह करें तो चार मास पश्चात लाभ होगा।

विभिन्न राशियों पर ग्रहण का प्रभाव

मेष – हानि	वृष – धन की प्राप्ति
मिथुन – कष्ट तथा हानि	कर्क – चिन्ता कष्ट
सिंह – सर्व सौख्य	कन्या – पति/पत्नी वियोग
तुला – शरीर कष्ट	वृश्चिक – निन्दा तथा भय
धनु – सर्व सिद्धि	मकर – लाभ, प्रतिष्ठा
कुंभ – धन हानि	मीन – घात एवं कष्ट

'श्री राघवेन्द्र पञ्चाङ्ग' ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्रिका, वर्षफल शुद्ध गणित से कम्प्यूटर की सहायता से बनाये जाते हैं विद्या में सफलता, व्यवसाय सम्बंधी प्रश्न, विवाह, सन्तान, विदेश यात्रा, पारिवारिक सुख, इत्यादि महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ग्रहों के आधार पर शास्त्रीय विधिविधान से अनुशीलन करके दिये जाते हैं।

संक्षिप्त जन्मपत्रिका – अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता, दादा का नाम, गोत्र जाति इत्यादि भेजें या स्वयं आकर लिखवायें। फीस 1000 रुपये होगी, विदेश में उत्पन्न जातक की पत्रिका के लिए 1500 रुपये देय होंगे।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री – आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा विवाहादि के सन्दर्भ में विस्तृत विवरण दिया जाता है। वृहद् जन्मपत्री की फीस 2500 से 3100 रुपये तक होगी।

वर्षफल – आपका वर्ष कैसा बीतेगा इसके लिए जन्मपत्रिका की फोटो कापी भेजना आवश्यक है। यदि जन्मपत्री नहीं है तो पत्र लिखने का समय, तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश की फीस 1000 से 1500 रुपये तक होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें।

कर्मकाण्ड सम्बंधी – हमारे यहाँ उच्चकोटि के कर्मकाण्डी विद्वान् हैं विवाह, पूजा, जप, अनुष्ठानादि के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। ग्रहों के शान्त्यर्थ, समस्त समाधान हेतु शास्त्रीय विधिविधान से अनुष्ठान करवाये जाते हैं।

डॉ॰ चन्द्रमौलि रैणा सहाचार्य (सेवानिवृत्त) ज्योतिष जी से प्रत्यक्ष मिलने के लिए आने वाले सज्जन फोन द्वारा पूर्व ही समय निर्धारित कर लें।

संचालक

श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, 44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू
दूरभाष एवं फैक्स : 0191-3555681,
मोबाईल : 094191-94230, 6005569931
ई-मेल : drcmraina@gmail.com

अथ शांतिः पाठः

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसे दिमावयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तान्पूर्वया निविदाहूमहे वयम्भग-म्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विनासरस्वतीनः सुभगामयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभुव्वा तु भेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।।
पूषानो यथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसोविश्वे नोदेवाऽअवसा गमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपिताससपुत्रः।
विश्वेदेवाऽआदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।
तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधिरोचने दिवः।।

आयुष्यंवर्च्चस्वꣳरायस्पोषयꣳमौद्भिदमू। इद्ꣳहिरण्यंवर्च्चस्वज्जैत्रा विशतादुमाम्।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे-देबाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।
शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ श्री-मातृ-पितृ-चरण-कमलेभ्यो नमः। ॐ पञ्चोंकारेभ्यो नमः। ॐ षोडशमातृका-सप्तमातृकाभ्यो नमः। ॐ कुण्डमण्डपाधिष्ठातृ-देव-ताभ्यो नमः। ॐ अधिदेव-प्रत्यधिदेव-सहितेभ्यो सूर्यादिग्रहेभ्यो-नमः। ॐ समस्त-लोकपालेभ्यो नमः। ॐ वास्तु-क्षेत्रपालयोगिनी-सर्वतोभद्र-पीठाधिष्ठातृ-देवताभ्यो नमः। ॐ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः। ॐ श्री राधादामोदराभ्यां नमः। ॐ बद्रीनाथादिचतुर्धामभ्यो नमः। ॐ गंगादिसप्तविंशतिनदीभ्यो नमः। ॐ प्रयागादि-तीर्थ-राजेभ्यो नमः। ॐ त्रित्रिंशतकोटिदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्रह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवायरुद्राय नमः। ॐ पुण्यं पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु।

आत्मपूजा

पवित्रधारणम् :

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

अथवा

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

आत्माभिषेक :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमनम् :

ओं केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।
ओं माधवाय नमः।

हस्तप्रक्षालनम्:

ॐ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः। ॐ गोविन्दाय नमः।
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।

प्राणायाम :

ॐ भूभुर्वः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अङ्गन्यास :

ओं वाङ्मेऽआस्येऽस्तु। ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। ॐ ऊर्वोमेऽओजोऽस्तु। ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तन्वा सह सन्तु।

सषर्षैर्दिग्बन्ध :

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः।
ये चात्र विघ्नकर्त्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे।।

ओं प्राच्यैः नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः
ओं उदीच्यै नमः, ॐ अन्तरिक्षाय नमः, ॐ पूजाभूम्यै नमः

विनियोग :

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।

पृथ्वीपूजा :

ॐ पृथिव्यैः (आधारशक्तये) पादयोः पाद्यं, हस्तयोः अर्घ्यं, मुखे आचमनीयम्, शरीरे स्नानीयं, वस्त्रोपवस्त्रं, यज्ञोपवीतं एष गन्धः इमे अक्षताः इमानि पुष्पाणि, धूपोदीपश्च नैवेद्यं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

पृथ्वी प्रार्थना :

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

कर्मपात्रस्थापनम् :

गन्धादिना त्रिकोणमण्डलं कृत्वा दूर्वागन्धाक्षतपुष्पाणि निधाय कर्मपात्रं न्यसेत्। तत्रकर्मपात्रं पूर्ववद् गन्धाद्यैः सम्पूज्य।

कलशस्थापनम् :

ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा।
निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।

जलपूरणम् :

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीत्।।

तीर्थाभिमन्त्रणम् :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावारि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

गन्धक्षेपः

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

दूर्वा

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

पूंगीफलम्

ॐ याः फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः।।

पंचरत्नम्

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानिदाशुषे।।

सुवर्णखण्डम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

रक्तवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो।।

स्मार्ताचमनम् :

ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः।

वरुणावाहनम्

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः।।
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आह्वायामि।
(कलश को चारों दिशाओं में तिलक लगायें)
ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदाय नमः
ॐ सामवेदाय नमः, ॐ अथर्ववेदाय नमः

देवतावाह्नम्

ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
सगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णावेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नद्याश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।

अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशे स्थिताः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

आत्मतिलकम् :

ओं सुचक्षाऽअहमक्षीभ्यां
भूयासꣳसुवर्चामुखेन।
सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्।।

शिखाबन्धनम् :

ओं उर्ध्वं केशि विरुपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये चामुण्डे चापराजिते।।

सूर्यार्घ्यम् :

ॐ एहि सूर्यसहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

ध्यानम् :

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलवर्त्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटीहारी। हिरण्यमयवपुर्धृत शंखचक्रः।।

दीपार्घ्यम् :

ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह।
प्रसीदमम गोविन्द दीपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम्।।

दीपम्

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः
सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

दीपप्रार्थना :

ॐ दीप! ब्रह्मरूपस्त्वमन्धकारनिवारक।
इमां मया कृता पूजा गृहण तेजो विवर्धय।।

धूपार्घ्यम् :

ॐ वनस्पति रसोदभूत गन्धाढ्य सुमनोहर।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपार्घ्यः प्रतिगृह्यताम्।।

धूपम्:

ओं धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वत योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयंवयंधूर्वामः।
देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्।।

धूपप्रार्थना :

ॐ वासना वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तुते।।
एषाऽऽत्मपूजा सर्वकर्मसुप्रयोज्या।।

अथ स्वस्तिवाचनम्

ॐ स्वस्तिनऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्। विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवोदेवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव। इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभारामहेमतीः यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।। एतत्ते देवसवितुर्यज्ञम्प्राहुवर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव।। मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति।। गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्। नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्योव्रातपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्योविश्वरूपेब्भ्यश्च वो नमो नमः।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ श्री-मातृ-पितृ-चरण-कमलेभ्यो नमः। ॐ पञ्चोंकारेभ्यो नमः। ॐ षोडशमातृका-सप्तमातृकाभ्यो नमः। ॐ कुण्डमण्डपाधिष्ठातृ-देव-ताभ्यो नमः। ॐ अधिदेव-प्रत्यधिदेव-सहितेभ्यो सूर्यादिग्रहेभ्यो-नमः। ॐ समस्त-लोकपालेभ्यो नमः। ॐ वास्तु-क्षेत्रपालयोगिनी-सर्वतोभद्र-पीठाधिष्ठातृ-देवताभ्यो नमः। ॐ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः। ॐ श्री राधादामोदराभ्यां नमः। ॐ बद्रीनाथादिचतुर्धामभ्यो नमः। ॐ गंगादिसप्तविंशतिनदीभ्यो नमः। ॐ प्रयागादि-तीर्थ-राजेभ्यो नमः। ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्रह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवायरुद्राय नमः। ॐ पुण्यं पुण्याहंदीर्घमायुरस्तु।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रवेकतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनंध्यायेत्सर्व-विघ्नोपशान्तये।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये-त्र्यम्बके-गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेङ्घ्रियुगं स्मरामि।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।
वक्रतुण्ड - महाकाय - कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।

श्री गौरीगणेशपूजा

आह्वानम्– ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसोमम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मा नयति कश्चन।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाकाम्पीलवासिनीम्।।

आसनम्– ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः।
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।

पाद्यम्– ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

अर्घ्यम्– ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि।
आपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमधुमन्तन्तऽऊर्मिम्।।

आचमनम्– ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युराचके।।

स्नानम्– ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये।।

पयःस्नानम्– ॐ पयः पृथिव्यांम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षं पयोधाः
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

शुद्धस्नानम्– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् एवं सर्वत्र दधिघृतादि स्नानान्ते इति प्रयोज्यम्।

दधिस्नानम्– ॐ दधिक्राष्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्।।

घृतस्नानम्– ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम्।।

मधुस्नानम्– मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः।
मधुद्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमांऽऽअस्तुसूर्यः।
माध्वीर्गावोभवन्तुनः।।

शर्करास्नानम्– ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्येसन्त ꣳ समाहितम्।
अपा ꣳ रसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तमुपयामगृहीतोऽ सीन्द्रायत्वा।। जुष्टङ् गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

उद्वर्तनस्नानम्– ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्यबाहुरसि-दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्नि-रिडऽडितः। मित्रो-वरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यरिष्ट्यै यज्ञमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।

शुद्धस्नानम्– ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।

वस्त्रम्– ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः।।

यज्ञोपवीतम्– ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात् आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तु तेजः।।

चन्दनम्– ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनं स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

अक्षतान्– अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तौषतस्व भानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी।

पुष्पाणि– ॐ ओषधीःप्रतिमोद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

दुर्वाङ्कुरम्– ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीः परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

सुगन्धतैलम्– ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ँ सम्परिपातु विश्वतः।।

धूपम्– ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं ँ योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्व-यम्वयंधूर्वामः।
देवानामसिवह्णितम् ँ सस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्।।

दीपम्– ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।
ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

नैवेद्यम्– ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जनो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

हस्तप्रक्षालनम्– ॐ अ ँ शुना तेऽअ ँ शुःपृच्यतां परुषः परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।

फलम्– ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व-ँ-हसः।।

ताम्बूलम्– ॐ उतस्माद् द्रवितस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येवध्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राब्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।

दक्षिणा– ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीद्यामुतेमां कस्मै देवाय ह्विषाव्विधेम।।

आरार्त्तिकम्– ॐ आरात्रिः पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायिधामभिः।
दिवः सदा ँ सि वृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः।।
इद ँ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त।।

पुष्पाञ्जलि– ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे।
समे कामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं
भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं
महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः
सर्वायुषाऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽ
एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽअभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो
मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः
सभासद इति।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो
विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात् सम्बाहुभ्यान्धमति
सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

प्रदक्षिणा– ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

विशेषार्घ्यः– ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तामानभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपाय ते नमः।
नस्मस्तेः रूद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपायनमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियायदेवायनमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदरममस्तुम्यं सततं मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषुसर्वदा।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति।।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव।

अनयापूजया सिद्धिबुद्धिसहितोमहागणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम्।।

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः

हरिः ॐ।। नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव

चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि। पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्। गणादि पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।।१।। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गम्। (गणपतये नमः।) एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।। एतदथर्वशीर्षं योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलम- वाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा संनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।। ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः।।

।। इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

अथ ईशान कलश स्थापनम्

भूमिस्पर्शः– ॐ महीद्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतानो भरीमभिः।।

तण्डुलपुञ्जम्– ॐ औषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि।।

कलशस्थापनम्– ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा।
निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा
पयस्वतीः पुनर्म्मां विशताद्रयिः।।

जलपूरणम्– ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी

स्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीत्।।

तीर्थजलम् – इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोम ꣳ स च तापरुष्ण्या।
मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीयेशृणु ह्यासुषोमया।।

गन्धक्षेपः – ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

सर्वौषधीः – ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनु बभ्रुणामहꣳशतंधामानि सप्त च।।

दूर्वा – ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

पञ्चपल्लवाः– ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्ण्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम्।।

सप्तमृत्तिका – ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म सप्रथाः।।

पूंगीफलम् – ॐ या फलिनीर्याऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिः प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः।।

पंचरत्नम् – ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानिदाशुषे।।

सुवर्णखण्डम्– ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

रक्तवस्त्रम् – ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो।।

पूर्णपात्रम् – ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेन विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो।।

श्रीफलम् – ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः।।

वरुणावाहनम्– ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः।।
अस्मिन्कलशे साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुणं आह्वायामि।

देवतावाह्नम्– ॐ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः।
सगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः।
मूले तस्यस्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णावेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नद्याश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।

अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशे स्थिताः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

प्रतिष्ठा– ॐ मनोजूतिर्जुषतामज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ। कलशे वरुणद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

कलशस्थदेवपूजा – ॐ कलशे आवाहितवरुणादि देवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यम् हस्तयोरर्घ्यं। मुखे आचमनीयम्। सर्वांगेषु स्नानीयम्। गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्य-दक्षिणादि यथासम्भवोपचाराणि समर्पयामि।

प्रार्थना – ॐ देवदानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थाणि देवाः सर्वे त्वयिस्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापतिः।
आदित्या वसवोरुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसाददिमं यज्ञं कर्तृमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्।
ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

अथ नवग्रह पूजनम्

सूर्यः–ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृत मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

चन्द्रः–ॐ इमन्देवा ऽअसपत्नꣳसुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्र मुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणानाँꣳराजा।।

भौमः–ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्।
अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति–

बुधः–ॐ उदबुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते सꣳसृजेथा मयं च।
अस्मिम्त्सथस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

बृहस्पति–ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

शुक्रः–ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिंद पयो ऽमृतं मधु।।

शनिः–ॐ शन्नो देवो राभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये।
शं यो रभि-स्रवन्तु नः।।

राहुः–ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कयाशचिष्ठया वृता।।

केतुः–ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

अथ ग्रहदक्षिण-पार्श्वेऽअधिदेवतास्थापनम्

त्र्यम्बकः—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

उमाः— ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षेत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणमुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।

स्कन्दः—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं ते अर्बन्।।

विष्णुः—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।।

ब्रह्माः—ॐ आब्राह्मन् ब्रह्मणो बह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽ इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीर्धेनुवोंढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्ययजमानस्य वीरो जायता निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।

इन्द्रः—ॐ स जोषा ऽ इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर-विद्वान्।
जहि शत्रूँरपमृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतो नः।

यमः— ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे।।

कालः—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरम्मत समोषधीभिरोषधीः।।

चित्रगुप्तः—ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।

अथ प्रत्यधिदेवतास्थापनं ग्रहाणां वामपार्श्वे

अग्निः—ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रवे। देवां २ आसादयादिह।।

जलम्—ॐ आपः प्रणीत भेषजं बरू थं तन्वे मम। ज्योक् च सूर्यंदृशे।।

पृथिवीः—ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्मसप्रथाः।

विष्णुः—ॐ इदं इन्द्रऽआसन्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽ एतु सोमः।
देव सेनानाममिभञ्जन्तीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।

इन्द्राणीः—ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि धर्मायदीष्व।

प्रजापतिः—ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।

सर्पः—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।

ब्रह्माः—ब्रह्मयज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः।
सबुध्न्याउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्च विवः।

अथ ग्रहणामुत्तरे लोकपालानां स्थापनम्

गणपतिः—ॐ गणानान्त्वाꣳगणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमा त्वम जासि गर्भधम्।

अम्बिका:—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां कांपील वासिनीम्।

वायु: — ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।

नभ:—ॐ घृतंङ्घृतपावान: पिबत वसां बसापावान: पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिश: प्रदिश ऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्य: स्वाहा।

अश्विनी:—ॐ या वाङ्ककशामधुमत्यश्विना सूनृताबती। तया यज्ञम्मिमिक्षत म्।

अथ मण्डल बाह्ये इन्द्रादि दशदिक्पालानामावाहनम्

इन्द्र:— त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शुक्रं पुरूहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र:।

अग्नि:—ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य।
त्रातातोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणास्तव व्रते।

यम:— ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म्म: पित्रे।

नैर्ऋति:—ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्ये त्यामन्विहितस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।

वरुण:—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भि:।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳसमान आयु प्रमोषी:।

वायु:—ॐ आनो नियुद्भि: शतिनीभिरध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्।
वायो ऽअस्मितन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभि: सदा न:।

सोम:—ॐ वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रत:। प्रजावन्त: सचेमहि।

ईशान:—ॐ तमी शानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये।

ब्रह्मा:—ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजीष:। य: शꣳसते स्तुवतेधायि वज्रइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्मारंऽअवन्तु देवा:।

अनन्त:—याऽइषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीऽ रनु। ये वा वटेषु शेरते तेभ्य: सर्पेभ्यो नम:।। ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्यरश्मिषु। येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्य: सर्पेभ्यो नम:।।

वास्तु: — ॐ वास्तोष्पते प्रति जानी ह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवान:।
यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

क्षेत्रपाल: — ॐ नहि स्पर्शमविदन्नन्यस्माद्वैश्वा नरात्पुर ऽ एतारमग्ने:।
एमेनमवृधन्न मृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवा:।।

प्रार्थना: — ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशि प्रियाणां वो ऽ हविषमूर्ज समग्रभमुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृ चौ स्थ: संमा भद्रेण पृङ्क्त विपृ चौ स्थो विमा पाष्मना पृङ्क्तम्।। मनोजूति रिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारै: संपूजयेत्। ततो ग्रहवेदीशाने कलशस्थापन विधिना रुद्र कलश संस्थाप्य ॐ असंख्याता॰ इति मंत्रेण असंख्य रुद्रानावाह्य पूजयेत्। तत: केचन ग्रहाणां पार्श्वे शेषादीनामपि पूजनं कुर्वन्ति तथाहिरवे: पूर्वे ॐ शेषाय नम:। सोमस्याग्रे ॐ वासुकये नम:। ब्रधोत्तरे ॐ कर्कोटकाय

नमः। बृहस्पतेरग्रे ॐ पद्माय नमः। शुक्रोत्तरे ॐ महापद्माय नमः। शनि पश्चिमे ॐ शंखपालाय नमः। राहुपुरतः ॐ कालाय नमः। केतुपुरतः ॐ कुलिशाय नमः।

बहिः पूर्वेः—ॐ अश्विनी आदि सप्तनक्षत्रेभ्यो नमः तत्रैव ॐ विष्कम्भादि सप्त-योगेभ्यो नमः। ॐ बव बालव करणाभ्यां नमः ॐ सप्तद्वीपेभ्यो नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। बहिर्दक्षिणे—पुष्यादि सप्तनक्षत्रेभ्यो नमः। धृत्यादि सप्तयोगेभ्यो नमः।

पश्चिमे—ॐ कौलव तैतिलकरणाभ्यां नमः। ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ स्वात्यादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नमः। ॐ वज्रादि सप्त योगेभ्यो नमः। ॐ गर-वणिज-करणाभ्यां नमः। सप्त पातालेभ्यो नमः। ॐ सामवेदाय नमः।

उत्तरेः—ॐ अभिजिदादि सप्तनक्षत्रेभ्यो नमः। ॐ साध्यादि षड्योगेभ्यो नमः। विष्टिकरणाय नमः। ॐ भूरादि सप्तलोकेभ्यो नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः।

वायव्याम्—ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः।

यथावकाशम्—ॐ नदीभ्यो नमः। सप्तकुलाचलेभ्यो नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमाः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ एकोनपंचाशन्मरुद्भ्यो नमः। ॐ षोडश-मातृकाभ्यो नमः। ॐ षड् ऋतुभ्यो नमः। ॐ द्वादश। मासेभ्यो नमः। द्व्ययनाभ्यां नमः। ॐ पंचदशतिथिभ्यो नमः। ॐ षष्ठि-संवत्सरेभ्यो नमः। ॐ सुपर्णेभ्यो नमः। ॐ यक्षेभ्यो नमः। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः। ॐ विद्याधरेभ्यो नमः। ॐ अप्सरेभ्यो नमः। ॐ रक्षोभ्यो नमः। ॐ मनुष्येभ्योः नमः।

क्षमापनम्

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वराः।
यत्पूजितं मया देवाः! परिपूर्णं तदस्तु मे।।1।।
ॐ यत्कृतं पूजनं देवाः! भक्ति-श्रद्धा-विवर्जितम्।
परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः।।2।।

पुष्पाञ्जलिः — ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रश्च शनिश्च राहुः केतुश्च सर्वे प्रदिशन्तु शं मे।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिञ्च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिम्
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।2।।

करौ बद्धवा प्रणमेत् — ॐ आयुश्च वित्तञ्च तथा सुखञ्च धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रतां च। शत्रुक्षयं राजसु पूज्यताञ्च तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।। जलं गृहीत्वा— ॐ अनया पूजया आवाहिता देवाः प्रीयन्ताम्, इत्युत्सृजेत्।।

आशीर्वादः—ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा, वसवः, समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रास्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे।।

ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।

आयुष्यतिलकम्– ॐ दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतबल्शा विरोहतात्।।

वैदिक अभिषेकः–ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतोरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ
आपो जनयथा च नः।
ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवा शान्ति र्ब्रह्म शान्तिः
सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।
ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं करु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः।।
ॐ सुरास्त्वामभषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धाध्यक्ष स्तथा विभुः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिःश्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां तथा।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे धर्मकामार्थसिद्धये।।
अमृताभिषेकोऽस्तु।।

विसर्जनम्

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्त्वस्ते महे।
उप ब्रयन्तु मरुतः सुदानबऽइन्द्रप्राशूर्भवा स चा।।
ॐ यज्ञं यज्ञङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा।

गणेश्वर त्रिनयन विध्नव्यूह विनाशन।
शिवलोकं प्रगच्छस्व गणेशाय नमोनमः।१।
ओंकारं चतुरोवेदांश्चातुर्होत्रमुखं प्रभुम्।
गायत्री सहितं देवं नौमि गच्छ स्वमन्दिरम्।२।
हरिं नारायणं कृष्णं गोविन्दं मधुसूदनम्।
मन्दराद्रिधरं नौमि विष्णो गच्छ स्वमालयम्।३।

कल्पनानां पथि सर्वं विभ्रान्तं सचराचरम्।
तेजस्विनं महादेवं नौमि शम्भो गिरिं ब्रज।४।
तेजो रूप धरं सूर्य शाशनं शीतलत्विषम्।
रक्तवर्णधरं भौमं शशिज हरितप्रभम्।५।
सर्वाविद्या मुखे यस्य सर्वदेवैः प्रपूजित्रम्।
गुरुं नौमि तवाभक्तवा भार्गवं दैत्यपूजितम्।६।
शनैश्चरं सूर्यसुतं सैहिकेय महाबलम्।
केतुं च नौमि शिखिनं ग्रहा गच्छन्तु स्वां पुरीम्।७।
शक्र गच्छ सुधर्माख्यां वीतिहोत्र स्वमालयम्।
खंयमनीं धर्मराज नैर्ऋतं गच्छ निर्ऋते।८।
वरुण त्वमपांमध्ये वायो गन्धवर्ती ब्रज।
अलकां याहि यक्षेन्द्र रुद्रा ईशानमण्डलम्।९।
क्षेत्रपाला त्वक्षत्रेषु मातरो मातृमण्डले।
यच्छन्तु सर्वे, स्वं स्थानं वजमानवरप्रदा।१०।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय नामकीम्।
इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।११।
धान्यं देहि धनं देहि पुत्रपौत्रांश्च देहि मे।
देहि मे ऽआयुरारोग्यं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।१२।
यत्र देवालयाः सन्ति तत्र गच्छ हुताशन।
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।१३।
स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।१४।
न्यूनं संपूर्णतां यान्ति सद्यो बन्दे तमच्युतम्।
ॐ विश्व शान्तिः ओं विश्व शान्तिः। ॐ विश्व शान्तिः।

अथ श्रीसूर्यार्घ्यदानम्

श्रीसूर्याभिमुखस्तिष्ठन् गन्धाक्षतपुष्पयुक्तानि त्रीण्यर्घ्याणि दद्यात्, तन्त्र मन्त्रः –

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घ्यं नमोस्तु ते।।
कर्मसाक्षिणे श्रीसूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम।
इत्यर्घ्यत्रयं दत्त्वा, दत्तार्घ्योदकेन दक्षिणनासाचक्षुः
श्रोत्रस्पर्शनञ्च कुर्यात्

ॐ यानि कानीति प्रदक्षिणीकृत्य–

ॐ एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।। इति प्रणमेत्।
ॐ यज्ञच्छिद्रं तपश्चिछद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः।
ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः,
इत्याद्युक्त्वा तूष्णीं त्रिराचामेत्।। ततः

ॐ आपद्धनध्वान्तसहस्त्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।।

—

चातुर्वार्षिक श्राद्ध पद्धतिः

संकलन कर्ता :-
मूलराज शास्त्री 'मल्हण'
साहित्याचार्य, शिक्षा शास्त्री, पलोड़ा

श्राद्ध में समझने योग्य बातें

"श्रद्धया दीयते यस्मात् तद् श्राद्धम्।"

पितरों के निमित्त श्रद्धा से दिया जाने वाला भोजन आदि दान श्राद्ध कहलाता है। इसके तीन भेद हैं :- (1) पिण्डदान, (2) तर्पण तथा (3) ब्राह्मण भोजन।

किसी कारणवश पिण्ड आदि न होने पर श्राद्ध तिथि में ब्राह्मण भोजन करा देना तो भी श्राद्ध हो जाता है। शास्त्रों में श्राद्ध का बड़ा महत्त्व दिया गया है यहाँ विस्तार के कारण उल्लेख नहीं किया गया है।

श्राद्ध तिथि– देसी महीनों में कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष आते हैं। इनमें जिस किसी भी तिथि में देहान्त हुआ हो वही तिथि श्राद्ध में ग्राह्य होती है। उस मास का दिनांक नहीं। तिथियाँ चन्द्रमा से बनती हैं और दिनांक सूर्य से। मृत्यु तिथि से लेकर पूरे वर्ष तक तीन षोडशियां मानी गई हैं :- (1) मलिन षोडशी, (2) मध्यम षोडशी और (3) उत्तम षोडशी।

मृत्यु तिथि से दस दिन तक जो श्राद्ध हों उसे मलिन षोडशी कहते हैं। क्रिया में किए जाने वाले श्राद्ध मध्यम षोडशी कहलाती है। वर्ष में आने वाले मासिक श्राद्धों को उत्तम षोडशी कहते हैं।

तीन वर्ष तक ये श्राद्ध अशुद्ध श्रेणी में आते हैं। इन वर्षों में श्राद्ध करके भोजन गाय को खिला देना चाहिए।

चातुर्वार्षिक श्राद्ध– चार वर्ष पूर्ण होने पर जो श्राद्ध आए उसे शुद्ध श्राद्ध कहा जाता है। इस श्राद्ध में चार विश्वेदेवों का पूजन होता है। नियम के अनुसार– त्रिपौरुष हो। अर्थात् पिता, दादा और परदादा। इनमें दादा या दादी जीवित हैं तो 'त्रिपौरुष श्राद्ध' न होकर एकोदिष्ट चौबरसी श्राद्ध होगा। इसमें एक पिण्ड ही विश्वेदेवों के बिना दिया जाता है। पिता आदि त्रिपौरुष श्राद्ध में 'सपत्नीक' उच्चारण नहीं होता।

सांवत्सरिक एकोदिष्ट श्राद्ध

वर्ष में जिस मास की कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष की मृत्यु तिथि आए उस तिथि के दिन जो श्राद्ध किया जाता है उसे सांवत्सरिक एकोदिष्ट श्राद्ध कहते हैं। इसमें विश्वेदेवों का पूजन नहीं होता, केवल एक पिण्ड दिया जाता है।

चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध को छोड़ कर किसी भी व्यक्ति की चौबरसी या सांवत्सरिक एकोदिष्ट श्राद्ध में विश्वेदवों के बिना एक पिण्ड ही दिया जाता है।

पार्वण श्राद्ध– आश्विन मास में आने वाले श्राद्धों को पार्वण श्राद्ध कहते हैं। अर्थात् पितरों के पर्व दिन। जो जिस तिथि में स्वर्गवास हुआ है उस तिथि पर श्राद्ध करना। पार्वण श्राद्ध में दो विश्वेदवों का पूजन किया जाता है। पार्वण श्राद्ध में पितृ, पितामह, प्रतितामह के साथ सपत्नीक उच्चारण किया जाता है। इसलिए छः पिण्ड बनाए जाते हैं।

मातामह आदि श्राद्ध– पार्वण श्राद्ध में चाहें तो सपत्नीक छः पिण्ड मातामह, प्रमातामह और वृद्ध प्रमातामह के लिए दिए जा सकते हैं। इस प्रकार 12 पिण्ड और एक पिण्ड अज्ञात व्यक्ति के लिए कुल 13 पिण्ड दिए जा सकते हैं।

माता आदि का श्राद्ध– चौबरसी श्राद्ध में माता, पितामही, प्रपितामही त्रिपौरुष श्राद्ध किया जाता है। नियमानुसार तीनों स्वर्गवास हों। यदि दादी जीवित है तो माता का एकोदिष्ट चौबरसी श्राद्ध होगा। प्रस्तुत चौबरसी श्राद्ध के संकल्प में पितृपक्ष लिया गया है। यदि मातृपक्ष हो तो संकल्प में स्त्रीलिंग के अनुसार परिवर्तन आवश्यक है। जैसे :-

ॐ विष्णुः ३ अद्य..... वासरे अमुक गोत्राया
अमुक नाम्नी देव्याः मातुः विश्वेदेव पूजन
पूर्वक शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धं करिष्ये॥

इसी प्रकार जहाँ माता आदि को वस्तु दी जानी है वहाँ पूरा सकल्प बोल कर– **"अमुक गोत्रे! अमुकी देवि! एतद् गन्ध, अक्षत पुष्पादि ते नमः–** और पिण्ड, वस्त्र देने में **"ते स्वधा'** कहें।

मलमास श्राद्ध– जिनकी मलमास में मृत्यु हुई हो उनका शुद्ध तिथि में श्राद्ध का नियम है। चौबरसी में मलमास नहीं आता। **"मलमास मृतानां तु सौरं मानं समाश्रयेत्"** इति हेमाद्रिः। मलमास जब भी आए मृत व्यक्ति की तिथि पर श्राद्ध कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त सांवत्सरिक एकोदिष्ट श्राद्ध व पार्वण श्राद्ध यथावत् करने चाहिए।

विशेष टिप्पणी– चौबरसी श्राद्ध के बाद पहले सांवत्सरिक एकोदिष्ट श्राद्ध करना बाद में पार्वण श्राद्ध करना शास्त्र का नियम है। एकोदिष्ट श्राद्ध को छोड़कर पार्वण श्राद्ध का निषेध है। पार्वण श्राद्धों में मृत व्यक्ति की तिथि एक ही रहेगी। श्राद्ध में क्षत्रिय हो तो वर्मा, वैश्य हो तो गुप्ता, शूद्र हो तो दास उच्चारण करें।

श्राद्ध में कुछ पारिभाषिक शब्द

सव्य– सव्य का अर्थ है बायाँ, जहाँ हमारा जनेऊ रहता है। ऐसी स्थिति में देव कार्य किये जाते हैं।

अपसव्य– सव्य के प्रतिकूल अपसव्य अर्थात् दायाँ भाग। इसमें पितृकार्य किए जाते हैं।

अवनेजन– पिण्ड स्थान को पवित्र करने हेतु पितृ तीर्थ से दिया जाने वाला जल।

प्रत्यवनेजन– पिण्ड रखने के बाद दोबारा पिण्डों के ऊपर छोड़े जाने वाला जल।

एकोद्दिष्ट– केवल एक व्यक्ति के लिए श्राद्ध में एक पिण्डदान। इसमें विश्वेदेव पूजन, आवाहन और अग्नौकरण नहीं होता।

अग्नौकरण– विश्वेदेवों तथा पितरों को अन्न परोसने से पहले जल वाले दोने में आहुतियाँ देना।

पदकदान– विश्वेदेवों और पितरों के निमित्त दिया जाने वाला सामान। जैसे आसन, पात्र, वस्त्र, जनेऊ, ताम्बूल, धातुमय पवित्री, दक्षिणादि।

देवतीर्थ– सीधे हाथ की अंगुलियों पर से वस्तु दान करना।

पितृतीर्थ– अपने दाएँ हाथ के अँगूठे व तर्जनी के बीच से वस्तु आदि का दान करना।

निवीती– जनेऊ को गले में माला की तरह पहनना।

हव्य– विश्वेदेवादिकों के लिए दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

कव्य– पितरों के निमित्त दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

तर्पण– देवता, ऋषियों व पितरों को जल देना।

आम-अन्न– कच्चा अनाज दालें आदि।

पवित्रक– कुशा का गाँठयुक्त कुशपत्र।

पवित्री– कुशा निर्मित अँगूठी।

मोटक– पितृकार्य में बंटा हुआ कुशा पत्र।

नीवी बन्धन– श्राद्ध कर्ता द्वारा रक्षा के लिए कुश तिल या सफेद सरसों से अपनी दाईं कटि में पुड़िया ठूँसना।

विकिरदान– जिनकी जलने से मृत्यु या जिनका दाह संस्कार न हुआ हो उनके लिए अन्न दान।

कुशवटु– पार्वण या चौबरसी श्राद्ध में पितृ ब्राह्मणों के प्रतिनिधि रूप में कुशत्रय के आगे गाँठ लगा कर रखना।

दोना– पलाश आदि पत्तों से बना पत्र पुटक।

अर्घपात्र– दोने में पवित्री, जल, जौ या तिल डाल कर तैयार किया दोना।

मैंने शास्त्र नियमों को ध्यान में रख कर 'चातुर्वार्षिक श्राद्ध विधान' को प्रस्तुत किया है। कहीं कोई त्रुटि आ रही हो तो विचार-विमर्श के उपरान्त सुधार किया जा सकता है। विद्वद्जन इसे पढ़कर मुझे प्रोत्साहित करेंगे। सरलता के लिए शब्दों को सन्धि से अलग किया गया है।

अथ चातुर्वार्षिक श्राद्ध विधिः

ब्राह्मण निमन्त्रण

श्राद्ध के एक दिन पूर्व रात्रि में या श्राद्ध के दिन सम्मान पूर्वक तेरह ब्राह्मणों का निमन्त्रण करना चाहिए। श्राद्ध कर्ता शुद्ध भूमि पर श्राद्ध सामग्री रख कर आत्म पूजा करके प्रतिज्ञा संकल्प करे।

आत्मपूजा– **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥** कुशा निर्मित मोटक से आत्म सिञ्चन करें।

पवित्र धारण– **"ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥"**

दोनों अनामिकाओं में कुश पवित्र धारण करें।

आचमन– **"ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः"** तीन बार जल पियें। **"ॐ गोविन्दाय नमः"** हाथ धो लें। जल से तिलक करें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

पृथिवीपूजा– **ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।** जल छोड़ें।

ॐ पृथिव्यै आधारशक्त्यै पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं समर्ययामि। गन्धअक्षत, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्यं समर्पयामि।

प्रार्थना– **ॐ पृथ्वि त्वयाधृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥**

कर्मपात्र-अभिमन्त्रण– अक्षतपुंज पर कर्मपात्र रखकर उसमें गंगाजल डालें।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इस जल से सभी वस्तुओं पर सिञ्चन करें।

अंग न्यास– **ॐ मनो वाक् प्राण चक्षुः श्रोत्र नाभि हृदय कण्ठ शिरः शिखा बाहुभ्यां यशो बलम्।**

गायत्री मन्त्र से शिखा बान्ध लें। रात्रि में चन्द्र को अर्घ्य दें, दिन में सूर्य को।

ॐ दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्॥
ॐ चन्द्रमसे अर्घ्यं समर्पयामि नमः॥

दीप अर्घ्य– **ॐ सुप्रकाश महादीप सर्वतस्तिमिरापह। प्रसीद मम गोविन्द दीपार्घः प्रतिगृह्यताम्॥ दीपाय अर्घ्यं समर्पयामि नमः।**

धूप अर्घ्य– **ॐ वनस्पति रसोद्भूत गन्धाढ्य सुमनोहर। आघ्रेय सर्वदेवानां धूपार्घः प्रतिगृह्यताम्॥ धूपाय अर्घ्यं समर्पयामि नमः॥**

दिग्बन्धन सफेद सरसों बाएँ हाथ में रखकर दाएँ हाथ से ढक कर मन्त्र पढ़ें :-

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये चात्र विघ्न कर्तार स्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥
ॐ प्राच्यै नमः, ॐ अवाच्यै नमः,
ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ उदीच्यै नमः,
ॐ अन्तरिक्षाय नमः, ॐ श्राद्ध भूम्यै नमः॥

सरसों को पूर्व आदि दिशाओं की ओर फेंकता जाए।

संकल्प

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः अद्य ..... वासरे (पूर्ण संकल्प उच्चारण करके) अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः श्वः करिष्यमाण विश्वेदेव पूजन पूर्वकं शुद्ध चातुवार्षिक त्रिपौरुष श्राद्ध निमित्तिक भूरितम भोजनार्थं ..... संख्या ब्राह्मण निमन्त्रणं करिष्ये।

चौबरसी श्राद्ध में तेरह से अधिक पदक भी हो सकते हैं।

शालग्राम या लक्ष्मीनारायण की मूर्ति का स्नानादि करके पूजा करे। जिन ब्राह्मणों को निमन्त्रित करना है वे उपस्थित हों। नहीं तो पत्रपुटक (दोने) में कुशारूप ब्राह्मण समझ कर निमन्त्रण करे।

सव्य

पहले चार ब्राह्मणों को विश्वेदेव के रूप में निमन्त्रण करे। जल, जौ मोटक लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः श्वः करिष्यमाण विश्वेदेव पूजन पूर्वकं शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रि पौरुष श्राद्ध निमित्तिक विश्वेदेव स्थाने भूरितम भोजनार्थं एभिः गन्ध अक्षत पुष्प नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणादिभिः अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं त्वां निमन्त्रये। जल ब्राह्मण के हाथ में दे। **"निमन्त्रितोऽस्मि"** ऐसा ब्राह्मण कहे। श्राद्ध के नियम सुना कर प्रार्थना करे।

ॐ अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः।
भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्ध कर्मणि॥
सर्वायास विनिर्मुक्तैः काम क्रोध विवर्जितैः।
भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्ध कर्मणि॥

इसी प्रकार दूसरे, तीरे व चौथे ब्राह्मण को निमन्त्रित करे और उपर्युक्त मन्त्र पढ़े। चौबरसी में चार और पार्वण श्राद्ध में दो विश्वेदेव रखे जाते हैं। एकोदिष्ट व चौबरसी श्राद्ध में विश्वेदेव नहीं रखते।

अपसव्य

पिता, पितामह एवं प्रपितामह के स्थानों पर भोजनार्थ ब्राह्मणों तथा दोहते को निमन्त्रण करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ..... अमुक वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः श्वः करिष्यमाण शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे पितुः प्रथम स्थाने भूरितम भोजनार्थं एभिः गन्ध, अक्षत पुष्प नैवेद्य तांबूल दक्षिणादिभिः अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं निमन्त्रये।

इसी प्रकार पिता के दूसरे व तीसरे स्थान पर भोजनार्थ ब्राह्मणों को अलग-अलग निमन्त्रण करे, श्राद्ध नियमों को सुनाए।

ॐ अक्रोधनैः शौचपरैः इत्यादि।

अब पितामह के लिए और प्रपितामह के लिए तीन-तीन ब्राह्मणों को निमन्त्रण करे। तथा श्राद्ध नियम सुनाएँ।

सव्य

श्राद्ध कर्ता आचमन करके ब्राह्मणों के पाद धोकर मौली तिलक चावल पुष्प से पूजा करें।

ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे।
तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ विप्राणां पाद शोधने॥

निमन्त्रण दक्षिणा संकल्प–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ..... अमुक वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः श्वः करिष्यमाण विश्वेदेवपूजन पूर्वकं शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे त्रयोदश ब्राह्मण निमन्त्रण सांगतार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

प्रार्थना–

ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

टिप्पणी– यदि रात को निमन्त्रण असंभव न हो तो श्राद्ध के दिन ही पहले ब्राह्मण निमन्त्रण कर ले। तब संकल्प बदल कर बोले।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ..... अमुक वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः क्रियमाणे शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे त्रयोदश ब्राह्मणान् भूरितम भोजनार्थं निमन्त्रये॥

॥इति॥

श्राद्ध विधान

गोबर से लिपे श्राद्ध स्थान पर या स्वच्छ फर्श पर श्राद्ध सामग्री लगावें। अपराह्न में श्राद्ध कर्ता स्नान कर सफेद धोती व गमछा धारण कर पूर्व की ओर मुख किए पाचक को पूछें, भोजन तैयार है? भोजन तैयार होने पर ही श्राद्ध आरंभ करना चाहिए।

आत्म पूजा– पहले की तरह मोटक तिल जल आदि लेकर अपने पर जल छिड़कें। **"ॐ अपवित्रः पवित्रो वा"** मन्त्र बोलें।

पवित्र धारण– "ॐ पवित्रो स्थो वैष्णव्यौ" इत्यादि।

"ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः" तीन बार बाचमन करें। **ॐ गोविन्दाय नमः** अपने बाँईं ओर हाथ धो लें। कुशा जल से सामग्री को छींटा दें। **"ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु"** ऐसा बोलें। तब कर्मपात्र स्थापित कर भूमि, सूर्य, दीप और धूप को अर्घ देकर सफेद सरसों, तिल, कुशा से दिग्बन्धन करें।

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तेम।
इदं श्राद्धं हृषिकेश! रक्षतां सर्वतोदिशः॥

ॐ प्राच्यै नमः, ॐ अवाच्यै नमः, ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ उदीच्यै नमः, ॐ अन्तरिक्षाय नमः, ॐ श्राद्ध भूम्यै नमः

सरसों सभी दिशाओं में फैंकें।

शेष सरसों की पुड़िया बना कर दाँईं ओर धोती में नीवी बन्धन करें अर्थात् ठूँस दें।

मन्त्र बोलें–

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञा संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे, श्री श्वेत वाराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशति तमे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे, भारत वर्षे, भरत खण्डे, जन्बूद्वीपे आर्यावर्तैक देशान्तर गते, बौद्धावतारे भगवतिवैष्णवी शक्तिपीठ क्षेत्रे, ... पावने जनपदे, ... संवत्सरे, ... अयने ..... ऋतौ, ... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं श्री लक्ष्मी नारायण प्रीति पुरस्सरं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः विश्वेदेव पूजन पूर्वकं सपात्रिक शुद्ध चातुर्वाषिक श्राद्धं करिष्ये।

संकल्प का जल छोड़ें।

पञ्चोपचार से लक्ष्मी नारायण या शालग्राम पूजन, प्रार्थना–

ॐ नमो ब्रह्माण्ड रूपाय
लक्ष्मी कान्ताय विष्णवे।
सर्वाधाराय दिव्याय
सर्वशक्तिमते नमः॥
श्राद्ध काले गयां ध्यात्वा
ध्यात्वा देवं गदाधरम्।
मनसा च पितृन् ध्यात्वा
ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

पुरुष सूक्त से लक्ष्मी नारायण का पूजन

अथ नारायणपूजा

अथ ध्यानम्– **ध्येयः सदासवितृमण्डल-मध्यवर्ती**
नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर-कुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्यमय वपुर्धृत-शंख-चक्रः॥

आवाह्नम्– **ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्रपात्।**
सभूमिꣳसर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

कुसुमासनम्– **ॐ पुरुष ऽएवेदꣳसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।**
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यम्– **ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायांश्चपूरुषः।**
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्– ॐ त्रिपादूर्ध्वं ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्– ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पूरुषः।
सजातो ऽअत्य रिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।
ॐ श्रीमन्नारायणाय आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्– ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतंपृषदाज्यम्।
पशूँ स्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चये।
ॐ श्रीमन्नारायणाय स्नानीयं समर्पयामि।

दुग्ध स्नान– ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।
ॐ श्रीमन्नारायणाय पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि।

दधिस्नान– ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत्।
ॐ श्रीमन्नारायणाय दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि।

घृतस्नान– ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य
धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ
वक्षि हव्यम्।। ॐ श्रीमन्नारायणाय घृतस्नानं
समर्पयामि।

शुद्ध जल– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि।

मधुस्नान– ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
ॐ श्रीमन्नारायणाय मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि।

शर्करास्नान– ॐ अपाꣳरसमुद् वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमाहितम्।
अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तम-मुपयाम-
गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय
त्वा जुष्टतमम्।। ॐ श्रीमन्नारायणाय शर्करा स्नानं
समर्पयामि।

शुद्धजल– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि।

पञ्चामृत-स्नानम् – ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।
ॐ श्रीमन्नारायणाय पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्धजल– ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि।

गन्धोदक स्नान– **ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥ ॐ श्रीमन्नारायणाय गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।**

शुद्ध जल– **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्ध वालो मणिवालस्त आश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः। ॐ श्रीमन्नारायणाय शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।**

(सुवर्ण मूर्ति या शालिग्राम को स्वच्छ वस्त्र से साफ करके तुलसी दल सहित सिंहासन पर रखें।)

वस्त्रम्– **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत। ॐ श्रीमन्नारायणाय वस्त्रं समर्पयामि।**

उपवस्त्र– **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथ मा सदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो। ॐ श्रीमन्नारायणाय उपवस्त्रं समर्पयामि।**

आचमन– **ॐ श्रीमन्नारायणाय वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।**

ब्रह्मसूत्रम्– **ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ॐ श्रीमन्नारायणाय यज्ञोपवीतं समर्पयामि।**

आचमन– **ॐ श्रीमन्नारायणाय आचमनीयं समर्पयामि।**

गन्ध– **ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये। ॐ श्रीमन्नारायणाय गन्धं समर्पयामि।**

श्वेत तिल (अक्षत)– **ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥ ॐ श्रीमन्नारायणाय श्वेततिलान् समर्पयामि।**

पुष्प– **ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरी वीरुधः पारयिष्णवः॥ ॐ श्रीमन्नारायणाय पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।**

तुलसीपुष्पाणि–**ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्य कल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादा उच्येते। ॐ श्रीमन्नारायणाय तुलसीदलं समर्पयामि।**

धूप– **ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरूतदस्य यद् वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो अजायत। ॐ श्रीमन्नारायणाय धूपम् आघ्रापयामि।**

दीप– **ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्चमुखादग्निरजायत। ॐ श्रीमन्नारायणाय दीपं दर्शयामि।**

नैवेद्यम्– (तुलसी डाल कर नैवेद्य चढ़ाएँ।)

(१) ॐ प्राणाय स्वाहा (२) ॐ अपानाय स्वाहा (३) ॐ व्यानाय स्वाहा (४) ॐ उदानाय स्वाहा (५) ॐ समानाय स्वाहा। ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्। ॐ श्रीमन्नारायणाय नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। आचमनीयं च समर्पयामि।

ऋतुफल– **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। वृहस्पति प्रसूता स्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॐ श्रीमन्नारायणाय ऋतुफलं समर्पयामि।**

ताम्बूलम्– **ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः। ॐ श्रीमन्नारायणाय ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूलान्ते आचमनीयं समर्पयामि।**

दक्षिणा– **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्।**
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।
ॐ श्रीमन्नारायणाय द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि।

आरती– **ॐ आरात्रि पार्थिवꣳरजः पितुरप्रायि धामभिः।**
दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः।
ॐ श्रीमन्नारायणाय आरार्तिक्यं समर्पयामि।

शंखोदक– **ॐ शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।**
अंगलग्नं मनुष्याणां सर्वंपापं व्यपोहति॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय शंखोदकं समर्पयामि।
(शंखजल शालिग्राम के ऊपर घुमा कर अपने पर छिड़कें। हाथ में फूल लेकर)

पुष्पाञ्जलि– **ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्**
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा– **ॐ सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।**
देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्।
ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय प्रदक्षिणां समर्पयामि।

क्षमाप्रार्थना– **ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।**
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

विष्णो-द्वादशनामस्तवः–

केशवं मार्गशीर्षेषु पौषे नारायणं स्मरेत्।
माधवं माघमासे तु गोविन्दं फाल्गुने जपेत्॥
चैत्रमासे सदाविष्णुं वैशाखे मधुसूदनम्।
ज्येष्ठे त्रिविक्रमं विन्द्यादाषाढ़े वामनं पठेत्॥
श्रावणे श्रीधरं विन्द्याद्धृषीकेशं च भाद्रके॥
आश्विने पद्मनाभं च ऊर्ज्जे दामोदरं जपेत्॥
द्वादशैतानि नामानि ऋष्य शृंगो ऽब्रवीन्मुनिः।
पूजयेन्मासनामानि सर्वान्कामान्समश्नुते॥
आयुष्मन्तं सुतं सूते यशो मेधा समन्वितम्॥
धनवन्तं प्रजावन्तं धार्मिकं सात्विकं शुचिम्॥
अनेन पूजनेन महाविष्णुः प्रीयतां न मम॥

(बाद में चरणामृत ग्रहण व तुलसीदल ग्रहण करना चाहिए। नैवेद्य को प्रसाद के रूप में ग्रहण करें।)

पितृगायत्री का तीन बार जप करें।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

विश्वेदेवों को आसन दान–

श्राद्ध भूमि के पश्चिम में चौकोर चार खाने सूखे आटे से बनावे जैसे :-

□ ← □ ← □ ← □ ← दक्षिण

सव्य में रहकर ही चार पलाश के पत्तों पर तीन-तीन कुशा से निर्मित चार मोटक आसन छोड़ें। या पदकों से चार आसन लेकर संकल्प कर के विश्वेदवों के खानों में क्रमशः दक्षिण से उत्तर की ओर छोड़ें।

जल में जौ डालकर विश्वेदेव संकल्प–

ॐ विष्णुर्विष्णुःर्विष्णुः ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नामशर्मणः पितुः विश्वेदेव पूजन पूर्वकं शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां अमुक नाम्नां वसु रुद्र आदित्य स्वरूपाणां शुद्ध श्राद्ध सम्बन्धिनः पुरुरवाद्र संज्ञकाः विश्वेदेवाः एतानि आसनानि चतुर्धा विभज्य वो नमः।

चार खानों में एक एक कर छोड़ें।

अपसव्य

पितृ-आदि को आसन दान– बायाँ घुटना नवाकर पूर्ववत् तीन-तीन कुशा का मोटक रूप आसन पिता के लिए तीन, पितामह के लिए तीन, प्रपितामह के लिए तीन रखें। जैसे–

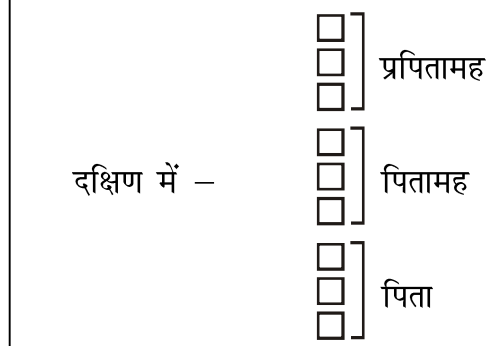

जल तिल मोटक लेकर पितृ, पितामह,

<u>प्रपितामह के लिए आसन संकल्प–</u>

पूर्ववत् संकल्प बोल कर ..... अमुक गोत्राः अमुक नाम शर्माणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे पितृ, पितामह, प्रपितामहाः वसुरुद्र आदित्य स्वरूपा एतानि आसनानि नवधा विभज्य युष्मभ्यं नमः। तीन तीन आसन लगावें।

सव्य

विश्वेदेवों की ओर मुख कर आवाहन पूजन, उनके आगे एक7एक कर चार भोजन पात्र (पत्ते) रखे।

ॐ विश्वान् देवान् आवाहयिष्ये।

ॐ विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमꣳहवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।

ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमꣳहवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यविष्ठ। ये अग्नि जिह्वा उत वा यजत्रा आसाद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्। आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

भोजन पात्रों पर जौ छोड़ें।

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

अपसव्य

पितरों के आसन के आगे तीन-तीन भोजन पात्र रख कर बायाँ घुटना नवा कर आवाहन पूजन करें।

पितॄन् आवाहयिष्ये।

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

भोजन पात्र पर तिल छोड़ें।

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

सव्य

अर्घपात्र– विश्वेदेवों के भोजन पात्र के आगे एक-एक दोना रखें। उनमें कुश पवित्रक रखें।

"ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ" इत्यादि मन्त्र पढ़ें।

पवित्रकों पर जल छोड़ें।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः।

चारों दोनों में जौ डालें।

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

फिर चुपके से उन में गन्ध, अक्षत, पुष्प छोड़ें।

विश्वेदेवों के पहले अर्घपात्र को बाएँ हाथ में रखकर उसमें पवित्रक निकाल कर भोजन पात्र कर रखें। थोड़ा जल पवित्रक पर **"ॐ नमो नारायणाय"** कह कर छिड़कें।

अर्घपात्र को दाएँ हाथसे सीधा ढक कर मन्त्रित करें।

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवु र्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदान संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अध ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राणां पितृपितामह प्रपितामहानां शर्मणां वसु रुद्र आदित्य स्वरूपाणां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमः।

अर्घ जल चारों पवित्रकों पर छोड़ें। भोजन पात्रों से पवित्रकों को उठाकर क्रमशः अर्घपात्रों में दोबारा डाल दें। उन अर्घपात्रों को चारों विश्वेदेवों के दाँईं ओर सीधे रखें।

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि।

अर्घपात्र– 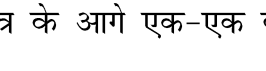

अब विश्वेदेवों को स्नान, आचमन, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, जौ, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल, दक्षिणा चढ़ावें।

<u>विश्वेदेवों को चार पदकदान संकल्प–</u>

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां शर्मणां वसु रुद्र-आदित्य स्वरूपाणां श्राद्ध सम्बन्धिनः पुरुरवार्द्र संज्ञका विश्वेदेवा एतानि गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप यज्ञोपवीत ताम्बूल कमण्डलु करपात्र अंगुलीयक पादुकासन सदक्षिणा वस्त्र धौतोत्तरीयानि चतुर्धा विभज्य वो नमः।

विश्वेदेवों के आसनों पर रखें।

अपसव्य

पितरों के भोजन पात्रों के आगे एक-एक दोना रख कर उनमें पवित्रक रखें।

"ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ" इत्यादि मन्त्र पढ़ें। पवित्रकों पर जल छोड़ें।

ॐ शंनो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं योरभि स्त्रवन्तु नः।

<u>नौ दोनों में तिल डालें–</u>

ॐ तिलोऽसि सोम दैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

मौन होकर उनमें गन्ध, अक्षत, पुष्प छोड़ें। पिता के अर्घ पात्रको बाएँ हाथ पर रख कर पवित्रक भोजन पात्र पर रखें। दोने से थोड़ा जल **"ॐ नमो नारायणाय"** कह कर पवित्रक पर छिड़के। अर्घपात्र को उल्टे दाएँ हाथ से ढक कर मन्त्रित करें।

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवु र्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः। हिरण्य वर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

शेष दोनों को भी इसी प्रकार मन्त्रित कर के संकल्प करें। जल तिल मोटक लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः शर्माणः वसु रुद्र आदित्य स्वरूपा एषोऽर्घः युष्मभ्यं नमः।

क्रमशः पिता पितामह प्रपितामह के पवित्रकों पर छोड़ें।

अब प्रपितामह के दोनें का जल व पवित्रक उठा कर पितामह के दोनें में उड़ेल दे, पितामह के जल व पवित्रकों को पिता के दोनें में पवित्रक सहित इकट्ठा करके ऊपर पिता उसके नीचे पितामह, उसके नीचे प्रपितामह का अर्घपात्र रखकर पिता के बाएँ स्थान में उल्टा करके **"पितृभ्यः स्थानमसि"** कह कर रख दें।

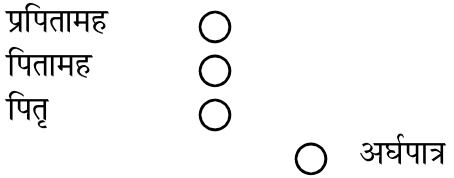

पिता आदि तीनों को स्नान, आचमन, वस्त्र यज्ञोपवत, गन्ध, अक्षत, तिल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, फल, दक्षिणा चढ़ावें। पितरों के लिए नौ पदकदान संकल्प– जल तिल मोटक लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य.....वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः शर्माणः वसु रुद्र आदित्य स्वरूपा एतानि गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप यज्ञोपवीत ताम्बूल कमण्डलु करपात्र अंगुलीयक पादुकासन सदक्षिणा वस्त्र धौतोत्तरीयानि नवधा विभज्य युष्मभ्यं नमः।

पितरों के आसनों पर क्रमशः रखें।

सव्य

चारों विश्वेदेवों के चारों ओर दाएँ ओर से जल से मण्डल करें–

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

पूर्व की ओर मुख कर एक दोने में जल भर कर पक्वान्न में घी मिला कर दो आहुतियाँ दोने में डालें–

(१) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा।

(२) ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

अन्न परिवेषण– विश्वेदेवों के भोजन पात्रों (पत्तलों) के आगे दो-दो दोने लगाएँ। एक में जल दूसरे में घी रखें। भोजन पात्रों से जौ आदि हटा कर पत्तल साफ कर लें। जो भी अन्न आदि तैयार है उसे पत्तलों पर परोसें। देशाचार से सात पक्वान्न परोसने का विधान है। परोसे हुए अन्न पर मधु लगावें।

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वी र्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु

नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पति र्मधुमाँ२अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन– बायें हाथ पर दायाँ हाथ सीधा रख कर विश्वेदेवों के भोजन पात्रों का स्पर्श करें।

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा। ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम्॥

बाएँ हाथ से अन्न स्पर्श करते हुए दाएँ हाथ के अँगूठे से **"इदमन्नम्"** अन्न में **"इमा आपः"** जल में **"इदमाज्यम्"** घी में स्पर्श करें। **"इदं हव्यम्"** फिर अन्न को छुएं।

विश्वेदेव भोजन पात्रों के चारों ओर जौ छोड़ें।

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

भोजन दान संकल्प–

ॐ विष्णु ३ अद्य.....वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां शर्मणां वसु रुद्र आदित्य स्वरूपाणां श्राद्ध सम्बन्धिनः पुरु रवाद्र संज्ञका विश्वेदेवा एतद्-अन्नं सोपकरणं परिविष्टं वो नमः।

संकल्प जल छोड़ें।

अपसव्य

दक्षिण की ओर मुख किए बायाँ घुटना नवा कर पितृ, पितामह और प्रपितामह के आसनों के बाँईं ओर से जल से मण्डल करें।

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

एक दोनें में पानी डाल कर पक्वान्न को घी से भीगो कर एक आहुति डालें।

"ॐ इदम् अन्नम् एतद् भू स्वामि पितृभ्यो नमः।"

अन्न परिवेषण– पितरों के भोजन पात्रों के आगे दो-दो दोने लगाएँ। एक में जल दूसरें में घी डालें। भोजन पात्रों से तिल, पुष्प आदि साफ कर लें। सिद्ध अन्न को पत्तलों पर परोसें। परोसे हुए अन्न पर मधु लगावें।

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः। माध्वी र्गावो भवन्तु नः। ॐ मधु मधु मधु।

पात्रालम्भन– उल्टे बाएँ हाथ पर उल्टा दायाँ हाथ रख कर पितरों के भोजन पात्रों को छू कर मन्त्र पढ़ें।

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य
मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।
ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

बाएँ हाथ से अन्न स्पर्श करते हुए दाएँ हाथ के अँगूठे से **"इदमन्नम्"** अन्न में **"इमा आपः"** जल में **"इदमाज्यम्"** घी में फिर **"इदं कव्यम्"** अन्न को छुएँ।

पितरों के भेजन पात्रों के चारों ओर तिल छोड़ें।

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

भोजन संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्रा अमुक नाम शर्माणः पितृ पितामह प्रपितामहा वसु रुद्र आदित्य स्वरूपा एतद् अन्नं सोपकरणं परिविष्टं नवधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा।

जल छोड़ें और प्रार्थना करें।

ॐ अन्न हीनं क्रिया हीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।

तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु हरेर्नामानु कीर्तनात्॥

सव्य

पितृगायत्री पाठ– **"ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च"।** इत्यादि अपने पाँवों के नीचे तीन कुशा रख कर वेद मन्त्रों का पाठ करना चाहिए।

"ॐ मधुवाता ऋतायते" इत्यादि मधुपाठ

"ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः" इत्यादि पुरुषसूक्त पाठ

"ॐ उदीरतामवर उत्परास" इत्यादि पितृसूक्त पाठ

"ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं" इत्यादि रक्षोघ्न सूक्त पाठ।

इसके अतिरिक्त पुराण मन्त्रों का पाठ भी करना चाहिए। जिन ब्राह्मणों को निमन्त्रित किया हुआ है उन्हें पदक स्थानों पर बैठा कर प्रीति पूर्वक भोजन कराएँ। भोजन के उपरान्त वे अपने-अपने पदक ले लें।

द्वितीय भाग पिण्डदान

अपसव्य

विकिरदान– दक्षिण मुख होकर नैऋत्य कोण में जल का छींटा देकर दक्षिणाग्र तीन कुशा रखें। पिण्डों के लिए बनाए भात से थोड़ा भात तिल जल लेकर कुशा पर छोड़ें।

असंस्कृत प्रमीतानां त्यागिनां कुल भागिनाम्।
उच्छिष्ट भागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥
अग्नि दग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौदत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

पवित्रक व मोटक वहीं छोड़ दें।

सव्य

पवित्र होकर नये पवित्रक धारण कर हरि स्मरण करें।

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥
सप्त व्याघा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ।
चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेद पारगाः।
प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

अपसव्य

पिण्डवेदी– दक्षिण मुख करके रेत की दक्षिण की ओर लम्बी तीन पिण्डों के लिए वेदी बनाएँ।

रेखाकरण– दाएँ हाथ से तीन कुशा की जड़ पकड़ कर बाएँ हाथ की तर्जनी और अँगूठे से उसी कुशा का अग्रभाग पकड़ कर उत्तर से दक्षिण की ओर पिण्ड वेदी पर तीन रेखाएँ खींचें।

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

कुशा को ईशान कोण में फैंक दें।

उल्मुक स्थापन– जलते अंगारे को पिण्ड वेदी के बाईं ओर घुमा कर दक्षिण में रख दें।

ॐ ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्य-ग्निष्टाँ-ल्लोकात् प्रणु दात्यस्मात्॥

तब पिण्डवेदी की रेखाओं पर दक्षिणाग्र तीन कुशा बिछाएँ।

अवनेजन पात्र– 1. पितृ, पितामह और प्रपितामह के तीन दोने पिण्डवेदी के पश्चिम में लगाएँ। उनमें जल, गन्ध, तिल और पुष्प डालें। हाथ में पितृदोना मोटक लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र, अस्मत् पितः वसुस्वरूप श्राद्ध पिण्डस्थाने अत्र-अवनेनिक्ष्व ते नमः।

वेदी पर पहले स्थान पर जल गिरा दें।

2. पितामह का दोना लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्र अस्मत् पितामह रुद्रस्वरूप श्राद्धपिण्डस्थाने अत्र अवने निक्ष्व ते नमः। पिता के स्थान से आगे जल गिरा दे।

3. प्रपितामह का दोना लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य वासरे अमुक गोत्र अस्मत् प्रपितामह आदित्य स्वरूप श्राद्ध पिण्ड स्थाने अत्र-अवनेनिक्ष्व ते नमः।

पितामह के स्थान से आगे जल गिरा दें। तीनों दोनों को क्रमशः पूर्व स्थान पर रख दें।

पिण्डनिर्माण– (1) भात में व्यंजन, खीर या दूध, शहद, तिल, घी मिला कर चार भाग कर लें। तीन भागों से तीन पिण्ड बना कर क्रमशः थाली में रख दें। चौथे भाग को बलि देने हेतु रख लें। अब बायाँ घुटना नवा कर मोटक तिल जल और प्रथम पिण्ड ले कर संकल्प करें।

ॐ विष्णु ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मत् पितः ..... वसुस्वरूप एष पिण्डस्ते स्वधा।

पितृ पिण्ड को पितृतीर्थ से पहले अवनेजन स्थान पर रखें।

(2) पितामह के लिए दूसरा पिण्ड लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वाषिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मत् पितामह.....रुद्रस्वरूप एष पिण्डस्ते स्वधा।

पिता के पिण्ड के आगे रखें।

(3) प्रपितामह के लिए तीसरा पिण्ड लेकर–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मत् प्रपितामह आदित्य स्वरूप एष पिण्डस्ते स्वधा।

लेपभाग– बचे अन्न से थोड़ा-थोड़ा लेकर तीनों पिण्डों के साथ छोड़े।

ॐ लेप भाग भुजः पितरस्तृप्यन्ताम्।

पिण्डों के नीचे बिछाई कुशा के मूल भाग में हाथ पोंछ लें।

सव्य

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः
भगवान् का स्मरण करें।

अपसव्य

दक्षिण मुख किए–

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथा भाग मावृषायध्वम्।

बाईं ओर घूमकर प्रसन्नता से श्वास रोक कर फिर दाईं ओर घूम कर पितरों का ध्यान कर श्वास छोड़ें, मन्त्र पढ़ें।

ॐ अमीमदन्त पितरो यथा भागमावृषायध्वम्।

प्रत्यवनेजन– (1) दोबारा पिता आदि के अवनेजन पात्रों में जल, तिल, पुष्प डाल कर संकल्प करें।

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मत् पितः ..... वसुस्वरूप अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

जल को पहले पिता के पिण्ड पर पितृ तीर्थ से गिराएँ।

(2) दूसरा अवनेजन पात्र लेकर जल, तिल, पुष्प डाल कर संकल्प करें–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मत् पितामह ..... रुद्रस्वरूप अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

जल को पितामह के पिण्ड पर गिराएँ।

(3) तीसरा अवनेजन पात्र लेकर जल, तिल, पुष्प डाल कर संकल्प करें–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्र अस्मत् प्रपितामह ..... आदित्य स्वरूप अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

जल को प्रपितामह के पिण्ड पर गिराएँ।

नीवी विसर्जन– कमर से सरसों की पुड़िया निकाल कर ईशान कोण में फैंक दें।

सव्य

आचमन करके भगवान् का स्मरण करें।

अपसव्य

सूत्रदान– सूत्र लेकर मन्त्र पढ़ें।

ॐ नमो वः पितरो रसाय, नमो वः पितरः शोषाय, नमो वः पितरो जीवाय, नमो वः पितरः स्वधायै, नमो वः पितरो घोराय, नमो वः पितरो मन्यवे, नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्म।

"एतद् वः पितरो वास आधत्त" कह कर पिण्डों पर अलग-अलग सूत्र चढ़ाएँ।

सूत्रदान संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्रा अमुक नाम शर्माणः अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहा वसु रुद्र

आदित्य स्वरूपाः पिण्डोपरि एतद् वासः युष्मभ्यं स्वधा। जल छोड़ दें।

पिण्डपूजन– पिण्डों पर आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, तिलक, तिल, चावल, पुष्पमाला, धूप, दीप देकर हाथ धो लें। फिर नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा चढ़ाएँ।

पूजन संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्रा अमुक नाम शर्माणः अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहा वसु रुद्र आदित्य स्वरूपा एतत् पूजनं युष्मभ्यं स्वधा।

जल छोड़ दें।

सव्य

विश्वेदेवार्थ अक्षय्योदक दान– विश्वेदेवों के भोजन पात्रों (पत्तलों) पर **"ॐ शिवा आपः सन्तु"** जल छिड़कें **"ॐ सौमनस्यमस्तु"** पुष्प छोड़ें **"ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु"** जौ छोड़ें।

अक्षय्योदक दान संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्राणा मस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुक नाम्नां वसु रुद्र आदित्य स्वरूपाणां चातुर्वार्षिक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा दत्तैतद्-अन्नपानादिकं-अक्षय्यमस्तु।

देव तीर्थ से भोजन पात्रों पर जल छोड़ दें।

अपसव्य

पितरों को अक्षय्योदक दान– दक्षिण मुख करके पिता, पितामह, प्रपितामह के भोजन पात्रों पर पितृतीर्थ से–

"ॐ शिवा आपः सन्तु" जल छिड़कें

"ॐ सौमनस्यमस्तु" पुष्प छोड़ें

"ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु" अक्षत छोड़ें।

अक्षय्योदक दान संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुकगोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्रा अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहा अमुक नामानः वसु रुद्र आदित्य स्वरूपा दत्तैतद्-अन्नपानादिकं-अक्षय्यमस्तु।

पितृ तीर्थ से पिता आदि भोजन पात्रों पर जल छोड़ें।

सव्य

पिण्डों पर जलधारा– दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए पश्चिम से पूर्व की ओर पिण्डों पर जल धारा दें।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

पूर्व की ओर मुख कर के हाथ जोड़ कर आशीर्वाद की प्रार्थना करें :-

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां, दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद्, बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेद्, अतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु, मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मण वाक्य– **"सन्त्वेताः सत्या आशिषः।"**

अपसव्य

पिण्डों पर दूध या जलधारा– पिण्डों पर पवित्रक और तीन कुशा दक्षिणाग्र रख कर जल धारा दें।

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पिण्डों का सूंघना– पिण्डों को क्रमशः उठा कर सूंघ कर किसी बर्तन में डाल कर जल प्रवाहित करें या गाय को खिला दें। पिण्डों के नीचे रखी कुशा तथा उल्मुक (जला अंगारा) अग्नि में डाल दें।

सव्य

चारों विश्वेदेवों के अर्घपात्रों को हिला दें।

अपसव्य

पिता आदि के रखे अर्घपात्रों को सीधा कर दें।

सव्य

विश्वेदेव दक्षिणा संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुकगोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्रा अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुक नाम्नां शर्मणां वसुरुद्र आदित्य स्वरूपाणां श्राद्ध सम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं इमां हिरण्य दक्षिणां अमुक गोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

पितृ आदि दक्षिणा संकल्प–

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुकगोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे अमुक गोत्रा अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहानां वसु रुद्र आदित्य स्वरूपाणां कृतैतद्-श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं द्रव्य दक्षिणां-अमुक गोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

सर्वाहार संकल्प– एक थाली में पक्वान्न परोस कर श्राद्ध प्रतिष्ठार्थ संकल्प करें।

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुकगोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः शुद्ध चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष श्राद्धे श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं पित्रादि अक्षय्य प्रीत्यर्थं सिद्धान्नं सफलं सदक्षिणकं सोपकरणं अमुक गोत्राय ब्राह्मणाय दातुं-उत्सृजे।

अपसव्य

पितरों का विसर्जन– तिलों द्वारा करें–

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

सव्य

हाथ में जौ लेकर **"विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्"** कह कर जौ छोड़ें। पितृ गायत्री जपे **"ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च"** इत्यादि।

अपसव्य

रक्षा दीप को शान्त कर हाथ पैर धो लें।

पंच बलि प्रदान–

(१) गो बलि पत्ते पर– सव्य होकर एक पूड़ी खीर या दही से भिगो कर दें।

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्य राशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गाव स्त्रैलोक्यमातरः॥
इदं गोभ्यो न मम।

(२) श्वान बलि पत्ते पर– जनेऊ को मालाकार कर के, पूड़ी के दो भाग कर–

द्वौ श्वानौ श्याम शबलौ वैवस्वत कुलोद् भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्याता मेतावहिंसकौ॥
इदं श्वभ्यां न मम।

(३) काक बलि भूमि पर– अपसव्य होकर, पूड़ी के चार भाग करके–

ऐन्द्र वारुण वायव्या याम्या नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्॥
इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

(४) देवादि बलि पत्ते पर– सव्य होकर भात लेकर–

देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्य संघाः।
प्रेताः पिशाचा स्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

(५) पिपीलिकादि बलि पत्ते पर– सव्य होकर भात लेकर–

पिपीलिकाः कीट पतंगकाद्या बुभुक्षिताः कर्म निबन्ध बद्धाः।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

सव्य रह कर ही कर्म को प्रभु अर्पण करें।

अनेन कृतेन चातुर्वार्षिक श्राद्धेन पितृरूपी जनार्दनः प्रीयताम् न मम। जल छोड़ दें।

भगवत् स्मरण

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
ॐ विष्णवे नमः।

॥ इति ॥

चातुर्वार्षिक श्राद्ध में पितरों के निमित्त

शय्यादान

शय्या को पूर्व की ओर सिरहाना कर के रखें। बिस्तर बिछा कर शय्या पर वस्त्र युगल, शृंगार सामान, भूषण, फल, कच्चा अनाज, पक्कान्न मिठाई, सर्वधातु बर्तन, इक्षुदण्ड, व्यंजन, छाता, बूट, चप्पलें, निद्रा कलश आदि से सजायें। लक्ष्मी नारायण की धातुमय प्रतिमा रखकर पूजन करें।

श्राद्ध कर्ता शय्या के दाईं ओर बैठ कर आत्मपूजा, पृथ्वी, सूर्य, दीप, धूप का पूजन कर प्रतिज्ञा संकल्प करें।

शय्यादान प्रतिज्ञा संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः विश्वेदेव सहित चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे सकल दुरित क्षयार्थं षष्टिसहस्त्र वर्षं यावत् स्वर्लोक वास तदुत्तरं श्री विष्णु लोक

प्राप्ति कामनया चातुर्वार्षिक श्राद्ध सांगता सिद्धयर्थं सोपकरणं शय्यादानं करिष्ये।

ब्राह्मण वरण

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः विश्वेदेव सहित चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धे एभिः गन्धाक्षत पुष्प ताम्बूल वस्त्र दक्षिणाभिः अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं शय्यादान प्रतिगृहीतृत्वेन त्वां वृणे।

ब्राह्मण के हाथ में जल छोड़ कर कंकन बान्धें, तिलक आदि से पूजा करें।

"वृतोऽस्मि" ब्राह्मण कहें।

शय्या के दाईं ओर लक्ष्मी नारायण प्रतिमा की पूजा कर **"ॐ शान्ताकारं"** मन्त्र से प्रार्थना करें।

शय्यापूजा

"ॐ सांग शय्यायै नमः, ॐ प्रामाण्यै देव्यै नमः।" चारों चरणों को जल से सिंचन करें गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप देकर प्रार्थना करें।

ॐ यथा न कृष्ण शयनं शून्यं सागर जातया।
शय्या ममाप्य शून्यास्तु भवेज्जन्मनि जन्मनि॥
यथा न शून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च।
शय्या ममाप्य शून्यास्तु भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

शय्यादान संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक गोत्रस्य अमुक नाम शर्मणः पितुः विश्वेदेव सहित चातुर्वार्षिक त्रिपौरुष शुद्ध श्राद्धांगी भूतां इमां शय्यां नीशारा तूलिको पधान-वस्त्रयुग्मऊर्ण कम्बल क्षौम कार्पासवसनावृतां, सुवर्ण भूषण-सौभाग्य-उपकरणालंकृतां, छत्र व्यंजन पादुका-उपानह-अन्वितां, भक्ष्यभोज्य लेह्य चोष्यपेय उपेतां, मिष्ठान्न-पक्वान्न आदिसंयुतां, गोधूमचूर्ण-तण्डुल-यव-माष-चणक-कुलित्थ-मसूर-मुद्ग-आमान्न भृतां, ऋतुफल-शाकादि युतां, रीतिमय-कांस्यमय-लोहमय वर्तनैः पुरस्कृतां, निद्रा कलश-आस्तरण-इक्षुदण्डोपचितां, प्रजापतिदैवत्यां खट्वांगिरो दैवत्यां समर्चित लक्ष्मीनारायण प्रतिमोपेतां सोपस्करां श्रुति स्मृति पुराणोक्त अस्मत् पितुः अक्षय स्वर्ग उपभोग फल प्राप्तये अमुक गोत्राय अमुक नाम शर्मणे भूदेवाय तुभ्यं सम्प्रददे।

ब्राह्मण के हाथ में जल छोड़ें।

"स्वस्ति" ऐसा ब्राह्मण कहें।

फिर शय्यादान प्रतिष्ठा द्रव्य संकल्प करके ब्राह्मण को शय्या पर बैठाकर चार प्रदक्षिणा करें। दोबारा शय्या की प्रार्थना करें।

श्राद्ध निमित्त गोदान

गाय को बन्धन रहित पूर्व की ओर मुख करा के उसके उत्तर की ओर बछड़ा रख कर गाय के लिए चारा रख दें।

श्राद्ध कर्ता पूर्व की ओर मुख करके ब्राह्मण वरण करे।

ब्राह्मण वरण संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं। प्रतिज्ञा संकल्पोच्चारित फल प्राप्त्यर्थं एभिः गन्धाक्षत पुष्प वस्त्रदक्षिणादिभिः अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं गोदान प्रति गृहीतारं त्वां वृणे। जल ब्राह्मण के हाथ में दे दें।

"वृतोऽस्मि" ऐसा ब्राह्मण कहे।

गाय को जल से प्रोक्षण करें–

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳसूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवी मभितो मयूखैः स्वाहा।

चावलों से गाय के अंगों में देवों का आवाहन–

दोनों सींगों के मूल में– **ॐ ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः।**

सींगों के अग्रभाग में– **ॐ सर्व तीर्थेभ्यो नमः।**

सिर के बीच– **ॐ शिवाय नमः।**

ललाट में– **ॐ गौर्यै नमः।**

मुख में– **ॐ राहवे नमः।**

नाक में– **ॐ षण्मुखाय नमः।**

नासा पुट में– **ॐ कम्बलाश्वतराभ्यां नमः।**

कानों में– **ॐ अश्विभ्यां नमः।**

नेत्रों में– **ॐ शशि भास्कराभ्यां नमः।**

दान्तों में– **ॐ सर्ववायवे नमः।**

जीभ में– **ॐ वरुणाय नमः।**

हुंकार में– **ॐ सरस्वत्यै नमः।**

दोनों गालों में– **ॐ पक्षमासाभ्यां नमः।**

दोनों होठों में– **ॐ सन्ध्याद्वयाय नमः।**

गले में– **ॐ इन्द्राय नमः।**

गल कम्बल में– **ॐ रक्षो गणेभ्यो नमः।**

हृदय में– **ॐ साध्येभ्यो नमः।**

कुक्षि में– **ॐ रक्षोभ्यो नमः।**

जंघाओं में– **ॐ धर्माय नमः।**

पाँवों में– **ॐ अर्यम्णे नमः।**

खुरों में– **ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः।**

खुरों के अग्रभाग में– **ॐ पन्नगेभ्यो नमः।**

खुरों के मूल में– **ॐ अप्सरेभ्यो नमः।**

पीठ में– **ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः।**

सब जोड़ों में– **ॐ वसुभ्यो नमः।**

कटि भाग में– **ॐ पितृभ्यो नमः।**

पूंछ में– **ॐ सोमाय नमः।**

गुप्त अंगों में– **ॐ सूर्यरश्मिभ्यो नमः।**

गोमूत्र में– **ॐ गंगायै नमः।**

गोबर में– **ॐ यमुनायै नमः।**

दूध में– **ॐ सरस्वत्यै नमः।**

दही में– **ॐ नर्मदायै नमः।**

घी में– **ॐ अग्नये नमः।**

रोमों में– **ॐ त्रयस्त्रिंशत् कोटि देवेभ्यो नमः।**

रोमों के मूल में– **ॐ बाल खिल्येभ्यो नमः।**

पेट में– **ॐ पृथिव्यै नमः।**

थनों में– **ॐ चतुः सागरेभ्यो नमः।**

पूंछ के अग्रभाग में– **ॐ केतवे नमः।**

पूरे शरीर में– **ॐ काम धेनवे नमः।**

अक्षत लेकर गाय के अंगों पर छिड़क कर **"ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य"** मन्त्र से देवों को प्रतिष्ठित करे।

उक्ता ब्रह्मादि देवाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु।

गोपूजन

आवाहित ब्रह्मादि देवता सहितायै सवत्सायै गवे पाद्यं, अर्घं, स्नानं वस्त्रं, गन्धं, अक्षतान्, पुष्पमालां समर्पयामि नमः।

सव्य तर्पण

गाय की पूंछ पकड़ कर हाथ में जल, अक्षत, त्रिकुश लेकर देव तर्पण करें। एक-एक अञ्जलि।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्।

ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ मनवस्तृप्यन्ताम्।

ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्ताम्।

ॐ साध्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्ताम्।

ॐ ग्रहास्तृप्यन्ताम्। ॐ नक्षत्राणि तृप्यन्ताम्।

ॐ योगास्तृप्यन्ताम्। ॐ राशयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ वसुधा तृप्यताम्। ॐ अश्विनौ तृप्येताम्।

ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्।

ॐ मातरस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रास्तृप्यन्ताम्।

ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्।

ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ दानवास्तृप्यन्ताम्।

ॐ योगिनस्तृप्यन्ताम्। ॐ विद्याद्यरास्तृप्यन्ताम्।

ॐ ओषद्ययस्तृप्यन्ताम्। ॐ दिग्गजास्तृप्यन्ताम्।

ॐ देवगणास्तृप्यन्ताम्। ॐ देवपत्न्यस्तृयन्ताम्।

ॐ लोकपालास्तृप्यन्ताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

ॐ जन्तवस्तृप्यन्ताम्। ॐ स्थावरास्तृप्यन्ताम्।

ॐ जंगमास्तृप्यन्ताम्।

सव्य से ही ऋषि तर्पण एक एक अंजलि।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्।

ॐ अंगिरस्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्।

ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्।

ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्।

ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्य मनुष्य तर्पण– उत्तर की ओर मुख कर के जनेऊ और गमछे (परना) को गले में माला की तरह डाल कर, अर्घपात्र में जल, जौ, त्रिकुश लेकर दाएँ हाथ की कनिष्ठिका में फंसा कर वहीं से दो दो अंजलि जल किराएँ।

ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्।

ॐ सनातनस्तृप्यताम्। ॐ सनत्कुमारस्तृप्यताम्।

ॐ कपिलस्तृप्यताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यताम्।

ॐ वोढुस्तृप्यताम्। ॐ पंचशिखस्तृप्यताम्।

अपसव्य

दिव्य पितृ तर्पण– दक्षिण की ओर मुख करके, जनेऊ को दाएँ कन्धे पर गमछे को भी दाएँ कन्धे पर रख कर अर्घपात्र में तिल डालें। त्रिकुश को बीच से मोड़ कर मूल भाग और अग्रभाग तर्जनी अंगुली और दाएँ अंगूठे के बीच रख कर तीन-तीन अंजलि जल दें।

ॐ कव्य वाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं गोपुच्छोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। इसी प्रकार आगे भी बोलते जाएँ।

ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं.....।

ॐ यमस्तृप्यताम् इदं.....।

ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं.....।

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं.....।

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं.....।

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं.....।

चौदह यम तर्पण– तीन-तीन अञ्जलि–

ॐ यमाय नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ यमाय नमः।

ॐ धर्मराजाय नमः (३), ॐ मृत्यवे नमः (३), ॐ अन्तकाय नमः (३), ॐ वैवस्वताय नमः (३), ॐ कालाय नमः (३), ॐ सर्वभूत क्षयाय नमः (३), ॐ औदुम्बराय नमः (३), ॐ दध्नाय नमः (३), ॐ नीलाय नमः (३), ॐ परमेष्ठिने नमः (३), ॐ वृकोदराय नमः (३), ॐ चित्राय नमः (३), ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)।

पित्र्यादि तर्पण– अपसव्य से ही यथावत् स्थिति–

(1) पिता– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत् पिता ..... गोत्रः शर्मा वसुस्वरूपः इदं सतिलं गोपुच्छोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** पितृ तीर्थ से ही तीन तीन अंजलि जल दें।

(2) पितामह– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत् पितामहः ..... गोत्रः शर्मा रुद्र स्वरूपः इदं..... (३)।**

(3) प्रपितामह– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत् प्रपितामहः.....गोत्रः शर्मा आदित्यस्वरूपः इदं..... (३)।**

(4) माता– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मन्माता..... गोत्रा ..... शर्मा गायत्री स्वरूपा इदं सतिलं गोपुच्छोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः तस्यै स्वधा नमः।**

(5) पितामही– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत्पितामही ..... गोत्रा..... शर्मा सावित्रीस्वरूपा इदं ..... (३)**

(6) प्रपितामही– **ॐ विष्णुः३ अद्य.....वासरे अस्मत् प्रपितामही..... गोत्रा..... शर्मा सरस्वती स्वरूपा इदं..... (३)।**

पूर्वोक्त क्रम से नाना के गोत्र उच्चारण कर मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह तथा मातामही, प्रमातामही, वृद्ध प्रमातामही के लिए तीन-तीन अंजलि जल दें।

इसके अतिरिक्त अपने गोत्र में अपने संबंधी का देहान्त हुआ तो उनको भी तीन-तीन अंजलि जल दें। जैसे– पत्नी, पुत्र, भाई, भतीजा आदि अन्य गोत्र का हो तो उनको भी जल देना चाहिए। जैसे– मौसा, मौसी, लड़का, मामा, मामी, सास, ससुर, गुरु, मित्र, प्रियजन आदि। शेष सभी ज्ञात-अज्ञात के लिए जल अंजलि देता जाए।

मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये केचित् पितृपक्षकाः।
गुरु श्वसुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः॥
ये मे कुले लुप्त पिण्डाः पुत्रदार विवर्जिताः।
क्रिया लोप गता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा।
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञात कुले मम।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्॥
वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्वं गताश्च ये।
पशुयोनिगता ये च ये च कीट पतंगकाः।
ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्॥
नरके रौरवे ये च महारौरव संस्थिता।
असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाक स्थिताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्॥
स्वार्थबद्धा मृता ये च शस्त्रघात मृताश्च ये।
ब्रह्महस्तमृता ये च नारी हस्त मृताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्॥
पाशमध्येमृता ये च स्वल्पमृत्युवशंगताः।
सर्वे च मानवा नागाः पशवः पक्षिणस्तथा।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्॥
आब्रह्म स्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृ मानवाः।
तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदक तर्पणात्॥

भीष्म पितामह के लिये तर्पण

वैयाघ्र पद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे॥

सव्य होकर गोप्रार्थना

गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
ब्रह्मादयस्तथा देवा रोहिण्यः पान्तु मां सदा॥

ॐ ह्रीं नमो भगवति ब्रह्म मात र्विष्णु भगिनि रुद्रदैवते सर्वपाप प्रमोचिनि स्वरूपं स्मर इडे इडान्ते हव्ये चान्द्रे धृति मति सरस्वति सुश्रुते एहि-एहि हुं कुरु हुं कुरु सर्वलोक मये एहि-आगच्छागच्छ स्वाहा।

गाय के दक्षिण कान में उक्त मन्त्र का जप करें।

गोदान संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक संकल्पित फल प्राप्त्यर्थं श्रीलक्ष्मी नारायण प्रीतये इमां प्रत्यक्षां सवत्सां गां सुवर्ण शृंगीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठीं घण्टा ग्रैवेयकां मुक्तालांगूलां कांस्योपदोहनीं सितवसन द्वयोपेतां सर्वाभरण भूषितां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां अमुक गोत्राय अमुक नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे। गोपुच्छ जल विप्र के हाथ छोड़ें। **"ॐ स्वस्ति"** ऐसा ब्राह्मण कहे।

गोदान प्रतिष्ठा संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये संकल्पित कार्य सिद्धयर्थं कृतस्य सवत्सगवीदान कर्मणः सांगता सिद्धचर्थं इदं द्रव्यं श्रीमते ..... अमुक गोत्राय अमुक नाम शर्मणे ब्राह्मणाय सम्प्रददे। जल सहित दक्षिणा ब्राह्मण के हाथ दें।

ब्राह्मण वचन

कोऽदात् कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते॥

इसके अतिरिक्त गाय के लिए चारा या द्रव्यदान भी करना चाहिए।

ब्राह्मण से प्रार्थना

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

गोप्रार्थना

ॐ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता।
सुरभि हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवांमध्ये वसाम्यहम्॥

गाय की चार प्रदक्षिणा मन्त्र :-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

गाय की प्रदक्षिणा करके जाती हुई उसके पीछे चलें। श्राद्ध दक्षिणा देकर विसर्जन कर सूर्य अर्घ दें।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः।
॥ इति ॥

कल्याणार्थ गोदान विधिः

यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति या रोगी अपने कल्याण के लिए गोदान करना चाहता है तो किसी शुभ मुहूर्त में गोदान करना चाहिए। उसके लिए गोदान विधि निम्नलिखित है। केवल संकल्प भेद है।

दाता नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र पहन कर कान्धे पर अंगोछा रखकर पूजा स्थल पर बैठें। किसी विद्वान् पण्डित के द्वारा गोदान करवाएं तथा गोदान लेने वाले को भी बैठाएं। सर्वप्रथम श्रीगणपति, मातृका, गुरुदेव, कुलदेव का पूजन करें।

प्रतिज्ञा संकल्प

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः नमः परमात्मने ॐ तत्सद् अद्य ब्रह्मणोद्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टा विंशति तमे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे, जम्बू द्वीपे, भारत वर्षे, भरतखण्डे, बौद्धावतारे..... अमुक क्षेत्रे, ... संवत्सरे, ...अयने..... ऋतौ, ... मासे, ... पक्षे, ... तिथौ, ... वासरे, ... गोत्रः (गोत्रवा) ..... नाम शर्मा/वर्मा/गुप्तः (गुप्ता वा) अहं श्रुतिस्मति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं जन्म जन्मान्तर कृत समस्त पापानां, निवृत्त्यर्थं श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये च सवत्स गोदानं करिष्ये। तत्रादौ श्रीगणेशाम्बिकयोः पूजनं, गोपूजनं ब्राह्मण वरणं, गोपुच्छोदक तर्पणं च करिष्ये।

गाय को बन्धन रहित पूर्व की ओर मुख करा के उसके उत्तर की ओर बछड़ा रख कर गाय के लिए चारा रख दें।

श्राद्ध कर्ता पूर्व की ओर मुख करके ब्राह्मण वरण करे।

ब्राह्मण वरण संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं प्रतिज्ञा संकल्पोच्चारित फल प्राप्त्यर्थं एभिः गन्धाक्षत पुष्प वस्त्रदक्षिणादिभिः अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं गोदान प्रति गृहीतारं त्वां वृणे। जल ब्राह्मण के हाथ में दे दें।

"वृतोऽस्मि" ऐसा ब्राह्मण कहे।

गाय को जल से प्रोक्षण करें–

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳसूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवी मभितो मयूखैः स्वाहा।

चावलों से गाय के अंगों में देवों का आवाहन–

दोनों सींगों के मूल में– **ॐ ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः।**

सींगों के अग्रभाग में– **ॐ सर्व तीर्थेभ्यो नमः।**

सिर के बीच– **ॐ शिवाय नमः।**

ललाट में– **ॐ गौर्यै नमः।**

मुख में– **ॐ राहवे नमः।**

नाक में– **ॐ षण्मुखाय नमः।**

नासा पुट में– **ॐ कम्बलाश्वतराभ्यां नमः।**

कानों में– **ॐ अश्विभ्यां नमः।**

नेत्रों में– **ॐ शशि भास्कराभ्यां नमः।**

दान्तों में– **ॐ सर्ववायवे नमः।**

जीभ में– **ॐ वरुणाय नमः।**

हुंकार में– **ॐ सरस्वत्यै नमः।**
दोनों गालों में– **ॐ पक्षमासाभ्यां नमः।**
दोनों होठों में– **ॐ सन्ध्याद्वयाय नमः।**
गले में– **ॐ इन्द्राय नमः।**
गल कम्बल में– **ॐ रक्षो गणेभ्यो नमः।**
हृदय में– **ॐ साध्येभ्यो नमः।**
कुक्षि में– **ॐ रक्षोभ्यो नमः।**
जंघाओं में– **ॐ धर्माय नमः।**
पाँवों में– **ॐ अर्यम्णे नमः।**
खुरों में– **ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः।**
खुरों के अग्रभाग में– **ॐ पन्नगेभ्यो नमः।**
खुरों के मूल में– **ॐ अप्सरेभ्यो नमः।**
पीठ में– **ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः।**
सब जोड़ों में– **ॐ वसुभ्यो नमः।**
कटि भाग में– **ॐ पितृभ्यो नमः।**
पूंछ में– **ॐ सोमाय नमः।**
गुप्त अंगों में– **ॐ सूर्यरश्मिभ्यो नमः।**
गोमूत्र में– **ॐ गंगायै नमः।**
गोबर में– **ॐ यमुनायै नमः।**
दूध में– **ॐ सरस्वत्यै नमः।**
दही में– **ॐ नर्मदायै नमः।**
घी में– **ॐ अग्नये नमः।**
रोमों में– **ॐ त्रयस्त्रिंशत् कोटि देवेभ्यो नमः।**
रोमों के मूल में– **ॐ बाल खिल्येभ्यो नमः।**
पेट में– **ॐ पृथिव्यै नमः।**
थनों में– **ॐ चतुः सागरेभ्यो नमः।**
पूंछ के अग्रभाग में– **ॐ केतवे नमः।**
पूरे शरीर में– **ॐ काम धेनवे नमः।**

अक्षत लेकर गाय के अंगों पर छिड़क कर **"ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य"** मन्त्र से देवों को प्रतिष्ठित करे।

उक्ता ब्रह्मादि देवाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु।

गोपूजन

आवाहित ब्रह्मादि देवता सहितायै सवत्सायै गवे पाद्यं, अर्घं, स्नानं वस्त्रं, गन्धं, अक्षतान्, पुष्पमालां समर्पयामि नमः।

सव्य तर्पण

गाय की पूंछ पकड़ कर हाथ में जल, अक्षत, त्रिकुश लेकर देव तर्पण करें। एक-एक अञ्जलि।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्।
ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ मनवस्तृप्यन्ताम्।
ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्ताम्।
ॐ साध्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्ताम्।
ॐ ग्रहास्तृप्यन्ताम्। ॐ नक्षत्राणि तृप्यन्ताम्।

ॐ योगास्तृप्यन्ताम्। ॐ राशयस्तृप्यन्ताम्।
ॐ वसुधा तृप्यताम्। ॐ अश्विनौ तृप्येताम्।
ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्।
ॐ मातरस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रास्तृप्यन्ताम्।
ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्।
ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ दानवास्तृप्यन्ताम्।
ॐ योगिनस्तृप्यन्ताम्। ॐ विद्याद्यरास्तृप्यन्ताम्।
ॐ ओषद्ययस्तृप्यन्ताम्। ॐ दिग्गजास्तृप्यन्ताम्।
ॐ देवगणास्तृप्यन्ताम्। ॐ देवपत्न्यस्तृयन्ताम्।
ॐ लोकपालास्तृप्यन्ताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।
ॐ जन्तवस्तृप्यन्ताम्। ॐ स्थावरास्तृप्यन्ताम्।
ॐ जंगमास्तृप्यन्ताम्।

सव्य से ही ऋषि तर्पण एक एक अंजलि।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्।
ॐ अंगिरस्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्।
ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्।
ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्।
ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्य मनुष्य तर्पण– उत्तर की ओर मुख कर के जनेऊ और गमछे (परना) को गले में माला की तरह डाल कर, अर्घपात्र में जल, जौ, त्रिकुश लेकर दाएँ हाथ की कनिष्ठिका में फंसा कर वहीं से दो दो अंजलि जल किराएँ।

ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्।
ॐ सनातनस्तृप्यताम्। ॐ सनत्कुमारस्तृप्यताम्।
ॐ कपिलस्तृप्यताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यताम्।
ॐ वोढुस्तृप्यताम्। ॐ पंचशिखस्तृप्यताम्।

अपसव्य

दिव्य पितृ तर्पण– दक्षिण की ओर मुख करके, जनेऊ को दाएँ कन्धे पर गमछे को भी दाएँ कन्धे पर रख कर अर्घपात्र में तिल डालें। त्रिकुश को बीच से मोड़ कर मूल भाग और अग्रभाग तर्जनी अंगुली और दाएँ अंगूठे के बीच रख कर तीन-तीन अंजलि जल दें।

ॐ कव्य वाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं गोपुच्छोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। इसी प्रकार आगे भी बोलते जाएँ।

ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं.....।

ॐ यमस्तृप्यताम् इदं.....।

ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं.....।

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं.....।

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं.....।

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं.....।

चौदह यम तर्पण– तीन-तीन अञ्जलि–

ॐ यमाय नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ यमाय नमः।

ॐ धर्मराजाय नमः (३), ॐ मृत्यवे नमः (३), ॐ अन्तकाय नमः (३), ॐ वैवस्वताय नमः (३), ॐ कालाय नमः (३), ॐ सर्वभूत क्षयाय नमः (३), ॐ औदुम्बराय नमः (३), ॐ दध्नाय नमः (३), ॐ नीलाय नमः (३), ॐ परमेष्ठिने नमः (३), ॐ वृकोदराय नमः (३), ॐ चित्राय नमः (३), ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)।

पित्र्यादि तर्पण– अपसव्य से ही यथावत् स्थिति–

(1) पिता– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत् पिता ..... गोत्रः शर्मा वसुस्वरूपः इदं सतिलं गोपुच्छोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।**
पितृ तीर्थ से ही तीन तीन अंजलि जल दें।

(2) पितामह– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत् पितामहः..... गोत्रः शर्मा रुद्र स्वरूपः इदं.....(३)।**

(3) प्रपितामह– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत् प्रपितामहः.....गोत्रः शर्मा आदित्यस्वरूपः इदं.....(३)।**

(4) माता– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मन्माता..... गोत्रा ..... शर्मा गायत्री स्वरूपा इदं सतिलं गोपुच्छोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः तस्यै स्वधा नमः।**

(5) पितामही– **ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अस्मत्पितामही .....गोत्रा..... शर्मा सावित्रीस्वरूपा इदं ..... (३)**

(6) प्रपितामही– **ॐ विष्णुः३ अद्य.....वासरे अस्मत् प्रपितामही.....गोत्रा.....शर्मा सरस्वती स्वरूपा इदं.... (३)।**

पूर्वोक्त क्रम से नाना के गोत्र उच्चारण कर मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह तथा मातामही, प्रमातामही, वृद्ध प्रमातामही के लिए तीन-तीन अंजलि जल दें।

इसके अतिरिक्त अपने गोत्र में अपने संबंधी का देहान्त हुआ तो उनको भी तीन-तीन अंजलि जल दें। जैसे– पत्नी, पुत्र, भाई, भतीजा आदि अन्य गोत्र का हो तो उनको भी जल देना चाहिए। जैसे– मौसा, मौसी, लड़का, मामा, मामी, सास, ससुर, गुरु, मित्र, प्रियजन आदि। शेष सभी ज्ञात-अज्ञात के लिए जल अंजलि देता जाए।

मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये केचित् पितृपक्षकाः।
गुरु श्वसुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः।।
ये मे कुले लुप्त पिण्डाः पुत्रदार विवर्जिताः।
क्रिया लोप गता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा।
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञात कुले मम।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्।।
वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्वं गताश्च ये।
पशुयोनिगता ये च ये च कीट पतंगकाः।
ते सर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्।।
नरके रौरवे ये च महारौरव संस्थिता।

असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाक स्थिताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्।।
स्वार्थबद्धा मृता ये च शस्त्रघात मृताश्च ये।
ब्रह्महस्तमृता ये च नारी हस्त मृताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्।।
पाशमध्येमृता ये च स्वल्पमृत्युवशंगताः।
सर्वे च मानवा नागाः पशवः पक्षिणस्तथा।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणात्।।
आब्रह्म स्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृ मानवाः।
तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदक तर्पणात्।।

भीष्म पितामह के लिये तर्पण

वैयाघ्र पद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे।।

सव्य होकर गोप्रार्थना

गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
ब्रह्मादयस्तथा देवा रोहिण्यः पान्तु मां सदा।।

ॐ ह्रीं नमो भगवति ब्रह्म मात र्विष्णु भगिनि रुद्रदैवते सर्वपाप प्रमोचिनि स्वरूपं स्मर इडे इडान्ते हव्ये चान्द्रे धृति मति सरस्वति सुश्रुते एहि-एहि हुं कुरु हुं कुरु सर्वलोक मये एहि-आगच्छागच्छ स्वाहा।

गाय के दक्षिण कान में उक्त मन्त्र का जप करें।

गोदान संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं अमुक संकल्पित फल प्राध्यर्थं श्रीलक्ष्मी नारायण प्रीतये इमां प्रत्यक्षां सवत्सां गां सुवर्ण शृंगीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठीं घण्टा ग्रैवेयकां मुक्तालांगूलां कांस्योपदोहनीं सितवसन द्वयोपेतां सर्वाभरण भूषितां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां अमुक गोत्राय अमुक नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे। गोपुच्छ जल विप्र के हाथ छोड़ें। **"ॐ स्वस्ति"** ऐसा ब्राह्मण कहे।

गोदान प्रतिष्ठा संकल्प

ॐ विष्णुः ३ अद्य ..... वासरे अमुक गोत्रः अमुक नाम शर्मा अहं श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये संकल्पित कार्य सिद्धयर्थं कृतस्य सवत्सगवीदान कर्मणः सांगता सिद्धचर्थं इदं द्रव्यं श्रीमते ..... अमुक गोत्राय अमुक नाम शर्मणे ब्राह्मणाय सम्प्रददे। जल सहित दक्षिणा ब्राह्मण के हाथ दें।

ब्राह्मण वचन

कोऽदात् कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते।।

इसके अतिरिक्त गाय के लिए चारा या द्रव्यदान भी करना चाहिए।

ब्राह्मण से प्रार्थना

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

गाय की चार प्रदक्षिणा मन्त्र :-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

इसके बाद निम्नलिखित गोमतीविद्या का पाठ करे–

गोमतीविद्या

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृंग्यः पयोमुचः।
सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागरं यथा॥
गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥
गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम्॥
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्।
पावनं सर्वभूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि।
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रायोजिताः॥
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्।
गावः पवित्र परमं गावो मङ्गलमुत्तमम्॥
गाव स्वर्गस्य सोपानं गावः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति॥
घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवा।
घृतनद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे॥
घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितम्।
घृतं मे सर्वतश्चैव घृतं मनसि वै घृतम्॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो वे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे सर्वतः सन्तु गावो मध्ये वसाम्यहम्॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

गाय की प्रदक्षिणा करके जाती हुई उसके पीछे चलें। दक्षिणा देकर विसर्जन कर सूर्य अर्घ दें।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

टिप्पणी– तर्पण करते समय ध्यान रखें यदि गोदान कर्ता के माता-पिता आदि जीवित हैं तो उनका नाम लेकर तर्पण न करें।

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः।

॥ इति ॥

दान में दी जाने वाली शय्या की दिशा

देवशय्याशिरः प्राच्यां मखशय्या तु दक्षिणे।
पश्चिमे तीर्थशय्यायाः प्रेतशय्या शिरोत्तरे॥ (दानसंग्रह)

अर्थात्– देवशय्या का सिरहाना पूर्व, यज्ञशय्या का सिरहाना दक्षिण, तीर्थशय्या का सिरहाना पश्चिम, और प्रेतशय्या का सिरहाना उत्तर की ओर होना चाहिए।

एकादशाहे शय्या दाने एष विधिः स्मृतः॥ (धर्मसिन्धु)

पंडित मेला राम कश्यप
अप्पर हथल सुन्दरबनी
राज़ौरी (जम्मू-कश्मीर)

एकादशाह के दिन दी जाने वाली शय्या प्रेतशय्या कही जाती है तथा द्वादशाह को दी जाने वाली शय्या पितृयज्ञ के निमित्त होती है, वह भी प्रेतशय्या की भाँति सभी उपकरणों से सम्पन्न रहती है, किन्तु उसमें प्रेतोपभुक्त वस्तुएँ नहीं रहतीं और कांचनपुरूष के स्थान पर स्वर्ण की लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा स्थापित की जाती है। यह मांगलिक शय्यारूप है। इसका सिरहाना दक्षिण की ओर होता है।

कर्म-वासना-जन्म

कर्मों के अनुसार वासना तथा वासनाओं के अनुसार जन्म होता है। द्वेषी व ईर्ष्यालु मनुष्य जीवन काल में ही मनुष्य रूप में बिच्छू और साँप का स्वभाव लेकर विचर रहे हैं। वे साँप, बिच्छू की तरह दूसरे को डंसते फिरते हैं। उनके मन में दूसरे को हीन बनाने की भावना भरी रहती है। उनके एक-एक शब्द के साथ द्वेष का विष मिला हुआ रहता है। जिसके भी प्रति वे शब्द कहे जाते हैं वह उनके विष से संतप्त हो जाता है। द्वेषी व ईर्ष्यालु मनुष्य मृत्यु के पश्चात् उसी प्रकार की योनि को प्राप्त भी होते हैं। क्योंकि मनुष्य को वैसी ही योनि को प्राप्त भी होते हैं। क्योंकि मनुष्य को वैसी ही योनि मिलती है जैसी कि उसकी प्रकृति होती है। वे अपनी कामनाओं की पूर्ति वैसी ही योनियों में करते हैं, अधूरी वासना के रह जाने के कारण उसे पूरी करने के लिये उन्हें पूरा मौका मिल जाता है। दूसरे को चीर-फाड़ने की वासना रखने वाला, शेर-चीता आदि की योनि में जाता है। दूसरों के हृदय को डसने वाला साँप व बिच्छू की योनि में जन्म लेता है। सरा दिन पेट का ही ख्याल रखने वाला शूकर की योनि में जन्मता है। काम-वासना वाले को कुत्ते व कुत्तिया की योनि मिलती है। हम जो चाहते है। ईश्वर हमें वही देते हैं, क्योंकि ईश्वर बड़े दयालु हैं। वह हमारी इच्छाओं की पूर्ति किसी न किसी प्रकार करते ही रहते हैं। इच्छाएँ ही संस्कार बन कर वासनाएं बन जाती हैं। वासना के अनुसार जीव शरीर धारण करता है व शरीर से वे ही वासनाएँ प्रस्फुटित होती हैं जिन्होंने कि शरीर बनाया था। यही दार्शनिक सिद्धान्त है।

मलमास में करने योग्य कर्म

कालदर्शे

द्वादशाहसपिण्डान्तं कर्म ग्रहणजन्मनोः।
सीमन्ते पुंसवे श्राद्धं द्वावेतौ, जातकर्म च॥
रोगे शान्तिरलभ्ये च योगे श्राद्धं व्रतानि च।
प्रायश्चितं निमित्तस्य वशात्पूर्वे परत्र च॥
अब्दोदकुम्भमन्वादि महालय युगादिषु।
श्राद्धं दर्शेऽप्यहरहः श्राद्धमूनादिमासिकम्॥
मलिम्लुचान्यमासेषु मृतानां श्राद्धमाब्दिकम्।
श्राद्धं तु पूर्वदृष्टेषु तीर्थेष्वेवं युगादिषु॥
मन्वादिषु च यद्दानं दानं दैनन्दिनं च यत्।
तिलगोभूहिरण्यानां सन्धयोपासनयोः क्रिया॥
पर्वहोमश्चाग्रयनं साग्नेरिष्टिश्च पर्वणि।
नित्याग्निहोत्रहोमश्च देवताऽतिथिपूजनम्॥
स्नानं च स्नानविधिनाऽऽप्यभक्ष्यपेय वर्जनम्।
तर्पनं च निमित्तस्य नित्यत्वादुभयत्र च॥

तदुक्तं दीपिकायाम्

गर्भाधानमुखं च चौलविधितः प्राग्जातयागं विना
कृच्छ्रेष्वाग्रहनं गजेन्द्रपुरतश्छाया मघानङ्गयोः।
तीर्थेन्दुक्षययोश्च पित्र्यमधिके मास्येवमाद्दाचरेत्॥

अलभ्ये योगेऽर्धोदय पदमकादौ काम्यान्यपि व्रतादीनि कार्याणीत्यर्थः।
पूर्वे परत्र-मले शुद्धे चेत्यर्थः।
महालयशब्देन मघात्रयोदश्युच्यत इति माधवः।
दर्शश्राद्धं मलेऽपि कार्यम्।

अर्थात् मलमास में करने योग्य कर्म कालादर्श में कहे हैं। द्वादशाह, सपिंडपर्यन्त कर्म, ग्रहण, जन्म, सीमन्त जातकर्म, रोग में शांति, अलभ्य योग में श्राद्ध, व्रत एवं प्रायश्चित, कर्म के पूर्व मलमास में पिछले शुद्धमास में करना चाहिए। क्षयतिथि के दिन घटदान, मन्वादि, महालय, युगादि एवं अमावस्या में श्राद्ध, नित्यश्राद्ध, ऊनादि मासिक श्राद्ध मलमास में करें। मन्वादियों में जो दान हैं– तिल, गौ, भूमि, सुवर्ण आदि का दान, नित्यदान, संध्या उपासन क्रिया पर्वहोम, आग्रयन, पर्व में साग्नि को इष्टि, प्रतिदिन अग्निहोत्र होम, देवता तथा अतिथि पूजन, स्नानविधि द्वारा स्नान, अभक्ष्य तथा अपेय का वर्जन भी मलमास में करे। अतः नित्य हो जाने मात्र से लोक-परलोक के लिए तर्पण का त्याग न करे। इन श्लोकों में पुंसवन एवं सीमन्त हैं। गर्भाधानादि अन्नप्राशन पर्यन्त संस्कार का उपलक्षन है, उसी को दीपिका में कहा है– "गर्भाधानादि संस्कार, चौल विधि से पूर्व के जातकर्म, कृच्छों में आग्रयण अगहनी, पूर्णिमा का यज्ञ, गजच्छाया यज्ञ, मघा, त्र्योदशी, तीर्थ और इन्दुक्षय, अमावस्या में पितरों का श्राद्ध।" इत्यादि कार्य मलमास में करने चाहिए। अर्धोदय पदमकादि अलभ्य योगों में काम्य व्रतादि भी मलमास के पूर्व या शुद्ध महीने में करे। माध्व का मत है महालय शब्द से मघा त्रयोदशी का ग्रहण करे। मलमास में दर्शश्राद्ध करे। (निर्णयसिन्धु पृष्ठ संख्या 16, प्रथम परिच्छेद श्री दौलतराम गौड़ द्वारा सम्पादित)

लौगाक्षि

यस्य संवत्सरादर्वाक् सपिण्ड़ीकरणं भवेत्।
मासिकं चोदकुम्भं च देयं तस्यापि वत्सरम्॥

लौगाक्षि ने कहा है– जिसका एक साल के पूर्व सपिण्डन श्राद्ध हो गया है। उसको भी एक साल तक मासिक श्राद्ध और जल का घड़ा देना चाहिए।

निर्णयसिन्धु तृतीयपरिच्छेद के उत्तरार्ध का आशौचादिप्रकरण श्री दौलतराम गौड़ द्वारा सम्पादित।

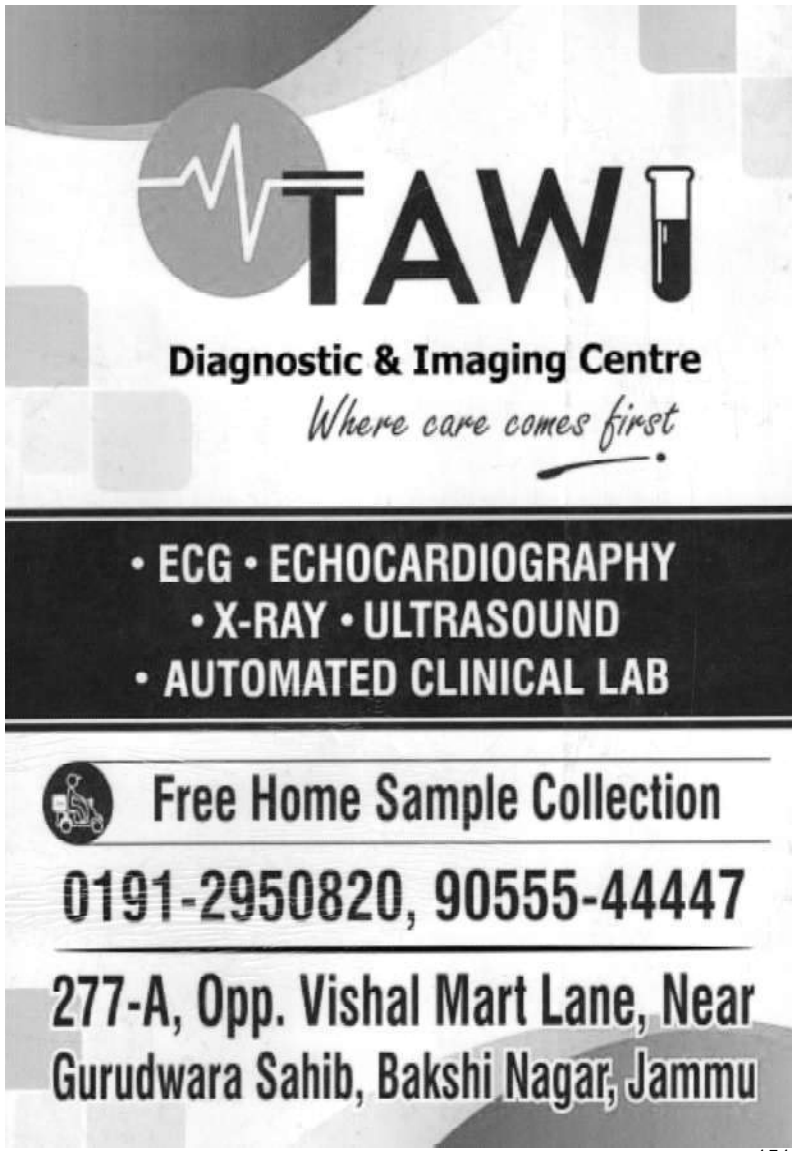

विवाह सम्बन्धी शास्त्रीय निर्णय

सम्पादन :
श्रीमती कमलेश शास्त्री
धर्मशिक्षा संस्कृत अध्यापिका,
(सेवानिवृत्त)
नागबनी स्कूल, जम्मू

वर/कन्या का विवाह सुनिश्चित हो गया हो उन्हीं तारीकों में अशौच की सम्भावना भी हो जाए तो विवाह से दश दिन पूर्व नान्दीश्राद्ध एवं पुण्याहवाचन करवा लेना चाहिए। नान्दीश्राद्ध के बाद विवाह की समाप्ति तक अशौच होने पर भी वर-वधू और उनके माता-पिता को अशौच नहीं होता। इन चारों के अतिरिक्त (पारिवारिक) सदस्यों को अशौच होता है।

नान्दी श्राद्ध के पहले विवाह सामग्री तैयार होने पर अशौच प्राप्त हो जाए तो प्राश्चित करके विवाह कृत्य होता है। प्राश्चित में कूष्माण्ड से हवन, गौदान एवं पञ्चगव्य प्राशन करने से पवित्रता आ जाती है।

विवाह में अशौच की सम्भावना हो तो अशौच से पूर्व अन्न घी, तैल, चावल दाल इत्यादि खाद्य पदार्थों का संकल्प पूर्वक दान कर लेना चाहिए। उस सङ्कल्पित अन्न का भोजन दोनों पक्ष के नर-नारी बच्चे मित्र बन्धु कर सकते हैं, भोजन की व्यवस्था असगोत्र के मनुष्यों को करना चाहिए।

वर/वधु की माता को विवाह कालिक समय पर रजोदर्शन की सम्भावना हो तो नान्दीश्राद्ध दश दिन पूर्व कर लेना चाहिए, नान्दी श्राद्ध के पश्चात् रजोदर्शन जन्यदोष नगण्य हो जाते हैं।

नान्दीश्राद्ध के पूर्व ही रजोदर्शन होने पर शान्ति करके विवाह हो सकता है, उसी प्रकार वर/वधू की माता के जननाशौच होने पर भी शान्ति करके विवाह हो सकता है।

विवाह मध्य में ग्रहशान्ति इत्यादि से पूर्व कन्या ऋतुमती होने पर शुक्ल यजुर्वेद मन्त्रों से हवन करके बचा हुआ कार्य सम्पन्न करना चाहिए।

दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाईयों से या एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें।

दो सगी बहनों का, दो सगे भाईयों का, या भाई बहनों का एक मास में साथ ही विवाह संस्कार न करें। लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। पृथक माता के हुए भाई बहनों का विवाह द्वार-भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई बहन का विवाह एक साथ करने में कोई हानि नहीं और इसी प्रकार के पश्चात् मुण्डन, यज्ञोपवीत कम से कम छः मास तक न करें परन्तु संवत्सर परिवर्तन हो जाने पर शुभ संस्कार कर सकते हैं। संवत्सर भेद से जैसे माघ-फाल्गुन मास में एक मंगलकार्य हो तो वैशाख-ज्येष्ठ में दूसरा मंगल कार्य भी करने की शास्त्र आज्ञा देता है। उक्त छः मास का बन्धन तीन पीढ़ी तक करके सम्बन्धियों के लिए है अनय सम्बन्धियों को यह बन्धन नहीं है।

मंगल कार्य (विवाह इत्यादि) के पश्चात् श्राद्धकार्य करना वर्जित है। वाग्दान के पश्चात् वर/कन्या की पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाए तो एक मास के पश्चात् अथवा सूतक निवृत्ति के पश्चात् शान्ति विधान करके विवाह करने में कोई आपत्ति नहीं।

विवाह के पूर्व नान्दी मुक्त श्राद्ध एवं पुण्याहवाचन के पश्चात् कुलदेव तथा श्रीगणपति स्थापना (दरयास) के बाद तीन पीढ़ी तक किसी की मृत्यु हो जाए तो वर कन्या एवं वर कन्या के माता-पिता को अशौच (सूतक) नहीं लगता, विवाह सुनिश्चित समय से कर देना चाहिए।

पुष्यामृत योग का महत्त्व

जिस प्रकार शेर जंगल का राजा होता है उसी प्रकार सभी नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र सब से बलवान होता है, पुष्य नक्षत्र समस्त दोषों को समाप्त करने की क्षमता रखता है। जिस दिन पुष्य नक्षत्र हो उस दिन कर्ता की राशि के अनुसार चन्द्रमा चौथे आठवें हो तो भी पुष्य नक्षत्र दोषों को दूर करता है और कार्य भी सिद्ध होते हैं। यहाँ तक कि–

ग्रहेण विद्धोऽयशमान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि।
करोत्यवश्यं सकलार्थ सिद्धिं विहाय पाणिग्रहणे च पुष्यः॥

पुष्य नक्षत्र ग्रहविद्ध होने या पापग्रहयुक्त होने तथा तारा के विरुद्ध होने पर भी सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि करता है केवल विवाह को त्याग कर, फिर पुष्यामृत योग का कहना ही क्या? जब रविवार या गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होता है तो **'पुष्यामृत'** योग बनता है, रवि पुष्य योग तन्त्र-मन्त्र की सिद्धि तथा जड़ी बूटियों का संग्रह करने में तथा गुरु पुष्य व्यापारिक एवं आर्थिक लाभ के कार्यों में विशेष रूप से उपयोगी है। पुष्य नक्षत्र केवल विवाह मुहूर्त एवं विवाह सम्बन्धी कार्यों में वर्जित है। शुक्रवार को यदि पुष्य नक्षत्र आ जाए तो पुष्य-उत्पात योग बनने के कारण सभी कार्यों में वर्जित है। जिन तारीकों में पुष्य नक्षत्र तथा पुष्यामृत योग है उन सब का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

सन् 2024-25 ई. भारतीय स्टै. समय में

ता.	मास	वार	घ.मि. से	घ.मि. तक
16	अप्रैल	मंगल	6:04 से	29:16 तक
14	मई	मंगल	5:39 से	13:05 तक
10	जून	सोम	5:27 से	21:40 तक
7	जुलाई	रवि	5:34 से	दूसरे दिन 6:03 तक
4	अगस्त	रवि	5:51 से	13:26 तक
31	अगस्त	शनि	6:09 से	19:40 तक
27	सितम्बर	शुक्र	6:26 से	25:20 तक
24	अक्तूबर	गुरु	6:46 से	दूसरे दिन 7:40 तक
21	नवम्बर	गुरु	7:10 से	15:35 तक
18	दिसम्बर	बुध	7:32 से	24:58 तक
		सन् 2025 ई.		
15	जनवरी	बुध	7:37 से	10:28 तक
11	फरवरी	मंगल	7:22 से	18:34 तक
10	मार्च	सोम	6:51 से	24:51 तक

सत्य-सनातन महिमा

सत्यं सत्सु सदा धर्मः सत्यं धर्मः सनातनः।
सत्यमेव नमस्येत सत्यं हि परमा गतिः॥
सत्यं धर्मस्तपो योगः सत्यं ब्रह्म सनातनम्।
सत्यं यज्ञः परः प्रोक्तः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

(महाभा. शा. 162, 4-5)

सत्पुरुषों में सदा सत्यरूप धर्म का ही पालन हुआ है। सत्य ही सनातन धर्म है, सत्य को ही सदा सिर झुकाना चाहिए, क्योंकि सत्य ही जीव की परमगति है। सत्य ही धर्म, तप और योग है, सत्य ही सनातन ब्रह्म है, सत्य को ही परम यज्ञ कहा गया है तथा सब कुछ सत्य पर ही टिका हुआ है।

सत्यमेकपदं ब्रह्म सत्येधर्मः प्रतिष्ठितः।
सत्यमेवाक्षया वेदाः सत्येनावात्यते परम्॥

(वा.रा. अयोध्या. 14-7)

धर्मलक्षण

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ (मनुस्मृति 7/12)

धर्माचार्य मनु ने जीवन में दस पदार्थों के धारण को 'धर्म' कहा है।

(1) **धृति** – धनादि का नाश होने पर चित्त में धैर्य बना रहना। प्रारम्भ किये हुए कर्म में वाधा और दुःख आने पर भी उद्विग्न न होना (सर्वज्ञ नारायण) सन्तोष रखना, अपने धर्म से स्खलित न होना, अपने धर्म को कभी न छोड़ना, निष्पक्ष भाव से कर्त्तव्य का पालन करना।

(2) **क्षमा** – दूसरे अपराध को सह लेना तथा क्रोधोत्पत्ति के कारण उपस्थित होने पर भी क्रोध न करना, किसी के अपकार करने पर बदला न लेना, अपमान सह लेना।

(3) **दम** – उद्दण्ड न होना, तपस्या करने में जो क्लेश हो उसे सह लेना, विकार के कारण उपस्थित होने पर भी मन निर्विकार रखना, मन को रोक कर रखना, मन को मन-मानी न करने देना।

(4) **अस्तेय** – दूसरे की वस्तु में स्पृहा न होना, अन्याय से परधनादि का ग्रहण न करना, परद्रव्य को न लेना।

(5) **शौच** – अहारादि की पवित्रता, स्नान-मृत्तिकादि से शरीर को शुद्ध रखना, शास्त्र की रीति से शरीर को शुद्ध रखना, बाह्याभ्यन्तर की पवित्रता।

(6) **इन्द्रिय निग्रह** – इन्द्रियों को विषयों में प्रवृत्त न करना, नेत्रादि इन्द्रियों को उनके विषयों से अलग रखना, जितेन्द्रिय होना।

(7) **धी** – भलीभान्ति समझना, प्रतिपक्ष के संशयों को दूर कर सकना, आत्मोपासना, शास्त्र के तात्पर्य को समझना, बुद्धि का अप्रतिहत होना।

(8) **विद्या** – आत्मानात्मक विषयक विचार, बहुश्रुत होना, आत्मोपासना।

(9) **सत्य** – मिथ्या और अहितकारी वचन न बोलना, यथार्थ बोलना, अपनी जानकारी के अनुसार ठीक बोलना।

(10) **अक्रोध** – क्षमा करने पर भी कोई अपकार करे तब भी क्रोध न करना, दैववश क्रोध उत्पन्न होने पर उसको रोकने का प्रयत्न, क्रोध का कारण होने पर भी क्रोध न होना, अपने मनोरथ में बाधा डालने वालों के प्रति भी चित्त का निर्विकार रहना।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः।

अपने बुद्धिमान तत्त्वदर्शी बड़े लोग जिस मार्ग से जाएं, वही सदाचार है, वही धर्म है। धर्म में दो बातें मुख्य हैं– एक तो यह कि अपने आचरण को शुद्ध रखो अर्थात् दुर्गुणों को त्याग कर सद्गुणों को धारण करो, दूसरी बात यह कि अपनी वंश परम्परागत शुद्ध आजीविका से निर्वाह करो, जो ऐसा आचरण करता है वही धार्मिक है। सभी धर्म प्रवर्तक महानुभावों ने इन्हीं दो बातों पर विशेष बल दिया है। सनातन धर्म किसी एक जाति के लिए, एक देश के लिए, एक समाज के लिए नहीं है, धर्म में हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई – ये विशेषण लगाना ही उचित नहीं, धर्म तो धर्म ही ठहरा फिर भी देश-काल तथा पात्र के भेद से धर्म की वाह्य क्रियाओं में भेद माना गया है।

उदाहरणार्थ– जैसे कोई ब्रह्मचारी है उसका धर्म है ईश्वर चिन्तन करते हुए स्त्री-संसर्ग से सर्वथा दूर रहे परन्तु वही व्यक्ति जब गृहस्थ हो जाता है तब उसका धर्म हो जाता है– ऋतुमती भार्या के साथ सम्पर्क करना, यदि वह ऐसा नहीं करता तो अधर्म करता है। गृहस्थ के लिये निजपत्नी में ऋतुगमन धर्म है किन्तु वही व्यक्ति जब सन्यासी हो जाता है तब उसी स्त्री को जिसके साथ कल तक संसर्ग धर्म में था अब उसकी ओर देखना भी अधर्म माना जाता है। इसी प्रकार देश से, काल से, पात्र से, बाह्यचरण में भद हो जाते हैं किन्तु सनातन धर्म सदा एक सा ही बना रहता है क्योंकि वह शाश्वत धर्म है, अपरिवर्तनीय और अनिवार्य है।

श्रीविक्रमी संवत् 2081	चैत्र शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	9 अप्रैल से 23 अप्रैल	सूर्योत्तरायणे, बसन्त ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घण्टे	दिनमान मिनट	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घं॰मि॰	श चैत्र	वि चैत्र	अं अप्रै.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू. उ.		जम्मू सू. अ.	
12	40	1	मंग	35	47	20	31	रेवती अश्वि	03 57	19 17	07 29	32 07	वैधृति	14	18	किं	10	09	मेष 7:32	20	27	9	चैत्र शु. प्रतिपदा, **नवचान्द्र संवत्सर प्रारंभ** गण्डमूल 29:07 तक, A	06	12	18	52
12	42	2	बुध	28	24	17	33	भरणी	52	16	27	05	विष्कुं	10	37	बा	06	59	मेष	21	28	10	चन्द्रदर्शनम् (15 मु.) सिद्धियोग मंगल पू.भा. में 11:09	06	11	18	53
12	44	3	गुरु	22	14	15	04	कृत्ति	48	40	25	38	प्रीति आयु.	07 28	19 24	ग	15	04	वृष 8:39	22	29	11	श्रीगौरी तृतीया, भद्रा 26:03 से, **मत्स्योत्पत्तिः, गणगौरी पूजा**, B	06	10	18	54
12	46	4	शुक्र	17	39	13	12	रोहि	46	45	24	51	सौभा.	26	13	वि	13	12	वृष	23	30	12	श्री लक्ष्मी पञ्चमी, भद्रा 13:12 तक	06	08	18	54
12	48	5	शनि	14	52	12	04	मृग	46	44	24	49	शोभना	24	33	बा	12	04	मि. 12:43	24	वैशा	13	**मेष संक्रान्ति**, सूर्य अश्विनी में रात्रि 9:03, शुक्र रेवती में 28:32, C	06	07	18	55
12	50	6	रवि	14	05	11	44	आर्द्रा	48	41	25	35	अतिगंड	23	32	तै	11	44	मिथुन	25	2	14	C **स्कन्द षष्ठी व्रत**	06	06	18	56
12	52	7	सोम	15	17	12	12	पुन	52	31	27	05	सुकर्मा	23	08	व	12	12	कर्क 20:18	26	3	15		06	05	18	57
12	54	8	मंग	18	21	13	24	पुष्य	58	00	29	16	धृति	23	16	ब	13	24	कर्क	27	4	16	भद्रा 12:12 से 24:12 से 24:43 तक, **मेला बाहु फोर्ट** (जम्मू) D	06	04	18	57
12	56	9	बुध	22	59	15	14	आश्ले	60	00	00	00	शूल	23	50	कौ	15	14	कर्क	28	5	17	**श्रीरामनवमी**, **श्रीदुगानवमी**, **नवरात्र समाप्त**, गण्डमूल	06	02	18	58
12	57	10	गुरु	28	46	17	32	आश्ले	04	48	07	57	गंड	24	43	ग	17	32	सिंह 07:57	29	6	18	गण्डमूल, सिद्धियोग, **अगस्तास्त व्रतवन्ध दशमी**, आशा दशमी	06	01	18	59
12	59	11	शुक्र	35	12	20	05	माघ	12	21	10	57	वृद्धि	25	44	व	06	47	सिंह	30	7	19	**कामदा एकादशी व्रत**, भद्रा 6:47 से 20:05 तक, गण्डमूल E	06	00	18	59
13	01	12	शनि	41	47	22	42	पू.फा.	20	12	14	04	ध्रुव	26	47	ब	09	24	कन्या 20:50	31	8	20		05	59	19	00
13	03	13	रवि	48	04	25	11	उ.फा.	27	55	17	08	व्याघा	27	44	कौ	11	53	कन्या	वैशा	9	21	**प्रदोष व्रत**, महाबीर जयन्ती (जैन), शुक्र वार्धक्य दोष शुरू F	05	58	19	01
13	05	14	सोम	53	43	27	26	हस्त	35	07	20	00	हर्षना	23	28	ग	14	21	कन्या	2	10	22	भद्रा 27:27 से, शिवपूजन विशेषः रवियोग	05	57	19	02
13	07	15	मंग	58	27	29	19	चित्रा	41	30	22	32	वज्र	23	56	वि	16	25	तुला 9:18	3	11	23	**पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत**, मंगल मीन में 8:39, G	05	56	19	02

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 16 अप्रैल सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	03	10	11	00	11	10	11	05
02	04	24	25	26	19	21	21	21
18	34	28	22	28	11	01	03	03
13	55	06	00	04	01	01	08	08
59	732	46	39	13	74	06	03	03
52	43	55	58	56	00	06	11	11
शी	शी	मा	व	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि	पुष्य	पू.भा.	रेव	भरणी	रेवती	पू.भा.	रेवती	हस्त
1	1	2	3	4	1	1	2	4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:04

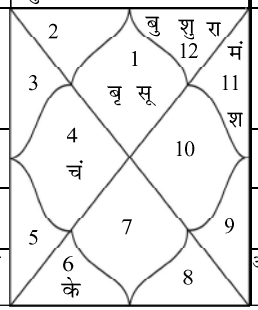

पूर्णिमायां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 23 अप्रैल सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	05	10	11	00	11	10	11	05
09	28	29	22	28	27	21	20	20
08	05	53	03	04	49	42	41	41
20	49	09	03	03	01	06	06	06
58	726	46	10	13	74	05	03	03
27	56	54	02	59	00	57	11	11
शी	शी	मा	व	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अश्वि	चित्रा	पू.भा.	रेवती	कृत्ति.	रेवती	पू.भा.	रेवती	हस्त
2	2	3	2	1	4	1	2	4

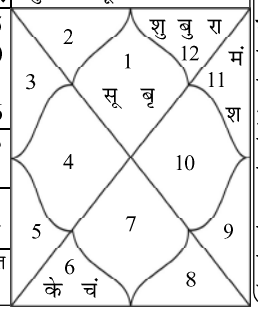

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:56

A घट स्थापनम्, **चैत्र नवरात्र प्रारंभ, ज्योतिष दिवस**, वक्री बुध मीन में 21:30, **पञ्चक समाप्त** 7:32 स.सि.योग B सौभाग्यशयन व्रत, शिवशक्ति पूजा, अमृत योग D अशोक कलिका प्रशासनम्, **श्री दुर्गाष्टमी**, गण्डमूल 29:16 से गुरु कृ. में 26:00 सिद्धियोग, रवियोग E 10:57 तक सिद्धि योग, लक्ष्मीकान्त- दोलोत्सवः, सा.सू. वृष में 19:10, रवियोग, **ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ** F भा. वैशाख प्रारम्भ स.सि. योग G भद्रा 16:25 तक, **श्री हनुमानजयंती**, वैशाख स्नानारम्भः, चित्रान्नदानं भक्षणञ्च, बुधोदयः पूर्वस्यां 18:57

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– मत्स्योत्पत्ति-मत्स्य जयन्ती– मत्स्यावतार का आविर्भाव एवं सत्ययुग का अवतार भी इसी दिन को मानकर भारत प्रसिद्ध श्रीविक्रमीदित्य राजा ने आज से 2081 वर्ष पूर्व संवत्सर का श्रीगणेश किया था, स्मृति कौस्तुभ में भी मत्स्यावतार का प्रादुर्भाव इसी दिन माना है– **"कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षया। रेवत्यां योग विष्कम्भे दिवा द्वादशनाडिकाः॥ मत्स्यरूपकुमार्या च अवतीर्णो हरिस्वयम्॥"** मत्स्य व्रतधारी लोग इसी दिन मध्याह्न पूर्व सूर्योदय से 12 घड़ी पर घंटे मुहूर्त में मत्स्य भगवान की प्रतिमा पूजन पूर्वक द्वादशाक्षर महामन्त्र से आराधना करें, त्रयोदश वर्षों के पश्चात चतुर्दश कलशों सहित प्रधान कलश पर सुवर्ण प्रतिमा स्थापित करके उभयविध, लघु-वृहद् शय्यादान ब्राह्मण भोजनपूर्वक उद्यापन करें। **स्कन्दषष्ठी व्रतः**- यह व्रत चैत्र शुक्ल षष्ठी के दिन मयूर वाहन कार्तिकेय महाराज की सुवर्णप्रतिभा का पूजन विधिविधान से करें, इस व्रत में केवल (शेष पृष्ठ 203 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	वैशाख कृष्ण पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	24 अप्रैल से 8 मई	सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			वैशा.	वैशा.	अप्रै.		सू.	उ.	सू.	अ.
13	03	1	बुध	60	00	00	00	स्वाति	46	55	24	41	सिद्धि	29	04	बा	18	06	तुला	4	12	24	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा, शुक्रास्त पूर्वे 19:03 अमृतयोग, A	05	55	19	03
13	10	1	गुरु	02	11	06	46	विशा	51	15	26	24	व्यती	28	53	कौ	06	46	वृ. 20:00	5	13	25	बुध मार्गी 18:23	05	54	19	04
13	12	2	शुक्र	04	44	07	46	अनु	54	27	27	40	वरिय	23	19	ग	07	46	वृश्चिक	6	14	26	भद्रा 20:04 से, स.सि. योग, गण्डमूल 27:40 से	05	53	19	04
13	14	3	शनि	06	07	08	18	ज्येष्ठ	56	31	28	28	परिघा	27	23	वि	08	18	धनु 28:28	7	15	27	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मू** 22:30, भद्रा 18:18 तक B	05	51	19	05
13	16	4	रवि	06	19	08	22	मूला	57	25	28	49	शिव	26	05	बा	03	22	धनु	8	16	28	गण्डमूल 28:49 तक, अनुसूया जयन्ती, स.सि.योग	05	50	19	06
13	17	5	सोम	05	20	07	58	पू.षा.	57	12	28	42	सिद्ध	24	25	तै	07	58	धनु	9	17	29	अमृतयोग, श्रीगुरु तेगबहादुर जयन्ती	05	49	19	07
13	19	6	मंग	03	12	07	05	उ.षा.	55	52	28	09	साध्य	22	23	व	07	05	मकर 10:36	10	18	30	भद्रा 7:05 से 18:29 तक, रवियोग 7:05 तक, श्रीगुरु अर्जुनदेव जयंती	05	43	19	07
0	0	7	मंग	59	54	29	46	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षय **शुक्र अस्त 24 अप्रैल**	0	0	0	0
13	21	8	बुध	55	35	28	02	श्रवण	53	28	27	11	शुभ	20	01	बा	16	57	मकर	11	19	मई	**गुरु वृष में** 12:55	05	47	19	08
13	22	9	गुरु	50	17	25	53	धनि	50	05	25	49	शुक्ल	17	19	तै	15	00	कुंभ 14:32	12	20	2	**पञ्चक प्रारम्भ** 14:32	05	47	19	09
13	24	10	शुक्र	44	07	23	24	शत	45	51	24	06	ब्रह्मा	14	18	व	12	41	कुंभ	13	21	3	भद्रा 12:41 से 23:24 तक	05	46	19	10
13	26	11	शनि	37	15	20	39	पू.भा.	40	56	22	07	ऐन्द्र	11	03	ब	10	04	मीन 16:37	14	22	4	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** अमृतयोग, श्री वल्लभाचार्य जयंती	05	45	19	10
13	27	12	रवि	29	56	17	42	उ.भा.	35	33	19	57	वैधृति विष्कु	07 28	36 03	कौ	07	12	मीन	15	23	5	**प्रदोष व्रत,** गण्डमूल 19:57 से, स.सि. योग, रेवती 1 राहुः हस्ते C	05	44	19	11
13	29	13	सोम	22	23	14	41	रेवती	30	00	17	43	प्रीति	24	28	व	14	41	मेष 17:43	16	24	6	भद्रा 14:41 से 25:11 तक, **गुरोरस्तः पश्चिमे** 19:12, D	05	43	19	12
13	30	14	मंग	14	57	11	41	अश्वि	24	35	15	32	आयु.	20	58	श	11	41	मेष	17	25	7	**पितृकार्येऽमावस,** गण्डमूल 15:32 तक, टैगोर जयन्ती,E	05	42	19	13
13	32	30	बुध	07	56	08	52	भरणी	19	40	13	33	सौभा.	17	40	ना	08	52	वृष 19:06	18	26	8	**देवकार्येऽमावस** **वृहस्पति अस्त 6 मई**	05	41	19	13

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 1 मई सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	09	11	11	00	00	10	11	05
16	10	06	22	29	07	22	20	20
55	46	04	59	55	40	26	16	16
08	53	06	01	07	07	05	01	01
58	835	46	27	14	73	05	03	03
14	05	03	08	00	59	02	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
भरणी	श्रवण	उ.भा	रेवती	कृत्ति.	अश्वि	पू.भा.	रेव	हस्त
2	1	1	2	1	3	1	2	4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:47

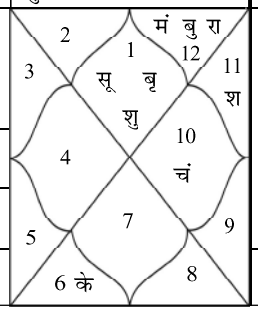

अमावस्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 8 मई सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
00	00	11	11	01	00	10	11	05
23	21	11	27	01	16	23	19	19
42	49	27	36	34	18	01	53	53
16	01	06	01	01	00	06	09	09
57	840	46	53	14	73	04	03	03
53	22	00	08	02	09	57	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ
भर.	भर.	उ.भा	रेव	कृत्ति.	भर.	पू.भा.	रेव.	हस्त
4	3	3	4	2	1	1	1	3

कुण्डली अमावस प्रातः 5:41

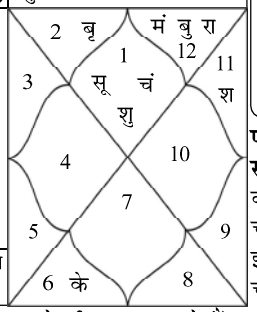

A शुक्र मेष में 23:58 B गण्डमूल, सूर्य भरणी में 12:55, मंगल उ.भा. में 16:10
C केतु 25:14, शुक्र भरणी में 19:41
D गण्डमूल, **पञ्चक समाप्त** 17:43, मासिक शिवरात्रि व्रत E स.सि. योग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

संकटचतुर्थी व्रतः- वैशाख कृष्ण चतुर्थी के दिन चन्द्रोदय व्यापिनी तृतीया युक्त चतुर्थी को व्रत करना सर्वोत्तम माना है। इसमें सायं स्नान के पश्चात् विधिवत चन्द्रोदय के समय श्रीगणेश जी की पूजा के पश्चात् विशेष अर्घ देना चाहिए। **वरूथिनी एकादशी व्रतः**- वरूथ शब्द रथ की गुप्ति का नाम है, कवच और ढाल को भी वरूथ कहते हैं, रथ गुप्ति वरूथिनी कहलाती है। वरूथिनी एकादशी मनुष्य को समस्त पाप संतापों से रक्षा करती है, मनुष्य का मन संतप्त होकर कई प्रकार की आत्मग्लानि का अनुभव करने लगता है तो मनोमालिन्य की वृद्धि से मानसिक असंतुलन बिगड़ने से रोग, शोक, संताप, उन्माद जैसे भयंकर तत्वों का संक्रमण होता है, इससे रक्षा पाने के लिए उच्च सूर्य के संनिकट आने वाली कृष्ण पक्ष की एकादशी वरूथिनी का व्रत विधिविधान से करने पर हर प्रकार की रक्षार्थ कवच रूप धारण कर लेता है। **मासिक शिवरात्रि व्रतः**- यह व्रत मास में पूर्व विद्धा एवं प्रदोष निशीथोभय व्यापिनी चतुर्दशी में ही सम्भव है। यह व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन महाशिवरात्रि से प्रारम्भ किया जाता है। इस व्रत में समग्र दिन निराहार रहकर सायं पुनः स्नान सन्ध्यादि के पश्चात् त्रिपुण्ड्र (शेष पृष्ठ 203 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	वैशाख शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	9 मई से 23 मई	सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श वैशा.	वि वैशा.	अं मई	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
13	34	1	गुरु	01	42	06	21	कृत्ति	15	37	11	55	शोभना	14	41	ब	6	21	वृष	19	27	9	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शनम् (45 मु.), श्रीगुरु अंगदA	05	40	19	14
0	0	2	गुरु	56	34	28	18	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वितीया तिथि क्षय	0	0	0	0
13	35	3	शुक्र	52	55	26	50	रोहि	12	47	10	47	अतिगंड	12	06	तै	15	29	मि. 22:25	20	28	10	**श्रीपरशुराम जयंती, अक्षय तृतीया,** बुध(अश्विनी) मेष में 18:42	05	40	19	15
13	37	4	शनि	51	03	26	04	मृग	11	31	10	15	सुकर्मा	10	02	व	14	22	मिथुन	21	29	11	भद्रा 14:22 से 26:04 तक, सिद्धियोग, सूर्य कृत्तिका में 7:01	05	39	19	15
13	38	5	रवि	51	05	26	04	आर्द्रा	12	01	10	27	धृति	08	33	ब	13	58	मिथुन	22	30	12	**श्रीशंकराचार्य जयंती,** अमृतयोग, रवियोग 10:27 तक	05	38	19	16
13	39	6	सोम	53	02	26	51	पुन	14	25	11	24	शूल	07	41	कौ	14	22	क.प्रा. 5:04	23	31	13	**श्रीरामानुज जयन्ती**	05	37	19	17
13	41	7	मंग	56	47	28	20	पुष्य	18	41	13	05	गंड	07	25	ग	15	30	कर्क	24	ज्ये.	14	**ज्येष्ठ संक्रांति,** सूर्य वृष में सायं 5:52, मंगल रेवती में 24:50 B	05	39	19	18
13	42	8	बुध	60	00	00	00	आश्ले	24	33	15	25	वृद्धि	07	41	वि	17	18	सिंह 15:24	25	2	15	भद्रा 17:18 तक, गण्डमूल	05	36	19	18
13	44	8	गुरु	02	00	06	23	माघ	31	36	18	14	ध्रुव	08	23	ब	06	23	सिंह	26	3	16	**श्री जानकी जयंती,** गण्डमूल 18:14 तक, शुक्र कृ. में 15:40	05	35	19	19
13	45	9	शुक्र	08	06	08	49	पू.फा.	39	18	21	18	व्याघा	09	21	कौ	08	49	क.28:04	27	4	17	अमृतयोग, रवियोग	05	35	19	20
13	46	10	शनि	14	32	11	23	उ.फा.	47	02	24	23	हर्षना	10	24	ग	11	23	कन्या	28	5	18	भद्रा 24:39 से, रवियोग	05	34	19	20
13	48	11	रवि	20	42	13	50	हस्त	54	16	27	16	वज्र	11	24	वि	13	50	कन्या	29	6	19	**मोहिनी एकादशी व्रत,** भद्रा 13:50 तक, शुक्र वृष में 8:42 C	05	33	19	21
13	49	12	सोम	26	05	15	59	चित्रा	60	00	00	00	सिद्धि	12	10	बा	15	59	तुला 16:33	30	7	20	प्रदोष व्रत, सा.सू. मिथुन में 18:15	05	33	19	22
13	50	13	मंग	30	19	17	40	चित्रा	00	34	05	46	व्यती	12	35	तै	17	40	तुला	31	8	21	सिद्धियोग, बुध भरणी में 11:40, रवियोग 5:46 बाद D	05	32	19	22
13	51	14	बुध	33	11	18	48	स्वाति	05	36	07	47	वरिय	12	37	ग	06	18	वृ. 26:55	ज्ये.	9	22	भद्रा 18:48 से, श्रीगुरु अमरदास जयंती, भा. ज्येष्ठारम्भः,E	05	32	19	23
13	52	15	गुरु	34	39	19	23	विशा	09	18	09	15	परिघ	12	12	वि	07	10	वृश्चिक	2	10	23	**श्रीबुद्ध जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत,** F	05	31	19	24

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 16 मई सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	04	11	00	01	00	10	11	05
01	07	17	06	03	26	23	19	19
25	01	34	09	27	08	37	28	28
55	59	07	09	03	07	02	04	04
57	712	45	76	14	73	04	03	03
49	02	47	55	01	58	01	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ
कृत्ति.	मघा	रेव	अश्वि	कृत्ति	भर	पू.भा.	रेव	हस्त
2	3	1	2	3	4	2	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:35

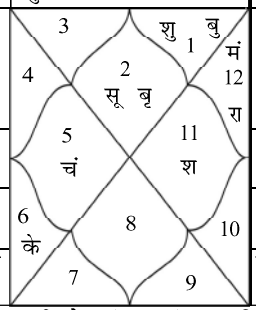

पूर्णिमायां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 23 मई सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	07	11	00	01	01	10	11	05
08	01	22	15	05	04	24	19	19
10	21	53	56	06	45	04	06	06
07	51	08	09	03	02	03	02	02
57	767	45	93	14	73	03	03	03
39	30	54	54	02	58	05	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	अ	अ	उ	अ	अ
कृत्ति	विशा	रेव	भर	कृत्ति	कृत्ति	पू.भा.	रेव	हस्त
4	4	2	1	3	3	2	1	3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:31

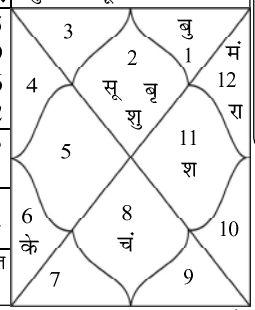

A देव जयन्ती, शिवाजी जयन्ती B भद्रा 28:19 से गण्डमूल 13:05 से **गंगोत्पत्तिः** अमृतयोग रवियोग C स.सि.योग E रवियोग 7:47 तक, D **श्रीनृसिंह जयन्ती** F भद्रा 7:10 तक **कूर्मोत्पत्तिः**, वैशाख स्नान पूर्तिः, सिद्धियोग धर्म प्रीत्यर्थं जलकुम्भदानम्

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

अक्षय तृतीया– वैशाख शुक्ल तृतीया को शास्त्रों में अक्षय तृतीया कहा गया है। इस दिन किया हुआ दान, स्नान, होमजपादि समस्त कृत्यों का अनन्त फल लिखा है अतएव इसे अक्षया कहा गया है। **"यत्किञ्चिद् दीयतेदानं स्वल्पं वा यदि वा बहुः। तत् सर्वभक्ष्यं यस्मात् तेनैवसाक्षयास्मृता।"** (भविष्य पुराणे) इसी तिथि में नरनारायण **परशुराम** एवं हयग्रीव का अवतार हुआ था एवं त्रेतादि तिथि होने से यह मध्याह्न व्यापिनी ग्रहण की जाती है। सनातनी हिन्दुओं का यह प्रमुख पर्व है, नवीन मन्दिर, धार्मिक संस्था, सभ्य समाज के किसी भी कार्यालय का उद्घाटन किया जा सकता है, विवाह से भिन्न कोई भी शुभ कार्य करना चाहें तो इस दिन कर सकते हैं। इस दिन धर्मघट दान करने का भी विधान है। **"एषधर्मघटो दत्तोब्रह्मविष्णुशिवात्मकः। अस्यप्रदानात्सकलामम सन्तुमनोरथाः।" श्री जानकी जयन्ती व्रतः**- शास्त्रों के अनुसार वैशाख शुक्ल नवमी के दिन भगवती सीता माता का प्रादुर्भाव होना माना जाता है अतः इस दिन व्रतधारण करके विधिवत् पूजन पूर्वक जानकी माता का षोडशोपचार द्वारा पूजन कर सीता सहस्रनाम का पाठ करें। (शेष पृष्ठ 203 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	24 मई से 6 जून	सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	मई		सू.	उ.	सू.	अ.
13	54	1	शुक्र	34	46	19	25	अनु	11	38	10	10	शिव	11	21	बा	07	28	वृश्चिक	3	11	24	ज्येष्ठ कृ. प्रतिपदा, सिद्धियोग, स.सि.योग, गण्डमूल 10:10 से A	05	31	19	24
13	55	2	शनि	33	40	18	59	ज्येष्ठ	12	44	10	36	सिद्ध	10	06	तै	07	15	धनु 10:36	4	12	25	गण्डमूल, **श्रीनारद जयन्ती,** वीणादानम्	05	30	19	25
13	56	3	रवि	31	32	18	07	मूला	12	44	10	36	साध्य	08	30	व	06	35	धनु	5	13	26	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मू** 22:15, भद्रा 6:35 से B	05	30	19	26
13	57	4	सोम	28	31	16	54	पू.षा.	11	50	10	14	शुभ शुक्ल	06 28	36 26	ब	16	55	मकर 16:04	6	14	27	शुक्र रोहिणी में 11:56	05	30	19	26
13	58	5	मंग	24	47	15	24	उ.षा.	10	10	09	33	ब्रह्मा	26	06	तै	15	24	मकर	7	15	28	बुधास्तः पूर्वस्याम् 11:20 **शुक्र अस्त है**	05	29	19	27
13	59	6	बुध	20	28	13	40	श्रवण	07	53	08	38	ऐन्द्र	23	34	व	13	40	कुंभ 20:05	8	16	29	भद्रा 13:40 से 24:43 तक, **पञ्चक प्रारंभ** 20:05 अमृतयोग,C	05	29	19	27
14	00	7	गुरु	15	39	11	44	धनि	05	06	07	31	वैधृ	20	53	ब	11	44	कुम्भ	9	17	30	रवियोग 7:31 तक	05	28	19	28
14	00	8	शुक्र	10	25	09	39	शत पू.भा.	01 58	54 28	06 28	14 49	विष्कुं	18	4	कौ	09	39	मीन 23:09	10	18	31	बुध वृष में 12:11 **वृहस्पति उदय 2 जून**	05	28	19	29
14	01	9	शनि	04	52	07	25	उ.भा.	54	30	27	16	प्रीति	15	10	ग	07	25	मीन	11	19	जून	भद्रा 18:15 से 28:05 तक, सिद्धियोग, मंगल (अश्वि.)D	05	28	19	29
0	0	10	शनि	59	02	29	05	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
14	02	11	रवि	53	05	26	42	रेवती	50	31	25	40	आयु.	12	11	ब	15	53	मेष 25:40	12	20	2	**अपरा एकादशी व्रत,** गण्डमूल, गुरोरूदयः पूर्वस्याम् 23:59 E	05	28	19	30
14	03	12	सोम	47	08	24	19	अश्वि	46	33	24	05	सौभा.	09	10	कौ	13	30	मेष	13	21	3	गण्डमूल 24:05 तक	05	27	19	30
14	04	13	मंग	41	25	22	01	भरणी	42	48	22	35	शोभना अतिगंड	06 27	11 18	ग	11	09	वृष 28:13	14	22	4	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 22:02 से, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** सिद्धियोग	05	27	19	31
14	04	14	बुध	36	10	19	55	कृत्ति	39	32	21	16	सुकर्मा	24	35	वि	08	57	वृष	15	23	5	भद्रा 8:57 तक, स.सि.योग, बुध रोहिणी में 15:20	05	27	19	31
14	05	30	गुरु	31	41	18	08	रोहि	37	03	20	16	धृति	22	09	च	06	59	वृष	16	24	6	**शनैश्चर जयन्ती,** देवपितृकार्येऽमावस, वटसावित्री व्रत (मरूस्थले)	05	27	19	32

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 31 मई सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	10	11	00	01	01	10	11	05
15	19	28	29	06	14	24	18	18
50	34	56	28	59	35	30	40	40
49	46	00	08	01	02	02	07	07
57	845	45	109	14	73	02	03	03
32	03	51	05	01	57	59	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	अ	अ	उ	अ	अ
रोहि	शत	रेव	कृत्ति	कृत्ति	रोहि	पू.भा.	रेव	हस्त
2	4	4	1	4	2	2	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:28

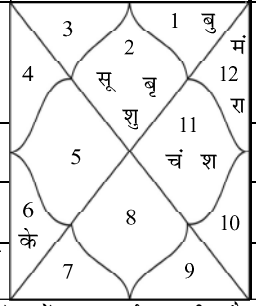

अमावस्यां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 6 जून सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	01	00	01	01	01	10	11	05
21	14	03	11	08	21	24	18	18
35	48	25	12	23	57	45	21	21
44	14	06	03	00	07	08	07	07
57	829	44	122	13	73	02	03	03
16	12	58	55	59	58	53	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
रोहि	रोहि	अश्वि	रोहि	कृत्ति	रोहि	पू.भा.	रेव	हस्त
4	2	2	1	4	4	2	1	3

कुण्डली अमावस प्रातः 5:27

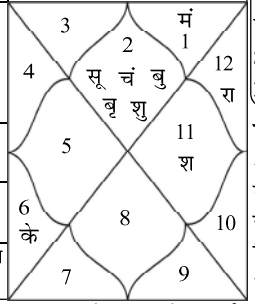

A सूर्य रोहिणी में अ.रा.परि 3:15 B 18:07 तक, गण्डमूल 10:36 तक, स.सि. योग C बुध कृत्तिका में 16:14, रवियोग 8:38 बाद D मेष में 15:36, गण्डमूल 27:16 से E **पञ्चक समाप्त** 25:40

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

श्रीगणेशचतुर्थी व्रतः- ज्येष्ठकृष्ण चतुर्थी सर्वदा चन्द्रोदय व्यापिनी ग्रहण की जाती है। प्रातः स्नानादि नित्य कृत्य के पश्चात् दिन भर मौन व्रत रखें। सायं पुनः स्नान ध्यानादि के बाद श्रीगणेश एवं चन्द्रोदय होने के बाद चन्द्रमा की पूजा के उपरान्त शंख में दूध, दूर्वा, सुपारी और गन्धाक्षत दोनों हाथ में लेकर निम्न मन्त्र से चन्द्रमा को अर्घ्य दें, **"ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥"** श्रीगणेश जी को अर्घ्य देने का मन्त्र :- **"गौरी सुत नमस्तेऽस्तु सततं मोदक प्रिय। सर्वसंकटनाशाय गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥" अपरा एकादशी व्रतः**- एकादशी का व्रती दशमी के दिन जौ, गेहूँ और मूंगी के पदार्थों का दिन में एक बार भोजन करें, एकादशी के दिन नित्यकृत्य के पश्चात् उपवास धारक एवं द्वादशी को पारण करें। इस एकादशी का नाम अपरा, अचला एवं भद्रकाली शास्त्रों में प्रसिद्ध है। इस व्रत से अनन्त पापों का नाश होता है। जो उत्तम वैद्य होने पर भी किसी की चिकित्सा न करे, सर्वशास्त्रज्ञ होते हुए भी अनाथों को न पढ़ाए, सच्चरित्र राजा होकर भी अनाथ प्रजा की रक्षा न करे, धनी होकर भी निर्धनों पर दया न करे ऐसे लोग नरक के अधिकारी (शेष पृष्ठ 203 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	7 जून से 22 जून	सूर्योत्तरायणे, ग्रीष्म/वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	जून		सू.	उ.	सू.	अ.
14	06	1	शुक्र	28	16	16	45	मृग	35	40	19	43	शूल	20	04	ब	16	45	मि. 7:55	17	25	7	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, सिद्धियोग, शुक्र मृग्शिरा में 8:17,A	05	27	19	32
14	06	2	शनि	26	12	15	56	आर्द्रा	35	39	19	42	गंड	18	27	कौ	15	56	मिथुन	18	26	8	रम्भा व्रत	05	27	19	33
14	07	3	रवि	25	45	15	45	पुन	37	14	20	20	वृद्धि	17	20	ग	15	45	कर्क 14:06	19	27	9	**श्रीराणाप्रताप जयन्ती,** भद्रा 27:53 से, पार्वती पूजा व्रत	05	27	19	33
14	07	4	सोम	27	02	16	15	पुष्य	40	32	21	40	ध्रुव	16	47	वि	16	15	कर्क	20	28	10	भद्रा 16:15 तक, स.सि.योग, गण्डमूल 21:40 से, रवियोग	05	27	19	34
14	08	5	मंग	30	02	17	28	आश्ले	45	30	23	39	व्याघा	16	47	बा	17	28	सिंह 23:38	21	29	11	स.सि. योग, गण्डमूल, बुध मृगशिरा में 22:11	05	27	19	34
14	08	6	बुध	34	36	19	17	माघ	51	53	26	12	हर्षना	17	15	कौ	06	18	सिंह	22	30	12	अमृतयोग, गण्डमूल 26:12 तक, शुक्र मिथुन में 18:29, रवियोग	05	27	19	34
14	08	7	गुरु	40	18	21	34	पू.फा.	59	14	29	08	वज्र	18	05	ग	08	23	सिंह	23	31	13	भद्रा 21:34 से, गुरु रोहिणी 5:36	05	27	19	35
14	08	8	शुक्र	46	34	24	04	उ.फा.	60	00	00	00	सिद्धि	19	07	वि	10	48	कन्या 11:54	24	आ.	14	**आषाढ़ संक्रांति**, सूर्य मिथुन में रात्रि 12:25, बुध मिथुन B	05	27	19	35
14	09	9	शनि	52	45	26	33	उ.फा.	06	57	08	14	व्यती	20	10	बा	13	20	कन्या	25	2	15	सिद्धियोग	05	27	19	36
14	09	10	रवि	53	12	28	44	हस्त	14	24	11	13	वरिय	21	02	तै	15	41	तुला 24:34	26	3	16	**श्री गंगा दशहरा,** अमृतयोग, स.सि. योग, रवियोग	05	27	19	36
14	09	11	सोम	60	00	00	00	चित्रा	20	58	13	50	परिघा	21	34	व	17	39	तुला	27	4	17	शुक्र आर्द्रा में 28:43, बुध आर्द्रा में 24:08, भद्रा 17:39 से रवियोग	05	27	19	36
14	09	11	मंग	02	25	06	25	स्वाति	26	12	15	56	शिव	21	39	वि	06	25	तुला	28	5	18	**निर्जला एकादशी व्रत,** भद्रा 6:25 तक, जलधेनुदानमहत्त्व	05	27	19	36
14	09	12	बुध	05	2	07	28	विशा	29	49	17	23	सिद्ध	21	11	बा	07	28	वृ. 11:04	29	6	19	**प्रदोष व्रत,** वटसावित्री व्रतारम्भः, मंगलभरणी में 14:58, C	05	27	19	37
14	10	13	गुरु	05	57	07	50	अनु	31	46	18	10	साध्य	20	12	तै	07	50	वृश्चिक	30	7	20	सा.सू. कर्क में, सायन दक्षिणायन प्रारंभ 26:10, **वर्षा ऋतु प्रारंभ** D	05	27	19	37
14	10	14	शुक्र	05	11	07	32	ज्येष्ठ	32	07	18	19	शुभ	18	42	व	07	32	धनु 18:19	31	8	21	**श्रीसत्यनारायण व्रत,** भद्रा 7:32 से 19:10 तक, E	05	28	19	37
14	10	15	शनि	02	54	06	38	मूला	31	06	17	54	शुक्ल	16	45	ब	06	38	धनु	आ.	9	22	**पूर्णिमाव्रत, सन्तकबीर जयंती,** भा.आषाढ़ारम्भः, गण्डमूल F	05	28	19	37

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 14 जून सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
01	04	00	01	01	02	10	11	05
29	26	09	28	10	01	25	17	17
14	51	21	23	13	47	01	56	56
48	07	09	04	07	06	04	02	02
57	708	34	131	13	73	01	03	03
19	42	53	59	58	57	05	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उअ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
मृग्	उ.फा.	अश्वि	मृग्	रोहि	मृग्	पू.भा.	रेव	हस्त
2	1	3	2	1	3	2	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:27

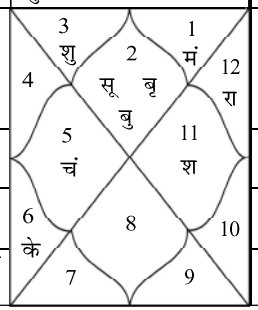

पूर्णिमायां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 22 जून सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	08	00	02	01	02	10	11	05
06	06	15	15	12	11	25	17	17
52	17	14	40	02	37	10	30	30
56	49	03	02	02	02	08	08	08
57	804	43	113	13	73	00	03	03
13	14	58	56	54	57	59	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
आर्द्रा	मूल	भर	आर्द्रा	रोहि	आर्द्रा	पू.भा	रेव	हस्त
1	2	1	3	1	2	2	1	3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:28

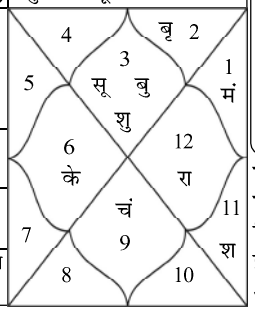

A सूर्य मृग. में 25:04 B में 23:04, भद्रा 10:50 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती C सिद्धियोग D गण्डमूल 18:10 से अमृतयोग, स.सि.योग E सूर्य आर्द्रा में रात्रि 12:05, गण्डमूल, अमृतयोग F 17:54 तक, **श्रीगुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

पार्वती पूजा व्रतः- ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया तिथि में भगवती पार्वती का जन्म हुआ है। इसको पार्वती जयन्ती भी कहा जाता है अतः स्त्रियों को सुख, सौभाग्य, पुत्र-पौत्रादि प्राप्ति के लिए प्रति मास व्रत करना चाहिए। निर्णयामृते। **दशहरा पर्वः**- ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन भगीरथी की प्रार्थना से हस्त नक्षत्र में गंगा की उत्पत्ति मानी जाती है। इस दिन दश प्रकार के योग पाए जाते हैं। (1) ज्येष्ठ मास (2) शुक्ल पक्ष (3) दशमी तिथि, बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात, गरकरण, आनन्द योग, वृष राशि में सूर्य, कन्या का चन्द्रमा। इस दिन गंगा स्नान, दान, जप, तप, व्रत, होम एवं उपवास उत्तम माने जाते हैं, यदि ज्येष्ठ मास मलमास आने पर यह योग बने तो अधिक पुण्यप्रद होता है, इस दशहरा के योग पर काशी में दशश्वमेधघाट पर, हरिद्वार कनखल में भगवान शिव की पूजा, रात्रि जागरण अनन्त फलदायक माना जाता है अथवा कहीं भी नीचे लिखे मन्त्र से स्नान करने पर उक्त फल प्राप्त होता है। **"हरिद्वारे कुशावर्ते विल्वके नीलपर्वते। कनखले च पुनः स्नात्वा पुनर्जन्म न विद्यते"।। जलधेनु दान महत्वः**- गोदान के स्थानपर केवल सोना, चान्दी, ताम्बादि कलश में डाल (शेष पृष्ठ 203 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 **आषाढ़ कृष्ण पक्ष** शाकः 1946, सन् 2024 ई. **23 जून से 5 जुलाई** सूर्योदक्षिणायने, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श आषा.	वि आषा.	अं जून	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
0	0	1	शनि	59	24	29	13	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदातिथि क्षय	0	0	0	0
14	09	2	रवि	54	55	27	26	पू.षा.	28	58	17	04	ब्रह्मा	14	26	तै	16	22	मकर 22:47	2	10	23	**त्रयोदशदिनात्मक पक्ष**	05	28	19	38
14	09	3	सोम	49	47	25	23	उ.षा.	26	04	15	54	ऐन्द्र	11	51	व	14	26	मकर	3	11	24	भद्रा 14:26 से 25:23 तक, बुध पुन. में 8:12, A	05	28	19	38
14	09	4	मंग	44	16	23	11	श्रवण	22	39	14	32	वैधृति	09	05	ब	12	18	कुंभ 25:48	4	12	25	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चंद्रोदय जम्मू 22:29, **पञ्चक प्रारंभ** 25:48	05	29	19	38
14	09	5	बुध	38	36	20	55	धनि	19	00	13	05	विष्कं॰ प्रीति	06 27	14 14	कौ	10	04	कुम्भ	5	13	26		05	29	19	38
14	10	6	गुरु	32	56	18	40	शत	15	18	11	37	आयु.	24	28	ग	07	47	मीन 28:31	6	14	27	भद्रा 18:40 से 29:33 तक	05	29	19	38
14	08	7	शुक्र	27	24	16	28	पू.भा.	11	42	10	11	सौभा.	21	38	वि	05	33	मीन	7	15	28	शुक्र पुन. में 25:12, रवियोग	05	30	19	38
14	08	8	शनि	22	05	14	20	उ.भा.	08	18	08	49	शोभना	18	54	कौ	14	20	मीन	8	16	29	**शनि वक्री** 24:38, **बुध कर्क में** 12:26, गण्डमूल 8:49 से	05	30	19	38
14	08	9	रवि	17	02	12	20	रेवती	05	09	07	34	अतिगंड	16	14	ग	12	20	मेष 7:34	9	17	30	भद्रा 23:22 से, गण्डमूल, **पञ्चक समाप्त** 7:34	05	30	19	38
14	07	10	सोम	12	19	10	26	अश्वि॰ भरणी	02 59	18 50	06 29	26 27	सुकर्मा	13	41	वि	10	26	मेष	10	18	जुला	भद्रा 10:26 तक, अमृतयोग, बुध पुष्य में 8:34, गण्डमूल B	05	31	19	38
14	07	11	मंग	07	58	08	43	कृत्ति	57	51	28	40	धृति	11	16	बा	08	43	वृष 11:13	11	19	2	**योगिनी एकादशी व्रत,** स.सि. योग	05	31	19	38
14	06	12	बुध	04	07	07	11	रोहि	56	29	28	07	शूल	09	01	तै	07	11	वृष	12	20	3	**प्रदोष व्रत,** सिद्धियोग व्रत, स.सि. योग	05	32	19	38
14	06	13	गुरु	00	55	05	54	मृग	55	56	27	55	गंड	06	59	व	05	54	मिथुन 15:57	13	21	4	भद्रा 5:54 से 17:23 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत**	05	32	19	38
0	0	14	गुरु	58	35	28	58	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
14	05	30	शुक्र	57	16	28	27	आर्द्रा	56	24	28	06	ध्रुव	27	48	च	16	39	मिथुन	14	22	5	**देवपितृकार्येऽमावस,** सूर्य पुन. में 23:39	05	33	19	38

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 29 जून सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	11	00	02	01	02	10	11	05
13	14	20	29	13	20	25	17	17
33	43	19	28	35	13	13	08	08
25	25	03	02	00	02	08	05	05
57	848	43	112	13	73	00	03	03
12	29	03	53	51	57	02	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
आर्द्रा	उ.भा.	भर	पुन	रोहि	पुन	पू.भा.	रेव	हस्त
3	4	3	3	2	1	2	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:30

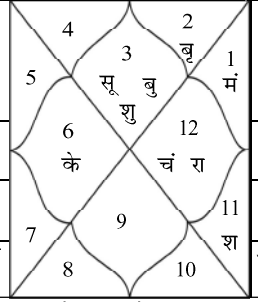

अमावस्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 5 जुलाई सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	02	00	03	01	02	10	11	05
19	07	24	09	14	27	25	16	16
16	33	38	57	52	35	12	49	49
44	35	00	05	07	06	04	05	05
57	806	42	109	12	73	00	03	03
14	26	59	56	58	58	05	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
आर्द्रा	आर्द्रा	भर	पुष्य	रोहि	पुन	पू.भा	रेव	हस्त
4	1	4	2	2	3	2	1	3

कुण्डली अमावस प्रातः 5:33

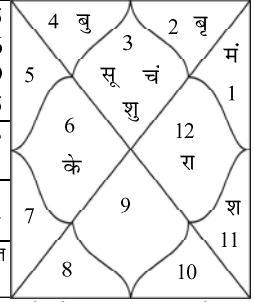

Aबुधोदयः पश्चिमे 22:20 B 6:26 तक

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– **योगिनी एकादशी व्रतः**– आषाढ़ कृष्ण एकादशी आने पर प्रातः नित्यकृत्य के पश्चात् **"सकल दुरित क्षयपूर्वक दुर्नाम रोगादि निवृत्ति कामनया योगिनी एकादशी व्रतमहं करिष्ये।"** इस संकल्प के पश्चात पुण्डरीकाक्ष श्रीनारायण का विधिपूर्वक पूजन कर चरणामृत लेकर उससे सब अंगों का मार्जन करे और उपवास में रात्रि जागरण से समस्त दुर्नाम रोगों से मुक्ति हो जाती है, यक्षराज कुबेर के शाप से हेममाली को चर्म रोग हो गया तब मार्कण्डेय जी की शरण में गया तो उनकी आज्ञा से योगिनी एकादशी व्रत को विधिपूर्वक करने से व्याधि मुक्त होकर पुनः कुबेर की सेवा में नियुक्त हो गया। **प्रदोष व्रतः**– यह व्रत पूर्वोक्त विधि से प्रत्येक त्रयोदशी के दिन सायं गौरीशङ्कर की आराधना में संलग्न होकर करना चाहिए। इसकी विधि पहले वर्णन कर चुके हैं। **लोक भविष्यः**– पुनर्वसु में बुध होने से छोटे बालकों को पीड़ा, कुछ रोगों की उत्पत्ति हो, कपास एवं सूत मन्दा हो, अनावृष्टि से किसानों को कष्ट हो, कहीं-कहीं प्राकृतिक आपदा हो मध्यभारत, महाराष्ट्र प्रान्तों में उपद्रव हों, गौधन को पीड़ा हो, खाद्य पदार्थ महंगे हों। तपस्वी साधुसन्तों के आश्रमों में पीड़ा हो व्यवस्था भङ्ग हो, तुषधान्य प्रचुर मात्रा मे उत्पन्न हों, दुर्भिक्ष (भूखमरी) भय तथा चोरों का अतंक जारी रहे, विद्याधरों के युद्ध में विमर्द हों। **आकाशलक्षणम्:**– वर्षा मे कभी, गर्मी अधिक, भारत के पूर्वदक्षिणी प्रान्तों में महाराष्ट्र, आसाम, केरल, उड़ीस में पर्याप्त वर्षा के योग हैं।

श्रीविक्रमी संवत् 2081	आषाढ़ शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	6 जुलाई से 21 जुलाई	दक्षिणायने, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घण्टे	दिनमान मिनट	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घं॰मि॰	श आषा.	वि आषा.	अं जुला.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
14	04	1	शनि	57	13	28	26	पुन	58	06	28	48	व्याघा	26	47	किं	16	23	कर्क 22:33	15	23	6	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, **गुप्तनवरात्र प्रारम्भ,** अमृतयोग, A	05	33	19	37
14	04	2	रवि	58	35	29	00	पुष्य	60	00	00	00	हर्षना	26	12	बा	16	39	कर्क	16	24	7	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), शुक्रोदयः पश्चिमे 5:34 श्रीजगदीशरथ B	05	34	19	37
14	03	3	सोम	60	00	00	00	पुष्य	01	11	06	03	वज्र	26	06	तै	17	30	कर्क	17	25	8	गण्डमूल 6:03 से **शुक्र उदय 7 जुलाई**	05	34	19	37
14	02	3	मंग	01	26	06	09	आश्ले	05	44	07	53	सिद्धि	26	26	ग	06	09	सिंह 7:53	18	26	9	भद्रा 18:51 से, गण्डमूल, शुक्र पुष्य में 21:36 बुध आश्ले C	05	35	19	37
14	01	4	बुध	05	43	07	52	माघ	11	40	10	15	व्यती	27	09	वि	07	52	सिंह	19	27	10	भद्रा 7:52 तक, गण्डमूल 10:15 तक, रवियोग	05	35	19	37
14	01	5	गुरु	11	10	10	04	पू.फा.	18	41	13	04	वरिय	28	09	बा	10	04	कन्या 19:48	20	28	11	**स्कन्दषष्ठी,** सिद्धियोग	05	36	19	36
14	00	6	शुक्र	17	22	12	33	उ.फा.	26	21	16	09	परिघा	29	14	तै	12	33	कन्या	21	29	12	सिद्धियोग, **मंगल वृष में** 18:57, रवियोग	05	36	19	36
13	59	7	शनि	23	42	15	06	हस्त	34	04	19	15	शिव	0	0	व	15	06	कन्या	22	30	13	भद्रा 15:06 से 28:19 तक	05	37	19	36
13	58	8	रवि	29	32	17	26	चित्रा	41	12	22	06	शिव	06	15	ब	17	26	तुला 8:42	23	31	14	**श्रीदुर्गाष्टमी**	05	37	19	35
13	57	9	सोम	34	14	19	20	स्वाति	47	09	24	30	सिद्ध	07	00	बा	06	27	तुला	24	32	15	**श्रीदुर्गानवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त,** भढली नवमी, रवियोग	05	38	19	35
13	56	10	मंग	37	18	20	34	विशा	51	27	26	14	साध्य	07	18	तै	08	02	वृ. 19:51	25	श्रा.	16	**श्रावण संक्रांति, सूर्य कर्क में** 11:17, निरयनदक्षिणायनारम्भः D	05	39	19	34
13	55	11	बुध	38	29	21	03	अनु	53	53	27	13	शुभ	07	03	व	08	54	वृश्चिक	26	2	17	**हरिशयनी एकादशी व्रत,** भद्रा 8:54 से 21:03 तक गण्डमूलE	05	40	19	34
13	54	12	गुरु	37	42	20	45	ज्येष्ठ	54	23	27	25	शुक्ल ब्रह्म	06 28	12 44	ब	09	00	धनु 27:25	27	3	18	**श्रावणे वर्जयेच्छाकम्,** गण्डमूल	05	40	19	34
13	53	13	शुक्र	35	03	19	42	मूला	53	06	26	55	ऐन्द्र	26	41	कौ	08	19	धनु	28	4	19	**प्रदोष व्रत,** बुध मघा (सिंह) में 20:45 सूर्य पुष्य में 23:10,F	05	40	19	33
13	52	14	शनि	30	47	18	00	पू.षा.	50	19	25	49	वैधृति	24	07	ग	06	55	धनु	29	5	20	**श्रीसत्यनारायण व्रत,** शुक्र आश्लेषा में 18:02, भद्रा 18:00 G	05	41	19	33
13	50	15	रवि	25	13	15	47	उ.षा.	46	21	24	14	विष्कुं	21	11	ब	15	47	मकर 7:26	30	6	21	**श्रीगुरु व्यास पूर्णिमा,** अमृतयोग, स.सि.योग	05	42	19	32

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 14 जुलाई सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
02	05	01	03	01	03	10	11	05
27	28	01	23	16	08	25	16	16
51	24	00	16	45	39	03	20	20
45	39	08	00	01	02	07	08	08
57	710	42	79	12	73	01	03	03
13	20	02	58	52	57	54	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुन	चित्रा	कृत्ति	आश्ले	रोहि	पुष्य	पू.भा	उ.भा.	हस्त
3	2	2	2	3	2	2	4	2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:37

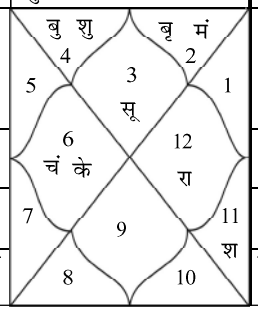

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 21 जुलाई सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	08	01	04	01	03	10	11	05
04	28	05	01	18	17	24	15	15
32	51	53	25	08	15	51	58	58
22	11	08	07	07	02	06	06	06
57	841	41	62	11	73	02	03	03
15	13	06	02	07	57	00	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य	उ.षा.	कृत्ति	मघा	रोहि	आश्ले	पू.भा.	उ.भा.	हस्त
1	1	3	1	3	1	2	4	2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 5:42

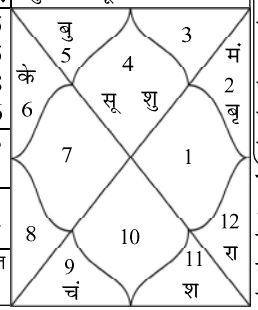

A **शुक्र कर्क में** 28:30 B यात्रा, राहु उ. भा. 4, केतु हस्त 2 में 28:55, मंगल कृत्तिका में 25:56, **रविपुष्य योग** C में 12:26, स.सि. योग D रवियोग E 27:13 से, **चतुर्मास व्रतारम्भः** अमृतयोग, स.सि. योग F गण्डमूल 26:55 तक G से 28:53 तक सिद्धियोग, आषाढ़ी योग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

श्रीजगदीशरथ यात्राः– आषाढ़ शुक्ल द्वितीया पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो सुभद्रा सहित भगवान जगन्नाथ जी को रथ में विराजमान करके यात्रा करवाकर पुनः अपने स्थान पर प्रतिष्ठित कर दें। **स्कन्दषष्ठी व्रतः–** यह व्रत आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी युक्त षष्ठी के दिन किया जाता है, भगवान कार्तिक स्वामी का विधिवत् पूजन कर एकहारी रह कर यह व्रत करने से सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं, इसी व्रत को दक्षिण भारत में कौमार व्रत कहते हैं। **महिषामर्दिनी दुर्गा व्रतः–** आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक ग्रीष्म नवरात्र विधान देवी भागवत में प्रतिपादित है अतः प्रतिपदा से लेकर अष्टमी तक नवरात्र विधान चलता है। अष्टमी के दिन उपवास रखकर हरिद्रा जल से स्नान कर उसी जल से भगवती दुर्गा को स्नान करवा कर चन्दनादि से विधिवत् पूजा कर के नैवेद्य में घृत, मिश्री और जौ के पक्वान्न को अर्पन करे नवमी के दिन ब्रह्म कुमारी पूजन द्वारा इष्टसिद्धि प्राप्त होती है। (देवी भागवते) **देवशयनी एकादशीव्रतः–** आषाढ़ शुक्ल एकादशी का नाम हरिशयनी है। इस दिन व्रत रखकर अपनी शक्ति के अनुसार सोना, चान्दी, ताम्बा या पीतल की प्रतिमा बनाकर (शेष पृष्ठ 204 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	श्रावण कृष्ण पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	22 जुलाई से 4 अगस्त	सूर्योत्तरायणे, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श आषा.	वि श्राव.	अं जुला.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
13	49	1	सोम	18	44	13	12	श्रवण	41	36	22	21	प्रीति	17	58	कौ	13	12	मकर	31	7	22	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा, **श्रावण सोमवार नक्त व्रतारम्भः**, सा.सू. A	05	42	19	31
13	48	2	मंग	11	41	10	24	धनि	36	28	20	18	आयु.	14	35	ग	10	24	कुंभ 9:19	श्राव.	8	23	भद्रा 20:57 से, **पञ्चक प्रारंभ** 9:19, अमृतयोग, द्विपुष्कर योगB	05	43	19	31
13	47	3	बुध	04	27	07	31	शत	31	16	18	14	सौभा.	11	10	वि	07	31	कुम्भ	2	9	24	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मू, 21:43 भद्रा 7:31 तक	05	44	19	30
0	0	4	बुध	57	21	28	40	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
13	45	5	गुरु	50	36	25	59	पू.भा.	26	20	16	16	शोभना अतिगंड	07 28	48 35	कौ	15	18	मीन 10:44	3	10	25	**नाग पञ्चमी** (मरूस्थले), सिद्धियोग	05	44	19	30
13	44	6	शुक्र	44	24	23	31	उ.भा.	21	53	14	30	सुकर्मा	25	32	ग	12	43	मीन	4	11	26	भद्रा 23:31 से, गण्डमूल 14:30 से सिद्धियोग मंगल रोहिणीC	05	45	19	29
13	43	7	शनि	38	55	21	20	रेवती	18	05	13	00	धृति	22	44	वि	10	23	मेष 13:00	5	12	27	भद्रा 10:23 तक, गण्डमूल, **शीतला सप्तमी व्रत,** रवियोग, D	05	46	19	28
13	41	8	रवि	34	14	19	28	अश्वि	15	03	11	48	शूल	20	11	बा	08	21	मेष	6	13	28	गण्डमूल 11:48 तक, स.सि. योग	05	46	19	28
13	40	9	सोम	30	23	17	56	भरणी	12	50	10	55	गंड	17	55	तै	06	39	वृष 16:44	7	14	29	भद्रा 29:18 से, **श्रीगुरु हरकिशन जयन्ती**	05	47	19	27
13	39	10	मंग	27	24	16	45	कृत्ति	11	29	10	23	वृद्धि	15	56	वि	16	45	वृष	8	15	30	भद्रा 16:45 तक, स.सि.योग	05	47	19	26
13	37	11	बुध	25	19	15	56	रोहि	11	01	10	13	ध्रुव	14	14	बा	15	56	मि. 22:15	9	16	31	**कामिका एकादशी व्रत,** अमृतयोग, शुक्र सिंह में 14:32	05	48	19	25
13	36	12	गुरु	24	11	15	29	मृग	11	27	10	24	व्याघा	12	50	तै	15	29	मिथुन	10	17	अग.	**प्रदोष व्रत,** लोकमान्य तिलक जयन्ती	05	49	19	24
13	34	13	शुक्र	24	03	15	27	आर्द्रा	12	53	10	59	हर्षना	11	45	व	15	27	मिथुन	11	18	2	भद्रा 15:27 से 27:37 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** सूर्य E	05	50	19	24
13	33	14	शनि	25	01	15	51	पुन	15	21	11	59	वज्र	11	01	श	15	51	कर्क प्रा.5:40	12	19	3	सिद्धियोग	05	50	19	23
13	31	30	रवि	27	10	16	43	पुष्य	18	58	13	26	सिद्धि	10	38	ना	16	43	कर्क	13	20	4	**देवपितृकार्येऽमावस,** हरियाली अमावस, गण्डमूल 13:26 F	05	51	19	22

अष्टम्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 28 जुलाई सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	00	01	04	01	03	10	11	05
11	09	10	07	19	25	24	15	15
13	40	42	12	28	51	35	36	36
23	52	05	07	04	01	01	03	03
57	833	40	35	04	73	02	03	03
20	15	59	55	01	07	56	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य	अश्वि	रोहि	मघा	रोहि	आश्ले	पू.भा.	उ.भा.	हस्त
3	3	1	3	3	3	2	4	2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:46

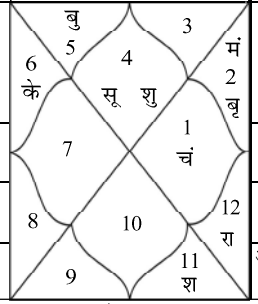

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 4 अगस्त सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	03	01	04	01	04	10	11	05
17	12	15	09	20	04	24	15	15
55	32	26	50	43	27	14	14	14
02	38	06	05	07	00	06	01	01
57	745	40	03	10	73	03	03	03
29	21	02	56	54	07	03	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आश्ले	पुष्य	रोहि	मघा	रोहि	मघा	पू.भा	उ.भा	हस्त
1	3	2	3	4	2	2	4	2

कुण्डली अमावस प्रातः 5:51

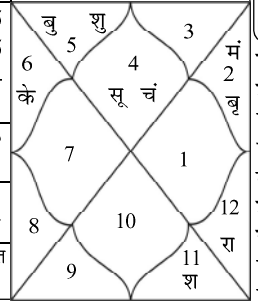

A सिंह में 13:30, स.सि.योग B 10:24 तक C में 28:36 D **पञ्चक समाप्त** 10:44 Eआश्लेषा में 22:05 F से रविपुष्य योग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधानः–

शीतला सप्तमी व्रतः- यह व्रत श्रावण कृष्ण सप्तमी को मनाया जाता है। मध्याह्न व्यापिनी सप्तमी व्रत में ग्रहण करें प्रातः स्नानादि के पश्चात **शीतला रोगोपद्रव शमन हेतवे दीर्घायुरारोग्य आदि प्राप्ति हेतवे शीतला सप्तमी व्रत करिष्ये** गन्धपुष्पादि से शीतला माता की पूजा करके शीतल पदार्थों के भोग अर्पण करें, शीतला स्तोत्र पाठ, रात्रि जागरण दीपावली सम्पन्न करें, चैत्र में शीतल पदार्थ वैशाख में घी शक्कर ज्येष्ठ में वासे पूड़े, आषाढ़ में घी शक्कर अर्पण करें, इस व्रत से कुल में ज्वर, फोड़ा फींसी, चक्षुरोग तथा शीतला द्वारा होने वाले रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है। शीतला द्वारा पीड़ित व्यक्तियों के लिए गधे की लीद की गन्ध एवं गधी के दूध से शरीर पर फींसियां की जलन तथा ज्वरदाह से शान्ति हो। शज्ज और झाड़ू पास रखने से शीतला शान्त हो। नीम के पत्तों से फोड़ों की सड़न दूर हो। शीतल जल का घड़ा पास रखने से हर प्रकार के दुःस्वप्नों से शान्ति मिले। **कामदा एकादशी व्रतः**- श्रावणकृष्ण एकादशी का व्रत धारण कर राधा दामोदर की पूजा करें, तुलसीदल अर्पण करें तथा घृत ज्योति अर्पित कर यथा शक्ति ब्राह्मण को दान देने से अनन्त फल प्राप्त होता है। **प्रदोष व्रतः**- श्रावण में प्रदोष काल में शिवमन्दिर में बैठकर सूर्यास्त के बाद दो घड़ी तक शिवपूजा के पश्चात् भोजन करें इस के (शेष पृष्ठ 204 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	श्रावण शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	5 अगस्त से 19 अगस्त	सूर्योदक्षिणायने, वर्षा ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घण्टे	दिनमान मिनट	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घं॰मि॰	श श्राव.	वि श्राव.	अं अग.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
13	30	1	सोम	30	30	18	04	आश्ले	23	44	15	21	व्यती	10	38	ब	18	04	सिंह 15:21	14	21	5	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा, बुध वक्री 10:26, गण्डमूल, बुधास्त: A	05	52	19	21
13	28	2	मंग	35	01	19	53	माघ	29	39	17	44	वरिय	10	59	बा	06	55	सिंह	15	22	6	चन्द्र दर्शनम् (30 मु.), अमृतयोग, गण्डमूल 17:44 तक	05	52	19	20
13	26	3	बुध	40	33	22	06	पू.फा.	36	33	20	30	परिघा	11	41	तै	08	56	कन्या 27:14	16	23	7	**मधुस्त्रवा तृतीया**	05	53	19	19
13	25	4	गुरु	46	48	24	37	उ.फा.	44	11	23	34	शिव	12	39	व	11	20	कन्या	17	24	8	भद्रा 11:20 से 24:37 तक, **दूर्वागणपति व्रत**, रवियोग	05	54	19	18
13	23	5	शुक्र	53	20	27	15	हस्त	52	05	26	44	सिद्ध	13	45	बा	13	56	कन्या	18	25	9	**नागपञ्चमी**, नागदंष्ट व्रत	05	54	19	17
13	21	6	शनि	59	36	29	46	चित्रा	59	44	29	49	साध्य	14	52	कौ	16	32	तुला 16:17	19	26	10	**कल्की जयंती**, वर्णषष्ठी, अमृतयोग रवियोग	05	55	19	16
13	20	7	रवि	60	00	00	00	स्वाति	60	00	00	00	शुभ	15	48	ग	18	54	तुला	20	27	11	**शीतला सप्तमी, तुलसी जयन्ती**, शुक्र पू.फा. में 11:07	05	56	19	15
13	18	7	सोम	04	58	07	56	स्वाति	06	31	08	33	शुक्ल	16	25	व	07	56	वृ. 28:14	21	28	12	भद्रा 7:56 से 20:42 तक	05	56	19	14
13	16	8	मंग	08	57	09	32	विशा	11	58	10	44	ब्रह्मा	16	33	ब	09	32	वृश्चिक	22	29	13	सिद्धियोग, **मङ्गलागौरी व्रत, श्रीदुर्गाष्टमी**	05	57	19	13
13	15	9	बुध	11	06	10	24	अनु	15	37	12	13	ऐन्द्र	16	5	कौ	10	24	वृश्चिक	23	30	14	स.सि.योग, गण्डमूल 12:13 से	05	58	19	12
13	13	10	गुरु	11	11	10	27	ज्येष्ठ	17	16	12	53	वैधृति	14	58	ग	10	27	धनु 12:52	24	31	15	भद्रा 22:07 से, **भारतीय स्वतन्त्रता दिवस**, मंगल मृग्शिरा B	05	58	19	11
13	11	11	शुक्र	09	12	09	40	मूला	16	51	12	44	विष्कुं	13	11	वि	09	40	धनु	25	भाद्र	16	**भाद्रपद संक्रान्ति**, सूर्य सिंह में रात्रि 7:43, गण्डमूल 12:44 तक C	05	59	19	10
13	09	12	शनि	05	16	08	06	पू.षा.	14	32	11	49	प्रीति	10	47	बा	08	06	मकर 17:28	26	2	17	**प्रदोष व्रत, दधिभक्षणत्यागः भाद्रपदे**	06	00	19	09
0	0	13	शनि	59	40	29	52	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	त्रयोदशी तिथि क्षय	0	0	0	0
13	08	14	रवि	52	41	27	05	उ.षा.	10	36	10	15	आयु. सौभा.	07 28	50 27	ग	16	32	मकर	27	3	18	भद्रा 27:05 से, स.सि.योग, रवियोग 10:15 तक	06	0	19	08
13	06	15	सोम	44	46	23	56	श्रवण धनि.	05 59	23 20	08 29	10 45	शोभना	24	47	वि	13	33	कुंभ 19:00	28	4	19	**रक्षाबन्धन (रक्खड़ी) भद्रावाद, पूर्णिमाव्रत, श्रीसत्यनारायणव्रत**, D	06	01	19	07

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 13 अगस्त सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
03	07	01	04	01	04	10	11	05
26	00	21	07	22	15	23	14	14
32	38	24	15	13	30	42	45	45
59	50	03	00	01	01	09	05	05
57	730	39	37	09	73	03	03	03
35	42	02	05	55	57	58	11	11
शी	शी	मा	व	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
आश्ले	विशा	रोहि	मघा	रोहि	पू.फा	पू.भा	उ.भा	हस्त
3	4	4	3	4	1	2	4	2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 5:57

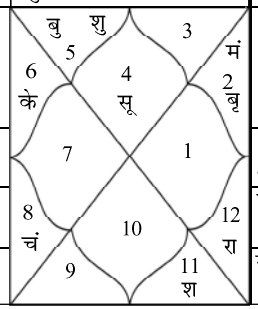

पूर्णिमायां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 19 अगस्त सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	09	01	04	01	04	10	11	05
02	21	25	02	23	22	23	14	14
18	42	17	27	07	51	19	26	26
53	17	07	07	06	07	02	04	04
57	888	38	50	08	73	04	03	03
43	51	55	58	56	56	01	11	11
शी	शी	मा	व	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा	श्रव	मृग्	मघा	रोहि	पू.फा.	पू.भा	उ.भा	हस्त
1	4	1	1	4	3	1	4	2

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:01

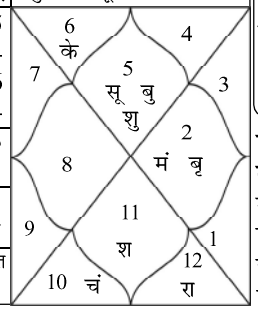

A पश्चिमे 27:25 B में 28:33, गण्डमूल सिद्धियोग रवियोग C **पवित्रा एकादशी व्रत**, भद्रा 9:40 तक D **भद्रा** 13:33 **तक**, **पञ्चक प्रारंभ** 19:00, श्रावणी, अर्थवर्वेदि, ऋग्वेदि उपाकर्म, अमृतयोग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

दुर्वागणपतिः- श्रावण शुक्ल चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी लें। प्रातः स्नानादि के पश्चात् स्वर्णमय सिंहासन पर श्रीगणेश जी की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित कर स्वर्ण दूर्वा चढ़ाकर सर्वतोभद्र मण्डल पर कलश की पूजा कर उस पर स्वर्ण सिंहासन स्थापित करें। पूजादि के पश्चात् श्रीगणेश जी को अर्घ देकर नैवैद्य ग्रहण करें। तीन या पाँच वर्षों तक करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। **दुर्गाष्टमी व्रतः**- श्रावण शुक्ल अष्टमी में प्रातः स्नानादि के पश्चात् भीगे वस्त्रों में ही दुर्गा माँ को स्नान एवं पायस नैवैद्य लगा कर स्वयं भी ग्रहण करने से दुर्गा माँ की कृपा प्राप्त होती है। **मङ्गलागौरी व्रतः**- यह व्रत विवाह से पूर्व अथवा विवाहोत्तर पाँच वर्ष तक सौभाग्य प्राप्ति हेतु हर मङ्गलवार को किया जाता है। प्रातः नित्यकृत्य के पश्चात् सौभाग्यवती/सौभाग्याकांक्षणि सङ्कल्प करें- **"मम पुत्रपौत्र सौभाग्य प्राप्तये श्रीमङ्गलागौरी प्रीत्यर्थं पञ्च वर्ष पर्यन्तं मङ्गला गौरी व्रतं करिष्ये।"** एक पीठ पर गौरी माता की प्रतिमा स्थापित कर एक पिठ्ठा रख कर आटे का सोलहमुखी दीपक, सोलह बत्तियां डालकर घी से पूर्ण जलाकर गौरी पूजा करें, बाँस के पात्र में सुहाग पिटारी दान करें। दानमन्त्रः- **"अन्नंकञ्चुकि** (शेष पृष्ठ 204 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाकः 1946, सन् 2024 ई. **20 अगस्त से 3 सितंबर** सूर्योदक्षिणायने, वर्षा/शरद् ऋतौ, उत्तरगोलार्धे **दै. सूर्योदयास्त**

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			श्राव.	भाद्र.	अग.		सू.	उ.	सू.	अ.
13	04	1	मंग	36	18	20	33	शत	52	50	27	10	अतिगंड	20	55	ब	10	15	कुम्भ	29	5	20	गुरु मृग्शिरा में 16:14, भा.कृ. प्रतिपदा	06	02	19	06
13	02	2	बुध	27	42	17	07	पू.भा.	46	17	24	33	सुकर्मा	17	00	तै	06	50	मीन 19:11	30	6	21	भद्रा 27:23 से कज्जली तृतीया	06	02	19	04
13	00	3	गुरु	19	18	13	46	उ.भा.	40	06	22	06	धृती	13	10	वि	13	46	मीन	31	7	22	**संकट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 20:52, वक्री बुध A	06	03	19	03
12	59	4	शुक्र	11	29	10	39	रेवती	34	36	19	54	शूल	09	31	बा	10	39	मेष 19:54	भाद्र	8	23	**पञ्चक समाप्त** 19:54, अमृतयोग, गण्डमूल	06	04	19	02
12	57	5	शनि	04	30	07	52	अश्वि	30	03	18	06	गंड वृद्धि	06 27	08 01	तै	07	52	मेष	2	9	24	भद्रा 29:31 से, गण्डमूल 18:06 तक, **हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी,** B	06	04	19	01
0	0	6	शनि	58	37	29	31	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	षष्ठी तिथि क्षय	0	0	0	0
12	55	7	रवि	53	56	27	39	भरणी	26	40	16	45	ध्रुव	24	28	वि	16	31	वृष 22:29	3	10	25	भद्रा 16:31 तक, शीतला व्रत, रवियोग पुत्र व्रत	06	06	19	00
12	53	8	सोम	50	36	26	20	कृत्ति	24	34	15	55	व्याघा	22	16	बा	14	56	वृष	4	11	26	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** (सबका) दूर्वाष्टमी, मंगल C	06	05	18	59
12	51	9	मंग	48	38	25	34	रोहि	23	49	15	38	हर्षना	20	31	तै	13	53	मिथुन 27:40	5	12	27	**गुग्गा नवमी, मेला रैणा विरादरी सूञ्जवां, जम्मू** D	06	06	18	57
12	49	10	बुध	48	03	25	20	मृग	24	25	15	53	वज्र	19	11	व	13	23	मिथुन	6	13	28	भद्रा 13:12 से 25:20 तक, स.सि. योग, बुध मार्गी 26:43	06	07	18	56
12	47	11	गुरु	48	46	25	38	आर्द्रा	26	20	16	39	सिद्धि	18	17	ब	13	25	मिथुन	7	14	29	**अजा एकादशी व्रत**	06	07	18	55
12	45	12	शुक्र	50	43	26	26	पुन	29	29	17	56	व्यती	17	46	कौ	13	58	कर्क 11:33	8	15	30	वत्स पूजा, स.सि. योग, सूर्य पू.फा. में 15:45	06	08	18	54
12	44	13	शनि	53	51	27	41	पुष्य	33	47	19	40	वरिय	17	38	ग	15	00	कर्क	9	16	31	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 27:41 से, गण्डमूल 19:40 से	06	09	18	52
12	42	14	रवि	58	01	29	22	आश्ले	39	08	21	49	परिघा	17	50	वि	16	29	सिंह 21:49	10	17	सित.	भद्रा 16:29 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** गण्डमूल	06	09	18	51
12	40	30	सोम	60	00	00	00	माघ	45	25	24	20	शिव	18	19	च	18	21	सिंह	11	18	2	**पितृकार्येऽमावस, कुशाग्रहणी पिठोरी सोमवती अमावस,** E	06	10	18	50
12	38	30	मंग	03	06	07	25	पू.फा.	52	29	27	10	सिद्ध	19	05	ना	07	25	सिंह	12	19	3	देवकार्येऽमावस, श्रीशक्ति पूजा	06	11	18	48

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 26 अगस्त सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	01	01	03	01	05	10	11	05
09	04	29	27	24	01	22	14	14
03	03	44	45	05	26	49	04	04
25	01	05	00	03	05	03	01	01
57	817	37	18	07	73	04	03	03
54	55	57	55	57	55	54	11	11
शी	शी	मा	व	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मघा	कृति	मृग्	आश्ले	मृग्	उ.फा.	पू.भा.	उ.भा.	हस्त
3	3	2	4	1	2	1	4	2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:05

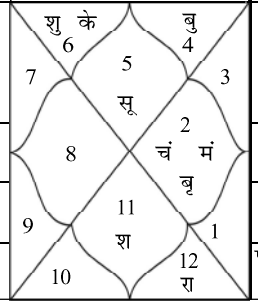

अमावस्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 3 सितम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	04	02	03	01	05	10	11	05
16	15	04	29	25	11	22	13	13
47	55	41	00	02	14	13	38	38
30	00	06	08	09	04	04	07	07
58	714	36	46	06	73	04	03	03
09	24	55	01	55	04	56	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा	पू.फा	मृग्	आश्ले	मृग्	हस्त	पू.भा.	उ.भा.	हस्त
2	1	4	4	1	1	1	4	2

कुण्डली अमावस प्रातः 6:11

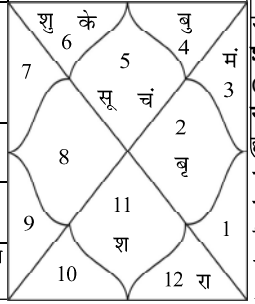

A आश्लेषा कर्क में 6:38, शुक्र उ.फा. में 7:59, भद्रा 13:46 तक, गण्डमूल 22:06 से, **सा.सू. कन्या में** 20:29, अमृतयोग, **शरद् ऋतु प्रारम्भ** B शुक्र कन्या में 25:12 C मिथुन में 15:22 D **गोकुलाष्टमी नन्दोत्सव** E गण्डमूल 24:20 तक, शुक्र हस्त में प्रातः 5:12

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

पुत्र व्रतः- भाद्रपद कृष्ण सप्तमी के दिन निराहार व्रत रख कर यशोदा सहित कृष्ण की पूजा करके दूसरे दिन प्रातः **"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन बल्लभाय स्वाहा"**। इस मन्त्र से घी में भिगोए तिलों को 108 आहुति देकर ब्राह्मण भोजन करा कर स्वयं विल्ब की गिरी खा कर भोजन करें अवश्य पुत्र हो। यह व्रत प्रत्येक मास में कृष्ण सप्तमी को किया जाता है। पूरे वर्ष के बाद इसी प्रकार व्रत करते हुए पति पत्नी सवत्सा दो गौएं दान करें (वराह पुराणे)। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतः**- भगवान श्रीकृष्ण जी का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र अर्धरात्रि के समय वृष लग्न एवं वृष के चन्द्रमा में हुआ था। शास्त्र में अष्टमी के शुद्धा एवं विद्धा दो भेद हैं, सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक शुद्धा और सप्तमी या नवमी से युक्त विद्ध कही जाती है। शुद्धा या विद्धा भी सम, न्यून या अधिक भेद से तीन प्रकार की होती है। इसी प्रकार शास्त्रकारों ने 18 भेद बनाए हैं किन्तु सिद्धान्त रूप में तत्काल व्यापिनी अर्थात् अर्धरात्र व्यापिनी अष्टमी अधिक महत्व पूर्ण होती है, स्मार्त लोग सप्तमी विद्धा को श्रेष्ठ मानते हैं और वैष्णव लोग नवमी (शेष पृष्ठ 204 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	**भाद्रपद शुक्ल पक्ष**	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	**4 सितंबर से 18 सितंबर**	सूर्योदक्षिणायने, शरद् ऋतौ, उत्तरगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			भाद्र.	भाद्र.	सित.		सू.	उ.	सू.	अ.
12	36	1	बुध	08	59	09	47	उ.फा.	60	00	00	00	साध्य	20	02	ब	09	47	कन्या 9:54	13	20	4	भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा, अमृतयोग	06	11	18	47
12	34	2	गुरु	15	24	12	22	उ.फा.	60	05	06	14	शुभ	21	08	कौ	12	22	कन्या	14	21	5	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), वराह जयन्ती, सामवेदि उपकर्म	06	12	18	46
12	32	3	शुक्र	22	03	15	02	हस्त	08	01	09	25	शुक्ल	22	14	ग	15	02	तुला 23:00	15	22	6	**हरितालिका तीज व्रत**, भद्रा 28:21 से, मंगल आद्रा में 11:46	06	13	18	45
12	30	4	शनि	28	31	17	38	चित्रा	15	52	12	34	ब्रह्मा	23	16	वि	17	38	तुला	16	23	7	**सिद्धिविनायक व्रत**, भद्रा 17:38 तक, चन्द्रदर्शनं निषेधः, A	06	13	18	43
12	28	5	रवि	34	22	19	59	स्वाति	23	12	15	31	ऐन्द्र	24	05	ब	06	51	तुला	17	24	8	**ऋषिपञ्चमी** (नागपञ्चमी डुग्गर प्रदेशे), अमृतयोग, **अगस्तोदयः**	06	14	18	42
12	26	6	सोम	39	08	21	54	विशा	29	34	18	04	वैधृति	24	32	कौ	09	00	वृ. 11:28	18	25	9	**सूर्यषष्ठी व्रत**, स्कन्ददर्शनम्, ललितापष्ठी, रवियोग	06	14	18	41
12	24	7	मंग	42	23	23	12	अनु	34	32	20	04	विष्कुं	24	30	ग	10	38	वृश्चिक	19	26	10	भद्रा 23:12 से, अमृतयोग, गण्डमूल 20:04 से	06	15	18	39
12	22	8	बुध	43	48	23	47	ज्येष्ठ	37	45	21	22	प्रीति	23	55	वि	11	35	धनु 21:22	20	27	11	भद्रा 11:35 तक, **दधीचि जयंती, श्रीराधाष्टमी,** गौरीपूजन, B	06	16	18	38
12	20	9	गुरु	43	12	23	33	मूला	39	0	21	53	आयु.	22	41	बा	11	46	धनु	21	28	12	गण्डमूल 21:53 तक, शुक्र चित्रा में 26:51, रवियोग, C	06	16	18	37
12	18	10	शुक्र	40	33	22	30	पू.षा.	38	16	21	35	सौभा.	20	48	तै	11	8	मकर 27:23	22	29	13	सूर्य उ.फा. में 9:34	06	17	18	35
12	16	11	शनि	36	00	20	42	उ.षा.	35	37	20	32	शोभना	18	17	व	09	42	मकर	23	30	14	**पद्मा एकादशी व्रत**, भद्रा 9:42 से 20:42 तक, बुध पू.फा. D	06	18	18	34
12	14	12	रवि	29	45	18	12	श्रवण	31	16	18	49	अतिगंड	15	13	बा	07	32	मकर	24	31	15	**श्री वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत**	06	18	18	33
12	12	13	सोम	22	08	15	10	धनि	25	35	16	33	सुकर्मा	11	41	तै	15	10	कुंभ प्रा.5:44	25	आ.	16	**आश्विन संक्रान्ति**, सूर्य कन्या में रात्रि 7:41 E	06	19	18	31
12	10	14	मंग	13	32	11	45	शत	18	54	13	53	धृति शूल	07 27	48 42	व	11	45	कुम्भ	26	2	17	श्राद्ध प्रारम्भ, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा 11:45 से 21:57 तक, F	06	20	18	30
12	08	15	बुध	04	20	08	04	पू.भा.	11	40	11	00	गंड	23	28	ब	8	04	मीन प्रा.5:43	27	3	18	**पूर्णिमा व्रत**, महेश्वर पूजन, प्रतिपदा श्राद्ध 8:04 बाद, G	06	20	18	28

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 11 सितम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
04	07	02	04	01	05	10	11	05
24	21	09	08	25	21	21	13	13
33	36	29	20	50	01	36	13	13
24	05	01	01	06	05	07	03	03
58	767	35	94	05	73	04	03	03
21	03	02	07	02	03	06	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा.	ज्ये.	आर्द्रा	मघा	मृग्	हस्त	पू.भा	उ.भा	हस्त
4	2	1	3	1	4	1	3	1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:16

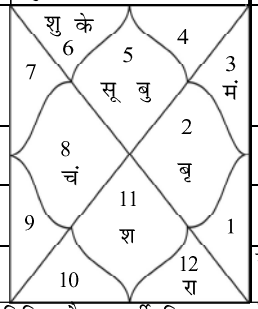

पूर्णिमायां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 18 सितम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	10	02	04	01	05	10	11	05
01	29	13	20	26	29	21	12	12
22	51	32	22	23	34	04	51	51
26	37	01	07	06	03	08	00	00
58	888	34	110	04	73	04	03	03
33	26	00	54	00	02	04	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा	पू.भा.	आर्द्रा	पू.फा.	मृग्	चित्रा	पू.भा.	उ.भा.	हस्त
2	3	3	3	1	2	1	3	1

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:20

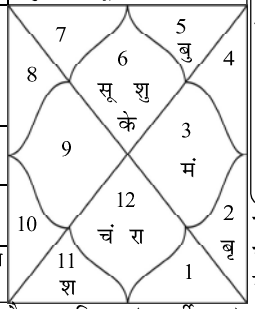

Aसिद्धियोग, रवियोग B महालक्ष्मी व्रत शुरू, गण्डमूल C **श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)**, श्रीगौरिविसर्जनम् D में 6:44, अमृतयोग E **पञ्चक प्रारंभ प्रातः** 5:44 **(दुग्धव्रतम्)** F **अनन्त चतुर्दशी व्रत,** रवियोग, प्रौष्ठपदी महालयश्राद्धारम्भः श्राद्धपूर्णिमा दिवा 11:45 बाद G शुक्र तुला में 13:56, बुधास्त पूर्वे 8:14

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

हरितालिका व्रतः- भाद्रपद शुक्ल तृतीया मुहूर्त मात्र भी हो तो परातिथि ही लेनी चाहिए क्योंकि द्वितीया ब्रह्मा (पितामह) की तिथि और चतुर्थी शिवपुत्र गणेश की होने से पूर्वविद्धा निषिद्ध होती है और पर विद्धा (चतुर्थीयुक्त) ही श्रेष्ठ होती है। इस दिन यथा शक्ति मिट्टी आदि की गौरीशङ्कर प्रतिमा बना कर मिट्टी के बैल पर बिठा कर प्रत्येक नारी गौरीशङ्कर की प्रसन्नता के लिए एवं पुत्र-पौत्रादि सुख हेतु बड़े समारोह पूर्वक व्रत करती है। **ऋषिपञ्चमी (नागपञ्चमी) व्रतः**- यह व्रत चतुर्थी विद्धा सायं व्यापिनी भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी को किया जाता है। यह केवल नारियों के राजोदोष शान्ति हेतु किया जाता है। **नागपञ्चमीः**- यह व्रत प्रातःकाल पञ्चमी में किया जाता है, इसमें पाँच नाग पाँच-पाँच स्थानों में पाँच रंगों द्वारा बना कर और गेहूँ का मीठा दलिया, घी, दूध से बना हुआ नाग देवताओं को अर्पित किया जाता है और अन्य सभी विषैले क्षुद्र जन्तुओं की भी पूजा की जाती है इससे वर्ष भर विष भरे सर्पों से समस्त परिवार की रक्षा होती है। यह व्रत अधिकतर डुग्गर (शेष पृष्ठ 205 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 आश्विन कृष्ण पक्ष शाकः 1946, सन् 2024 ई. 19 सितंबर से 2 अक्तूबर सूर्योदक्षिणायने, शरद् ऋतौ, उत्तर दक्षिणगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			भाद्र.	आश्वि	सितं.		सू.	उ.	सू.	अ.
0	0	1	बुध	54	58	28	20	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा तिथि क्षय	0	0	0	0
12	06	2	गुरु	45	48	24	40	उ.भा. रेवती	04 57	18 18	08 29	04 16	वृद्धि	19	18	तै	14	29	मीन	28	4	19	**द्वितीया का श्राद्ध**, स.सि. योग, गण्डमूल 8:04 से	06	21	18	27
12	04	3	शुक्र	37	15	21	15	अश्वि	50	53	26	43	ध्रुव	15	18	व	10	55	मेष प्रा.5:16	29	5	20	भद्रा 10:55 से 21:15 तक, **तृतीया का श्राद्ध**, स.सि. योग A	06	21	18	26
12	02	4	शनि	29	40	18	14	भरणी	45	34	24	36	व्याघा	11	36	ब	07	41	मेष	30	6	21	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय जम्मू 20:45, बुध उ.फा. में 15:06 B	06	22	18	24
12	00	5	रवि	23	22	15	44	कृति.	41	39	23	02	हर्षना वज्र	08 29	17 26	तै	15	44	वृ.प्रा. 6:08	31	7	22	**पञ्चमी का श्राद्ध**, सा.सू. तुला में 18:19, अमृतयोग, द.गोल प्रा.	06	23	18	23
11	58	6	सोम	18	38	13	51	रोहि	39	19	22	07	सिद्धि	27	10	व	13	51	वृष	आ.	8	23	भद्रा 13:51 से 25:09 तक, शुक्र स्वाती में 25:11, बुध कन्या C	06	23	18	22
11	56	7	मंग	15	37	12	39	मृग.	38	45	21	54	व्यती	25	26	ब	12	39	मिथुन 9:54	2	9	24	**सप्तमी का श्राद्ध** 12:39 तक, द्विपुष्करयोग 12:39 तक, D	06	24	18	20
11	54	8	बुध	14	26	12	11	आर्द्रा	39	57	22	24	वरिय	24	17	कौ	12	11	मिथुन	3	10	25	**नवमी का श्राद्ध** 12:11 बाद, **सौभाग्यवतीनांश्राद्धम्**	06	25	18	19
11	52	9	गुरु	15	01	12	26	पुन	42	51	23	34	परिघा	23	41	ग	12	26	कर्क 17:12	4	11	26	भद्रा 24:48 से, स.सि. योग, सूर्य हस्त में 25:09	06	25	18	18
11	50	10	शुक्र	17	16	13	21	पुष्य	47	16	25	20	शिव	23	33	वि	13	21	कर्क	5	12	27	भद्रा 13:21 तक, **दशमी का श्राद्ध** 13:21 तक, गण्डमूल 25:20 से	06	26	18	16
11	48	11	शनि	20	58	14	50	आश्ले	52	57	27	38	सिद्ध	23	50	बा	14	50	सिंह 27:38	6	13	28	**इन्द्रा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध,** गण्डमूल, अमृतयोग	06	27	18	15
11	46	12	रवि	25	51	16	48	माघ	59	38	30	19	साध्य	24	27	तै	16	48	सिंह	7	14	29	**द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासिनांश्राद्धम्,** मंगल पुनर्वसु में 23:56 E	06	27	18	14
11	44	13	सोम	31	37	19	07	पू.फा.	60	00	00	00	शुभ	25	18	व	19	07	सिंह	8	15	30	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 19:07 से, **त्रयोदशी का श्राद्ध, मासिक शिवरात्रि व्रत**	06	28	18	12
11	42	14	मंग	37	57	21	40	पू.फा.	06	58	09	16	शुक्ल	26	17	वि	08	22	कन्या 16:01	9	16	अक्तू.	भद्रा 8:22 तक, **चतुदर्शी का श्राद्ध, शस्त्रहतानांश्राद्धम्**	06	29	18	11
11	40	30	बुध	44	34	24	19	उ.फा.	14	43	12	23	ब्रह्मा	27	21	च	10	59	कन्या	10	17	2	**सर्वपितृश्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, देवपितृकार्येऽमावस, श्रीगांधी,** F	06	29	18	10

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 25 सितम्बर सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	02	02	05	01	06	10	11	05
08	10	17	03	26	08	20	12	12
13	51	26	20	47	06	34	28	28
01	10	02	03	08	02	02	07	07
58	799	32	110	02	73	04	03	03
56	51	59	58	59	01	02	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा.	आर्द्रा	आर्द्रा	उ.फा.	मृग्	स्वा.	पू.भा.	उ.भा.	हस्त
4	2	4	3	2	1	1	3	1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:25

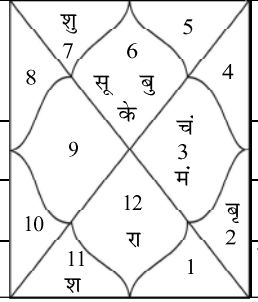

अमावस्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 2 अक्तूबर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	05	02	05	01	06	10	11	05
15	06	21	15	27	16	20	12	12
05	37	10	58	02	37	05	06	06
25	44	03	00	08	03	04	05	05
59	768	31	106	01	72	04	03	03
01	42	03	10	06	59	00	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
हस्त	उ.फा	पुन	हस्त	मृग्	स्वा	पू.भा	उ.भा	हस्त
2	3	1	2	2	3	1	3	1

कुण्डली अमावस प्रातः 6:29

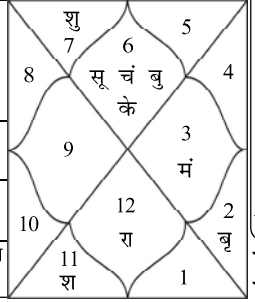

A गण्डमूल 26:43 तक, **पञ्चक समाप्त प्रातः** 5:16 B **चतुर्थी का श्राद्ध**, सिद्धि योग C में 10:10 **षष्ठी का श्राद्ध दिवा** 1:51 से पूर्वभा. आश्विन प्रारम्भ, स.सि. योग D **अष्टमी का श्राद्ध** 12:39 **बाद, श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अशोकाष्टमी,** अमृतयोग E गण्डमूल 30:19 तक, **गजच्छायायोग** 16:48 से 20:19 तक F **जयंती**, गजच्छाया (बोधायन) 12:23 से 24:19 तक **लालबहादुर जयन्ती**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

पितृ व्रतः– कृष्ण प्रतिपदा से 16 दिन पितृ व्रत महोत्सव में प्रतिदिन देवऋण ऋषि ऋण, पितृऋण से मुक्त होने के लिए प्रतिदिन देवर्षि, पितृतर्पण के बाद पितरों के लिए जल, फल, तिल पुष्पादि से श्राद्ध करना परमावश्यक है। यदि प्रतिदिन श्राद्ध न कर सकें तो केवल अपने पितरों की तिथि पर श्राद्ध एवं ब्रह्मभोज अवश्य कराएं और प्रतिदिन अन्न फलादि का दान करते रहें तो पितरों की प्रसन्नता के द्वारा आरोग्य, घर में सुमति और धन की समृद्धि होती है। **इन्द्रा एकादशी व्रतः**– इस व्रत से जन्मान्तरीय पापों का नाश होता है, समस्त दिन भर भगवान का चिन्तन स्मरण करने से परमानन्द की प्राप्ति होती है। **लोक भविष्यः**– आश्विन मास में पाँच गुरूवार होने से धान्य सस्ता होगा परन्तु उड़द, मूंग इत्यादि दालें कम उत्पन्न होंगी। प्राणियों में धातुओं (बसा, रक्त, मांस, मेधा, अस्थि, मज्जा, और शुक्र) की हानि हो, वर्षा अधिक, व्यापार करने वाले, डाक व्यवस्था चलाने वाले, नौका, वाहन, वायुयान चलाने वाले लोगों से उपद्रव हो, (शेष पृष्ठ 205 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 | **आश्विन शुक्ल पक्ष** | शाकः 1946, सन् 2024 ई. | **3 अक्तूबर से 17 अक्तूबर** | सूर्योदक्षिणायने, शरद् ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घण्टे	दिनमान मिनट	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घं॰मि॰	श आश्वि	वि आश्वि	अं अक्तू	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
11	38	1	गुरु	51	11	26	58	हस्त	22	35	15	32	ऐन्द्र	28	24	किं	13	39	कन्या	11	18	3	**शारद् नवरात्र प्रारंभ, घटस्थापनम्,** अग्रसेन जयंती, मातामहश्राद्ध, A	06	30	18	08
11	36	2	शुक्र	57	30	29	31	चित्रा	30	17	18	38	वैधृति	29	21	बा	16	16	तु.प्रा. 5:05	12	19	4	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), शुक्र विशाखा में 24:12	06	31	18	07
11	34	3	शनि	60	00	00	00	स्वाति	37	34	21	33	विष्कुं	30	08	तै	18	43	तुला	13	20	5	स.सि.योग	06	31	18	06
11	32	3	रवि	03	14	07	50	विशा	44	07	24	11	प्रीति	0	0	ग	07	50	वृ. 17:33	14	21	6	भद्रा 20:57 से, बुध चित्रा में 11:45, रवियोग	06	32	18	04
11	30	4	सोम	08	07	09	48	अनु	49	40	26	25	प्रीति	06	39	वि	09	48	वृश्चिक	15	22	7	भद्रा 9:48 तक, **उपाङ्गललिता व्रत,** गण्डमूल 26:25 से, B	06	33	18	03
11	28	5	मंग	11	52	11	13	ज्येष्ठ	53	56	28	08	आयु.	06	51	बा	11	13	धनु 28:08	16	23	8	गण्डमूल, रवियोग	06	34	18	02
11	26	6	बुध	14	11	12	15	मूला	56	41	29	15	सौभा. शोभन	06 29	36 53	तै	12	15	धनु	17	24	9	**सरस्वती आवाहनं मूल नक्षत्रे,** अमृतयोग, **गुरु वक्री** 12:36,C	06	34	18	01
11	24	7	गुरु	14	52	12	32	पू.षा.	57	45	29	41	अतिगंड	28	36	व	12	32	धनु	18	25	10	भद्रा 12:32 से 24:24 तक, बुध तुला में 11:19 सूर्य चित्रा D	06	35	17	59
11	22	8	शुक्र	13	48	12	07	उ.षा.	57	03	29	25	सुकर्मा	26	46	ब	12	07	मकर 11:40	19	26	11	**श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी,** शस्त्रादिपूजा, बलिदानं, उ.षा. नक्षत्रे	06	36	17	58
11	20	9	शनि	10	55	10	59	श्रवण	54	37	28	28	धृति	24	22	कौ	10	59	मकर	20	27	12	**श्रीदुर्गा नवमी, नवरात्र समाप्त, विजया दशमी,** सरस्वती E	06	36	17	47
11	19	10	रवि	06	19	09	09	धनि	50	35	26	52	शूल	21	25	ग	09	09	कुंभ 15:43	21	28	13	पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मार्त), भद्रा 19:59 से अमृतयोग, F	06	37	17	56
11	17	11	सोम	60	09	06	42	शत	45	11	24	43	गंड	18	01	वि	06	42	कुम्भ	22	29	14	**पापांकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव),** बुध स्वाती में 13:54, G	06	38	17	55
0	0	12	सोम	52	41	27	43	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी तिथि क्षय	0	0	0	0
11	15	13	मंग	44	12	24	19	पू.भा.	38	44	22	08	वृद्धि	14	13	कौ	14	04	मीन 16:48	23	30	15	**प्रदोष व्रत, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत,** सिद्धियोग, शुक्र अनुराधा H	06	39	17	53
11	12	14	बुध	35	03	20	41	उ.भा.	31	35	19	18	ध्रुव व्याघा	10 29	09 57	ग	10	32	मीन	24	31	16	**शरत् पूर्णिमा,** भद्रा 20:41 से, **श्रीसत्यनारायण व्रत,** गण्डमूल I	06	39	17	52
11	11	15	गुरु	25	40	16	56	रेवती	24	09	16	20	हर्षना	25	41	वि	06	49	मेष 16:20	25	का.	17	**कार्तिक संक्रान्ति,** सूर्य तुला में प्रातः 7:41, **श्री वाल्मीकि जयंती,** J	06	40	17	51

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 11 अक्तूबर सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	08	02	06	01	06	10	11	05
23	26	25	01	27	27	19	11	11
58	34	41	14	07	33	32	37	37
07	17	04	07	08	01	06	09	09
59	808	28	98	00	72	03	03	03
20	59	58	00	04	07	04	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा	पू.षा.	पुन.	चित्रा	मृग्	विशा	शत.	उ.भा.	हस्त
1	4	2	3	2	3	4	3	1

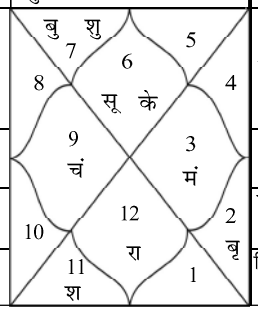

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:36

पूर्णिमायां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 17 अक्तूबर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
05	11	02	06	01	07	10	11	05
29	23	28	10	27	04	19	11	11
54	08	30	51	02	49	13	18	18
36	29	01	09	01	00	08	08	08
59	910	27	94	01	72	03	03	03
30	29	54	05	05	56	00	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा	रेव	पुन.	स्वा.	मृग्	अनु.	शत.	उ.भा.	हस्त
2	2	3	2	2	1	4	3	1

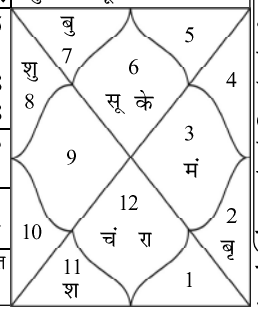

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:40

A वक्री शनि शतभिषा में 15:02 B स.सि. योग C गण्डमूल 29:15 तक D में 14:05, **भद्रकाली अवतार, सरस्वती पूजनं,** पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे E विसर्जनं, रवियोग, श्रवणे, सिद्धियोग, स.सि. योग F रवियोग, **शुक्र वृश्चिक में** 6:00, **पञ्चक प्रारम्भ** 15:43 G भद्रा 6:42 तक H 19:18 से I में 24:04 J भद्रा 6:49 तक, गण्डमूल सिद्धियोग, **पञ्चक समाप्त** 16:20, नवान्न भक्षणम्, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ, **पूर्णिमा व्रत,** स.सि. योग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– अश्विनी शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक शारद नवरात्र महोत्सव बनाया जाता है, शेष नवरात्रों के विषय में लिख चुके हैं। इसमें शक्तिपूजन का विशेष महत्त्व है, यह व्रत बालकों से लेकर वृद्धों तक किया जाता है, नवमी को कुमारी पूजन के बाद व्रत पारण करें। **सरस्वती व्रतः**– मूल नक्षत्र में सरस्वती का आवाहन, पूर्वाषाढ़ा में विशेष पूजा, उत्तराषाढ़ा में घृत पायस, हलवा–पेठा या नारियल की बलि प्रदान करें, श्रवण में आरती उतार कर भगवती सरस्वती का विसर्जन करें। विद्यार्थी सभी पुस्तकों को सुन्दर सिंहासन पर रख कर प्रतिदिन उनकी भी आरती उतारें। श्रवण नक्षत्र के उपरान्त पुस्तकें ग्रहण करके प्रतिदिन स्वाध्याय करें तो सरस्वती प्रसन्न होकर अक्षुण्य विद्या प्रदान करती है। **विजयादशमीः**– नवरात्रों के बाद श्रवण से युक्त दशमी को विजया दशमी महोत्सव सम्पन्न किया जाता है, उस दिन शुक्ल दशमी पूर्वविद्धा (नवमी युक्त) निषिद्ध है, पर विद्धा (एकादशी से युक्त) **श्रवण युक्त सूर्योदयकालीन सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।** (शेष पृष्ठ 205 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 **कार्तिक कृष्ण पक्ष** शाकः 1946, सन् 2024 ई. **18 अक्तूबर से 1 नवम्बर** सूर्योदक्षिणायने, शरद् ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श आश्वि	वि कार्त्ति	अं अक्तू	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
11	09	1	शुक्र	16	26	13	16	अश्वि	16	53	13	26	वज्र	21	34	कौ	13	16	मेष	26	2	18	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा, स.सि. योग, गण्डमूल 13:26 तक	06	41	17	50
11	07	2	शनि	07	48	09	49	भरणी	10	12	10	47	सिद्धि	17	41	ग	09	49	वृष 16:09	27	3	19	भद्रा 20:16 से, श्रीगुरु रामदास जयन्ती	06	42	17	49
11	05	3	रवि	00	10	06	47	कृत्ति	04	32	08	31	व्यती	14	11	वि	06	47	वृष	28	4	20	भद्रा 6:47 तक, कर्क चतुर्थी, **करवाचौथ व्रत,** A	06	42	17	48
0	0	4	रवि	54	20	28	24	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
11	03	5	सोम	49	25	26	30	रोहि मृग.	60 57	17 45	06 29	50 49	वरिय	11	11	कौ	15	18	मिथुन 18:14	29	5	21	स.सि.योग	06	43	17	46
11	01	6	मंग	46	52	25	29	आर्द्रा	57	16	29	38	परिघा	08	46	ग	13	53	मिथुन	30	6	22	**स्कन्द षष्ठी, सा.सू. वृश्चिक में** 27:45, **हेमन्त ऋतु प्रारम्भ,**B	06	44	17	45
10	59	7	बुध	46	25	25	19	पुन	58	46	30	16	शिव सिद्धि	06 29	59 52	वि	13	18	कर्क 24:00	का.	7	23	भद्रा 13:18 तक, भा.कार्तिकारम्भः, सूर्य स्वाती में 24:41	06	45	17	44
10	57	8	गुरु	48	02	25	59	पुष्य	60	00	00	00	साध्य	29	22	बा	13	33	कर्क	2	8	24	**अहोई अष्टमी, अमृतयोग, गुरु पुष्य, स.सि.योग**	06	46	17	43
10	56	9	शुक्र	51	31	27	23	पुष्य	02	13	07	40	शुभ	29	26	तै	14	36	कर्क	3	9	25	अमृतयोग, गण्डमूल 7:40 से	06	47	17	42
10	54	10	शनि	56	32	29	24	आश्ले	07	25	09	46	शुक्ल	29	57	व	16	20	सिंह 9:46	4	10	26	भद्रा 16:20 से 29:24 तक, शुक्र ज्येष्ठा में 25:07, गण्डमूल	06	47	17	41
10	52	11	रवि	60	00	00	00	माघ	13	59	12	24	ब्रह्मा	30	47	ब	18	35	सिंह	5	11	27	गण्डमूल 12:24 तक	06	48	17	40
10	50	11	सोम	02	35	07	51	पू.फा.	21	26	15	24	ऐन्द्र	0	0	बा	07	51	कन्या 22:10	6	12	28	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी,** मंगल पुष्य में 15:55	06	49	17	39
10	48	12	मंग	09	15	10	32	उ.फा.	29	19	18	34	ऐन्द्र	07	47	तै	10	32	कन्या	7	13	29	**प्रदोष व्रत, धनतेरस, धन्वन्तरी जयंती,** त्रिपुष्कर योग 10:32 तक C	06	50	17	38
10	46	13	बुध	16	02	13	16	हस्त	37	11	21	43	वैधृति	08	51	व	13	16	कन्या	8	14	30	भद्रा 13:16 से 26:35 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** D	06	51	17	37
10	45	14	गुरु	22	34	15	53	चित्रा	44	42	24	44	विष्कुं	09	50	श	15	53	तुला 11:15	9	15	31	**रूप (नरक), चतुर्दशी, प्रभातस्नानं**	06	52	17	36
10	43	30	शुक्र	28	31	18	17	स्वाति	51	36	27	31	प्रीति	10	41	न	18	17	तुला	10	16	नवं.	**दीपावली, देवपितृकार्ये अमावस,** बुध अनु. में 6:40 E	06	52	17	35

अष्टम्यां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 24 अक्तूबर सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	03	03	06	01	07	10	11	05
06	02	01	21	26	13	18	10	10
52	56	33	35	46	16	55	56	56
00	11	00	09	04	03	07	05	05
59	757	24	89	03	72	02	03	03
47	02	07	56	00	03	02	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	व	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वा	पुन.	पुन.	विशा	मृग्	अनु.	शत.	उ.भा.	हस्त
1	4	4	1	2	3	4	3	1

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:46

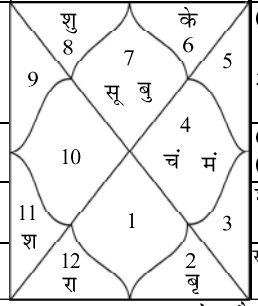

अमावस्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 1 नवम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	06	03	07	01	07	10	11	05
14	09	04	03	26	22	18	10	10
51	02	40	05	16	54	40	31	31
15	02	07	09	08	01	05	01	01
60	718	21	84	04	72	01	03	03
04	07	56	55	05	01	05	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वा.	स्वा.	पुष्य	विशा	मृग्.	ज्ये.	शत.	उ.भा.	हस्त
3	1	1	4	1	2	4	3	1

कुण्डली अमावस प्रातः 6:52

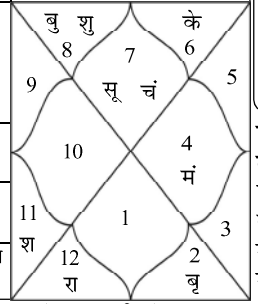

A **चन्द्रोदय जम्मू** 20:15, मंगल कर्क में 14:19 B बुध विशा. में 27:59, रवियोग, भद्रा 25:29 से C **बुध वृश्चिक में** 22:39, यमाय दीपदानम्, अमृतयोग D बुधोदयः पश्चिमे 17:25 E **महालक्ष्मी पूजन**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

कार्तिकस्नारम्भः– आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन कार्तिक स्नान का संकल्प कर लें क्योंकि माघ, वैशाख, कार्तिक और मार्गशीर्ष में प्रतिदिन स्नान करने से शारीरिक पुष्टि मानसिक तुष्टि और अव्यक्त का ज्ञान स्वयं प्रकट होता जाता है। यथा सम्भव तीर्थादि का स्नान परपुण्यप्रद होता है। **"उत्तमन्तु नदीस्नानं मध्यमन्तु तड़ागयोः। अधमं कूपवापीनां भाण्ड स्नानं वृथावृथा॥"** चार देव मासों (वैशाख, श्रावण, कार्तिक, माघ) में स्नान करना वैकुण्ठ के चारों द्वार खोल देने में सहायक होते हैं। **रमा एकादशी व्रतः**– यह व्रत राधा दामोदर की प्रतिमा रख कर विधिवत पूजा के पश्चात् राधाकृष्ण का चिन्तन करते हुए रात्रि जागरण पूर्वक प्रातः स्नानादि के पश्चात् ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं नैवैद्य ग्रहण करें। **नरक चतुर्दशीः**– इस दिन चार बत्तियों वाले चतुर्मुख दीपक जलाकर एक जलती हुई मसाल जलाकर भूमि पर गाड़ दे और मन्त्र पढ़कर उल्कादान करे **"अग्निदग्धाश्च ये जीवायेऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्जबलज्योतिषादग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्॥"** उल्का का दान करने से आतिश बाजी, बम विस्फोट, बिजली, गोली आदि से मरे हुए मनुष्यों को सद्गति हो जाती है। **लोक भविष्यः**– कार्तिक संक्रान्ति सूर्य नारायण (शेष पृष्ठ 205 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	कार्तिक शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	2 नवम्बर से 15 नवम्बर	सूर्योदक्षिणायने, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श कार्त्ति.	वि कार्त्ति	अं नवं.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
10	41	1	शनि	33	42	20	22	विशा	57	42	29	58	आयु.	11	18	किं	07	22	वृ. 23:22	11	17	2	कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा, गोवर्धन, पूजा अमृतयोग, अन्नकूट, गोक्रीड़ा	06	53	17	34
10	39	2	रवि	37	58	22	06	अनु	60	00	00	00	सौभा.	11	39	बा	09	17	वृश्चिक	12	18	3	**भाई दूज (टिक्का)**, विश्वकर्मापूजा, चन्द्रदर्शनम्, मु. 30, A	06	54	17	34
10	38	3	सोम	41	13	23	25	अनु	02	51	08	04	शोभना	11	43	तै	10	48	वृश्चिक	13	19	4	गण्डमूल 8:04 से	06	55	17	33
10	36	4	मंग	43	22	24	17	ज्येष्ठ	07	02	09	45	अतिगंड	11	27	व	11	54	धनु 9:45	14	20	5	भद्रा 11:54 से 24:17 तक, **दूर्वागणपति व्रत,** गण्डमूल	06	56	17	32
10	34	5	बुध	44	21	24	41	मूला	10	08	11	00	सुकर्मा	10	50	ब	12	33	धनु	15	21	6	**सौभाग्य पञ्चमी,** शुक्र धनु में 27:31, सूर्य विशा. में 8:45, B	06	57	17	31
10	33	6	गुरु	44	03	24	35	पू.षा.	12	02	11	47	धृती	09	51	कौ	12	42	मकर 17:53	16	22	7	**सूर्य षष्ठी पर्व (छठ) बिहार**	06	58	17	30
10	31	7	शुक्र	42	25	23	57	उ.षा.	12	41	12	03	शूल गण्ड	08 30	27 37	ग	12	20	मकर	17	23	8	भद्रा 23:57 से, रवियोग	06	54	17	30
10	29	8	शनि	39	24	22	46	श्रवण	12	00	11	48	वृद्धि	28	23	वि	11	25	कुम्भ 23:27	18	24	9	**गोपाष्टमी,** भद्रा 11:25 तक, **पञ्चक प्रारंभ** 23:27, स.सि. योग	07	00	17	24
10	28	9	रवि	35	02	21	02	धनि	09	57	11	00	ध्रुव	25	42	बा	09	58	कुम्भ	19	25	10	**अक्षय नवमी,** राहु उ.फा. 4, केतु उ.फा. में 24:14	07	00	17	23
10	26	10	सोम	29	23	18	47	शत	06	37	09	40	व्याघा	22	36	तै	07	58	मीन 26:21	20	26	11	भद्रा 29:29 से, बुध ज्येष्ठा में 6:22, रवियोग, **भीष्म पञ्चक शुरू**	07	01	17	27
10	25	11	मंग	22	37	16	05	पू.भा. उ.भा.	02 56	04 37	07 29	52 41	हर्षना	19	04	वि	16	05	मीन	21	27	12	**हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह,** रवियोग 7:52 तकC	07	02	17	27
10	23	12	बुध	14	56	13	02	रेवती	50	19	27	11	वज्र	15	25	बा	13	02	मेष 27:11	22	28	13	**प्रदोष व्रत, पञ्चक समाप्ति** 27:11, गण्डमूल	07	03	17	26
10	21	13	गुरु	06	38	09	44	अश्वि	43	41	24	33	सिद्धि	11	30	तै	09	44	मेष	23	29	14	भद्रा 30:19 से, **वैकुण्ठ चतुर्दशी,** कार्तिक, व्रतोद्यापनं, रवियोग D	07	04	17	26
0	0	14	गुरु	58	08	30	19	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
10	20	15	शुक्र	49	43	26	58	भरणी	37	05	21	55	व्यती वरिय	07 27	30 33	वि	16	38	वृष 27:16	24	30	15	भद्रा 16:38 तक, श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत, E	07	05	17	25

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 9 नवम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	09	03	07	01	08	10	11	05
22	19	07	14	25	02	18	10	10
52	46	21	06	35	29	31	05	05
32	40	04	06	07	05	06	07	07
60	803	18	77	05	71	00	03	03
16	51	55	05	57	57	58	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा.	श्रव.	पुष्य	अनु.	मृग्	मूल	शत.	उ.भा.	हस्त
1	3	2	4	1	1	4	3	1

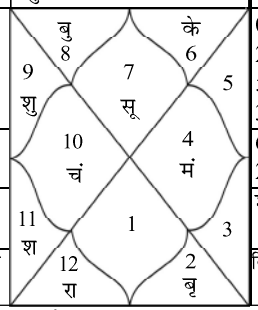

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 15 नवम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
06	00	03	07	01	08	10	11	05
28	16	09	21	24	09	18	09	09
54	26	01	15	58	38	29	46	46
33	15	05	07	04	08	04	06	06
60	896	14	63	06	71	00	03	03
25	56	58	53	57	54	01	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	व	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा	भर	पुष्य	ज्ये.	मृग्	मूल	शत	उ.भा.	उ.फा.
3	1	2	2	1	3	4	2	4

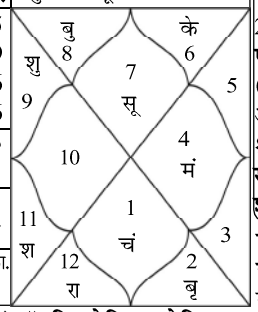

Aयमुना स्नानम् Bगण्डमूल 11:00 तक, पाण्डव पञ्चमी C भद्रा 16:05 तक, गण्डमूल 29:41 से, चतुर्मास व्रत समाप्तिः, **भीष्म पञ्चक प्रारंभ,** स.सि. योग Dश्रीनेहरू जयंती (बाल दिवस), गण्डमूल 24:33 तक, अमृतयोग E **मेला झिंडी कानाचक्क, श्रीगुरुनानक देव, जयंती, भीष्म पञ्चक समाप्त कार्तिक स्नान पूर्तिः पद्मकयोग, शनि मार्गी** 19:50, पुष्कर यात्रा

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रतः- इसदिन स्नानादि के पश्चात् समस्त देवताओं सहित भगवान की पूजा करके सभी देवताओं को आरती के साथ घण्टा शंखादि बजाते हुए वेद मन्त्रों द्वारा भगवान को जगाएं। **"उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम्॥"** अर्घ्यं देकर भगवान के चारों और पुष्प मालाएं और घृत दीपक जलाकर आरती करके पुष्पाञ्जलि दें। रात भर जागरण कर प्रातः ब्राह्मण भोजन के पश्चात् स्वयं नैवैद्य ग्रहण करें। **भीष्मपञ्चक व्रतः**- चान्दी या स्वर्ण की लक्ष्मीनारायण प्रतिमा बनाकर सिंहासन पर खें और हरि प्रबोधिनी एकादशी से पूर्णिमा तक पाँच दिन व्रती रहकर कमल पुष्पों से भगवान के हृदय की पूजा पहले दिन, विल्ल पत्रों से कमर की पूजा दूसरे दिन, केतकी फूलों से घुटनों की पूजा तीसरे दिन, चमेली के पुष्पों से चरणों की पूजा चौथे दिन तुलसी की मञ्जरियों से सर्वाङ्ग भगवान की पूजा पाँचवें दिन करें और प्रतिदिन **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"** इस द्वादशाक्षर मन्त्र का जप एक हजार, दस हजार या (शेष पृष्ठ 206 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाकः 1946, सन् 2024 ई. 16 नवम्बर से 1 दिसंबर सूर्योदक्षिणायने, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे																								दै. सूर्योदयास्त			
दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																		घ॰मि॰	कार्त्ति.	मार्ग.	नवं.		सू.	उ.	सू.	अ.
10	14	1	शनि	41	51	23	51	कृत्ति	30	55	19	23	परिघा	23	47	बा	13	22	वृष	25	1	16	मा.कृ. प्रतिपदा, **मार्गशीर्ष संक्रांति,** सूर्य वृश्चिक में प्रातः 7:30 A	07	06	17	24
10	17	2	रवि	34	59	21	07	रोहि	25	39	17	23	शिव	20	21	तै	10	25	मि.28:30	26	2	17		07	07	17	24
10	16	3	सोम	29	31	18	56	मृग	21	42	15	49	सिद्ध	17	21	व	07	57	मिथुन	27	3	18	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चंद्रोदय जम्मू 21:50, B	07	08	17	23
10	14	4	मंग	25	49	17	29	आर्द्रा	19	27	14	56	साध्य	14	56	बा	17	29	मिथुन	28	4	19	सूर्य अनुराधा में 14:52	07	09	17	23
10	13	5	बुध	24	10	16	50	पुन	19	11	14	50	शुभ	13	08	तै	16	50	कर्क 8:46	29	5	20		07	10	17	23
10	12	6	गुरु	24	42	17	03	पुष्य	21	02	15	35	शुक्ल	12	01	व	17	03	कर्क	30	6	21	भद्रा 17:03 से 29:29 तक, सा.सू. धनु में 25:01, C	07	10	17	22
10	10	7	शुक्र	27	21	18	08	आश्ले	24	56	17	09	ब्रह्मा	11	34	ब	18	8	सिंह 17:09	मार्ग	7	22	भा. मार्गशीर्ष प्रारंभ, गण्डमूल, रवियोग	07	11	17	22
10	09	8	शनि	31	52	19	57	मघा	30	37	19	27	ऐन्द्र	11	41	कौ	19	57	सिंह	2	8	23	**श्रीभैरवाष्टमी,** गण्डमूल 19:27 तक	07	12	17	21
10	08	9	रवि	37	47	22	20	पू.फा.	37	38	22	16	वैधृति	12	17	तै	09	05	कन्या 29:01	3	9	24		07	13	17	21
10	07	10	सोम	44	29	25	02	उ.फा.	45	24	25	24	विष्कुं	13	11	व	11	40	कन्या	4	10	25	भद्रा 11:40 से 25:02 तक, अमृतयोग	07	14	17	21
10	06	11	मंग	51	22	27	48	हस्त	53	19	28	35	प्रीति	14	13	ब	14	25	कन्या	5	11	26	**उत्पन्ना एकादशी व्रत,** बुध वक्री 8:12	07	15	17	21
10	04	12	बुध	57	50	30	24	चित्रा	60	00	00	00	आयु.	15	13	कौ	17	08	तुला 18:06	6	12	27	सिद्धि योग	07	16	17	20
10	03	13	गुरु	60	00	00	00	चित्रा	60	47	07	36	सौभा.	16	01	ग	19	35	तुला	7	13	28	**प्रदोष व्रत,** अमृतयोग, वक्री गुरु रोहिणी में 14:28	07	17	17	20
10	02	13	शुक्र	03	26	08	40	स्वाति	07	30	10	18	शोभना	16	33	व	08	40	तुला	8	14	29	भद्रा 8:40 से 21:37 तक, शुक्र उ.षा. 15:28, **मासिक** D	07	18	17	20
10	01	14	शनि	07	59	10	30	विशा	13	10	12	35	अतिगंड	16	44	श	10	30	वृ.प्रा. 6:02	9	15	30	**पितृकार्येऽमावस सिद्धियोग**	07	18	17	20
10	00	30	रवि	11	19	11	51	अनु	17	40	14	24	सुकर्मा	16	33	ना	11	51	वृश्चिक	10	16	दिसं.	**देवकार्येऽमावस,** गण्डमूल 14:24 से	07	19	17	20

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 23 नवम्बर सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	04	03	07	01	08	10	11	05
06	06	10	27	24	19	18	09	09
58	18	43	44	01	07	32	21	21
42	17	06	09	06	05	02	01	01
60	723	10	22	07	70	00	03	03
39	23	00	58	57	58	58	11	11
शी	शी	मा	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु.	मघा	पुष्य	ज्ये.	मृग्	पू.षा.	शत.	उ.भा.	उ.फा.
2	2	3	4	1	2	4	2	4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:12

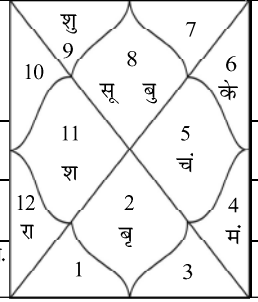

अमावस्यां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 1 दिसम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07	07	03	07	01	08	10	11	05
15	12	11	26	22	28	18	08	08
04	03	43	22	59	31	41	55	55
37	04	09	03	00	02	08	07	07
60	752	04	02	08	70	01	03	03
50	10	53	58	00	00	57	11	11
शी	शी	मा	व	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु.	अनु.	पुष्य	ज्ये.	रोहि	उ.षा.	शत.	उ.भा.	उ.फा.
4	3	3	3	4	1	4	2	4

कुण्डली अमावस प्रातः 7:19

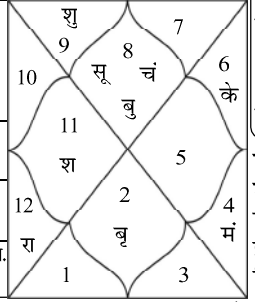

A अमृतयोग B शुक्र पू.षा. में 7:59, भद्रा 7:57 से 18:56 तक, **सौभाग्यसुन्दरी व्रत,** स.सि.योग C गण्डमूल 15:35 से, **गुरु पुष्य, स.सि. योग** D **शिवरात्रि व्रत,** बुधास्तः पश्चिमे 17:20, **पिशाचमोचनीदेविका चतुर्दशी**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

उत्पन्ना एकादशी व्रतः– मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी का नाम उत्पन्न माना गया है। इस व्रत से इस जन्म में निर्धन से धनी निर्बल, बलवान, पुत्र रहित पुत्रवान होकर अन्त में वैकुण्ठ प्राप्ति होती है। **पिशाचमोचनी देविका चतुर्दशीः**– मार्गशीर्ष कृष्ण और शुक्ल दोनों देविका स्नान के लिए परमोत्तम मानी जाती हैं क्योंकि इन दोनों तिथियों में देविका नदी में तीन करोड़ साठ हज़ार तीर्थ मार्गशीर्ष में देविका स्नान के लिए उपस्थित होते हैं ऐसा पद्मपुराण में लिखा है। **"षष्टीतीर्थसहस्त्राणि तिस्त्रः कोट्योऽर्घ कोटयः। आयान्ति देविकातीर्थे मार्गशीर्षेन संशयः।।"** मयासुर ने स्वर्ण, चान्दी और लोहे के तीन नगर बना कर अपने तीन पुत्रों को आकाश विहार के लिए दे दिए। उन्होंने इन्द्रादि को जीतकर स्वर्ण पर अधिकार जमा लिया। देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान शङ्कर ने युद्ध आरम्भ किया और मयासुर ने दैत्यों को पुनर्जीवित करने के लिए अमृत कूप बना लिया, विष्णु ने गोरूप धारण कर समग्र अमृत पीलिया। भगवान शङ्कर जी ने एक ही वान से तीनों को धराशायी कर दिया। प्रथम क्षेत्र शुद्धिक्षेत्र (शुद्धमहादेव) द्वितीयपुर प्रभास क्षेत्र (उधुमपुर) (शेष पृष्ठ 206 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081 **मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष** शाकः 1946, सन् 2024 ई. **2 दिसंबर से 15 दिसंबर** सूर्योदक्षिणायने, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे | दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																		घं॰मि॰	मार्ग.	मार्ग.	दिसं.		सू.	उ.	सू.	अ.
10	00	1	सोम	13	28	12	44	ज्येष्ठ	21	03	15	45	धृति	16	01	ब	12	44	धनु 15:45	11	17	2	मा.शु. प्रतिपदा, **शुक्र मकर** में 11:56, सूर्य ज्येष्ठा में 19:07,A	07	20	17	20
09	59	2	मंग	14	30	13	09	मूला	23	21	16	42	शूल	15	08	कौ	13	09	धनु	12	18	3	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), अमृतयोग, गण्डमूल 16:42 तक	07	21	17	20
09	58	3	बुध	14	32	13	11	पू.षा.	24	42	17	15	गंड	13	56	ग	13	11	मकर 23:19	13	19	4	भद्रा 25:03 से	07	22	17	20
09	57	4	गुरु	13	37	12	50	उ.षा.	25	09	17	27	वृद्धि	12	28	वि	12	50	मकर	14	20	5	भद्रा 12:50 तक, रवियोग, **सिद्धि विनायक व्रत**	07	23	17	20
09	56	5	शुक्र	11	51	12	08	श्रवण	24	47	17	18	ध्रुव	10	43	बा	12	08	कुंभ 29:06	15	21	6	**पञ्चक प्रारंभ** 29:06, **नागपञ्चमी**, मंगल वक्री 29:04,B	07	23	17	20
09	56	6	शनि	09	15	11	06	धनि	23	35	16	50	व्याघा हर्षण	08 30	42 25	तै	11	06	कुम्भ	16	22	7	अमृतयोग, रवियोग, मित्र सप्तमी (षष्ठीविद्धा)	07	24	17	20
09	55	7	रवि	05	49	09	45	शत	21	35	16	03	वज्र	27	53	व	09	45	कुम्भ	17	23	8	भद्रा 9:45 से 20:57 तक, वक्री बुध अनु. में 24:42 C	07	25	17	20
09	54	8	सोम	01	33	08	03	पू.भा.	18	45	14	56	सिद्धि	25	05	ब	08	03	मीन 9:14	18	24	9		07	26	17	20
0	0	9	सोम	56	30	30	02	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	नवमी तिथि क्षय	0	0	0	0
09	54	10	मंग	50	41	27	43	उ.भा.	15	9	13	30	व्यती	22	03	तै	16	55	मीन	19	25	10	स.सि. योग, शुक्र श्रवण में 27:18, बुधोदयः पूर्वे 22:58,D	07	26	17	20
09	53	11	बुध	44	16	25	10	रेवती	10	51	11	47	वरिय	18	47	व	14	28	मेष 11:47	20	26	11	**श्रीगीता जयंती**, **पञ्चक समाप्त** 11:47 **मोक्षदा एकादशीव्रत**,E	07	27	17	20
09	53	12	गुरु	37	26	22	27	अश्वि	6	01	09	52	परिघा	15	23	ब	11	49	मेष	21	27	12	गण्डमूल 9:52 तक, अवतार द्वादशी व्रत	07	28	17	21
09	52	13	शुक्र	30	29	19	40	भरणी कृतिका	60 55	53 47	07 29	50 48	शिव	11	54	कौ	09	03	वृष 13:18	22	28	13	**प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत**, रवियोग	07	29	17	21
09	52	14	शनि	23	44	16	59	रोहि	51	03	27	54	सिद्ध साध्य	08 29	26 06	व	16	59	वृष	23	29	14	भद्रा 16:59 से 27:43 तक, **श्रीदत्त जयंती, पिशाच मोचन श्राद्ध**,F	07	29	17	21
09	52	15	रवि	17	34	14	32	मृग	47	04	26	20	शुभ	26	03	ब	14	32	मि. 15:03	24	पौष	15	**पौष संक्रान्ति**, सूर्य मूल 1 धनु में रात्रि 10:09, G	07	30	17	22

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 9 दिसम्बर सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07 23 11 47	10 27 49 19	03 11 56 03	07 16 25 00	01 21 53 08	09 07 48 03	10 18 58 01	11 08 30 03	05 08 30 03
60 56	833 52	01 02	74 08	08 52	69 02	02 54	03 11	03 11
शी 0	शी 0	व उ	व अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
ज्ये. 2	पू.भा. 3	पुष्य 3	अनु. 4	रोहि 4	उ.षा. 4	शत. 4	उ.भा. 2	उ.फा. 4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:26

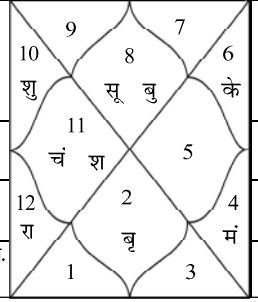

पूर्णिमायां रविवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 15 दिसम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
07 29 17 40	01 24 17 47	03 11 31 07	07 12 15 04	01 21 05 02	09 14 40 04	10 19 14 05	11 08 11 02	05 08 11 02
61 00	867 58	07 01	14 04	08 00	68 01	03 01	03 11	03 11
शी 0	शी 0	व उ	व उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
ज्ये. 4	मृग् 1	पुष्य 3	अनु. 3	रोहि 4	श्रव. 2	शत. 4	उ.भा. 2	उ.फा. 4

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:30

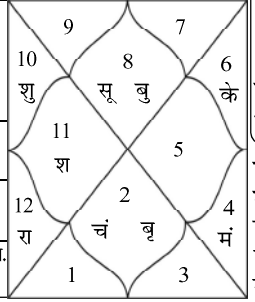

A गण्डमूल B **स्कन्दषष्ठी**, **श्रीराम विवाह उत्सव**, स.सि.योग C श्रीदुर्गाष्टमी D गण्डमूल 13:30 से E भद्रा 14:28 से 25:10 तक, गण्डमूल, रवियोग F **श्रीसत्य-नारायण व्रत,** सिद्धियोग, स.सि.योग G बुध मार्गी 26:26, **पूर्णिमा व्रत**, अमृतयोग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

मोक्षदा एकादश व्रतः– मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी व्रत सभी मनुष्यों के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार को अपने में समाविष्ट कर, सभी विकारों पर विजय प्राप्त करवा कर, अपूर्व आत्मबल को सुदृढ़ बनाकरपरमशान्ति प्रदान करने में सहायक होता है। (पद्मपुराणे) **अवतारद्वादशी व्रतः**– भगवान विष्णु द्वादशी तिथि के अधिष्ठातृ देवता शास्त्रों में कहे गए हैं, प्रत्येक द्वादशी के साथ विष्णु अवतारों का अयुत सम्बन्ध सिद्ध होता है। वराहपुराणानुसार दशावतारों का द्वादशी व्रत एवं भागवतपुराणानुसार 24 अवतारों का द्वादशी व्रत से सम्बन्ध है। **पिशाचमोचनी श्राद्धः**– इस दिन देविका नदी के तट पर जाकर जिस व्यक्ति की कहीं भी गति नहीं होती उसके पिण्डदान करने मात्र से पिशाचादि योनि में भटकते हुए व्यक्ति की सद्गति होकर भगवान के स्वरूप की प्राप्ति होती है। **लोक भविष्यः**– रोहिणी नक्षत्र पर बृहस्पति होने से उपयोगी वर्षा तथा खेती मध्यम हो, सोना, चान्दी ताम्बा, स्टील इत्यादि धातुओं के भावों में वृद्धि हो, अनुराधा नक्षत्र पर बुध विचरण करने से गौओं को पीड़ा हो, तिल, तेल, घृत तथा रसादि पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि हो, भूमि अनेक प्रकार (शेष पृष्ठ 206 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	पौष कृष्ण पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024 ई.	17 दिसंबर से 30 दिसंबर	सूर्योदक्षिणायने, हेमन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श मार्ग.	वि पौष	अं दिसं.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
09	51	1	सोम	12	22	12	28	आर्द्रा	44	17	25	13	शुक्ल	23	22	कौ	12	28	मिथुन	25	2	16	पौष कृष्ण प्रतिपदा	07	31	17	22
09	51	2	मंग	08	33	10	56	पुन	43	02	24	44	ब्रह्मा	21	11	ग	10	56	कर्क 18:47	26	3	17	भद्रा 22:25 से, अमृतयोग, त्रिपुष्कर योग 10:56 तक	07	31	17	22
09	51	3	बुध	06	26	10	06	पुष्य	43	36	24	58	ऐन्द्र	19	34	वि	10	06	कर्क	27	4	18	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 20:34, भद्रा 10:06 तक A	07	32	17	23
09	51	4	गुरु	06	17	10	03	आश्ले	46	08	26	00	वैधृति	18	34	बा	10	03	सिंह 26:00	28	5	19	गण्डमूल	07	32	17	23
09	51	5	शुक्र	08	10	10	49	माघ	50	35	27	47	विष्कुं	18	11	तै	10	49	सिंह	29	6	20	गण्डमूल 27:47 तक	07	33	17	24
09	51	6	शनि	12	00	12	22	पू.फा.	56	41	30	14	प्रीति	18	22	व	12	22	सिंह	30	7	21	भद्रा 12:22 से 25:23 तक, सा.सू. मकर में, **शिशर् ऋतु प्रारंभ** B	07	33	17	24
09	51	7	रवि	17	26	14	32	उ.फा.	60	00	00	00	आयु.	19	00	ब	14	32	कन्या 12:55	पौष	8	22	स.सि. योग, शुक्र धनिष्ठा 22:17, त्रिपुष्कर योग, भा. पौष प्रारंभ	07	34	17	25
09	51	8	सोम	23	54	17	08	उ.फा.	03	56	09	09	सौभा.	19	54	कौ	17	08	कन्या	2	9	23	**रुकमिणी अष्टमी,** अष्टका श्राद्ध	07	34	17	25
09	51	9	मंग	30	44	19	53	हस्त	11	45	12	17	शोभना	20	53	ग	19	53	तुला 26:50	3	10	24	बुध ज्येष्ठा में 8:24	07	35	17	26
09	51	10	बुध	37	15	22	29	चित्रा	19	27	15	22	अतिगंड	21	46	व	09	13	तुला	4	11	25	भद्रा 9:13 से 22:29 तक, **क्रिसमिस डे**	07	35	17	26
09	51	11	गुरु	42	51	24	44	स्वाति	26	24	18	09	सुकर्मा	22	23	ब	11	40	तुला	5	12	26	**सफला एकादशी व्रत**	07	36	17	27
09	52	12	शुक्र	47	07	26	27	विशा	32	11	20	28	धृति	22	37	कौ	13	40	वृ. 13:56	6	13	27	सुरूप द्वादशी, शनि पू.भा. में 20:14	07	36	17	28
09	52	13	शनि	49	51	27	33	अनु	36	32	22	13	शूल	22	23	ग	15	05	वृश्चिक	7	14	28	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 27:34 से शुक्र कुम्भ में 23:39, C	07	36	17	28
09	52	14	रवि	51	03	28	02	ज्येष्ठ	39	23	23	22	गंड	21	41	वि	15	52	धनु 23:22	8	15	29	भद्रा 15:52 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत**, गण्डमूल	07	37	17	29
09	53	30	सोम	50	49	27	57	मूला	40	51	23	57	वृद्धि	20	32	च	16	03	धनु	9	16	30	**सोमवती देवपितृकार्येऽमावस,** कुहूः, मेला हरिद्वार D	07	37	17	30

अष्टम्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 23 दिसम्बर सन् 2024 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	05	03	07	01	09	10	11	05
07	08	10	15	20	23	19	07	07
26	12	12	39	03	40	41	45	45
09	31	02	00	02	01	07	08	08
61	708	23	54	07	66	03	03	03
08	03	57	00	54	05	58	11	11
शी	शी	व	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
मूल	उ.फा.	पुष्य	अनु.	रोहि	धनि	शत.	उ.भा.	उ.फा.
3	4	3	4	4	1	4	2	4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:34

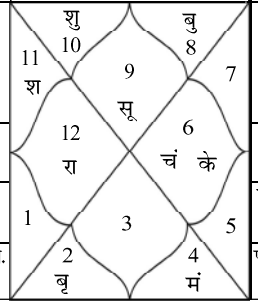

अमावस्यां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 30 दिसम्बर सन् 2024 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	08	03	07	01	10	10	11	05
14	03	08	23	19	01	20	07	07
34	18	20	06	13	21	10	23	23
11	22	08	09	06	00	02	05	05
61	724	18	74	06	98	04	03	03
10	49	08	56	06	09	04	11	11
शी	शी	व	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पूषा.	मूला	पुष्य	ज्ये.	रोहि	धनि	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
1	1	2	2	3	3	1	2	4

कुण्डली अमावस प्रातः 7:37

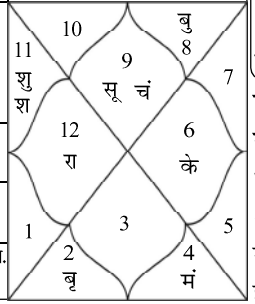

A गण्डमूल 24:58 से B **सायन उत्तरायण प्रारंभ** 14:40, अमृतयोग C सूर्य पू.षा. में 24:24, गण्डमूल 22:13 से D प्रयागादि तीर्थ महत्त्व, गण्डमूल 23:57 तक

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

सफला एकादशी व्रतः- इस दिन उपवास धारण कर भगवान श्रीहरि की पूर्णरूपेण श्रद्धा से पूजा करने से तथा कीर्तन जपादि में संलग्न होकर रात्रि जागरण करें तो ईश्वर कृपा से दिव्यलोक प्राप्त होता है।

पौषसंक्रान्तिः- श्रीसूर्यनारायण 15 दिसम्बर 2024 रवि रात्रि 10:09 पर धनु राशि में प्रवेश करेंगे, पौष संक्रान्ति में सामान्य वर्षा भी हो तो भी दुधारू पशु दूध अधिक दें और अन्न, सब्जियां बहुत होंगी। **लोकभविष्यः**- ज्येष्ठा नक्षत्र में बुध होने से गन्ना, शाली और घी तेल महंगे हों। पूर्वाभाद्रपदा में शनैश्चर होने से वैद, कवि, मदिरा विक्रेता करने वाले, दलाली से धन कमाने वाले तथा कानून के ज्ञाताओं को पीड़ा हो अर्थात् कारोबार में कमी आएगी। वाहन विक्रेताओं को मध्यम लाभ हो। **आकाशलक्षणम्**:- शीतलहर और बादल चाल बनी रहे, खण्ड वर्षा सहित बर्फवारी कायोग है।

श्रीविक्रमी संवत् 2081	पौष शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2024-25 ई.	31 दिसंबर से 13 जनवरी	सूर्योत्तरायणे, शिशर् ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श पौष	वि पौष	अं दिसं.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
09	53	1	मंग	49	22	27	22	पू.षा.	41	06	24	04	ध्रुव	18	59	किं	15	43	धनु	10	17	31	पौष शुक्ल प्रतिपदा	07	37	17	30
09	54	2	बुध	46	57	26	24	उ.षा.	40	21	23	46	व्याघा	17	06	बा	14	56	म.प्रा. 6:00	11	18	जन.	चन्द्रदर्शनम् (45 मु.), सन् 2025 ई. शुरू, सिद्धियोग	07	37	17	31
09	54	3	गुरु	43	48	25	09	श्रवण	38	52	23	11	हर्षना	14	58	तै	13	48	मकर	12	19	2	अमृतयोग	07	38	17	32
09	55	4	शुक्र	40	05	23	40	धनि	36	50	22	22	वज्र	12	37	व	12	26	कुम्भ 10:47	13	20	3	भद्रा 12:26 से 23:40 तक, **पञ्चक प्रारंभ** 10:47, शुक्र A	07	38	17	33
09	55	5	शनि	35	59	22	01	शत	34	24	21	23	सिद्धि व्यती	10 26	08 47	ब	10	52	कुम्भ	14	21	4	बुध धनु में 12:02	07	38	17	33
09	56	6	रवि	31	34	20	16	पू.भा.	31	39	20	18	वरिय	28	51	कौ	09	10	मीन 14:34	15	22	5	रवियोग	07	38	17	34
09	57	7	सोम	26	54	18	24	उ.भा.	28	40	19	06	परिघा	26	05	व	18	24	मीन	16	23	6	भद्रा 18:24 से 29:27 तक, **श्रीमार्तण्ड सप्तमी**, गण्डमूल B	07	38	17	35
09	58	8	मंग	22	02	16	27	रेवती	25	29	17	50	शिव	23	15	ब	16	27	मेष 17:50	17	24	7	**पञ्चक समाप्ति** 17:50, सिद्धियोग, गण्डमूल	07	38	17	36
09	54	9	बुध	17	00	14	26	अश्वि	22	08	16	30	सिद्ध	20	23	कौ	14	26	मेष	18	25	8	गण्डमूल 16:30 तक, रवियोग	07	38	17	37
09	59	10	गुरु	11	52	12	23	भरणी	18	42	15	07	साध्य	17	29	ग	12	23	वृष 20:45	19	26	9	भद्रा 23:21 से सिद्धियोग, रवियोग	07	38	17	37
10	00	11	शुक्र	06	44	10	20	कृत्ति	15	18	13	45	शुभ	14	36	वि	10	20	वृष	20	27	10	**पुत्रदा एकादशी व्रत**, भद्रा 10:20 तक, **कुम्भ महापर्व शुरू**,C	07	38	17	33
10	01	12	शनि	01	49	08	22	रोहि	12	08	12	29	शुक्ल	11	48	बा	03	22	मि.23:54	21	28	11	**प्रदोष व्रत**, स.सि. योग	07	38	17	39
0	0	13	शनि	57	20	30	34	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	त्रयोदशी तिथि क्षय	0	0	0	0
10	02	14	रवि	53	33	29	03	मृग.	09	26	11	24	ब्रह्मा ऐन्द्र	09 30	09 44	ग	17	46	मिथुन	22	29	12	भद्रा 29:03 से, वक्री मंगल पुन. में 24:12, राहु उ.भा.-1,D	07	38	17	40
10	03	15	सोम	50	47	27	57	आर्द्रा	07	30	10	38	वैधृति	28	39	वि	16	27	कर्क 28:18	23	30	13	भद्रा 16:27 तक, **श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत**, बुध पू.षा.E	07	38	17	41

अष्टम्यां मंगलवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 7 जनवरी सन् 2025 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	11	03	08	01	10	10	11	05
22	22	05	03	18	09	20	06	06
43	46	35	45	24	51	47	58	58
31	06	01	09	09	02	07	01	01
61	953	22	84	05	62	05	03	03
08	51	58	55	04	03	00	11	11
शी	शी	व	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.षा.	रेवती	पुष्य	मूल	रोहि	शत.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
3	2	1	2	3	1	1	2	4

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:38

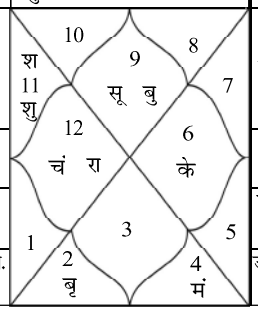

पूर्णिमायां सोमवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 13 जनवरी सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
08	02	03	08	01	10	10	11	05
28	17	03	12	17	15	21	06	06
50	04	14	24	55	58	19	39	39
16	53	07	02	01	07	00	00	00
61	829	23	88	04	60	05	03	03
06	41	59	01	05	02	58	11	11
शी	शी	व	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.षा.	आर्द्रा	पुन.	मूल	रोहि	शत.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
1	4	4	4	3	3	1	1	3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:38

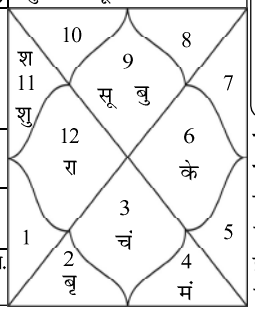

A शतभिषा में 28:38, अमृतयोग B 19:06 से, **श्रीगुरु गोविन्द सिंह जयन्ती** C सूर्य उ.षा. में 26:20 D केतु उ.फा. 3-15:55 E में 20:35, **माघस्नानारम्भा,** अमृतयोग

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

पुत्रदा एकादशी व्रत– इसके उपवास से पुत्रहीन व्यक्ति को पुत्र एवं विद्या प्राप्ति के इच्छुक को अपूर्व विद्यालाभ होता है, इस लोक में सुख एवं परलोक में वैकुण्ठधाम की प्राप्ति होती है। **पौषी पूर्णिमा**– माघ स्नान पौषी पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक एक मास (अधिकमास होने पर दो मास) तक चलने वाला पर्व है, माघ स्नान के दिनों में प्रतिदिन प्रातः दैनिक नित्यकर्म की समाप्ति के अनन्तर किसी तीर्थ सरिता, बावड़ी, तालाब अथवा अपने घर में ही ईश्वर स्मरण पूर्वक स्नान करने का महान महात्म्य है। यह स्नान सूर्योदयकाल अथवा प्रातः दिन के प्रथम पञ्चमांश भाग में कर लेना चाहिए। **लोकभविष्यः**- शतभिषा में स्थित शुक्र मदिरा बेचने वालों तथा नाट्य कलाकारों को पीड़ित करता है, पशु-पक्षियों तथा बालकों को पीड़ा हो। व्यापारी, वैद्य, नौका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा अश्वों से जीविका चलाने वाले लोगों को हानि हो। तिल, माष, चणक इत्यादि खाद्य पदार्थों का नाश, दुधारू पशुओं को शारीरिक कष्ट हों। **आकाशलक्षणम्**:- शीतलहर यथावत बनी रहे, पर्वतों पर बर्फवारी के योग के साथ खण्ड वर्षा भी हो।

श्रीविक्रमी संवत् 2081	माघ कृष्ण पक्ष	शाकः 1946, सन् 2025 ई.	14 जनवरी से 29 जनवरी	सूर्योत्तरायणे, शिशर् ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			पौष	माघ	जन.		सू.	उ.	सू.	अ.
10	04	1	मंग	49	20	27	21	पुन	06	38	10	17	विष्कुं	26	53	बा	15	35	कर्क	24	1	14	मा.कृ. प्रतिपदा, **माघ मकर संक्रांति पर्व,** सूर्य मकर में 8:54 A	07	38	17	42
10	05	2	बुध	49	25	27	23	पुष्य	07	06	10	28	प्रीति	25	46	तै	15	18	कर्क	25	2	15	सिद्धियोग, गण्डमूल 10:28 से	07	37	17	43
10	07	3	गुरु	51	13	28	06	आश्ले	09	08	11	17	आयु.	25	05	व	15	40	सिंह 11:17	26	3	16	भद्रा 15:40 से 28:06 तक, गण्डमूल, **सौभाग्यसुन्दरी व्रत,** B	07	37	17	44
10	08	4	शुक्र	54	44	29	30	माघ	12	50	12	45	सौभा.	24	57	ब	16	44	सिंह	27	4	17	**श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी (भुग्गा व्रत),** चन्द्रोदय जम्मू 21:16 C	07	37	17	45
10	09	5	शनि	59	46	31	31	पू.फा.	18	07	14	51	शोभना	25	16	कौ	18	27	कन्या 21:27	28	5	18		07	37	17	46
10	10	6	रवि	60	00	00	00	उ.फा.	24	44	17	30	अतिगंड	25	57	ग	20	42	कन्या	29	6	19	सा.सू. कुम्भ में 25:15, स.सि.योग	07	36	17	47
10	12	6	सोम	05	57	09	59	हस्त	32	15	20	30	सुकर्मा	26	52	व	09	59	कन्या	30	7	20	भद्रा 9:59 से 23:19 तक, रवियोग	07	36	17	47
10	13	7	मंग	12	41	12	40	चित्रा	40	02	23	37	धृति	27	49	ब	12	40	तुला 10:02	मा.	8	21	**स्वामी विवेकानन्द जयंती,** बुध उ.षा. में 14:48, **वक्री मंगल** D	07	35	17	48
10	14	8	बुध	19	18	15	18	स्वाति	47	27	26	34	शूल	28	37	कौ	15	18	तुला	2	9	22		07	35	17	49
10	16	9	गुरु	25	08	17	38	विशा	53	53	29	08	गंड	29	06	ग	17	38	वृ. 22:32	3	10	23	भद्रा 30:35 से, नेता जी **सुभाषचन्द्रबोस जयंती,** सूर्य श्रवण E	07	35	17	50
10	17	10	शुक्र	29	37	19	25	अनु	58	53	31	08	वृद्धि	29	08	वि	19	25	वृश्चिक	4	11	24	भद्रा 19:25 तक, स.सि.योग, **पुण्यतिथि पं. रामेश्वरदत्त रैणा** F	07	34	17	51
10	19	11	शनि	32	26	20	32	ज्येष्ठ	60	00	00	00	ध्रुव	28	38	ब	08	04	वृश्चिक	5	12	25	**षट्तिला एकादशी व्रत,** अमृतयोग, गण्डमूल	07	34	17	52
10	20	12	रवि	33	24	20	55	ज्येष्ठ	02	12	08	26	व्याघा	27	34	कौ	08	49	धनु 8:26	6	13	26	**तिल द्वादशी, गणराज्य दिवस,** स.सि.योग 8:26 बाद, गण्डमूल	07	33	17	53
10	21	13	सोम	32	35	20	35	मूला	03	43	09	02	हर्षना	25	57	ग	08	50	धनु	7	14	27	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 20:35 से, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** G	07	33	17	54
10	23	14	मंग	30	10	19	36	पू.षा.	03	35	08	58	वज्र	23	51	वि	08	10	मकर 14:51	8	15	28	भद्रा 8:10 तक, शुक्र मीन में 7:00	07	32	17	55
10	25	30	बुध	26	25	18	06	उ.षा. श्रवण	02 59		02 02	08 31	20 09	सिद्धि	21	21	ना	18	06	मकर	9	16	29	**देवपितृकार्येऽमावस, मौनी अमावस, कुंभ पर्व शाही स्नान**	07	32	17	56

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 22 जनवरी सन् 2025 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	06	02	08	01	10	10	11	05
07	09	29	26	17	24	22	06	06
59	34	41	03	22	37	10	10	10
55	38	03	06	07	09	04	04	04
61	713	22	93	02	54	06	03	03
03	25	57	59	07	58	00	11	11
शी	शी	व	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.षा.	स्वा.	पुन.	पू.भा.	रोहि	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
4	1	3	4	3	2	1	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:35

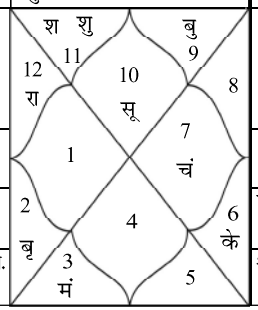

अमावस्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 29 जनवरी सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	09	02	09	01	11	10	11	05
15	08	27	07	17	00	22	05	05
07	22	11	13	08	47	53	48	48
01	22	04	06	05	04	06	01	01
60	819	20	97	01	50	06	03	03
58	14	05	06	04	56	03	11	11
शी	शी	व	मा	व	मा	मा	व	व
0	0	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रव.	उ.षा.	पुन.	उ.षा.	रोहि	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
2	4	3	4	3	4	1	1	3

कुण्डली अमावस प्रातः 7:32

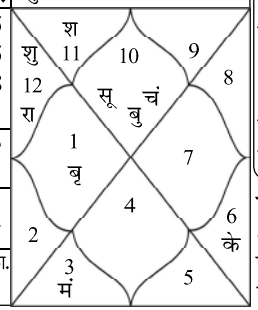

A **निरयण उत्तरायण शुरू** B बुधास्तः पूर्व 23:53 अमृतयोग C शुक्र पू.भा. में 7:41, गण्डमूल 12:45 तक D **मिथुन में** 10:00, भा. माघारम्भः द्विपुष्करयोग 12:40 तक E में 28:43 F**(राजज्योतिषी)अखनूर,** बुध मकर में 17:37, गण्डमूल 31:08 से, संकट हरगणपति व्रत G गंडमूल 9:02 तक

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– श्रीगणेश संकट चतुर्थी (भुग्गा व्रत)– इस दिन भगवती पार्वती माता जी ने तिलों का उबटन शरीर से उतार कर कमल के फूल पर रखा तो झट से वही दिव्य बालक का रूप बन गया अतः इसी दिन भगवान श्रीगणेश जी का जन्मदिन मनाया जाता है। इस दिन व्रत रखने से संसार में यशोलाभ, मनोरथसिद्धि एवं गणपति भगवान प्रसन्न होकर मनुष्य का जन्म सफल कर देते हैं। **षट्तिला एकादशी–** इस व्रत में तिल स्नान, तिलोद्वर्तन, तिलहोम, तिलदान, तिलतर्पण, तिलभक्षण कर भगवत्पूजा पूर्वक उपवास धारण करने से इस जन्म में पूर्णतः आरोग्य लाभ एवं अन्त्य में वैकुण्ठ प्राप्त होता है। **मौनी अमावस–** इस में मौन एवं उपवास धारण कर गंगादि तीर्थ में स्नान, दान, जप, होमादि से शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक सन्तुलन में वृद्धि के साथ ही परलोक भी आनन्दमय हो जाता है। (वराहपुराणे) **"तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः॥" मकर संक्रान्तिः**- 14 जनवरी 2025 मङ्गलवार को श्रीसूर्यनारायण प्रातः 8:54 पर मकर राशि में प्रवेश करेंगे। (शेष पृष्ठ 206 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	माघ शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2025 ई.	30 जनवरी से 12 फरवरी	सूर्योत्तरायणे, शिशर् ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			माघ	माघ	जन.		सू.	उ.	सू.	अ.
10	26	1	गुरु	21	40	16	11	धनि	55	49	29	51	व्यती	18	33	ब	16	11	कुम्भ 18:35	10	17	30	माघ शु. प्रतिपदा, **पञ्चक प्रारंभ** 18:35, श्रीवल्लभ जयन्ती A	07	31	17	57
10	28	2	शुक्र	16	13	13	59	शत	51	50	28	14	वरिय	15	32	कौ	13	59	कुम्भ	11	18	31	चन्द्रदर्शनम् (15 मु.)	07	30	17	58
10	29	3	शनि	10	22	11	39	पू.भा.	47	38	26	33	परिघा	12	24	ग	11	39	मीन 20:57	12	19	फर.	**श्रीगौरी तृतीया व्रत,** भद्रा 22:27 से, **तिल चतुर्थी,** शुक्र B	07	30	17	59
10	31	4	रवि	04	24	09	15	उ.भा.	43	28	24	52	शिव सिद्धि	09 30	14 00	वि	09	14	मीन	13	20	2	**वसन्त पञ्चमी**, भद्रा 9:14 तक, स.सि.योग, गण्डमूल 24:52 से	07	29	18	0
0	0	5	रवि	58	30	30	53	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	पञ्चमी तिथि क्षय	0	0	0	0
10	33	6	सोम	52	53	28	38	रेवती	39	31	23	17	साध्य	27	02	कौ	17	44	मेष 23:17	14	21	3	**पञ्चक समाप्तिः** 23:17, गण्डमूल, रवियोग	07	28	18	01
10	34	7	मंग	47	39	26	31	अश्वि	35	55	21	50	शुभ	24	06	ग	15	33	मेष	15	22	4	भद्रा 26:31 से, पुत्र सप्तमी, अचला सप्तमी गुरु मार्गी 15:11,C	07	27	18	02
10	36	8	बुध	42	53	24	36	भरणी	32	46	20	33	शुक्ल	21	19	वि	13	32	वृष 26:16	16	23	5	**श्रीभीमाष्टमी,** भद्रा 13:32 तक, **दुर्गाष्टमी**	07	27	18	03
10	38	9	गुरु	38	39	22	54	कृत्ति	30	08	19	29	ब्रह्मा	18	42	बा	11	43	वृष	17	24	6	**श्रीदुर्गा नवमी, गुप्तनवरात्रे समाप्त,** सूर्य धनिष्ठा में 7:48	07	26	18	04
10	40	10	शुक्र	35	03	21	27	रोहि	28	07	18	40	ऐन्द्र	16	16	तै	10	08	वृष	18	25	7	बुध धनिष्ठा में 18:31, रवियोग	07	25	18	05
10	41	11	शनि	32	10	20	16	मृग	26	46	18	07	वैधृति	14	04	व	08	49	मि.प्रा.6:20	19	26	8	**जया एकादशी व्रत**, भद्रा 8:49 से 20:16 तक, अमृतयोग,D	07	24	18	06
10	43	12	रवि	30	05	19	26	आर्द्रा	26	13	17	53	विष्कुं	12	07	ब	07	48	मिथुन	20	27	9	**श्रीभीष्म द्वादशी,** श्रीभीष्मतर्पणम्, तिल द्वादशी	07	23	18	06
10	45	13	सोम	28	57	13	58	पुन	26	35	18	01	प्रीति	10	26	तै	13	58	कर्क 11:56	21	28	10	**प्रदोष व्रत, श्री गुरुहरराय जयन्ती**	07	22	18	07
10	47	14	मंग	28	55	18	56	पुष्य	28	00	18	34	आयु.	09	06	व	18	56	कर्क	22	29	11	भद्रा 18:56 से 31:07 तक, बुध कुम्भ में 12:53, E	07	22	18	08
10	44	15	बुध	30	06	19	23	आश्ले	30	36	19	35	सौभा.	08	07	ब	19	23	सिंह 19:35	23	फा.	12	**फाल्गुण संक्रान्ति,** सूर्य कुंभ में रा.9:54, **श्रीगुरु रविदास** F	07	21	18	09

अष्टम्यां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 5 फरवरी सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	00	02	09	01	11	10	11	05
22	17	25	18	17	06	23	05	05
13	51	09	55	04	17	39	25	25
22	27	09	09	03	00	03	09	09
60	849	15	102	00	37	06	03	03
51	35	52	05	00	51	56	11	11
शी	शी	व	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रव.	भर.	मृग.	श्रव.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
4	2	1	3	3	1	2	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:27

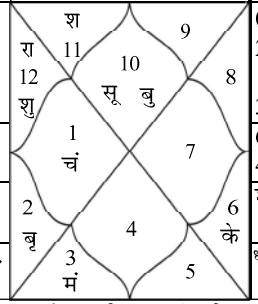

पूर्णिमायां बुधवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 12 फरवरी सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
09	03	02	10	01	11	10	11	05
29	22	23	01	17	10	24	05	05
18	32	44	14	10	53	27	03	03
33	00	06	06	01	06	00	06	06
60	775	09	107	01	35	06	03	03
40	23	59	58	54	06	59	11	11
शी	शी	व	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
धनि	आश्ले	पुन.	धनि.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
2	2	2	3	3	3	2	1	3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 7:21

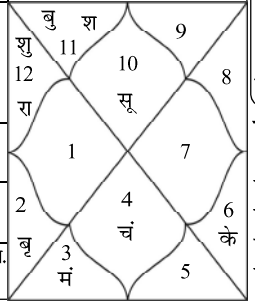

A **गुप्तनवरात्रे प्रारम्भ,** बुध श्रवण में 22:03 B उ.भा. में 8:25 C गण्डमूल 21:50 तक, अमृतयोग, स.सि.योग Dरवियोग E गण्डमूल 18:34 से F **जयंति,** गण्डमूल, **श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

गुप्त नवरात्र व्रत– माघ शुक्ल प्रतिपदा से शैशिर नवरात्रारम्भ होकर नवमी तक व्रत चलते हैं, नवमी के दिन होम तथा कन्या पूजन के पश्चात् व्रत पारण करने से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति एवं दुःख निवृत्ति द्वारा शान्ति प्राप्त होती है (देवीभगवते)। **श्रीवसन्तपंचमी**– माघशुक्ल पूर्वविद्धा पञ्चमी के दिन सगणमातृका पूजा एवं ऋतुराज वसन्त सहित अष्टभुज धनुर्वाण सहित शंख पद्मधारी कामदेव जी एवं रति, प्रीति, शक्ति, मदशक्ति इन चारों पत्नियों के स्तनों पर्यन्त कामदेव की चारों भुजाएं हों एवं कामदेव के झण्डे पर मकर के मुख पर पाँच वाणों के चिह्न भी हों ऐसा ध्यान कर कामदेव की पूजा करें, इस पूजा के प्रभाव से गृहस्थ सदस्य सुखमय जीवन से प्रत्येक कार्य क्षेत्र में लाभान्वित हों (पुराण समुच्चय)। **श्रीभीष्माष्टमीः**- माघ शुक्लाष्टमी के दिन यव, तिल जलादि से भीष्म जी का श्राद्ध व तर्पण से भीष्म को शान्ति देने से स्वयं आत्मशान्ति लाभ होता है। **लोकभविष्यः**- 14 जनवरी से बुधास्त होने के कारण सुभिक्ष हो, प्रजा में सुखों की वृद्धि हो, शुक्र उत्तरा भाद्रपद में होने से जुआरी, सट्टाबाजी करने वाले लोग, पञ्जाब, हरियाणा, कुरूक्षेत्र में रहने वाले लोगों को (शेष पृष्ठ 206 पर)

श्रीविक्रमी संवत् 2081	फाल्गुन कृष्ण पक्ष	शाकः 1946, सन् 2025 ई.	13 फरवरी से 27 फरवरी	सूर्योत्तरायणे, शिशर/वसन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान		तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श	वि	अं	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू			
घण्टे	मिनट																			माघ	फाल्गु	फर.		सू.	उ.	सू.	अ.
10	50	1	गुरु	32	35	20	22	माघ	34	28	21	07	शोभना	07	31	बा	07	49	सिंह	24	2	13	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, गण्डमूल 21:07 तक	07	20	18	10
10	52	2	शुक्र	36	24	21	53	पू.फा.	39	36	23	09	अतिगंड	07	20	तै	09	03	कन्या 29:43	25	3	14	बुध शतभिषा में 29:04	07	19	18	11
10	54	3	शनि	41	27	23	53	उ.फा.	45	53	25	39	सुकर्मा	07	32	व	10	49	कन्या	26	4	15	भद्रा 10:49 से 23:53 तक	07	18	18	12
10	56	4	रवि	47	28	26	16	हस्त	53	06	28	31	धृति	08	06	ब	13	02	कन्या	27	5	16	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 21:49, स.सि. योग	07	17	18	13
10	58	5	सोम	54	04	28	54	चित्रा	60	00	00	00	शूल	08	54	कौ	15	34	तुला 18:01	28	6	17	अमृतयोग	07	16	18	14
11	00	6	मंग	60	00	00	00	चित्रा	00	51	07	35	गंड	09	52	ग	18	14	तुला	29	7	18	सा.सू. मीन में 15:15, **वसन्त ऋतु प्रारम्भ**	07	15	18	14
11	02	6	बुध	0	47	07	33	स्वाति	08	34	10	40	वृद्धि	10	48	व	07	33	तुला	30	8	19	भद्रा 7:33 से 20:43 तक, सूर्य शतभिषा में 12:24, A	07	14	18	15
11	04	7	गुरु	06	54	09	59	विशा	15	43	13	30	ध्रुव	11	34	ब	09	59	वृ.प्रा.6:50	फा.	9	20	भा. फाल्गुनारम्भः, जानकी व्रत (मध्याह्न व्यापिनी)	07	13	18	16
11	06	8	शुक्र	11	56	11	58	अनु	21	45	15	54	व्याघा	11	59	कौ	11	58	वृश्चिक	2	10	21	स.सि. योग, गण्डमूल 15:54 से	07	12	18	17
11	07	9	शनि	15	22	13	20	ज्येष्ठ	26	14	17	40	हर्षना	11	56	ग	13	20	धनु 17:40	3	11	22	भद्रा 25:45 से, **श्रीरामदास जयन्ती**, सिद्धियोग, गण्डमूल B	07	10	18	18
11	09	10	रवि	16	57	13	56	मूला	28	53	18	43	वज्र	11	19	वि	13	56	धनु	4	12	23	भद्रा 13:56 तक, अमृतयोग, स.सि.योग, गण्डमूल 18:43 तक	07	09	18	19
11	11	11	सोम	16	32	13	45	पू.षा.	29	36	18	59	सिद्धि	10	05	बा	13	45	मकर 24:55	5	13	24	**विजया एकादशी व्रत,** मंगलमार्गी 7:31	07	08	18	20
11	13	12	मंग	14	11	12	48	उ.षा.	28	29	18	31	व्यतीपात वरीयां	08 29	15 50	तै	12	48	मकर	6	14	25	**प्रदोष व्रत, शनेरस्तः पश्चिमे** 15:45, त्रिपुष्कर योग 12:48 तक	07	07	18	20
11	15	13	बुध	10	07	11	09	श्रवण	25	43	17	23	परिघा	26	57	व	11	09	कुम्भ 28:36	7	15	26	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**, भद्रा 11:09 से 22:06 तक, पञ्चकC	07	06	18	21
11	17	14	गुरु	04	35	08	55	धनि	21	36	15	44	शिव	23	41	श	08	55	कुम्भ	8	16	27	**देवपितृकार्येऽमावस**, बुध मीन में 23:45	07	05	18	22
0	0	30	गुरु	57	54	30	15	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	अमावस तिथि क्षय	0	0	0	0

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 21 फरवरी सन् 2025 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	07	02	10	01	11	10	11	05
08	11	22	17	17	15	25	04	04
23	23	51	48	31	04	30	35	35
33	21	09	08	08	02	07	00	00
60	722	02	111	03	20	07	03	03
28	28	58	05	02	59	02	11	11
शी	शी	व	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
शत.	अनु.	पुन.	शत.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
1	3	1	4	3	4	2	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 7:12

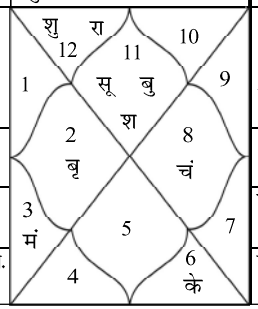

अमावस्यां गुरुवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 27 फरवरी सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	10	02	10	01	11	10	11	05
14	00	22	28	17	16	26	04	04
25	32	51	41	54	26	14	15	15
53	17	05	08	08	06	02	09	09
60	869	02	102	04	06	07	03	03
17	04	55	59	55	01	03	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
शत.	धनि.	पुन.	पू.भा.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
3	3	1	3	3	4	2	1	3

कुण्डली अमावस प्रातः 7:05

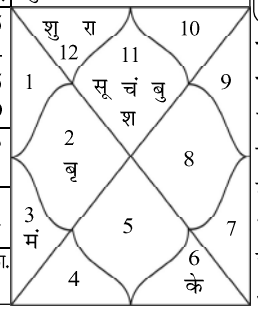

A रवियोग 10:40 तक B **बुधोदयः पश्चिमे** 18:18 C प्रारंभ 28:36

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

विजया एकादशी व्रतः- इस एकादशी का व्रत करने से व्यवहारिक विजय तो प्राप्त होती है साथ-साथ व्यक्ति अमोघ शक्तियों का अधिकारी बन जाता है एवं भगवान के अनन्य भक्तों में मूर्धन्य हो जाता है। **महाशिवरात्रि व्रतः**- यह तिथि अर्धरात्रि व्यापिनी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ग्रहण की जाती है। इस व्रत को प्रतिवर्ष करने से शिवजी का अक्षय प्रसाद लाभ होता है। इस तिथि के स्वामी स्वयं शंकर जी हैं विधिविधान एवं श्रद्धापूर्वक व्रत करें तो स्वयं **"सूर्यकोटि प्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्। ज्योतिर्लिङ्ग समुद्भूय ज्ञानदृष्टिप्रदोभवेत्।।** (समस्तपुराणेषु) **फाल्गुन संक्रान्तिः**- 12 फरवरी 2025 बुधवार को श्री सूर्यनारायण रात्रि 9:54 पर प्रवेश करेंगे। यह संक्रान्ति धूर्त प्रवृत्ति सम्पन्न लोगों के लिए सुखद रहेगी, कलाकार, नाटकों में रुचि रखने वाले, सिनेमा जगत के लिए अशुभ है, राजनेताओं में परस्पर वैमनस्य की वृद्धि होने से भारतीय सरकार के कामकाज में बाधाएं आएंगी। **आकाशलक्षणम्:**- सामान्य वर्षा के योग हैं, कृष्णपञ्चमी को चित्रा नक्षत्र का योग है वर्षा सामान्य हो तो भी फसलें अच्छी होंगी।

श्रीविक्रमी संवत् 2081	फाल्गुन शुक्ल पक्ष	शाकः 1946, सन् 2025 ई.	28 फरवरी से 14 मार्च	सूर्योत्तरायणे, बसन्त ऋतौ, दक्षिणगोलार्धे	दै. सूर्योदयास्त

दिनमान घण्टे	दिनमान मिनट	तिथि	वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घं॰मि॰	श फाल्गु	वि फाल्गु	अं फर.	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
11	19	1	शुक्र	50	32	27	17	शत	16	31	13	40	सिद्ध	20	07	किं	16	47	कुम्भ	9	17	28	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा, सिद्धि योग	07	04	18	23
11	21	2	शनि	42	48	24	10	पू.भा.	10	50	11	23	साध्य	16	25	बा	13	44	मी.प्रा.05:57	10	18	मार्च	चन्द्रदर्शनम् (45 मु.), **श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती,** A	07	02	18	24
11	23	3	रवि	35	02	21	02	उ.भा. रेवती	04 58	55 57	08 30	59 36	शुभ	12	34	तै	10	36	मीन	11	19	2	स.सि.योग 8:59 तक, शुक्र वक्री प्रातः 6:07, गण्डमूल B	07	01	18	24
11	25	4	सोम	27	36	18	02	अश्वि	53	43	28	30	शुक्ल ब्रह्म	08 29	57 25	व	07	31	मे.प्रा.6:36	12	20	3	भद्रा 7:31 से 18:02 तक, **पञ्चक समाप्तिः** 6:36, C	07	00	18	25
11	27	5	मंग	20	45	15	17	भरणी	49	06	26	38	ऐन्द्र	26	06	बा	15	17	मेष	13	21	4	**यज्ञवल्क्य जयन्ती,** सूर्य पू.भा. में 18:39	06	59	18	26
11	29	6	बुध	14	45	12	52	कृत्ति	45	26	25	03	वैधृ	23	07	तै	12	52	वृष 8:12	14	22	5	अमृतयोग, स.सि. योग, रवियोग	06	58	13	27
11	31	7	गुरु	09	47	10	51	रोहि	42	53	24	06	विष्कुं	20	24	व	10	51	वृष	15	23	6	भद्रा 10:51 से 22:01 तक	06	56	13	28
11	33	8	शुक्र	05	59	09	19	मृग	41	32	23	32	प्रीति	18	14	ब	09	19	मिथुन 11:44	16	24	7	**होलाष्टक प्रारंभ, अन्नपूर्णाष्टमी**	06	55	18	28
11	35	9	शनि	03	27	08	17	आर्द्रा	41	26	23	28	आयु.	16	24	कौ	08	17	मिथुन	17	25	8	**होलाष्टक 7 मार्च से 14 मार्च तक,** सिद्धियोग	06	54	18	29
11	37	10	रवि	02	12	07	46	पुन	42	36	23	55	सौभा.	14	58	ग	07	46	कर्क 17:45	18	26	9	भद्रा 19:40 से, अमृतयोग	06	53	18	30
11	39	11	सोम	02	14	07	45	पुष्य	45	00	24	51	शोभना	13	56	वि	07	45	कर्क	19	27	10	**आमलकी एकादशी व्रत**, भद्रा 7:45 तक, गण्डमूल 24:51 से	06	51	18	31
11	41	12	मंग	03	30	08	14	आश्ले	48	33	26	15	अतिगंड	13	17	बा	08	14	सिंह 26:15	20	28	11	**प्रदोष व्रत,** अमृतयोग, स.सि.योग, गण्डमूल	06	50	18	31
11	43	13	बुध	05	58	09	12	माघ	53	11	28	05	सुकर्मा	13	00	तै	09	12	सिंह	21	29	12	गण्डमूल 28:05 तक, रवियोग	06	49	18	32
11	45	14	गुरु	09	31	10	36	पू.फा.	58	49	30	19	धृती	13	03	व	10	36	सिंह	22	30	13	**होलिका दहन,** भद्रावाद भद्रा 10:36 से 23:26 तक,D	06	47	18	33
11	47	15	शुक्र	14	05	12	24	उ.फा.	60	00	00	00	शूल	13	23	ब	12	24	कन्या 12:55	23	चैत्र	14	**चैत्र संक्रांति**, सूर्य मीन में सायं 6:49, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती,E	06	46	18	34

अष्टम्यां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 7 मार्च सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	01	02	11	01	11	10	11	05
22	26	23	10	18	16	27	03	03
27	26	30	32	35	06	13	50	50
22	36	07	07	05	07	00	05	05
60	814	07	64	05	13	07	03	03
02	55	59	01	58	07	04	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	व	मा	व	व
0	0	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
पू.भा.	मृग्	पुन.	उ.भा.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
1	1	2	3	3	4	3	1	3

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:55

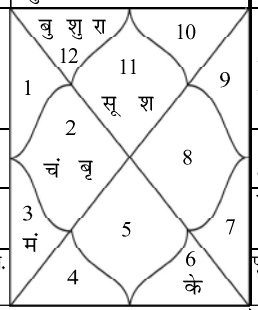

पूर्णिमायां शुक्रवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 14 मार्च सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
10	04	02	11	01	11	10	11	05
29	26	24	15	19	13	28	03	03
26	15	38	15	19	40	04	28	28
50	31	01	07	08	07	08	02	02
59	731	11	06	06	27	07	03	03
49	47	53	57	59	56	54	11	11
शी	शी	मा	मा	मा	व	मा	व	व
0	0	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ
पू.भा.	पू.फा.	पुन.	उ.भा.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	उ.भा.	उ.फा.
3	4	2	4	3	4	1	1	3

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6:46

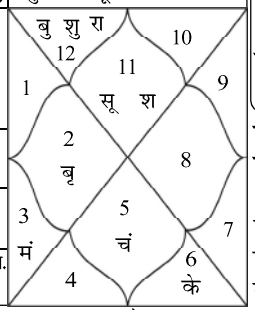

A त्रिपुष्कर योग 11:23 तक, बुध उ.भा. में 24:14 B 8:59 से रवियोग C गण्डमूल 28:30 तक D **श्रीसत्य- नारायण व्रत, मेला श्री श्यामजी** (खाटु), स.सि.योग E **पूर्णिमा व्रत, होलाष्टक समाप्त**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :– फाल्गुनी (होलिकादहन) व्रत– जैसे श्रावणी को ऋषि पूजा, विजया दशमी को देवी पूजा, दीपावली को लक्ष्मी पूजा के पश्चात् भोजन करते हैं उसी प्रकार भद्रा रहित दिन में व सायं होलिका दहन ज्वाला देख विभूति धारण कर भोजन करें, फाल्गुनी दाह चतुर्दशी, भद्रा, प्रतिपदा और दिन में निषिद्ध है, भद्रा के पुच्छ में होली दाह शुभ होता है। **आमलकी एकादशी व्रत**:- फाल्गुन शुक्ल एकादशी के दिन आमली के वृक्ष में लक्ष्मीनारायण का वास होता है अतः उस दिन लक्ष्मीनारायण जी की पूजा आमली वृक्ष के समीप करते हुए उपवास, रात्रि जागरण एवं प्रदक्षिणा करके दूसरे दिन ब्राह्मण भोजन के बाद स्वयं व्रत पारण करें तो विष्णु लोग की प्राप्ति हो (ब्रह्माण्डपुराण)। **लोकभविष्यः**- 25 फरवरी 2025 को शनि अस्त होने से शीत भय, चौपायों का मन मचले, गायों की हानि हो, उत्तराभाद्रपद में बुध होने से राजनीति में क्लेश होगा परन्तु प्रजा में सुखों की वृद्धि और सुभिक्ष हो, शुक्र उत्तराभाद्रपदा में होने से फल, फूलों की कमी होगी। **आकाशलक्षणम्**:- खण्ड वर्षा एवं तेज हवाओं से खड़ी फसलों की हानि हो।

श्रीविक्रमी संवत् 2081 | **चैत्र कृष्ण पक्ष** | **शाकः 1946, सन् 2025 ई.** | **15 मार्च से 29 मार्च** | **सूर्योत्तरायणे, बसन्त ऋतौ, दक्षिण उत्तरगोलार्धे** | **दै. सूर्योदयास्त**

दिनमान			वार	घटी	पल	घण्टे	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घण्टे	मिनट	योग	घण्टे	मिनट	करण	घण्टे	मिनट	चन्द्रचार घ॰मि॰	श फाल्गु	वि चैत्र	अं मार्च	विवरण भारतीय स्टैण्डर्ड समय में	जम्मू सू.	उ.	सू.	अ.
11	50	1	शनि	19	31	14	33	उ.फा.	05	23	08	54	गंड	14	0	कौ	14	33	कन्या	24	2	15	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा, अमृतयोग, बुध वक्री 12:16, A	06	45	18	34
11	52	2	रवि	25	37	16	59	हस्त	12	34	11	45	वृद्धि	14	48	ग	16	59	तुला 25:14	25	3	16	भद्रा 30:16 से, राहु पू.भा. 4 केतु उ.फा. 2-15:33, B	06	44	18	35
11	54	3	सोम	32	07	19	33	चित्रा	20	11	14	47	ध्रुव	15	45	वि	19	33	तुला	26	4	17	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 21:30, C	06	42	18	36
11	56	4	मंग	38	41	22	10	स्वाति	27	56	17	52	व्याघा	16	44	ब	08	52	तुला	27	5	18	बुधास्तः पश्चिमे 16:48 **शुक्र अस्त 19 मार्च**	06	41	18	37
11	58	5	बुध	44	54	24	37	विशा	35	26	20	50	हर्षना	17	38	कौ	11	25	वृ. 19:06	28	6	19	**वक्री शुक्रास्तः पश्चिमे** 18:37, श्रीरङ्गपञ्चमी	06	40	18	37
12	00	6	गुरु	50	18	26	46	अनु	42	13	23	32	वज्र	18	19	ग	13	45	वृश्चिक	29	7	20	भद्रा 26:46 से, सा.सू. मेष में 14:02, गण्डमूल 23:32 से, D	06	38	18	38
12	02	7	शुक्र	54	27	28	24	ज्येष्ठ	47	51	25	46	सिद्धि	18	41	वि	15	39	धनु 25:06	30	8	21	भद्रा 15:39 तक, **शीतलापूजनम्,** गण्डमूल, रवियोग	06	37	18	39
12	04	8	शनि	57	00	29	24	मूला	51	59	27	23	व्यती	18	36	बा	16	59	धनु	चैत्र	9	22	गण्डमूल 27:23, भा. चैत्रारम्भः	06	36	18	39
12	06	9	रवि	57	39	29	33	पू.षा.	54	19	28	13	वरिय	17	58	तै	17	37	धनु	2	10	23	**शुक्र उदय 25 मार्च**	06	34	18	40
12	08	10	सोम	56	20	29	05	उ.षा.	54	44	28	27	परिघा	16	44	व	17	28	मकर 10:24	3	11	24	भद्रा 17:28 से 29:05 तक, अमृतयोग	06	33	18	41
12	10	11	मंग	53	04	27	46	श्रवण	53	13	27	49	शिव	14	53	ब	16	31	मकर	4	12	25	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), वक्री शुक्रोदयः पूर्वस्यां 18:42	06	32	18	42
12	12	12	बुध	48	01	25	43	धनि	49	57	26	30	सिद्ध	12	25	कौ	14	49	कुम्भ 15:14	5	13	26	**पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), पञ्चक प्रारंभ** 15:14 E	06	30	18	42
12	14	13	गुरु	41	26	23	04	शत	45	11	24	34	साध्य शुभ	09 29	25 41	ग	12	28	कुम्भ	6	14	27	**प्रदोष व्रत,** वारूणी योग 6:29 से 18:43 तक, भद्रा 23:04 से, F	06	29	18	43
12	16	14	शुक्र	33	39	19	56	पू.भा.	39	13	22	09	शुक्ल	26	07	वि	09	33	मीन 16:47	7	15	28	भद्रा 9:33 तक, अमृतयोग, मेला पृथूदक-पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	06	28	18	44
12	18	30	शनि	25	02	16	28	उ.भा.	32	29	19	26	ब्रह्मा	22	03	ना	16	28	मीन	8	16	29	**देवपितृकार्येऽमावस,** गण्डमूल 19:26 से, शनि मीन में 21:41 G	06	27	18	44

अष्टम्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 22 मार्च सन् 2025 ई

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	08	02	11	01	11	10	11	05
07	01	26	12	20	09	29	03	03
24	55	27	32	19	06	03	02	02
16	53	01	09	04	00	09	08	08
59	751	15	47	08	37	07	03	03
33	24	07	03	01	58	54	11	11
शी	शी	मा	व	मा	व	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ
उ.भा.	मूल	पुन.	उ.भा.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	पू.भा.	उ.फा.
2	1	2	3	4	2	3	4	2

कुण्डली अष्टमी प्रातः 6:36

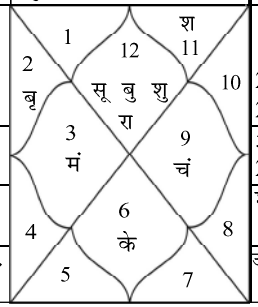

अमावस्यां शनिवासरे प्रातः 5:30 सगतिकाः स्पष्टग्रहाः 29 मार्च सन् 2025 ई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
11	11	02	11	01	11	10	11	05
14	07	28	06	21	04	29	02	02
20	55	26	37	18	51	55	40	40
28	34	04	03	08	03	01	05	05
59	893	18	48	08	33	07	03	03
21	19	03	59	59	58	03	11	11
शी	शी	मा	व	मा	व	मा	व	व
0	0	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.भा.	उ.भा.	पुन.	उ.भा.	रोहि	उ.भा.	पू.भा.	पू.भा.	उ.फा.
4	2	3	1	4	1	3	4	2

कुण्डली अमावस प्रातः 6:27

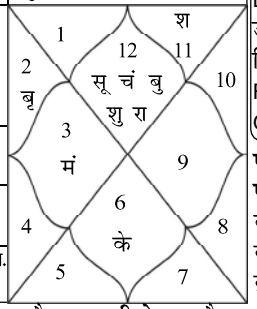

A **होला मेला पांओटा साहब, वसन्तोत्सव** B सन्त तुकाराम जयन्ती, स.सि.योग C सूर्य उ.भा. में 27:10, भद्रा 19:33 तक D स. सि.योग, उ.गोल शुरू E सिद्धियोग F **मासिक शिवरात्रि व्रत**, अमृतयोग G **विक्रमी संवत्** 2081 **सम्पूर्णम्**

पर्व त्योहार निर्णय एवं शास्त्र विधान :–

पापमोचिनी एकादशी व्रत– इस एकादशी का व्रत धारण कर लक्ष्मीनारायण की पूजा व रात्रि जागरण कर द्वादशी के दिन ब्राह्मण भोजन के पश्चात् नैवैद्य (व्रतपारण) करें, यह व्रत जन्मजन्मान्तरीय पापों से मुक्त कराकर भगवत्कृपा का पात्र बना कर विष्णुलोक की प्राप्ति करवाने वाला है। **वारूणीयोग**– चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र हो तो वारूणी, शनिवार भी हो तो महावारूणी, शुभ योग भी हो तो महामहावारूणी या अति वारूणी योग में गंगादि से शतशः सूर्यग्रहणों के तुल्य फल होता है। **देविका जयन्तीः**- **"फाल्गुने कृष्णपक्षस्य चतुर्दश्यां दिनोदये। अष्टादशे द्वापरान्ते प्रादुर्भूता हि देविका॥"** पद्मपुराण में प्रायः अमान्तमास मान कर चैत्र कृष्ण के स्थान में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी लिखा है। आज भी सौराष्ट्र, महाराष्ट्रादि अमान्त एवं उत्तरभारत में पूर्णिमान्त मास माना जाता है। इसीलिए शिवरात्रि व्रत भी माघ कृष्ण चतुर्दशी में मानते हैं वस्तुतः वहाँ भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ही समझें। **"षष्टितीर्थसहस्राणि तिस्त्र कोटट्योऽर्धकोट्यः आयान्ति देविकातीर्थे मार्गे चैत्रेऽपि फाल्गुने॥** (पद्मपुराणे) **"क्वचिद्गुप्ता क्वचिच्छुष्का क्वचिन्नीर प्रदर्शिनी।** (शेष पृष्ठ 206 पर)

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या तक अप्रैल-मई, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि अप्रैल	विक्रमी संवत् चैत्र	शक संवत् चैत्र	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
चैत्र शुक्ल पक्ष	9	27	20	मंग	1	20	31	रेवती अश्वि	07 29	32 07	वैधृति	14	18	मेष 7:32	चैत्र शु. प्रतिपदा, **नवचान्द्र संवत्सर प्रारंभ** गण्डमूल 29:07 तक, घट स्थापनम्, A	06	12	18	52
	10	28	21	बुध	2	17	33	भरणी	27	05	विष्कुं	10	37	मेष	चन्द्रदर्शनम् (15 मु.) सिद्धियोग मंगल पू.भा. में 11:09	06	11	18	53
	11	29	22	गुरु	3	15	4	कृत्ति	25	38	प्रीति आयु.	07 28	19 24	वृष 8:39	श्रीगौरी तृतीया, भद्रा 26:03 से, **मत्स्योत्पत्तिः, गणगौरी पूजा**, सौभाग्यशयन व्रत, B	06	10	18	54
	12	30	23	शुक्र	4	13	12	रोहि	24	51	सौभा.	26	13	वृष	श्री लक्ष्मी पञ्चमी, भद्रा 13:12 तक	06	08	18	54
	13	वैशा.	24	शनि	5	12	04	मृग	24	49	शोभना	24	33	मि. 12:43	**मेष संक्रान्ति,** सूर्य अश्विनी में रात्रि 9:03, शुक्र रेवती में 28:32, **स्कन्द षष्ठी व्रत**	06	07	18	55
	14	2	25	रवि	6	11	44	आर्द्रा	25	35	अतिगंड	23	32	मिथुन	B शिवशक्ति पूजा, अमृत योग	06	06	18	56
	15	3	26	सोम	7	12	12	पुन	27	05	सुकर्मा	23	08	कर्क 20:18		06	05	18	57
	16	4	27	मंग	8	13	24	पुष्य	29	16	धृति	23	16	कर्क	भद्रा 12:12 से 24:12 से 24:43 तक, **मेला बाहु फोर्ट (जम्मू)**, अशोक कलिका C	06	04	18	57
	17	5	28	बुध	9	15	14	आश्ले	00	00	शूल	23	50	कर्क	**श्रीरामनवमी, श्रीदुगानवमी, नवरात्र समाप्त,** गण्डमूल	06	02	18	58
	18	6	29	गुरु	10	17	32	आश्ले	07	57	गंड	24	43	सिंह 07:57	गण्डमूल, सिद्धियोग, **अगस्तास्त व्रतवन्ध दशमी**, आशा दशमी	06	01	18	59
	19	7	30	शुक्र	11	20	05	माघ	10	57	वृद्धि	25	44	सिंह	**कामदा एकादशी व्रत,** भद्रा 6:47 से 20:05 तक, गण्डमूल 10:57 तक, D	06	00	18	59
	20	8	31	शनि	12	22	42	पू.फा.	14	04	ध्रुव	26	47	कन्या 20:50		05	59	19	00
	21	9	वैशा.	रवि	13	25	11	उ.फा.	17	08	व्याघा	27	44	कन्या	**प्रदोष व्रत**, महाबीर जयन्ती (जैन), शुक्र वार्धक्य दोष शुरू, भा.वैशाख प्रारम्भ, E	05	58	19	01
	22	10	2	सोम	14	27	26	हस्त	20	00	हर्षना	23	28	कन्या	भद्रा 27:27 से, शिवपूजन विशेषः रवियोग	05	57	19	02
	23	11	3	मंग	15	29	19	चित्रा	22	32	वज्र	23	56	तुला 9:18	**पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत,** मंगल मीन में 8:39, भद्रा 16:25 तक, F	05	56	19	02
वैशाख कृष्ण पक्ष	24	12	4	बुध	1	00	00	स्वाति	24	41	सिद्धि	29	04	तुला	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा, शुक्रास्त पूर्वे 19:03 अमृतयोग, शुक्र मेष में 23:58	05	55	19	03
	25	13	5	गुरु	1	06	46	विशा	26	24	व्यती	28	53	वृ. 20:00	बुध मार्गी 18:23	05	54	19	04
	26	14	6	शुक्र	2	07	46	अनु	27	40	वरिय	23	19	वृश्चिक	भद्रा 20:04 से, स.सि. योग, गण्डमूल 27:40 से	05	53	19	04
	27	15	7	शनि	3	08	18	ज्येष्ठ	28	28	परिघा	27	23	धनु 28:28	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मू** 22:30, भद्रा 18:18 तक, गण्डमूल, G	05	51	19	05
	28	16	8	रवि	4	08	22	मूला	28	49	शिव	26	05	धनु	गण्डमूल 28:49 तक, अनुसूया जयन्ती, स.सि.योग	05	50	19	06
	29	17	9	सोम	5	07	58	पू.षा.	28	42	सिद्ध	24	25	धनु	अमृतयोग, श्रीगुरु तेगबहादुर जयन्ती	05	49	19	07
	30	18	10	मंग	6	07	05	उ.षा.	28	09	साध्य	22	23	मकर 10:36	भद्रा 7:05 से 18:29 तक, रवियोग 7:05 तक, श्रीगुरु अर्जुनदेव जयंती	05	43	19	07
	0	0	0	मंग	7	29	46	0	0	0	0	0	0	0	सप्तमी तिथि क्षय **शुक्र अस्त 24 अप्रैल**	0	0	0	0
	मई	19	11	बुध	8	28	02	श्रवण	27	11	शुभ	20	01	मकर	**गुरु वृष में** 12:55 F सूर्य भरणी में 12:55, मंगल उ.भा. में 16:10	05	47	19	08
	2	20	12	गुरु	9	25	53	धनि	25	49	शुक्ल	17	19	कुंभ 14:32	**पञ्चक प्रारम्भ** 14:32 I **पञ्चक समाप्त** 17:43, मासिक शिवरात्रि व्रत	05	47	19	09
	3	21	13	शुक्र	10	23	24	शत	24	06	ब्रह्मा	14	18	कुंभ	भद्रा 12:41 से 23:24 तक	05	46	19	10
	4	22	14	शनि	11	20	39	पू.भा.	22	07	ऐन्द्र	11	03	मीन 16:37	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** अमृतयोग, **श्रीवल्भाचार्य जयंती**	05	45	19	10
	5	23	15	रवि	12	17	42	उ.भा.	19	57	वैधृति विष्कु	07 28	36 03	मीन	**प्रदोष व्रत,** गण्डमूल 19:57 से, स.सि. योग, रेवती 1 राहुः हस्ते केतु 25:14, H	05	44	19	11
	6	24	16	सोम	13	14	41	रेवती	17	43	प्रीति	24	28	मेष 17:43	भद्रा 14:41 से 25:11 तक, **गुरोरस्तः पश्चिमे** 19:12, गण्डमूल, I	05	43	19	12
	7	25	17	मंग	14	11	41	अश्वि	15	32	आयु.	20	58	मेष	**पितृकार्येऽमावस,** गण्डमूल 15:32 तक, टैगोर जयन्ती, स.सि. योग	05	42	19	13
	8	26	18	बुध	30	08	52	भरणी	13	33	सौभा.	17	40	वृष 19:06	**देवकार्येऽमावस** **वृहस्पति अस्त 6 मई** H शुक्र भरणी में 19:41	05	41	19	13

A**चैत्र नवरात्र प्रारंभ, ज्योतिष दिवस**, वक्री बुध मीन में 21:30, पञ्चक समाप्त 7:32 स.सि.योग C प्रशासनम्, **श्री दुर्गाष्टमी**, गण्डमूल 29:16 से गुरु कृ. में 26:00 सिद्धियोग, रवियोग D सिद्धि योग, लक्ष्मीकान्त- दोलोत्सवः, सा.सू. वृष में 19:10, रवियोग, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ E स.सि. योग F **श्री हनुमानजयंती**, वैशाख स्नानारम्भः, चित्रान्नदानं भक्षणञ्च,बुधोदयः पूर्वस्यां 18:57

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 वैशाख शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावस्या तक मई-जून, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि मई	विक्रमी संवत् वैशाख	शक संवत् वैशाख	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
वैशाख शुक्ल पक्ष	9	27	19	गुरु	1	06	21	कृत्ति	11	55	शोभना	14	41	वृष	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शनम् (45 मु.), श्रीगुरु अंगद देव जयन्ती, A	05	40	19	14
	0	0	0	गुरु	2	28	18	0	0	0	0	0	0	0	द्वितीया तिथि क्षय A शिवाजी जयन्ती	0	0	0	0
	10	28	20	शुक्र	3	26	50	रोहि	10	47	अतिगंड	12	06	मि. 22:25	**श्रीपरशुराम जयंती, अक्षय तृतीया,** बुध (अश्विनी) मेष में 18:42	05	40	19	15
	11	29	21	शनि	4	26	04	मृग	10	15	सुकर्मा	10	02	मिथुन	भद्रा 14:22 से 26:04 तक, सिद्धियोग, सूर्य कृत्तिका में 7:01	05	39	19	15
	12	30	22	रवि	5	26	04	आर्द्रा	10	27	धृति	08	33	मिथुन	**श्रीशंकराचार्य जयंती,** अमृतयोग, रवियोग 10:27 तक	05	38	19	16
	13	31	23	सोम	6	26	51	पुन	11	24	शूल	07	41	क.प्रा. 5:04	**श्रीरामानुज जयन्ती**	05	37	19	17
	14	ज्येष्ठ	24	मंग	7	28	20	पुष्य	13	05	गंड	07	25	कर्क	**ज्येष्ठ संक्रांति,** सूर्य वृष में सायं 5:52, मंगल रेवती में 24:50, B	05	39	19	18
	15	2	25	बुध	8	00	00	आश्ले	15	25	वृद्धि	07	41	सिंह 15:24	भद्रा 17:18 तक, गण्डमूल	05	36	19	18
	16	3	26	गुरु	8	06	23	माघ	18	14	ध्रुव	08	23	सिंह	**श्री जानकी जयंती,** गण्डमूल 18:14 तक, शुक्र कृ. में 15:40	05	35	19	19
	17	4	27	शुक्र	9	08	49	पू.फा.	21	18	व्याघा	09	21	क.28:04	अमृतयोग, रवियोग	05	35	19	20
	18	5	28	शनि	10	11	23	उ.फा.	24	23	हर्षना	10	24	कन्या	भद्रा 24:39 से, रवियोग	05	34	19	20
	19	6	29	रवि	11	13	50	हस्त	27	16	वज्र	11	24	कन्या	**मोहिनी एकादशी व्रत,** भद्रा 13:50 तक, शुक्र वृष में 8:42, स.सि.योग	05	33	19	21
	20	7	30	सोम	12	15	59	चित्रा	0	0	सिद्धि	12	10	तुला 16:33	प्रदोष व्रत, सा.सू. मिथुन में 18:15	05	33	19	22
	21	8	31	मंग	13	17	40	चित्रा	05	46	व्यती	12	35	तुला	सिद्धियोग, बुध भरणी में 11:40, रवियोग 5:46 बाद, श्रीनृसिंह जयंती	05	32	19	22
	22	9	ज्येष्ठ	बुध	14	18	48	स्वाति	07	47	वरिय	12	37	वृ. 26:55	भद्रा 18:48 से, श्रीगुरु अमरदास जयंती, भा. ज्येष्ठारम्भः, C	05	32	19	23
	23	10	2	गुरु	15	19	23	विशा	09	15	परिघ	12	12	वृश्चिक	**श्रीबुद्ध जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत,** भद्रा 7:10 D	05	31	19	24
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	24	11	3	शुक्र	1	19	25	अनु	10	10	शिव	11	21	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृ. प्रतिपदा, सिद्धियोग, स.सि.योग, गण्डमूल 10:10 से, सूर्य रोहिणी में E	05	31	19	24
	25	12	4	शनि	2	18	59	ज्येष्ठ	10	36	सिद्ध	10	06	धनु 10:36	गण्डमूल, **श्रीनारद जयन्ती,** वीणादानम्	05	30	19	25
	26	13	5	रवि	3	18	07	मूला	10	36	साध्य	08	30	धनु	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मू** 22:15, भद्रा 6:35 से 18:07 तक, F	05	30	19	26
	27	14	6	सोम	4	16	54	पू.षा.	10	14	शुभ / शुक्ल	06 / 28	36 / 26	मकर 16:04	शुक्र रोहिणी में 11:56	05	30	19	26
	28	15	7	मंग	5	15	24	उ.षा.	09	33	ब्रह्मा	26	06	मकर	बुधास्तः पूर्वस्याम् 11:20 **शुक्र अस्त है**	05	29	19	27
	29	16	8	बुध	6	13	40	श्रवण	08	38	ऐन्द्र	23	34	कुंभ 20:05	भद्रा 13:40 से 24:43 तक, **पञ्चक प्रारंभ** 20:05 अमृतयोग, बुध कृत्तिका में 16:14, G	05	29	19	27
	30	17	9	गुरु	7	11	44	धनि	07	31	वैधृ	20	53	कुम्भ	रवियोग 7:31 तक	05	28	19	28
	31	18	10	शुक्र	8	09	39	शत पू.भा.	06 / 28	14 / 49	विष्कुं	18	04	मीन 23:09	बुध वृष में 12:11 **वृहस्पति उदय 2 जून**	05	28	19	29
	जून	19	11	शनि	9	07	25	उ.भा.	27	16	प्रीति	15	10	मीन	भद्रा 18:15 से 28:05 तक, सिद्धियोग, मंगल (अश्वि.), मेष में 15:36, H	05	28	19	29
	0	0	0	शनि	10	29	05	0	0	0	0	0	0	0	दशमी तिथि क्षय	0	0	0	0
	2	20	12	रवि	11	26	42	रेवती	25	40	आयु.	12	11	मेष 25:40	**अपरा एकादशी व्रत,** गण्डमूल, गुरोरूदयः पूर्वस्याम् 23:59, **पञ्चक समाप्त** 25:40	05	28	19	30
	3	21	13	सोम	12	24	19	अश्वि	24	05	सौभा.	09	10	मेष	गण्डमूल 24:05 तक	05	27	19	30
	4	22	14	मंग	13	22	01	भरणी	22	35	शोभना / अतिगंड	06 / 27	11 / 18	वृष 28:13	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 22:02 से, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** सिद्धियोग	05	27	19	31
	5	23	15	बुध	14	19	55	कृत्ति	21	16	सुकर्मा	24	35	वृष	भद्रा 8:57 तक, स.सि.योग, बुध रोहिणी में 15:20	05	27	19	31
	6	24	16	गुरु	30	18	08	रोहि	20	16	धृति	22	09	वृष	**शनैश्चर जयन्ती,** देवपितृकार्येऽमावस, वटसावित्री व्रत (मरूस्थले)	05	27	19	32

B भद्रा 28:19 से गण्डमूल 13:05 से **गंगोत्पत्तिः** अमृतयोग रवियोग C रवियोग 7:47 तक D तक **कूर्मोत्पत्तिः**, वैशाख स्नान पूर्तिः, सिद्धियोग धर्म प्रीत्यर्थं जलकुम्भदानम् E अ.रा.परि 3:15 F गण्डमूल 10:36 तक, स.सि.योग G रवियोग 8:38 बाद H गण्डमूल 27:16 से

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	श्री विक्रमी संवत् 2081			ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से आषाढ़ कृष्ण पक्ष अमावस्या												जून-जुलाई, सन् 2024 ई०			
मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि	विक्रमी संवत्	शक संवत्	वार	तिथि	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू			
	जून	ज्येष्ठ	ज्येष्ठ			घ.	मि.		घ.	मि.		घ.	मि.			सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	मि.
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	7	25	17	शुक्र	1	16	45	मृग	19	43	शूल	20	04	मि. 7:55	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, सिद्धियोग, शुक्र मृगशिरा में 8:17, सूर्य मृग. में 25:04	05	27	19	32
	8	26	18	शनि	2	15	56	आर्द्रा	19	42	गंड	18	27	मिथुन	रम्भा व्रत	05	27	19	33
	9	27	19	रवि	3	15	45	पुन	20	20	वृद्धि	17	20	कर्क 14:06	**श्रीराणाप्रताप जयन्ती,** भद्रा 27:53 से, पार्वती पूजा व्रत	05	27	19	33
	10	28	20	सोम	4	16	15	पुष्य	21	40	ध्रुव	16	47	कर्क	भद्रा 16:15 तक, स.सि.योग, गण्डमूल 21:40 से, रवियोग	05	27	19	34
	11	29	21	मंग	5	17	28	आश्ले	23	39	व्याघा	16	47	सिंह 23:38	स.सि. योग, गण्डमूल, बुध मृगशिरा में 22:11	05	27	19	34
	12	30	22	बुध	6	19	17	माघ	26	12	हर्षना	17	15	सिंह	अमृतयोग, गण्डमूल 26:12 तक, शुक्र मिथुन में 18:29, रवियोग	05	27	19	34
	13	31	23	गुरु	7	21	34	पू.फा.	29	08	वज्र	18	05	सिंह	भद्रा 21:34 से, गुरु रोहिणी 5:36	05	27	19	35
	14	आषा.	24	शुक्र	8	24	04	उ.फा.	00	00	सिद्धि	19	07	कन्या 11:54	**आषाढ़ संक्रांति,** सूर्य मिथुन में रात्रि 12:25, बुध मिथुन में 23:04, A	05	27	19	35
	15	2	25	शनि	9	26	33	उ.फा.	08	14	व्यती	20	10	कन्या	सिद्धियोग	05	27	19	36
	16	3	26	रवि	10	28	44	हस्त	11	13	वरिय	21	02	तुला 24:34	**श्री गंगा दशहरा,** अमृतयोग, स.सि. योग, रवियोग	05	27	19	36
	17	4	27	सोम	11	00	00	चित्रा	13	50	परिघा	21	34	तुला	शुक्र आर्द्रा में 28:43, बुध आर्द्रा में 24:08, भद्रा 17:39 से रवियोग	05	27	19	36
	18	5	28	मंग	11	06	25	स्वाति	15	56	शिव	21	39	तुला	**निर्जला एकादशी व्रत,** भद्रा 6:25 तक, जलधेनुदानमहत्त्व	05	27	19	36
	19	6	29	बुध	12	07	28	विशा	17	23	सिद्ध	21	11	वृ. 11:04	**प्रदोष व्रत,** वटसावित्री व्रतारम्भः, मंगलभरणी में 14:58, सिद्धियोग	05	27	19	37
	20	7	30	गुरु	13	07	50	अनु	18	10	साध्य	20	12	वृश्चिक	सा.सू. कर्क में, सायन दक्षिणायन प्रारंभ 26:10, **वर्षा ऋतु प्रारंभ** B	05	27	19	37
	21	8	31	शुक्र	14	07	32	ज्येष्ठ	18	19	शुभ	18	42	धनु 18:19	**श्रीसत्यनारायण व्रत,** भद्रा 7:32 से 19:10 तक, सूर्य आर्द्रा में रात्रि 12:05, C	05	28	19	37
	22	9	आषा.	शनि	15	06	38	मूला	17	54	शुक्ल	16	45	धनु	**पूर्णिमाव्रत, सन्तकबीर जयंती,** भा.आषाढ़ारम्भः, गण्डमूल 17:54 तक, D	05	28	19	37
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	0	0	0	शनि	1	29	13	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदातिथि क्षय	0	0	0	0
	23	10	2	रवि	2	27	26	पू.षा.	17	04	ब्रह्मा	14	26	मकर 22:47	**त्रयोदश दिनात्मक पक्ष**	05	28	19	38
	24	11	3	सोम	3	25	23	उ.षा.	15	54	ऐन्द्र	11	51	मकर	भद्रा 14:26 से 25:23 तक, बुध पुन. में 8:12, बुधोदयः पश्चिमे 22:20	05	28	19	38
	25	12	4	मंग	4	23	11	श्रवण	14	32	वैधृति	09	05	कुंभ 25:48	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चंद्रोदय जम्मू 22:29, **पञ्चक प्रारंभ** 25:48	05	29	19	38
	26	13	5	बुध	5	20	55	धनि	13	05	विष्कुं प्रीति	06 27	14 14	कुम्भ		05	29	19	38
	27	14	6	गुरु	6	18	40	शत	11	37	आयु.	24	28	मीन 28:31	भद्रा 18:40 से 29:33 तक	05	29	19	38
	28	15	7	शुक्र	7	16	28	पू.भा.	10	11	सौभा.	21	38	मीन	शुक्र पुन. में 25:12, रवियोग	05	30	19	38
	29	16	8	शनि	8	14	20	उ.भा.	08	49	शोभना	18	54	मीन	**शनि वक्री** 24:38, **बुध कर्क में** 12:26, गण्डमूल 8:49 से	05	30	19	38
	30	17	9	रवि	9	12	20	रेवती	07	34	अतिगंड	16	14	मेष 7:34	भद्रा 23:22 से, गण्डमूल, **पञ्चक समाप्त** 7:34	05	30	19	38
	जुला.	18	10	सोम	10	10	26	अश्वि भरणी	06 29	26 27	सुकर्मा	13	41	मेष	भद्रा 10:26 तक, अमृतयोग, बुध पुष्य में 8:34, गण्डमूल 6:26 तक	05	31	19	38
	2	19	11	मंग	11	08	43	कृत्ति	28	40	धृति	11	16	वृष 11:13	**योगिनी एकादशी व्रत,** स.सि. योग	05	31	19	38
	3	20	12	बुध	12	07	11	रोहि	28	07	शूल	09	01	वृष	**प्रदोष व्रत,** सिद्धियोग व्रत, स.सि. योग	05	32	19	38
	4	21	13	गुरु	13	05	54	मृग	27	55	गंड	06	59	मिथुन 15:57	भद्रा 5:54 से 17:23 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत**	05	32	19	38
	0	0	0	गुरु	14	28	58	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
	5	22	14	शुक्र	30	28	27	आर्द्रा	28	06	ध्रुव	27	48	मिथुन	**देवपितृकार्येऽमावस,** सूर्य पुन. में 23:39	05	33	19	38

A भद्रा 10:50 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती B गण्डमूल 18:10 से अमृतयोग, स.सि.योग C गण्डमूल, अमृतयोग D **श्रीगुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती**

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या जुलाई-अगस्त, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि जुलाई	विक्रमी संवत् आषाढ़	शक संवत् आषाढ़	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	6	23	15	शनि	1	28	26	पुन	28	48	व्याघा	26	47	कर्क 22:33	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, **गुप्तनवरात्र प्रारम्भ,** अमृतयोग, **शुक्र कर्क में** 28:30	05	33	19	37
	7	24	16	रवि	2	29	00	पुष्य	00	00	हर्षना	26	12	कर्क	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), शुक्रोदयः पश्चिमे 5:34 श्रीजगदीशरथ यात्रा, A	05	34	19	37
	8	25	17	सोम	3	00	00	पुष्य	06	03	वज्र	26	06	कर्क	गण्डमूल 6:03 से **शुक्र उदय 7 जुलाई**	05	34	19	37
	9	26	18	मंग	3	06	09	आश्ले	07	53	सिद्धि	26	26	सिंह 7:53	भद्रा 18:51 से, गण्डमूल, शुक्र पुष्य में 21:36 बुध आश्ले में 12:26, B	05	35	19	37
	10	27	19	बुध	4	07	52	माघ	10	15	व्यती	27	09	सिंह	भद्रा 7:52 तक, गण्डमूल 10:15 तक, रवियोग	05	35	19	37
	11	28	20	गुरु	5	10	04	पू.फा.	13	04	वरिय	28	09	कन्या 19:48	**स्कन्दषष्ठी,** सिद्धियोग	05	36	19	36
	12	29	21	शुक्र	6	12	33	उ.फा.	16	09	परिघा	29	14	कन्या	सिद्धियोग, **मंगल वृष में** 18:57, रवियोग	05	36	19	36
	13	30	22	शनि	7	15	06	हस्त	19	15	शिव	00	00	कन्या	भद्रा 15:06 से 28:19 तक	05	37	19	36
	14	31	23	रवि	8	17	26	चित्रा	22	06	शिव	06	15	तुला 8:42	**श्रीदुर्गाष्टमी**	05	37	19	35
	15	32	24	सोम	9	19	20	स्वाति	24	30	सिद्ध	07	00	तुला	**श्रीदुर्गानवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त,** भढली नवमी, रवियोग	05	38	19	35
	16	श्रावण	25	मंग	10	20	34	विशा	26	14	साध्य	07	18	वृ. 19:51	**श्रावण संक्रांति, सूर्य कर्क में** 11:17, निरयनदक्षिणायनारम्भः, रवियोग	05	39	19	34
	17	2	26	बुध	11	21	03	अनु	27	13	शुभ	07	03	वृश्चिक	**हरिशयनी एकादशी व्रत,** भद्रा 8:54 से 21:03 तक, गण्डमूल 27:13 से, C	05	40	19	34
	18	3	27	गुरु	12	20	45	ज्येष्ठ	27	25	शुक्ल ब्रह्म	06 28	12 44	धनु 27:25	**श्रावणे वर्जयेच्छाकम्,** गण्डमूल	05	40	19	34
	19	4	28	शुक्र	13	19	42	मूला	26	55	ऐन्द्र	26	41	धनु	**प्रदोष व्रत,** बुध मघा (सिंह) में 20:45 सूर्य पुष्य में 23:10, गण्डमूल 26:55 तक	05	40	19	33
	20	5	29	शनि	14	18	00	पू.षा.	25	49	वैधृति	24	07	धनु	**श्रीसत्यनारायण व्रत,** शुक्र आश्लेषा में 18:02, भद्रा 18:00 से 28:53 तक, D	05	41	19	33
	21	6	30	रवि	15	15	47	उ.षा.	24	14	विष्कुं	21	11	मकर 7:26	**श्रीगुरु व्यास पूर्णिमा,** अमृतयोग, स.सि.योग	05	42	19	32
श्रावण कृष्ण पक्ष	22	7	31	सोम	1	13	12	श्रवण	22	21	प्रीति	17	58	मकर	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा, **श्रावण सोमवार नक्त व्रतारम्भः,** सा.सू. सिंह में 13:30, E	05	42	19	31
	23	8	श्रावण	मंग	2	10	24	धनि	20	18	आयु.	14	35	कुंभ 9:19	भद्रा 20:57 से, **पञ्चक प्रारंभ** 9:19, अमृतयोग, द्विपुष्कर योग 10:24 तक	05	43	19	31
	24	9	2	बुध	3	07	31	शत	18	14	सौभा.	11	10	कुम्भ	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय जम्मू, 21:43 भद्रा 7:31 तक	05	44	19	30
	0	0	0	बुध	4	28	40	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
	25	10	3	गुरु	5	25	59	पू.भा.	16	16	शोभना अतिगंड	07 28	48 35	मीन 10:44	**नाग पञ्चमी** (मरूस्थले), सिद्धियोग	05	44	19	30
	26	11	4	शुक्र	6	23	31	उ.भा.	14	30	सुकर्मा	25	32	मीन	भद्रा 23:31 से, गण्डमूल 14:30 से सिद्धियोग मंगल रोहिणी में 28:36	05	45	19	29
	27	12	5	शनि	7	21	20	रेवती	13	00	धृति	22	44	मेष 13:00	भद्रा 10:23 तक, गण्डमूल, **शीतला सप्तमी व्रत,** रवियोग, F	05	46	19	28
	28	13	6	रवि	8	19	28	अश्वि	11	48	शूल	20	11	मेष	गण्डमूल 11:48 तक, स.सि. योग F पञ्चक समाप्त 10:44	05	46	19	28
	29	14	7	सोम	9	17	56	भरणी	10	55	गंड	17	55	वृष 16:44	भद्रा 29:18 से, श्रीगुरु **हरकिशन जयन्ती**	05	47	19	27
	30	15	8	मंग	10	16	45	कृत्ति	10	23	वृद्धि	15	56	वृष	भद्रा 16:45 तक, स.सि.योग	05	47	19	26
	31	16	9	बुध	11	15	56	रोहि	10	13	ध्रुव	14	14	मि. 22:15	**कामिका एकादशी व्रत,** अमृतयोग, शुक्र सिंह में 14:32	05	48	19	25
	अग.	17	10	गुरु	12	15	29	मृग	10	24	व्याघा	12	50	मिथुन	**प्रदोष व्रत,** लोकमान्य तिलक जयन्ती	05	49	19	24
	2	18	11	शुक्र	13	15	27	आर्द्रा	10	59	हर्षना	11	45	मिथुन	भद्रा 15:27 से 27:37 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** सूर्य आश्लेषा में 22:05	05	50	19	24
	3	19	12	शनि	14	15	51	पुन	11	59	वज्र	11	01	कर्क प्रा.5:40	सिद्धियोग	05	50	19	23
	4	20	13	रवि	30	16	43	पुष्य	13	26	सिद्धि	10	38	कर्क	**देवपितृकार्येऽमावस,** हरियाली अमावस, गण्डमूल 13:26 से रविपुष्य योग	05	51	19	22

A राहु उ.भा. 4, केतु हस्त 2 में 28:55, मंगल कृत्तिका में 25:56, **रविपुष्य योग** B स.सि. योग C **चतुर्मास व्रतारम्भः** अमृतयोग, स.सि.योग D सिद्धियोग, आषाढ़ी योग E स.सि.योग

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	श्री विक्रमी संवत् 2081	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या	अगस्त-सितंबर, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि	विक्रमी संवत्	शक संवत्	वार	तिथि	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्र-राशि प्रवेश	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू			
						घ.	मि.		घ.	मि.		घ.	मि.	घ. मि.		सूर्योदय घ. मिं.		सूर्यास्त घ. मिं.	
	अगस्त	श्रावण	श्रावण																
श्रावण शुक्ल पक्ष	5	21	14	सोम	1	18	04	आश्ले	15	21	व्यती	10	38	सिंह 15:21	श्रावण शुक्ल प्रतिपदा, बुध वक्री 10:26, गण्डमूल, बुधास्तः पश्चिमे 27:25	05	52	19	21
	6	22	15	मंग	2	19	53	माघ	17	44	वरिय	10	59	सिंह	चन्द्र दर्शनम् (30 मु.), अमृतयोग, गण्डमूल 17:44 तक	05	52	19	20
	7	23	16	बुध	3	22	06	पू.फा.	20	30	परिघा	11	41	कन्या 27:14	**मधुस्रवा तृतीया**	05	53	19	19
	8	24	17	गुरु	4	24	37	उ.फा.	23	34	शिव	12	39	कन्या	भद्रा 11:20 से 24:37 तक, **दूर्वागणपति व्रत**, रवियोग	05	54	19	18
	9	25	18	शुक्र	5	27	15	हस्त	26	44	सिद्ध	13	45	कन्या	**नागपञ्चमी,** नागदंष्ट व्रत	05	54	19	17
	10	26	19	शनि	6	29	46	चित्रा	29	49	साध्य	14	52	तुला 16:17	**कल्की जयंती,** वर्णषष्ठी, अमृतयोग रवियोग	05	55	19	16
	11	27	20	रवि	7	00	00	स्वाति	00	00	शुभ	15	48	तुला	**शीतला सप्तमी, तुलसी जयन्ती,** शुक्र पू.फा. में 11:07	05	56	19	15
	12	28	21	सोम	7	07	56	स्वाति	08	33	शुक्ल	16	25	वृ. 28:14	भद्रा 7:56 से 20:42 तक	05	56	19	14
	13	29	22	मंग	8	09	32	विशा	10	44	ब्रह्मा	16	33	वृश्चिक	सिद्धियोग, **मङ्गलागौरी व्रत**, श्रीदुर्गाष्टमी	05	57	19	13
	14	30	23	बुध	9	10	24	अनु	12	13	ऐन्द्र	16	05	वृश्चिक	स.सि.योग, गण्डमूल 12:13 से	05	58	19	12
	15	31	24	गुरु	10	10	27	ज्येष्ठ	12	53	वैधृति	14	58	धनु 12:52	भद्रा 22:07 से, **भारतीय स्वतन्त्रता दिवस,** मंगल मृग्शिरा में 28:33, गण्डमूल, A	05	58	19	11
	16	भाद्र	25	शुक्र	11	09	40	मूला	12	44	विष्कुं	13	11	धनु	**भाद्रपद संक्रान्ति,** सूर्य सिंह में रात्रि 7:43, गण्डमूल 12:44 तक B	05	59	19	10
	17	2	26	शनि	12	08	06	पू.षा.	11	49	प्रीति	10	47	मकर 17:28	**प्रदोष व्रत, दधिभक्षणत्यागः भाद्रपदे**	06	00	19	09
	0	0	0	शनि	13	29	52	0	0	0	0	0	0	0	त्रयोदशी तिथि क्षय	0	0	0	0
	18	3	27	रवि	14	27	05	उ.षा.	10	15	आयु.	07	50	मकर	भद्रा 27:05 से, स.सि.योग, रवियोग 10:15 तक	06	00	19	08
	19	4	28	सोम	15	23	56	श्रवण धनि.	08 29	10 45	सौभा.	28	27	कुंभ 19:00	**रक्षाबन्धन (रक्खड़ी) भद्रावाद, पूर्णिमाव्रत, श्रीसत्यनारायणव्रत,** भद्रा 13:33 तक, C	06	01	19	07
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	20	5	29	मंग	1	20	33	शत	27	10	अतिगंड	20	55	कुम्भ	गुरु मृग्शिरा में 16:14, भा.कृ. प्रतिपदा	06	02	19	06
	21	6	30	बुध	2	17	07	पू.भा.	24	33	सुकर्मा	17	00	मीन 19:11	भद्रा 27:23 से, कज्जली तृतीया	06	02	19	04
	22	7	31	गुरु	3	13	46	उ.भा.	22	06	धृती	13	10	मीन	**संकट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 20:52, वक्री बुध, आश्लेषा कर्क में 6:38, D	06	03	19	03
	23	8	भाद्र	शुक्र	4	10	39	रेवती	19	54	शूल	9	31	मेष 19:54	**पञ्चक समाप्त** 19:54, अमृतयोग, गण्डमूल	06	04	19	02
	24	9	2	शनि	5	07	52	अश्वि	18	06	गंड वृद्धि	06 27	08 01	मेष	भद्रा 29:31 से, गण्डमूल 18:06 तक, **हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी,** शुक्र कन्या में 25:12	06	04	19	01
	0	0	0	शनि	6	29	31	0	0	0	0	0	0	0	षष्ठी तिथि क्षय	0	0	0	0
	25	10	3	रवि	7	27	39	भरणी	16	45	ध्रुव	24	28	वृष 22:29	भद्रा 16:31 तक, शीतला व्रत, रवियोग पुत्र व्रत	06	06	19	00
	26	11	4	सोम	8	26	20	कृत्ति	15	55	व्याघा	22	16	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** (सबका) दूर्वाष्टमी, मंगल मिथुन में 15:22	06	05	18	59
	27	12	5	मंग	9	25	34	रोहि	15	38	हर्षना	20	31	मिथुन 27:40	**गुग्गा नवमी, मेला रैणा विरादरी सूञ्जवां, जम्मू,** गोकुलाष्टमी नन्दोत्सव	06	06	18	57
	28	13	6	बुध	10	25	20	मृग	15	53	वज्र	19	11	मिथुन	भद्रा 13:12 से 25:20 तक, स.सि. योग, बुध मार्गी 26:43	06	07	18	56
	29	14	7	गुरु	11	25	38	आर्द्रा	16	39	सिद्धि	18	17	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत**	06	07	18	55
	30	15	8	शुक्र	12	26	26	पुन	17	56	व्यती	17	46	कर्क 11:33	वत्स पूजा, स.सि. योग, सूर्य पू.फा. में 15:45	06	08	18	54
	31	16	9	शनि	13	27	41	पुष्य	19	40	वरिय	17	38	कर्क	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 27:41 से, गण्डमूल 19:40 से	06	09	18	52
	सितं.	17	10	रवि	14	29	22	आश्ले	21	49	परिघा	17	50	सिंह 21:49	भद्रा 16:29 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** गण्डमूल	06	09	18	51
	2	18	11	सोम	30	00	00	माघ	24	20	शिव	18	19	सिंह	**पितृकार्येऽमावस, कुशाग्रहणी पिठोरी सोमवती अमावस,** गण्डमूल 24:20 तक, E	06	10	18	50
	3	19	12	मंग	30	07	25	पू.फा.	27	10	सिद्ध	19	05	सिंह	देवकार्येऽमावस, श्रीशक्ति पूजा	06	11	18	48

A सिद्धियोग, रवियोग B **पवित्रा एकादशी व्रत**, भद्रा 9:40 तक C **पञ्चक प्रारंभ** 19:00, श्रावणी, अर्थवर्वेदि, ऋग्वेदि उपाकर्म, अमृतयोग D शुक्र उ.फा. में 7:59, भद्रा 13:46 तक, गण्डमूल 22:06 से, **सा.सू. कन्या में** 20:29, अमृतयोग, **शरद् ऋतु प्रारम्भ** E शुक्र हस्त में प्रातः 5:12

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या सितंबर-अक्तूबर, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि (सितंबर)	विक्रमी संवत् (भाद्रपद)	शक संवत् (भाद्रपद)	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	4	20	13	बुध	1	09	47	उ.फा.	00	00	साध्य	20	02	कन्या 9:54	भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा, अमृतयोग	06	11	18	47
	5	21	14	गुरु	2	12	22	उ.फा.	06	14	शुभ	21	08	कन्या	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), वराह जयन्ती, सामवेदि उपकर्म	06	12	18	46
	6	22	15	शुक्र	3	15	02	हस्त	09	25	शुक्ल	22	14	तुला 23:00	**हरितालिका तीज व्रत**, भद्रा 28:21 से, मंगल आद्रा में 11:46	06	13	18	45
	7	23	16	शनि	4	17	38	चित्रा	12	34	ब्रह्मा	23	16	तुला	**सिद्धिविनायक व्रत**, भद्रा 17:38 तक, चन्द्रदर्शनं निषेधः, सिद्धियोग, रवियोग	06	13	18	43
	8	24	17	रवि	5	19	59	स्वाति	15	31	ऐन्द्र	24	05	तुला	**ऋषिपञ्चमी** (नागपञ्चमी डुग्गर प्रदेशे), अमृतयोग, **अगस्तोदयः**	06	14	18	42
	9	25	18	सोम	6	21	54	विशा	18	04	वैधृति	24	32	वृ. 11:28	**सूर्यषष्ठी व्रत**, स्कन्ददर्शनम्, ललिताषष्ठी, रवियोग	06	14	18	41
	10	26	19	मंग	7	23	12	अनु	20	04	विष्कुं	24	30	वृश्चिक	भद्रा 23:12 से, अमृतयोग, गण्डमूल 20:04 से	06	15	18	39
	11	27	20	बुध	8	23	47	ज्येष्ठ	21	22	प्रीति	23	55	धनु 21:22	भद्रा 11:35 तक, **दधीचि जयंती, श्रीराधाष्टमी**, महालक्ष्मी व्रत शुरू, गौरीपूजन, गण्डमूल	06	16	18	38
	12	28	21	गुरु	9	23	33	मूला	21	53	आयु.	22	41	धनु	गण्डमूल 21:53 तक, शुक्र चित्रा में 26:51, रवियोग, श्रीगौरिविसर्जनम् A	06	16	18	37
	13	29	22	शुक्र	10	22	30	पू.षा.	21	35	सौभा.	20	48	मकर 27:23	सूर्य उ.फा. में 9:34	06	17	18	35
	14	30	23	शनि	11	20	42	उ.षा.	20	32	शोभना	18	17	मकर	**पद्मा एकादशी व्रत**, भद्रा 9:42 से 20:42 तक, बुध पू.फा., में 6:44, अमृतयोग	06	18	18	34
	15	31	24	रवि	12	18	12	श्रवण	18	49	अतिगंड	15	13	मकर	**श्री वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत**	06	18	18	33
	16	आश्वि	25	सोम	13	15	10	धनि	16	33	सुकर्मा	11	41	कुंभ प्रा.5:44	**आश्विन संक्रान्ति**, सूर्य कन्या में रात्रि 7:41, **पञ्चक प्रारंभ प्रातः** 5:44 **(दुग्धव्रतम्)**	06	19	18	31
	17	2	26	मंग	14	11	45	शत	13	53	धृति शूल	07 27	48 42	कुम्भ	श्राद्ध प्रारम्भ, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, भद्रा 11:45 से 21:57 तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत**,B	06	20	18	30
	18	3	27	बुध	15	08	04	पू.भा.	11	00	गंड	23	28	मीन प्रा.5:43	**पूर्णिमा व्रत**, महेश्वर पूजन, प्रतिपदा श्राद्ध 8:04 बाद, शुक्र तुला में 13:56, C	06	20	18	28
आश्विन कृष्ण पक्ष	0	0	0	बुध	1	28	20	0	0	0	0	0	0	0	प्रतिपदा तिथि क्षय	0	0	0	0
	19	4	28	गुरु	2	24	40	उ.भा. रेवती	08 29	04 16	वृद्धि	19	18	मीन	**द्वितीया का श्राद्ध**, स.सि. योग, गण्डमूल 8:04 से	06	21	18	27
	20	5	29	शुक्र	3	21	15	अश्वि	26	43	ध्रुव	15	18	मेष प्रा.5:16	भद्रा 10:55 से 21:15 तक, **तृतीया का श्राद्ध**, स.सि. योग, गण्डमूल 26:43 तक, D	06	21	18	26
	21	6	30	शनि	4	18	14	भरणी	24	36	व्याघा	11	36	मेष	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय जम्मू 20:45, बुध उ.फा. में 15:06,E	06	22	18	24
	22	7	31	रवि	5	15	44	कृति.	23	02	हर्षना वज्र	08 29	17 26	वृ.प्रा. 6:08	**पञ्चमी का श्राद्ध**, सा.सू. तुला में 18:19, अमृतयोग, द.गोल प्रारंभ	06	23	18	23
	23	8	आश्वि	सोम	6	13	51	रोहि	22	07	सिद्धि	27	10	वृष	भद्रा 13:51 से 25:09 तक, शुक्र स्वाती में 25:11, बुध कन्या में 10:10, F	06	23	18	22
	24	9	2	मंग	7	12	39	मृग.	21	54	व्यती	25	26	मिथुन 9:54	**सप्तमी का श्राद्ध** 12:39 तक, द्विपुष्करयोग 12:39 तक, **अष्टमी का श्राद्ध** G	06	24	18	20
	25	10	3	बुध	8	12	11	आर्द्रा	22	24	वरिय	24	17	मिथुन	**नवमी का श्राद्ध** 12:11 बाद, **सौभाग्यवतीनांश्राद्धम्**	06	25	18	19
	26	11	4	गुरु	9	12	26	पुन	23	34	परिघा	23	41	कर्क 17:12	भद्रा 24:48 से, स.सि. योग, सूर्य हस्त में 25:09	06	25	18	18
	27	12	5	शुक्र	10	13	21	पुष्य	25	20	शिव	23	33	कर्क	भद्रा 13:21 तक, **दशमी का श्राद्ध** 13:21 तक, गण्डमूल 25:20 से	06	26	18	16
	28	13	6	शनि	11	14	50	आश्ले	27	38	सिद्ध	23	50	सिंह 27:38	**इन्द्रा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध**, गण्डमूल, अमृतयोग	06	27	18	15
	29	14	7	रवि	12	16	48	माघ	30	19	साध्य	24	27	सिंह	**द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासिनांश्राद्धम्**, मंगल पुनवर्सु में 23:56, गण्डमूल H	06	27	18	14
	30	15	8	सोम	13	19	07	पू.फा.	00	00	शुभ	25	18	सिंह	**प्रदोष व्रत**, भद्रा 19:07 से, **त्रयोदशी का श्राद्ध, मासिक शिवरात्रि व्रत**	06	28	18	12
	अक्तू.	16	9	मंग	14	21	40	पू.फा.	09	16	शुक्ल	26	17	कन्या 16:01	भद्रा 8:22 तक, **चतुर्दशी का श्राद्ध, शस्त्रहतानांश्राद्धम्**	06	29	18	11
	2	17	10	बुध	30	24	19	उ.फा.	12	23	ब्रह्मा	27	21	कन्या	**सर्वपितृश्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, देवपितृकार्येऽमावस, श्रीगांधी जयंती**, I	06	29	18	10

A श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), B रवियोग, प्रौष्ठपदी महालयश्राद्धारम्भः श्राद्धपूर्णिमा दिवा 11:45 बाद C बुधास्त पूर्वे 8:14 D **पञ्चक समाप्त प्रातः** 5:16 D **चतुर्थी का श्राद्ध**, सिद्धि योग E **षष्ठी का श्राद्ध** दिवा 1:51 से पूर्वभा. आश्विन प्रारम्भ, स.सि. योग F12:39 **बाद, श्रीमहालक्ष्मी व्रत, अशोकाष्टमी,** अमृतयोग G 30:19 तक, **गजच्छायायोग** 16:48 से 20:19 तक H गजच्छाया (बोधायन) 12:23 से 24:19 तक, **लालबहादुर जयन्ती**

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	श्री विक्रमी संवत् 2081	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या	अक्तूबर-नवंबर, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि अक्तूबर	विक्रमी संवत् आश्विन	शक संवत् आश्विन	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
आश्विन शुक्ल पक्ष	3	18	11	गुरु	1	26	58	हस्त	15	32	ऐन्द्र	28	24	कन्या	**शारद् नवरात्र प्रारंभ, घटस्थापनम्,** अग्रसेन जयंती, मातामहश्राद्ध, वक्री शनि A	06	30	18	08
	4	19	12	शुक्र	2	29	31	चित्रा	18	38	वैधृति	29	21	तु.प्रा. 5:05	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), शुक्र विशाखा में 24:12	06	31	18	07
	5	20	13	शनि	3	00	00	स्वाति	21	33	विष्कुं	30	08	तुला	स.सि.योग	06	31	18	06
	6	21	14	रवि	3	07	50	विशा	24	11	प्रीति	00	00	वृ. 17:33	भद्रा 20:57 से, बुध चित्रा में 11:45, रवियोग	06	32	18	04
	7	22	15	सोम	4	09	48	अनु	26	25	प्रीति	06	39	वृश्चिक	भद्रा 9:48 तक, **उपाङ्गललिता व्रत**, गण्डमूल 26:25 से, स.सि. योग	06	33	18	03
	8	23	16	मंग	5	11	13	ज्येष्ठ	28	08	आयु.	06	51	धनु 28:08	गण्डमूल, रवियोग	06	34	18	02
	9	24	17	बुध	6	12	15	मूला	29	15	सौभा. शोभन	06 29	36 53	धनु	**सरस्वती आवाहनं मूल नक्षत्रे,** अमृतयोग, **गुरु वक्री** 12:36, गण्डमूल 29:15 तक	06	34	18	01
	10	25	18	गुरु	7	12	32	पू.षा.	29	41	अति.	28	36	धनु	भद्रा 12:32 से 24:24 तक, बुध तुला में 11:19 सूर्य चित्रा में 14:05, B	06	35	17	59
	11	26	19	शुक्र	8	12	07	उ.षा.	29	25	सुकर्मा	26	46	मकर 11:40	**श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी,** शस्त्रादिपूजा, बलिदानं, उ.षा. नक्षत्रे	06	36	17	58
	12	27	20	शनि	9	10	59	श्रवण	28	28	धृति	24	22	मकर	**श्रीदुर्गा नवमी, नवरात्र समाप्त, विजया दशमी,** सरस्वती विसर्जनं, रवियोग, C	06	36	17	47
	13	28	21	रवि	10	09	09	धनि	26	52	शूल	21	25	कुंभ 15:43	पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मार्त), भद्रा 19:59 से अमृतयोग, रवियोग, D	06	37	17	56
	14	29	22	सोम	11	06	42	शत	24	43	गंड	18	01	कुम्भ	**पापांकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव)**, बुध स्वाती में 13:54, भद्रा 6:42 तक	06	38	17	55
	0	0	0	सोम	12	27	43	0	0	0	0	0	0	0	द्वादशी तिथि क्षय	0	0	0	0
	15	30	23	मंग	13	24	19	पू.भा.	22	08	वृद्धि	14	13	मीन 16:48	**प्रदोष व्रत, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत,** सिद्धियोग, शुक्र अनुराधा 19:18 से	06	39	17	53
	16	31	24	बुध	14	20	41	उ.भा.	19	18	ध्रुव व्याघा	10 29	09 57	मीन	**शरत् पूर्णिमा,** भद्रा 20:41 से, **श्रीसत्यनारायण व्रत**, गण्डमूल में 24:04	06	39	17	52
	17	कार्ति.	25	गुरु	15	16	56	रेवती	16	20	हर्षना	25	41	मेष 16:20	**कार्तिक संक्रान्ति,** सूर्य तुला में प्रात: 7:41, **श्री वाल्मीकि जयंती,** भद्रा 6:49 तक, E	06	40	17	51
कार्तिक कृष्ण पक्ष	18	2	26	शुक्र	1	13	16	अश्वि	13	26	वज्र	21	34	मेष	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा, स.सि. योग, गण्डमूल 13:26 तक	06	41	17	50
	19	3	27	शनि	2	09	49	भरणी	10	47	सिद्धि	17	41	वृष 16:09	भद्रा 20:16 से, श्रीगुरु रामदास जयन्ती	06	42	17	49
	20	4	28	रवि	3	06	47	कृत्ति	08	31	व्यती	14	11	वृष	भद्रा 6:47 तक, कर्क चतुर्थी, **करवाचौथ व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 20:15, F	06	42	17	48
	0	0	0	रवि	4	28	24	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्थी तिथि क्षय	0	0	0	0
	21	5	29	सोम	5	26	30	रोहि मृग.	06 29	50 49	वरिय	11	11	मिथुन 18:14	स.सि.योग	06	43	17	46
	22	6	30	मंग	6	25	29	आर्द्रा	29	38	परिघा	8	46	मिथुन	**स्कन्द षष्ठी, सा.सू. वृश्चिक में** 27:45, **हेमन्त ऋतु प्रारम्भ,** बुध विशाखा G	06	44	17	45
	23	7	कार्ति.	बुध	7	25	19	पुन	30	16	शिव सिद्धि	06 29	59 52	कर्क 24:00	भद्रा 13:18 तक, भा.कार्तिकारम्भ:, सूर्य स्वाती में 24:41	06	45	17	44
	24	8	2	गुरु	8	25	59	पुष्य	00	00	साध्य	29	22	कर्क	**अहोई अष्टमी, अमृतयोग, गुरु पुष्य, स.सि.योग**	06	46	17	43
	25	9	3	शुक्र	9	27	23	पुष्य	07	40	शुभ	29	26	कर्क	अमृतयोग, गण्डमूल 7:40 से	06	47	17	42
	26	10	4	शनि	10	29	24	आश्ले	09	46	शुक्ल	29	57	सिंह 9:46	भद्रा 16:20 से 29:24 तक, शुक्र ज्येष्ठा में 25:07, गण्डमूल	06	47	17	41
	27	11	5	रवि	11	00	00	माघ	12	24	ब्रह्मा	30	47	सिंह	गण्डमूल 12:24 तक	06	48	17	40
	28	12	6	सोम	11	07	51	पू.फा.	15	24	ऐन्द्र	00	00	कन्या 22:10	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी,** मंगल पुष्य में 15:55	06	49	17	39
	29	13	7	मंग	12	10	32	उ.फा.	18	34	ऐन्द्र	07	47	कन्या	**प्रदोष व्रत, धनतेरस, धन्वन्तरी जयंती,** त्रिपुष्कर योग 10:32 तक, **बुध वृश्चिक** H	06	50	17	38
	30	14	8	बुध	13	13	16	हस्त	21	43	वैधृति	08	51	कन्या	भद्रा 13:16 से 26:35 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** बुधोदय: पश्चिमे 17:25	06	51	17	37
	31	15	9	गुरु	14	15	53	चित्रा	24	44	विष्कुं	09	50	तुला 11:15	**रूप (नरक), चतुर्दशी, प्रभातस्नानं**	06	52	17	36
	नवं.	16	10	शुक्र	30	18	17	स्वाति	27	31	प्रीति	10	41	तुला	**दीपावली, देवपितृकार्ये अमावस,** बुध अनु. में 6:40, **महालक्ष्मी पूजन**	06	52	17	35

Aशतभिषा में 15:02 B **भद्रकाली अवतार, सरस्वती पूजनं,** पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे C श्रवणे, सिद्धियोग, स.सि. योग D **शुक्र वृश्चिक में** 6:00, **पञ्चक प्रारम्भ** 15:43 E गण्डमूल सिद्धियोग, **पञ्चक समाप्त** 16:20, नवान्न भक्षणम्, कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ, **पूर्णिमा व्रत,** स.सि. योग F मंगल कर्क में 14:19 G में 27:59, रवियोग, भद्रा 25:29 से H में 22:39, यमाय दीपदानम्, अमृतयोग

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अमावस्या नवंबर-दिसंबर, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि	विक्रमी संवत्	शक संवत्	वार	तिथि	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्र-राशि प्रवेश	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू			
	नवंबर	कार्तिक	कार्तिक			घ.	मि.		घ.	मि.		घ.	मि.	घ. मि.		सूर्योदय घ. मिं.		सूर्यास्त घ. मिं.	
कार्तिक शुक्ल पक्ष	2	17	11	शनि	1	20	22	विशा	29	58	आयु.	11	18	वृ. 23:22	कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा, गोवर्धन, पूजा अमृतयोग, अन्नकूट, गोक्रीड़ा	06	53	17	34
	3	18	12	रवि	2	22	06	अनु	00	00	सौभा.	11	39	वृश्चिक	**भाई दूज (टिक्का),** विश्वकर्मापूजा, चन्द्रदर्शनम्, मु. 30, यमुना स्नानम्	06	54	17	34
	4	19	13	सोम	3	23	25	अनु	08	04	शोभना	11	43	वृश्चिक	गण्डमूल 8:04 से	06	55	17	33
	5	20	14	मंग	4	24	17	ज्येष्ठ	09	45	अतिगंड	11	27	धनु 9:45	भद्रा 11:54 से 24:17 तक, **दूर्वागणपति व्रत,** गण्डमूल	06	56	17	32
	6	21	15	बुध	5	24	41	मूला	11	00	सुकर्मा	10	50	धनु	**सौभाग्य पञ्चमी,** शुक्र धनु में 27:31, सूर्य विशा. में 8:45, गण्डमूल 11:00 तक, A	06	57	17	31
	7	22	16	गुरु	6	24	35	पू.षा.	11	47	धृती	09	51	मकर 17:53	**सूर्य षष्ठी पर्व (छठ) बिहार** A पाण्डव पञ्चमी	06	58	17	30
	8	23	17	शुक्र	7	23	57	उ.षा.	12	03	शूल गण्ड	08 30	27 37	मकर	भद्रा 23:57 से, रवियोग	06	54	17	30
	9	24	18	शनि	8	22	46	श्रवण	11	48	वृद्धि	28	23	कुम्भ 23:27	**गोपाष्टमी,** भद्रा 11:25 तक, **पञ्चक प्रारंभ** 23:27, स.सि. योग	07	00	17	24
	10	25	19	रवि	9	21	02	धनि	11	00	ध्रुव	25	42	कुम्भ	**अक्षय नवमी,** राहु उ.फा. 4, केतु उ.फा. में 24:14	07	00	17	23
	11	26	20	सोम	10	18	47	शत	09	40	व्याघा	22	36	मीन 26:21	भद्रा 29:29 से, बुध ज्येष्ठा में 6:22, रवियोग, **भीष्म पञ्चक शुरू**	07	01	17	27
	12	27	21	मंग	11	16	05	पू.भा. उ.भा.	07 29	52 41	हर्षना	19	04	मीन	**हरि प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह,** रवियोग 7:52 तक, B	07	02	17	27
	13	28	22	बुध	12	13	02	रेवती	27	11	वज्र	15	25	मेष 27:11	**प्रदोष व्रत, पञ्चक समाप्ति** 27:11, गण्डमूल	07	03	17	26
	14	29	23	गुरु	13	09	44	अश्वि	24	33	सिद्धि	11	30	मेष	भद्रा 30:19 से, **वैकुण्ठ चतुर्दशी,** कार्तिक, व्रतोद्यापनं, रवियोग, अमृतयोग C	07	04	17	26
	0	0	0	गुरु	14	30	19	0	0	0	0	0	0	0	चतुर्दशी तिथि क्षय	0	0	0	0
	15	30	24	शुक्र	15	26	58	भरणी	21	55	व्यती वरि	07 27	30 33	वृष 27:16	भद्रा 16:38 तक, श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत, **मेला झिंडी कानाचक्क,** D	07	05	17	25
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	16	मार्ग	25	शनि	1	23	51	कृत्ति	19	23	परिघा	23	47	वृष	मा.कृ. प्रतिपदा, **मार्गशीर्ष संक्रांति,** सूर्य वृश्चिक में प्रातः 7:30, अमृतयोग	07	06	17	24
	17	2	26	रवि	2	21	07	रोहि	17	23	शिव	20	21	मि.28:30		07	07	17	24
	18	3	27	सोम	3	18	56	मृग	15	49	सिद्ध	17	21	मिथुन	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चंद्रोदय जम्मू 21:50, शुक्र पू.षा. में 7:59, भद्रा E	07	08	17	23
	19	4	28	मंग	4	17	29	आर्द्रा	14	56	साध्य	14	56	मिथुन	सूर्य अनुराधा में 14:52	07	09	17	23
	20	5	29	बुध	5	16	50	पुन	14	50	शुभ	13	08	कर्क 8:46		07	10	17	23
	21	6	30	गुरु	6	17	03	पुष्य	15	35	शुक्ल	12	01	कर्क	भद्रा 17:03 से 29:29 तक, सा.सू. धनु में 25:01, गण्डमूल 15:35 से, F	07	10	17	22
	22	7	मार्ग	शुक्र	7	18	08	आश्ले	17	09	ब्रह्मा	11	34	सिंह 17:09	भा. मार्गशीर्ष प्रारंभ, गण्डमूल, रवियोग F **गुरु पुष्य, स.सि. योग**	07	11	17	22
	23	8	2	शनि	8	19	57	मघा	19	27	ऐन्द्र	11	41	सिंह	**श्रीभैरवाष्टमी,** गण्डमूल 19:27 तक	07	12	17	21
	24	9	3	रवि	9	22	20	पू.फा.	22	16	वैधृति	12	17	कन्या 29:01		07	13	17	21
	25	10	4	सोम	10	25	02	उ.फा.	25	24	विष्कुं	13	11	कन्या	भद्रा 11:40 से 25:02 तक, अमृतयोग	07	14	17	21
	26	11	5	मंग	11	27	48	हस्त	28	35	प्रीति	14	13	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत,** बुध वक्री 8:12	07	15	17	21
	27	12	6	बुध	12	30	24	चित्रा	00	00	आयु.	15	13	तुला 18:06	सिद्धि योग	07	16	17	20
	28	13	7	गुरु	13	00	00	चित्रा	07	36	सौभा.	16	01	तुला	**प्रदोष व्रत,** अमृतयोग, वक्री गुरु रोहिणी में 14:28	07	17	17	20
	29	14	8	शुक्र	13	08	40	स्वाति	10	18	शोभना	16	33	तुला	भद्रा 8:40 से 21:37 तक, शुक्र उ.षा. 15:28, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** G	07	18	17	20
	30	15	9	शनि	14	10	30	विशा	12	35	अतिगंड	16	44	वृ.प्रा. 6:02	**पितृकार्येऽमावस सिद्धियोग**	07	18	17	20
	दिसं.	16	10	रवि	30	11	51	अनु	14	24	सुकर्मा	16	33	वृश्चिक	**देवकार्येऽमावस,** गण्डमूल 14:24 से	07	19	17	20

Bभद्रा 16:05 तक, गण्डमूल 29:41 से, चतुर्मास व्रत समाप्तिः, **भीष्म पञ्चक प्रारंभ,** स.सि. योग C श्रीनेहरू जयंती (बाल दिवस), गण्डमूल 24:33 तक, D **श्रीगुरुनानक देव, जयंती, भीष्म पञ्चक समाप्त कार्तिक स्नान पूर्तिः पद्मकयोग, शनि मार्गी** 19:50, पुष्कर यात्रा E 7:57 से 18:56 तक, **सौभाग्यसुन्दरी व्रत,** स.सि.योग G बुधास्तः पश्चिमे 17:20, **पिशाचमोचनीदेविका चतुर्दशी**

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	श्री विक्रमी संवत् 2081	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से पौष कृष्ण पक्ष अमावस्या	दिसम्बर, सन् 2024 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि दिसंबर	विक्रमी संवत् मार्ग.	शक संवत् मार्ग.	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	2	17	11	सोम	1	12	44	ज्येष्ठ	15	45	धृति	16	01	धनु 15:45	मा.शु. प्रतिपदा, **शुक्र मकर में** 11:56, सूर्य ज्येष्ठा में 19:07, गण्डमूल	07	20	17	20
	3	18	12	मंग	2	13	09	मूला	16	42	शूल	15	08	धनु	चन्द्रदर्शनम् (30 मु.), अमृतयोग, गण्डमूल 16:42 तक	07	21	17	20
	4	19	13	बुध	3	13	11	पू.षा.	17	15	गंड	13	56	मकर 23:19	भद्रा 25:03 से	07	22	17	20
	5	20	14	गुरु	4	12	50	उ.षा.	17	27	वृद्धि	12	28	मकर	भद्रा 12:50 तक, रवियोग, **सिद्धि विनायक व्रत**	07	23	17	20
	6	21	15	शुक्र	5	12	08	श्रवण	17	18	ध्रुव	10	43	कुंभ 29:06	**पञ्चक प्रारंभ** 29:06, **नागपञ्चमी,** मंगल वक्री 29:04, **स्कन्दषष्ठी**, A	07	23	17	20
	7	22	16	शनि	6	11	06	धनि	16	50	व्याघा हर्षण	08 30	42 25	कुम्भ	अमृतयोग, रवियोग, मित्र सप्तमी (षष्ठी विद्धा)	07	24	17	20
	8	23	17	रवि	7	09	45	शत	16	03	वज्र	27	53	कुम्भ	भद्रा 9:45 से 20:57 तक, वक्री बुध अनु. में 24:42, श्रीदुर्गाष्टमी	07	25	17	20
	9	24	18	सोम	8	08	03	पू.भा.	14	56	सिद्धि	25	5	मीन 9:14	A श्रीराम विवाह उत्सव, स.सि.योग	07	26	17	20
	0	0	0	सोम	9	30	02	0	0	0	0	0	0	0	नवमी तिथि क्षय	0	0	0	0
	10	25	19	मंग	10	27	43	उ.भा.	13	30	व्यती	22	03	मीन	स.सि. योग, शुक्र श्रवण में 27:18, बुधोदय: पूर्वे 22:58, B	07	26	17	20
	11	26	20	बुध	11	25	10	रेवती	11	47	वरिय	18	47	मेष 11:47	**श्रीगीता जयंती, पञ्चक समाप्त** 11:47 **मोक्षदा एकादशी व्रत**, भद्रा 14:28 से C	07	27	17	20
	12	27	21	गुरु	12	22	27	अश्वि	09	52	परिघा	15	23	मेष	गण्डमूल 9:52 तक, अवतार द्वादशी व्रत	07	28	17	21
	13	28	22	शुक्र	13	19	40	भरणी कृतिका	07 29	50 48	शिव	11	54	वृष 13:18	**प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत,** रवियोग	07	29	17	21
	14	29	23	शनि	14	16	59	रोहि	27	54	सिद्ध साध्य	08 29	26 06	वृष	भद्रा 16:59 से 27:43 तक, **श्रीदत्त जयंती, पिशाच मोचन श्राद्ध, श्रीसत्यनारायण व्रत**, D	07	29	17	21
	15	पौष	24	रवि	15	14	32	मृग	26	20	शुभ	26	03	मि. 15:03	**पौष संक्रान्ति**, सूर्य मूल 1 धनु में रात्रि 10:09, बुध मार्गी 26:26, **पूर्णिमा व्रत**, E	07	30	17	22
पौष कृष्ण पक्ष	16	2	25	सोम	1	12	28	आर्द्रा	25	13	शुक्ल	23	22	मिथुन	पौष कृष्ण प्रतिपदा E अमृतयोग	07	31	17	22
	17	3	26	मंग	2	10	56	पुन	24	44	ब्रह्मा	21	11	कर्क 18:47	भद्रा 22:25 से, अमृतयोग, त्रिपुष्कर योग 10:56 तक	07	31	17	22
	18	4	27	बुध	3	10	06	पुष्य	24	58	ऐन्द्र	19	34	कर्क	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 20:34, भद्रा 10:06 तक, गण्डमूल F	07	32	17	23
	19	5	28	गुरु	4	10	03	आश्ले	26	00	वैधृति	18	34	सिंह 26:00	गण्डमूल	07	32	17	23
	20	6	29	शुक्र	5	10	49	माघ	27	47	विष्कुं	18	11	सिंह	गण्डमूल 27:47 तक	07	33	17	24
	21	7	30	शनि	6	12	22	पू.फा.	30	14	प्रीति	18	22	सिंह	भद्रा 12:22 से 25:23 तक, सा.सू. मकर में, **शिशर् ऋतु प्रारंभ**, G	07	33	17	24
	22	8	पौष	रवि	7	14	32	उ.फा.	00	00	आयु.	19	00	कन्या 12:55	स.सि. योग, शुक्र धनिष्ठा 22:17, त्रिपुष्कर योग, भा. पौष प्रारंभ	07	34	17	25
	23	9	2	सोम	8	17	08	उ.फा.	09	09	सौभा.	19	54	कन्या	रुकमिणी अष्टमी, अष्टकाश्राद्ध	07	34	17	25
	24	10	3	मंग	9	19	53	हस्त	12	17	शोभना	20	53	तुला 26:50	बुध ज्येष्ठा में 8:24	07	35	17	26
	25	11	4	बुध	10	22	29	चित्रा	15	22	अतिगंड	21	46	तुला	भद्रा 9:13 से 22:29 तक, **क्रिसमिस डे**	07	35	17	26
	26	12	5	गुरु	11	24	44	स्वाति	18	09	सुकर्मा	22	23	तुला	**सफला एकादशी व्रत**	07	36	17	27
	27	13	6	शुक्र	12	26	27	विशा	20	28	धृति	22	37	वृ. 13:56	सुरूप द्वादशी, शनि पू.भा. में 20:14	07	36	17	28
	28	14	7	शनि	13	27	33	अनु	22	13	शूल	22	23	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 27:34 से शुक्र कुम्भ में 23:39, सूर्य पू.षा. में 24:24, H	07	36	17	28
	29	15	8	रवि	14	28	02	ज्येष्ठ	23	22	गंड	21	41	धनु 23:22	भद्रा 15:52 तक, **मासिक शिवरात्रि व्रत**, गण्डमूल	07	37	17	29
	30	16	9	सोम	30	27	57	मूला	23	57	वृद्धि	20	32	धनु	**सोमवती देवपितृकार्येऽमावस,** कुहू:, मेला हरिद्वार प्रयागदि तीर्थ महत्त्व, I	07	37	17	30

B गण्डमूल 13:30 से C25:10 तक, गण्डमूल, रवियोग D सिद्धियोग, स.सि.योग F24:58 से G **सायन उत्तरायण प्रारंभ** 14:40, अमृतयोग Hगण्डमूल 22:13 से I गण्डमूल 23:57 तक

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से वैशाख माघ पक्ष अमावस्या तक दिसंबर-जनवरी, सन् 2024-25 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि	विक्रमी संवत्	शक संवत्	वार	तिथि	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्र-राशि प्रवेश	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू			
	दिसंबर	पौष	पौष			घ.	मि.		घ.	मि.		घ.	मि.	घ. मि.		सूर्योदय घ. मिं.		सूर्यास्त घ. मिं.	
पौष शुक्ल पक्ष	31	17	10	मंग	1	27	22	पू.षा.	24	04	ध्रुव	18	59	धनु	पौष शुक्ल प्रतिपदा	07	37	17	30
	जन.	18	11	बुध	2	26	24	उ.षा.	23	46	व्याघा	17	06	म.प्रा. 6:00	चन्द्रदर्शनम् (45 मु.), सन् 2025 ई. शुरू, सिद्धियोग	07	37	17	31
	2	19	12	गुरु	3	25	09	श्रवण	23	11	हर्षना	14	58	मकर	अमृतयोग	07	38	17	32
	3	20	13	शुक्र	4	23	40	धनि	22	22	वज्र	12	37	कुम्भ 10:47	भद्रा 12:26 से 23:40 तक, **पञ्चक प्रारंभ** 10:47, शुक्र शतभिषा में 28:38, A	07	38	17	33
	4	21	14	शनि	5	22	01	शत	21	23	सिद्धि व्यती	10 26	08 47	कुम्भ	बुध धनु में 12:02	07	38	17	33
	5	22	15	रवि	6	20	16	पू.भा.	20	18	वरिय	28	51	मीन 14:34	रवियोग	07	38	17	34
	6	23	16	सोम	7	18	24	उ.भा.	19	6	परिघा	26	05	मीन	भद्रा 18:24 से 29:27 तक, **श्रीमार्तण्ड सप्तमी**, गण्डमूल 19:06 से, B	07	38	17	35
	7	24	17	मंग	8	16	27	रेवती	17	50	शिव	23	15	मेष 17:50	**पञ्चक समाप्ति** 17:50, सिद्धियोग, गण्डमूल	07	38	17	36
	8	25	18	बुध	9	14	26	अश्वि	16	30	सिद्ध	20	23	मेष	गण्डमूल 16:30 तक, रवियोग	07	38	17	37
	9	26	19	गुरु	10	12	23	भरणी	15	07	साध्य	17	29	वृष 20:45	भद्रा 23:21 से सिद्धियोग, रवियोग	07	38	17	37
	10	27	20	शुक्र	11	10	20	कृत्ति	13	45	शुभ	14	36	वृष	**पुत्रदा एकादशी व्रत**, भद्रा 10:20 तक, **कुम्भ महापर्व शुरू**, सूर्य उ.षा. में 26:20	07	38	17	33
	11	28	21	शनि	12	08	22	रोहि	12	29	शुक्ल	11	48	मि.23:54	**प्रदोष व्रत,** स.सि. योग	07	38	17	39
	0	0	0	शनि	13	30	34	0	0	0	0	0	0	0	त्रयोदशी तिथि क्षय	0	0	0	0
	12	29	22	रवि	14	29	03	मृग.	11	24	ब्रह्मा इन्द्र	09 30	09 44	मिथुन	भद्रा 29:03 से, वक्री मंगल पुन. में 24:12, राहु उ.भा.-1, केतु उ.फा.C	07	38	17	40
	13	30	23	सोम	15	27	57	आर्द्रा	10	38	वैधृति	28	39	कर्क 28:18	भद्रा 16:27 तक, **श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत,** बुध पू.षा. में 20:35, D	07	38	17	41
माघ कृष्ण पक्ष	14	माघ	24	मंग	1	27	21	पुन	10	17	विष्कुं	26	53	कर्क	मा.कृ. प्रतिपदा, **माघ मकर संक्रांति पर्व,** सूर्य मकर में 8:54, **निरयण** E	07	38	17	42
	15	2	25	बुध	2	27	23	पुष्य	10	28	प्रीति	25	46	कर्क	सिद्धियोग, गण्डमूल 10:28 से	07	37	17	43
	16	3	26	गुरु	3	28	06	आश्ले	11	17	आयु.	25	05	सिंह 11:17	भद्रा 15:40 से 28:06 तक, गण्डमूल, **सौभाग्यसुन्दरी व्रत,** बुधास्त: F	07	37	17	44
	17	4	27	शुक्र	4	29	30	माघ	12	45	सौभा.	24	57	सिंह	**श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी (भुग्गा व्रत),** चन्द्रोदय जम्मू 21:16, शुक्र पू.भा. G	07	37	17	45
	18	5	28	शनि	5	31	31	पू.फा.	14	51	शोभना	25	16	कन्या 21:27		07	37	17	46
	19	6	29	रवि	6	00	00	उ.फा.	17	30	अतिगंड	25	57	कन्या	सा.सू. कुम्भ में 25:15, स.सि.योग	07	36	17	47
	20	7	30	सोम	6	09	59	हस्त	20	30	सुकर्मा	26	52	कन्या	भद्रा 9:59 से 23:19 तक, रवियोग	07	36	17	47
	21	8	माघ	मंग	7	12	40	चित्रा	23	37	धृति	27	49	तुला 10:02	**स्वामी विवेकानन्द जयंती,** बुध उ.षा. में 14:48, वक्री मंगल, **मिथुन में** 10:00, H	07	35	17	48
	22	9	2	बुध	8	15	18	स्वाति	26	34	शूल	28	37	तुला		07	35	17	49
	23	10	3	गुरु	9	17	38	विशा	29	08	गंड	29	06	वृ. 22:32	भद्रा 30:35 से, नेता जी **सुभाषचन्द्रबोस जयंती,** सूर्य श्रवण में 28:43	07	35	17	50
	24	11	4	शुक्र	10	19	25	अनु	31	08	वृद्धि	29	08	वृश्चिक	भद्रा 19:25 तक, स.सि.योग, **पुण्यतिथि पं. रामेश्वरदत्त रैणा (राजज्योतिषी)** I	07	34	17	51
	25	12	5	शनि	11	20	32	ज्येष्ठ	00	00	ध्रुव	28	38	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत,** अमृतयोग, गण्डमूल	07	34	17	52
	26	13	6	रवि	12	20	55	ज्येष्ठ	08	26	व्याघा	27	34	धनु 8:26	**तिल द्वादशी, गणराज्य दिवस,** स.सि.योग 8:26 बाद, गण्डमूल	07	33	17	53
	27	14	7	सोम	13	20	35	मूला	09	02	हर्षना	25	57	धनु	**प्रदोष व्रत,** भद्रा 20:35 से, **मासिक शिवरात्रि व्रत,** गंडमूल 9:02 तक	07	33	17	54
	28	15	8	मंग	14	19	36	पू.षा.	08	58	वज्र	23	51	मकर 14:51	भद्रा 8:10 तक, शुक्र मीन में 7:00	07	32	17	55
	29	16	9	बुध	30	18	06	उ.षा. श्रवण	08 31	20 09	सिद्धि	21	21	मकर	**देवपितृकार्येऽमावस, मौनी अमावस, कुम्भ पर्व शाही स्नान**	07	32	17	56

A अमृतयोग B **श्रीगुरु गोविन्द सिंह जयन्ती** C 3-15:55 D **माघस्नानारम्भा,** अमृतयोग E **उत्तरायण शुरू** F पूर्वे 23:53, अमृतयोग G में 7:41, गण्डमूल 12:45 तक H भा. माघारम्भ: द्विपुष्करयोग 12:40 तक I **अखनूर**, बुध मकर में 17:37, गण्डमूल 31:08 से, संकट हरगणपति व्रत

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग	श्री विक्रमी संवत् 2081	माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से फाल्गुन कृष्ण पक्ष अमावस्या	जनवरी-फरवरी, सन् 2025 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि	विक्रमी संवत्	शक संवत्	वार	तिथि	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चंद्र-राशि प्रवेश	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू			
						घ.	मि.		घ.	मि.		घ.	मि.	घ. मि.		सूर्योदय घ. मिं.		सूर्यास्त घ. मिं.	
	जनवरी	माघ	माघ																
माघ शुक्ल पक्ष	30	17	10	गुरु	1	16	11	धनि	29	51	व्यती	18	33	कुम्भ 18:35	माघ शु. प्रतिपदा, पञ्चक प्रारंभ 18:35, श्रीवल्लभ जयन्ती, **गुप्तनवरात्रे प्रारम्भ**,A	07	31	17	57
	31	18	11	शुक्र	2	13	59	शत	28	14	वरिय	15	32	कुम्भ	चन्द्रदर्शनम् (15 मु.)	07	30	17	58
	फर.	19	12	शनि	3	11	39	पू.भा.	26	33	परिघा	12	24	मीन 20:57	**श्रीगौरी तृतीया व्रत,** भद्रा 22:27 से, **तिल चतुर्थी,** शुक्र उ.भा. में 8:25	07	30	17	59
	2	20	13	रवि	4	09	15	उ.भा.	24	52	शिव सिद्धि	09 30	14 00	मीन	**वसन्त पञ्चमी**, भद्रा 9:14 तक, स.सि.योग, गण्डमूल 24:52 से	07	29	18	00
	0	0	0	रवि	5	30	53	0	0	0	0	0	0	0	पञ्चमी तिथि क्षय	0	0	0	00
	3	21	14	सोम	6	28	38	रेवती	23	17	साध्य	27	02	मेष 23:17	**पञ्चक समाप्तिः** 23:17, गण्डमूल, रवियोग	07	28	18	01
	4	22	15	मंग	7	26	31	अश्वि	21	50	शुभ	24	06	मेष	भद्रा 26:31 से, पुत्र सप्तमी, अचला सप्तमी गुरु मार्गी 15:11, गण्डमूल B	07	27	18	02
	5	23	16	बुध	8	24	36	भरणी	20	33	शुक्ल	21	19	वृष 26:16	**श्रीभीमाष्टमी,** भद्रा 13:32 तक, **दुर्गाष्टमी**	07	27	18	03
	6	24	17	गुरु	9	22	54	कृत्ति	19	29	ब्रह्म	18	42	वृष	श्रीदुर्गा नवमी, गुप्तनवरात्रे समाप्त, सूर्य धनिष्ठा में 7:48	07	26	18	04
	7	25	18	शुक्र	10	21	27	रोहि	18	40	ऐन्द्र	16	16	वृष	बुध धनिष्ठा में 18:31, रवियोग	07	25	18	05
	8	26	19	शनि	11	20	16	मृग	18	07	वैधृति	14	04	मि.प्रा.6:20	**जया एकादशी व्रत**, भद्रा 8:49 से 20:16 तक, अमृतयोग, रवियोग	07	24	18	06
	9	27	20	रवि	12	19	26	आर्द्रा	17	53	विष्कुं	12	07	मिथुन	**श्रीभीष्म द्वादशी,** श्रीभीष्मतर्पणम्, तिल द्वादशी	07	23	18	06
	10	28	21	सोम	13	13	58	पुन	18	01	प्रीति	10	26	कर्क 11:56	**प्रदोष व्रत, श्री गुरुहरराय जयन्ती**	07	22	18	07
	11	29	22	मंग	14	18	56	पुष्य	18	34	आयु.	09	06	कर्क	भद्रा 18:56 से 31:07 तक, बुध कुम्भ में 12:53, गण्डमूल 18:34 से	07	22	18	08
	12	फाल्गु	23	बुध	15	19	23	आश्ले	19	35	सौभा.	08	07	सिंह 19:35	**फाल्गुण संक्रान्ति**, सूर्य कुंभ में रा.9:54, **श्रीगुरु रविदास जयंति,** गण्डमूल, C	07	21	18	09
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	13	2	24	गुरु	1	20	22	माघ	21	07	शोभना	07	31	सिंह	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा, गण्डमूल 21:07 तक	07	20	18	10
	14	3	25	शुक्र	2	21	53	पू.फा.	23	09	अतिगंड	07	20	कन्या 29:43	बुध शतभिषा में 29:04	07	19	18	11
	15	4	26	शनि	3	23	53	उ.फा.	25	39	सुकर्मा	07	32	कन्या	भद्रा 10:49 से 23:53 तक	07	18	18	12
	16	5	27	रवि	4	26	16	हस्त	28	31	धृति	08	06	कन्या	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 21:49, स.सि. योग	07	17	18	13
	17	6	28	सोम	5	28	54	चित्रा	0	0	शूल	08	54	तुला 18:01	अमृतयोग	07	16	18	14
	18	7	29	मंग	6	00	00	चित्रा	07	35	गंड	09	52	तुला	सा.सू. मीन में 15:15, **वसन्त ऋतु प्रारम्भ**	07	15	18	14
	19	8	30	बुध	6	07	33	स्वाति	10	40	वृद्धि	10	48	तुला	भद्रा 7:33 से 20:43 तक, सूर्य शतभिषा में 12:24, रवियोग 10:40 तक	07	14	18	15
	20	9	फाल्गु	गुरु	7	09	59	विशा	13	30	ध्रुव	11	34	वृ.प्रा.6:50	भा. फाल्गुनारम्भः, जानकी व्रत (मध्याह्न व्यापिनी)	07	13	18	16
	21	10	2	शुक्र	8	11	58	अनु	15	54	व्याघा	11	59	वृश्चिक	स.सि. योग, गण्डमूल 15:54 से	07	12	18	17
	22	11	3	शनि	9	13	20	ज्येष्ठ	17	40	हर्षना	11	56	धनु 17:40	भद्रा 25:45 से, **श्रीरामदास जयन्ती**, सिद्धियोग, गण्डमूल, **बुधोदयः** D	07	10	18	18
	23	12	4	रवि	10	13	56	मूला	18	43	वज्र	11	19	धनु	भद्रा 13:56 तक, अमृतयोग, स.सि.योग, गण्डमूल 18:43 तक	07	09	18	19
	24	13	5	सोम	11	13	45	पू.षा.	18	59	सिद्धि	10	05	मकर 24:55	**विजया एकादशी व्रत,** मंगलमार्गी 7:31	07	08	18	20
	25	14	6	मंग	12	12	48	उ.षा.	18	31	व्यती वरीया	08 29	15 50	मकर	**प्रदोष व्रत, शनेरस्तः पश्चिमे** 15:45, त्रिपुष्कर योग 12:48 तक	07	07	18	20
	26	15	7	बुध	13	11	09	श्रवण	17	23	परिघा	26	57	कुम्भ 28:36	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**, भद्रा 11:09 से 22:06 तक, पञ्चक प्रारंभ 28:36	07	06	18	21
	27	16	8	गुरु	14	08	55	धनि	15	44	शिव	23	41	कुम्भ	**देवपितृकार्येऽमावस**, बुध मीन में 23:45	07	05	18	22
	0	0	0	गुरु	30	30	15	0	0	0	0	0	0	0	अमावस तिथि क्षय	0	0	0	0

A बुध श्रवण में 22:03 B 21:50 तक, अमृतयोग, स.सि.योग C **श्रीसत्यनारायण, पूर्णिमा व्रत** D **पश्चिमे** 18:18

तिथ्यादि पञ्चाङ्ग श्री विक्रमी संवत् 2081 फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या तक फरवरी-मार्च, सन् 2025 ई॰

मास पक्ष	अंग्रेजी तिथि फरवरी	विक्रमी संवत् फाल्गु.	शक संवत् फाल्गु.	वार	तिथि	समाप्ति काल घ.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	मि.	योग	समाप्ति काल घ.	मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घ. मि.	पंचक, भद्रा, ग्रहों का राशि प्रवेश घण्टा मिनटों में (भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)	जम्मू सूर्योदय घ.	मिं.	सूर्यास्त घ.	मिं.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	28	17	9	शुक्र	1	27	17	शत	13	40	सिद्ध	20	07	कुम्भ	फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा, सिद्धि योग	07	04	18	23
	मार्च	18	10	शनि	2	24	10	पू.भा.	11	23	साध्य	16	25	मी.प्रा.05:57	चन्द्रदर्शनम् (45 मु.), **श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती,** त्रिपुष्कर योग 11:23 तक, A	07	02	18	24
	2	19	11	रवि	3	21	02	उ.भा. स्वाती	08 30	59 36	शुभ	12	34	मीन	स.सि.योग 8:59 तक, शुक्र वक्री प्रातः 6:07, गण्डमूल 8:59 से, रवियोग	07	01	18	24
	3	20	12	सोम	4	18	02	अश्वि	28	30	शुक्ल ब्रह्म	08 29	57 25	मे.प्रा.6:36	भद्रा 7:31 से 18:02 तक, **पञ्चक समाप्तिः** 6:36, गण्डमूल 28:30 तक	07	00	18	25
	4	21	13	मंग	5	15	17	भरणी	26	38	ऐन्द्र	26	06	मेष	**यज्ञवल्क्य जयन्ती,** सूर्य पू.भा. में 18:39 A बुध उ.भा. में 24:14	06	59	18	26
	5	22	14	बुध	6	12	52	कृत्ति	25	03	वैधृ	23	07	वृष 8:12	अमृतयोग, स.सि. योग, रवियोग	06	58	18	27
	6	23	15	गुरु	7	10	51	रोहि	24	06	विष्कुं	20	24	वृष	भद्रा 10:51 से 22:01 तक	06	56	18	28
	7	24	16	शुक्र	8	09	19	मृग	23	32	प्रीति	18	14	मिथुन 11:44	**होलाष्टक प्रारंभ, अन्नपूर्णाष्टमी**	06	55	18	28
	8	25	17	शनि	9	08	17	आर्द्रा	23	28	आयु.	16	24	मिथुन	**होलाष्टक** 7 **मार्च से** 14 **मार्च तक,** सिद्धियोग	06	54	18	29
	9	26	18	रवि	10	07	46	पुन	23	55	सौभा.	14	58	कर्क 17:45	भद्रा 19:40 से, अमृतयोग	06	53	18	30
	10	27	19	सोम	11	07	45	पुष्य	24	51	शोभना	13	56	कर्क	**आमलकी एकादशी व्रत,** भद्रा 7:45 तक, गण्डमूल 24:51 से	06	51	18	31
	11	28	20	मंग	12	08	14	आश्ले	26	15	अतिगंड	13	17	सिंह 26:15	**प्रदोष व्रत,** अमृतयोग, स.सि.योग, गण्डमूल	06	50	18	31
	12	29	21	बुध	13	09	12	माघ	28	05	सुकर्मा	13	00	सिंह	गण्डमूल 28:05 तक, रवियोग	06	49	18	32
	13	30	22	गुरु	14	10	36	पू.फा.	30	19	धृती	13	03	सिंह	**होलिका दहन,** भद्रावाद भद्रा 10:36 से 23:26 तक, **श्रीसत्य- नारायण व्रत,** B	06	47	18	33
	14	चैत्र	23	शुक्र	15	12	24	उ.फा.	00	00	शूल	13	23	कन्या 12:55	**चैत्र संक्रांति,** सूर्य मीन में सायं 6:49, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, **पूर्णिमा व्रत,** C	06	46	18	34
चैत्र कृष्ण पक्ष	15	2	24	शनि	1	14	33	उ.फा.	08	54	गंड	14	00	कन्या	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा, अमृतयोग, बुध वक्री 12:16, **होला मेला पांओटा साहब,** D	06	45	18	34
	16	3	25	रवि	2	16	59	हस्त	11	45	वृद्धि	14	48	तुला 25:14	भद्रा 30:16 से, राहु पू.भा. 4 केतु उ.फा. 2-15:33, सन्त तुकाराम जयन्ती, E	06	44	18	35
	17	4	26	सोम	3	19	33	चित्रा	14	47	ध्रुव	15	45	तुला	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय जम्मू** 21:30, सूर्य उ.भा. में 27:10, F	06	42	18	36
	18	5	27	मंग	4	22	10	स्वाति	17	52	व्याघा	16	44	तुला	बुधास्तः पश्चिमे 16:48 **शुक्र अस्त 19 मार्च**	06	41	18	37
	19	6	28	बुध	5	24	37	विशा	20	50	हर्षना	17	38	वृ. 19:06	**वक्री शुक्रास्तः पश्चिमे** 18:37, श्रीरङ्गपञ्चमी	06	40	18	37
	20	7	29	गुरु	6	26	46	अनु	23	32	वज्र	18	19	वृश्चिक	भद्रा 26:46 से, सा.सू. मेष में 14:02, गण्डमूल 23:32 से, स.सि.योग, उ.गोल शुरू	06	38	18	38
	21	8	30	शुक्र	7	28	24	ज्येष्ठ	25	46	सिद्धि	18	41	धनु 25:06	भद्रा 15:39 तक, **शीतलापूजनम्,** गण्डमूल, रवियोग	06	37	18	39
	22	9	चैत्र	शनि	8	29	24	मूला	27	23	व्यती	18	36	धनु	गण्डमूल 27:23, भा. चैत्रारम्भः	06	36	18	39
	23	10	2	रवि	9	29	33	पू.षा.	28	13	वरिय	17	58	धनु	**शुक्र उदय 25 मार्च**	06	34	18	40
	24	11	3	सोम	10	29	05	उ.षा.	28	27	परिघा	16	44	मकर 10:24	भद्रा 17:28 से 29:05 तक, अमृतयोग	06	33	18	41
	25	12	4	मंग	11	27	46	श्रवण	27	49	शिव	14	53	मकर	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), वक्री शुक्रोदयः पूर्वस्यां 18:42	06	32	18	42
	26	13	5	बुध	12	25	43	धनि	26	30	सिद्ध	12	25	कुम्भ 15:14	**पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), पञ्चक प्रारंभ** 15:14, सिद्धियोग	06	30	18	42
	27	14	6	गुरु	13	23	04	शत	24	34	साध्य शुभ	09 29	25 41	कुम्भ	**प्रदोष व्रत,** वारूणी योग 6:29 से 18:43 तक, भद्रा 23:04 से, G	06	29	18	43
	28	15	7	शुक्र	14	19	56	पू.भा.	22	09	शुक्ल	26	07	मीन 16:47	भद्रा 9:33 तक, अमृतयोग, मेला पृथूदक-पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	06	28	18	44
	29	16	8	शनि	30	16	28	उ.भा.	19	26	ब्रह्मा	22	03	मीन	**देवपितृकार्येऽमावस,** गण्डमूल 19:26 से, शनि मीन में 21:41 H	06	27	18	44

B **मेला श्री श्यामजी** (खाटु), स.सि.योग C होलाष्टक समाप्त D **वसन्तोत्सव** E स.सि.योग F भद्रा 19:33 तक G **मासिक शिवरात्रि व्रत,** अमृतयोग H **विक्रमी संवत्** 2081 **सम्पूर्णम्**

पञ्चाङ्ग विवरण सन् 2024-25 का शेष भाग

(पृष्ठ 155 का शेष)

ब्राह्मी रस भावित घृतमात्र पान पूर्वक उपवास करें। आचार्य को दक्षिणादि से प्रसन्न कर कार्तिकेय की आराधना करें। इस व्रत से शास्त्रों का अव्यक्तभाव एवं स्फुरण शक्ति द्वारा शास्त्रार्थ में प्रवीणता प्राप्त होती है। **दशमी व्रतबन्धः**- प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार नवरात्रों के पश्चात् दशमी के दिन यदि आश्लेषा नक्षत्र भी आजाए तो राजा लोग द्विजाति मात्र को मौंजी बन्धन पूर्वक वालकों के यज्ञोपवीत संस्कार के विधान किया करते थे, यह परम्परा धर्मनगरी जम्मू में **महाराजाधिराज श्री रणवीरसिंह जी** ने सिंहासनारोहण के साथ ही पुनः प्रारम्भ की गई जो वैक्रम संवत् 2019 तक लगातार चलती रही किसी कारणवश वैक्रम संवत् 2020 से इस परम्परा का लोप ही हो गया यदि यह परम्परा पुनः प्रारम्भ की जाए तो दिवंगत महाराजा रणवीर सिंह जी की आत्मा को परमशान्ति एवं सनातन धर्म को भी बढ़ोत्तरी द्वारा नवीन अभ्युदय प्राप्त होगा। **सङ्क्रन्ति फलः**- सूर्यनारायण 13 अप्रैल शनिवार को रात्रि 9:03 पर मेष राशि में प्रवेश करेंगे, अतः गेहूँ तथा चनों की महंगाई होगी, किसान भाईयों को लाभ मिलेगा सङ्क्रान्ति के दिन वर्षा हो या आन्धी तूफान के पश्चात् सामान्य वर्षा भी होतो मिला जुला फल हो, बाजार में कभी-तेजी और मन्दी हो फिर भी दुर्भिक्ष नहीं। मेष संक्रान्ति नन्दा तिथि में घटित हुई है अतः उपयोगी वर्षा की कमी होगी। **आकाशलक्षनम्**:- रुक-रुक कर खण्डवर्षा के योग हैं, मौसम सामान्य रहेगा।

(पृष्ठ 156 का शेष)

तिलक धारण कर के छः से नौ तक प्रथम प्रहर पूजा, दस से बारह तक द्वितीय प्रहर पूजा, एक से तीन तक तृतीय प्रहर पूजा, चार से छः तक चतुर्थ प्रहर पूजा के अनन्तर वेदपाठी ब्राह्मण को दक्षिणदि से तृप्त करके देव विसर्जन करें। **लोक भविष्यः**- 5 मई तक शुक्र अश्विनी नक्षत्र में होने से ब्राह्मण जाति में विरोध हो, जौ, तिल उड़द इत्यादि कम मात्रा में हों, वाहन विक्रेताओं को मध्यम लाभ हो, तुष धान्य महंगे हों, जो गेहूं में रोग हो, ईख, दूध, रस और घी इत्यादि का उत्पादन अधिक हो, 10 मई के पश्चात् बुध अश्विनी को भेदने से व्यापारी, वैद्य, नौका, समुन्द्री जहाजों से जीविका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा वाहनों के व्यापारियों को पीड़ा, नये-नये वाहन बाजार में आएँगे, सरसों उड़द कम हो परन्तु अन्य सभी अन्न उत्पन्न हों, अतिवृष्टि हों, नदियों नालों में जलस्तर में वृद्धि हो, वन्य पशुओं की हानि हो। **आकाशलक्षणम्**:- गर्मी का प्रकोप अधिक, मध्यम वर्ण किन्तु कुछ प्रान्तों में प्रचुर वर्षा भी हो।

(पृष्ठ 157 का शेष)

(पूजा भास्करे) ज्येष्ठ संक्रान्तिः- 14 मई सन् 2024 ई. को सायं काल 5:52 पर श्री सूर्यनारायण वृष राशि में प्रवेश करेंगे, सूर्य का प्रवेश सन्ध्या कालीन तथा मङ्गलवार को है यह योग दुर्भिक्ष कारक होता है, लोगों को शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव, अन्न की कमी, कपास, फल-फूल, ईख के गुड़ शक्कर इत्यादि महंगे होंगे, संक्रान्ति के दिन में यदि वर्षा हो तो सब प्रकार से शुभ हो। ज्येष्ठ संक्रान्ति को वर्षा होने से मिलाजुला फल होता है, बाजार में कभी तेजी कभी मन्दी से व्यापारीगण परेशान हों। बुध भरणी नक्षत्र में आने से प्राणियों के धातुओं (वसा, रक्त, मांस, मेधा, अस्थि, मज्जा और शुक्र) की हानि हो अर्थात् रोगों में की वृद्धि हो। **आकाशलक्षणम्**:- गर्मी की वृद्धि, पूर्वी-उत्तरी प्रान्तों में गर्म हवाओं सहित खण्डवर्षा के योग हैं।

(पृष्ठ 158 का शेष)

होते हैं परन्तु अपरा एकादशी के व्रत मात्र परायणता से निष्पाप होकर इस लोक में सुख भोगकर अन्त में वैकुण्ठ धाम प्राप्त करते हैं। **लोक भविष्यः**- रोहिनी शकट का शुक्र के भेदन करने से पृथ्वी पर अत्याधिक बीमारियों से प्रजा को कष्ट हो ब्राह्मण गण पीड़ित हों, उपयोगी वर्षा की कभी हो, अन्न की कभी, मनुष्यों को ज्वर पीड़ा और कहीं कुछ उपद्रव भी हो, तुषधान्य महंगे हों, चौपायों का नाश, दूधारू पशुओं को कष्ट हो, कपास, तिल, सूत महँगे हों रस और धान्यों का नाश हो, अश्विनी में मङ्गल होने के कारण वैदिक विद्वानों को पीड़ा हो, पाखण्डी ब्राह्मणों का शीघ्र पतन हो अर्थात् ब्राह्मण अपने कार्यों से विमुख होकर नीच कर्मों में प्रवृत्त हों। **आकाशलक्षणम्**:- गर्मी का प्रकोप अधिक, लूह चलेगी तथा वर्षा कम होगी परन्तु कुछ प्रान्तों में पर्याप्त वर्षा भी हो सकती है।

(पृष्ठ 159 का शेष)

कर उसे वस्त्रों से ढककर छाता, जूता, कुशा आसन आदि रखकर चारों दिशाओं में तिलपूर्ण पात्र एवं घृत, दधि, मिश्री के पात्र स्थापित कर जलशायी भगवान विष्णु का पूजन

कर के उक्त द्रव्यों का दान करे तो स्त्रियों को सौभाग्य प्राप्ति और पुरुषों के मनोरथ पूर्ण होते हैं (स्कन्दपुराणे)। **आषाढ़ संक्रांतिः**- श्रीसूर्यनारायण 14 जून शुक्रवार रात्रि 12:25 पर मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। शुक्रवार रात्रि काल में प्रवेश होने के कारण चौपाएं पशुओं के लिए शुभ, दुधारू पशु गाय भैंस प्रचुर मात्रा में दूध दें, वैदिक विद्वानों, गणितज्ञों को इस संक्रान्ति का फलादेश शुभ रहेगा, दुष्ट प्रवृत्ति जनों के लिए संक्रान्ति फल नेष्ट होगा, सरकारी दण्डनीति के अन्तर्गत कुचेष्टा रखने वाले लोगों को कष्ट भोगना पड़ेगा। **आकाशलक्षनम्:**- गर्मी अधिक, खण्डवृष्टि अर्थात् उपयोगी वर्षा की कमी होगी।

(पृष्ठ 161 का शेष)

उस की विधिपूर्वक पूजा कर के सुन्दर सिंहासन पर शयन करावे, उस दिन से चार मास तक व्रत रखें. मधुर गुड़ इत्यादि का त्याग दीर्घायु पुत्र-पौत्रादि देता है। शत्रु नाश के लिए कड़वे तेल का, सौभाग्य प्राप्ति के लिए मीठे तेल का, स्वर्ग प्राप्ति के लिए पुष्पादि का त्याग करें, देह शुद्धि हेतु पञ्चगव्य का सेवन, वंश वृद्धि के लिए दूध का सेवन, तीर्थफल के लिए पत्तों पर भोजन, पापनाश के लिए एक भुक्त व्रत अथवा फलाहारी रहकर व्रत करे। **श्रावण संक्रान्तिः**- भगवान सूर्य नारायण 16 जुलाई मङ्गलवार दिवा 11:17 पर कर्क राशि में प्रवेश करेंगे फलस्वरूप दुष्ट प्रवृत्ति के नेताओं और चोरों के लिए संक्रान्ति फल शुभ होगा। दुधारू पशुओं की वृद्धि से दूध, दही, घी मक्खन की वृद्धि होगी, सूर्य प्रवेश मध्याह्न कालिक है अतः वैदिक ब्राह्मण वर्ग, सौम्य प्रवृत्ति के लोगों को पीड़ादायक रहेगा। **आकाशलक्षणम्:**- गर्मी अधिक परन्तु जम्मू कश्मीर पञ्जाब हरियाणा इत्यादि प्रान्तों में वर्षा हो जाएगी, कहीं-कहीं सूखा भी होगा।

(पृष्ठ 162 का शेष)

अतिरिक्त सोमवार व्रत रखने का विशेष महत्व है। **अमावस व्रतः**- इस को हरियाली अमावस देश भेद से कहा जाता है इस दिन किसी जलाशय पर स्नान पिण्डादि दानादि के पश्चात् ब्रह्मभोज द्वारा पितृगण प्रसन्न होते हैं। **लोक भविष्यः**- बुध ग्रह मधा नक्षत्र में होने के कारण वर्षा कम हो, धान्यनाश प्रजा में भय हो। **"मघा बुधेल्पवृष्टिश्चधान्यनाशः प्रजाभयम्"** परन्तु श्रावण में पाँच सोमवार शुभफलदायक और धान्यसस्ता हो, कृष्ण सप्तमी को शनिवार होने से पृथ्वी जलपूर्ण हो, कृष्ण एकादशीको रोहिनी होने से सुभिक्ष हो परन्तु अमावस को रविवार होने से सन्ताप, अर्थनाश, क्लेश और राजदुःख की पीड़ा हो। अमावस को पुष्य नक्षत्र होने से वर्षा मध्यम हो, यह अनिष्टकारक योग भी है। **आकाशलक्षणम्:**- खण्ड वर्षा के योग हैं, कहीं कहीं पर अधिक वर्षा से जनधन हानि, उपयोगी वर्षा की कमी होगी।

(पृष्ठ 163 का शेष)

संयुक्तं सर्वस्त्र फलदक्षिणम्। वायनं गौरी विप्राय ददामि प्रीतये तव॥ सौभाग्यारोग्य कामानां सर्वसम्पत्समृद्धये। गौरी गिरीशतुष्ट्यर्थं वायनं ते ददाम्यहम्॥" षोडशमुखी दीपक से आरती करें तत्पश्चात् दीपक से पीठी लेकर उसे नमक रहित अन्न के साथ खाकर रात को जागरण कर प्रातः गौरी माता का विसर्जन करें। **लोक भविष्यः**- शुक्ला सप्तमी को स्वाति नक्षत्र सुभिक्षकारक है। 16 अगस्त शुक्रवार को भाद्रपद संक्रान्ति है भगवान सूर्यनारायण रात्रि 7:43 पर सिंह राशि में प्रवेश करेंगे अतः प्रजा सुखी, सोना चान्दी के भावों में वृद्धि हो, गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा मोटर गाड़ी इत्यादि (चतुष्पद) पशु एवं वाहनों के भावों में भी वृद्धि आएगी, नये-नये वाहन बाजार में आएंगे, खाद्य पदार्थों के भावों में विशेषतौर पर रसकस लवनघृत के भाव सम रहेंगे। **आकाशलक्षम्:**- प्रचुर वर्षा के योग हैं परन्तु कहीं कहीं वर्षा की कमी भी हो, कहीं-कहीं प्रचुर वर्षा के कारण नदी नालों में जलस्तर ऊँचा रहे तथा बाढ़ का प्रकोप हो।

(पृष्ठ 164 का शेष)

विद्धा को ग्रहण करते हैं, कुछ लोग केवल अष्टमी के व्रत को ही श्रेष्ठ मानते हैं। कुछ लोग मध्व सम्प्रदाय या निम्बार्क केवल रोहिणी नक्षत्र में ही व्रत किया करते हैं। यह व्रत रखकर प्रातः भगवान कृष्ण जी की पूजा करके रात को सर्वतोभद्र पीठ बना कर मिट्टी, ताम्बा, पीतल या चान्दी का कलश रख कर उस पर सिंहासन में कृष्ण भगवान को दूध पिलाती हुई देवकी माता की प्रतिमा स्वर्णमयी या रजतमयी प्रतिमा स्थापित कर वेदमन्त्रों द्वारा विधिवत् पूजा करके श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान कर दें। चन्द्रोदय के समय भगवान को सुन्दर फल या सूखे मेवे मिठाईयों सहित अर्पण कर आरती के पश्चात् चरणामृत, नैवैध ग्रहण कर के रात्रि जागरण के पश्चात प्रातः ब्राह्मभोजन के पश्चात् व्रत धारण करें। **कुश ग्रहणी अमावस** यह भाद्रपद कृष्ण अमावस्या के पूर्वाह्न में मनायी जाती है **"कुशाकाशा यवा दूर्वा उशोराश्च सकुन्दकाः। गोधूमा (ब्रीहयो) मौञ्जा दशदर्भाः सवल्लवजाः॥"**

दश प्रकार की कुशा शास्त्रों में बतायी है। कुशा उखाड़ने का मन्त्रः- **"ॐ हुँ फट"** उस दिन यदि मघा नक्षत्र हो तो कुशा नहीं उखाड़नी चाहिए। **लोकभविष्यः**- मृग्शिरा में वृहस्पति होने से उत्तम उपयोगी वर्षा हो तथा सुभिक्ष हो, बुध आश्लेषा में है अतः महावृष्टि की सम्भावना है, तुष धान्य उत्पन्न हों, कुरुक्षेत्रादि हरियाणा प्रान्त, सम्पूर्ण पञ्जाब प्रान्तों में प्रजा पीड़ित हो, मेघों की गर्जना सहित वर्षा हो, चित्रकार तथा अन्य नाटक कलाकार पीड़ित हों। **आकाशलक्षणम् :**- उत्तर भारत के प्रान्तों में खण्डवर्षा के योग हैं, कहीं प्रचुर वर्षा होने से फसलों की हानि भी होगी।

(पृष्ठ 165 का शेष)

प्रदेश में प्रसिद्ध है (व्रतार्के)– **पञ्चमी व्रतकं वक्ष्ये आरोग्य स्वर्गमोक्षदम्। नभोनभस्याखिने च कार्तिक शुक्लपक्ष के॥ वासुकिस्तक्षकः पूज्यः कालियो मनिभद्रकः। ऐरावतो धृतराष्ट्रः कर्कोटक धनञ्जयौ॥ एते प्रयच्छन्त्य भयमायुर्विद्यायशः श्रियम्।** (अग्निपुराणे अ. 180) **सूर्यषष्ठी व्रतः**- भाद्रपद शुक्ल सप्तमी से युक्त षष्ठी के दिन स्नानादि के पश्चात सूर्यपूजा सूर्य जब पूर्वक व्रतधारण करने से अक्षय फल प्राप्त होता है, यदि इस व्रत में पञ्चगव्य प्राशन तथा गङ्गा जी के दर्शन करने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल मिलता है (भविष्योत्तरे)। **लोक भविष्यः**- आश्विन संक्रान्ति 16 सितम्बर सोमवार सूर्यनारायण रात्रि 7:41 बजे कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। आर्द्रा में मङ्गल होने से पर्याप्त वृष्टि हो, पड़ोसी प्रान्तों या देशों से मुटमटाव हो अन्न पैदा हो, संक्रान्ति सोमवासरी है, राजाओं का पराक्रम से सौख्य हो परन्तु परिश्रम करना आवश्यक है, राजाओं में परस्पर मतमतान्तर के सहित युद्ध भी हो, पश्चिम देशों को हानि हो। भाद्रपद मास में पाँच मङ्गलवार होने से किसी बड़े व्यक्ति का अभाव हो, अमावस सोम/मंगल को है और मघा योग भी बना हुआ है अतः सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य, वर्षा प्रबल, उदय धान्य की उत्पत्ति और प्रजा सुखी हो परन्तु अमावस की वृद्धि, मंगलवार योग भी है अतः राज्यभ्रंश, राजयुद्ध क्लेशों की वृद्धि अल्पवृष्टि और द्रव्यों की हानि हो क्योंकि अमावस मङ्गलवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र है अरिष्टकारी योग बनता है। **आकाशलक्षणम्:**- अतिवृष्टि होने से बाढ़ादि का प्रकोप हो सकता है उत्तरभारत में वर्षा मध्यम होगी।

(पृष्ठ 166 का शेष)

बुधवासरी अमावस होने से दुर्भिक्ष, राज्य नाश, प्रजा को दुःख, स्थान त्याग और धान्य कम हो, अमावस में उत्तरा फाल्गुनी होने से दुर्भिक्ष हो। **आकाशलक्षणाम् :**- शनिवासरीय अमावस होने के कारण उपयोगी वर्षा की कमी से फसलों की उपज कम होगी।

(पृष्ठ 167 का शेष)

दिन के एक बजे से तारा उदय होने तक विजय काल का प्रभाव रहता है। इस दिन शस्त्र पूजन के बाद भोजन करने से विजय प्राप्त होती है। इस दिन राम परिवार की पूजा का विशेष महत्व होता है। रावण के शमी या बाँस के बने पुतले का राम द्वारा दहन और उसके पश्चात, विभूति धारण करना मानस चिन्ताओं की निवृत्ति का सूचक है। **लोकभविष्यः**- आश्विन मास में पाँच गुरुवार होने से धान्य सस्ता हो, उड़द-मूंग कम उत्पन्न हो गौओं को पीड़ा हो, स्नेह (तेल घृतादि) रस, (मधुरादि) के मूल्यों में वृद्धि हो, भूमि अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण हो, गाय, भैंसों का विनाश हो। शतभिषा में शनि होने से वैद्य (डाक्टर) कवि शौंडिक (शराब बेचने वाले), क्रयविक्रय करने वाले, नीति शास्त्र जानने वाले पीड़ित होंगे, व्यापारी लोग प्रभावित होंगे, रत्नों का व्यापार करने वाले, शिल्पी, कलाकार तथा विप्रवर्ग पीड़ित हों नेताओं में परस्पर वैमनस्य तथा अनावृष्टि भी हो। **आकाशलक्षणम्:**- खण्डवर्षा के योग हैं शरद ऋतु का प्रभाव बढ़ेगा, पानी कम बरसेगा।

(पृष्ठ 168 का शेष)

17 अक्तूबर 2024 गुरूवार प्रातः 7.41 पर तुला राशि में प्रवेश करेंगे, तुला संक्रान्ति के दिन चन्द्रमा मेष राशि में प्रवेश करेगा अतः इस मास में किया हुआ शुभाशुभ कार्य पाँचवें महीने में शुभाशुभ फलादेश करेगा। संक्रान्ति गुरूवार होने से अन्न सस्ता और सुलभता से मिलेगा, इस दिन वर्षा हो जाए तो फल मध्यम होगा। क्षत्रियों में प्रधान का अभाव हो अनावृष्टि, चौरभय, राजनेताओं के आपसी विरोध से क्षति हो, शस्त्र, अग्नि, रोग और जल का भय हो पक्षियों को भय, मनुष्यों में सुख हो, तेल घृत, मधुर रसादि के भावों में वृद्धि हो, भूमि अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण हो, प्रधान वैद्य, वरिष्ठ डॉक्टरों को पीड़ा हो, ईख (गन्ना) शाली, चावल और घी महेंगे होंगे तथा वाहनों द्वारा कष्ट हो अर्थात् दुर्घटनाओं से कष्ट होगा। **आकाशलक्षणम्:**- पर्वतीय प्रदेशों में खण्डवर्ष के योग हैं।

(पृष्ठ 169 का शेष)

इससे अधिक भी यथा शक्ति कर सकते हैं, भगवान की स्थापित मूर्तियों के आगे पाँच दीपक सहित साक्षी दीपक के साथ सात दीपक तिलों के तेल के जगते रहें और छठे दिन ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करवा कर स्वयं नैवैद्य ग्रहण करें। **लोक भविष्यः- मार्गशीर्ष संक्रान्ति** 16 नवम्बर 2024 प्रातः 7:30 पर सूर्यनारायण वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे, यह संक्रान्ति राजनेताओं के लिये शुभ फलप्रद होगी, दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों को भी शुभ है। पशुपक्षियों के लिए सुखप्रद होगी। अनुराधा नक्षत्र पर बुध विचरण कर रहा है, दुधारू पशुओं को कष्ट, दूध की कमी, तेल घृतादि, मधुर रसादि पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होगी, भूमि अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण होगी। **आकाशलक्षणम्ः**- उपयोगी वर्षा की कभी होगी, पानी कम बरसेगा, सामान्य ठण्ड में वृद्धि होगी।

(पृष्ठ 170 का शेष)

तृतीय पुर इन्द्र क्षेत्र (पुरमण्डल से उत्तरवाहिनी तक) यह तीनों क्षेत्र अनन्त तीर्थों से व्याप्त हैं यह तीनों तीर्थ शिव का देह हैं। इन तीनों क्षेत्रों में देविका नदी का गुप्त प्रवाह एवं प्रकट प्रवाह भूत पिशाचादि योनियों में पड़े हुए जीवों की मुक्ति के लिए त्रिस्थली क्षेत्र सभी पुराणों में बताया गया है और यही वराह क्षेत्र है। वराह अवतार धारण कर भगवान विष्णु ने मानस सरोबर के मार्ग से पाताल पहुँच कर हिरण्याक्ष से पृथिवी (सुरभि) लाकर हिरण्याक्ष का वध किया था। यही सौरभसर **'सरूईंसर'** के नाम से उत्तर मानस एवं **मानसर** दक्षिणमानस के नाम से प्रसिद्ध है। **आकाशलक्षणम्ः**- खण्डवर्षा के योग हैं कृष्ण एकादशी के आसपास वर्षा होने से सुभिक्ष होगा।

(पृष्ठ 171 का शेष)

के अन्नों से परिपूर्ण हो, प्रजा में सुखों की वृद्धि और सुभिक्ष हो। श्रावण में शुक्र होने से नाक, कान तथा आँखों के रोगों में वृद्धि होगी। **आकाशलक्षणम्ः**- पर्वतीय प्रदेशों में शीतलहर का प्रादुर्भाव, बर्फबारी तथा खण्डवर्ष के योग हैं।

(पृष्ठ 174 का शेष)

इस दिन निरयण शुरू हो जाएगी। इस तिथि को दान-पुण्य कम्बल तथा घी, खिचड़ी दान का विशेष महत्त्व है। इस दिन प्रयागादि तीर्थों पर स्नानादि का भी विशेष महत्त्व होता है। इस संक्रान्ति का फल चोरों तथा राजनेताओं के लिए शुभ है, व्यापारी वर्ग को मध्यम फल होगा। संक्रान्ति मङ्गलवासरीय होने से उपयोगी वर्षा की कमी, स्वच्छ जल की भी कमी हो, रोगादि और विग्रह बहुत हो। **आकाशलक्षणम्ः**- शीतलहर का प्रकोप, कहीं-कहीं बर्फवारी, समतल प्रदेशों में ओलावृष्टि तथा खण्ड वर्षा का योग है।

(पृष्ठ 175 का शेष)

पीड़ा करता है, प्रचुर वर्षा के योग भी बन सकते हैं। **आकाशलक्षणम्–** शीतलहर का प्रकोप, पर्वती प्रदेशों में बर्फवारी, समतल प्रदेशों में ओलावृष्टि तथा खण्डवर्षा के योग हैं।

(पृष्ठ 178 का शेष)

द्विगर्तवाहिनीगंगा द्विगर्तोद्भव शालिनी॥ डुग्गरस्तुतिः गंगादि सर्व तीर्थानां स्नातो यत्फलं लभेत्। तत्फलं कोटि गुणितं देविकायां निमज्जताम्। (रणवीर व्रतरत्नाकर) **चैत्र संक्रान्तिः**- 14 मार्च 2025 शुक्रवार सायं 6:49 पर श्री सूर्यनारायण मीन राशिमें प्रवेश करेंगे। यह संक्रान्ति पशु-पक्षियों के लिए सुखप्रद, वैदिक विद्वान प्रोफेसर, गणितज्ञ, शास्त्रों का अध्ययन करने वालों के लिए सुखप्रद होगी। **लोक भविष्यः**- इस पक्ष में बुध शुक्रादि का उदयास्त होने के कारण तथा 29 मार्च को शनि मीन में जाने के कारण पृथ्वी कम्पित रहे, तेज हवाएं चले, पश्चिमी देश, पाताल अमेरिका में भूकम्प हो तथा पर्वत प्रदेशों में उत्पात हो, बहुत से वृक्षों की हानि हो, राजा-प्रजा दोनों पीड़ित हो वर्षा का अभाव तथा तीव्र हवाओं से सारा संसार भ्रमित होगा। **आकाश लक्षणम्ः**- सर्दी का प्रकोप कम हो, धीरे धीरे मौसम में परिवर्तन के साथ वर्षा भी कम हो।

नवग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष 10	वृषे 3	म. 28	कं. 25	कर्क 5	मी.27	तु. 20	वृ.15	
नीचांश	तु. 10	बृश्चि3	क. 28	मी. 15	म. 5	कं.27	मे.20°	बृ.25°	

दीपावली पर्व मुहूर्त सन् 2024 ई.

करवा चौथ (कर्क चतुर्थी): कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन का त्यौहार है।

चतुर्थी का शुभारम्भ 20 अक्तूबर 2024 प्रात: 06:47 से होकर समापन 21 अक्तूबर 2024 ब्राह्म मुहूर्त 04:17 पर होगा। करवा चौथ पूजन मुहूर्त 20 अक्तूबर सांय 17:46 सांय 19:02 तक रहेगा। उपवास का समय प्रात: 06:25 से सांय 19:54 तक रहेगा। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में चन्द्रमा रात्रि 19:41 पर उदित होंगे। जम्मू में चन्द्रोदय 19:37 रात्रि में होगा।

गौवत्स द्वादशी: धनत्रयोदशी से एक दिवस पूर्व गौवत्स द्वादशी के दिन गौ माता की पूजा की जाती है। गौमाता तथा बछड़े को पूजा के पश्चात् गेहूँ तथा गेहूं से बने आहार अर्पित किये जाते है। इस पूजा को करने वाले व्यक्ति गौवत्स द्वादशी के दिन गेहूँ, दूध तथा इनसे बने किसी भी पदार्थ का सेवन नहीं करते है। द्वादशी तिथि का शुभारम्भ 28 अक्तूबर 2024 प्रात: 07:51 से होकर समापन 29 अक्तूबर प्रात: 10:32 पर होगा। प्रदोषकालीन मुहूर्त 28 अक्तूबर सांय 05:39 से रात्रि 20:13 तक मिलेगा। इस दिन नन्दिनी व्रत करने का विधान है। महाराष्ट्र में यह दीपावली का प्रथम दिन तथा दिन वास्तु बारस का है।

धनतेरस पूजा मुहूर्त : त्रयोदशी तिथि 29 अक्तूबर पूर्वान्ह 10:32 से प्रारम्भ होकर 30 अक्तूबर दोपहर 13:16 पर समाप्त होगी। यम दीपम 29 अक्तूबर का होने से धनत्रयोदशी पूजा मुहूर्त 29 अक्तूबर सांय 18:31 से रात्रि 20:13 तक रहेगा। प्रदोष काल मुहूर्त सांय 17:38 से रात्रि 20:13 तक तथा वृषभ स्थिर लग्न मुहूर्त सांय 18:32 से रात्रि 20:28 तक मिलेगा। वृषभ स्थिर लग्न में प्रदोष कालीन मुहूर्त की अवधि का समय गद्दी बिछाने तथा धनतेरस पूजा के लिये श्रेष्ठ है। इस दिन कुबेर पूजा का भी विधान है।

नरक चतुर्दशी: चतुर्दशी तिथि 30 अक्तूबर मध्यान्ह 13:16 से प्रारम्भ होकर 31 अक्तूबर मध्यान्ह 15:53 रहने से काली चौदस 30 अक्तूबर में रहेगी। अभ्यंग स्नान मुहूर्त 31 अक्तूबर प्रात: 05:20 से प्रात: 06:32 तक रहेगा। दिवस कालीन लाभ तथा अमृत चौघड़िया का समय मध्यान्ह 12:04 से मध्यान्ह 14:05 तक रहेगा। शुभ चौघड़िया सांय 16:13 से सांय 17:36 तक मिलेगा। रात्रि कालीन शुभ तथा अमृत चौघड़िया का समय ब्राह्म मुहूर्त 03:19 से 01 नवम्बर प्रात: 06:33 तक रहेगा। इस दिन घंटाकर्ण महावीर के मंत्रो के जप से विशेष लाभ प्राप्त होता है। 'ॐ घंटाकर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशक विस्फोटक भये प्राप्त रक्ष रक्ष महाबल' का जप करे।

अरिष्ट निवारण, बीमारी से छुटकारा, ऋण तथा अन्य चिंताओं से मुक्ति के लिये श्री हनुमान जी की आराधना करे। श्री हनुमत् पूजा का समय 30 अक्तूबर 2024 रात्रि 23:39 से 31 अक्तूबर मध्य रात्रि 00:31 तक रहेगा।

दीपावली : विभिन्न मतावलम्बियों की अनेकों कथाएं प्रचलित है। परन्तु इसे मनाने के विषय में सभी एक मत है। मूलत: व्यवसायियों का यह त्यौहार कार्तिक अमावस्या के दिन मनाया जाता है। इस दिन प्रात: स्नानादि से निवृत होकर देव, पितृ, पूज्यजनों का पूजन अर्चन करें। आवास को स्वच्छ, सुंदर कर सांयकाल में पुन: स्नान करें तथा शुद्ध, सुन्दर सुशोभित स्थान पर अथवा अपने कोषागार में वेदी बनाकर अथवा चौकी, पाटे पर अक्षतादि से अष्टदल कमल लिखे। उस पर लक्ष्मी जी की स्थापना करें तथा लक्ष्मी, कुबेर एवं इन्द्र का यथाविधि पूजन करें। पूजन सामग्री में मिष्टान, फल, पुष्प, सुगन्ध, दीप तथा धूप का प्रयोग करे। रात्रि के शेष भाग में सूप तथा डमरु को बजाकर अलक्ष्मी को निकाले।

दीपावली पर प्रभावशाली मंत्र: धनतेरस के दिन निम्न में से किसी एक मंत्र का यथा शक्ति जप करे:

1. 'श्रीं क्ली महालक्ष्मयै नम:' अथवा
2. 'ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालसने प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्मयै नम:' अथवा
3. 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ठं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय पूरय सुख सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा'।

संतान प्राप्ति हेतु: 'नन्द गोप गृहे जाता यशोदा गर्भ सम्भवा ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल निवासिनी' इस मंत्र को यथा शक्ति भोजपत्र, नागरवेल पान अथवा पीपल के पत्ते पर चन्दन से धनतेरस से भाई दूज तक लिखे। पश्चात लिखे गये पत्रों को किसी तीर्थ स्थान में नदी को समर्पित कर दे। अथवा तो इस मंत्र के सम्पुट से शतचण्डी यज्ञ करे।

दीपावली : **'ॐ श्री क्लीं महालक्ष्मी ममगृहे आगच्छ ह्रीं नमः'** मंत्र को अष्टगंध 12500 बार भोजपत्र पर लिखने अथवा सवालाख जप करने से धन सम्पदा की प्राप्ति होती है। सभी प्रकार के अनिष्ट-अरिष्ट दूर होते हैं।

लक्ष्मी पूजा मुहूर्तः अमावस्या तिथि का प्रारम्भ 31 अक्तूबर मध्यान्ह 15:53 से तथा समापन 01 नवम्बर सांय 18:17 पर होने से इस वर्ष प्रदोष काल सांय 17:36 से रात्रि 20:11 तक उपलब्ध रहेगा। वृषभ स्थिर लग्न का दीपावली पूजन मुहूर्त सांय 18:20 से सांय 20:15 तक रहेगा। महानिशीथ काल में दीपावली पूजन 01 नवम्बर रात्रि 23:39 से 02 नवम्बर रात्रि 00:31 तक सम्पन्न होगा। सिंह स्थिर लग्न 02 नवम्बर रात्रि 00:50 से रात्रि 03:07 तक मिलेगा।

चौघड़िया मुहूर्त में लक्ष्मी पूजन के लिये चर, लाभ तथा अमृत चौघड़िया प्रातः 06:33 से पूर्वान्ह 10:42 तक मिलेगा। शुभ चौघड़िया मध्यान्ह 12:04 से मध्यान्ह 13:27 तक तथा चर चौघड़िया सांय 16:13 से सांय 17:36 तक उपलब्ध रहेगा। यह समय बही खातों के पूजन के लिये श्रेष्ठ है।

गोवर्धन पूजा : प्रतिपदा तिथि 01 नवम्बर सांय 18:17 से 02 नवम्बर सांय 20:22 तक रहने से गोवर्धन पूजा 02 नवम्बर में होगी। पूजा मुहूर्त शनिवार प्रातः 06:34 से प्रातः 08:46 तक रहेगा।

भाई दूजः कार्तिक शुक्ल द्वितीया श्यम द्वितीयाश तथा कलमदान पूजा के नाम से भी जानी जाती है। लोकाचार में भाईदूज नाम प्रचलित है। व्रती को स्नानादि से निवृत होकर सर्वप्रथम गणेश जी का पूजन करना चाहिये। तत्पश्चात् यम, चित्रगुप्त, यमुना तथा यमदूतो का पूजन करे। छोटी बहिन के घर जाकर बहिन द्वारा की गई पूजा को ग्रहण करे। यम द्वितीया के दिन यमुना किनारे बहिन के हाथ का भोजन करने से भाई की आयुवृद्धि होती है। भाई को तिलक करते समय इस प्रकार कहें:

मार्केण्डय महाभाग! सप्तकल्पान्त जीविनः।
चिरंजीवी यथा त्वं भो! तथा मे भ्रातरं कुरु॥

यम, चित्रगुप्त, कलम तथा दवात की पूजन करते समय निम्न प्रकार उच्चारण करे:

मसिभाजन संयुक्तं ध्यायहेश्हं च महाबलम्।
लेखनीपट्टिकाहस्तं चित्रगुप्तं नमाम्यहम्॥

भाई दूज तिलक मुहूर्त : मध्यान्ह 13:10 से अपरान्ह 15:22 तक रहेगा।

त्रयोदश दिवसीय पक्ष

22 जून से प्रारम्भ आषाढ़ कृष्ण पक्ष 13 दिवसीय है। मुहूर्त ग्रंथो में इसे घम्रपक्षश कहा गया है। मुहूर्त चिन्तामणि के अध्याय 1 श्लोक 48 की टीका करते हुए पीयूष धारा टीकाकार ने कहा है कि **केचिद्विश्वघस्त्रेऽपि पक्षे त्रयोदशदिने पक्षे यस्मिन् पक्षे तिथिद्वय ह्रासः स त्रयोदशदिनात्मकः पक्षोऽतिनिन्द्यः। तदुक्तं ज्योर्तिनिबन्धे 'पक्षस्य मध्ये द्वितिथि पतेतां तदा भवेद्रौरवकालयोगः। पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टं इत्याहुराचार्यावराः समस्ताः॥'** तथा **'त्रयोदशदिने पक्षे नूनं संहरते जगत्। अपि वर्ष सहस्त्रेण काल योगः प्रकीर्तितः' इति।** व्यवहारचण्डेश्वरे- **'त्रयोदशादिने पक्षे विवाहादि न कारयेत्। गर्गादिमुनयः प्राहुः कृते मृत्युस्तदा भवेत्॥** ज्योर्तिनिबन्धे- **'उपनयनं परिणयनं वेश्मसारंभादिकर्माणि। यात्रा द्विक्षयपक्षे कुर्यान्न जिजीविषुः पुरुषः॥** इति।

अर्थात सहस्त्रों वर्षों में कभी कभार, किसी एक पक्ष में दो तिथियों का क्षय हो जाने से वह पक्ष त्रयोदश दिनों का पक्ष हो जाता है। यह पक्ष विश्व के लिये संहारात्मक रहता है। इस पक्ष में विवाह आदि करने से पति-पत्नि की, उपनयन करने पर ब्रह्मचारी की, मुण्डन करने पर बालक की तथा गृह निर्माण करने पर निर्माता की मृत्यु निश्चित है। जीवित रहने की इच्छा करने वाले मनुष्य इस पक्ष में यात्रा आदि न करें। वृहज्जोतिषसार का यही वचन है। **'पक्षमध्ये क्षयः स्यातां यस्मिन्मासे तिथिर्द्वयो। घम्रो भवेत्पक्षः लोकानां भयकारकः॥'** व्यवहार चण्डेश्वर में मुनि गर्ग के मत से कहा है कि **'त्रयोदशादिने पक्षे विवाहादि न कारयेत्। गर्गादिमुनयः प्राहुः कृते मृत्युस्तदा भवेत्॥'** इस पक्ष में विवहादि कार्य करने पर मृत्यु सम्भावित रहती है। ज्योर्तिनिबन्ध में भी यात्रा इत्यादि का निषेध किया गया है। प्रायः सभी टीकाकारों ने इस पक्ष में विवाहादि शुभकार्यों का निषेध कहा गया है। शुभ कार्यों से तात्पर्य उन सभी कार्यो से है जिनका निषेध गुरू के अस्त, वकी आदि होने पर होता है। नवीन ज्योतिषीयों ने इसमें अतिवृष्टि, अनावृष्टि, राजसत्ता का परिवर्तन होना, विपल्व तथा वर्गभंग आदि का समावेश कर दिया है। वस्तुतः

यह सभी तथा कथित उपद्रव सामान्य पक्षों में भी होते हैं।

त्रयोदशी पक्ष में शुभ कार्यो के निषेध का आधार, महाभारत के सभापर्व अ. 79 तथा भीष्म पर्व में वर्णित है। महाभारत युद्ध के आरम्भ में एक ग्रहण के बाद दूसरे ग्रहण का 13 दिन पर ही हो जाना महा अनिष्ट होने के लक्षण स्वरूप लिखा है। **'अलक्ष्यः प्रभया हीनः पौर्णमासीं च कार्तिकीं। चन्द्रोभूदग्निवर्णश्च पदमवर्णे नभस्तले।** (भीष्मपर्व अ. 2)**, चतुर्दशी पंचदशीं भूतपूर्वा तु षोडशीं। इमां तु नाभिजानेऽहममावास्यां त्रयोदशीं॥ चंद्रसूर्यावुभौ ग्रस्तावेकमासीं त्रयोदशीं॥'** (भीष्मपर्व अ. 3), अर्थात कार्तिक की पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा प्रकाशहीन होकर अदृश्य हो गया, फिर कमल के समान नीले आकाश में अग्नि जैसा रंग हो गया। पहले समय में चौदहवें, पन्द्रहवें अथवा सोलहवें दिन अमावस्या होती थी परन्तु तेरहवें दिन अमावस्या का होना मुझे कदापि ज्ञात नहीं है। पर इस बार तो एक मास के भीतर ही (पूर्णिमा पर) चन्द्रमा का और त्रयोदशी को सूर्य का ग्रहण हुआ है। 'भारतीय ज्योतिष का इतिहास' पृष्ठ 75 पर गोरख प्रसाद का मत है कि श्महाभारत काल में अमावस्या अथवा पूर्णिमा को पर्व कहते थे। अनहोनी सी बात का होना अशुभ समझा जाता था। इसलिये जब पांडव वनवास जाने लगे तब ऐसा लिखा है कि अपर्व पर ही सूर्य ग्रहण हुआ। **'राहु ग्रस्तादित्यमपर्वणि विशंपते'**॥19॥ (सभापर्व 79) अर्थात हे राजन! (उस समय) बिना पर्व (अमावस्या) के ही राहु ने सूर्य का ग्रहण कर दिया।

इन उदाहरणों में मूलतः ग्रहणों की चर्चा करते हुए 13 दिनों के पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। स्पष्ट है कि उस समय भी ग्रहणो के विषय में ज्ञात था परन्तु दो ग्रहणों के मध्य 13 दिनों का अन्तर कदापि नही हो सकता। वास्तव में उस समय 13 दिनों के अन्दर ही दूसरा ग्रहण लगा था या किसी लेखक या टीकाकार ने अशुभ लक्षणों में इसे भी दिखा देना उत्तम समझा, कहा नहीं जा सकता। वस्तुतः कभी कभी पक्ष 14 दिनों से कम का भी होता है और तब उसे 13 दिनों का गिना जा सकता है।

'भारतीय ज्योतिष' में शंकर बाल कृष्ण दीक्षित विषय को और स्पष्ट करते हुए कहते है कि– "सूर्य सिद्धान्तादि गणित ग्रन्थों द्वारा चन्द्रमा तथा सूर्य की स्पष्ट स्थिति का गणित करके तिथि लाने से 13 दिन का पक्ष आता है। परन्तु ज्योतिषोक्त मध्यम मान अथवा अन्य किसी भी सूक्ष्म मध्यम मान से पक्ष में 13 दिन कभी नहीं आते। ज्योतिषानुसार अर्धचान्द्रमास (पक्ष) का मान 14 दिन 45 घटी 29 1/3 पल और सूर्य सिद्धान्तादि गणित ग्रन्थ तथा यूरोपियन सूक्षम मानो द्वारा पक्ष का मध्यम मान 14 दिन 45 घटी 55 3/50 पल आता है। मध्यम मान से पक्ष में दिन 14 से कम कभी नही आते। इसलिए 13 दिन का पक्ष होना असम्भव है पर स्पष्टमान से हो सकता है। उदाहरणार्थ शके 1793 फाल्गुन कृष्ण पक्ष 13 दिनो का था। शके 1800 का ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष भी 13 दिन का था। इन दोनों में ग्रहलाघवीय पंचागानुसार और इंगलिश नाटिकल आलमनाक द्वारा बनाये गये सूक्षम केरोपन्तीय पंचागानुसार भी पक्ष 14 दिन से कुछ घटी कम था। ऐसा प्रसंग बहुत कम आता है और इस स्थिति में भी पक्ष सर्वदा 13 दिन का ही नही हुआ करता है। उदाहरणार्थ मान लीजिये किसी मेष मास में प्रथम दिन सूर्योदय के 4 घटी बाद अमावस्या या पूर्णिमा समाप्त हुई और स्पष्ट तिथि मान से अर्धमास का मान 13 दिन 55 घटी है तो उस मास के 14वें दिन सूर्योदय से 59 घटी पर अमावस्या या पूर्णिमा समाप्त होगी। प्रथम दिन सूर्योदय के बाद पर्वान्त होने के कारण उस दिन की गणना पिछले पक्ष में होगी और वर्तमान पक्ष में केवल 13 दिन रह जायेंगे। इसी उदाहरण में मेष मास के प्रथम दिन सूर्योदय के 10 घटी बाद पर्वान्त मान लेने से अग्रिम पर्वान्त मेष के 15वे दिन सूयोदय के 5 घटी बाद होगा अर्थात पक्ष में 13 के बदले 14 दिन हो जायेगे। इससे ज्ञात होता है कि स्पष्टमान से पक्ष में 13 दिन हो सकते है पर मध्यममान से कभी भी नही होंगे। इससे सिद्ध हुआ कि महाभारत काल में हमारे देश के लोग स्पष्ट तिथि का गणित जानते थे अर्थात उन्हें सूर्य और चन्द्रमा की स्पष्ट गतिस्थिति का ज्ञान था। यह बात बड़े महत्व की है।

महाभारतोक्त 13 दिन का पक्ष स्पष्ट या मध्यम तिथि द्वारा न लाया गया हो बल्कि केवल चन्द्रमा की प्रत्यक्ष स्थिति देखकर दिन गिनकर लिख दिये गये हो,

यह भी असम्भव है क्योंकि अमावस्या को चन्द्रमा दिखाई नही पड़ता और 13 दिन का पक्ष उसी स्थिति में होता है जब कि तिथियों की घटिया उपर्युक्त उदाहरण सरीखी हो। परन्तु पूर्णिमा और अमावस्या के पास की चन्द्र स्थिति का थोड़ा विचार करने से अथवा उसका प्रत्यक्ष अवलोकन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि बिना गणित किये चन्द्रमा की प्रत्यक्ष स्थिति के अवलोकन मात्र से 13 दिन के पक्ष का ज्ञान होना असम्भव है। इस विषय को यहां थोड़े में विवेचन करना कठिन है।

उपर्युक्त वचनों से ज्ञात होता है कि कार्तिकी पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण और उससे आगे वाली अमावस्या में सूर्य ग्रहण हुआ था तथा यही पक्ष 13 दिनों का था। शुक्ल पक्ष 13 दिन का हो तो उसके आरम्भ में सूर्य ग्रहण तथा अन्त में चन्द्रग्रहण हो सकता है। यह बात शके 1817 के निरयण वैशाख शुक्लपक्ष की तिथियों का अवलोकन करने से समझ में आ जाती है। परन्तु कृष्ण पक्ष 13 दिनों का होने पर उसके प्रारम्भ में चन्द्रग्रहण तथा समाप्ति में सूर्यग्रहण होना असम्भव है। पचांग में कोई 13 दिन का कृष्ण पक्ष निकाल कर देख लीजिये, इसकी स्पष्ट प्रतीती हो जायेगी। यदि ऐसा मान भी लें तो दोनों पर्वान्तों का अन्तर अधिकाधिक लगभग 13 दिन 30 घटी का होगा। पर पक्ष का स्पष्ट मान 13 दिन 50 घटी से कम कभी होता ही नहीं। अत: यह स्थिति सर्वथा असम्भव है। आधुनिक स्पष्ट मान से 13 दिन का ऐसा कृष्ण पक्ष कभी नहीं आता जिसके आरम्भ में चन्द्रग्रहण और अन्त में सूर्य ग्रहण लगता हो और मध्यम मान से तो 13 दिन का पक्ष ही नहीं होता परन्तु महाभारत में इसका वर्णन आया है अत: मानना पड़ता है कि पाण्डवों के समय चन्द्रमा तथा सूर्य की स्पष्ट गति का गणित था तो अवश्य वह आधुनिक पद्धति से भिन्न था। ध्यातव्य है कि न तो सूर्य और न ही चन्द्रमा की गति एक समान रहती है, अत: पक्षों की लम्बाई बराबर नहीं होती। यदि 14 दिन से कुछ कम का पर्व हुआ तो भारतीय गणना के अनुसार दो ग्रहण 13 दिन पर लग सकते है। यह किस प्रकार होना सम्भव होगा? कल्पित उदाहरण से समझते है। मान लीजिये 01 जनवरी सूर्योदय से कुछ मिनिट बाद सूर्यग्रहण लगा तो यही कहा जायेगा कि ग्रहण 01 जनवरी के दिन हुआ। इसके 13 दिनों बाद 14 जनवरी होगी। उस 14 दिनांक को यदि रात्रि समाप्त होने के दस-पांच मिनिट पहले चन्द्रग्रहण प्रारम्भ हुआ तो लोकाचार में यही कहा जायेगा कि ग्रहण 14 जनवरी में, 13 दिनों के अन्तर पर लगा। वस्तुत: पाश्चात्य पद्धति से, दिनांक अर्धरात्रि में बदलने से यह 15 तारीख होगी और परन्तु भारतीय पद्धति में दिनांक सूर्योदय के क्षण से बदलता अत: सामान्यतया इसे 14 तारीख कह दिया जायेगा। तथापि सम्भव होना एक बात है तथा घटित होना दूसरी बात। 'हमारा ज्योतिष तथा धर्म शास्त्र: पृष्ठ 54' पर आचार्य हरिहर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान) कहते है कि 13 दिन 50 घटी का पक्ष - क्षय पक्ष नहीं होता, परन्तु 13 घटी 49 पल का पक्ष नेष्ट है। परन्तु स्पष्टमान से तो कोई भी पक्ष 13 दिन 50 घटी से कम होता ही नहीं अत: 13 दिन का पक्ष होना असम्भव है।

प्रचलित पंचाग पद्धति से त्रयोदश दिनों का पक्ष सहस्त्र वर्षों में ही आता हो यह कथन भी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतीत होता है। सन 2021 के सितम्बर मास में 08 सितम्बर से प्रारम्भ भाद्रपद शुक्ल पक्ष 13 दिनों का था। इस पक्ष के अरिष्ट परिणामों को रेखांकित करते हुए कहा गया कि अफगानिस्तान में सिविलवार होगी। परन्तु अफगानिस्तान में तो यह पक्ष 13 दिनों का था ही नही। वहां मात्र त्रयोदशी का क्षय होने से पक्ष 14 दिवसीय था।

इससे पहले सन 2010 के मई मास में 13 दिवसीय पक्ष था। उससे भी पहले सन 1959 का भाद्रपद शुक्ल पक्ष 13 दिनों का था। वर्ष 2024 का आषाढ़ कृष्ण पक्ष भले ही भारत की राजधानी में 13 दिवसीय हो परन्तु भारत के ही आसाम राज्य में यह पक्ष द्वितीया का क्षय हो जाने से 14 दिनों का है। यूनाइटड स्टेट में यही पक्ष, मात्र सप्तमी का क्षय होने से वहां भी 14 दिनों का है।

निष्कर्ष: किसी भी पक्ष में दो तिथियों के घटने मात्र से पक्ष को त्रयोदश दिवसीय मानकर वैश्विक अरिष्टों की कल्पना कर लेना उचित नही है। किसी एक स्थान पर पक्ष में दो तिथियों का क्षय हुआ हो सकता है परन्तु उसी पक्ष में अन्य किसी स्थान अथवा देश में वही पक्ष 14 दिनो का हो सकता है।

अप्रैल सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रात: घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख/वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं.मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ चं	१२।३९।२२	११।१७।३३।२९	८।०३।३४।१४	१०।१२।४८।५९	०।०२।५८।२३	०।२३।०९।३२	११।००।३९।२१	१०।१९।२४।१७	११।२२।५१।५५	०।२६।३५।२८	११।०३।४२।४४	९।०७।४०।१०
२ मं	१२।४३।१९	११।१८।३२।४१	८।१६।५१।२२	१०।१३।३५।४१	०व०३।०१।२६	०।२३।२२।२५	११।०१।५३।३१	१०।१९।३१।०२	११।२२।४८।४४	०।२६।३८।२१	११।०३।४४।५७	९।०७।४१।०२
३ बु	१२।४७।१६	११।१९।३१।५१	९।००।३०।४४	१०।१४।२२।२२	०व०२।५७।२५	०।२३।३५।२२	११।०३।०७।४०	१०।१९।३७।४४	११।२२।४५।३३	०।२६।४१।१६	११।०३।४७।१०	९।०७।४१।५३
४ गु	१२।५१।१२	११।२०।३१।००	९।१४।३३।१०	१०।१५।०९।०४	०व०२।४६।३७	०।२३।४८।२२	११।०४।२२।४९	१०।१९।४४।२४	११।२२।४२।२२	०।२६।४४।१२	११।०३।४९।२२	९।०७।४२।४२
५ शु	१२।५५।०९	११।२१।३०।०६	९।२८।५७।४७	१०।१५।५५।४५	०व०२।२९।२४	०।२४।०१।२६	११।०५।३५।५८	१०।१९।५१।०२	११।२२।३९।१२	०।२६।४७।१०	११।०३।५१।३४	९।०७।४३।३०
६ श	१२।५९।०५	११।२२।२९।११	१०।१३।४१।३३	१०।१६।४२।२५	०व०२।०६।१५	०।२४।१४।३३	११।०६।५०।०७	१०।१९।५७।३८	११।२२।३६।०१	०।२६।५०।१०	११।०३।५३।४५	९।०७।४४।१६
७ र	१३।०३।०२	११।२३।२८।१४	१०।२८।३९।०१	१०।१७।२९।०५	०व०१।३७।४२	०।२४।२७।४३	११।०८।०४।१५	१०।२०।०४।११	११।२२।३२।५०	०।२६।५३।११	११।०३।५५।५६	९।०७।४५।००
८ चं	१३।०६।५८	११।२४।२७।१६	११।१३।४२।४५	१०।१८।१५।४५	०व०१।०४।२४	०।२४।४०।५६	११।०९।१८।२३	१०।२०।१०।४१	११।२२।२९।४०	०।२६।५६।१४	११।०३।५८।०६	९।०७।४५।४३
९ मं	१३।१०।५५	११।२५।२६।१५	११।२८।४४।०८	१०।१९।०२।२४	०व००।२७।०४	०।२४।५४।१२	११।१०।३२।३०	१०।२०।१७।०९	११।२२।२६।२९	०।२६।५९।१८	११।०४।००।१५	९।०७।४६।२४
१० बु	१३।१४।५१	११।२६।२५।१२	०।१३।३४।३३	१०।१९।४९।०२	११व२९।४६।२८	०।२५।०७।३१	११।११।४६।३६	१०।२०।२३।३५	११।२२।२३।१८	०।२७।०२।२३	११।०४।०२।२४	९।०७।४७।०३
११ गु	१३।१८।४८	११।२७।२४।०७	०।२८।०६।३८	१०।२०।३५।४०	११व२९।०३।२७	०।२५।२०।५३	११।१३।००।४३	१०।२०।२९।५८	११।२२।२०।०७	०।२७।०५।३०	११।०४।०४।३२	९।०७।४७।४१
१२ शु	१३।२२।४४	११।२८।२३।००	१।१२।१५।०९	१०।२१।२२।१७	११व२८।१८।५२	०।२५।३४।१७	११।१४।१४।४८	१०।२०।३६।१७	११।२२।१६।५७	०।२७।०८।३९	११।०४।०६।३९	९।०७।४८।१७
१३ श	१३।२६।४१	११।२९।२२।५१	१।२५।५७।२७	१०।२२।०८।५३	११व२७।३३।३५	०।२५।४७।४४	११।१५।२८।५३	१०।२०।४२।३५	११।२२।१३।४६	०।२७।११।४८	११।०४।०८।४५	९।०७।४८।५१
१४ र	१३।३०।३८	०।००।२०।३९	२।०९।१३।१९	१०।२२।५५।२८	११व२६।४८।२९	०।२६।०१।१३	११।१६।४२।५७	१०।२०।४८।४९	११।२२।१०।३५	०।२७।१४।५९	११।०४।१०।५१	९।०७।४९।२४
१५ चं	१३।३४।३४	०।०१।१९।२५	२।२२।०४।३४	१०।२३।४२।०२	११व२६।०४।२२	०।२६।१४।४५	११।१७।५७।००	१०।२०।५५।००	११।२२।०७।२४	०।२७।१८।११	११।०४।१२।५६	९।०७।४९।५५
१६ मं	१३।३८।३१	०।०२।१८।०९	३।०४।३४।२९	१०।२४।२८।३५	११व२५।२२।०२	०।२६।२८।२०	११।१९।११।०३	१०।२१।०१।०८	११।२२।०४।१३	०।२७।२१।२४	११।०४।१५।००	९।०७।५०।२४
१७ बु	१३।४२।२७	०।०३।१६।५१	३।१६।४७।१३	१०।२५।१५।०७	११व२४।४२।१०	०।२६।४१।५६	११।२०।२५।०५	१०।२१।०७।१३	११।२२।०१।०२	०।२७।२४।३८	११।०४।१७।०३	९।०७।५०।५२
१८ गु	१३।४६।२४	०।०४।१५।३१	३।२८।४७।१७	१०।२६।०१।३७	११व२४।०५।२३	०।२६।५५।३४	११।२१।३९।०७	१०।२१।१३।१५	११।२०।५७।५२	०।२७।२७।५३	११।०४।१९।०५	९।०७।५१।१७
१९ शु	१३।५०।२०	०।०५।१४।०८	४।१०।३९।१४	१०।२६।४८।०७	११व२३।३२।१४	०।२७।०९।१५	११।२२।५३।०८	१०।२१।१९।१४	११।२०।५४।४१	०।२७।३१।१०	११।०४।२१।०७	९।०७।५१।४२
२० श	१३।५४।१७	०।०६।१२।४३	४।२२।२७।२४	१०।२७।३४।३६	११व२३।०३।०८	०।२७।२२।५८	११।२४।०७।०८	१०।२१।२५।१०	११।२०।५१।३०	०।२७।३४।२७	११।०४।२३।०७	९।०७।५२।०४
२१ र	१३।५८।१३	०।०७।११।१६	५।०४।१५।३९	१०।२८।२१।०४	११व२२।३८।२७	०।२७।३६।४२	११।२५।२२।०८	१०।२१।३१।०२	११।२०।४८।२०	०।२७।३७।४५	११।०४।२५।०७	९।०७।५२।२५
२२ चं	१४।०२।१०	०।०८।०९।४७	५।१६।०७।२२	१०।२९।०७।३०	११व२२।१८।२६	०।२७।५०।२९	११।२६।३५।०७	१०।२१।३६।५१	११।२०।४५।०९	०।२७।४१।०४	११।०४।२७।०५	९।०७।५२।४४
२३ मं	१४।०६।०७	०।०९।०८।१६	५।२८।०५।२४	१०।२९।५३।५६	११व२२।०३।१७	०।२८।०४।१७	११।२७।४९।०६	१०।२१।४२।३६	११।२०।४१।५८	०।२७।४४।२४	११।०४।२९।०३	९।०७।५३।०१
२४ बु	१४।१०।०३	०।१०।०६।४४	६।१०।१२।०१	११।००।४०।२०	११व२१।५३।०४	०।२८।१८।०६	११।२९।०३।०४	१०।२१।४८।१९	११।२०।३८।४८	०।२७।४७।४५	११।०४।३०।५९	९।०७।५३।१७
२५ गु	१४।१४।००	०।११।०५।०९	६।२२।२८।५७	११।०१।२६।४३	११व२१।४७।५३	०।२८।३१।५८	०।००।१७।०१	१०।२१।५३।५७	११।२०।३५।३७	०।२७।५१।०७	११।०४।३२।५४	९।०७।५३।३१
२६ शु	१४।१७।५६	०।१२।०३।३२	७।०४।५७।३४	११।०२।१३।०५	११।२१।४७।४१	०।२८।४५।५१	०।०१।३०।५८	१०।२१।५९।३२	११।२०।३२।२६	०।२७।५४।२९	११।०४।३४।४९	९।०७।५३।४३
२७ श	१४।२१।५३	०।१३।०१।५४	७।१७।३८।५२	११।०२।५९।२५	११।२१।५२।२७	०।२८।५९।४६	०।०२।४४।५५	१०।२२।०५।०४	११।२०।२९।१५	०।२७।५७।५२	११।०४।३६।४२	९।०७।५३।५४
२८ र	१४।२५।४९	०।१४।००।१४	८।००।३३।४४	११।०३।४५।४४	११।२२।०२।०५	०।२९।१३।४१	०।०३।५८।५२	१०।२२।१०।३१	११।२०।२६।०४	०।२८।०१।१६	११।०४।३८।३४	९।०७।५४।०२
२९ चं	१४।२९।४६	०।१४।५८।३२	८।१३।४२।५२	११।०४।३२।०२	११।२२।१६।२८	०।२९।२७।३९	०।०५।१२।४८	१०।२२।१५।५५	११।२०।२२।५३	०।२८।०४।४०	११।०४।४०।२५	९।०७।५४।१०
३० मं	१४।३३।४३	०।१५।५६।४९	८।२७।०६।५५	११।०५।१८।१९	११।२२।३५।२९	०।२९।४१।३७	०।०६।२६।४३	१०।२२।२१।२४	११।२०।१९।४३	०।२८।०८।०५	११।०४।४२।१४	९।०७।५४।१५

मई सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रात: घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि. सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ बु	१४।३७।३९	०।१६।५५।०५	९।१०।४६।२४	११।०६।०४।३४	११।२२।५८।५९	०।२९।५५।३७	०।०७।४०।३९	१०।२२।२६।३२	११।२०।१६।३२	०।२८।११।३१	११।०४।४४।०३	९।०७।५४।१९
२ गु	१४।४१।३६	०।१७।५३।१९	९।२४।४१।२९	११।०६।५०।४७	११।२३।२६।४९	१।००।०९।३८	०।०८।५४।३४	१०।२२।३१।४४	११।२०।१३।२१	०।२८।१४।५७	११।०४।४५।५०	९।०७।५४।२१
३ शु	१४।४५।३२	०।१८।५१।३१	१०।०८।५१।३९	११।०७।३७।००	११।२३।५८।५०	१।००।२३।४१	०।१०।०८।२८	१०।२२।३६।५३	११।२०।१०।१०	०।२८।१८।२३	११।०४।४७।३६	९व०७।५४।२१
४ श	१४।४९।२९	०।१९।४९।४२	१०।२३।१५।२५	११।०८।२३।१०	११।२४।३४।५१	१।००।३७।४४	०।११।२२।२३	१०।२२।४१।५७	११।२०।०६।५९	०।२८।२१।५०	११।०४।४९।२१	९व०७।५४।२०
५ र	१४।५३।२५	०।२०।४७।५२	११।०७।४९।५८	११।०९।०९।१९	११।२५।१४।४४	१।००।५१।४८	०।१२।३६।१७	१०।२२।४६।५८	११।२०।०३।४९	०।२८।२५।१८	११।०४।५१।०४	९व०७।५४।१७
६ चं	१४।५७।२२	०।२१।४६।००	११।२२।३०।५८	११।०९।५५।२६	११।२५।५८।१९	१।०१।०५।५३	०।१३।५०।११	१०।२२।५१।५४	११।२०।००।३८	०।२८।२८।४६	११।०४।५२।४६	९व०७।५४।१२
७ मं	१५।०१।१८	०।२२।४४।०७	०।०७।१२।४०	११।१०।४१।३१	११।२६।४५।२८	१।०१।१९।५९	०।१५।०४।०४	१०।२२।५६।४६	११।१९।५७।२७	०।२८।३२।१४	११।०४।५४।२७	९व०७।५४।०५
८ बु	१५।०५।१५	०।२३।४२।१२	०।२१।४८।३२	११।११।२७।३४	११।२७।३६।०२	१।०१।३४।०६	०।१६।१७।५७	१०।२३।०१।३३	११।१९।५४।१७	०।२८।३५।४२	११।०४।५६।०६	९व०७।५३।५७
९ गु	१५।०९।११	०।२४।४०।१५	१।०६।११।५४	११।१२।१३।३५	११।२८।२९।५३	१।०१।४८।१३	०।१७।३१।५०	१०।२३।०६।१७	११।१९।५१।०६	०।२८।३९।११	११।०४।५७।४४	९व०७।५३।४७
१० शु	१५।१३।०८	०।२५।३८।१७	१।२०।१७।०३	११।१२।५९।३४	११।२९।२६।५४	१।०२।०२।२१	०।१८।४५।४२	१०।२३।१०।५५	११।१९।४७।५५	०।२८।४२।४०	११।०४।५९।२१	९व०७।५३।३६
११ श	१५।१७।०५	०।२६।३६।१७	२।०३।५९।५६	११।१३।४५।३१	०।००।२६।५९	१।०२।१६।२९	०।१९।५९।३३	१०।२३।१५।३०	११।१९।४४।४४	०।२८।४६।०९	११।०५।००।५६	९व०७।५३।२२
१२ र	१५।२१।०१	०।२७।३४।१५	२।१७।१८।३६	११।१४।३१।२५	०।०१।३०।००	१।०२।३०।३८	०।२१।१३।२४	१०।२३।२०।००	११।१९।४१।३३	०।२८।४९।४०	११।०५।०२।३०	९व०७।५३।०८
१३ चं	१५।२४।५८	०।२८।३२।१२	३।००।१३।१८	११।१५।१७।१७	०।०२।३५।५२	१।०२।४४।४७	०।२२।२७।१५	१०।२३।२४।२५	११।१९।३८।२२	०।२८।५३।१३	११।०५।०४।०२	९व०७।५२।५१
१४ मं	१५।२८।५४	०।२९।३०।०७	३।१२।४६।१०	११।१६।०३।०७	०।०३।४४।३१	१।०२।५८।५६	०।२३।४१।०५	१०।२३।२८।४६	११।१९।३५।११	०।२८।५६।२७	११।०५।०५।३३	९व०७।५२।३३
१५ बु	१५।३२।५१	१।००।२८।००	३।२५।००।४५	११।१६।४८।५५	०।०४।५५।५१	१।०३।१३।०५	०।२४।५४।५४	१०।२३।३३।०२	११।१९।३२।०१	०।२९।००।००	११।०५।०७।०२	९व०७।५२।१३
१६ गु	१५।३६।४७	१।०१।२५।५१	४।०७।०१।३५	११।१७।३४।४०	०।०६।०९।४९	१।०३।२७।१५	०।२६।०८।४३	१०।२३।३७।१३	११।१९।२८।५०	०।२९।०३।३०	११।०५।०८।२९	९व०७।५१।५२
१७ शु	१५।४०।४४	१।०२।२३।४०	४।१८।५३।३७	११।१८।२०।२३	०।०७।२६।२०	१।०३।४१।२५	०।२७।२२।३१	१०।२३।४१।२०	११।१९।२५।३९	०।२९।०७।००	११।०५।०९।५५	९व०७।५१।२९
१८ श	१५।४४।४१	१।०३।२१।२८	५।००।४१।५९	११।१९।०६।०३	०।०८।४५।२२	१।०३।५५।३४	०।२८।३६।१९	१०।२३।४५।२२	११।१९।२२।२८	०।२९।१०।२९	११।०५।११।२०	९व०७।५१।०४
१९ र	१५।४८।३७	१।०४।१९।१४	५।१२।३१।३७	११।१९।५१।४१	०।१०।०६।५१	१।०४।०९।४२	०।२९।५०।०७	१०।२३।४९।१९	११।१९।१९।१८	०।२९।१३।५७	११।०५।१२।४३	९व०७।५०।३८
२० चं	१५।५२।३४	१।०५।१६।५९	५।२४।२६।५९	११।२०।३७।१७	०।११।३०।४७	१।०४।२३।५१	१।०१।०३।५४	१०।२३।५३।११	११।१९।१६।०७	०।२९।१७।२६	११।०५।१४।०४	९व०७।५०।१०
२१ मं	१५।५६।३०	१।०६।१४।४२	६।०६।३१।५५	११।२१।२२।५०	०।१२।५७।०६	१।०४।३८।००	१।०२।१७।४०	१०।२३।५६।५८	११।१९।१२।५६	०।२९।२०।५४	११।०५।१५।२४	९व०७।४९।४१
२२ बु	१६।००।२७	१।०७।१२।२४	६।१८।४९।२४	११।२२।०८।२०	०।१४।२५।४८	१।०४।५२।०९	१।०३।३१।२७	१०।२४।००।४०	११।१९।०९।४६	०।२९।२४।२२	११।०५।१६।४२	९व०७।४९।१०
२३ गु	१६।०४।२३	१।०८।१०।०४	७।०१।२१।२५	११।२२।५३।४८	०।१५।५६।५०	१।०५।०६।१७	१।०४।४५।१२	१०।२४।०४।१८	११।१९।०६।३५	०।२९।२७।४९	११।०५।१७।५८	९व०७।४८।३८
२४ शु	१६।०८।२०	१।०९।०७।४३	७।१४।०८।५५	११।२३।३९।१३	०।१७।३०।१३	१।०५।२०।२५	१।०५।५८।५८	१०।२४।०७।५०	११।१९।०३।२४	०।२९।३१।१६	११।०५।१९।१३	९व०७।४८।०४
२५ श	१६।१२।१६	१।१०।०५।२०	७।२७।११।४७	११।२४।२४।३६	०।१९।०५।५६	१।०५।३४।३२	१।०७।१२।४३	१०।२४।११।१७	११।१९।००।१३	०।२९।३४।४२	११।०५।२०।२६	९व०७।४७।२९
२६ र	१६।१६।१३	१।११।०२।५७	८।१०।२९।०३	११।२५।०९।५६	०।२०।४३।५८	१।०५।४८।३९	१।०८।२६।२९	१०।२४।१४।३९	११।१८।५७।०२	०।२९।३८।०८	११।०५।२१।३७	९व०७।४६।५२
२७ चं	१६।२०।१०	१।१२।००।३२	८।२३।५९।११	११।२५।५५।१४	०।२२।२४।१९	१।०६।०२।४५	१।०९।४०।१४	१०।२४।१७।५६	११।१८।५३।५१	०।२९।४१।३४	११।०५।२२।४७	९व०७।४६।१३
२८ मं	१६।२४।०६	१।१२।५८।०७	९।०७।४०।२२	११।२६।४०।२९	०।२४।०६।५९	१।०६।१६।५१	१।१०।५३।५९	१०।२४।२१।०७	११।१८।५०।४०	०।२९।४४।५९	११।०५।२३।५५	९व०७।४५।३४
२९ बु	१६।२८।०३	१।१३।५५।४०	९।२१।३०।५२	११।२७।२५।४१	०।२५।५१।५७	१।०६।३०।५५	१।१२।०७।४३	१०।२४।२४।१४	११।१८।४७।२९	०।२९।४८।२३	११।०५।२५।०१	९व०७।४४।५२
३० गु	१६।३१।५९	१।१४।५३।१३	१०।०५।२९।१४	११।२८।१०।५१	०।२७।३९।१३	१।०६।४४।५९	१।१३।२१।२८	१०।२४।२७।१५	११।१८।४४।१९	०।२९।५१।४७	११।०५।२६।०६	९व०७।४४।१०
३१ शु	१६।३५।५६	१।१५।५०।४५	१०।१९।३४।१७	११।२८।५५।५८	०।२९।२८।४६	१।०६।५९।०३	१।१४।३५।१३	१०।२४।३०।१०	११।१८।४१।०८	०।२९।५५।११	११।०५।२७।०८	९व०७।४३।२६

जून सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रात: घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि. सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ श	१६।३९।५२	१।१६।४८।१६	११।०३।४४।५६	११।२९।४१।०१	१।०१।२०।३५	१।०७।१३।०५	१।१५।४८।५७	१०।२४।३३।०१	११।१८।३७।५७	०।२९।५८।३३	११।०५।२८।०९	९व०७।४२।४०
२ र	१६।४३।४९	१।१७।४५।४६	११।१७।५९।४७	०।००।२६।०२	१।०३।१४।३८	१।०७।२७।०६	१।१७।०२।४२	१०।२४।३५।४५	११।१८।३४।४६	१।००।०१।५५	११।०५।२९।०८	९व०७।४१।५३
३ चं	१६।४७।४५	१।१८।४३।१६	०।०२।१६।५१	०।०१।११।००	१।०५।१०।५३	१।०७।४१।०७	१।१८।१६।२६	१०।२४।३८।२५	११।१८।३१।३६	१।००।०५।१६	११।०५।३०।०६	९व०७।४१।०५
४ मं	१६।५१।४२	१।१९।४०।४५	०।१६।३३।१२	०।०१।५५।५५	१।०७।०९।१७	१।०७।५५।०६	१।१९।३०।१२	१०।२४।४०।५९	११।१८।२८।२५	१।००।०८।३६	११।०५।३१।०१	९व०७।४०।१६
५ बु	१६।५५।३९	१।२०।३८।१३	१।००।४५।००	०।०२।४०।४७	१।०९।०९।४४	१।०८।०९।०४	१।२०।४३।५७	१०।२४।४३।२७	११।१८।२५।१४	१।००।११।५६	११।०५।३१।५५	९व०७।३९।२५
६ गु	१६।५९।३५	१।२१।३५।४०	१।१४।४७।४५	०।०३।२५।३५	१।१११।१२।१०	१।०८।२३।०१	१।२१।५७।४२	१०।२४।४५।४९	११।१८।२२।०३	१।००।१५।१४	११।०५।३२।४७	९व०७।३८।३२
७ शु	१७।०३।३२	१।२२।३३।०६	१।२८।३६।५८	०।०४।१०।२०	१।१३।१६।२७	१।०८।३६।५६	१।२३।११।२६	१०।२४।४८।०६	११।१८।१८।५२	१।००।१८।३२	११।०५।३३।३७	९व०७।३७।३९
८ श	१७।०७।२८	१।२३।३०।३२	२।१२।०८।४९	०।०४।५५।०१	१।१५।२२।२६	१।०८।५०।५०	१।२४।२५।११	१०।२४।५०।१७	११।१८।१५।४१	१।००।२१।४८	११।०५।३४।२५	९व०७।३६।४४
९ र	१७।११।२५	१।२४।२७।५६	२।२५।२०।४६	०।०५।३९।३९	१।१७।२९।५९	१।०९।०४।४२	१।२५।३८।५५	१०।२४।५२।२३	११।१८।१२।३०	१।००।२५।०४	११।०५।३५।११	९व०७।३५।४८
१० चं	१७।१५।२१	१।२५।२५।२०	३।०८।१२।००	०।०६।२४।१३	१।१९।३८।५२	१।०९।१८।३३	१।२६।५२।३९	१०।२४।५४।२३	११।१८।०९।१९	१।००।२८।१९	११।०५।३५।५५	९व०७।३४।५१
११ मं	१७।१९।१८	१।२६।२२।४३	३।२०।४३।२८	०।०७।०८।४४	१।२१।४८।५३	१।०९।३२।२२	१।२८।०६।२२	१०।२४।५६।१७	११।१८।०६।०९	१।००।३१।३२	११।०५।३६।३७	९व०७।३३।५२
१२ बु	१७।२३।१४	१।२७।२०।०४	४।०२।५७।४३	०।०७।५३।११	१।२३।५९।४८	१।०९।४६।०९	१।२९।२०।०६	१०।२४।५८।०५	११।१८।०२।५८	१।००।३४।४४	११।०५।३७।१८	९व०७।३२।५३
१३ गु	१७।२७।११	१।२८।१७।२५	४।१४।५८।३३	०।०८।३७।३५	१।२६।११।२१	१।०९।५९।५५	२।००।३३।४९	१०।२४।५९।४७	११।१७।५९।४७	१।००।३७।५५	११।०५।३७।५७	९व०७।३१।५२
१४ शु	१७।३१।०८	१।२९।१४।४४	४।२६।५०।४३	०।०९।२१।५५	१।२८।२३।१६	१।१०।१३।३८	२।०१।४७।३३	१०।२५।०१।२४	११।१७।५६।३६	१।००।४१।०५	११।०५।३८।३३	९व०७।३०।५०
१५ श	१७।३५।०४	२।००।१२।०३	५।०८।३९।२५	०।१०।०६।११	२।००।३५।१७	१।१०।२७।२०	२।०३।०१।१६	१०।२५।०२।५५	११।१७।५३।२६	१।००।४४।१४	११।०५।३९।०८	९व०७।२९।४७
१६ र	१७।३९।०१	२।०१।०९।२१	५।२०।३०।०६	०।१०।५०।२३	२।०२।४७।०५	१।१०।४०।५९	२।०४।१४।५९	१०।२५।०४।२०	११।१७।५०।१५	१।००।४७।२१	११।०५।३९।४१	९व०७।२८।४३
१७ चं	१७।४२।५७	२।०२।०६।३८	६।०२।२८।००	०।११।३४।३२	२।०४।५८।२७	१।१०।५४।३७	२।०५।२८।४१	१०।२५।०५।३९	११।१७।४७।०४	१।००।५०।२८	११।०५।४०।१२	९व०७।२७।३७
१८ मं	१७।४६।५४	२।०३।०३।५४	६।१४।३७।५५	०।१२।१८।३७	२।०७।०९।०५	१।११।०८।१२	२।०६।४२।२४	१०।२५।०६।५२	११।१७।४३।५३	१।००।५३।३२	११।०५।४०।४०	९व०७।२६।३१
१९ बु	१७।५०।५०	२।०४।०९।१०	६।२७।०३।४९	०।१३।०२।३८	२।०९।१८।४७	१।११।२१।४५	२।०७।५६।०६	१०।२५।०७।५९	११।१७।४०।४३	१।००।५६।३६	११।०५।४१।०७	९व०७।२५।२४
२० गु	१७।५४।४७	२।०४।५८।२५	७।०९।४८।२८	०।१३।४६।३५	२।११।२७।१९	१।११।३५।१६	२।०९।०९।४९	१०।२५।०९।००	११।१७।३७।३२	१।००।५९।३८	११।०५।४१।३२	९व०७।२४।१६
२१ शु	१७।५८।४३	२।०५।५५।३९	७।२२।५३।०८	०।१४।३०।२८	२।१३।३४।२९	१।११।४८।४४	२।१०।२३।३१	१०।२५।०९।५६	११।१७।३४।२१	१।०१।०२।३८	११।०५।४१।५६	९व०७।२३।०७
२२ श	१८।०२।४०	२।०६।५२।५२	८।०६।१७।२२	०।१५।१४।१८	२।१५।४०।०८	१।१२।०२।११	२।११।३७।१३	१०।२५।१०।४५	११।१७।३१।१०	१।०१।०५।३७	११।०५।४२।१७	९व०७।२१।५६
२३ र	१८।०६।३७	२।०७।५०।०६	८।१९।५९।०२	०।१५।५८।०४	२।१७।४४।०८	१।१२।१५।३४	२।१२।५०।५५	१०।२५।११।२९	११।१७।२७।५९	१।०१।०८।३५	११।०५।४२।३६	९व०७।२०।४५
२४ चं	१८।१०।३३	२।०८।४७।१९	९।०३।५४।४०	०।१६।४१।४६	२।१९।४६।२०	१।१२।२८।५५	२।१४।०४।३७	१०।२५।१२।०६	११।१७।२४।४८	१।०१।११।३१	११।०५।४३।५३	९व०७।१९।३३
२५ मं	१८।१४।३०	२।०९।४४।३१	९।१८।००।००	०।१७।२५।२४	२।२१।४६।४१	१।१२।४२।१४	२।१५।१८।२०	१०।२५।१२।३८	११।१७।२१।३७	१।०१।१४।२५	११।०५।४३।०९	९व०७।१८।२१
२६ बु	१८।१८।२६	२।१०।४१।४४	१०।०२।१०।४४	०।१८।०८।५८	२।२३।४५।०५	१।१२।५५।२९	२।१६।३२।०२	१०।२५।१३।०४	११।१७।१८।२६	१।०१।१७।१८	११।०५।४३।२२	९व०७।१७।०७
२७ गु	१८।२२।२३	२।११।३८।५६	१०।१६।२३।०८	०।१८।५२।२८	२।२५।४१।२८	१।१३।०८।४२	२।१७।४५।४५	१०।२५।१३।२४	११।१७।१५।१५	१।०१।२०।०९	११।०५।४३।३३	९व०७।१५।५३
२८ शु	१८।२६।१९	२।१२।३६।०९	११।००।३४।२७	०।१९।३५।५४	२।२७।३५।४९	१।१३।२१।५३	२।१८।५९।२७	१०।२५।१३।३७	११।१७।१२।०५	१।०१।२२।५९	११।०५।४३।४३	९व०७।१४।३७
२९ श	१८।३०।१६	२।१३।३३।२२	११।१४।४२।५६	०।२०।१९।१६	२।२९।२८।०६	१।१३।३५।००	२।२०।१३।१०	१०।२५।१३।४५	११।१७।०८।५४	१।०१।२५।४७	११।०५।४३।५०	९व०७।१३।२१
३० र	१८।३४।१३	२।१४।३०।३४	११।२८।४७।३१	०।२१।०२।३४	३।०१।१८।१७	१।१३।४८।०५	२।२१।२६।५४	१०व२५।१३।४७	११।१७।०५।४३	१।०१।२८।३३	११।०५।४३।५६	९व०७।१२।०५

जुलाई सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ चं	१८।३८।०९	२।१५।२७।४७	०।१२।४७।२४	०।२१।४५।४८	३।०३।०६।२१	१।१४।०१।०६	२।२२।४०।३७	१०व२५।१३।४२	११।१७।०२।३३	१।०१।३१।१७	११।०५।४३।५९	९व०७।१०।४७
२ मं	१८।४२।०६	२।१६।२५।००	०।२६।४१।३८	०।२२।२८।५७	३।०४।५२।१९	१।१४।१४।०४	२।२३।५४।२०	१०व२५।१३।३२	११।१६।५९।२२	१।०१।३३।५९	११।०५।४४।०१	९व०७।०९।२९
३ बु	१८।४६।०२	२।१७।२२।१४	१।१०।२८।४५	०।२३।१२।०२	३।०६।३६।०९	१।१४।२६।५९	२।२५।०८।०४	१०व२५।१३।१६	११।१६।५६।११	१।०१।३६।४०	११व०५।४४।०१	९व०७।०८।१०
४ गु	१८।४९।५९	२।१८।१९।२७	१।२४।०६।४२	०।२३।५५।०३	३।०८।१७।५१	१।१४।३९।५१	२।२६।२१।४८	१०व२५।१२।५३	११।१६।५३।००	१।०१।३९।१९	११व०५।४३।५८	९व०७।०६।५१
५ शु	१८।५३।५५	२।१९।१६।४०	२।०७।३३।०८	०।२४।३७।५८	३।०९।५७।२६	१।१४।५२।४०	२।२७।३५।३२	१०व२५।१२।२५	११।१६।४९।४९	१।०१।४१।५६	११व०५।४३।५४	९व०७।०५।३१
६ श	१८।५७।५२	२।२०।१३।५४	२।२०।४५।४२	०।२५।२०।५०	३।११।३४।५२	१।१५।०५।२५	२।२८।४९।१६	१०व२५।११।५०	११।१६।४६।३८	१।०१।४४।३०	११व०५।४३।४८	९व०७।०४।१०
७ र	१९।०१।४८	२।२१।११।०७	३।०३।४२।३६	०।२६।०३।३६	३।१३।१०।१०	१।१५।१८।०६	३।००।०३।००	१०व२५।११।१०	११।१६।४३।२७	१।०१।४७।०३	११व०५।४३।४७	९व०७।०२।४९
८ चं	१९।०५।४५	२।२२।०८।२१	३।१६।२२।५९	०।२६।४६।१८	३।१४।४३।१९	१।१५।३०।४४	३।०१।१६।४५	१०व२५।१०।२४	११।१६।४०।१६	१।०१।४९।३४	११व०५।४३।३७	९व०७।०१।२८
९ मं	१९।०९।४२	२।२३।०५।३४	३।२८।४७।१३	०।२७।२८।५४	३।१६।१४।१८	१।१५।४३।१८	३।०२।३०।२९	१०व२५।०९।३२	११।१६।३७।०६	१।०१।५२।०३	११व०५।४३।१७	९व०७।००।०५
१० बु	१९।१३।३८	२।२४।०२।४८	४।१०।५७।०२	०।२८।११।२६	३।१७।४३।०६	१।१५।५५।४८	३।०३।४४।१३	१०व२५।०८।३४	११।१६।३३।५५	१।०१।५४।२९	११व०५।४३।०४	९व०६।५८।४३
११ गु	१९।१७।३५	२।२५।००।०१	४।२२।५५।१८	०।२८।५३।५३	३।१९।०९।४२	१।१६।०८।१४	३।०४।५७।५७	१०व२५।०७।३०	११।१६।३०।४४	१।०१।५६।५४	११व०५।४२।४८	९व०६।५७।२०
१२ शु	१९।२१।३१	२।२५।५७।१५	५।०४।४६।०२	०।२९।३६।१५	३।२०।३४।०४	१।१६।२०।३६	३।०६।११।४१	१०व२५।०६।२०	११।१६।२७।३३	१।०१।५९।१६	११व०५।४२।३०	९व०६।५५।५७
१३ श	१९।२५।२८	२।२६।५४।२८	५।१६।३३।५५	१।००।१८।३२	३।२१।५६।११	१।१६।३२।५४	३।०७।२५।२५	१०व२५।०५।०४	११।१६।२४।२३	१।०२।०१।३६	११व०५।४२।१०	९व०६।५४।३३
१४ र	१९।२९।२४	२।२७।५१।४२	५।२८।२४।१५	१।०१।००।४३	३।२३।१६।००	१।१६।४५।०८	३।०८।३९।०८	१०व२५।०३।४३	११।१६।२१।१२	१।०२।०३।५४	११व०५।४१।४८	९व०६।५३।०९
१५ चं	१९।३३।२१	२।२८।४८।५५	६।१०।२२।२९	१।०१।४२।५०	३।२४।३३।२८	१।१६।५७।१८	३।०९।५२।५२	१०व२५।०२।१६	११।१६।१८।०१	१।०२।०६।१०	११व०५।४१।२५	९व०६।५१।४५
१६ मं	१९।३७।१७	२।२९।४६।०८	६।२२।३३।५७	१।०२।२४।५२	३।२५।४८।३२	१।१७।०९।२३	३।११।०६।३५	१०व२५।००।४४	११।१६।१४।५०	१।०२।०८।२३	११व०५।४१।०८	९व०६।५०।२०
१७ बु	१९।४१।१४	३।००।४३।२२	७।०५।०३।२५	१।०३।०६।४८	३।२७।०१।०९	१।१७।२१।२५	३।१२।२०।१८	१०व२४।५९।०५	११।१६।११।४०	१।०२।१०।३५	११व०५।४०।३२	९व०६।४८।५६
१८ गु	१९।४५।११	३।०१।४०।३६	७।१७।५४।४१	१।०३।४८।४०	३।२८।११।१४	१।१७।३३।२१	३।१३।३४।०१	१०व२४।५७।२२	११।१६।०८।२९	१।०२।१२।४३	११व०५।४०।०३	९व०६।४७।३१
१९ शु	१९।४९।०७	३।०२।३७।५०	८।०१।०९।५६	१।०४।३०।२६	३।२९।१८।४४	१।१७।४५।१३	३।१४।४७।४४	१०व२४।५५।३२	११।१६।०५।१८	१।०२।१४।५०	११व०५।३९।३२	९व०६।४६।०६
२० श	१९।५३।०४	३।०३।३५।०४	८।१४।४९।२०	१।०५।१२।०७	४।००।२३।३४	१।१७।५७।०१	३।१६।०१।२७	१०व२४।५३।३७	११।१६।०२।०७	१।०२।१६।५४	११व०५।३९।००	९व०६।४४।४०
२१ र	१९।५७।००	३।०४।३२।१९	८।२८।५०।४२	१।०५।५३।४३	४।०१।२५।३७	१।१८।०८।४४	३।१७।१५।०९	१०व२४।५१।३७	११।१५।५८।५६	१।०२।१८।५६	११व०५।३८।२५	९व०६।४३।१५
२२ चं	२०।००।५७	३।०५।२९।३४	९।१३।०९।४१	१।०६।३५।१४	४।०२।२४।४७	१।१८।२०।२२	३।१८।२८।५२	१०व२४।४९।३२	११।१५।५५।४५	१।०२।२०।५५	११व०५।३७।४९	९व०६।४१।५०
२३ मं	२०।०४।५३	३।०६।२६।४९	९।२७।४०।१४	१।०७।१६।३९	४।०३।२०।५९	१।१८।३१।५५	३।१९।४२।३४	१०व२४।४७।२१	११।१५।५२।३४	१।०२।२२।५२	११व०५।३७।१९	९व०६।४०।२५
२४ बु	२०।०८।५०	३।०७।२४।०६	१०।१२।१५।३९	१।०७।५७।५९	४।०४।१४।०५	१।१८।४३।२३	३।२०।५६।१६	१०व२४।४५।०५	११।१५।४९।२३	१।०२।२४।४६	११व०५।३६।३१	९व०६।३९।०१
२५ गु	२०।१२।४६	३।०८।२१।२३	१०।२६।४९।३८	१।०८।३९।१४	४।०५।०३।५७	१।१८।५४।४७	३।२२।०९।५८	१०व२४।४२।४३	११।१५।४६।१३	१।०२।२६।३८	११व०५।३५।५०	९व०६।३७।३६
२६ शु	२०।१६।४३	३।०९।१८।४१	११।११।१७।०७	१।०९।२०।२४	४।०५।५०।२७	१।१९।०६।०५	३।२३।२३।४०	१०व२४।४०।१६	११।१५।४३।०२	१।०२।२८।२८	११व०५।३५।०६	९व०६।३६।११
२७ श	२०।२०।४०	३।१०।१६।००	११।२५।३४।३९	१।१०।०१।२८	४।०६।३३।२७	१।१९।१७।१८	३।२४।३७।२३	१०व२४।३७।४५	११।१५।३९।५१	१।०२।३०।१४	११व०५।३४।२१	९व०६।३४।४६
२८ र	२०।२४।३६	३।११।१३।२०	०।०९।४०।२४	१।१०।४२।२७	४।०७।१२।४५	१।१९।२८।२६	३।२५।५१।०५	१०व२४।३५।०८	११।१५।३६।४१	१।०२।३१।५९	११व०५।३३।५५	९व०६।३३।२१
२९ चं	२०।२८।३३	३।१२।१०।४१	०।२३।३३।३९	१।११।२३।२०	४।०७।४८।१४	१।१९।३९।२८	३।२७।०४।४७	१०व२४।३२।२६	११।१५।३३।३०	१।०२।३३।४०	११व०५।३२।४६	९व०६।३१।५६
३० मं	२०।३२।२९	३।१३।०८।०३	१।०७।१४।२४	१।१२।०४।०७	४।०८।१९।४२	१।१९।५०।२५	३।२८।१८।२९	१०व२४।२९।४०	११।१५।३०।१९	१।०२।३५।१९	११व०५।३१।५६	९व०६।३०।३१
३१ बु	२०।३६।२६	३।१४।०५।२७	१।२०।४२।५१	१।१२।४४।४८	४।०८।४६।५८	१।२०।०१।१७	३।२९।३२।११	१०व२४।२६।४८	११।१५।२७।०८	१।०२।३६।५६	११व०५।३१।०४	९व०६।२९।०६

अगस्त सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२वजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ गु	२०।४०।२२	३।१५।०२।५१	२।०३।५९।०३	१।१३।२५।२४	४।०९।०९।५२	१।२०।१२।०२	४।००।४५।५३	१०व२४।२३।५२	११।१५।२३।५७	१।०२।३८।३०	११व०५।३०।११	९व०६।२७।४१
२ शु	२०।४४।१९	३।१६।००।१६	२।१७।०२।५२	१।१४।०५।५३	४।०९।२८।१२	१।२०।२२।४२	४।०१।५९।३५	१०व२४।२०।५१	११।१५।२०।४६	१।०२।४०।०१	११व०५।२९।१६	९व०६।२६।१७
३ श	२०।४८।१६	३।१६।५७।४२	२।२९।५४।००	१।१४।४६।१७	४।०९।४१।४८	१।२०।३३।१६	४।०३।१३।१७	१०व२४।१७।४५	११।१५।१७।३५	१।०२।४१।२९	११व०५।२८।१९	९व०६।२४।५३
४ र	२०।५२।१२	३।१७।५५।१०	३।१२।३२।१२	१।१५।२६।३४	४।०९।५०।३०	१।२०।४३।४४	४।०४।२६।५९	१०व२४।१४।३५	११।१५।१४।२५	१।०२।४२।५५	११व०५।२७।२१	९व०६।२३।३०
५ चं	२०।५६।०९	३।१८।५२।३८	३।२४।५७।३३	१।१६।०६।४४	४।०९।५४।०९	१।२०।५४।०६	४।०५।४०।४१	१०व२४।११।२०	११।१५।११।१४	१।०२।४४।१७	११व०५।२६।२१	९व०६।२२।०७
६ मं	२१।००।०५	३।१९।५०।०७	४।०७।१०।४१	१।१६।४६।४९	४व०९।५२।३६	१।२१।०४।२२	४।०६।५४।२२	१०व२४।०८।०१	११।१५।०८।०३	१।०२।४५।३७	११व०५।२५।२०	९व०६।२०।४४
७ बु	२१।०४।०२	३।२०।४७।३७	४।१९।१२।५८	१।१७।२६।४७	४व०९।४५।४६	१।२१।१४।३१	४।०८।०८।०३	१०व२४।०४।३८	११।१५।०४।५२	१।०२।४६।५५	११व०५।२४।१७	९व०६।१९।२२
८ गु	२१।०७।५८	३।२१।४५।०८	५।०१।०६।३९	१।१८।०६।३८	४व०९।३३।३५	१।२१।२४।३४	४।०९।२१।४४	१०व२४।०१।११	११।१५।०१।४२	१।०२।४८।०९	११व०५।२३।१२	९व०६।१८।००
९ शु	२१।११।५५	३।२२।४२।४०	५।१२।५४।५०	१।१८।४६।२३	४व०९।१६।०४	१।२१।३४।३०	४।१०।३५।२५	१०व२३।५७।३९	११।१४।५८।३१	१।०२।४९।२१	११व०५।२२।०७	९व०६।१६।३८
१० श	२१।१५।५१	३।२३।४०।१३	५।२४।४१।२२	१।१९।२६।०१	४व०८।५३।१५	१।२१।४४।२०	४।११।४९।०५	१०व२३।५४।०४	११।१४।५५।२०	१।०२।५०।२९	११व०५।२०।५९	९व०६।१५।१८
११ र	२१।१९।४८	३।२४।३७।४६	६।०६।३०।४७	१।२०।०५।३३	४व०८।२५।१९	१।२१।५४।०३	४।१३।०२।४४	१०व२३।५०।२५	११।१४।५२।१०	१।०२।५१।३५	११व०५।१९।५१	९व०६।१३।५७
१२ चं	२१।२३।४४	३।२५।३५।२१	६।१८।२८।०४	१।२०।४४।५७	४व०७।५२।२८	१।२२।०३।३९	४।१४।१६।२३	१०व२३।४६।४२	११।१४।४८।५९	१।०२।५२।३८	११व०५।१८।४९	९व०६।१२।३८
१३ मं	२१।२७।४१	३।२६।३२।५६	७।००।३८।२५	१।२१।२४।१५	४व०७।१५।०४	१।२२।१३।०८	४।१५।३०।०२	१०व२३।४२।५६	११।१४।४५।४८	१।०२।५३।३८	११व०५।१७।२९	९व०६।११।१८
१४ बु	२१।३१।३८	३।२७।३०।३३	७।१३।०६।५४	१।२२।०३।२६	४व०६।३३।३२	१।२२।२२।३१	४।१६।४३।३९	१०व२३।३९।०६	११।१४।४२।३७	१।०२।५४।३५	११व०५।१६।१७	९व०६।१०।००
१५ गु	२१।३५।३४	३।२८।२८।१०	७।२५।५७।५६	१।२२।४२।३०	४व०५।४८।२७	१।२२।३१।४६	४।१७।५७।१७	१०व२३।३५।१३	११।१४।३९।२६	१।०२।५५।३०	११व०५।१५।०३	९व०६।०८।४२
१६ शु	२१।३९।३१	३।२९।२५।४८	८।०९।१४।४७	१।२३।२१।२७	४व०५।००।३०	१।२२।४०।५४	४।१९।१०।५४	१०व२३।३१।१६	११।१४।३६।१६	१।०२।५६।२१	११व०५।१३।४७	९व०६।०७।२५
१७ श	२१।४३।२७	४।००।२३।२७	८।२२।५८।५१	१।२४।००।१७	४व०४।१०।२८	१।२२।४९।५४	४।२०।२४।३०	१०व२३।२७।१७	११।१४।३३।०५	१।०२।५७।०९	११व०५।१२।३१	९व०६।०६।०९
१८ र	२१।४७।२४	४।०१।२१।०८	९।०७।०९।०६	१।२४।३९।०१	४व०३।१९।१३	१।२२।५८।४८	४।२१।३८।०५	१०व२३।२३।१४	११।१४।२९।५४	१।०२।५७।५५	११व०५।११।१३	९व०६।०४।५३
१९ चं	२१।५१।२०	४।०२।१८।४९	९।२१।४१।४७	१।२५।१७।३७	४व०२।२७।४४	१।२३।०७।३४	४।२२।५१।४०	१०व२३।१९।०९	११।१४।२६।४३	१।०२।५८।३७	११व०५।०९।५४	९व०६।०३।३८
२० मं	२१।५५।१७	४।०३।१६।३२	१०।०६।३०।३८	१।२५।५६।०६	४व०१।३७।०१	१।२३।१६।१२	४।२४।०५।१४	१०व२३।१५।०१	११।१४।२३।३२	१।०२।५९।१७	११व०५।०८।३४	९व०६।०२।२४
२१ बु	२१।५९।१४	४।०४।१४।१७	१०।२१।२७।३९	१।२६।३४।२७	४व००।४८।०७	१।२३।२४।४३	४।२५।१८।४८	१०व२३।१०।५०	११।१४।२०।२२	१।०२।५९।५३	११व०५।०७।१३	९व०६।०१।११
२२ गु	२२।०३।१०	४।०५।१२।०२	११।०६।२४।२३	१।२७।१२।४२	४व००।०२।०३	१।२३।३३।०६	४।२६।३२।२१	१०व२३।०६।३७	११।१४।१७।११	१।०३।००।२७	११व०५।०५।५१	९व०५।५९।५९
२३ शु	२२।०७।०७	४।०६।०९।५०	११।२१।१३।०८	१।२७।५०।४९	३व२९।१९।५०	१।२३।४१।२१	४।२७।४५।५३	१०व२३।०२।२१	११।१४।१४।००	१।०३।००।५८	११व०५।०४।२७	९व०५।५८।४७
२४ श	२२।११।०३	४।०७।०७।३९	०।०५।४७।५६	१।२८।२८।४९	३व२८।४२।२३	१।२३।४९।२८	४।२८।५९।२५	१०व२२।५८।०३	११।१४।१०।५०	१।०३।०१।२५	११व०५।०३।०३	९व०५।५७।३७
२५ र	२२।१५।००	४।०८।०५।३०	०।२०।०५।००	१।२९।०६।४२	३व२८।१०।३३	१।२३।५७।२७	५।००।१२।५७	१०व२२।५३।४२	११।१४।०७।३९	१।०३।०१।५०	११व०५।०१।३७	९व०५।५६।२७
२६ चं	२२।१८।५६	४।०९।०३।२२	१।०४।०२।३४	१।२९।४४।२६	३व२७।४५।०५	१।२४।०५।१७	५।०१।२६।२८	१०व२२।४९।२०	११।१४।०४।२८	१।०३।०२।१११	११व०५।००।११	९व०५।५५।१८
२७ मं	२२।२२।५३	४।१०।०१।१६	१।१७।४०।२९	२।००।२२।०३	३व२७।२६।३६	१।२४।१३।००	५।०२।३९।५९	१०व२२।४४।५६	११।१४।०१।१७	१।०३।०२।३०	११व०४।५८।४३	९व०५।५४।११
२८ बु	२२।२६।४९	४।१०।५९।१३	२।००।५९।४३	२।००।५९।३२	३व२७।१५।३७	१।२४।२०।३४	५।०३।५३।१९	१०व२२।४०।३०	११।१३।५८।०६	१।०३।०२।४६	११व०४।५७।१५	९व०५।५३।०४
२९ गु	२२।३०।४६	४।११।५७।११	२।१४।०१।४८	२।०१।३६।५३	३।२७।१२।३०	१।२४।२७।५९	५।०५।०६।५८	१०व२२।३६।०२	११।१३।५४।५५	१।०३।०२।५८	११व०४।५५।४६	९व०५।५१।५८
३० शु	२२।३४।४२	४।१२।५५।१०	२।२६।४८।३०	२।०२।१४।०५	३।२७।१७।३३	१।२४।३५।१६	५।०६।२०।२८	१०व२२।३१।३३	११।१३।५१।४५	१।०३।०३।०८	११व०४।५४।१६	९व०५।५०।५४
३१ श	२२।३८।३९	४।१३।५३।१२	३।०९।२१।३२	२।०२।५१।१०	३।२७।३०।५४	१।२४।४२।२४	५।०७।१३।५६	१०व२२।२७।०२	११।१३।४८।३४	१।०३।०३।१४	११व०४।५२।४५	९व०५।४९।५०

सितम्बर सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ र	२२।४२।३६	४।१४।५१।१५	३।२१।४२।३३	२।०३।२८।०५	३।२७।५२।३६	१।२४।४९।२३	५।०८।४७।२४	१०व२२।२२।३०	११।१३।४५।२३	१।०३।०३।१७	११व०४।५१।१३	९व०५।४८।४८
२ चं	२२।४६।३२	४।१५।४९।२१	४।०३।५३।०४	२।०४।०४।५२	३।२८।२२।३६	१।२४।५६।१३	५।१०।००।५२	१०व२२।१७।५७	११।१३।४२।१२	१व०३।०३।१८	११व०४।४९।४१	९व०५।४७।४७
३ मं	२२।५०।२९	४।१६।४७।२७	४।१५।५४।४०	२।०४।४१।३०	३।२९।००।४५	१।२५।०२।५४	५।११।१४।१९	१०व२२।१३।२४	११।१३।३९।०२	१व०३।०३।१५	११व०४।४८।०७	९व०५।४६।४६
४ बु	२२।५४।२५	४।१७।४५।३६	४।२७।४९।०५	२।०५।१७।५९	३।२९।४६।५१	१।२५।०९।२५	५।१२।२७।४५	१०व२२।०८।४९	११।१३।३५।५१	१व०३।०३।०९	११व०४।४६।३३	९व०५।४५।४८
५ गु	२२।५८।२२	४।१८।४३।४६	५।०९।३८।१८	२।०५।५४।१९	४।००।४०।३६	१।२५।१५।४७	५।१३।४१।१०	१०व२२।०४।१४	११।१३।३२।४०	१व०३।०३।०१	११व०४।४४।५९	९व०५।४४।५०
६ शु	२३।०२।१८	४।१९।४१।५८	५।२१।२४।४६	२।०६।३०।३०	४।०१।४१।३८	१।२५।२२।००	५।१४।५४।३५	१०व२१।५९।३८	११।१३।२९।३०	१व०३।०२।४९	११व०४।४३।२४	९व०५।४३।५३
७ श	२३।०६।१५	४।२०।४०।११	६।०३।११।२५	२।०७।०६।३१	४।०२।४९।३३	१।२५।२८।०३	५।१६।०७।५८	१०व२१।५५।०२	११।१३।२६।१९	१व०३।०२।३४	११व०४।४१।४८	९व०५।४२।५८
८ र	२३।१०।११	४।२१।३८।२६	६।१५।०१।४३	२।०७।४२।२३	४।०४।०३।५२	१।२५।३३।५६	५।१७।२१।२१	१०व२१।५०।२७	११।१३।२३।०८	१व०३।०२।१६	११व०४।४०।१२	९व०५।४२।०४
९ चं	२३।१४।०८	४।२२।३६।४३	६।२६।५९।३६	२।०८।१८।०५	४।०५।२४।०५	१।२५।३९।३९	५।१८।३४।४३	१०व२१।४५।५१	११।१३।१९।५८	१व०३।०१।५५	११व०४।३८।३५	९व०५।४१।१२
१० मं	२३।१८।०५	४।२३।३५।०१	७।०९।०९।२४	२।०८।५३।३८	४।०६।४९।४०	१।२५।४५।१३	५।१९।४८।०४	१०व२१।४१।१५	११।१३।१६।४७	१व०३।०१।३१	११व०४।३६।५८	९व०५।४०।२१
११ बु	२३।२२।०१	४।२४।३३।२१	७।२१।३५।४०	२।०९।२९।०१	४।०८।२०।०४	१।२५।५०।३७	५।२१।०१।२४	१०व२१।३६।३९	११।१३।१३।३६	१व०३।०१।०५	११व०४।३५।२०	९व०५।३९।३१
१२ गु	२३।२५।५८	४।२५।३१।४२	८।०४।२२।४२	२।१०।०४।१३	४।०९।५४।४३	१।२५।५५।५०	५।२२।१४।४३	१०व२१।३२।०४	११।१३।१०।२५	१व०३।००।३५	११व०४।३३।४२	९व०५।३८।४२
१३ शु	२३।२९।५४	४।२६।३०।०४	८।१७।३४।१७	२।१०।३९।१६	४।११।३३।०५	१।२६।००।५४	५।२३।२८।०१	१०व२१।२७।२९	११।१३।०७।१४	१व०३।००।०२	११व०४।३२।०४	९व०५।३७।५५
१४ श	२३।३३।५१	४।२७।२८।२९	९।०१।१२।५४	२।११।१४।०९	४।१३।१४।३७	१।२६।०५।४७	५।२४।४१।१८	१०व२१।२२।५५	११।१३।०४।०३	१व०२।५९।२६	११व०४।३०।२५	९व०५।३७।०९
१५ र	२३।३७।४७	४।२८।२६।५५	९।१५।१९।१०	२।११।४८।५१	४।१४।५८।४८	१।२६।१०।२९	५।२५।५४।३४	१०व२१।१८।२२	११।१३।००।५३	१व०२।५८।४८	११व०४।२८।४६	९व०५।३६।२५
१६ चं	२३।४१।४४	४।२९।२५।२२	९।२९।५१।११	२।१२।२३।२४	४।१६।४५।०९	१।२६।१५।०२	५।२७।०७।४८	१०व२१।१३।५०	११।१२।५७।४२	१व०२।५८।०६	११व०४।२७।०७	९व०५।३५।४२
१७ मं	२३।४५।४०	५।००।२३।५१	१०।१४।४४।१६	२।१२।५७।४५	४।१८।३३।१४	१।२६।१९।२४	५।२८।२१।०१	१०व२१।०९।१९	११।१२।५४।३१	१व०२।५७।२२	११व०४।२५।२७	९व०५।३५।००
१८ बु	२३।४९।३७	५।०१।२२।२२	१०।२९।५१।०६	२।१३।३१।५७	४।२०।२२।३८	१।२६।२३।३५	५।२९।३४।१४	१०व२१।०४।५०	११।१२।५१।२१	१व०२।५६।३५	११व०४।२३।४७	९व०५।३४।२०
१९ गु	२३।५३।३४	५।०२।२०।५५	११।१५।०२।४०	२।१४।०५।५७	४।२२।१३।००	१।२६।२७।३६	६।००।४७।२५	१०व२१।००।२२	११।१२।४८।१०	१व०२।५५।४५	११व०४।२२।०७	९व०५।३३।४२
२० शु	२३।५७।३०	५।०३।१९।३०	०।००।०९।२९	२।१४।३९।४७	४।२४।०४।००	१।२६।३१।२६	६।०२।००।३५	१०व२०।५५।५५	११।१२।४४।५९	१व०२।५४।५२	११व०४।२०।२७	९व०५।३३।०५
२१ श	०।०१।२७	५।०४।१८।०७	०।१५।०२।५७	२।१५।१३।२५	४।२५।५५।२३	१।२६।३५।०५	६।०३।१३।४३	१०व२०।५१।३०	११।१२।४१।४९	१व०२।५३।५६	११व०४।१८।५०	९व०५।३२।२९
२२ र	०।०५।२३	५।०५।१६।४७	०।२९।३६।३४	२।१५।४६।५३	४।२७।४६।५३	१।२६।३८।३३	६।०४।२६।५१	१०व२०।४७।०७	११।१२।३८।३८	१व०२।५२।५८	११व०४।१७।१३	९व०५।३१।५५
२३ चं	०।०९।२०	५।०६।१५।२८	१।१३।४६।२२	२।१६।२०।०९	४।२९।३८।१९	१।२६।४१।५०	६।०५।३९।५८	१०व२०।४२।४६	११।१२।३५।२७	१व०२।५१।५६	११व०४।१५।३३	९व०५।३१।२२
२४ मं	०।१३।१६	५।०७।१४।१२	१।२७।३०।५२	२।१६।५३।१३	५।०१।२९।३०	१।२६।४४।५५	६।०६।५३।०४	१०व२०।३८।२७	११।१२।३२।१६	१व०२।५०।५२	११व०४।१३।५३	९व०५।३०।५१
२५ बु	०।१७।१३	५।०८।१२।५८	२।१०।५०।४३	२।११७।२६।०५	५।०३।२०।१७	१।२६।४७।५०	६।०८।०६।०९	१०व२०।३४।१०	११।१२।२९।०५	१व०२।४९।४५	११व०४।१२।१३	९व०५।३०।२२
२६ गु	०।२१।०९	५।०९।११।४६	२।२३।४८।०४	२।१७।५८।४५	५।०५।१०।३५	१।२६।५०।३३	६।०९।१९।१३	१०व२०।२९।५५	११।१२।२५।५४	१व०२।४८।३६	११व०४।१०।३४	९व०५।२९।५४
२७ शु	०।२५।०६	५।१०।१०।३७	३।०६।२५।५३	२।१८।३१।१२	५।०७।००।१८	१।२६।५३।०५	६।१०।३२।१६	१०व२०।२५।४३	११।१२।२२।४४	१व०२।४७।२४	११व०४।०८।५४	९व०५।२९।२८
२८ श	०।२९।०३	५।११।०९।२९	३।१८।४७।३३	२।१९।०३।२७	५।०८।४९।२०	१।२६।५५।२५	६।११।४५।१८	१०व२०।२१।३४	११।१२।१९।३३	१व०२।४६।०९	११व०४।०७।१५	९व०५।२९।०३
२९ र	०।३२।५९	५।१२।०८।२४	४।००।५६।३०	२।१९।३५।२९	५।१०।३७।३९	१।२६।५७।३३	६।१२।५८।१९	१०व२०।१७।२७	११।१२।१६।२२	१व०२।४४।५१	११व०४।०५।३६	९व०५।२८।४०
३० चं	०।३६।५६	५।१३।०७।२२	४।१२।५५।५३	२।२०।०७।१७	५।११।२५।१२	१।२६।५९।३०	६।१४।११।२०	१०व२०।१३।२३	११।१२।१३।११	१व०२।४३।३१	११व०४।०३।५८	९व०५।२८।१९

अक्तूबर सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ मं	०।४०।५२	५।१४।०६।२१	४।२४।४८।३८	२।२०।३८।५२	५।१४।११।५९	१।२७।०१।१५	६।१५।२४।१९	१०व२०।०९।२३	११।१२।१०।०१	१व०२।४२।०८	११व०४।०२।२०	९व०५।२७।५९
२ बु	०।४४।४९	५।१५।०५।२२	५।०६।३७।२०	२।२१।१०।१३	५।१५।५७।५६	१।२७।०२।४९	६।१६।३७।१७	१०व२०।०५।२५	११।१२।०६।५०	१व०२।४०।४३	११व०४।००।४२	९व०५।२७।४१
३ गु	०।४८।४५	५।१६।०४।२६	५।१८।२४।२१	२।२१।४१।२०	५।१७।४३।०३	१।२७।०४।१०	६।१७।५०।१३	१०व२०।०१।३१	११।१२।०३।४०	१व०२।३९।१५	११व०३।५९।०५	९व०५।२७।२५
४ शु	०।५२।४२	५।१७।०३।३१	६।००।११।५४	२।२२।१२।१३	५।१९।२७।२१	१।२७।०५।२०	६।१९।०३।०९	१०व१९।५७।४१	११।१२।००।२९	१व०२।३७।४५	११व०३।५७।२८	९व०५।२७।१०
५ श	०।५६।३८	५।१८।०२।३९	६।१२।०२।१५	२।२२।४२।५१	५।२१।१०।४९	१।२७।०६।१७	६।२०।१६।०४	१०व१९।५३।५४	११।११।५७।१८	१व०२।३६।१२	११व०३।५५।५१	९व०५।२६।५७
६ र	१।००।३५	५।१९।०१।४८	६।२३।५७।४६	२।२३।१३।१४	५।२२।५३।२७	१।२७।०७।०३	६।२१।२८।५७	१०व१९।५०।१०	११।११।५४।०८	१व०२।३४।३७	११व०३।५४।१६	९व०५।२६।४५
७ चं	१।०४।३२	५।२०।०१।००	७।०६।०१।०४	२।२३।४३।२३	५।२४।३५।१६	१।२७।०७।३६	६।२२।४१।४८	१०व१९।४६।३१	११।११।५०।५७	१व०२।३३।००	११व०३।५२।४०	९व०५।२६।३६
८ मं	१।०८।२८	५।२१।००।१३	७।१८।१५।०४	२।२४।१३।१५	५।२६।१६।१८	१।२७।०७।५७	६।२३।५४।३९	१०व१९।४२।५५	११।११।४७।४६	१व०२।३१।२०	११व०३।५१।०६	९व०५।२६।२८
९ बु	१।१२।२५	५।२१।५९।२८	८।००।४२।५९	२।२४।४२।५३	५।२७।५६।३१	१।२७।०८।०७	६।२५।०७।२८	१०व१९।३९।२४	११।११।४४।३५	१व०२।२९।३८	११व०३।४९।३२	९व०५।२६।२२
१० गु	१।१६।२१	५।२२।५८।४५	८।१३।२८।०९	२।२५।१२।१४	५।२९।३५।५८	१व२७।०८।०४	६।२६।२०।१५	१०व१९।३५।५६	११।११।४१।२४	१व०२।२७।५४	११व०३।४७।५९	९व०५।२६।१७
११ शु	१।२०।१८	५।२३।५८।०३	८।२६।३३।५१	२।२५।४१।१९	६।०१।१४।४०	१व२७।०७।४९	६।२७।३३।०१	१०व१९।३२।३३	११।११।३८।१३	१व०२।२६।०७	११व०३।४६।२६	९व०५।२६।१४
१२ श	१।२४।१४	५।२४।५७।२३	९।१०।०२।४८	२।२६।१०।०८	६।०२।५२।३७	१व२७।०७।२३	६।२८।४५।४५	१०व१९।२९।१५	११।११।३५।०३	१व०२।२४।१८	११व०३।४४।५४	९व०५।२६।१३
१३ र	१।२८।११	५।२५।५६।४६	९।२३।५६।४६	२।२६।३८।४१	६।०४।२९।५०	१व२७।०६।४४	६।२९।५८।२७	१०व१९।२६।००	११।११।३१।५२	१व०२।२२।२८	११व०३।४३।२४	९।०५।२६।१४
१४ चं	१।३२।०७	५।२६।५६।०९	१०।०८।१५।४७	२।२७।०६।५६	६।०६।०६।२१	१व२७।०५।५३	७।०१।११।०८	१०व१९।२२।५१	११।११।२८।४१	१व०२।२०।३५	११व०३।४१।५४	९।०५।२६।१६
१५ मं	१।३६।०४	५।२७।५५।३५	१०।२२।५७।३९	२।२७।३४।५४	६।०७।४२।१०	१व२७।०४।५०	७।०२।२३।४७	१०व१९।१९।४६	११।११।२५।३०	१व०२।१८।४०	११व०३।४०।२४	९।०५।२६।२०
१६ बु	१।४०।०१	५।२८।५५।०२	११।०७।५७।३०	२।२८।०२।३५	६।०९।१७।१९	१व२७।०३।३५	७।०३।३६।२४	१०व१९।१६।४५	११।११।२२।२०	१व०२।१६।४३	११व०३।३८।५६	९।०५।२६।२६
१७ गु	१।४३।५७	५।२९।५४।३२	११।२३।०७।५९	२।२८।२९।५९	६।१०।५१।४८	१व२७।०२।०८	७।०४।४८।५९	१०व१९।१३।५०	११।११।१९।०९	१व०२।१४।४५	११व०३।३७।२९	९।०५।२६।३४
१८ शु	१।४७।५४	६।००।५४।०३	०।०८।१९।५२	२।२८।५७।०४	६।१२।२५।३९	१व२७।००।२९	७।०६।०१।३२	१०व१९।११।००	११।११।१५।५८	१व०२।१२।४४	११व०३।३६।०२	९।०५।२६।४३
१९ श	१।५१।५०	६।०१।५३।३६	०।२३।२३।२७	२।२९।२३।५०	६।१३।५८।५२	१व२६।५८।३८	७।०७।१४।०४	१०व१९।०८।१४	११।११।१२।४८	१व०२।१०।४२	११व०३।३४।३७	९।०५।२६।५४
२० र	१।५५।४७	६।०२।५३।१२	१।०८।०९।५६	२।२९।५०।१८	६।१५।३१।२८	१व२६।५६।३५	७।०८।२६।३३	१०व१९।०५।३३	११।११।०९।३७	१व०२।०८।३८	११व०३।३३।१३	९।०५।२७।०७
२१ चं	१।५९।४३	६।०३।५२।५०	१।२२।३२।४४	३।००।१६।२७	६।१७।०३।२७	१व२६।५४।२०	७।०९।३९।०१	१०व१९।०२।५८	११।११।०६।२६	१व०२।०६।३२	११व०३।३१।५०	९।०५।२७।२१
२२ मं	२।०३।४०	६।०४।५२।३०	२।०६।२८।०७	३।००।४२।१६	६।१८।३४।५१	१व२६।५१।५४	७।१०।५१।२७	१०व१९।००।२८	११।११।०३।१५	१व०२।०४।२५	११व०३।३०।२८	९।०५।२७।३७
२३ बु	२।०७।३६	६।०५।५२।१२	२।१९।५५।१७	३।०१।०७।४५	६।२०।०५।४०	१व२६।४९।१५	७।११।०३।५२	१०व१८।५८।०३	११।११।००।०४	१व०२।०२।१६	११व०३।२९।०७	९।०५।२७।५५
२४ गु	२।११।३३	६।०६।५१।५६	३।०२।५५।४५	३।०१।३२।५३	६।२१।३५।५३	१व२६।४६।२५	७।१३।१६।१४	१०व१८।५५।४४	११।१०।५६।५३	१व०२।००।०५	११व०३।२७।४७	९।०५।२८।१५
२५ शु	२।१५।३०	६।०७।५१।४३	३।१५।३२।४८	३।०१।५७।४०	६।२३।०५।३१	१व२६।४३।२३	७।१४।२८।३५	१०व१८।५३।३०	११।१०।५३।४३	१व०१।५७।५३	११व०३।२६।२८	९।०५।२८।३७
२६ श	२।१९।२६	६।०८।५१।३२	३।२७।५०।४२	३।०२।२२।०५	६।२४।३४।३४	१व२६।४०।०९	७।१५।४०।५४	१०व१८।५१।२१	११।१०।५०।३२	१व०१।५५।३९	११व०३।२५।११	९।०५।२९।००
२७ र	२।२३।२३	६।०९।५१।२३	४।०९।५४।०६	३।०२।४६।०८	६।२६।०३।०१	१व२६।३६।४४	७।१६।५३।११	१०व१८।४९।१८	११।१०।४७।२१	१व०१।५३।२४	११व०३।२३।५५	९।०५।२९।२५
२८ चं	२।२७।१९	६।१०।५१।१७	४।२१।४७।३९	३।०३।०९।४९	६।२७।३०।५२	१व२६।३३।०८	७।१८।०५।२६	१०व१८।४७।२१	११।१०।४४।१०	१व०१।५१।०७	११व०३।२२।४०	९।०५।२९।५१
२९ मं	२।३१।१६	६।११।५१।१२	५।०३।३५।४०	३।०३।३३।०६	६।२८।५८।०७	१व२६।२९।२०	७।१९।१७।३९	१०व१८।४५।३०	११।१०।४१।००	१व०१।४८।५०	११व०३।२१।२७	९।०५।३०।२०
३० बु	२।३५।१२	६।१२।५१।१०	५।१५।२१।५७	३।०३।५६।००	७।००।२४।४३	१व२६।२५।२०	७।२०।२९।५०	१०व१८।४३।४४	११।१०।३७।४९	१व०१।४६।३१	११व०३।२०।१५	९।०५।३०।५०
३१ गु	२।३९।०९	६।१३।५१।१०	५।२७।०९।४४	३।०४।१८।२९	७।०१।५०।३९	१व२६।२१।१०	७।२१।४१।५९	१०व१८।४२।०४	११।१०।३४।३८	१व०१।४४।१०	११व०३।१९।०४	९।०५।३१।२२

नवम्बर सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि. सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ शु	२।४३।०५	६।१४।५१।११	६।०९।०१।३८	३।०४।४०।३४	७।०३।१५।५४	१व२६।१६।४९	७।२२।५४।०६	१०व१८।४०।३१	११।१०।३१।२८	१व०१।४१।४९	११व०३।१७।५५	९।०५।३१।५५
२ श	२।४७।०२	६।१५।५१।१५	६।२०।५९।४५	३।०५।०२।१४	७।०४।४०।२६	१व२६।१२।१६	७।२४।०६।१०	१०व१८।३९।०३	११।१०।२८।१७	१व०१।३९।२७	११व०३।१६।४७	९।०५।३२।३०
३ र	२।५०।५९	६।१६।५१।२०	७।०३।०५।४३	३।०५।२३।२७	७।०६।०४।११	१व२६।०७।३४	७।२५।१८।१२	१०व१८।३७।४१	११।१०।२५।०६	१व०१।३७।०३	११व०३।१५।४१	९।०५।३३।०७
४ चं	२।५४।५५	६।१७।५१।२७	७।१५।२०।५७	३।०५।४४।१५	७।०७।२७।०६	१व२६।०२।४०	७।२६।३०।१२	१०व१८।३६।२५	११।१०।२१।५५	१व०१।३४।३९	११व०३।१४।३६	९।०५।३३।४६
५ मं	२।५८।५२	६।१८।५१।३६	७।२७।४६।४४	३।०६।०४।३५	७।०८।४९।०८	१व२५।५७।३७	७।२७।४२।०९	१०व१८।३५।१५	११।१०।१८।४४	१व०१।३२।१४	११व०३।१३।३३	९।०५।३४।२६
६ बु	३।०२।४८	६।१९।५१।४७	८।१०।२४।२८	३।०६।२४।२८	७।१०।१०।१२	१व२५।५२।२३	७।२८।५४।०३	१०व१८।३४।१२	११।१०।१५।३४	१व०१।२९।४८	११व०३।१२।३१	९।०५।३५।०८
७ गु	३।०६।४५	६।२०।५१।५९	८।२३।१५।४५	३।०६।४३।५४	७।११।३०।१३	१व२५।४७।००	८।००।०५।५४	१०व१८।३३।१४	११।१०।१२।२३	१व०१।२७।२१	११व०३।११।३१	९।०५।३५।५२
८ शु	३।१०।४१	६।२१।५२।१२	९।०६।२२।२२	३।०७।०२।५०	७।१२।४९।०४	१व२५।४१।२७	८।०१।१७।४३	१०व१८।३२।२३	११।१०।०९।१२	१व०१।२४।५४	११व०३।१०।३३	९।०५।३६।३७
९ श	३।१४।३८	६।२२।५२।२७	९।१९।४६।१२	३।०७।२१।१८	७।१४।०६।३८	१व२५।३५।४४	८।०२।२९।२८	१०व१८।३१।३८	११।१०।०६।०१	१व०१।२२।२६	११व०३।०९।३६	९।०५।३७।२४
१० र	३।१८।३४	६।२३।५२।४४	१०।०३।२८।५७	३।०७।३९।१७	७।१५।२२।४७	१व२५।२९।५२	८।०३।४१।१०	१०व१८।३१।००	११।१०।०२।५०	१व०१।१९।५८	११व०३।०८।४१	९।०५।३८।१३
११ चं	३।२२।३१	६।२४।५३।०२	१०।१७।३१।३७	३।०७।५६।४५	७।१६।३७।२१	१व२५।२३।५१	८।०४।५२।४९	१०व१८।३०।२८	११।०९।५९।४०	१व०१।१७।२९	११व०३।०७।४८	९।०५।३९।०३
१२ मं	३।२६।२८	६।२५।५३।२१	११।०१।५३।५६	३।०८।१३।४३	७।१७।५०।०९	१व२५।१७।४२	८।०६।०४।२४	१०व१८।३०।०१	११।०९।५६।२९	१व०१।१४।५९	११व०३।०६।५६	९।०५।३९।५५
१३ बु	३।३०।२४	६।२६।५३।४२	११।१६।३३।४५	३।०८।३०।०९	७।१९।००।५८	१व२५।११।२४	८।०७।१५।५६	१०व१८।२९।४२	११।०९।५३।१८	१व०१।१२।३०	११व०३।०६।०६	९।०५।४०।४८
१४ गु	३।३४।२१	६।२७।५४।०४	०।०१।२६।३८	३।०८।४६।०४	७।२०।०९।३३	१व२५।०४।५८	८।०८।२७।२३	१०व१८।२९।२८	११।०९।५०।०७	१व०१।०९।५९	११व०३।०५।१८	९।०५।४१।४३
१५ शु	३।३८।१७	६।२८।५४।२८	०।१६।२५।४६	३।०९।०१।२७	७।२१।१५।३८	१व२४।५८।२४	८।०९।३८।४७	१०व१८।२९।२१	११।०९।४६।५७	१व०१।०७।२९	११व०३।०४।३२	९।०५।४२।४०
१६ श	३।४२।१४	६।२९।५४।५३	१।०१।२२।४१	३।०९।१६।१६	७।२२।१८।५३	१व२४।५१।४२	८।१०।५०।०७	१०।१८।२९।२०	११।०९।४३।४६	१व०१।०४।५७	११व०३।०३।४७	९।०५।४३।३८
१७ र	३।४६।१०	७।००।५५।२०	१।१६।०८।२७	३।०९।३०।३२	७।२३।१८।५६	१व२४।४४।५२	८।११।०१।२३	१०।१८।२९।२६	११।०९।४०।३५	१व०१।०२।२२	११व०३।०३।०५	९।०५।४४।३८
१८ चं	३।५०।०७	७।०१।५५।४९	२।००।३५।०५	३।०९।४४।१३	७।२४।१५।२२	१व२४।३७।५६	८।१३।१२।३४	१०।१८।२९।३८	११।०९।३७।२४	१व०१।००।०५	११व०३।०२।२४	९।०५।४५।३९
१९ मं	३।५४।०३	७।०२।५६।१९	२।१४।३६।५२	३।०९।५७।१९	७।२५।०७।४३	१व२४।३०।५२	८।१४।२३।४२	१०।१८।२९।५६	११।०९।३४।१३	१व००।५७।३२	११व०३।०१।४५	९।०५।४६।४२
२० बु	३।५८।००	७।०३।५६।५१	२।२८।१०।५५	३।१०।०९।४९	७।२५।५५।२६	१व२४।२३।४२	८।१५।३४।४५	१०।१८।३०।२०	११।०९।३१।०२	१व००।५५।०१	११व०३।०१।०८	९।०५।४७।४६
२१ गु	४।०१।५७	७।०४।५७।२५	३।११।१७।१५	३।१०।२१।४२	७।२६।३७।५८	१व२४।१६।२५	८।१६।४५।४४	१०।१८।३०।५१	११।०९।२७।५१	१व००।५२।३१	११व०३।००।३२	९।०५।४८।५२
२२ शु	४।०५।५३	७।०५।५८।००	३।२३।५८।१३	३।१०।३२।५७	७।२७।१४।३८	१व२४।०९।०३	८।१७।५६।३९	१०।१८।३१।२८	११।०९।२४।४०	१व००।५०।०१	११व०२।५९।५९	९।०५।४९।५९
२३ श	४।०९।५०	७।०६।५८।३७	४।०६।१७।५३	३।१०।४३।३४	७।२७।४४।४४	१व२४।०१।३५	८।११।०७।२९	१०।१८।३२।१२	११।०९।२१।३०	१व००।४७।३२	११व०२।५९।२७	९।०५।५१।०७
२४ र	४।१३।४६	७।०७।५९।१६	४।१८।२१।१६	३।१०।५३।३२	७।२८।०७।३१	१व२३।५४।०१	८।२०।१८।१४	१०।१८।३३।०२	११।०९।१८।१९	१व००।४५।०२	११व०२।५८।५८	९।०५।५२।१८
२५ चं	४।१७।४३	७।०८।५९।५७	५।००।१३।४६	३।११।०२।५०	७।२८।२२।११	१व२३।४६।२२	८।२१।२८।५५	१०।१८।३३।५८	११।०९।१५।०८	१व००।४२।३४	११व०२।५८।३०	९।०५।५३।२९
२६ मं	४।२१।३९	७।१०।००।३९	५।१२।००।४७	३।११।११।२७	७।२८।२७।५९	१व२३।३८।३९	८।२२।३९।३०	१०।१८।३५।००	११।०९।११।५८	१व००।४०।०६	११व०२।५८।०५	९।०५।५४।४२
२७ बु	४।२५।३६	७।११।०१।२३	५।२३।४७।१८	३।११।१९।२२	७व२८।२४।०८	१व२३।३०।५१	८।२३।५०।०१	१०।१८।३६।०९	११।०९।०८।४७	१व००।३७।३८	११व०२।५७।४१	९।०५।५५।५७
२८ गु	४।२९।३२	७।१२।०२।०८	६।०५।३७।४१	३।११।२६।३५	७व२८।०९।५९	१व२३।२२।५९	८।२५।००।२६	१०।१८।३७।२५	११।०९।०५।३६	१व००।३५।११	११व०२।५७।१९	९।०५।५७।१२
२९ शु	४।३३।२९	७।१३।०२।५५	६।१७।३५।२८	३।११।३३।०५	७व२७।४५।०४	१व२३।१५।०३	८।२६।१०।४६	१०।१८।३८।४६	११।०९।०२।२५	१व००।३२।४५	११व०२।५७।०७	९।०५।५८।३०
३० श	४।३७।२६	७।१४।०३।४३	६।२९।४३।१८	३।११।३८।५१	७व२७।०९।०८	१व२३।०७।०४	८।२७।२१।००	१०।१८।४०।१४	११।०८।५९।१५	१व००।३०।१९	११व०२।५६।४२	९।०५।५९।४८

दिसम्बर सन् २०२४ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि. सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ र	४।४१।२२	७।१५।०४।३२	७।१२।०२।५०	३।११।४३।५३	७व२६।२२।१९	१व२२।५९।०२	८।२८।३१।०९	१०।१८।४१।४८	११।०८।५६।०४	१व००।२७।५५	११व०२।५६।२६	९।०६।०१।०८
२ चं	४।४५।१९	७।१६।०५।२२	७।२४।३४।४९	३।११।४८।१०	७व२५।२५।०९	१व२२।५०।५८	८।२९।४१।११	१०।१८।४३।२९	११।०८।५२।५३	१व००।२५।३१	११व०२।५६।१३	९।०६।०२।२९
३ मं	४।४९।१५	७।१७।०६।१४	८।०७।१९।१७	३।११।५१।४१	७व२४।१८।४५	१व२२।४२।५१	९।००।५१।०७	१०।१८।४५।१५	११।०८।४९।४२	१व००।२३।०९	११व०२।५६।०१	९।०६।०३।५१
४ बु	४।५३।१२	७।१८।०७।०७	८।२०।१५।४८	३।११।५४।२६	७व२३।०४।४२	१व२२।३४।४३	९।०२।००।५७	१०।१८।४७।०८	११।०८।४६।३१	१व००।२०।४७	११व०२।५५।५२	९।०६।०५।१५
५ गु	४।५७।०८	७।१९।०८।००	९।०३।२३।४९	३।११।५६।२४	७व२१।४५।१०	१व२२।२६।३४	९।०३।१०।४०	१०।१८।४९।०७	११।०८।४३।२०	१व००।१८।२७	११व०२।५५।४५	९।०६।०६।४०
६ शु	५।०१।०५	७।२०।०८।५५	९।१६।४२।५७	३।११।५७।३५	७व२०।२२।४०	१व२२।१८।२३	९।०४।२०।१५	१०।१८।५१।१३	११।०८।४०।०९	१व००।१६।०७	११व०२।५५।३९	९।०६।०८।०६
७ श	५।०५।०१	७।२१।०९।५०	१०।००।१३।१२	३व११।५७।५८	७व१८।५९।५९	१व२२।१०।१२	९।०५।२९।४३	१०।१८।५३।२४	११।०८।३६।५८	१व००।१३।४९	११व०२।५५।३६	९।०६।०९।३४
८ र	५।०८।५८	७।२२।१०।४६	१०।१३।५४।५९	३व११।५७।३२	७व१७।३९।५६	१व२२।०२।०२	९।०६।३९।०४	१०।१८।५५।४१	११।०८।३३।४७	१व००।११।३२	११व०२।५५।३५	९।०६।११।०२
९ चं	५।१२।५५	७।२३।११।४३	१०।२७।४८।५१	३व११।५६।१९	७व१६।२५।०६	१व२१।५३।५१	९।०७।४८।१६	१०।१८।५८।०५	११।०८।३०।३७	१व००।०९।१७	११।०२।५५।३६	९।०६।१२।३२
१० मं	५।१६।५१	७।२४।१२।४०	११।११।५५।०६	३व११।५४।१६	७व१५।१७।४६	१व२१।४५।४१	९।०८।५७।२०	१०।१९।००।३४	११।०८।२७।२६	१व००।०७।०३	११।०२।५५।३९	९।०६।१४।०३
११ बु	५।२०।४८	७।२५।१३।३८	११।२६।१३।१११	३व११।५१।२४	७व१४।१९।३७	१व२१।३७।३१	९।१०।०६।१५	१०।१९।०३।०९	११।०८।२४।१५	१व००।०४।५१	११।०२।५५।४४	९।०६।१५।३५
१२ गु	५।२४।४४	७।२६।१४।३६	०।१०।४१।०५	३व११।४७।४३	७व१३।३१।५२	१व२१।२९।२३	९।११।१५।०१	१०।१९।०५।५१	११।०८।२१।०५	१व००।०२।४०	११।०२।५५।५१	९।०६।१७।०८
१३ शु	५।२८।४१	७।२७।१५।३५	०।२५।१५।००	३व११।४३।१२	७व१२।५५।११	१व२१।२१।१७	९।१२।२३।३७	१०।१९।०८।३८	११।०८।१७।५४	१व००।००।३०	११।०२।५६।००	९।०६।१८।४२
१४ श	५।३२।३७	७।२८।१६।३५	१।०९।४९।२०	३व११।३७।५२	७व११।२९।४४	१व२१।१३।१३	९।१३।३२।०४	१०।१९।११।३१	११।०८।१४।४३	०व२९।५८।२३	११।०२।५६।१२	९।०६।२०।१७
१५ र	५।३६।३४	७।२९।१७।३५	१।२४।१७।१८	३व११।३१।४१	७व१२।१५।२०	१व२१।०५।११	९।१४।४०।२१	१०।१९।१४।२९	११।०८।११।३२	०व२९।५६।१७	११।०२।५६।२५	९।०६।२१।५३
१६ चं	५।४०।३१	८।००।१८।३६	१।०८।३१।५६	३व११।२४।४०	७।११।११।३१	१व२०।५७।१३	९।१५।४८।२७	१०।१९।१७।३४	११।०८।०८।२१	०व२९।५४।१३	११।०२।५६।४१	९।०६।२३।३१
१७ मं	५।४४।२७	८।०१।११।३८	२।२२।२७।१८	३व११।१६।४९	७।११।१७।३७	१व२०।४९।१७	९।१६।५६।२३	१०।१९।२०।४४	११।०८।०५।१०	०व२९।५२।१०	११।०२।५६।५८	९।०६।२५।०९
१८ बु	५।४८।२४	८।०२।२०।४१	३।०५।५९।२५	३व११।०८।०७	७।११।३२।५४	१व२०।४१।२५	९।१८।०४।०८	१०।१९।२३।५९	११।०८।०१।५९	०व२९।५०।१०	११।०२।५७।१८	९।०६।२६।४८
१९ गु	५।५२।२०	८।०३।२१।४४	३।१९।०६।४५	३व१०।५८।३६	७।१२।५६।३२	१व२०।३३।३६	९।१९।११।४२	१०।१९।२७।२१	११।०७।५८।४८	०व२९।४८।११	११।०२।५७।४०	९।०६।२८।२८
२० शु	५।५६।१७	८।०४।२२।४८	४।०१।५०।१०	३व१०।४८।१४	७।१३।२७।४३	१व२०।२५।५२	९।२०।१९।०५	१०।१९।३०।४७	११।०७।५५।३७	०व२९।४६।१४	११।०२।५८।०४	९।०६।३०।०९
२१ श	६।००।१३	८।०५।२३।५३	४।१४।१२।३१	३व१०।३७।०२	७।१४।०५।३८	१व२०।१८।१३	९।२१।२६।१५	१०।१९।३४।२०	११।०७।५२।२७	०व२९।४४।१९	११।०२।५८।३०	९।०६।३१।५१
२२ र	६।०४।१०	८।०६।२४।५८	४।२६।१८।०६	३व१०।२५।०१	७।१४।४९।३४	१व२०।१०।३८	९।२२।३३।१४	१०।१९।३७।५७	११।०७।४९।१६	०व२९।४२।२७	११।०२।५८।५८	९।०६।३३।३३
२३ चं	६।०८।०६	८।०७।२६।०५	५।०८।१२।०७	३व१०।१२।१२	७।१५।३८।५१	१व२०।०३।०८	९।२३।४०।००	१०।१९।४१।४०	११।०७।४६।०५	०व२९।४०।३६	११।०२।५९।२८	९।०६।३५।१७
२४ मं	६।१२।०३	८।०८।२७।१२	५।२०।००।११	३व०९।५८।३४	७।१६।३२।५०	१व१९।५५।४४	९।२४।४६।३३	१०।१९।४५।२९	११।०७।४२।५४	०व२९।३८।४८	११।०३।००।००	९।०६।३७।०१
२५ बु	६।१५।६०	८।०९।२८।२०	६।०१।४७।५५	३व०९।४४।०९	७।१७।३०।५९	१व१९।४८।२६	९।२५।५२।५३	१०।१९।४९।२३	११।०७।३९।४४	०व२९।३७।०२	११।०३।००।३४	९।०६।३८।४६
२६ गु	६।१९।५६	८।१०।२१।२८	६।१३।४०।३६	३व०९।२८।५७	७।१८।३२।४८	१व१९।४१।१५	९।२६।५८।५९	१०।१९।५३।२२	११।०७।३६।३३	०व२९।३५।१८	११।०३।०१।१०	९।०६।४०।३२
२७ शु	६।२३।५३	८।११।३०।३७	६।२५।४२।५२	३व०९।१३।००	७।१९।३७।५१	१व१९।३४।०९	९।२८।०४।५१	१०।१९।५७।२६	११।०७।३३।२२	०व२९।३३।३६	११।०३।०१।४९	९।०६।४२।१९
२८ श	६।२७।४९	८।१२।३१।४६	७।०७।५८।२४	३व०८।५६।१९	७।२०।४५।४६	१व१९।२७।११	९।२९।१०।२९	१०।२०।०१।३६	११।०७।३०।११	०व२९।३१।५७	११।०३।०२।२९	९।०६।४४।०६
२९ र	६।३१।४६	८।१३।३२।५६	७।२०।२९।४४	३व०८।३८।५४	७।२१।५६।११	१व१९।२०।२०	१०।००।१५।५१	१०।२०।०५।५०	११।०७।२७।००	०व२९।३०।२०	११।०३।०३।११	९।०६।४५।५४
३० चं	६।३५।४२	८।१४।३४।०६	८।०३।१७।५६	३व०८।२०।४९	७।२३।०८।५०	१व१९।१३।३६	१०।०१।२०।५८	१०।२०।१०।१०	११।०७।२३।४९	०व२९।२८।४६	११।०३।०३।५६	९।०६।४७।४३
३१ मं	६।३९।३९	८।१५।३५।१६	८।१६।२२।४४	३व०८।०२।०४	७।२४।२३।२७	१व१९।०७।००	१०।०२।२५।४८	१०।२०।१४।३४	११।०७।२०।३८	०व२९।२७।१४	११।०३।०४।४२	९।०६।४९।३२

जनवरी सन् २०२५ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रात: घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल गत्रि १२बजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ बु	६।४३।३५	८।१६।३६।२७	८।२९।४२।३६	३व०७।४२।४१	७।२५।३९।५०	१व१९।००।३३	१०।०३।३०।२१	१०।२०।१९।०४	११।०७।१७।२७	०व२९।२५।४५	११।०३।०५।३०	९।०६।५१।२२
२ गु	६।४७।३१	८।१७।३७।३७	९।१३।१५।०८	३व०७।२२।४२	७।२६।५७।४६	१व१८।५४।१३	१०।०४।३४।३७	१०।२०।२३।३८	११।०७।१४।१७	०व२९।२४।१८	११।०३।०६।२१	९।०६।५३।१३
३ शु	६।५१।२९	८।१८।३८।४७	९।२६।५७।३६	३व०७।०२।१०	७।२८।१७।०५	१व१८।४८।०३	१०।०५।३८।३५	१०।२०।२८।१७	११।०७।११।०६	०व२९।२२।५४	११।०३।०७।१३	९।०६।५५।०४
४ श	६।५५।२५	८।१९।३९।५८	१०।१०।४७।३०	३व०६।४१।०६	७।२९।३७।४०	१व१८।४२।०१	१०।०६।४२।१४	१०।२०।३३।०१	११।०७।०७।५५	०व२९।२१।३२	११।०३।०८।०८	९।०६।५६।५५
५ र	६।५९।२२	८।२०।४१।०८	१०।२४।४२।५२	३व०६।१९।३३	८।००।५९।२३	१व१८।३६।०८	१०।०७।४५।३३	१०।२०।३७।५०	११।०७।०४।४४	०व२९।२०।१४	११।०३।०९।०४	९।०६।५८।४७
६ चं	७।०३।१८	८।२१।४२।१७	११।०८।४२।२८	३व०५।५७।३४	८।०२।२२।०८	१व१८।३०।२५	१०।०८।४८।३१	१०।२०।४२।४३	११।०७।०१।३३	०व२९।१८।५८	११।०३।१०।०२	९।०७।००।४०
७ मं	७।०७।१५	८।२२।४३।२६	११।२२।४५।३७	३व०५।३५।१०	८।०३।४५।४९	१व१८।२४।५२	१०।०९।५१।०८	१०।२०।४७।४१	११।०६।५८।२३	०व२९।१७।४४	११।०३।११।०२	९।०७।०२।३३
८ बु	७।११।११	८।२३।४४।३५	०।०६।५१।४५	३व०५।१२।२५	८।०५।१०।२२	१व१८।१९।२८	१०।१०।५३।२४	१०।२०।५२।४३	११।०६।५५।१२	०व२९।१६।३४	११।०३।१२।०४	९।०७।०४।२६
९ गु	७।१५।०८	८।२४।४५।४३	०।२०।५९।५८	३व०४।४९।२१	८।०६।३५।४३	१व१८।१४।१५	१०।११।५५।१६	१०।२०।५७।४९	११।०६।५२।०१	०व२९।१५।२६	११।०३।१३।०८	९।०७।०६।२०
१० शु	७।१९।०४	८।२५।४६।५१	१।०५।०८।३२	३व०४।२६।००	८।०८।०१।४९	१व१८।०९।११	१०।१२।५६।४४	१०।२१।०३।००	११।०६।४८।५०	०व२९।१४।२१	११।०३।१४।१४	९।०७।०८।१४
११ श	७।२३।०१	८।२६।४७।५८	१।१९।१४।४१	३व०४।०२।२६	८।०९।२८।३७	१व१८।०४।१८	१०।१३।५७।४८	१०।२१।०८।१५	११।०६।४५।३९	०व२९।१३।१९	११।०३।१५।२२	९।०७।१०।०९
१२ र	७।२६।५८	८।२७।४९।०५	२।०३।१४।४३	३व०३।३८।४२	८।१०।५६।०६	१व१७।५९।३६	१०।१४।५८।२६	१०।२१।१३।३४	११।०६।४२।२८	०व२९।१२।२०	११।०३।१६।३१	९।०७।१२।०३
१३ चं	७।३०।५४	८।२८।५०।११	२।१७।०४।२४	३व०३।१४।४९	८।१२।२४।१२	१व१७।५५।०४	१०।१५।५८।३७	१०।२१।१८।५७	११।०६।३९।१७	०व२९।११।२४	११।०३।१७।४३	९।०७।१३।५८
१४ मं	७।३४।५१	८।२९।५१।१७	३।००।३९।४२	३व०२।५०।५०	८।१३।५२।५५	१व१७।५०।४३	१०।१६।५८।२१	१०।२१।२४।२५	११।०६।३६।०७	०व२९।१०।३१	११।०३।१८।५६	९।०७।१५।५३
१५ बु	७।३८।४७	९।००।५२।२२	३।१३।५७।२४	३व०२।२६।४९	८।१५।२२।१४	१व१७।४६।३३	१०।१७।५७।३७	१०।२१।२९।५६	११।०६।३२।५६	०व२९।०९।४०	११।०३।२०।११	९।०७।१७।४९
१६ गु	७।४२।४४	९।०१।५३।२८	३।२६।५५।४३	३व०२।०२।४९	८।१६।५२।०९	१व१७।४२।३४	१०।१८।५६।२३	१०।२१।३५।३१	११।०६।२९।४५	०व२९।०८।५३	११।०३।२१।२७	९।०७।१९।४४
१७ शु	७।४६।४०	९।०२।५४।३२	४।०९।३४।३३	३व०१।३८।५१	८।१८।२२।३७	१व१७।३८।४६	१०।१९।५४।३९	१०।२१।४१।१०	११।०६।२६।३४	०व२९।०८।०९	११।०३।२२।४६	९।०७।२१।४०
१८ श	७।५०।३७	९।०३।५५।३७	४।२१।५५।२७	३व०१।१४।५९	८।१९।५३।४०	१व१७।३५।१०	१०।२०।५२।२४	१०।२१।४६।५३	११।०६।२३।२३	०व२९।०७।२७	११।०३।२४।०६	९।०७।२३।३६
१९ र	७।५४।३४	९।०४।५६।४१	५।०४।०१।२३	३व००।५१।१५	८।२१।२५।१६	१व१७।३१।४५	१०।२१।४९।३७	१०।२१।५२।४०	११।०६।२०।१३	०व२९।०६।४९	११।०३।२५।२८	९।०७।२५।३२
२० चं	७।५८।३०	९।०५।५७।४४	५।१५।५६।३०	३व००।२७।४३	८।२२।५७।२७	१व१७।२८।३२	१०।२२।४६।१५	१०।२१।५८।३०	११।०६।१७।०२	०व२९।०६।१४	११।०३।२६।५१	९।०७।२७।२८
२१ मं	८।०२।२७	९।०६।५८।४८	५।२७।४५।४०	३व००।०४।२४	८।२४।३०।११	१व१७।२५।३०	१०।२३।४२।१९	१०।२२।०४।२४	११।०६।१३।५१	०व२९।०५।४२	११।०३।२८।१६	९।०७।२९।२३
२२ बु	८।०६।२३	९।०७।५९।५१	६।०९।३४।१४	२व२९।४१।२३	८।२६।०३।३०	१व१७।२२।४०	१०।२४।३७।४८	१०।२२।१०।२१	११।०६।१०।४१	०व२९।०५।१२	११।०३।२९।४३	९।०७।३१।१९
२३ गु	८।१०।२०	९।०९।००।५३	६।२१।२७।३९	२व२९।१८।४०	८।२७।३७।२३	१व१७।२०।०२	१०।२५।३२।३८	१०।२२।१६।२२	११।०६।०७।३०	०व२९।०४।४६	११।०३।३१।१२	९।०७।३३।१४
२४ शु	८।१४।१६	९।१०।०१।५५	७।०३।३१।०९	२व२८।५६।२०	८।२९।११।५२	१व१७।१७।३६	१०।२६।२६।५१	१०।२२।२२।२७	११।०६।०४।१९	०व२९।०४।२४	११।०३।३२।४२	९।०७।३५।१०
२५ श	८।१८।१३	९।११।०२।५७	७।१५।४९।२५	२व२८।३४।२३	९।००।४६।५७	१व१७।१५।२२	१०।२७।२०।२३	१०।२२।२८।३४	११।०६।०१।०८	०व२९।०४।०४	११।०३।३४।१३	९।०७।३७।०६
२६ र	८।२२।०९	९।१२।०३।५८	७।२८।२६।०९	२व२८।१२।५४	९।०२।२२।३८	१व१७।१३।२०	१०।२८।१३।१४	१०।२२।३४।४५	११।०५।५७।५७	०व२९।०३।४७	११।०३।३५।४७	९।०७।३९।०२
२७ चं	८।२६।०६	९।१३।०४।५८	८।११।२३।४१	२व२७।५१।५३	९।०३।५८।५६	१व१७।११।३०	१०।२९।०५।२१	१०।२२।४०।५९	११।०५।५४।४६	०व२९।०३।३४	११।०३।३७।२१	९।०७।४०।५८
२८ मं	८।३०।०३	९।१४।०५।५८	८।२४।४२।४०	२व२७।३१।२४	९।०५।३५।५३	१व१७।०९।५२	१०।२९।५६।४४	१०।२२।४७।१७	११।०५।५१।३५	०व२९।०३।२४	११।०३।३८।५८	९।०७।४२।५३
२९ बु	८।३३।५९	९।१५।०६।५६	९।०८।२१।५३	२व२७।११।२७	९।०७।१३।२८	१व१७।०८।२७	११।००।४७।२०	१०।२२।५३।३७	११।०५।४८।२४	०व२९।०३।१६	११।०३।४०।३६	९।०७।४४।४९
३० गु	८।३७।५६	९।१६।०७।५४	९।२२।१८।२१	२व२६।५२।०७	९।०८।५१।४३	१व१७।०७।१४	११।०१।३७।०८	१०।२३।००।००	११।०५।४५।१४	०व२९।०३।१३	११।०३।४२।१५	९।०७।४६।४४
३१ शु	८।४१।५२	९।१७।०८।५१	१०।०६।२७।४७	२व२६।३३।२३	९।१०।३०।३९	१व१७।०६।१३	११।०२।१२।०५	१०।२३।०६।२७	११।०५।४२।०३	०।२९।०३।१२	११।०३।४३।५६	९।०७।४८।३९

फरवरी सन् २०२५ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२वजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ श	८।४५।४९	९।१८।०९।४७	१०।२०।४५।१५	२व२६।१५।१८	९।१२।१०।१५	१व१७।०५।२५	११।०३।१४।१०	१०।२३।१२।५६	११।०५।३८।५२	०।२९।०३।१४	११।०३।४५।३८	९।०७।५०।३४
२ र	८।४९।४५	९।१९।१०।४२	११।०५।०५।५४	२व२५।५७।५४	९।१३।५०।३४	१व१७।०४।४९	११।०४।०१।२०	१०।२३।१९।२८	११।०५।३५।४१	०।२९।०३।२०	११।०३।४७।२१	९।०७।५२।२९
३ चं	८।५३।४२	९।२०।११।३५	११।१९।२५।३९	२व२५।४१।११	९।१५।३१।३७	१व१७।०४।२६	११।०४।४७।३३	१०।२३।२६।०२	११।०५।३२।३१	०।२९।०३।२९	११।०३।४९।०६	९।०७।५४।२३
४ मं	८।५७।३८	९।२१।१२।२७	०।०३।४१।२३	२व२५।२५।११	९।१७।१३।२२	१व१७।०४।१४	११।०५।३२।४६	१०।२३।३२।३९	११।०५।२९।२०	०।२९।०३।४१	११।०३।५०।५२	९।०७।५६।१७
५ बु	९।०१।३५	९।२२।१३।१७	०।१७।५०।५८	२व२५।०९।५६	९।१८।५५।५३	१।१७।०४।१५	११।०६।१६।५८	१०।२३।३९।१९	११।०५।२६।०९	०।२९।०३।५६	११।०३।५२।४०	९।०७।५८।१०
६ गु	९।०५।३२	९।२३।१४।०६	१।०१।५३।०४	२व२४।५५।२६	९।२०।३९।०८	१।१७।०४।२९	११।०७।००।०५	१०।२३।४६।०१	११।०५।२२।५९	०।२९।०४।१५	११।०३।५४।२९	९।०८।००।०३
७ शु	९।०९।२८	९।२४।१४।५४	१।१५।४६।४१	२व२४।४१।४१	९।२२।२३।०९	१।१७।०४।५४	११।०७।४२।०४	१०।२३।५२।४५	११।०५।१९।४८	०।२९।०४।३६	११।०३।५६।१९	९।०८।०१।५६
८ श	९।१३।२५	९।२५।१५।४०	१।२९।३०।५६	२व२४।२८।४३	९।२४।०७।५५	१।१७।०५।३२	११।०८।२२।५४	१०।२३।५९।३२	११।०५।१६।३७	०।२९।०५।०१	११।०३।५८।१०	९।०८।०३।४८
९ र	९।१७।२१	९।२६।१६।२४	२।१३।०४।४४	२व२४।१६।३१	९।२५।५३।२८	१।१७।०६।२२	११।०९।०२।३०	१०।२४।०६।२१	११।०५।१३।२६	०।२९।०५।२९	११।०४।००।०३	९।०८।०५।३९
१० चं	९।२१।१८	९।२७।१७।०७	२।२६।२६।५३	२व२४।०५।०७	९।२७।३९।४५	१।१७।०७।२४	११।०९।४०।५१	१०।२४।१३।१२	११।०५।१०।१५	०।२९।०६।००	११।०४।०१।५६	९।०८।०७।३०
११ मं	९।२५।१४	९।२८।१७।४८	३।०९।३६।१०	२व२३।५४।३०	९।२९।२६।४८	१।१७।०८।३८	११।१०।१७।५३	१०।२४।२०।०६	११।०५।०७।०४	०।२९।०६।३५	११।०४।०३।५१	९।०८।०९।२१
१२ बु	९।२९।११	९।२९।१८।२८	३।२२।३१।३३	२व२३।४४।४१	१०।०१।१४।३५	१।१७।१०।०४	११।१०।५३।३४	१०।२४।२७।०१	११।०५।०३।५३	०।२९।०७।१२	११।०४।०५।४७	९।०८।११।११
१३ गु	९।३३।०७	१०।००।१९।०७	४।०५।१२।३१	२व२३।३५।४०	१०।०३।०३।०४	१।१७।११।४२	११।११।२७।४९	१०।२४।३३।५८	११।०५।००।४३	०।२९।०७।५३	११।०४।०७।४४	९।०८।१३।००
१४ शु	९।३७।०४	१०।०१।१९।४४	४।१७।३९।१४	२व२३।२७।२६	१०।०४।५२।१३	१।१७।१३।३२	११।१२।००।३६	१०।२४।४०।५७	११।०४।५७।३२	०।२९।०८।३६	११।०४।०९।४२	९।०८।१४।४९
१५ श	९।४१।०१	१०।०२।२०।२०	४।२९।५२।४७	२व२३।२०।००	१०।०६।४१।५९	१।१७।१५।३३	११।१२।३१।५२	१०।२४।४७।५८	११।०४।५४।२१	०।२९।०९।२३	११।०४।११।४१	९।०८।१६।३७
१६ र	९।४४।५७	१०।०३।२०।५५	५।११।५५।०६	२व२३।१३।२२	१०।०८।३२।१९	१।१७।१७।४७	११।१३।०१।३३	१०।२४।५५।०१	११।०४।५१।११	०।२९।१०।१३	११।०४।१३।४१	९।०८।१८।२५
१७ चं	९।४८।५४	१०।०४।२१।२८	५।२३।४९।०६	२व२३।०७।३१	१०।१०।२३।०८	१।१७।२०।१२	११।१३।२९।३५	१०।२५।०२।०६	११।०४।४८।००	०।२९।११।०६	११।०४।१५।४२	९।०८।२०।११
१८ मं	९।५२।५०	१०।०५।२२।००	६।०५।३८।२३	२व२३।०२।२८	१०।१२।१४।१९	१।१७।२२।४८	११।१३।५५।५६	१०।२५।०९।१२	११।०४।४४।४९	०।२९।१२।०२	११।०४।१७।४५	९।०८।२१।५८
१९ बु	९।५६।४७	१०।०६।२२।३१	६।१७।२७।१५	२व२२।५८।११	१०।१४।०५।४६	१।१७।२५।३६	११।१४।२०।३१	१०।२५।१६।१९	११।०४।४१।३९	०।२९।१३।०१	११।०४।१९।४७	९।०८।२३।४३
२० गु	१०।००।४३	१०।०७।२३।००	६।२९।२०।२७	२व२२।५४।४१	१०।१५।५७।१९	१।१७।२८।३६	११।१४।४३।१७	१०।२५।२३।२९	११।०४।३८।२८	०।२९।१४।०३	११।०४।२१।५१	९।०८।२५।२८
२१ शु	१०।०४।४०	१०।०८।२३।२८	७।११।२२।५६	२व२२।५१।५८	१०।१७।४८।४८	१।१७।३१।४७	११।१५।०४।११	१०।२५।३०।३९	११।०४।३५।१७	०।२९।१५।०८	११।०४।२३।५६	९।०८।२७।११
२२ श	१०।०८।३६	१०।०९।२३।५५	७।२३।३९।३७	२व२२।५०।०१	१०।१९।४०।०१	१।१७।३५।०९	११।१५।२३।०८	१०।२५।३७।५१	११।०४।३२।०६	०।२९।१६।१६	११।०४।२६।०२	९।०८।२८।५४
२३ र	१०।१२।३३	१०।१०।२४।२१	८।०६।१४।५७	२व२२।४८।४९	१०।२१।३०।४१	१।१७।३८।४२	११।१५।४०।०५	१०।२५।४५।०५	११।०४।२८।५५	०।२९।१७।२७	११।०४।२८।०८	९।०८।३०।३७
२४ चं	१०।१६।३०	१०।११।२४।४५	८।१९।१२।३४	२व२२।४८।२३	१०।२३।२०।३३	१।१७।४२।२७	११।१५।५४।५८	१०।२५।५२।१९	११।०४।२५।४४	०।२९।१८।४१	११।०४।३०।१५	९।०८।३२।१८
२५ मं	१०।२०।२६	१०।१२।२५।०७	९।०२।३४।४२	२।२२।४८।४१	१०।२५।०९।१६	१।१७।४६।२३	११।१६।०७।४३	१०।२५।५९।३५	११।०४।२२।३४	०।२९।१९।५९	११।०४।३२।२३	९।०८।३३।५८
२६ बु	१०।२४।२३	१०।१३।२५।२८	९।१६।२१।४३	२।२२।४९।४४	१०।२६।५६।२८	१।१७।५०।२९	११।१६।१८।१७	१०।२६।०६।५२	११।०४।१९।२३	०।२९।२१।१९	११।०४।३४।३२	९।०८।३५।३८
२७ गु	१०।२८।१९	१०।१४।२५।४८	१०।००।३१।४८	२।२२।५१।३०	१०।२८।४१।४३	१।१७।५४।४७	११।१६।२६।३७	१०।२६।१४।१०	११।०४।१६।१२	०।२९।२२।४२	११।०४।३६।४१	९।०८।३७।१६
२८ शु	१०।३२।१६	१०।१५।२६।०६	१०।१५।००।५१	२।२२।५४।००	११।००।२४।३५	१।१७।५९।१५	११।१६।३२।३९	१०।२६।२१।२८	११।०४।१३।०१	०।२९।२४।०८	११।०४।३८।५१	९।०८।३८।५४

मार्च सन् २०२५ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रातः घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ श	१०।३६।१२	१०।१६।२६।२२	१०।२९।४२।५६	२।२२।५७।१२	११।०२।०४।३४	१।१८।०३।५४	११।१६।३६।१९	१०।२६।२८।४८	११।०४।०९।५१	०।२९।२५।३६	११।०४।४१।०२	९।०८।४०।३१
२ र	१०।४०।०९	१०।१७।२६।३६	११।१४।३०।५८	२।२३।०१।०६	११।०३।४१।०७	१।१८।०८।४४	११।१६।३७।३६	१०।२६।३६।०८	११।०४।०६।४०	०।२९।२७।०८	११।०४।४३।१३	९।०८।४२।०६
३ चं	१०।४४।०५	१०।१८।२६।४९	११।२९।१७।४२	२।२३।०५।४२	११।०५।१३।४१	१।१८।१३।४४	११व१६।३६।२६	१०।२६।४३।३०	११।०४।०३।२९	०।२९।२८।४३	११।०४।४५।२५	९।०८।४३।४१
४ मं	१०।४८।०२	१०।१९।२६।५९	०।१३।५६।४३	२।२३।१०।५८	११।०६।४१।४१	१।१८।१८।५५	११व१६।३२।४७	१०।२६।५०।५१	११।०४।००।१९	०।२९।३०।२०	११।०४।४७।३७	९।०८।४५।१५
५ बु	१०।५१।५८	१०।२०।२७।०७	०।२८।२३।०१	२।२३।१६।५४	११।०८।०४।३४	१।१८।२४।१६	११व१६।२६।३८	१०।२६।५८।१४	११।०३।५७।०८	०।२९।३२।००	११।०४।४९।५०	९।०८।४६।४७
६ गु	१०।५५।५५	१०।२१।२७।१४	१।१२।३३।२२	२।२३।२३।२९	११।०९।२१।४३	१।१८।२९।४७	११व१६।१७।५७	१०।२७।०५।३७	११।०३।५३।५७	०।२९।३३।४३	११।०४।५२।०३	९।०८।४८।१८
७ शु	१०।५९।५२	१०।२२।२७।१८	१।२६।२६।०८	२।२३।३०।४३	११।१०।३२।३६	१।१८।३५।२८	११व१६।०६।४५	१०।२७।१३।००	११।०३।५०।४६	०।२९।३५।२९	११।०४।५४।१७	९।०८।४९।४९
८ श	११।०३।४८	१०।२३।२७।१९	२।१०।०१।०३	२।२३।३८।३४	११।११।३६।४१	१।१८।४१।१९	११व१५।५३।०२	१०।२७।२०।२४	११।०३।४७।३५	०।२९।३७।१७	११।०४।५६।३१	९।०८।५१।१८
९ र	११।०७।४५	१०।२४।२७।१९	२।२३।१८।४६	२।२३।४७।०२	११।१२।३३।३०	१।१८।४७।१९	११व१५।३६।५०	१०।२७।२७।४८	११।०३।४४।२४	०।२९।३९।०८	११।०४।५८।४५	९।०८।५२।४६
१० चं	११।११।४१	१०।२५।२७।१७	३।०६।२०।२५	२।२३।५६।०६	११।१३।२२।३५	१।१८।५३।३०	११व१५।१८।११	१०।२७।३५।१२	११।०३।४१।१४	०।२९।४१।०२	११।०५।०१।००	९।०८।५४।१२
११ मं	११।१५।३८	१०।२६।२७।१२	३।१९।०७।२६	२।२४।०५।४४	११।१४।०३।३६	१।१८।५९।५०	११व१४।५७।१०	१०।२७।४२।३६	११।०३।३८।०३	०।२९।४२।५८	११।०५।०३।१५	९।०८।५५।३८
१२ बु	११।१९।३४	१०।२७।२७।०५	४।०१।४१।१४	२।२४।१५।५८	११।१४।३६।१५	१।१९।०६।१९	११व१४।३३।५०	१०।२७।५०।००	११।०३।३४।५२	०।२९।४४।५७	११।०५।०५।३१	९।०८।५७।०२
१३ गु	११।२३।३१	१०।२८।२६।५७	४।१४।०३।१८	२।२४।२६।४४	११।१५।००।१९	१।१९।१२।५७	११व१४।०८।१८	१०।२७।५७।२४	११।०३।३१।४२	०।२९।४६।५८	११।०५।०७।४६	९।०८।५८।२५
१४ शु	११।२७।२८	१०।२९।२६।४६	४।२६।१५।०५	२।२४।३८।०४	११।१५।१५।४३	१।१९।१९।४५	११व१३।४०।४२	१०।२८।०४।४८	११।०३।२८।३१	०।२९।४९।०२	११।०५।१०।०२	९।०८।५९।४७
१५ श	११।३१।२४	११।००।२६।३३	५।०८।१८।१०	२।२४।४९।५६	११।१५।२२।२६	१।१९।२६।४२	११व१३।११।१०	१०।२८।१२।१२	११।०३।२५।२०	०।२९।५१।०८	११।०५।१२।१८	९।०९।०१।०८
१६ र	११।३५।२१	११।०१।२६।१८	५।२०।१४।१९	२।२५।०२।१९	११व१५।२०।३५	१।१९।३३।४७	११व१२।३९।५१	१०।२८।१९।३६	११।०३।२२।१०	०।२९।५३।१७	११।०५।१४।३५	९।०९।०२।२७
१७ चं	११।३९।१७	११।०२।२६।०२	६।०२।०५।४०	२।२५।१५।१३	११व१५।१०।२६	१।१९।४१।०२	११व१२।०६।५७	१०।२८।२७।००	११।०३।१८।५९	०।२९।५५।२८	११।०५।१६।५१	९।०९।०३।४५
१८ मं	११।४३।१४	११।०३।२५।४३	६।१३।५४।४४	२।२५।२८।३७	११व१४।५२।२१	१।१९।४८।२५	११व११।३२।३९	१०।२८।३४।२३	११।०३।१५।४८	०।२९।५७।४२	११।०५।१९।०८	९।०९।०५।०२
१९ बु	११।४७।१०	११।०४।२५।२३	६।२५।४४।३३	२।२५।४२।३१	११व१४।२६।५०	१।१९।५५।५७	११व१०।५७।११	१०।२८।४१।४७	११।०३।१२।३८	०।२९।५९।५८	११।०५।२१।२५	९।०९।०६।१७
२० गु	११।५१।०७	११।०५।२५।०१	७।०७।३८।३६	२।२५।५६।५३	११व१३।५४।३५	१।२०।०३।३७	११व१०।२०।४६	१०।२८।४९।०९	११।०३।०९।२७	१।००।०२।१६	११।०५।२३।३९	९।०९।०७।३१
२१ शु	११।५५।०३	११।०६।२४।३८	७।१९।४०।४९	२।२६।११।४३	११व१३।१६।२०	१।२०।११।२६	११व०९।४३।३९	१०।२८।५६।३२	११।०३।०६।१६	१।००।०४।३७	११।०५।२५।५२	९।०९।०८।४४
२२ श	११।५९।००	११।०७।२४।१२	८।०१।५५।२८	२।२६।२७।०२	११व१२।३३।०२	१।२०।१९।२३	११व०९।०६।०४	१०।२९।०३।५४	११।०३।०३।०५	१।००।०७।००	११।०५।२८।०९	९।०९।०९।५५
२३ र	१२।०२।५६	११।०८।२३।४५	८।१४।२६।५१	२।२६।४२।४७	११व११।४५।४१	१।२०।२७।२८	११व०८।२८।१७	१०।२९।११।१५	११।०२।५९।५४	१।००।०९।२५	११।०५।३०।२६	९।०९।११।०५
२४ चं	१२।०६।५३	११।०९।२३।१६	८।२७।१९।०६	२।२६।५८।५९	११व१०।५५।२०	१।२०।३५।४१	११व०७।५०।३४	१०।२९।१८।३५	११।०२।५६।४३	१।००।११।५२	११।०५।३२।४२	९।०९।१२।१४
२५ मं	१२।१०।५०	११।१०।२२।४५	९।१०।३५।३५	२।२७।१५।३६	११व१०।०३।०७	१।२०।४४।०२	११व०७।१३।०८	१०।२९।२५।५५	११।०२।५३।३३	१।००।१४।२२	११।०५।३४।५९	९।०९।१३।२१
२६ बु	१२।१४।४६	११।११।२२।१३	९।२४।१८।२६	२।२७।३२।४०	११व०९।१०।१०	१।२०।५२।३१	११व०६।३६।१६	१०।२९।३३।१४	११।०२।५०।२२	१।००।१६।५४	११।०५।३७।१५	९।०९।१४।२६
२७ गु	१२।१८।४३	११।१२।२१।३८	१०।०८।२७।५४	२।२७।५०।०८	११व०८।१७।३३	१।२१।०१।०८	११व०६।००।१२	१०।२९।४०।३२	११।०२।४७।११	१।००।१९।२७	११।०५।३९।३१	९।०९।१५।३०
२८ शु	१२।२२।३९	११।१३।२१।०२	१०।२३।०१।४५	२।२८।०८।०१	११व०७।२६।१८	१।२१।०९।५३	११व०५।२५।०९	१०।२९।४७।४९	११।०२।४४।०१	१।००।२२।०३	११।०५।४१।४७	९।०९।१६।३३
२९ श	१२।२६।३६	११।१४।२०।२४	११।०७।५५।०४	२।२८।२६।१८	११व०६।३७।२३	१।२१।१८।४५	११व०४।५१।२०	१०।२९।५५।०५	११।०२।४०।५०	१।००।२४।४१	११।०५।४४।०३	९।०९।१७।३४
३० र	१२।३०।३२	११।१५।१९।४४	११।२३।००।२७	२।२८।४४।५८	११व०५।५१।३६	१।२१।२७।४४	११व०४।१८।५६	११।००।०२।२०	११।०२।३७।३९	१।००।२७।२१	११।०५।४६।१८	९।०९।१८।३४
३१ चं	१२।३४।२९	११।१६।१९।०२	०।०८।०८।५४	२।२९।०४।०१	११व०५।०९।३९	१।२१।३६।५१	११व०३।४८।१०	११।००।०९।३४	११।०२।३४।२९	१।००।३०।०३	११।०५।४८।३३	९।०९।१९।३२

अप्रैल सन् २०२५ ई. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम प्रात: घं.५ मि.३० दैनिक ग्रहस्पष्ट।

तारीख़ /वार	सां.काल रात्रि १२बजे घं. मि.सै.	Sun सूर्य रा.अं.क.वि.	Moon चन्द्र रा.अं.क.वि.	Mars मंगल रा.अं.क.वि.	Mercury बुध रा.अं.क.वि.	Jupiter गुरु रा.अं.क.वि.	Venus शुक्र रा.अं.क.वि.	Saturn शनि रा.अं.क.वि.	Rahu राहु रा.अं.क.वि.	Harshel हर्षल रा.अं.क.वि.	Neptune नेपच्यून रा.अं.क.वि.	Pluto प्लूटो रा.अं.क.वि.
१ मं	१२।३८।२५	११।१७।१८।१८	०।२३।११।०१	२।२९।२३।२७	११व०४।३२।०९	१।२१।४६।०५	११व०३।१९।१०	१११०००।१६।४७	१११०२।३१।१८	१।००।३२।४७	११।०५।५०।४७	९।०९।२०।२८
२ बु	१२।४२।२२	११।१८।१७।३१	१।०७।५८।३३	२।२९।४३।१५	११व०३।५९।३१	१।२१।५५।२६	११व०२।५२।०५	१११०००।२३।५८	१११०२।२८।०७	१।००।३५।३३	११।०५।५३।०१	९।०९।२१।२३
३ गु	१२।४६।१९	१११।१९।१६।४२	१।२२।२५।२०	३।००।०३।२४	११व०३।३२।०६	१।२२।०४।५४	११व०२।२७।०३	१११०००।३१।०८	१११०२।२४।५६	१।००।३८।२०	११।०५।५५।१५	९।०९।२२।१७
४ शु	१२।५०।१५	११।२०।१५।५१	२।०६।२७।५६	३।००।२३।५४	११व०३।१०।०७	१।२२।१४।२९	११व०२।०४।१०	१११०००।३८।१६	१११०२।२१।४५	१।००।४१।१०	११।०५।५७।२९	९।०९।२३।०९
५ श	१२।५४।१२	११।२१।१४।५८	२।२०।०५।२६	३।००।४४।४४	११व०२।५३।४१	१।२२।२४।१११	११व०१।४३।३२	१११०००।४५।२३	१११०२।१८।३४	१।००।४४।०१	११।०५।५९।४२	९।०९।२३।५९
६ र	१२।५८।०८	११।२२।१४।०२	३।०३।१८।५९	३।०१।०५।५४	११व०२।४२।५०	१।२२।३३।५९	११व०१।२५।१३	१११०००।५२।२९	१११०२।१५।२४	१।००।४६।५४	११।०६।०१।५४	९।०९।२४।४७
७ चं	१३।०२।०५	११।२३।१३।०४	३।१६।११।०६	३।०१।२७।२३	११व०२।३७।३३	१।२२।४३।५३	११व०१।०९।१७	१११०००।५९।३२	१११०२।१२।१३	१।००।४९।४८	११।०६।०४।०६	९।०९।२५।३४
८ मं	१३।०६।०१	११।२४।१२।०३	३।२८।४५।०२	३।०१।४९।११	११।०२।३७।४४	१।२२।५३।५४	११व००।५५।४५	१११०१।०६।३४	१११०२।०९।०२	१।००।५२।४४	११।०६।०६।१७	९।०९।२६।२०
९ बु	१३।०९।५८	११।२५।११।०१	४।११।०४।१६	३।०२।११।१८	११।०२।४३।१७	१।२३।०४।०१	११व००।४४।४१	१११०१।१३।३५	१११०२।०५।५१	१।००।५५।४२	११।०६।०८।२८	९।०९।२७।०४
१० गु	१३।१३।५४	११।२६।०९।५६	४।२३।१२।११	३।०२।३३।४२	११।०२।५४।०१	१।२३।१४।१४	११व००।३६।०४	१११०१।२०।३३	१११०२।०२।४१	१।००।५८।४२	११।०६।१०।३८	९।०९।२७।४६
११ शु	१३।१७।५१	११।२७।०८।४९	५।०५।११।४८	३।०२।५६।२४	११।०३।०९।४५	१।२३।२४।३३	११व००।२९।५४	१११०१।२७।३०	१११०१।५९।३०	१।०१।०१।४२	११।०६।१२।४८	९।०९।२८।२६
१२ श	१३।२१।४८	११।२८।०७।४०	५।१७।०५।४९	३।०३।१९।२३	११।०३।३०।१८	१।२३।३४।५९	११व००।२६।११	१११०१।३४।२४	१११०१।५६।१९	१।०१।०४।४५	११।०६।१४।५७	९।०९।२९।०५
१३ र	१३।२५।४४	११।२९।०६।२९	५।२८।५६।३३	३।०३।४२।३९	१११०३।५५।२८	१।२३।४५।२९	११व००।२४।५३	१११०१।४१।१७	१११०१।५३।०९	१।०१।०७।४९	११।०६।१७।०५	९।०९।२९।४३
१४ चं	१३।२९।४१	०।००।०५।१५	६।१०।४६।०४	३।०४।०६।१०	११।०४।२५।०३	१।२३।५६।०६	११।००।२५।५८	१११०१।४८।०७	१११०१।४९।५८	१।०१।१०।५४	११।०६।१९।१२	९।०९।३०।१८
१५ मं	१३।३३।३७	०।०१।०४।००	६।२२।३६।२०	३।०४।२९।५८	११।०४।५८।५०	१।२४।०६।४८	११।००।२९।२४	१११०१।५४।५६	१११०१।४६।४७	१।०१।१४।००	११।०६।२१।१९	९।०९।३०।५२
१६ बु	१३।३७।३४	०।०२।०२।४३	७।०४।२९।२४	३।०४।५४।०२	११।०५।३६।३७	१।२४।१७।३६	११।००।३५।०८	१११०२।०१।४२	१११०१।४३।३७	१।०१।१७।०८	११।०६।२३।२५	९।०९।३१।२५
१७ गु	१३।४१।३०	०।०३।०१।२५	७।१६।२७।३१	३।०५।१८।२०	११।०६।१८।१४	१।२४।२८।२९	११।००।४३।०७	१११०२।०८।२६	१११०१।४०।२६	१।०१।२०।१८	११।०६।२५।३०	९।०९।३१।५५
१८ शु	१३।४५।२७	०।०४।००।०४	७।२८।३३।१६	३।०५।४२।५४	११।०७।०३।२८	१।२४।३९।२७	११।००।५३।१८	१११०२।१५।०८	१११०१।३७।१५	१।०१।२३।२८	११।०६।२७।३५	९।०९।३२।२४
१९ श	१३।४९।२३	०।०४।५८।४२	८।१०।४९।४१	३।०६।०७।४२	१११०७।५२।१०	१।२४।५०।३१	११।०१।०५।३७	१११०२।२१।४८	१११०१।३४।०४	१।०१।२६।४०	११।०६।२९।३८	९।०९।३२।५२
२० र	१३।५३।२०	०।०५।५७।१८	८।२३।२०।०८	३।०६।३२।४५	१११०८।४४।१०	१।२५।०१।४०	११।०१।२०।०१	१११०२।२८।२५	१११०१।३०।५३	१।०१।२९।५३	११।०६।३१।४१	९।०९।३३।१७
२१ चं	१३।५७।१७	०।०६।५५।५३	९।०६।०८।१४	३।०६।५८।०२	११।०९।३९।११	१।२५।१२।५४	११।०१।३६।२५	१११०२।३४।५९	१११०१।२७।४२	१।०१।३३।०७	११।०६।३३।४३	९।०९।३३।४१
२२ मं	१४।०१।१३	०।०७।५४।२५	९।१९।१७।३०	३।०७।२३।३३	१११।०।३७।२९	१।२५।२४।१३	११।०१।५४।४६	१११०२।४१।३१	१११०१।२४।३२	१।०१।३६।२२	११।०६।३५।४४	९।०९।३४।०३
२३ बु	१४।०५।१०	०।०८।५२।५७	१०।०२।५०।५७	३।०७।४९।१७	११।११।३८।३१	१।२५।३५।३६	११।०२।१५।००	१११०२।४८।०१	१११०१।२१।२१	१।०१।३९।३८	११।०६।३७।४४	९।०९।३४।२४
२४ गु	१४।०९।०६	०।०९।५१।२६	१०।१६।५०।२६	३।०८।१५।१५	११।१२।४२।१९	१।२५।४७।०५	११।०२।३७।०३	१११०२।५४।२८	१११०१।१८।१०	१।०१।४२।५६	११।०६।३९।४३	९।०९।३४।४३
२५ शु	१४।१३।०३	०।१०।४९।५४	११।०१।१५।५०	३।०८।४१।२६	१११।१३।४८।४६	१।२५।५८।३८	११।०३।००।५०	१११०३।००।५२	१११०१।१५।००	१।०१।४६।१४	११।०६।४१।४१	९।०९।३५।००
२६ श	१४।१६।५९	०।११।४८।२१	११।१६।०४।२७	३।०९।०७।५०	११।१४।५७।४६	१।२६।१०।१६	११।०३।२६।१९	१११०३।०७।१३	१११०१।११।४९	१।०१।४९।३३	११।०६।४३।३८	९।०९।३५।१५
२७ र	१४।२०।५६	०।१२।४६।४५	०।०१।१०।३१	३।०९।३४।२७	११।१६।०९।१३	१।२६।२१।५९	११।०३।५३।२५	१११०३।१३।३१	१११०१।०८।३८	१।०१।५२।५३	११।०६।४५।३४	९।०९।३५।२९
२८ चं	१४।२४।५२	०।१३।४५।०८	०।१६।२५।२७	३।१०।०१।१६	१११।१७।२३।०३	१।२६।३३।४५	११।०४।२२।०३	१११०३।१९।४७	१११०१।०५।२७	१।०१।५६।१४	११।०६।४७।२९	९।०९।३५।४१
२९ मं	१४।२८।४९	०।१४।४३।२९	१।०१।३८।५८	३।१०।२८।१७	११।१८।३९।१२	१।२६।४५।३७	११।०४।५२।१२	१११०३।२५।५९	१११०१।०२।१७	१।०१।५९।३६	११।०६।४९।२३	९।०९।३५।५२
३० बु	१४।३२।४६	०।१५।४१।४८	१।१६।४०।४०	३।१०।५५।३१	११।१९।५७।३५	१।२६।५७।३२	११।०५।२३।४६	१११०३।३२।०९	१११००।५९।०६	१।०२।०२।५९	११।०६।५१।१५	९।०९।३६।००

होम में अग्निवास विचार

इस समाधान हेतु कृष्ण व शुक्ल पक्ष की तिथियों में किस वार को अग्नि वास कहाँ होगा, नीचे दिये गये चक्र से ज्ञात करें परन्तु मुहूर्त मार्तण्ड के अनुसार निम्न कार्यों में अग्निवास का विचार न करें।

संस्कारेषु विचारोऽस्य न कार्यो: नापि वैष्णवे।
नित्ये नैमित्तके कार्ये न चाब्दे मुनिभि: स्मृत+॥

विवाहचूडा-व्रतबन्ध-गोचरे उत्पात-शान्तिग्रहणे युगादौ।
दुर्गाविधाने सततं प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिशोधनीयम्॥

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुविवह्निवास:।
सौख्याय होम शशियुग्म शेषे प्राणार्थनाशौ दिविभूतले च॥

(मुहूर्त्ति चिन्तामण)

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष अमावस्या तक **३०** तिथियों में वर्तमान तिथि में एक जोड़कर उसमें वार संख्या (रवि से शनि तक ७) जोड़ कर इस जोड़ में **४** का भाग देने से यदि शून्य **०** और तीन **३** शेष बचें तो भूमि में अग्नि वास होता है। यदि एक बचे तो अग्नि वास स्वर्ग में होता है इसमें प्राणनाश, यदि दो बचे तो अग्निवास पाताल मे होता है इसमें धन नाश होता है। अग्नि वास भूमि पर होने से ही हवन में उत्तम फल प्राप्ति होती है।

उदाहरण– सं 2078 चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार होम करने के लिए अग्निवास देखना है।

तिथि संख्या 15 + 1 = 16
वार संख्या – 3
16 + 3 = 19 योग फल

4) 19 (4
16
3 शेष

शेष तीन रहने से अग्निवास भुवि (भूमि) पर है अत: हवन के लिए शुभ है।

शुक्ल पक्ष में अग्निवास बोधक सारिणी

तिथि→ वार ↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
रवि	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.
सोम	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.
मंगल	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि
बुध	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि
गुरु	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.
शुक्र	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.
शनि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि

कृष्ण पक्ष में अग्निवास बोधक सारिणी

तिथि→ वार ↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	30
रवि	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि
सोम	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.
मंगल	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.
बुध	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि
गुरु	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि
शुक्र	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.
शनि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.	भुवि	भुवि	स्व.	पा.

भुवि = मृत्यु लोकफलम् (सौख्यम्), पा = पाताल लोकफलम् (धननाश:), स्व. = स्वर्ग लोकफलम् (प्राणनाश:)

पाँच स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, दीपावली और बसन्त पञ्चमी ये पाँच स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त हैं। आवश्याकता होने पर शुभ कार्य इन दिनों में किये जा सकते हैं।

शुभ विवाह मुहूर्त्त विक्रमी संवत् 2081 (सन् 2024-25 ई॰)

मुहूर्त्तनिर्णेता : **पं॰ रवीन्द्र रैणा,** बी॰एस॰सी॰एल॰एल॰बी॰, रैणा ज्योतिष कार्यालय, बी. सी. रोड, जम्मू, मोबाईल 9419189111
पं॰ विनय शास्त्री, तालाब तिल्लो, जम्मू, मोबाईल : 9419149757
डॉ॰ रामदास शर्मा, सहायकाचार्य ज्योतिष, **श्री प्रवीण जैन**

शुक्र अस्तः- सन् 2024 ई. अप्रैल 24 को शुक्र पूर्व में अस्त होकर 7 जुलाई 2024 को पश्चिम में उदय होगा। 21 अप्रैल से शुक्र **वार्धक्य दोष** तथा 10 जुलाई तक शुक्र का **वाल्यत्व दोष** व्याप्त रहेगा।

गुरु अस्तः- वृहस्पति सन् 2024 मई 6 को पश्चिम में अस्त होकर 2 जून 2024 को पूर्व में उदित होगा, इसी काल में शुक्रास्त भी चल रहा है, 3 मई 2024 ई. से वृहस्पति **वार्धक्य दोष** तथा 5 जून 2024 तक **वाल्यत्व दोष** विद्यमान रहेगा।

काल शुद्धि

त्रयोदश दिनात्मक पक्षः- संवत् 2081 आषाढ़ कृष्ण पक्ष (23 जून 2024 से 5 जुलाई 2024 तक) त्रयोदशदिनात्मक पक्ष होने से विवाह, मुण्डन, मूर्ति प्रतिष्ठादि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे। इस पक्ष में शुक्रास्त रहने से परिहार वाक्यों का औचित्य नहीं है।

श्राद्ध दिनः- 17 सितम्बर 2024 से 2 अक्तूबर 2024 तक श्राद्ध पक्ष रहेगा।

भीष्म पञ्चक विचारः- 11 से 15 नवम्बर 2024 तक भीष्म पञ्चक रहंगे। डुग्गर परम्परा के अनुसार विवाहादि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे।

होलाष्टकः- 7 मार्च से 14 मार्च 2025 से होलाष्टक रहेगा। इस काल में प्रादेशिक परम्परा अनुसार शुभ कार्य वर्जित रहते हैं।

पुनः शुक्रास्त दोषः- शुक्र 19 मार्च 2025 को पश्चिम में अस्त होकर 25 मार्च 2025 ई. को पूर्व में उदित होगा, इस समय में भी शुभ कार्य वर्जित रहेंगे।

वैशाख मास (अप्रैल-मई) विवाह मुहूर्त सन् 2024 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
चैत्र शु. 10	गुरु	6 वैशाख	18 अप्रैल	मघा	सिंह	मेष	मेष	।0।।।।।।।।	दि.ल.2(सू.मं.दा.)7:57 से 9:14 तक, दि.ल.3(के.दा.), 9:14 से 11:29 तक, गोधूलि, रा.ल. 8, 9, 10, रात्रि 9 से अर्द्धरात्रौपरि 4:29 तक (वृश्चिके सू.गु.दा.), धने (रा.दा.), मकरे (चं.शु.दा.), गुरु दृष्टि अष्टमे शुभफलप्रदः

आषाढ़ मास (जुलाई) विवाह मुहूर्त सन् 2024 ई॰, वि॰सं॰ 2081

24 अप्रैल से 7 जुलाई एवं 6 मई से 2 जून तक तारा अस्त दोष है।

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
आषा. शु. 5	गुरु	28 आषाढ़	11 जुलाई	उ.फा.	सिंह/कन्या	मिथुन	वृष	।।।।ऽ।।।।।	दि.ल. 8 (मं.दा.) दिवा 3:32 से 5:53 तक, रा.ल.2 अ. रा.परि 1:53 से 3:46 तक
आषा. शु. 6	शुक्र	29 आषाढ़	12 जुलाई	उ.फा.	कन्या	मिथुन	वृष	।।0।।।00।।	दि.ल. 4(बु.शु.श.दा.) 7:10 से 8:22 तक, परिघ परिहार
आषा. शु. 8	रवि	31 आषाढ़	14 जुलाई	स्वाति	तुला	मिथुन	वृष	।।।।।।।।।।	रा.ल.1(चं.दा.) रात्रि 12:10 से 1:41 तक, दिवा मृत्युवाणदोष

श्रावण मास (जुलाई-अगस्त) विवाह मुहूर्त 2024 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
आषा.शु. 13	शुक्र	4 श्रावण	19 जुलाई	मूल	धनु	कर्क	वृष	0।।।।।।।।।	रा.ल. 1 (चं.मं.शु.दा.) रात्रि 11:46 से 1:21 तक
आषा.शु. 14	शनि	5 श्रावण	20 जुलाई	उ.षा.	धनु	कर्क	वृष	।।।।।।।0।।	रा.ल. 3 (चं.मं.दा.) अ.रा.परि 3:11 से 5:22 तक भद्रा परिहार
आषा.शु. 15	रवि	6 श्रावण	21 जुलाई	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 9 (गु.शु.दा.) सायं 5:14 से 7:16 तक, रा.ल. 1रात्रि 11:38 से रात्रि 12:14 तक (अल्पकालिक)
आषा.शु. 15	रवि	6 श्रावण	21 जुलाई	श्रवण	मकर	कर्क	वृष	।।।।।।।0।।	रा.ल. 1 (चं.मं.वृ.दान) रात्रि 12:14 से 1:14 तक, रा.ल. 3 (चं.मं.वृ.दा.), बुधवेध नहीं, अ.रा.परि 3:07 से 5:14 तक
श्रावण कृ. 1	सोम	7 श्रावण	22 जुलाई	धनिष्ठा	मकर	कर्क	वृष	।।।00।।।।।	रा.ल. 1 (चं.दा.) रात्रि 11:35 से 1:10 तक, रा.ल. (मं.वृ.दा.) अ.रा.परि 3:03 से 5:15 तक (शुक्र वेध नहीं है)
श्रावण कृ. 2	मंगल	8 श्रावण	23 जुलाई	धनिष्ठा	मकर/कुंभ	कर्क	वृष	।।।00।।।।।	दि.ल. 9 (गु.शु.दा.) सायं 4:42 से 6:45 तक
श्रावण कृ. 7	शनि	12 श्रावण	27 जुलाई	अश्विन	मेष	कर्क	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 9 (गु.शु.दा.) सायं 4:50 से 6:53 तक, रा.ल. 3 (शु.के.दा.) अ.रा.परि 2:44 से 4:55 तक
श्रावण कृ.10	मंगल	15 श्रावण	30 जुलाई	रोहिणी	वृष	कर्क	वृष	0।0।।।0।।	दि.ल. 9 (चं.वृ.शु.दा.) सायं 4:38 से 6:41 तक, रा.ल. 1 (चं.मं.दान) रात्रि 11:03 से 12:33 तक, रा.ल. 3 (गु.के.दा.) युतिदोषः भवेत्गौड़े, अर्द्धरात्रौपरि 2:32 से 4:43 तक
श्रावण कृ.11	बुध	16 श्रावण	31 जुलाई	मृगशिरा	वृष/मिथुन	कर्क	वृष	0।।।।।।0।।	रा.ल. 1 (चं.मं.दा.) रात्रि 11:00 से 12:34 तक, रा.ल. 3 (रा.के.दा.), अर्द्धरात्रौपरि 2:28 से 4:43 तक
श्रावण शु. 1	सोम	21 श्रावण	5 अगस्त	मघा	सिंह	कर्क	वृष	।।00।।0।।।	रा.ल. 1 (मं.वृ.दा.) अर्द्धरात्रौपरि 2:03 से 4:24 तक, रा.ल. 3 (शु.दा.) अर्द्धरात्रौपरि 2:03 से 4:23 तक
श्रावण शु. 2	मंगल	22 श्रावण	6 अगस्त	मघा	सिंह	कर्क	वृष	।।0।।।।।।	दि.ल. 9 (वृ.दा.) सायं 4:10 से 5:44 तक
श्रावण शु. 3	बुध	23 श्रावण	7 अगस्त	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	वृष	।।।।0।।।।।	रा.ल. 1 (मं.वृ.दा.) रात्रि 10:32 से 12:07 तक, रा.ल. 3 (शु.दा.) अर्द्धरात्रौपरि 2:00 से 4:16 तक
श्रावण शु. 4	गुरु	24 श्रावण	8 अगस्त	उ.फा.	कन्या	कर्क	वृष	।।।।0।।।।।	दि.ल. 9 (वृ.दा.) दिवा 3:54 से 6:01 तक, रा.ल. 1 रात्रि 10:28 से 11:34 तक, भद्रापरिहार

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
श्रावण शु. 7	रवि	27 श्रावण	11 अगस्त	स्वाति	तुला	कर्क	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 9 (वृ.दा.) दिवा 3:51 से 5:54 तक, रा.ल. 1 (चं.दा.) रात्रि 10:16 से 11:47 तक, रा.ल. 3 (मं.वृ.दा.) अ.रा.परि 1:45 से 4:00 तक
श्रावण शु. 7	मंगल	29 श्रावण	13 अगस्त	अनुराधा	वृश्चिक	कर्क	वृष	।।।।।।।।।।	दि.ल. 9 (वृ.दा.) दिवा 3:43 से 5:46 तक, रा.ल. 1 (चं.दा.) रात्रि 10:03 से 11:40 तक, रा.ल 3 (चं.वृ.शु.दा.) अ.रा.परि 1:37 से 3:52 तक

भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2024 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
श्रावण शु.15	सोम	4 भाद्रपद	19 अगस्त	धानिष्ठा	मकर/कुंभ	सिंह	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 9 (वृ.दा.) दिवा 3:20 से 5:22 तक, ल. 10 (चं.शु.दा.) सायं 5:22 से 7:01 तक, रा.ल. 1, रात्रि 9:45 से 11:16 तक, अग्रे अतिगण्ड व्याप्ति
भाद्र. कृ. 4	शुक्र	8 भाद्रपद	23 अगस्त	अश्विनी	मेष	सिंह	वृष	।0।।।।।0।।	रा.ल. 3 (मं.वृ.शु.दान) अ.रा.परि 12:57 से 3:13 तक, रा.ल. 4 (शु.के.दान) अ.रा.परि 3:13 से 5:33 तक
भाद्र. कृ. 5	शनि	9 भाद्रपद	24 अगस्त	अश्विनी	मेष	सिंह	वृष	।0।।।।।0।।	दि.ल. 9 (वृ.दान) दिवा 2:59 से 5:03 तक
भाद्र. कृ. 8	सोम	11 भाद्रपद	26 अगस्त	रोहिणी	वृष	सिंह	वृष	।।।।।।00।।	रात्रि 10:16 तक व्याघात व्याप्ति, रा.ल. 1 (सू.शु. दान) रात्रि 9:17 से 10:43 तक
भाद्र. कृ. 9	मंगल	12 भाद्रपद	27 अगस्त	मृगशिरा	वृष/मिथुन	सिंह	वृष	000।।।।0।0	दिवा मृत्युवाणदोष, रा.ल. 4 (बु.शु.दान) युतिदोषः भवेत्गौड़े अ.रा.परि 2:57 से 5:17 तक
भाद्र. कृ. 10	बुध	13 भाद्रपद	28 अगस्त	मृगशिरा	मिथुन	सिंह	वृष	000।।।।0।0	दि.ल. 7 (वृ.शु.दान) 10:00 से 12:23 तक
भाद्र. शु. 1	बुध	20 भाद्रपद	4 सितम्बर	उ.फा.	सिंह/कन्या	सिंह	वृष	।0।।0।।।।।	दि.ल. 7 7 (वृ.शु.दान) 9:32 से 11:55, ल. 10 (सू.बु.दान) सायं 4:20 से 5:53 तक, रा.ल. 1 (चं.शु.दान) रात्रि 8:42 से 10:13 तक, ल. 2(मं.शु.दान) रात्रि 10:13 से 12:10 तक, ल. 4 (मं.शु.दान) अ.रा.परि 2:26 से 4:50 तक

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
भाद्र. शु. 4	शनि	23 भाद्रपद	7 सितम्बर	स्वाति	तुला	सिंह	वृष	।।।।।।।0।।	रा.ल. 1 (चं.शु.दान) रात्रि 8:30 से 10:01 तक, ल.2 (चं. दान) रात्रि 10:01 से 11:54 तक, ल. 4 (शु.दान) अ.रा.परि 2:14 से 4:38 तक
भाद्र. शु. 5	रवि	24 भाद्रपद	8 सितम्बर	स्वाति	तुला	सिंह	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 7 (वृ.दान) 9:17 से 11:40 तक
भाद्र. शु. 6	सोम	25 भाद्रपद	9 सितम्बर	अनुराधा	वृश्चिक	सिंह	वृष	।0।।।।00।।	रा.ल. 4 (शु.दान) अ.रा.परि 2:06 से 4:30 तक
भाद्र. शु. 7	मंगल	26 भाद्रपद	10 सितम्बर	अनुराधा	वृश्चिक	सिंह	वृष	।0।।।।00।।	दि.ल. 7 (वृ.दान) 9:08 से 11:32 तक, ल.10 (सू.बु.दान) दिवा 3:56 से 5:35 तक
भाद्र. शु. 8	बुध	27 भाद्रपद	11 सितम्बर	मूल	धनु	सिंह	वृष	।।।।0।।।।।	रा.ल. 2 (चं.दान) रात्रि 9:50 से 11:42 तक
भाद्र. शु. 9	गुरु	28 भाद्रपद	12 सितम्बर	मूल	धनु	सिंह	वृष	।।।।0।।।।।	दि.ल. 7 (वृ. दान) 9:00 से 11:24 तक, ल. 10 (सू.दान) दिवा 3:48 से 5:26 तक, रा.ल.1 (शु.दान) रात्रि 8:10 से 9:41 तक
भाद्र. शु. 10	शुक्र	29 भाद्रपद	13 सितम्बर	उ.षा.	धनु/मकर	सिंह	वृष	।।।।0।।0।0	रा.ल 2 (चं.दान) रात्रि 9:37 से 11:31 तक

आश्विन मास (सितम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2024 ई०, वि०सं० 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
आश्वि.शु. 1	गुरु	18 आश्विन	3 अक्तूबर	चित्रा	कन्या	कन्या	वृष	।।।।।।।।।।	रा.ल. 1 (सू.चं.दान) रात्रि 6:47 से 8:14 तक
आश्वि.शु.4	सोम	22 आश्विन	7 अक्तूबर	अनुराधा	वृश्चिक	कन्या	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 10, दिवा 2:10 से 3:43 तक, रा.ल. 1 (चं.दान) सायं 6:32 से 8:03 तक
आश्वि.शु. 8	शुक्र	26 आश्विन	11 अक्तूबर	उ.षा.	धनि./मकर	कन्या	वृष	।।।00।।0।0	दि.ल. 7 (वृ.शु.दान) 7:07 से 9:30 तक, ल.10 (चं.दान) दिवा 1:54 से 3:32 तक, रा.ल. 4 (मं.दान) रात्रि 12:29 से 2:24 तक
आश्वि.शु. 9	शनि	27 आश्विन	12 अक्तूबर	श्रवण	मकर	कन्या	वृष	।।।।।।।।।।	दि.ल. 7 (वृ.दान) 7:03 से 9:26, ल. 10 (सू.बु.दान) दिवा 1:50 से 3:29 तक, रा.ल.1 (बु.शु.दान) रात्रि 6:12 से 7:43 तक

कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2024 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
कार्ति. कृ. 3	रवि	4 कार्तिक	20 अक्तूबर	रोहिणी	वृष	तुला	वृष	00।।0।।0।।	रा.ल. 2 (चंवृ.शु.दान) रात्रि 7:12 से 9:05 तक, ल. 3 (शु. दान) रात्रि 9:05 से 11:21 तक
कार्ति. कृ. 5	सोम	5 कार्तिक	21 अक्तूबर	मृगशिरा	वृ./मिथुन	तुला	वृष	।।।।।।।0।0	रा.ल. 2 (वृ.शु.दा.) रात्रि 7:03 से 9:01 तक, ल. 3 (शु. दान) रात्रि 9:01 से 11:17 तक
कार्ति. कृ. 11	सोम	12 कार्तिक	28 अक्तूबर	उ.फा.	सिंह/कन्या	तुला	वृष	।।।।।।।0।0	गोधूलि, रा.ल. 2 (वृ.शु.दान) रात्रि 6:40 से 8:34 तक रा. ल. 3 (शु.दान) रात्रि 8:34 से 10:50 तक
कार्ति. शु. 2	रवि	18 कार्तिक	3 नवम्बर	अनुराधा	वृश्चिक	तुला	वृष	।।0।।।।।।	दि.ल. 8 (बु.वृ.शु.दान) 8:00 से 10:20 तक, ल. 9 (चं. मं.वृ.दान) 10:20 से 12:24 तक, गोधूलि, रा.ल. 2 (चं. बु.वृ.दान) रात्रि 6:17 से 8:10 तक
कार्ति. शु. 5	बुध	21 कार्तिक	6 नवम्बर	मूल	धनु	तुला	वृष	।।।।0।।।।।	दि.ल. 8 (बु.वृ.दान) 7:48 से 10:04 तक
कार्ति. शु. 7	शुक्र	23 कार्तिक	8 नवम्बर	श्रवण	मकर	तुला	वृष	।0।।00।।।।	गोधूलि, रा.ल. 3 (चं.दान) रात्रि 7:51 से 10:06 तक
कार्ति. शु. 8	शनि	24 कार्तिक	9 नवम्बर	धनिष्ठा	मकर/कुम्भ	तुला	वृष	।।।।।।।0।।	गोधूलि, अग्रे क्रान्तिसाम्यदोष
कार्ति. शु. 9	रवि	25 कार्तिक	10 नवम्बर	धनिष्ठा	कुम्भ	तुला	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 8 (बु.वृ.दान) 7:32 से 9:53 तक

मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर) विवाह मुहूर्त सन् 2024 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
मार्ग. कृ. 2	रवि	2 मार्गशीर्ष	17 नवम्बर	मृगशिरा	वृ./मिथुन	वृश्चिक	वृष	।।0।0।।।।।	गोधूलि, रा.ल. 3 (बु.शु.दान) रात्रि 7:15 से 9:31 तक, ल.7 (गु.शु.दान) अर्द्धरात्रौपरि 4:41 से 7:01 तक
मार्ग. कृ. 3	सोम	3 मार्गशीर्ष	18 नवम्बर	मृगशिरा	मिथुन	वृश्चिक	वृष	।।0।0।।।।।	दि.ल. 9 (मं.वृ.शु. दान) 9:21 से 11:24 तक, भद्रा परिहार

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
मार्ग. कृ. 7	शुक्र	7 मार्गशीर्ष	22 नवम्बर	मघा	सिंह	वृश्चिक	वृष	0।।।।।।0।।	गोधूलि, रा.ल. 3 (बु.वृ.दान) रात्रि 6:55 से 9:11 तक, रा. ल.7 (गु.शु.दान) अर्द्धरात्रौपरि 4:22 से 6:41 तक
मार्ग. कृ. 8	शनि	8 मार्गशीर्ष	23 नवम्बर	मघा	सिंह	वृश्चिक	वृष	0।।।।।।0।।	दि.ल. 9 (वृ.दान) 9:02 से 11:05 तक
मार्ग. कृ. 9	रवि	9 मार्गशीर्ष	24 नवम्बर	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	वृष	0।।।।।।0।।	रा.ल. 7 (चं.वृ.शु.दान) युतिदोष: भवेत्गौड़े
मार्ग. कृ. 10	सोम	10 मार्गशीर्ष	25 नवम्बर	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	वृष	0।।।।।।0।0	दि.ल. 9 (मं.वृ.दान) 8:54 से 10:57 तक, ल. 1 (बु.दान), दिवा 3:19 से 4:50 तक, गोधूलि, भद्रा एवं दग्धा परिहार
मार्ग. कृ. 11	मंगल	11 मार्गशीर्ष	26 नवम्बर	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	वृष	।।।।।।।।0।	रा.ल. 7 (गु.शु.मं.दान) अर्द्धरात्रौपरि 4:35 से 6:25 तक
मार्ग. कृ. 12	बुध	12 मार्गशीर्ष	27 नवम्बर	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चिक	वृष	।।।।।।।0।।	दि.ल. 9 (मं.वृ.दान) 8:46 से 10:49 तक, ल.1 (चं.दान) दिवा 3:11 से 4:42 तक, गोधूलि, रा.ल. 7 (मं.शु.दान) अर्द्धरात्रौपरि 4:02 से 6:21 तक
मार्ग. शु. 4	गुरु	20 मार्गशीर्ष	5 दिसम्बर	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	वृष	।।।।0।।0।।	दि.ल. 1 (बु.दान)
मार्ग. शु. 4	गुरु	20 मार्गशीर्ष	5 दिसम्बर	श्रवण	मकर	वृश्चिक	वृष	।।।।0।।0।।	रा.ल. 7 (वृ.दान) अर्द्धरात्रौपरि 3:30 से 5:54 तक
मार्ग. शु. 5	शुक्र	21 मार्गशीर्ष	6 दिसम्बर	श्रवण	मकर	वृश्चिक	वृष	।।।।0।।0।।	दि.ल. 1 (सू.बु.दान) दिवा 2:36 से 4:07 तक
मार्ग. शु. 5	शुक्र	21 मार्गशीर्ष	6 दिसम्बर	धनिष्ठा	मकर/कुम्भ	वृश्चिक	वृष	।।।।।।0।।।	गोधूलि, रा.ल. 7 (वृ.दान) अर्द्धरात्रौपरि 3:27 से 5:50 तक
मार्ग. शु. 6	शनि	22 मार्गशीर्ष	7 दिसम्बर	धनिष्ठा	कुम्भ	वृश्चिक	वृष	।।।।।।0।।।	दिवा ल. 1 (सू.बु.दान) दिवा 2:32 से 4:03 तक
मार्ग. शु. 11	बुध	26 मार्गशीर्ष	11 दिसम्बर	अश्विन	मेष	वृश्चिक	वृष	।।।।।।।।।।	दि.ल. 1 (सू.बु.दान) दिवा 2:16 से 3:48 तक, अग्रे परिघ दोष, रा.ल. 7 (चं.दान) भद्रा स्वर्गे परिहार, अर्द्धरात्रौपरि 3:07 से 5:30 तक

माघ मास (जनवरी-फरवरी) विवाह मुहूर्त सन् 2025 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
माघ कृ. 3	गुरु	3 माघ	16 जनवरी	मघा	सिंह	मकर	वृष	।।।।।।।।।।	दि.ल. 1 (मं.दान) 11:54 से 13:26 तक, रात्रि ल. 8 अर्द्धरात्रौपरि 4:06 से 5:29 तक (वृ.दान)
माघ कृ. 5	शनि	5 माघ	18 जनवरी	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	वृष	।।0।0।।0।।	गोधूलि, रा.ल. 7 (वृ.दान) अर्द्धरात्रौपरि 12:38 से 1:16 तक अल्पकालिक लग्न, रा.ल. 8 (केतु युतिपरिहार) अतिगण्डदोष 3:34 से 5:22 तक
माघ कृ. 5	रवि	6 माघ	19 जनवरी	उ.फा.	कन्या	मकर	वृष	।।0।0।।0।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 11:43 से 13:14 तक, ल. 2 (वृ.दान) केतुयुतिपरिहार, दिवा 1:14 से 3:08 तक
माघ कृ. 7	मंगल	8 माघ	21 जनवरी	स्वाति	तुला	मकर	वृष	।।।।।।।0।।	रा.ल. 7 (वृ.दान) अर्द्धरात्रौपरि 12:26 से 2:49 तक
माघ कृ. 8	बुध	9 माघ	22 जनवरी	स्वाति	तुला	मकर	वृष	।।।।।।00।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 11:31 से 1:03 तक, ल. 2 (बु.वृ.दान) दिवा 1:04 से 2:56 तक, अग्रेरात्रौ क्रान्तिसाम्यदोष
माघ कृ. 10	शुक्र	11 माघ	24 जनवरी	अनुराधा	वृश्चिक	मकर	वृष	।।।।।।।0।।	रा.ल. 7 (वृ.दान) अ.रा.परि 12:14 से 2:37 तक
माघ शु. 1/2	गुरु	17 माघ	30 जनवरी	धनिष्ठा	मकर/कुम्भ	मकर	वृष	।0।।।।।।।।	दिवा व्यतीपातदोष, गोधूलि, रा.ल. 8 (मं.वृ.दान) अर्द्धरात्रौपरि 2:14 से 4:34 तक (आवश्यके स्वयमेव विचारणीयम्)
माघ शु. 7	मंगल	22 माघ	4 फरवरी	अश्विनी	मेष	मकर	वृष	।0।।।।।0।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 10:40 से 12:11 तक, ल. 2 (चं.वृ. दान) दिवा 12:11 से 2:05 तक
माघ शु. 10	शुक्र	25 माघ	7 फरवरी	रोहिणी	वृष	मकर	वृष	।।0।।।।।।	दि.ल. 1 (चं.शु.दान) 10:23 से 11:59 तक, ल. 2 (चं. शु.दान) 12:00 से 1:53 तक

फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) विवाह मुहूर्त सन् 2025 ई॰, वि॰सं॰ 2081

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
फाल्गु. कृ. 1	गुरु	2 फाल्गुन	13 फरवरी	मघा	सिंह	कुम्भ	वृष	।।।।0।।0।।	दि.ल. 1 (सू.शु.दान) 10:05 से 11:36, ल. 2 (सू.वृ.दान) 11:36 से 1:29 तक
फाल्गु. कृ. 2	शुक्र	3 फाल्गुन	14 फरवरी	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	वृष	।।0।0।।।।।	रा.ल. 10 (चं.दान) केतुयुतिपरिहार, अर्द्धरात्रौपरि 5:39 से प्रातः 7:17 तक

पक्ष तिथि	वार	मास प्रविष्टा	अंग्रेजी तारीख	नक्षत्र	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	गुरु राशि	रेखा दोष	शुद्ध लग्न ग्रह की पूजा दानादि विवरण
फाल्गु. कृ. 3	शनि	4 फाल्गुन	15 फरवरी	उ.फा.	कन्या	कुम्भ	वृष	।।0।0।।।।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 9:57 से 11:23 तक, ल. 2 (सू.बु.दान) 11:23 से 1:22 तक (भद्रा परिहार)
फाल्गु. कृ. 6	मंगल	7 फाल्गुन	18 फरवरी	स्वाति	तुला	कुम्भ	वृष	।0।0।।।।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 9:45 से 11:16 तक, ल. 2 (चं.दान) 11:16 से 1:10 तक, गोधूलि, रा.ल. 10 (शु.दान) अर्द्धरात्रौपरि 5:23 से 6:57 तक
फाल्गु. कृ. 6	बुध	8 फाल्गुन	19 फरवरी	स्वाति	तुला	कुम्भ	वृष	।0।0।।।।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 9:41 से 10:40 तक, भद्रापरिहार
फाल्गु. कृ. 7	गुरु	9 फाल्गुन	20 फरवरी	अनुराधा	वृश्चिक	कुम्भ	वृष	।।।।।।00।।	गोधूलि, रा.ल. 10(शु.दान)अर्द्धरात्रौपरि 5:15 से 6:50 तक
फाल्गु. कृ. 8	शुक्र	10 फाल्गुन	21 फरवरी	अनुराधा	वृश्चिक	कुम्भ	वृष	।।।।।।00।।	दि.ल. 1 (चं.दान) 9:33 से 11:04 तक, ल. 2 (चं.वृ.दान) 11:04 से 12:53 तक
फाल्गु. कृ.12	मंगल	14 फाल्गुन	25 फरवरी	उ.षा.	मकर	कुम्भ	वृष	।0।।0।।0।।	दि.ल. 1 (वृ.दान) 9:17 से 10:43 तक, ल.2 (वृ.दान) 10:43 से 12:42 तक
फाल्गु. शु. 4	सोम	20 फाल्गुन	3 मार्च	अश्विन	मेष	कुम्भ	वृष	।।।।।।।0।0	दि.ल. 1 (चं.शु.दान) 8:50 से 10:21, ल. 2 (चं.वृ.दान) 10:21 से 12:14 तक, ल. 4 (सू.श.दान) दिवा 2:30 से 4:54 तक, रात्रौमृत्युवाणदोष
फाल्गु. शु. 6	बुध	22 फाल्गुन	5 मार्च	रोहिणी	वृष	कुम्भ	वृष	।।0।।।00।।	रा.ल. 10 (शु.दान) अर्द्धरात्रौपरि 4:20 से 5:53 तक
फाल्गु. शु. 7	गुरु	23 फाल्गुन	6 मार्च	रोहिणी	वृष	कुम्भ	वृष	।।0।।।00।।	दि.ल. 1 (चं.वृ.दान) 8:38 से 10:09 तक
फाल्गु. शु. 7	गुरु	23 फाल्गुन	6 मार्च	मृगशिरा	वृष	कुम्भ	वृष	0।।।।0।0।।	रा.ल. 10 (शु.दान) अर्द्धरात्रौपरि 4:16 से 5:54 तक

नोट :- अग्रिम वर्ष (विक्रमी संवत् 2082) सन् 2025-26 में शुक्र एवं वृहस्पति अस्त की सम्भावित तारीखें :-

(1) वृहस्पति प्रायशः 11 जून 2025 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 5 जुलाई 2025 ई. को पूर्व में उदय होगा।

(2) शुक्र प्रायशः 13 दिसम्बर 2025 ई. को पूर्व में अस्त होकर 30 जनवरी 2026 ई. को पश्चिम में उदय होगा।

ध्यान दें:-तारा अस्त में भी शास्त्रसम्मति से विवाह मुहूर्त्त यदि अत्यावश्यक हों तो किए जा सकते हैं। ऐसे प्रमाण शास्त्र में उपलब्ध हैं, किसी को भी अत्यावश्यक मुहूर्त्त चाहिए तो श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान 44/2, त्रिकुटा नगर, जम्मू में सम्पर्क कर सकते हैं।

मुण्डन मुहूर्त (2024-25 ई॰), मुहूर्त्त संवत् 2081

उत्तरायण मासों में, जन्मकाल से 1, 3, 5 इत्यादि वर्षों में, शुभ कहा गया है। जन्म मास, ज्येष्ठ बालक का ज्येष्ठ मास अथवा ज्येष्ठ नक्षत्र में, जन्म राशि अष्टमस्थ राशि एवं अष्टमस्थ लग्न में मुण्डन न करें। अपने कुलानुसार अश्विन एवं चैत्र नवरात्रों में किसी देवस्थान एवं विवाह के साथ कर सकते हैं।

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
चैत्र शु. 7	सोम	15 अप्रै.	वैशाख 3	पुनर्वसु	ल. 2, 3, अभिजित्
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	प्रात: 10:28 तक
माघ कृ. 8	बुध	22 जन.	माघ 9	स्वाती	11:31 से 14:55 तक
माघ कृ. 12	रवि	26 जन.	माघ 13	ज्येष्ठा	प्रात:8:26 तक (ब्राह्मणों के लिए)
माघ शु. 2	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	10:56 से 14:20 तक
माघ शु. 6	सोम	3 फर.	माघ 21	रेवती	10:44 से 14:08 तक
माघ शु. 13	सोम	10 फर.	माघ 28	पुनर्वसु	10:16 से 1:41 तक
फाल्गु.कृ. 5	सोम	17 फर.	फाल्गु. 6	चित्रा	8:54 बाद, अभिजित्

डुग्गर देश की प्रधान देवी माँ वैष्णवी है, परम्परा के अनुसार नवरात्रों को अत्यन्त शुद्ध एवं शुभ मान कर कुछ परिवारों में नवरात्रों में मुण्डन करवाने की प्रथा प्रचलित है। यदि नवरात्रों में मुहूर्त करना चाहें तो श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, 44/2 त्रिकुटा नगर जम्मू में सम्पर्क करें।

शिलान्यास मुहूर्त (नीव)

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
आषा. शु.5	गुरु	11 जुलाई	आषाढ़ 28	उ.फा.	13:08 से 15:32 तक
आषा.शु. 6	शुक्र	12 जुलाई	आषाढ़ 29	उ.फा.	8:22 से 10:43 तक, अभिजित्
आषा.शु. 11	बुध	17 जुलाई	श्रावण 2	अनु.	8:02 से 10:24, 12:45 से 15:03 तक
श्राव.कृ. 11	बुध	*31 जुला.	श्रावण 16	रोहि/मृग.	7:07 से 9:29, 11:50 से 14:13 तक
श्राव. कृ. 12	गुरु	*1 अग.	श्रावण 17	मृग.	5:43 से 10:24 तक
भाद्र.कृ.10	बुध	28 अग.	भाद्रपद 13	मृग.	10:00 से 12:23 तक
भाद्र. शु. 1	बुध	*4 सितंबर	भाद्रपद 20	उ.फा.	9:32 से 14:16 तक
भाद्र.शु. 11	शनि	14 सितं.	भाद्रपद 30	उ.षा.	8:53 से 13:37 तक, अभिजित् (भद्रा परिहार)
कार्ति.कृ. 1	शुक्र	18 अक्तू.	कार्तिक 2	अश्वि	6:39 से 13:26 तक, अभिजित्, स.सि.योग
कार्ति.कृ. 8	गुरु	*24 अक्तू.	कार्तिक 8	पुष्य	ल. 8, 9, अभिजित्, गुरुपुष्य,स. सि.योग
कार्ति.शु. 3	सोम	*4 नवं.	कार्तिक 19	अनुराधा	6:36 से 8:04 तक
मार्ग. कृ. 3	सोम	18 नवं.	मार्ग. 3	मृगशिरा	9:21 से 13:03 तक
मार्ग. कृ. 10	सोम	*25 नवं.	मार्ग. 10	उ.फा.	8:54 से 10:57 तक
मार्ग. कृ. 12	बुध	27 नवं.	मार्ग. 12	चित्रा	8:46 से 12:23 तक
मार्ग. शु. 6	शनि	*7 दिसं.	मार्ग. 22	धनिष्ठा	8:42 से 11:43 तक
मार्ग. शु. 11	बुध	11 दिसं.	मार्ग. 26	अश्वि	11:47 बाद, अभिजित्
मार्ग. शु. 12	गुरु	12 दिसं.	मार्ग. 27	अश्वि	8:07 से 9:52 तक
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	*15 जन.	माघ 2	पुष्य	9:31 से 10:28 तक
माघ शु. 2	शुक्र	*31 जन.	माघ 18	शतभिषा	8:12 से 9:35, 10:56 से 12:27 तक, अभिजित्
फाल्गु.कृ. 3	शनि	15 फर.	फाल्गुन 4	उ.फा.	7:13 से 8:36 तक
फाल्गु.कृ. 6	बुध	19 फर.	फाल्गुन 8	स्वाती	प्रात: 10:40 तक, भद्रा विचार (रवियोग)
फाल्गु.कृ. 8	शुक्र	*21 फर.	फाल्गुन 10	अनुराधा	9:41 से 11:58 तक, स.सि योग

नोट– कृष्ण बिन्दूयुक्त मुहूर्तों में वृषवास्तु चक्रशुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त शुद्ध हैं, विद्वान लोग स्वयं निर्णय करें।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में वास्तु शान्ति, नवग्रह-पूजन-शान्ति एवं पंचदेव पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथा शक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन पूर्वक सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
चैत्र शु. 7	सोम	15 अप्रै.	वैशाख 3	पुनर्वसु	7:32 से 11:41 तक, अभिजित्
आषा. शु.5	गुरु	11 जुलाई	आषाढ़ 28	पू.फा.	8:26 से 10:47 तक
आषा.शु. 6	शुक्र	12 जुलाई	आषाढ़ 29	उ.फा.	8:22 से 10:44 तक, अभिजित्
कार्ति.कृ. 5	सोम	21 अक्तू.	कार्तिक 5	रोहि./मृग.	8:51 से 13:11 तक
कार्ति.कृ. 8	गुरु	24 अक्तू.	कार्तिक 8	पुष्य	8:39 से 13:03 तक, अभिजित्, स.सि.योग
कार्ति.शु. 3	सोम	4 नवम्बर	कार्ति. 19	अनुराधा	प्रात: 8:04 तक
कार्ति. शु. 7	शुक्र	8 नवंबर	कार्ति. 23	श्रवण	12:03 बाद, अभिजित्
कार्ति. शु. 8	शनि	9 नवंबर	कार्ति. 24	श्रव./धनि.	7:40 से 12:04 तक, अभिजित्, स.सि.योग (भद्राविचार)
मार्ग. कृ. 3	सोम	18 नवं.	मार्ग. 3	मृगशिरा	7:01 से 7:57 तक, अग्रे भद्राविचार
मार्ग. कृ. 5	बुध	20 नवं.	मार्ग. 5	पुनर्वसु	9:13 से 12:55 तक
मार्ग. कृ. 10	सोम	25 नवं.	मार्ग. 10	उ.फा.	8:54 से 12:36, अभि. (भद्रा परिहार)
मार्ग. कृ. 12	बुध	27 नवं.	मार्ग. 12	चित्रा	8:46 से 12:23 तक
मार्ग. शु. 5	शुक्र	6 दिसं.	मार्ग. 21	श्रवण	8:11 से 10:13 तक
मार्ग. शु. 6	शनि	7 दिसं.	मार्ग. 22	धनिष्ठा	8:10 से 11:44 तक, अभिजित्
मार्ग. शु. 12	गुरु	12 दिसं.	मार्ग. 27	अश्वि	7:47 से 9:50 तक
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	9:15 से 10:38, 11:55 से 13:30 तक
माघ कृ. 8	बुध	22 जन.	माघ 9	स्वाती	8:47 से 10:11 तक, 11:31 से 13:02 तक
माघ कृ. 10	शुक्र	24 जन.	माघ 11	अनुराधा	8:40 से 10:03, 11:23 से 12:54 तक, अभिजित्, भद्रा- परिहार, स.सि.योग
माघ शु. 2	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	8:12 से 9:35, 10:56 से 12:27 तक, अभिजित्
माघ शु. 10	शुक्र	7 फर.	माघ 25	रोहिणी	7:45 से 9:08, 10:23 से 11:59 तक, अभिजित्
माघ शु. 13	सोम	10 फर.	माघ 28	पुनर्वसु	7:33 से 8:56, 10:16 से 11:47 तक (युति परिहार)
फाल्गु.कृ. 3	शनि	15 फर.	फाल्गुन 4	उ.फा.	9:57 से 10:49 तक
फाल्गु.कृ. 8	शुक्र	21 फर.	फाल्गुन 10	अनुराधा	9:33 से 12:53 तक, अभिजित्
फाल्गु. शु. 7	गुरु	6 मार्च	फाल्गुन 23	रोहिणी	8:38 से 10:09 तक

जीर्ण (पुरातन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त

प्राचीन (पुराने) गृह में प्रवेश के लिए ऊपर लिखे नवीन गृह मुहूर्त्तों के अतिरिक्त नीचे लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। **अक्तूबर, नवम्बर व दिसम्बर** तीन मासों में जो मृहूर्त्त नवीन गृह-प्रवेश के लिए लगाए गए हैं वही मुहूर्त्त पुरातन गृह-प्रवेश में ग्राह्य हैं। ध्यान रहे, तारा अस्त में भी विशेष परिस्थितिवश पुरातन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में श्रीराघवेन्द्र ज्यौतिष संस्थान 44/2 त्रिकुटा नगर, जम्मू में सम्पर्क कर सकते हैं। धन्यवाद!

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
वैशाख कृ.1	बुध	24 अप्रै.	वैशाख 12	स्वाति	05:47 24:41
वैशाख कृ. 2	शुक्र	26 अप्रै.	वैशाख 14	अनुराधा	05:45 08:43
वैशाख कृ.10	शुक्र	03 मई	वैशाख 21	शतभिषा	05:39 12:41
ज्येष्ठ शु. 1	शुक्र	07 जून	वैशाख 25	मृगशिरा	05:23 08:12
ज्येष्ठ शु. 1	शुक्र	07 जून	वैशाख 25	मृगशिरा	08:12 17:26
ज्येष्ठ शु.11	सोम	17 जून	आषाढ़ 4	चित्रा	09:18 17:39
ज्येष्ठ शु.13	बुध	19 जून	आषाढ़ 6	अनुराधा	17:23 21:11

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
ज्येष्ठ शु. 13	गुरु	20 जून	आषाढ़ 7	अनुराधा	05:24 07:50
श्रावण कृ. 2	सोम	22 जुला.	श्रावण 7	धनिष्ठा	22:21 29:38
श्रावण कृ. 7	शनि	27 जुला.	श्रावण 12	रेवती	10:23 12:12
श्रावणकृ. 11	बुध	31 जुला.	श्रावण 16	रोहिणी	05:42 11:34
श्रावण कृ. 12	गुरु	01 अग.	श्रावण 17	मृगशिरा	05:43 10:24
श्राव. शु. 5	शनि	10 अग.	श्रावण 26	चित्रा	05:48 17:37
श्राव. शु. 7	सोम	12 अग.	श्रावण 28	स्वाति	05:49 07:56
श्राव. शु. 10	बुध	14 अग.	श्रावण 30	अनुराधा	10:24 12:13
श्राव. शु. 13	शनि	17 अग.	भाद्रपद 2	उ.षा.	11:49 18:52
श्राव. शु. 15	सोम	19 अग.	भाद्रपद 4	धनिष्ठा	13:32 20:11
श्राव. कृ. 5	शुक्र	23 अग.	भाद्रपद 8	रेवती	11:55 19:06
श्राव. कृ. 8	सोम	26 अग.	भाद्रपद 11	रोहिणी	15:55 26:20
श्राव. कृ. 13	शनि	31 अग.	भाद्रपद 16	पुष्य	05:59 11:52
श्राव. कृ. 5	सोम	21 अक्तू.	कार्तिक 5	रोहिणी	06:26 11:11
श्राव. कृ. 8	गुरु	24 अक्तू.	कार्तिक 8	पुष्य	06:28 25:59
श्राव. कृ. 12	सोम	28 अक्तू.	कार्तिक 12	उ.फा.	15:24 22:46
कार्ति. शु. 1	शुक्र	01 नव.	कार्तिक 16	स्वाति	18:17 27:31
कार्ति. शु. 3	सोम	04 नव.	कार्तिक 19	अनुराधा	06:36 08:04
कार्ति. शु. 7	शुक्र	08 नव.	कार्तिक 23	उ.षा.	06:39 08:27
कार्ति. शु. 7	शुक्र	08 नवं.	कार्तिक 23	उ.षा.	10:51 12:03
कार्ति. शु. 8	शनि	09 नव.	कार्तिक 24	धनिष्ठा	11:48 19:28
कार्ति. कृ. 3	सोम	18 नव.	मार्ग. 3	मृगशिरा	06:47 07:57
कार्ति. कृ. 5	बुध	20 नव.	मार्ग. 5	पुष्य	14:50 17:06
कार्ति. कृ. 6	गुरु	21 नव.	मार्ग. 6	पुष्य	06:49 15:35
कार्ति. कृ. 10	सोम	25 नव.	मार्ग. 10	उ.फा.	06:52 11:40
कार्ति. कृ. 12	बुध	27 नव.	मार्ग. 12	चित्रा	06:54 18:34
कार्ति. कृ. 13	गुरु	28 नव.	मार्ग. 13	चित्रा	06:55 17:20
कार्ति. कृ. 13	शुक्र	29 नव.	मार्ग. 14	चित्रा	06:55 08:40

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
मार्ग. शु. 5	गुरु	05 दिस.	मार्ग. 20	उ.षा.	12:50 17:26
मार्ग. शु. 6	शनि	07 दिस.	मार्ग. 22	धनिष्ठा	07:01 11:3
मार्ग. शु. 7	शनि	07 दिसं.	मार्ग. 22	धनिष्ठा	11:31 17:54
मार्ग. शु. 11	बुध	11 दिस.	मार्ग. 26	रेवती	07:04 11:00
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	07:15 10:28
माघ कृ. 5	शनि	18 जन.	माघ 5	उ.फा.	14:51 22:01
माघ कृ. 11	शुक्र	24 जन.	माघ 11	अनुराधा	19:25 31:07
माघ शु. 2	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	07:10 14:18
माघ शु. 3	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	14:18 15:32
माघ शु. 6	सोम	03 फर	माघ 21	रेवती	07:08 22:29
माघ शु. 10	शुक्र	07 फर.	माघ 25	रोहिणी	07:06 16:16
माघ शु. 13	सोम	10 फर.	माघ 28	पुष्य	18:01 18:58
फाल्गु. कृ. 3	शनि	15 फर.	फाल्गु. 4	उ.फा.	07:00 10:49
फाल्गु. कृ. 5	सोम	17 फर.	फाल्गु. 6	चित्रा	06:58 08:54
फाल्गु. कृ. 5	सोम	17 फर.	फाल्गु. 6	चित्रा	11:18 16:50
फाल्गु. कृ. 6	बुध	19 फर.	फाल्गु. 8	स्वाति	06:56 07:32
फाल्गु. कृ. 8	गुरु	20 फर.	फाल्गु. 9	अनुराधा	15:09 20:54
फाल्गु. कृ. 8	शुक्र	21 फर.	फाल्गु. 10	अनुराधा	06:54 11:58
फाल्गु. शु. 1	शुक्र	28 फर.	फाल्गु. 17	शतभिषा	06:47 13:40
फाल्गु. शु. 2	शनि	01 मार्च	फाल्गु. 18	उ.भा.	11:23 16:11
फाल्गु. शु. 7	गुरु	06 मार्च	फाल्गु. 23	रोहिणी	06:41 10:51
फाल्गु. शु. 8	शुक्र	07 मार्च	फाल्गु. 24	मृगशिरा	06:40 09:19

नोट :- उपर्युक्त लिखे गए नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जीर्ण (पुरातन) गृहप्रवेश मुहूर्त्त भी स्वीकार्य होंगे, क्योंकि पुरातन गृह प्रवेश के मुहूर्त्तों में गुरु शुक्रास्त समय, अधिक क्षय मास, रिक्ता तिथि इत्यादि स्वीकार किये जाते हैं परन्तु पुरातन गृह प्रवेश में चाहे किराये का घर ही क्यों न हो पूजा पाठ इत्यादि कर लेना आवश्यक होता है।

नया-पुराना वाहनक्रय मुहूर्त्त

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
चैत्र शु. 7	सोम	15 अप्रै.	वैशाख 3	पुनर्वसु	10:32 से 11:41 तक, अभिजित्
चैत्र शु.10	गुरु	18 अप्रै.	वैशाख 6	मघा	7:57 बाद
वैशाख कृ.1	बुध	24 अप्रै.	वैशा. 12	स्वाती	6:55 से 22:37 तक
वैशाख कृ. 2	शुक्र	26 अप्रै.	वैशा. 14	अनुराधा	6:47 से 20:04 तक
आषा. शु.5	गुरु	11 जुलाई	आषाढ़ 28	पू.फा.	8:26 से 10:47 तक, अभिजित्
आषा.शु. 6	शुक्र	12 जुलाई	आषाढ़ 29	उ.फा.	7:09 से 10:43 तक, अभिजित्
आषा.शु. 11	बुध	17 जुलाई	श्रावण 2	अनु.	8:02 से 10:24, ,12:45 से 15:03 तक (भद्रा-परिहार)
आषा. शु.15	रवि	21 जुलाई	श्रावण 6	उ.षा.	7:46 से 10:03, 12:29 से 14:52 तक, अभिजित्
श्राव. कृ. 1	सोम	22 जुलाई	श्रावण 7	श्रवण	7:42 से 10:04, 12:25 से 14:48 तक, अभिजित्
श्राव. कृ. 8	रवि	28 जुलाई	श्रावण 13	अश्वि	7:19 से 9:41 तक
श्राव.कृ. 11	बुध	31 जुलाई	श्रावण 16	मृगशिरा	10:13 बाद, 11:50 से 14:13 तक
श्राव.कृ. 12	गुरु	1 अगस्त	श्रावण 17	मृगशिरा	10:24 तक, 7:03 से 9:52 तक
श्राव.कृ.13	शुक्र	2 अगस्त	श्रावण 18	पुनर्वसु	10:59 से 11:45 तक, 12:57 से 15:27 तक
श्राव. शु. 3	बुध	7 अगस्त	श्रावण 23	पू.फा.	11:22 से 13:46 तक
श्राव. शु. 7	सोम	12 अग.	श्रावण 28	स्वाती	5:56 से 7:56 तक
श्राव. शु. 9	बुध	14 अग.	श्रावण 30	अनु./ज्ये.	10:54 से 13:18 तक
श्राव. शु.15	सोम	19 अग.	भाद्रपद 4	धनिष्ठा	10:35 से 12:58 तक (भद्रा परिहार)
भाद्र. कृ. 4	शुक्र	23 अग.	भाद्रपद 8	रेवती	10:19 से 12:43
भाद्र. कृ. 10	बुध	28 अग.	भाद्रपद 13	मृगशिरा	10:00 से 14:44 तक
भाद्र शु. 1	बुध	4 सितंबर	भाद्रपद 20	उ.फा.	9:32 से 14:16 तक
भाद्र शु. 5	रवि	8 सितंबर	भाद्रपद 24	स्वाती	9:16 से 14:01 तक, अभिजित्

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
आश्वि.शु. 4	सोम	7 अक्तू.	आश्वि. 22	अनुराधा	9:48 से 12:06 तक
आश्वि.शु. 7	गुरु	10 अक्तू.	आश्वि. 25	पू.षा.	7:11 से 11:55 तक
आश्वि.शु. 8	शुक्र	11 अक्तू.	आश्वि. 26	उ.षा.	7:06 से 13:54 तक, अभिजित्
कार्ति.कृ. 1	शुक्र	18 अक्तू.	कार्तिक 2	अश्वि	6:39 से 11:23 तक
कार्ति.कृ. 5	सोम	21 अक्तू.	कार्तिक 5	मृगशिरा	6:27 से 11:11 तक
कार्ति.कृ. 8	गुरु	24 अक्तू.	कार्तिक 8	पुष्य	8:39 से 13:03 तक, अभिजित्
कार्ति. कृ.12	सोम	28 अक्तू.	कार्तिक 12	पू.फा.	8:23 से 12:47 तक, अभिजित्
कार्ति. शु. 2	रवि	3 नवम्बर	कार्तिक 18	अनुराधा	8:00 से 12:24 तक, अभिजित्
कार्ति. शु. 5	बुध	6 नवम्बर	कार्तिक 21	मूल	7:48 से 10:04 तक
कार्ति. शु. 6	गुरु	7 नवंबर	कार्तिक 22	पू.षा.	7:44 से 9:51 तक
कार्ति. शु. 7	शुक्र	8 नवंबर	कार्तिक 23	श्रवण	12:04 से 13:42 तक
कार्ति.शु. 10	सोम	11 नवं.	कार्तिक 26	पू.भा.	9:49 से 11:52 तक
कार्ति.शु. 13	गुरु	14 नवं.	कार्तिक 29	अश्वि	7:36 से 9:44 तक
मार्ग. कृ. 3	सोम	18 नवं.	मार्ग. 3	मृगशिरा	8:54 से 12:36 तक, अभि.,स.सि. योग (भद्रा-परि.)
मार्ग. कृ. 5	बुध	20 नवं.	मार्ग. 5	पुनर्वसु	9:13 से 12:55 तक
मार्ग. कृ. 10	सोम	25 नवं.	मार्ग. 10	उ.फा.	8:54 से 12:36 तक, अभिजित्
मार्ग. कृ. 12	बुध	27 नवं.	मार्ग. 12	चित्रा	8:46 से 12:33 तक
मार्ग. शु. 3	बुध	4 दिसं.	मार्ग. 19	पू.षा.	8:31 से 12:00 तक
मार्ग. शु. 5	शुक्र	6 दिसं.	मार्ग. 21	श्रवण	8:11 से 10:14 तक
मार्ग. शु. 11	बुध	11 दिसं.	मार्ग. 26	अश्वि	11:48 से 12:56 तक
मार्ग. शु. 12	गुरु	12 दिसं.	मार्ग. 27	अश्वि	7:47 से 9:50 तक
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	9:15 से 10:28 तक
माघ कृ. 3	गुरु	16 जन.	माघ 3	मघा	अभिजित्
माघ कृ. 5	रवि	19 जन.	माघ 6	उ.फा.	9:00 से 10:32, 11:43 से 13:14 तक, अभिजित्

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
माघ कृ. 10	शुक्र	24 जन.	माघ 11	अनुराधा	8:40 से 10:03, 11:23 से 12:54 तक, अभिजित्
माघ शु. 2	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	8:12 से 9:35, 10:56 से 12:27 तक, अभिजित्
माघ शु. 10	शुक्र	7 फर.	माघ 25	रोहिणी	7:45 से 9:08, 10:23 से 11:54 तक, अभिजित्
माघ शु. 13	सोम	10 फर.	माघ 28	पुनर्वसु	7:33 से 8:56 तक
फाल्गु.कृ. 2	शुक्र	14 फर.	फाल्गुन 3	पू.फा.	10:00 से 13:25 तक, अभिजित्
फाल्गु.कृ. 6	बुध	19 फर.	फाल्गुन 8	स्वाती	6:57 से 8:20 तक (रवियोग)
फाल्गु.कृ. 8	शुक्र	21 फर.	फाल्गुन 10	अनुराधा	9:33 से 12:53 तक
फाल्गु.कृ. 13	बुध	26 फर.	फाल्गुन 15	श्रवण	9:34 से 11:04 तक
फाल्गु. शु. 7	गुरु	6 मार्च	फाल्गुन 23	रोहिणी	8:38 से 12:02 तक, अभिजित्
चैत्र कृ. 12	बुध	26 मार्च	चैत्र 13	धनिष्ठा	7:15 से 15:21 तक

विपणि मुहूर्त्त

विपणि (दुकान) अथवा व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व मुहूर्त्त वाले दिन अपने कार्यालय में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा श्री गणपति सहित पंचदेव पूजा, नवग्रह पूजन, कलशस्थापनादि के पश्चात् ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करना चाहिए।

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
चैत्र शु. 12	शनि	20 अप्रै.	वैशाख 8	पू.फा.	15:59 से 22:42 तक
आषा. शु.5	गुरु	11 जुलाई	आषाढ़ 28	**उ.फा.**	13:04 बाद
आषा.शु. 6	शुक्र	12 जुलाई	आषाढ़ 29	उ.फा.	7:09 से 16:09 तक
आषा.शु. 11	बुध	17 जुलाई	श्रावण 2	अनु.	7:46 से 8:54 तक
आषा. शु.15	रवि	21 जुलाई	श्रावण 6	उ.षा.	7:45 से 10:03 तक, अभिजित्
श्राव. कृ. 1	सोम	22 जुलाई	श्रावण 7	श्रवण	7:42 से 10:04, 12:25 से 2:49 तक
श्राव. कृ. 7	शनि	27 जुलाई	श्रावण 12	रेवती	10:23 से 13:00 तक
श्राव. कृ. 8	रवि	28 जुलाई	श्रावण 13	अश्वि.	11:48 तक
श्राव.कृ. 11	बुध	31 जुलाई	श्रावण 16	मृगशिरा	10:13 से 14:13 तक
श्राव.कृ. 12	गुरु	1 अगस्त	श्रावण 17	मृगशिरा	10:24 तक
श्राव. शु. 9	बुध	14 अगस्त	श्रावण 30	अश्ले/ज्ये.	10:24 से 12:13 तक
भाद्र. कृ. 5	शनि	24 अग.	भाद्रपद 9	अश्विनी	10:15 से 14:59 तक
भाद्र. कृ. 10	बुध	28 अग.	भाद्रपद 13	मृगशिरा	5:57 से 13:23 तक
भाद्र. शु. 1	बुध	4 सितंबर	भाद्रपद 20	उ.फा.	7:00 से 9:55 तक
भाद्र. शु. 3	शुक्र	6 सितंबर	भाद्रपद 22	हस्त	6:52 से 9:25 तक
भाद्र. शु. 5	रवि	8 सितंबर	भाद्रपद 24	स्वाती	ल. 7, 8, अभिजित्
भाद्र. शु. 11	शनि	14 सितं.	भाद्रपद 30	उ.षा.	6:06 से 9:42 तक
आश्वि.शु. 4	सोम	7 अक्तू.	आश्वि. 22	अनुराधा	11:45 से 15:31 तक
आश्वि.शु. 8	शुक्र	11 अक्तू.	आश्वि. 26	उ.षा.	11:41 से 12:07 तक, अभि.
आश्वि.शु. 9	शनि	12 अक्तू.	आश्वि. 27	श्रवण	10:59 बाद
कार्ति.कृ. 1	शुक्र	18 अक्तू.	कार्तिक 2	अश्वि	6:24 से 13:16 तक
कार्ति.कृ. 5	सोम	21 अक्तू.	कार्तिक 5	मृगशिरा	6:50 से 11:11 तक
कार्ति.कृ. 8	गुरु	24 अक्तू.	कार्तिक 8	पुष्य	6:28 से 14:24 तक
कार्ति.कृ. 11	सोम	28 अक्तू.	कार्तिक 12	उ.फा.	15:36 से 21:10 तक
कार्ति. शु. 2	रवि	3 नवंबर	कार्तिक 18	अनुराधा	9:59 से 13:45 तक
कार्ति. शु. 3	सोम	4 नवंबर	कार्तिक 19	अनुराधा	6:36 से 7:36 तक
कार्ति. शु. 7	शुक्र	8 नवंबर	कार्तिक 23	उ.षा./श्रव.	11:51 से 13:29, 14:57 से 17:54 तक
कार्ति.शु. 13	गुरु	14 नवं.	कार्तिक 29	अश्वि	6:43 से 9:44 तक
मार्ग. कृ. 2	रवि	17 नवं.	मार्ग. 2	रोहिणी	6:46 से 12:50 तक
मार्ग. कृ. 3	सोम	18 नवं.	मार्ग. 3	मृगशिरा	6:47 से 7:57 तक
मार्ग. कृ. 6	गुरु	21 नवं.	मार्ग. 6	पुष्य	6:46 से 12:50 तक
मार्ग. कृ. 10	सोम	25 नवं.	मार्ग. 10	उ.फा.	7:14 से 11:40 तक
मार्ग. कृ. 12	बुध	27 नवं.	मार्ग. 12	चित्रा	7:16 से 12:10 तक

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
मार्ग. शु. 4	गुरु	5 दिसं.	मार्ग. 20	उ.षा.	13:06 से 17:26 तक
मार्ग. शु. 5	शुक्र	6 दिसं.	मार्ग. 21	श्रवण	8:11 से 10:14 तक
मार्ग. शु. 11	बुध	11 दिसं.	मार्ग. 26	रेव./अ.	7:27 से 11:00 तक
मार्ग. शु. 12	गुरु	12 दिसं.	मार्ग. 27	अश्वि	7:28 से 9:52 तक
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	7:37 से 10:28 तक
माघ कृ. 5	रवि	19 जन.	माघ 6	उ.फा.	11:43 से 13:14 तक
माघ शु. 10	शुक्र	7 फर.	माघ 25	रोहिणी	8:55 से 11:55 तक
फाल्गु.कृ. 3	शनि	15 फर.	फाल्गुन 4	उ.फा.	8:23 से 10:49 तक
फाल्गु.कृ. 8	गुरु	20 फर.	फाल्गुन 9	अनुराधा	15:09 से 19:52 तक
फाल्गु.कृ. 8	शुक्र	21 फर.	फाल्गुन 10	अनुराधा	11:04 से 12:53 तक
फाल्गु. शु. 7	गुरु	6 मार्च	फाल्गुन 23	रोहिणी	7:14 से 8:34 तक

यज्ञोपवीत मुहूर्त्त

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
चैत्र शु. 6	रवि	14 अप्रै.	वैशाख 2	आर्द्रा	7:40 से 11:49 तक
चैत्र शु. 7	सोम	15 अप्रै.	वैशाख 3	पुनर्वसु	7:32 से 11:41 तक
चैत्र शु. 10	गुरु	18 अप्रै.	वैशाख 6	आश्ले	5:53 से 7:57 तक
आषा.शु. 5	गुरु	11 जुला.	आषाढ़ 28	पू.फा.	8:26 से 11:47, अभिजित्
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	7:16 से 10:28 तक
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	आश्ले	11:50 से 10:28 तक
माघ कृ. 3	गुरु	16 जन.	माघ 3	आश्ले	7:15 से 10:28 तक
माघ शु. 2	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	9:35 से 12:27 तक
माघ शु.10	शुक्र	7 फर.	माघ 25	रोहिणी	9:08 से 11:59 तक
माघ शु.12	रवि	9 फर.	माघ 27	आर्द्रा	7:37 से 11:51 तक
फाल्गु.कृ.2	शुक्र	14 फर.	फाल्गु. 3	पू.फा.	7:00 से 13:23 तक

सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्त्ति स्थापना) मुहूर्त्त

निम्नलिखित सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। प्रायः सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। उत्तरायण में मुहूर्त्तों के अतिरिक्त भगवान् विष्णु की मूर्त्ति स्थापना में वामन जयन्ती, मत्स्य जयंती, अक्षया तृतीया, भारत में श्रीकृष्ण मन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु कृष्ण जन्माष्टमी, मार्गशीर्ष मास भी विशेष प्रशस्त है।

इसी भाँति श्री गणेश प्रतिमा की स्थापना में उ.भा., रेवती नक्षत्र, मंगलवार, गणेश चतुर्थी विशेषकर भाद्रपद कृष्ण एवं शुक्ल चतुर्थी तिथि विशेषतः शुभ मानी जाती है।

श्री राम की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मासों के अतिरिक्त, श्री परशुराम जयंती, अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ है। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित माना जाता है।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूला नक्षत्र एवं बसन्त पंचमी विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्त्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं।

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
चैत्र शु. 6	रवि	14 अप्रै.	वैशाख 2	आर्द्रा	7:36 से 11:45 (शिव)
चैत्र शु. 7	सोम	15 अप्रै.	वैशाख 3	पुनर्वसु	7:32 से 11:41, अभिजित् (लक्ष्मी नारायण, शिव)
चैत्र शु. 8	मंगल	16 अप्रै.	वैशाख 4	पुष्य	7:23 से 11:37 (शिव)
आषा. शु. 6	शुक्र	12 जुलाई	आषाढ़ 29	उ.फा.	8:22 से 10:43 (शिव, स्कन्द)
श्राव.कृ. 1	सोम	22 जुलाई	श्रावण 7	श्रवण	7:42 से 10:04 (शिव)

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
श्राव.कृ. 8	रवि	28 जुलाई	श्रावण 13	अश्विनी	7:19 से 9:42 तक (शिव)
श्राव.कृ. 11	बुध	31 जुलाई	श्रावण 16	मृगशिरा	5:05 से 7:27, 9:43 से 12:11 (शिव)
श्राव.कृ. 12	गुरु	1 अगस्त	श्रावण 17	मृगशिरा	7:03 से 9:25 (शिव)
श्राव.कृ. 12	गुरु	1 अगस्त	श्रावण 17	आर्द्रा	11:43 से 14:06 (शिव, हनुमान)
श्राव.कृ. 13	शुक्र	2 अगस्त	श्रावण 18	आर्द्रा/पुन.	6:59 से 9:21 (शिव)
श्राव.कृ. 14	शनि	3 अगस्त	श्रावण 19	पुन./पु.	6:55 से 9:17, 11:33 से 14:00
श्राव. शु. 3	बुध	7 अगस्त	श्रावण 23	पू.फा.	6:40 से 9:01, 11:22 से 13:46 (शिव)
श्राव. शु. 7	रवि	11 अग.	श्रावण 27	स्वाती	6:24 से 8:45 (शिव, दुर्गा मां)
श्राव. शु. 7	सोम	12 अग.	श्रावण 28	स्वाती	6:20 से 7:56 तक (शिव, दुर्गा)
श्राव. शु. 14	रवि	18 अग.	भाद्रपद 3	श्रवण	10:39 से 13:03 तक (शिव)
मार्ग. कृ. 4	मंगल	19 नवं.	मार्ग. 4	आर्द्रा	9:17 से 1:00 तक (शिव, हनुमान)
मार्ग. कृ. 5	बुध	20 नवं.	मार्ग. 5	पुनर्वसु	9:14 से 12:55 तक (शिव, लक्ष्मी नारायण, राम दरबार)
मार्ग. कृ. 12	बुध	27 नवं.	मार्ग. 12	चित्रा	8:46 से 12:23 तक (शिव, रामदरबार, लक्ष्मी नारायण)
मार्ग. शु. 2	मंगल	3 दिसं.	मार्ग. 18	मूल	8:22 से 12:04 तक (शिव हनुमान)
मार्ग. शु. 5	शुक्र	6 दिसं.	मार्ग. 21	श्रवण	8:11 से 10:13 तक (शिव, दुर्गा, राधा कृष्ण, रामदरबार)
मार्ग. शु. 6	शनि	7 दिसं.	मार्ग. 22	धनिष्ठा	8:07 से 11:43 (शिव)
मार्ग. शु. 11	बुध	11 दिसं.	मार्ग. 26	अश्वि	11:47 से 14:16 तक (शिव, रामदरबार, राधाकृष्ण)
मार्ग. शु. 12	गुरु	12 दिसं.	मार्ग. 27	अश्वि नी	7:47 से 9:50 तक (शिव, रामदरबार, राधाकृष्ण, लक्ष्मी नारायण)

पक्ष तिथि	वार	ता. अं.	प्रविष्टा	नक्षत्र	मुहूर्त समय
			सन् 2025 ई.		
माघ कृ. 2	बुध	15 जन.	माघ 2	पुष्य	9:15 से 10:28 तक (शिव, रामदरबार, लक्ष्मी नारायण, राधाकृष्ण)
माघ कृ. 5	शनि	18 जन.	माघ 5	पू.फा.	9:03 से 10:27 तक, अभिजित् (शिव)
माघ कृ. 8	बुध	22 जन.	माघ 9	स्वाती	8:48 से 10:10 तक (शिव, लक्ष्मीनाराण, रामदरबार आदि)
माघ कृ. 11	शनि	25 जन.	माघ 12	ज्येष्ठा	8:36 से 9:59 तक, अभिजित् (शिव, श्रीदुर्गा, लक्ष्मी इत्यादि)
माघ कृ. 12	रवि	26 जन.	माघ 13	ज्येष्ठा	6:53 से 8:26 तक (शिव, दुर्गा, लक्ष्मी आदि)
माघ शु. 2	शुक्र	31 जन.	माघ 18	शतभिषा	8:12 से 9:35, अभिजित् (शिव, महाकाली, तामसदेव)
माघ शु.10	शुक्र	7 फर.	माघ 25	रोहिणी	7:45 से 9:08, अभिजित् (शिव, दुर्गा, राम, राधाकृष्ण)
माघ शु.12	रवि	9 फर.	माघ 27	आर्द्रा	7:37 से 9:00, अभि. (शिव)
माघ शु.13	सोम	10 फर.	माघ 28	पुन.	6:22 से 7:45 (शिव, राम, कृष्ण, लक्ष्मी)
फाल्गु.कृ. 2	शुक्र	14 फर.	फाल्गु. 3	पू.फा.	10:00 से 13:25 तक (शिव)
फाल्गु.कृ. 6	मंगल	18 फर.	फाल्गु. 7	स्वाती	9:45 से 11:16 (शिव)
फाल्गु.कृ. 8	शुक्र	21 फर.	फाल्गु. 10	अनुराधा	6:50 से 8:13, अभिजित् (शिव, दुर्गा, राम, राधाकृष्ण)
फाल्गु.कृ.13	बुध	26 फर.	फाल्गु. 15	श्रवण	6:30 से 7:54 (शिव परिवार)
फाल्गु.शु. 7	गुरु	6 मार्च	फाल्गु. 23	रोहिणी	8:38 से 10:09 तक (शिव, दुर्गा, राम, कृष्ण आदि)

रामायण अदि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त्त

रामायण, भागवतादि पुराण, महाभारत इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों की कथा प्रारम्भ करने में संयोज्य काल–

तिथि – (शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15)

वार – सू., चं., बु., गु. श.।

नक्षत्र– अश्वि, रोहि., मृग., पुन., पुष्य, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव, धनि, शत., रेव।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ – (1 कृ), 2, 3, 5, 9, 10, 12 एवं 15 शुक्ल।

शुभ वार – सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र – अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न – 1, 4, 7, 10 ।

विशेष– केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन- छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रहण के समय स्थिर लग्न प्रशस्त होता है।

श्रावण के सोमवार

श्रावण मास में आशुतोष भगवान् शंकर की पूजा का विशेष महत्त्व है। जो प्रतिदिन पूजन न कर सकें उन्हें सोमवार को शिव पूजा अवश्य करनी चाहिये और व्रत रखना चाहिये। सोमवार भगवान् शंकर का प्रिय दिन है, अत: सोमवार को शिवाराधना करनी चाहिये। इसी प्रकार मासों में श्रावण मास भगवान् शंकर को विशेष प्रिय है। अत: श्रावण मास में प्रतिदिन शिवोपासना का विधान है। श्रावण में पार्थिव शिव पूजा का विशेष महत्त्व है। अत: प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार तथा प्रदोष को शिवपूजा या पार्थिव शिवपूजा अवश्य करनी चाहिये। इस मास में लघुरुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्र पाठ कराने का भी विधान है। श्रावण मास में जितने भी सोमवार पड़ते हैं, उन सब में शिवजी का व्रत किया जाता है। इस व्रत में प्रात: गङ्गा स्नान अन्यथा किसी पवित्र नदी या सरोवर में अथवा विधिपूर्वक घर पर ही स्नान करके शिव मन्दिर में जाकर स्थापित शिवलिङ्ग का या अपने घर में पार्थिव मूर्ति बनाकर यथाविधि षोडशोपचार-पूजन किया जाता है। यथासम्भव विद्वान् ब्राह्मण से रुद्राभिषेक भी कराना चाहिये। इस व्रत में श्रावणमाहात्म्य और श्रीशिवमहापुराण की कथा सुनने का विशेष महत्त्व है। पूजन के पश्चात् ब्राह्मण-भोजन कराकर एक बार ही भोजन करने का विधान है। भगवान् शिव का यह व्रत सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

रक्षाबन्धन निर्णय

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। इसमें पराह्णव्यापिनी तिथि ली जाती है। यदि वह दो दिन हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वा लेनी चाहिये। यदि उस दिन भद्रा हो तो उसका त्याग कर देना चाहिये। भद्रा में श्रावणी और फाल्गुनी दोनों वर्जित हैं; क्योंकि श्रावणी से राजा का और फाल्गुनी से प्रजा का अनिष्ट होता है–

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी॥

श्रावणी उपाकर्म विधान

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा ही उपाकर्म का प्रसिद्ध काल माना गया है। श्रावणी विशेषकर ब्राह्मणों अथवा पण्डितों का पर्व है। वेदपारायण के शुभारम्भ को उपाकर्म कहते हैं। इस दिन यज्ञोपवीत के पूजन का भी विधान है। ऋषिपूजन तथा पुराने यज्ञोपवीत को उतारकर नया यज्ञोपवीत धारण करना पर्व का विशेष कृत्य है। प्राचीन समय में यह कर्म गुरु अपने शिष्यों के साथ किया करते थे। यह उत्सव द्विजों के वेदाध्ययन का और आश्रमों के उस पवित्र जीवन का स्मारक है। अत: इसकी रक्षा ही नहीं, अपितु इसे यथार्थरूप में मानना हमारा परम धर्म होना चाहिये।

वर-वधु अष्टकूट कुण्डली मिलान का ज्योतिष शास्त्रीय विवेचन

- डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

कुण्डली मिलान का ज्योतिष शास्त्रीय एवं आध्यात्मिक रहस्य क्या है? एक सूक्ष्म विश्लेषणात्मक तर्क संगत विवेचन:- वैवाहिक मिलान करते समय वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह मैत्री (राशिस्वामी मैत्री) गण, राशि (भकूट), नाड़ी सभी का विचार करना आवश्यक बताया गया है **(वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह मैत्री गण राशिकूट नाड़ी एतत् सर्वं विवाहे व्यापारे शुभ कार्ये च विचारणीयम्)**।

जन्म नक्षत्रों पर आधारित जन्म राशियों के आधार पर ही सम्बन्धित राशियों की वर्ण व्यवस्था होती है जो जन्म लेते ही शुरू हो जाती है। राशियों एवं ग्रहों के अनुसार ही हमारा मस्तिष्क सोचता है और राशियों के स्वामी ग्रह की किरणें हमारे मस्तिष्क को चलाती है। जैसा राशि और ग्रह का स्वभाव होता है वैसा ही हमारे वर्ण का स्वभाव होता है। इसका सामाजिक वर्ण व्यवस्था भाव सामाजिक जाति से कोई सम्बन्ध नहीं होता। यह दोष जन्मराशियों से सम्बन्धित वर्णों का है जिसे ज्यादातर लोग सामाजिक वर्ण व्यवस्था से जोड़कर ही देखते हैं जो सही नहीं एवं अप्रसंगिक है। परन्तु इस दोष की गूढ़ता को भली भान्ति जानने वाले ज्ञानियों के नजरिए में ऐसे स्वयं-भू ज्ञानी जो जन्मराशियों के वर्ण दोष को सामाजिक वर्ण व्यवस्था से जोड़कर देखते हैं परिहास का पात्र बनते हैं जिनकी वजह से ज्योतिष शास्त्र में विश्वास रखने वाले लोग अक्सर भ्रमित होते देखे जाते है। यह वर्ण मिलान केवल नाक्षत्रिक मिलान का हिस्सा है न कि सामाजिक वर्ण व्यवस्था का। इसलिए इस दोष को सामाजिक जातीय वर्ण व्यवस्था से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। मिलान के हर-एक कूट का विशेष ज्योतिषीय महत्त्व होता है। खेद इस बात से होता है कि वैदिक ऋषियों की वैवाहिक मिलान की इस गूढ़ आध्यात्मिकता एवं इसके गूढ रहस्य से हमारे बहुत से ज्योतिषी अभी भी अनभिज्ञ है। ऐसे में वह वर्ण दोष को सामाजिक वर्ण व्यवस्था क्षत्रियों से, नाक्षत्रिक गण दोष को सामाजिक जातीय वर्ण व्यवस्था वैश्यों से, नाक्षत्रिक योनी दोष को सामाजिक जातीय वर्ण व्यवस्था शूद्रों से और नक्षत्र आधारित नाड़ी दोष को सामाजिक जातीय वर्ण व्यवस्था ब्राह्मणों से जोड़कर देखते है जो अप्रसंगिक है। जबकि वर्ण योनि गण नाड़ी का सामाजिक जातीय वर्ण व्यवस्था से कोई लेना देना न होकर जन्म राशिओं से सम्बन्धित वर्ण योनि गण नाड़ी आदि से है अत: उन्हीं के अनुसार ज्योतिष, शास्त्रीय विचार करना चाहिए इन दोषों को राशिओं की ज्योतिष शास्त्रीय कसौटी पर आधारित वर्णों के अनुसार देखना ही शास्त्र सम्मत है क्यों कि यह कूट मिलान की रचना सम्पूर्ण जनमानस को ध्यान में रखकर बनाया गया है। ग्रह किसी की सामाजिक वर्ण जाति को देखकर अपना प्रभाव नहीं करते। आकाशीय ग्रह नक्षत्र राशिओं की आकाशीय किरणों एवं नेटवर्क का प्रभाव सभी पर एक जैसा ही होता है।

पं. विश्व कुमार शर्मा
अध्यक्ष सनातन धर्म पथ परिषद्
जुगियाल शाखा (केन्द्र पठानकोट)
धर्म प्रचारक
श्री ब्राह्मण सभा पंजीकृत
शाहपुर कंडी टाउनशिप,
जिला पठानकोट (पंजाब)

"वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिषशास्त्रमनुत्तमम्"

आकाश मण्डल में स्थित नक्षत्रों, राशियों ग्रहों की चाल और गति का मानव जीवन में सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव का अध्ययन जिस विधि से किया जाता है उसे हम ज्योतिष शास्त्र कहते है। भारतीय ज्योतिष वेद का एक अङ्ग है जिस वेद के छ: अंगों में इसे आँख यानी नेत्र कहा गया है। वैदिक काल से ही आकाश और आकाश में विचरण करने वाले ये पिण्ड मानवों की जिज्ञासा का विषय बने है और प्रकृति पर इसका प्रभाव सदा से ही अनुसंधान के लिए उन्हें प्रेरित करता रहा है।

कैसे वर्ण का एक गुण न मिलने पर विवाह टूट जाता है क्या होते है 36 गुण? अष्टकूट विचार:-

1. **पहला गुण :- वर्ण मिलान :-** ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा गया है।

इस लिए वैदिक ज्योतिष शास्त्रानुसार नक्षत्रों पर आधारित राशियों के चार वर्ण होते है:-

1 ब्राह्मण वर्ण राशिएँ :- मीनालि कर्कटा विप्रा:।। मीन वृश्चिक कर्क।।

2. क्षत्रिय वर्ण राशिएँ :-क्षत्र मेषो हरिर्धनु:।। मेष सिंह, धनु।।

3. वैश्य वर्ण राशिएँ : वैश्य: कन्या वृषो मृग:।। वृष कन्या मकर।।

4. शूद्रवर्ण राशिएँ : शूद्रो युग्मं तुला कुम्भों।। मिथुन तुला कुम्भ।।।

इन वर्णों का ज्योतिष शास्त्रीय रहस्य होता है। आकाश से आने वाली नक्षत्रों, राशियों और राशियों के स्वामी ग्रह की किरणे हमारे मस्तिष्क को चलाती है। राशियों और ग्रहों के अनुसार ही हमारा मस्तिष्क सोचता है। जैसा राशि और गृह का स्वभाव होता है वैसा ही हमारे वर्ण का स्वभाव होता है। इसका सामाजिक जाति से कोई सम्बन्ध नहीं होता। यह वर्ण मानव जीवन की उत्पत्ति (भाव जन्म) के साथ ही शुरू से आते है।

1. **ब्राह्मण वर्ण की राशि** :- कर्क, वृश्चिक और मीन में पैदा होने वाले जातक ब्राह्मण वर्ण के होते है। जिसके कारण इन जातक/जातिकाओं में ज्ञान की मात्रा ज्यादा होती है। इस वर्ण वाले जातक चाहे किसी भी जाति व धर्म में पैदा हों चाहे सनातन हिन्दू हो, मुसलमान हो. सिक्ख हों, ईसाई हो, बौद्ध या जैन धर्म या किसी अन्य धर्म से हों, इनमें ज्ञान की मात्रा अधिक होती है।

2. **क्षत्रिय वर्ण की राशिए** :- मेष, सिंह, धनु राशि में पैदा होने वाले जातक क्षत्रिय वर्ण के होते है। इन राशि वालों में क्षत्रिय गुण ज्यादा होते है। इनमें लड़ने की क्षमता ज्यादा होती है। क्षत्रिय वर्ण में जन्म लेने वाले चाहे वे सामाजिक जाति व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण कुल में जन्म लें या फिर किसी अन्य वैश्य, शूद्र आदि किसी कुल में, इनमें लड़ने की क्षमता ज्यादा होती है।

3. **वैश्य वर्ण की राशिएँ**:- वृष, कन्या और मकर राशि वाले व्यापारी प्रवृति वाले वैश्य गुण सम्पन्न होते हैं।

4. **शूद्र वर्ण की राशिएँ**:- मिथुन, तुला, कुम्भ राशि/वर्ण वाले जातक/जातिकाओं में शूद्र वर्ण वाले गुण अधिक होते हैं। इन लोगों का दिमाग छोटे और निम्नवर्ग के कामों में ज्यादा रहता है। ऐसे लोग मेहनत करने वाले कार्यों में ज्यादा रुचि रखते हैं। ऐसा जातक बड़ा अधिकारी या मन्त्री होने पर भी घर के कार्य खुद ही करना पसन्द करता है।

कुण्डली मिलाते, समय अगर वर का वर्ण ब्राह्मण है और कन्या (वधू) का भी ब्राह्मण वर्ण है तो दोनों का रुझान एवं नेटवर्क एक जैसा हो जाता है और तालमेल अच्छा रहता है। दोनों ज्ञानी होंगे।

अगर एक का वर्ण ब्राह्मण है और दूसरे का क्षत्रिय तो दोनों में तकरार होना स्वभाविक हो जाता है।

अगर लड़के का वर्ग बाह्मण है और लड़की का वैश्य वर्ण है तो लड़के में ज्ञान की मात्रा अधिक रहेगी और लड़की का दिमाग व्यापार में ज्यादा चलेगा, लड़की अपने कैरियर पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करेगी। जिसके कारण तालमेल नहीं रहता। जिसके कारण घर में विवाद हो जाता है।

इसी प्रकार लड़के का वर्ण ब्राह्मण और लड़की का शूद्रवर्ण हो तो लड़की में निम्न श्रेणी के काम करने की आदत होती है जैसे बिना स्नान किये रसोई घर का काम करना या बिना कुल्ला किए चाय विस्कुट आदि खा लेना। जिसके कारण दोनों के दिमाग के नेटवर्क में भिन्नता आ जाती है और तालमेल भी भिन्न भिन्न हो जाता है लड़का धार्मिक विचारों का होता है और लड़की व्यसनशील होती है।

शास्त्रों में कहा गया है कि उत्तम वर्ण की कन्या विशेषकर ब्राह्मण वर्ण की कन्या के साथ हीन वर्ण के वर का विवाह न करें। ऐसा वर्ण मिलान श्रेयकर नहीं।

(क) नोत्तमामुद्वहेत कन्या ब्राह्मणी च विशेषत:।
म्रियते हीन वर्णश्च ब्रह्मा रक्षितो यदि॥

भावार्थ– उत्तम वर्ण की विशेषकर ब्राह्मण वर्ण की कन्या के साथ हीन वर्ण के वर से विवाह न करे। अन्यथा ब्रह्मा भी रक्षा करे तो वर की मृत्यु हो जाती है। (अथवा विवाह टूट जाता है)।

(ख) विप्र वर्णे च या नारी शूद्र वर्णे च य: पति:।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शकस्य दुहिता यदि।

ब्राह्मण वर्ण की कन्या के साथ शूद्र वर्ण के वर का विवाह न करें यदि किया जाए तो चाहे इन्द्र की कन्या क्यों न हो तथापि निश्चय विधवा होती है अथवा विवाह टूट जाता है।

इस वर्ण का 1 कूट (भाव एक गुण) होता है। इस एक गुण का दोष युक्त होना जिन्दगी को तबाह कर देता इस लिए कुण्डली मिलाते हुए यह अवश्य देख लेना चाहिए। अष्टकूट में वर्ण कूट का मिलान स्वभाव और आदतों का मिलान होता है।

इस एक गुण के न मिलने पर स्वभाव भिन्न-भिन्न होने से शादी टूट जाती है। जबकि कई बार वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद होने पर पूछा जाता है कि शादी क्यों टूट गई तो पता चलता है कि लड़का म्लेच्छ रहता है। कुल्ला नहीं करता मुँह से बदबू आती रहती है इसलिए मैं उनके साथ नहीं रह सकती बहुत से लोग कुण्डली मिलान का मजाक उड़ाते है उनको यह नहीं पता कि इसमें कितनी गहराई है। कुछ पति- पत्नी के वैवाहिक सम्बन्धों में जब दरार आती है तो कारण होता है कि पत्नी तो शराब बहुत पीती है और बहुत दुःखी है। विवाह में विधिवत् मिलान नहीं हुआ। इसलिए विवाह से पहले कुण्डली अवश्य मिलानी चाहिए।

वश्य कूट

कुण्डली मिलान में अष्टकूट के 2 गुणों वाले वश्य का क्या महत्त्व है। (कुण्डली मिलान के बाद भी हत्या क्यों हो जाती है? जीवन भर क्लेश क्यों रहता है।)

गुण मिलान सिर्फ कुण्डली मिलान ही नहीं बल्कि एक छत के नीचे रहने वाले दो अन्जान स्त्री और पुरुष का मन, आत्मा और शरीर का मिलान होता है। (कुण्डली मिलान में दोनों का भविष्य, चरित्र, आयु धन दरिद्रता, रोग निपुंस्कता, बांझपन, व्यापार, स्वभाव, सुख साधन को देखा जाता है) इसलिए नाक्षत्रिक गुण मिलान और कुण्डली मिलान दोनों विधिवत देखा जाना चाहिए।

वश्य का मतलब क्या होता है। पहले इसको समझना चाहिए। 12 राशियों से 5 वश्य होते हैं। राशि के अनुसार वश्य का अर्थ स्वभाव एक दूसरे को वश में करने का होता है। चतुष्पद नर जलचर वनचर एवं कीट यह पाँच वश्य होते हैं।

1. **चतुष्पद वश्यः**- मेष, सिंह, धनु का उत्तरार्द्ध; मकर राशि का पूर्वार्द्ध ये चतुष्पाद वश्य हैं।
2. **मानव (द्विपद) नर-वश्य** :-मिथुन, कन्या तुला और धनु का पूर्वार्द्ध और कुम्भ राशि ये सभी द्विपद वश्य में आती है।
3. **जलचर वश्यः**- कर्क राशि मकर राशिका उत्तरार्ध, मीन राशि यह जलचर वश्य में आती है।
4. **वनचर** :- सिंह राशि वनचर वश्य में आती है।
5. **कीट वश्य** :- वृश्चिक राशि कीट वश्य में आती हैं।

अब ये सभी राशि वृश्चिक राशि को छोड़कर सिंह राशि के आधीन होती है।

इस प्रकार वश्य के भी चार वर्ग होते हैंः-

वश्य विचार के अन्तर्गत वश्यों में परस्पर मैत्री, वैर, भक्ष्य और वश्य आदि चार मूल तत्त्व है।

1. **वश्य वर्ग** :- वश्य वर्ग में एक राशि दूसरे को अपने वश में रखती है।
2. **मित्र वर्ग** :- जो राशि के स्वामी एक दूसरे से मित्रता रखते हैं।
3. **शत्रु वर्ग** :- जो राशि वर्ग एक दूसरे से दुश्मन भाव अर्थात् शत्रुता रखते हैं।
4. **भक्ष्य वर्ग** :- जो राशि वर्ग एक दूसरे का भक्षण करते हैं।

कुण्डली मिलान करते समय अब यह देखना होगा कि वर की राशि का वश्य वर्ग कहीं कन्या के वर्ग का भक्ष्य तो नहीं है। अगर ऐसा हुआ तो कुण्डली में उच्चग्रहों के होने के बाद भी लड़का या लड़की एक दूसरे को मार देते है क्योंकि इन दोनों की राशियों का भक्ष्य था।

"हित्वा मृगेन्द्रं नर राशि वश्यः, सेव तथैषां जलजास्तु भक्ष्या सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनाऽलिं ज्ञेयं नराणां व्यावहारतोऽन्त्य।"

सिंह राशि को छोड़कर अन्य सब मनुष्य राशि के वश्य है। जलचर सब उनके भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर सिंह के सब भक्ष्य है। और अन्य का वश्य व्यवहार जान लेना चाहिए।

वर्ग का निर्णय इस प्रकार कर सकते है :-

1. **गरुड वर्ग के नामाक्षरः**- अ इ उ ए ओ (अंवर्ग) अवर्गो गरुडोज्ञेयो।
2. **बिडाल वर्ग के नामाक्षर** :- क ख ग घ ङ. (कवर्ग) विडालस्यात कवर्गकः।
3. **सिंह वर्ग के नामाक्षर** :- च छ ज झ ञ (चवर्ग) चवर्ग सिंह नामाः।
4. **श्वाम वर्ग के नामाक्षर** :- ट ठ ड ढ ण (टवर्ग) च टवर्ग : कुक्करः, स्मृतः।
5. **सर्प वर्ग के नामाक्षर** :- तथदधन (तवर्ग) सर्पाख्य स्यात तवर्गोऽपि।
6. **मूषक वर्ग के नामाक्षर** :- पफ ब भ म (पवर्ग) पर्वगो मूपकं मतः।
7. **मृग वर्ग के नामाक्षर** :- य र ल व (यवर्ग) यवर्गो मृग नामाख्य।
8. **मेढा वर्ग के नामाक्षर** :- श ष स ह (शवर्ग) स्तदा मेष शबर्गकः।

इन वर्गों में भक्ष्य, शत्रु, मित्र और समान वर्ग माने जाते है जैसे :-

1. गरुड वर्ग (अवर्ग) सर्प वर्ग (तवर्ग) का भक्षण करता है भाव शत्रु है। गरुड-साँप
2. बिडाल वर्ग (बिल्ली) (कवर्ग) और मूषक वर्ग (चूहा) (पवर्ग) का भक्षण करता है भाव शत्रु है।
   भाव बिडाल वर्ग अपने से पांचवे मूषक का भक्ष्य है भाव शत्रु है। बिल्ली चूहा
3. सिंह वर्ग (चवर्ग) मृग् (यवर्ग) का भक्षण करण है भाव शत्रु है (शेर-हिरण)
4. श्वान (कुत्ता) वर्ग (टवर्ग) भेढा (भेड़) वर्ग (शवर्ग) आपस में शत्रु है

वर के नाम से वधू के नाम का तीसरा वर्ग सम होता है शादी कर भी ली जाए तो जीवन में न अच्छा न बुरा होता है। यह बात वर से वधू और वधू से वर के लिए देखी जानी चाहिए।

शास्त्र वचनः-

स्ववर्गात पंचम शत्रु, चतुर्थो मित्र संज्ञक।
उदासीनस्य तृतीयः स्याद्वर्ग भेदस्त्रिधोच्यते।
यो यस्य पञ्चमस्थाने सः वैरी तस्य प्रोच्यते।
उदासीनस्तृतीये स्याच्चतुर्थे मित्रमुच्यते॥

फलमः-

"स्ववर्ग परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीति शाश्वती।
उदासीने प्रीतिरल्पा, शत्रु वर्ग मृतिर्भवेत॥"

अपने वर्ग के साथ अत्यन्त प्रेम, मित्र वर्ग के साथ स्थाई प्रेम, सम वर्ग के साथ सामान्य प्रेम और शत्रु वर्ग के साथ मृत्युदायक अथवा कष्ट होता है।

मेषमूषकयोः सम्पद् गज मार्जारयोः स्थितिः।
श्वाने मेषे च मृत्युः पीडा स्यात् सिंह नागयोः॥

मेष-मूषक वर्ग में सम्पत्ति लाभ और विडाल में स्थिरवास, श्वान (कुत्ता) और मेष (भेडा) वर्ग में मृत्यु तथा सिंह नाग वर्ग से कष्ट होता है। इसका विचार विवाहादि में होता है।

संस्कृत भाषा में वश्यम् का तात्पर्य किसी का नियन्त्रण अथवा वर्चस्व। विवाह के लिए कुण्डली मिलान के समय इसकी जांच की जाती है। विवाह हेतु वश्य की जांच करने का उद्देश्य भविष्य में पति-पत्नी के बीच सम्भावित अन्तर्विरोध एवं टकराव को रोकना है।

3. **तारा कूटः**- कुण्डली मिलान में तारा दोष के 3 गुण का क्या रहस्य/महत्त्व है? वर-वधू कुण्डली मिलान पार्टनरशिप, नौकर रखना और मित्रता में तारा मिलान जरूरी क्यों है?

(क) विवाहोपरान्त पति पत्नी की या पत्नी पति की हत्या क्यों कर देता/देती है।

(ख) लव जिहाद में एक प्रेमी-प्रेमिका की हत्या क्यों कर देता है।

(ग) नौकर मालिक की हत्या क्यों कर देता है या मालिक-नौकर को टिकाने क्यों लगा देता है।

तारा कूट मिलान को एक प्रकार से दो अनजान लोगों के भाग्य का मिलान कह सकते है या यह भी कह सकते हैं कि दो अनजान लोगों की ओरा का मिलान कैसा है? दोनों की ओर मिलान करती है कि नहीं।

कुण्डली मिलान में 9 प्रकार की तारा होती है:-

जन्म सम्पत् विपत् क्षेत्र प्रत्यरि साधकों बधः
तथा मैत्रातिमैत्रे च नवतारा प्रकीर्तिताः।।

1	जन्म	1	इन में 3, 5, 7, क्रमशः विपत् (विपति)
2	सम्पत्	1	प्रत्यरि (विरोध या अपमान) और वध
3	विपत्	1	(मृत्यु प्रदायकः)
4	क्षेम	1	
5	प्रत्यरि	1	
6	साधकः	1	
7	वध	1	
8	मैत्र	1	
9	अतिमैत्र	1	ये नौ ताराएँ पूर्वाचार्यों ने कही हैं।

ज्योतिष एक बहुत गहरा शास्त्र है जो दिव्य आलौकिक आध्यात्मिक ज्ञान से लबालब भरा हुआ है। कोई भी फैसला जल्दबाजी में न करें। नाक्षत्रिक गुण मिलान कुण्डली मिलान का एक अति महत्त्वपूर्ण पूरक हिस्सा है। अपने पूर्वज ऋषियों की इस दिव्य आलौकिक वेद-विद्या पर हम तुच्छ प्राणी अंगुली नहीं उठा सकते। पहले हमें ज्योतिष शास्त्र की दिव्यता को समझ लेना चाहिए यही हमारी उपलब्धि होगी।

1. **कन्याभं वरभाद्गण्यं वरभाद् वर भं तथा**
   नवहृच्छेषभे नेष्टे सप्त पञ्च त्रि संख्यके।। (नेष्ट 7, 5, 3 संख्या)
2. **कन्यार्काद् वरभं यावत कन्याभं वरभाद्।**
   गणयेन्नवहृच्छेषे त्रिष्वद्रिभम् सत्स्मृतम्।। (नेष्ट 3, 9, 5, 9, 7 संख्या)

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र पर्यन्त, वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर उनमें नौ का भाग देने पर 3, 5, 7 बचें तो अशुभ तारा होती है।

अगर वर का नक्षत्र वधू के नक्षत्र से तीसरा आता है तो शादी के बाद भयंकर विपत्ति आना शुरू हो जाती है जैसा कि तारे के नाम विपत् से स्वयं स्पष्ट है। परन्तु दोष वधू को दे दिया जाता है कि जब से वधू के पैर घर में पड़े हैं तब से घर में शान्ति नहीं है। इसी प्रकार अगर सातवाँ नक्षत्र (तारा) आता है तो शादी के बाद किसी एक की मृत्यु हो जाती है जैसा कि सप्तम तारा वध के नाम से स्वयं स्पष्ट है वैवाहिक जीवन विखर (विछुड़) जाता है भाग्य का नाश हो जाता है वधतारा आने पर शादी या व्यापार में सांझेदारी या मित्रता भी नहीं करनी चाहिए।

इसके अलावा कोई भी शुभ काम आप करते हैं तो जिस दिन वो काम करना चाहते है, उस दिन के नक्षत्र को अपने नक्षत्र से मिला लेना चाहिए भाव जन्म नक्षत्र से तारा को देख लेनी चाहिए; कहीं ऐसा न हो कि आपने यात्रा तो शुभ मुहूर्त देखकर शुरू की और रास्ते में दुर्घटना हो गई।

उदाहरण के लिए मान लेते है कि आप यात्रा पर जा रहें हैं। आपका जन्म नक्षत्र अश्विनी है और जिस दिशा जा रहे हैं उस दिन सातवां नक्षत्र यानी पुनर्वसु नक्षत्र है जो कि आपके नक्षत्र का वध बनता है तो आपकी उस यात्रा में मृत्यु भी सम्भव हो सकती है।

इस लिए कुण्डली मिलान में तारा कूट (तारा देष) के 3 गुण बहुत ही महत्त्वपूर्ण होते हैं।

यह तारा कूट गुण का मिलान पिता-पुत्र के व्यापार में, व्यापार में, सांझेदारी में, या यात्रा में बहुत ही आवश्यक होता है। मित्रता में यह तारा मिलान बहुत आवश्यक होता है।

4. योनि कूट का गुण मिलान में महत्व

कुण्डली के मिलान में "योनि कूट" के न मिलने से (भाव योनि दोष होने से) शरीरिक सम्बन्धों को लेकर झगड़ा क्यों होता रहता है और रिश्ते क्यों टूट जाते है?

क्या है 4 गुण के इस दोष का रहस्य? कुण्डली मिलान इतना आसान नहीं है जितना इसको समझा जाता है। सिर्फ गुण और दोष देखने से मिलान नहीं होता है।

इस मिलान के रहस्य को गहराई से समझना बहुत जरूरी है। यह मिलान जातिगत नहीं होता। योनि दोष केवल शूद्र जाती को लगता है ऐसा नहीं है।

84 लाख योनियों में 14 योनियाँ सब से महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। जिनका निर्धारण मनुष्य के पैदा होने के समय नक्षत्र के अनुसार किया जाता है।

27 नक्षत्रों के अनुसार 14 योगियां होती है।

1. अश्व योनि (अश्विणी और शतभिषा नक्षत्र)
2. गज योनि (भरणी, रेवती)
3. मेष योनि (कृतिका, पुष्य)
4. सर्प योनि (रोहिणी, मृगशिरा)
5. श्वान योनि (आर्द्रा, मूला।
6. मार्जार योनि (पुनर्वसु, अश्लेषा)
7. मूषक योनि (मघा, पू०भा०)
8. गौ योनि (उ०फा०, उ० भाद्रपद)
9. महिष योनि (हस्त, स्वाती)
10. व्याघ्र योनि (चित्रा, विशाखा)
11. मृग योनि (अनुराधा, ज्येष्ठा)
12. वानर योनि पू०षा०, श्रवण)
13. नकुल योनि (उ०षा०)
14. सिंह योनि (धनिष्ठा, पू०भा०)

इन 14 योनियों में :-

कुछ मित्र योनि होती हैं

कुछ शत्रु योनि होती हैं और

कुछ महावैर योनि होती है। जैसे सर्प (साँप) और नकुल (नेवल); अश्व (घोड़ा) और महिष; गज (हाथी) और सिंह (शेर); गो (गाय) और व्याघ्र (वाघ); वानर और मेष (भेड़ा) ये महावैर योनि है। इस योनि दोष का परिणाम मुख्यत: संभोग के रूप में देखा जाता है। दुनियां में 50% रिश्ते असंतोषजनक शरीरिक सम्बन्धों के कारण टूट जाते हैं। इस लिए इस दोष का सम्बन्ध संतोषजनक सम्बन्धों के रूप में देखा जाता है।

उदाहरण के लिए लड़के की योनि गज है और लड़की की योनि सिंह है तो ऐसी स्थिति में हाथी और शेर सम्भोग नहीं कर सकते हैं।

एक दूसरे को देखते ही मारने की कोशिश करते हैं।

इसी प्रकार वर कन्या की योनि कूट में महावैर योनि होने पर यह दोष आ जाता है तो हम मिलान बोल देते है कि इनका शरीरिक सम्बन्ध ठीक नहीं रहेगा।

गुण मिलान में योनि दोष होना उचित नहीं हैं कितनी बार देखने में आता है कि पति और पत्नी के बीच हमेशा इसी मुद्दे को लेकर झगड़ा बना रहता है।

इस लिए शादी से पहले लड़के व लड़की की कुण्डली में इन 11 योगों को अवश्य देख लेना चाहिए।

1. लम्बी आयु
2. चरित्र हीनता
3. दरिद्र योग
4. लम्बी बीमारी
5. होमो सेक्स
6. हिजडा पन (निपुसंकता)
7. तलाक योग
8. बांझपन
9. अवैध सम्बन्ध
10. जेलयोग (बंधन योग)
11. शनि महादशा, राहु महादशा, शनि साढ़े साती या मंगली दोष न हो।

योनियों में आपस में बड़ी शत्रुता-

गोव्याघ्रं, महिषाश्वं च वैरं मार्जार मूषकम्।
गज-सिंहेभं कपिमेषं, श्वानमृगं च वैरं तु नकुलोरगन।
त्याज्य परस्परं चैतद् दम्पत्योः स्वामी भृत्यो॥

गाय व्याघ्र वा, घोड़े भैंसें का, विलाव मूषक का, सिंह हाथी का, बानर-भेड़ का कुत्ता हिरण का और न्योले व सर्प का परस्पर स्वभाव से वैर होता है।

वर कन्या के मेलापक में एवं सेव्य सेवक (मालिक-नौकर) के निर्णय में इसका त्याग करना चाहिए।

अन्य प्रकार से–

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं,
वैरंवानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरुः।
लोकानं व्यवहारतोऽन्यदपि तज्ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं
दम्पत्योर्नृपभृत्योरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः॥

भावार्थः- गो और व्याघ्र का, हाथी और सिंह का, अश्व महिष का श्वान और मृग का, सर्प और नेवले का, वानर भेड़े का तथा मूस और बिलाव का परस्पर वैर है। अतः स्त्री-पुरुषों में तथा राजा सेवकों में वैर योनि का परित्याग कर देना चाहिए।

5. **ग्रह मैत्री या राशि स्वामी मैत्री कूट मिलान (पांचवे कूट का महत्त्व):**

स्त्री/वधू खूबसूरत होने के बाद भी कई बार पति या मित्र का प्यार नहीं मिलता।

कुण्डली मिलान में "ग्रह मित्रता या राशिस्वामी मित्रतागुण" के 5 गुणों का उपयोग क्या है? क्या हम इसका उपयोग विवाह गुण मिलान के अतिरिक्त सांझेदारी, मित्रता, स्टाफ रखना, नौकर रखना आदि में कर सकते है?

जी हाँ। गृह मित्रता में वर कन्या के अलावा इसका प्रयोग हम सभी मित्रता के भाव की जगह कर सकते हैं। अगर आपकी राशि का स्वामी आपके स्टाफ के साथ मित्रता का भाव रखता है तो वो आपके लिए अच्छा ही सोचेगा और मित्र भाव से नौकरी करेगा, अपना ही काम समझकर मेहनत करेगा। अगर आपके स्टाफ या आपका मित्र आपके साथ गृहमैत्री में शत्रुता का भाव रखता है तो आपका मित्र ही आपकी जान का दुश्मन होगा। कई बार मित्रता व शत्रुता का भाव पिता-पुत्र, मां बेटियों और भाई बहनों में देखने का मिलता है। यह उनकी ग्रह- मित्रता, समता, अति मित्रता व अति शत्रुता के कारण होता है।

इसी प्रकार वर कन्या में भी अगर ग्रह मैत्री मिलान का अभाव हो या फिर नोमांश पतिओं से भी मित्रता का अभाव अर्थात शत्रुता हो तो दोनों के मध्य हमेशा दुश्मनी का भाव बना रहता है जो जीवन को तबाह कर देता है। कुण्डली मिलाते समय यह अवश्य देख लेना चाहिए कि वर और कन्या की राशि की मित्रता है, शत्रुता है या समता जैसे लड़के की राशि सिंह है और लड़की की राशि कुम्भ है तो इनके स्वामी सूर्य और शनि एक दूसरे के परम शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

इसी तरह अगर वर की राशि का स्वामी बुध और कन्या की राशि का स्वामी चन्द्रमा हो तो बुध चन्द्रमा को शत्रु मानता है और चन्द्रमा बुध को मित्र मानता ऐसी स्थिति में स्त्री चाहे कितनी ही खूबसूरत क्यों न हो चाहे विश्वसुन्दरी हो या इन्द्र की अप्सरा ही क्यों न हो फिर भी पुरुष उस स्त्री से शत्रु भाव ही रखेगा। ऐसा देखा गया है कि बहुत से कुरूप पुरुषों की स्त्रियों बहुत खूबसूरत होती है फिर भी उसको उस करूप पति का प्यार कभी नहीं मिलता और पत्नी उसकी खूब सेवा करती है।

मिलान करते समय ग्रहों की मित्रता भाव जरूर देखना चाहिए जैस लड़की की राशि तुला या वृष हो और लडके की कन्या या मिथुन हो तो दोनों में मित्रता होती है. शुक्र+बुध आपस में पूर्ण मित्र है तो ऐसे में घर का माहौल मित्रता पूर्ण रहता है घर में कलेश नहीं होता।

कूट संख्या 6 ॥ गण कूट मिलान॥

क्या वर-कन्या की रुचियां, अभिरूचियाँ, पसन्द नापसन्द जन्म कालिक नक्षत्रों के साथ जन्म से ही प्राप्त होते हैं जी हां! हमारा मूल व्यवहार। स्वभाव हमारे जन्मकालिक नक्षत्रों से प्रेरित होता है

प्राचीन वैदिक परम्परा के अनुसार यह सम्पूर्ण ब्राह्मण्ड के समस्त जीव तीन प्रकार के मूल भूत गुणों से प्रेरित हैं। इन्हीं से संसार बनता है। ठीक वैसे ही दुनियां में मौजूद करोड़ों रंग तीन मूल रंगों– लाल नीला हरा से मिलकर बनते हैं। तीन प्रकार के मूलभूत गुण है:- सत्व गुण - रजोगुण- तमो गुण। सत्व गुण की अधिकता देवताओं में, रजोगुण की अधिकता मनुष्यों में और तमो गुण की अधिकता क्रूर जीव यानि राक्षसों में होती है।

अष्टकूट मिलान के अन्तर्गत इस गणकूट नामक बिन्दू में हम दो जीवन साथिओं के मूलभूत स्वभाव का मिलान करते है। ऋषि मुनियों ने हमारी प्रकृति के अनुसार समस्त आकाशीय नक्षत्रों को तीन गणों में विभाजित किया है। वे गण है:- देव (देवता), मनुष्य (नर), और राक्षस (असुर)।

हमारी समस्त रूचियाँ, अभिरूचियाँ, हमारे विचार हमारी अभिव्यक्ति का प्रकार, हमारी पसन्द और नापसन्द ये सब हमारे नक्षत्रों के गणों के आधार पर ही प्राप्त होता है हम जो व्यवहार करते हैं, जैसे दिखते हैं जो हमारी पसन्द है ये सब हमारा मूल स्वभाव ना होकर इस पर हमारे माता-पिता, हमारे खान-पान, हमारे रहने के स्थान हमारे समाज, हमारी शिक्षा और हमारे वातावरण के ऊपर निर्भर करता है। किन्तु हमारा मूल स्वभाव कुछ और ही होता है तभी तो किसी इंसान को पूरी तरह जानने में सालों साल लग जाते है। हमारा मूल भाव व्यवहार। स्वभाव हमारे गणों से प्रेरित होता है।

गण कूट नामक यह विषय बस हमारे इसी मूल भूत स्वभाव प्रकृति (देव-नर-राक्षस) को जानने का माध्यम है, कहीं दो विपरीत प्रकृति के जीवों का मिलान होकर एक समय में गृहस्थ जीवन में कटुता उत्पन्न न हो जाए। इतना अहम विन्दु होने के कारण इस अष्टकूट में गण कूट मिलान को 6 गुण प्रदान किये गए है। आइये आगे बढ़कर इन गणों के माध्यम से अपनी मूल प्रकृति का मिलान करें ताकि हमारी गृहस्थी की यात्रा आजीवन सुखद रहे।

उदाहरण के तौर पर यदि बर का जन्म नक्षत्र आधारित देव गण से युक्त है और कन्या का जन्म नक्षत्र राक्षस गण युक्त है, ये दोनो गण एक दूसरे के घोर विरोधी है अर्थात शास्त्रों के अनुसार ये दोनों गन विपरीत प्रकृति के हैं। इसलिए यह देवता-राक्षस गण का संयोग अच्छा नहीं माना जाता है जैसा कि इनके नाम से ही स्वयं स्पष्ट है।

ऐसे मिलान में यह देखने को मिलता है कि देवता गण युक्त लड़का अमन पसन्द (शान्ति प्रिय), सन्तुष्ट, शान्त, और धैर्यवान होगा जबकि राक्षसगण युक्त लड़की आक्रामक, वर्चस्ववादी और नोक झोक करने वाली होगी दोनों चाहे-अनचाहे दूसरे को शरीरिक, मानसिक और भावनात्मक पीड़ा देते रहेंगे। छोटे छोटे मामलों पर विवाद, तनाव और मतभेद हो सकता है। लड़की लड़के को अव्यवहारिक, बुद्धिहीन और आलसी कहकर चिह्नित कर सकती है। जबकि लड़का महसूस करेगा कि लड़की जरूरत से ज्यादा मांग करने वाली अति महत्त्वकांक्षी, वर्चस्ववादी और कभी कभी अनैतिक व्यवहार/आचरण करने वाली होगी। एक बार देखने में चाहे किसी वाह्य कारणों के साथ मिलते या रहते दिखाई दें लेकिन अन्ततः दोनों की मूलप्रकृति अलग होने के कारण एक वातावरण, एक समाज और समान परिस्थितिओं में गुजर-वशर करना दोनों के लिए लगभग असंभव होता है क्यों कि दोनों की रुचियाँ अभिव्यक्तियाँ, रहने का तौर-तारीका बिलकुल अलग होता है जैसे गुलाब और कमल दोनो सुन्दर पुष्प है, दोनों अपने आप में श्रेष्ठ है किन्तु दोनों का विकास अलग तरह के परिवेश में होता है। एक को सख्त भूमि, तो दूसरे को जलपूर्ण तालाब; ऐसे में इन दोनों गणो (देव+राक्षस) में एक बड़े अन्तर और विरोधावास के कारण मेलापक शास्त्र इनको भाव गणकूट के 6 अंकों में से 0 अंक देता है। देव-देव, देव-नर, नर-नर, राक्षस- राक्षस गणों के मिलान को सही माना गया है। इसी लिए मिलान को सावधानी पूर्वक आगे बढ़ाना चाहिए।

"स्त्री नृगणा वरोऽस्त्रपगणः सत्कूट मैत्रयोस्तदा
स्त्री चेत् नृगणा तथा वरः अस्त्रप गणः (राक्षस गण) तदा तयोः सत्कूट मैत्रयो : मेलनं शुभं स्यात् (मुहूर्त मार्त्तण्ड)

अर्थात् यदि स्त्री मनुष्य गण हो और वर राक्षस गण हो तो ऐसी अवस्था में दोनों का मेलन भकूट शुद्धि और राशीशों की मैत्री होने पर करना चाहिए।

"रक्षः स्त्री नृपुमान्यदा वशमुखैः षडभिर्युतं शोभनं॥ मु॰ मार्तण्ड॥

भावार्थ यदि कन्या राक्षस गण और वर नर गण हो तो वश्य आदि आदि छः (वश्य तारा योनि, ग्रह मैत्री, भकूट और नाड़ी) कूट गुणों के शुभ रहने पर विवाह शुभ होता है अन्यथा नहीं।

सातवां कूट – भकूट (राशि कूट) = 7

(क) क्या भकूट दोष के कारण शादीशुदा जिन्दगी हो जाती है तबाह?

(ख) क्या भकूट दोष के कारण आर्थिक समस्याओं, सन्तान प्राप्ति, गम्भीर परेशानियों का सामना, आपसी कलहपूर्ण सम्बन्ध बिच्छेद एवं मृत्यु का कारण बन जाता है?

भकूट (राशि कूट) मिलान का मुख्य उद्देश्य एक सुखद गृहस्थी की प्राप्ति है। शुभ एवं प्रीति भकूट होने से दोनों जीवन साथियों के मध्य सौहार्दमय एवं प्रेमपूर्वक तालमेल को दर्शाता है दोनों जीवन साथियों के मध्य आजीवन दोनों का

साथ बना रहे दम्पत्ति दु:ख वियोग टकराव से आजीवन दूर रहें। रोजगार वाहन मकानादि संसाधनों की समयानुकूल प्राप्ति हो। जीवन में आर्थिक उन्नति हो। समाज और परिवार में सम्मान की प्राप्ति हो।

भकूट का अर्थ है गुणात्मक परिणाम; एक ऐसा परिणाम दो अलग अलग पुरुष स्त्री के आपसी मिलान से उत्पन्न होता है। जब हम दो जीवन साथियों के ग्रह नक्षत्र या गुण मिलाते हैं तो मात्र उनके स्वभावों का मिलान नहीं करते बल्कि ब्रह्माण्ड के दो बिंदुओं के मिलने से पैदा होने वाली किसी रसायनिक क्रिया की तरह उनके शरीरिक, मानसिक, भौतिक, आर्थिक सामाजिक, व्यवसायिक आध्यात्मिक बदलाव का भी अध्ययन करते हैं, जैसे दो अंकों को आपस में गुणा करने या जोड़ने पर तीसरा अंक प्राप्त होता है ठीक ऐसे ही दो अनजान वर-कन्या के आपसी मिलान से उन दोनों के भाग्यों, प्रारब्ध में एक बड़ा फेर बदल होता है। कुछ रिश्तों के जुड़ने से उन्नति और कुछ रिश्तों के जुड़ने से अवनति होती है।

भकूट मिलान के अन्तर्गत हम दोनों जीवन साथियों की जन्मराशियों के मध्य बनने वाले सम्बन्ध विशेष का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं ताकि एक सुखद संसार की रचना करें ना कि दु:ख संघर्ष और तकलीफ की।

भकूट मिलान में तीन प्रकार के दोष बनते है जैसे:-

1.	भकूट षडाष्टक दोषी है	स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं
2.	नवपंचम दोष	सन्तान सम्बन्धि समस्याएं
3.	द्विर्द्वादश दोष	वित्तसम्बन्धी समस्याएं

1. **षडाष्टक दोष:**- वर-वधु के मध्यम आपसी तनाव, आपसी लड़ाई झगड़ा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी गम्भीर समस्याएँ।

(क) राश्यो षटकाष्टके मृत्युस्त्रिकोणेष्वनपत्यता।
नैस्वं द्विर्दादशे ज्ञेयं सौख्यमन्यत्र चोभयो:॥१॥

(ख) कुमार्या विषभाद् राशे: षष्ठे तु वरभं तथा
समराशे शुभं षष्ठं विपरीतमसत् स्मृतम्॥२॥

वर कन्या की राशि परस्पर छटी, आठवी हो तो मृत्यु, नवीं पांचवीं से सन्तान हीनता, दूसरी बाहरवीं होने पर निर्धनता एवं अन्य राशियों में सुख होता है। कन्या की विषम राशि से छटी वर की राशि हो तो शुभ; सम राशि से छटी वर की राशि हो तो अशुभ होती है इसी का समर्थन मुहूर्त चिन्तामणि (पीयूषधारा) टीकाकार ने भी किया है।

मृत्यु: षष्ठष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत।

स्त्री पुरुष में परस्पर षष्ट अथवा अष्टम राशि सम्बन्ध होने से मृत्यु होती है। जब नवम्-पञ्चम से सन्तान का नाश द्वितीय दादश से निर्धनत्व और अन्य दोनों का सुख होता है।

द्वयोरेकपदाभावे भकूटे योनि मैत्रत:॥ (मुहूर्त गणपति)

वर कन्या के मध्य भकूट शुद्धि न होने पर यदि **योनियों की मित्रता हो भकूट शुद्धि होती है।**

षटकाष्टे समभं च षष्ठसहितं चेच्छोभनं स्यात्समं;
भं द्विर्द्वादशके द्वितीय सहितं श्रेष्ठं स्त्रिया युग्हरि:॥
समभं चेत् षष्ठ सहित 'तदा' षटकाष्टके शोभनं स्यात्।
समं भं द्वितीय सहितं द्विर्दादशके श्रेष्ठं स्यात्।
'विषमे' हरि: स्त्रियायुक् शुभ: स्यात्॥

भावार्थ:- यदि सम राशि (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मकर मीन) छठे से सहित हो तो यह घटकाटक शुभ होता है इसमें षटकाष्टक दोष नहीं लगता:-

राशिश मैत्री

(1) वृष राशि से षष्टम राशि तुला = 2-7 = शुभ षडाष्टक राशि मैत्री 100% मित्र
(2) कर्क राशि से षष्टम राशि धनु = 4-9 = शुभ षडाष्टक राशि मैत्री 80% मित्र
(3) कन्या राशि से षष्टम राशि कुम्भ = 6-11 = शुभ षडाष्टक राशि मैत्री 80% मित्र
(4) वृश्चिक राशि से षष्टम राशि मेष = 8-1 = शुभ षडाष्टक राशि मैत्री 100% मित्र
(5) मकर राशि से षष्टम राशि मिथुन = 10-3 = शुभ षडाष्टक राशि मैत्री 80% मित्र
(6) मीन राशि से षष्टम राशि सिंह = 12-5 = शुभ षडाष्टक राशि मैत्री 100% मित्र

प्रीति षड्ष्टकम्

सिंहेनमकर: श्रेष्ठ: कन्याया: मेष उत्तम:।
तुला सहमीनस्तु कुम्भेन सह कर्कटश्च॥

धनुषः वृषभः श्रेष्ठो मिथुनेन च वृश्चिकः।
एतत्षड्ष्टकं प्रीत्यैवभवत्यैव न संशयः॥

(गरूढ़ ज्योतिषे 61 अध्याये 17-18)

सिंह का मकर के साथ षडाष्टक, कन्या का मेष के साथ तुला और मीन, कुम्भ कर्क, धनु वृष, मिथुन वृश्चिक से सभी षड्ष्टक योग प्रीतिपद होते हैं। **"धनस्थानात्विजानीयत् दारा"** धन स्थान से पत्नी का विचार किया जाता है, यदि वर एवं कन्या की जन्मकुण्डलियों में द्वितीयेश/सप्तमेशों की मित्रता हो तो उपरोक्त षडाष्टक होने पर भी विवाह प्रीतिदायक ही होता है।

द्विर्द्वादश दोष विचार– भाव किस प्रकार द्विर्द्वादश दोष निष्प्रभावी हो जाता है। इसी तरह सम राशि अपनी से द्वितीय के साथ शुभ होती है। जैसे–

	राशिश मैत्री
(1) वृष राशि से द्वितीय राशि मिथुन = 2-3 = शुभ द्विर्द्वादश	100% मित्र
(2) कर्क राशि से द्वितीय राशि सिंह = 4-5 = शुभ द्विर्द्वादश	100% मित्र
(3) कन्या राशि से द्वितीय राशि तुला = 6-7 = शुभ द्विर्द्वादश	100% मित्र
(4) वृश्चिक राशि से द्वितीय राशि धनु = 8-9 = शुभ द्विर्द्वादश	100% मित्र
(5) मकर राशि से द्वितीय राशि कुम्भ = 10-11 = शुभ द्विर्द्वादश	100% मित्र
(6) मीन राशि से द्वितीय राशि मेष = 12-1 = शुभ द्विर्द्वादश	100% मित्र

ध्यान रहे परन्तु सम राशि अपने से बाहरवे के साथ शुभ नहीं होती है और विषम राशिएँ अपने से द्वितीय राशि के साथ शुभ नहीं होती है। परन्तु विषम राशि में केवल सिंह राशि अपने से द्वितीय (कन्या राशि के) के साथ शुभ होती है। (विषमे-हरि = सिंह, स्त्रिया युक् = कन्यायुक्त, शुभः भवति। अन्यो विषयों द्वितीय युक्तो न शुभः॥)

नवपंचम विचार :-

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः।
एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्र पौत्र सुखावहम्॥

अर्थात वर से कन्या की राशि पञ्चम और कन्या की राशि से नवम राशि वर की हो तो दोष निवृत्ति हो जाती है। ऐसी जोड़ी पुत्र पौत्र तक का सुख देखती है जैसे (शुभ त्रिकोण)।

	राशिश मैत्री
(1) मेष राशि से पञ्चम राशि सिंह = 1-5 = मित्र नवपंचम =	100% मित्र
(2) वृष राशि से पञ्चम राशि कन्या = 2-6 = मित्र नवपंचम =	100% मित्र
(3) कुम्भ राशि से पञ्चम राशि मिथुन = 11-3 = मित्र नवपंचम =	80% मित्र
(4) कर्क राशि से पञ्चम राशि वृश्चिक = 4-8 = मित्र नवपंचम =	80% मित्र
(5) सिंह राशि से पञ्चम राशि धनु = 5-9 = मित्र नवपंचम =	100% मित्र
(6) कन्या राशि से पञ्चम राशि मकर = 6-10 = मित्र नवपंचम =	80% मित्र

शास्त्रानुसार शुभ नवपंचम :-

मेषे च सिंहे, वृषे च कन्यें, युग्मे घटे, वृश्चिके कर्कटे च।
सिंहे च चापे, मकरे युवत्या मित्र त्रिकोण बहु पुत्र लाभः॥

अशुभ नवपंचम् :-

(1) मेष राशि से नवम राशि धनु = 1-9 अशुभ नवपंचक (अशुभ त्रिकोण)
(2) वृष राशि से नवम राशि मकर = 2-10 अशुभ नवपंचक (अशुभ त्रिकोण)
(3) मिथुन राशि से नवम राशि कुम्भ = 3-11 अशुभ नवपंचक (अशुभ त्रिकोण)
(4) कर्क राशि से नवम राशि मीन = 4-12 अशुभ नवपंचक (मीन/कर्क)
(5) कुम्भ राशि से नवम राशि तुला = 11-7 अशुभ नवपंचक (मीन/कर्क)

मेष च चापे, मकरे वृषे च, कुम्भे युग्मे, झष कर्कटे च।
कुम्भे तुलायां झषकीटयो च शत्रु त्रिकोण वहु दुःख हानि॥

क्योंकि द्विर्द्वादश दरिद्रता, षडष्टक मृत्यु तुल्य कष्ट तथा नवपंचम दुःख एवं सन्तानहीनता प्रदायक है इसलिए मिलान करते समय शास्त्रोक्त परिहारों का विधिवत अध्ययन जरूरी है।

आठवा कूट ॥ नाड़ी कूट ॥

(क) क्या नाड़ी दोष होने पर शरीरिक कष्टों का सामना तो नहीं करना पड़ता?
(ख) क्या नाड़ी दोष होने पर विवाहोपरान्त होने वाली सन्तान के मन, बुद्धि, शरीर के श्रेष्ठतम विकास में बाधा तो नहीं आती?
(ग) क्या नाड़ी दोष वियोग, मृत्यु एवं वैधव्य आदि दुःख प्रदायक तो नहीं?

आईए इसपर विधिवत् विचार करते हैं। अष्टकूट में नाड़ी कूट मिलान को श्रेष्ठतं दर्जा दिया गया है इसलिए गर्ग जी कहते हैं:-

॥ "नाड़ीकूटं तु सङ्ग्राह्यं कूटानां तु शिरोमणिः"॥

इसका गूढ़ सम्बन्ध दीघार्यु, सन्तान और भौतिक शरीर के मूल रसायनों के संचालन से है। आदि नाड़ी (शरीर के वात प्रकृति); मध्य नाड़ी (भौतिक शरीर की पित्त प्रकृति) और अन्त्य नाड़ी (भौतिक शरीर की कफ प्रकृति) इन तीन प्रकार की नाड़ियों का वैवाहिक जीवन में बहुत महत्त्व माना गया है। चर्चा में आगे बढ़ने से पहले नाड़ी दोष पर वराहमिहिर आदि आचार्य क्या कहते हैं इस पर विचार करते हैं-

आद्यैक नाड़ी कुरुते वियोगं, मध्याख्यनाड्यामुभयोर्विनाशा।
अन्त्या च वैधव्यमतीव दुखं तस्माच्च तिस्रः परिवर्जनीयाः॥

(मु॰चि॰ 322)

अर्थात् :- वराहमिहिर जी के अनुसार दोनों की आदि नाड़ी हो तो यह अलगाव (तलाक) देने वाला होता है, यदि दोनों की मध्य नाड़ी हो तो यह मृत्यु कारक (विनाशकारी) होता है यदि दोनो की अन्त्य नाड़ी हो तो यह वैधव्य के साथ बेहद दु:खी वैवाहिक जीवन का फल देता है।

इसी सम्बन्ध में मुहूर्त गणपतिकार का कथन है।

दम्पत्योरेक नाडीस्थे ऋक्षे नेष्टः करग्रहः।
मध्य नाडीगते मृत्युस्तस्मात्तां परिवर्जयेत॥ 53/143

वर व कन्या का नक्षत्र यदि एक नाड़ी में हो तो नेष्ट एवं अशुभ और मध्य नाड़ी में दोनों का नक्षत्र होने पर मरण होता है अत: इसका त्याग करना चाहिए।

ज्योतिष सार ग्रन्थकार ने इसे बहुत घातक माना है:-

अग्रनाड़ी व्यधेभर्ता मध्यनाडी व्यधेद्वयम्।
पृष्ठनाड़ी व्यधेत्कन्या म्रियतेनात्र संशय॥

अर्थात् दोनों की आदि नाड़ी हो तो पति की मृत्यु एवं मृत्यु तुल्यकष्ट होता है, दोनों की मध्य नाड़ी हो तो दोनों की मृत्यु एवं मृत्युतुल्य कष्ट होता है। इसका मतलब यह है कि मध्य नाड़ी घातक है और दोनों की अन्त्यनाड़ी हो तो कन्या की मृत्यु एवं मृत्युतुल्य कष्ट होगा उसमें संशय नहीं है।

इस विषय पर महर्षि नारदजी कहते हैं :-

एक नाड़ी विवाहश्च, गुणैः सर्वेसमन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥

अर्थात् विवाह में चाहे सब गुण मिल रहे हों परन्तु वर कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना गया है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान वरण होने पर सभी आचार्यों ने एक मत से अनिष्टकारी कहा है।

शास्त्रानुसार विचार करते हैं कि नाड़ी दोष कौन-कौन सी राशिओं पर अधिक कहा गया है। इस पर विचार करते हैं।

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां, वर्ण दोषस्तु भूभुजाम् (क्षत्रिय)
गण दोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजाम्॥

जैसा कि सर्व विदित है कि जन्म नक्षत्रों, एवं जन्मराशिओं पर आधारित, वर्ण वश्य तारा योनि, राशिस्वामी मैत्री, गण, राशिकूट (भकूट) और नाड़ी का निर्धारण जन्म तारीख और जन्म समयानुसार जन्म से ही हो जाता है चाहे वह सामाजिक किसी भी वर्ण से क्यों न हो। इसलिए नाड़ी आदि कूट गुण एव दोषों का विचार करते समय जन्म राशि आधारित वर्णादि कूट व्यवस्था अनुसार ही करना उचित माना जाएगा। अत: विशेष रूप से कर्क वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में ही विचार करना युक्तियुक्त है।

ध्यान रहे :- ब्राह्मणेतर सामाजिक वर्ण जातिओं के लिए नाड़ी दोष नितान्त उपेक्षनीय नहीं है। उपरोक्त श्लोक का जो वास्तविक/ यर्थाथ भाव है कि कर्क वृश्चिक मीन ब्राह्मण जन्मराशियों से है, उससे हटकर सामाजिक जातियों वर्गों से जोड़कर देखते हैं जो युक्तियुक्त नहीं है।

अब हम नाड़ी दोष की चर्चा को नाड़ी कूट के गुप्त रहस्यों को समझते हुए आगे बढ़ते हैं विषम नाड़ियों का मिलान जैसे आदि-मध्य, मध्य-अन्त्य और आदि अन्त्य को ज्योतिष शास्त्र में अत्यन्त शुभ माना है। इस तरह का मिलान दीघार्यु को

और उत्तम सन्तानों को प्रदान करता है। शरीर के समस्त रसायन, धातु एवं जल - अग्नि वायु आदि तत्त्व प्रदीप्त होकर शरीर-मन-बुद्धि को ओज एवं शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे शरीर निरोगी रहता है; मन में सदैव उत्साह और उमंग बनी रहती है। बुद्धि शुद्ध होने से ईश्वर की कृपा बनी रहती है, जिससे अकाल मृत्यु आदि कष्टों का सामना नहीं करना पड़ता। ऐसे युगल की सन्तान भी बुद्धिमान श्रेष्ठ व्यवहार वाली एवं गुणवान होती है। संसारिक एवं परमार्थिक दोनों सुख इस गृहस्थ को प्राप्त होते हैं। इसलिए नाड़ी कूट में सभी कूटों से अधिक 8 गुणसंख्या दी गई है।

हमारा यह भौतिक शरीर तीन प्रकार के मूल रसायनों से संचालित रहता है, इस रसायनों का नाम है:- वात-पित्त-कफ। इन तीन रसायनों के एक विशेष अनुपात में रहने से हमारे मन-बुद्धि और शरीर का श्रेष्ठतम विकास होता है अर्थात् यह तीनों एक लय में रहते हैं। इन तीनों का अनुपात या संतुलन बिगड़ने से हमारे शरीर की रसायनिक प्रक्रिया खराब होकर शरीर में तरह-तरह के रोग, मन में अशान्ति, क्रोध, तनाव, चित्त आदि मानसिक विकार बुद्धि में विकार, निर्णय क्षमता में कमी, जोखिम शक्ति का अभाव, हिम्मत हौंसले का अभाव, स्मरण शक्ति का क्षय आदि तरह तरह की विकृतियाँ उत्पन्न होने लगती है।

वास्तव में यह नाड़ियाँ आदि (वात), मध्य (पित) और अन्त्य (कफ) हमारे भीतर मौजूद वायु, अग्नि और जल तत्त्व का सही रूप से नियंत्रण करती हैं। जिससे हम स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें, मन बुद्धि में चैतन्यता हो। किन्तु बिगड़ने से अर्थात वैवाहिक मिलान में नाड़ी दोष होने पर भी (जैसे वर-कन्या मध्य आदि-आदि, मध्य-मध्य, अन्त्य अन्त्य होने पर) वर-वधु का मिलान/सम्बन्ध बना देने से तरह तरह के शरीरिक-मानसिक-बौद्धिक असमानताएँ उत्पन्न होकर स्वाभाविक जीवन और संतान में कमियाँ पैदा हो जाती हैं। इसके कुप्रभाव से हार्मोन्स प्रक्रिया बाधित होकर अयोग्य, अक्षम या दुर्गुणों वाली संतानें उत्पन्न हो सकती है। शास्त्रों में तो यहां तक कहा गया कि नाड़ियों का मिलान ठीक से न किये जाने पर मृत्यु तक का दु:ख झेलना पड़ सकता है अत: नाड़ी नामक इस कूट मिलान को इसकी महत्त्वता को देखकर शास्त्रकारों ने इसे सब से अधिक 8 अंक (8 गुण) प्रदान किये हैं।

शास्त्रों में समान नाड़ी में विवाह वर्जित माना गया है इसका कारण विवाह के पश्चात शरीरिक सम्बन्ध तथा उसके पश्चात नये शरीर का निर्माण में समान नाड़ी का होना आने वाले बच्चे एवं गर्भ धारण करने वाली माँ दोनों के लिए हानिकारक होता है।

अत: उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कोई भी रोग एवं कष्ट सामाजिक जाति-वर्ण को देखकर नहीं आता इसका सम्बन्ध जन्म नक्षत्रों पर आधारित जन्मराशियों के अनुसार बनने वाली राशियों की वर्ण व्यवस्था से है अत: राशियों के भीतर पड़ने वाले नक्षत्रों के अनुसार ही इसका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर एक जैसा होता है न कि केवल ब्राह्मणों पर। हां राशियों के अनुसार जो ब्राह्मण वर्ण की जन्मराशियां कर्क, वृश्चिक, मीन है उन पर अधिक होता है।

हमारा ज्योतिष शास्त्र स्वास्थ्य, विवाह तथा हर क्षेत्र में स्टीक जानकारी दे सकता है वशर्ते इसका सही अध्ययन हो।

नाड़ी के महत्त्व को दर्शाते हुए शास्त्र कहते हैं–

नाड़ी भेदे गुणाश्चाष्टौ तदैवान्येऽपि सार्थक।
अजागलस्तनायन्ते नाड्यैके सकला गुणा।। मुहूर्त गणपति।।

अर्थात् वर-कन्या की भिन्न भिन्न नाड़ी होने पर आठ गुण होते है। नाड़ी की भिन्नता से ही- वर्ण, वश्य, तारा योनि, ग्रह मैत्री, भकूट गणादि गुणसार्थक होते हैं। अन्यथा जैसे बकरी के गले में उत्पन्न स्तन लटकता हुआ निष्फल होता है वैसे ही अन्य गण निष्फल होते हैं।

एक नाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रवम्।
सेवायां च भवेद्हानिर्विवाहे प्राण नाशनः।।

स्त्री-पुरुष की एक नाडी हो तो निश्चय मरण, सेवा में हानि और विवाह में प्राणों का नाश कहा गया है। इसलिए नाड़ी दोष का विद्वानों को त्यागकर देना चाहिए।

अत: नाड़ी दोष और उसके शास्त्रोक्त परिहारों को ध्यान में रखकर विधिवत मिलान करना चाहिए ताकि भावी वर-वधू की वैवाहिक जिन्दगी सुखमय हो। भौतिक संसारिक सुख के साथ साथ परलौकिक सुख की भी प्राप्ति हो। चारों पुरुषार्थ धर्म अर्थ काम और मोक्ष सार्थक हो। सत्य सनातन।

नाड़ी दोष परिहार

नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजे॥
एवमपि ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणस्तथा।
वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा॥ *(शीघ्रबोधे)*

नाड़ीयोनौ द्विजस्योक्ते गणवर्णोच बाहुजे।
वैश्यानां राशिकूटं स्याद्योनिवर्गस्तु पादजे॥ *(मुहूर्त्तकल्पद्रुमे)*

नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्ण दोष क्षत्रियों के लिए, गणदोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विचारणीय है।

विशेष :- अब चूकि वर्ण व्यवस्था भङ्ग होती जा रही है सभी जातियाँ अपने-अपने कर्मों से विमुख होती जा रही हैं अत: ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए भी नाड़ी दोष उपेक्षनीय नहीं है। सर्वश्रेष्ठ मिलान हेतु नाड़ी दोष परिहार देखना परमावश्यक है।

यदि वर कन्या दोनों की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों यदि दोनों का नक्षत्र एक हो राशि भिन्न-भिन्न हो, तथा नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न (पाद भेद) हो ऐसी स्थिति में नाड़ी दोष नहीं होता- शुभफलप्रद होता है।

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्।
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
एवं भांश व्यधोयत्र जायते वर कन्ययो:
तत्र मृत्युर्नसंदेह: शेषांशा: स्वल्पदोषदा:॥

स्वरोदये शास्त्रानुसार प्रथम पाद का चतुर्थपाद से एवं चतुर्थपाद का प्रथमपाद से वेध, द्वितीय का तृतीय से तथा तृतीय का द्वितीय से वर कन्या के नक्षत्रों का वेध समझें। शेष चरणों का परस्पर स्वल्प दोष होने से उपेक्ष्य जानें।

एक राश्यादि योगे तु नाड़ी दोषो न विद्यते।
अन्यत्र तु विचार्यैषा स्वभावाच्छोभनाश्च ते॥
सुहृदेकाधिपयोगे ताराबलेवश्य राशौ वा।
अपिनाड्यादि विरोधे विवाहो भवति हितार्थाय॥ (ज्यो॰त॰ सुधार्णवे)

श्रीपति निबंध एवं ज्योतिषत्व सुधार्णव में एकाधिपत्य एवं राशि मैत्री नाड़ी प्रभृति समस्त कूटों में पाये जाने वाले दोषों में परिहारक माने गए हैं। इसी प्रकार एक राशि भिन्न नक्षत्र एवं एक नक्षत्र में भी राशि भेद तथा चरण भेद होने से नाड़ी दोष निवृत्त हो जाता है।

एक राशिरुभयोर्भिन्नभं चेदभिन्न भमुतान्य राशिता।
पुंस्त्रियोरतिरतीव नो यदा रोहिणी शुचि भनाड़ी कोडुवत्॥
(ज्योतिर्विदाभरणे)

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी वेधो न विद्यते।
भिन्नांशश्चैकराशीनां दम्पत्यो: प्रीतिहेतवे॥
एकराशौ पृथग्धिष्ण्ये पृथग् राशौ तथैकभे।
गणनाड़ी नृदूरं च ग्रहवैरं न चिन्तयेत्॥ (वृहस्पति:)
दम्पत्योरेक राशिश्चेद् भिन्नमृक्षं यदा तदा।
गणदोषोऽप्येकनाडायां विवाह: शुभद: स्मृत:॥ (ज्यो॰ निबंध)

रत्नकोशकार तो एक नक्षत्र गत दोनों को एक चरण होने पर भी मिलान शुभ मानते हैं।

"केचिन्नेछन्ति चैकांशे केचिदिच्छन्तिमेलकम्॥"

कृत्तिका, रोहिणी, मृग्शिरा, आर्द्रा, पुष्य, ज्येष्ठा, श्रवण, उ.भा. और रेवती नक्षत्रों में उत्पन्न कन्या/वर को नाड़ी दोष प्रभावित नहीं करता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्य श्रवण पौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ (ज्योतिषचिन्तामणि)

सप्तविंशति नक्षत्रों में कुछ नक्षत्र है जो नाड़ी दोष निरस्त करने की क्षमतारखते हैं यदि इन नक्षत्रों में वर कन्या का जन्म हो तो भी नाड़ी दोष निरस्त समझें।

वैश्वानरद्रुहिणयोरदितीशयोश्चतद्वत्करार्यमभयोर्द्वयधिपानिलेन्दोः।
छागैकपादवरुणयोः श्रुतिवैश्वयोश्चस्यादभिन्नभवनेनहिनाड़ीदोषः॥
(रत्नकोषे)

कृत्तिकारोहिणी नक्षत्रों में, पुनर्वसु आर्द्रा में, उत्तराफाल्गुनी हस्त में, स्वाती विशाखा में, शतभिषापूर्वाभाद्रपदा में, उत्तराषाढ़ा श्रवण में, इन नक्षत्रों में जन्म होने पर चाहे वे एक पाद हों या भिन्नपाद में हों, चाहे अभिन्न राशि ही क्यों न हो नाड़ी दोष नहीं हो सकता।

प्रीतिवित्तसुखदः करग्रहेस्त्वेकराशिषु च भिन्नभं यदि।
वारुणाजपादभं भवेद्यदा नाड़ी दोषगणजो न विद्यते॥
नाड़ीगणो नैकराशौचिन्त्यो भिन्नभयोर्यथा।
कृत्तिकाकभयोर्द्वीशस्वात्योः पूभाजलेशयोः॥

आचार्यलल्ल ने भी रत्नकोषकार की भान्ति कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, स्वाती, पूर्वाभाद्रपदा, शतभिषा इन नक्षत्रों को नाड़ी दोष का पूर्णरूपेण परिहार स्वीकार किया है।

विवाह वृन्दान का प्रमाण ज्योतिर्निबंध में इस प्रकार से उपलब्ध है।

नक्षत्रमेकं यदि भिन्नराश्योरभिन्नराश्योर्यदि भिन्नमृक्षम्।
प्रीतिस्तदानीं निविडानृनार्योश्चेत् कृत्तिकारोहिणीवन्न नाड़ी॥

उक्त नक्षत्रों में एक नक्षत्र यदि वर या कन्या का आ जाए जिसका परिहार कहा गया है, दूसरे का ऐसा नक्षत्र आ जाए जिसका परिहार नहीं, ऐसी स्थिति में "निमित्तायाये नैमित्तिकस्याप्यपायः" इस परिभाषा से एक का परिहार होने पर दूसरे का स्वयं परिहार हो जाता है।

इसके अतिरिक्त 'वृहद्दैवज्ञरञ्जनम्' में ऐसाप्रमाण उपलब्ध है जिसमें और भी नक्षत्रों का समावेश किया गया है।

अजैकपान्मित्रवसुद्विदैव प्रभंजनाग्न्यर्क भुजंगभानि।
मुकुन्दजीवान्तक भानि नूनं शुभानि योषिन्नरजन्मभैक्ये॥ (वृ॰दै॰र॰)

पूर्वाभाद्रपदा, अनुराधा, धनिष्ठा, विशाखा, स्वाती, कृत्तिका, हस्त, आश्लेषा, श्रवण, पुष्य भरणी, इन नक्षत्रों में कोई भी दो नक्षत्र वर कन्या के आ जाएं तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है, वर कन्या के लिए शुभ फलप्रद हो जाता है। एक राशि में दो नक्षत्र हों और नाड़ी भेद भी हो जाए तो विवाह में वर्जित जानना।

एकराशौद्विनक्षत्रेकृत्तिकायाम्यतारके।
धनिष्ठा शततारे च पुष्याश्लेषौ च वर्जयेत्॥
शुक्रे जीवे तथा सौम्य एक राशीश्वरेयदि।
नाड़ीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः॥ (विवाह कोतुहले)

शुक्र जीव तथा बुध यदि राशीश्वर हो जाए तो भी नाड़ी दोष परिहार हो जाता है।

दोषानुपत्तये नाड़या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् काञ्चनादिना॥
हिरण्यमयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके।
गावोऽन्नं वसनं हेमं सर्वदोषापहारकम्॥ (गुरुः)

नाड़ी दोष हो जाने पर अत्यावश्यक में महामृत्युञ्जय जप श्रेष्ठ सात्विक ब्राह्मणें द्वारा करवाकर गो, अन्न, वस्त्र, सोनादि दान करना चाहिए।

विवाह विहित मासों के विषय में धर्मशास्त्र और ज्योतिष शास्त्र में मतभेद भरे दो चार श्लोक निर्णयसिन्धुकार ने प्रस्तुत किये हैं।

"सर्व ऋतवो विवाहस्य शैशिरौ मासौ परिहार्य्योत्तमं च नैदाघम्।
अत्र माघ फाल्गुनाषाढ़वर्ज्यं नवमासा मुख्यकालः॥" इति सुदर्शन भाष्ये–
वौधायन सूत्रेऽपि **"सर्वे मासा विवाहस्य शुचितपस्तपस्यवर्ज्यम्"**

इन दोनों श्लोकों में आषाढ़ माघ फाल्गुन मासों के अतिरिक्त नौ मासों में आपस्तम्ब एवं वौधायन विवाह करना उत्तम मानते हैं। कालादर्श ग्रन्थकार तो **"निशिचेत्सर्वेषु द्वादशस्वपि मासेयूद्वहेह्"** इति कालादर्शः रात्रि में विवाह करना चाहें तो वारह मास में ही विवाह कर सकते हैं ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। वहीं ज्योतिष में गृहीत माघ, फाल्गुन के विषय में निर्णय सिन्धुकार **"माघादि विधयस्ते गृह्यसूत्राणां द्विजपरकत्वेन प्राबल्याच्छूद्रादि।"**

अर्थात् ज्योतिष में जो माघादि को विधेय माना है गृह्य सूत्रों में प्रधान रूप से द्विजपरक होने के कारण शूद्रादि के लिए ही विहित न कि त्रैवर्ण्य के लिए अत: धर्मशास्त्र वर्जित माघ, फाल्गुन-आषाढ़ का ग्रहण एवं धर्मशास्त्रोक्त चैत्र पौष का त्याग ज्योतिष पक्ष है वही गृह्य सूत्रों में कहीं भी गुरू-शुक्र अस्त व सिंहस्थ गुरू के निषेध का प्रमाण नहीं मिलता तो भी ज्योतिषास्त्र के वाक्यों की हम अवहेलना नहीं करते किन्तु जब धार्मिक सज्जन अपने धर्म में प्रमाण मिलते हुए भी धर्म सूत्रोक्त मार्ग से वञ्चित होकर दूसरे धर्मों का द्वार झाँकते हैं वे वेचारे यह नहीं जानते कि हमारे धर्म शास्त्रों में कितनी उदारता है वे बेचारे अनपढ़ महात्माओं के पास या मतान्तरित प्रचारकों के चुंगल में फंसकर लग्न हीन नक्षत्र शुद्धि रहित दश दोष युक्त समय में विवाह करके सारा जीवन उद्विग्नता में यापन करते हैं। अत: न तो ज्योतिष को ही आंच आए न हि धर्मशस्त्रस का विरोध हो न ही हमारे धर्मशास्त्रों पर आस्था रखने वाले सज्जनों को निराश होना पड़े इसी विषय में यदि दोनों का विरोध हो तो उसमें–

यस्मिन् काले विरोधोऽस्ति ज्योतिषोक्तागमोक्तयोः।
ज्योतिषाक्तं परित्यज्य स्मृति चोदितमाचरेत्।।

अत: सनातन धर्म के दो ही अनिवार्य सञ्चालक चक्र हैं, धर्मशस्त्र और ज्योतिष यहाँ कहीं दोनों का विरोधाभास हो वहाँ ग्राह्यता में धर्मशास्त्र को ही प्राथमिकता दी जाती है। गुरु शुक्र के मौढ्यादि (तारा अस्त) सिंहस्थ गुरु व नीचस्थ गुरु में विवाहादि को हम महत्ता नहीं देते तो भी धर्म संकट जनता के लिये ज्योतिष के आधार पर **"वृहद्दैवज्ञरञ्जनोक्ति"**–

आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्मकारिणाम्।
विवाहादीनि कुर्वीत मौढ्येऽपि गुरूशुक्रयोः।।
शान्ति कुर्यातयोस्तद्वच्छुक्र देवेन्द्र मन्त्रिणोः।
होमैर्दानैर्जपैर्वापि तयोरूक्तैश्च मन्त्रवैः।।

अथवा आचार्य लल्लभट्टानुसार गुरु शुक्र यदि दोनों अस्त हों तो दोष समझें अन्यथा दोषकारक नहीं।

यद्येकस्यापिमूढत्वे शुभकर्म न दोषकृत्।
द्वयोर्मूढत्वमेवोक्तं दोषदं गुरुशुक्रयोः।।

महानक्षत्र

प्रत्येक पाठक यह जानना चाहता है कि महानक्षत्र कोन से हैं और उन्हें वर कन्या की कुण्डलियों के मिलान के समय कूट और अन्य परीक्षणों का अपवाद क्यों माना जाता है? दक्षिण भारत में प्रचलित प्रसिद्ध मुहूर्तों और ज्योतिष सम्बन्धी कुछ सिद्धान्तों में **"कालविधान"** का विशेष स्थान है। हमारे दैनिक व्यवहार के लिये प्राचीन ऋषियों ने इसका सम्पादन किया था। वर कन्या की जन्म कुण्डलियों के मिलान के प्रसङ्ग में कूट परीक्षण का यह श्लोक अकाट्य प्रमाणरूप में विचारणीय है।

स्वातीशशाङ्क पितृतारकमैत्रभानां।
पुँऋक्षमस्ति यदि वा वनितर्क्षमस्ति।।
तेषां दिनादि गणना दशकं न चेत्स्याद्।
अत्यन्तमिष्टमिति शास्त्रविदो वदन्ति।।

अर्थात् वर/कन्या के जन्म के समय यदि स्वाती मृग्शिरा, माघा या अनुराधा में से कोई भी नक्षत्र हो तो दशकूटों में से किसी के भी न मिलने पर भी मिलान उत्तम होता है। इन चारों नक्षत्रों को महासंज्ञक नक्षत्र माना जाता है। वृद्ध वसिष्ठ संहिता के अनुसार ज्योतिषी को सूक्ष्म नक्षत्र के प्रभाव को भी स्थूल नक्षत्र के समान ही मानना चाहिए। इसके बारे में नारद और ढूण्डिराज ने भी अपना अनुकूल अभिमत प्रकट किया हुआ है अर्थात् उन्होंने इस बारे में अपनी प्रशस्त राय दी हुई है। उनका मत है कि उपरोक्त महानक्षत्रों के प्रभाव से वैवाहिक जीवन में कूटों द्वारा तथा अन्य विघ्नों द्वारा कोई हानि नहीं पहुंचाई जा सकती। नक्षत्र जिस चन्द्रमा का प्रतिनिधित्व करते हैं वह उनका उत्पत्ति स्थान है ऋषियों ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ रोगनिवारक माना है। **शुभम्भूयात्।**

वर-कन्या शुद्ध गुण-मिलान सारिणी

नोट– वर्ण 1, तारा 3, योनि 4, राशि स्वामी 5, गण 6, भकूट , द्विर्द्वादश 2/12, नवपंचम 5/9, षडाष्टक 6/8, नाड़ी 8

वर की राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका 1	कृत्तिका 2 से 4	रोहीणी	मृगशिरा 1, 2	मृगशिरा 3, 4	आर्द्रा	पुर्नवसु 1,2,3	पुर्नवसु 4	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा. 1	उ.फा. 2, 3, 4	हस्त	चित्रा 1, 2
मेष	अश्विनी	28	33	28.5	18.5	21.5	22.5	26	17	19	23.5	31.5	28	21	25	15.5	11	9	13
	दोष	8		3, 6	1,3,6, 2/12	1,3, 2/12	1,3, 2/12	1,3,5	1,3,5,8	1,3,5,8	3,8	3	6	2,6,5/9	2,5/9	2,3,8, 5/9	1,3,5, 6/8,8	1,3,4,5, 6/8,8	1,3,4,5, 6,6/8
	भरणी	34	28	29	19	22.5	14.5	18	26	27	31.5	23.5	25.5	20	18	26	21.5	20	4
	दोष		8	6	1,6, 2/12	1,3, 2/12	1,3,8, 2/12	1,3,5,8	1,3,5	1,3,5	3	3,8	3,6	2,6,5, 5/9	2,8,5/9	2,5,9	1,5, 6/8	1,3,5, 6/8	1,3,5,6, 8,6/8
	कृत्तिका -1	27.5	29	28	18	10	16.5	20	20	21	25.5	26.5	23.5	16.5	20	20	15.5	15.5	18
	दोष	3,6	6	8	1,8, 2/12	1,6,8, 2/12	1,3,6, 2/12	1,3,5,6	1,3,5,6	1,3,5,6	3,6	3,6	3,8	2,3,8, 5/9	2,6, 5/9	2,6, 5/9	1,5,6, 6/8	1,5,6, 6/8	1,3,5, 6/8
वृष	कृत्तिका	18.5	20	19	28	20	26	17.5	17.5	18.5	22	23	20	18.5	22	22	21	21	23.5
	2,3,4	3,6, 2/12	6,2/12	8,2,12	8	6,8	3,6	1,3,6, 2/12	1,3,6, 2/12	1,3,6, 2/12	3,5,6	3,5,6	3,5,8	2,3,5,8	2,5,6	2,5,6	6,6/8	6,6/8	3,6/8
	रोहिणी	23.5	23.5	11	20	28	36	27.0	23.5	22.5	26	27	12	10.5	24.5	27	26	26	20
	दोष	3,2/12	3,2/12	2,6,8	6,8	8		1,2/12	1,3, 2/12	1,3,4, 2/12	3,4,5	3,5	3,4,5, 6,8	2,3,4, 5,6,8	2,3,4,5	2,5	5/9	5/9	6,5/9
	मृगशिरा	23.5	14.5	18.5	27.5	35	28	19	24	22.5	26	19	21	19.5	15.5	24.5	23.5	26	13
	1, 2	3, 2/12	3,8, 2/12	3,6, 2/12	3,6		8	1,8, 2/12	1,2/12	1,3,4, 2/12	3,4,5	3,5,8	3,4,5,6	2,3,4, 5,6	2,3,4, 5,8	2,3,5	3,5/9	5/9	6,8, 5/9
मिथुन	मृगशिरा	27	18	22	19.5	27	20	28	33	31.5	19	12	14	23.5	19.5	28.5	31.5	34	21
	3, 4	3,5	3,5,8	3,5,6	3,6, 2/12	2/12	8,2/12	8		3,4	2,3,4,5, 2/12	2,3,5,8, 2/12	2,3,4,5, 6,2/12	2,3,4,6	2,3,4,8	2,3	3		6,8
	आर्द्रा	19	27	21	18.5	24.5	26	34	28	25	12.5	20	13	23.5	29.5	21.5	24.5	24.5	27
	दोष	3,5,8	3,5	3,5,6	3,6, 2/12	3,2/12	2/12		8	4,8	2,4,5,8, 2/12	2,3,5, 2/12	2,3,4,5, 6,2/12	2,3,6	2,3	2,3,8	3,8	3,8	4,6
	पुनर्वसु	20	27	23	20.5	22.5	23.5	31.5	24	28	15.5	22.5	17	22.5	26.5	21.5	24.5	25.5	27.5
	1, 2, 3	3,5,8	3,5	3,5,6	3,6, 2/12	3,4, 2/12	3,4, 2/12	3,4	4,8	8	2,5,8, 2/12	2,5,2/12	2,3,5,6, 2/12	2,3,4,6	2,3,4	2,3,8	3,8	3,8	3,6

वर की राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका 1	कृत्तिका 2 से 4	रोहीणी	मृगशिरा 1, 2	मृगशिरा 3, 4	आर्द्रा	पुर्नवसु 1,2,3	पुर्नवसु 4	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा. 1	उ.फा. 2, 3, 4	हस्त	चित्रा 1, 2
कर्क	पुनर्वसु	22.5	29.5	25.5	22	24	25	18	10.5	14.5	28	35	29.5	16.5	20.5	15.5	18	19	21
	4	1,3,8	1,3	1,3,6	1,3,5,6	1,3,5,6	1,3,5,6	1,2,3,4, 5,2/2	1,2,4, 5,8, 2/12	1,2,5,8 2/12	8		3,6	1,3,4,6, 2/12	1,3,4, 2/12	1,3,4, 2/12	1,2,3, 5,8	1,2,3, 5,8	1,2,3, 5,6
	पुष्य	30.5	21.5	26.5	23	25	18	11	18	21.5	35	28	30	19.5	15.5	23.5	26	27	12
	दोष	1,3	1,3,8	1,3,8	1,3,5,6	1,3,5	1,3,5,8	1,2,3,5, 8,2/12	1,2,3,5, 2/12	1,2,5, 2/12		8	6	1,3,6, 2/12	1,3,8, 2/12	1,3, 2/12	1,2,3,5	1,2,3,5	1,2,3, 5,6,8
	आश्लेषा	26	24.5	22.5	19	11	19	12	12	15	28.5	29	28	15	15.5	18.5	21	21	26
	दोष	1,6	1,3,6	1,3,6	1,3,5,8	1,3,5, 6,8	1,3,4, 5,6	1,2,3, 4,5,6, 2/12	1,2,3, 4,5,6, 2/12	1,2,3, 5,6, 2/12	3,6	6	8	1,4,8, 2/12	1,3,4,6, 2/12	1,3,6, 2/12	1,2,3, 5,6	1,2,3, 5,6	1,2,3,5
सिंह	मघा	20	20	16.5	17.5	9.5	17.5	21.5	22.5	20.5	16.5	19.5	16	28	30	27.5	16.5	16.5	21.5
	दोष	2,6,5/9	2,6,5/9	2,3,8, 5/9	1,2,3, 5,8	1,2,3,4, 5,6,8	1,2,3, 4,5,6	1,2,3, 4,6	1,2,3,6	1,2,3, 4,6	3,4,6, 2/12	3,6, 2/12	4,8, 2/12	8	6	3,6	1,2,3,6, 2/12	1,2,3, 5,2/12	1,2,3, 2/12
	पू.फा.	26	18	20	21	23.5	15.5	19.5	28.5	26.5	22.5	17.5	16.5	30	28	35	24	22.5	7.5
	दोष	2,5,9	2,8,5/9	2,6, 5/9	1,2, 5,6	1,2,3, 4,5	1,2, 3,4	1,2,3, 4,8	1,2,3	1,2,3,4	3,4, 2/12	3,8, 2/12	3,4,6, 2/12	6	8		1,2, 2/12	1,2,3, 2/12	1,2,3, 6, 8, 2/12
	उ.फा.	16.5	26	20	21	26	24.5	28.5	20.5	21.5	17.5	25.5	19.5	27.5	35	28	17	16	13.5
	1	2,3,8, 6/8	2,6/8	2,6,6/8	1,2,5,6	1,2,5	1,2,3,5	1,2,3	1,2,3,8	1,2, 3,8	3,8, 2/12	3,2/12	3,6, 2/12	3,6		8	1,2,8, 2/12	1,2,8, 2/12	1,2,3,4, 6,2/12
कन्या	उ.फा.	13	22.5	16.5	21	26	24.5	31.5	23.5	24.5	20	28	22	17.5	25	18	28	27	24.5
	2, 3, 4	3,5,8, 6/8	5,6/8	5,6, 6/8	6,5/9	5/9	3,5/9	1,3	1,3,8	1,3,8	2,3,5,8	2,3,5	2,3, 5,6	2,3,6, 2/12	2,2/12	2,8, 2/12	8	8	3,4,6
	हस्त	10	20	17.5	22	25	26	33	22.5	24.5	20	28	23	18.5	22.5	16	26	28	28
	दोष	3,4,5, 8,6/8	3,5, 6/8	5,6, 6/8	6,5/9	5/9	5/9	1	1,3,8	1,3,8	2,3, 5,8	2,3,5	2,3,5,6	2,3,6, 2/12	2,3, 2/12	2,8, 2/12	8	8	4,6
	चित्रा	13	5	19	23.5	20	12	19	26	25.5	21	12	27	22.5	8.5	14.5	24.5	27	28
	1, 2	3,4,5, 8,6/8	3,4,5, 6,6/8	3,4,5, 6/8	3,4, 5/9	6,5/9	6,8,5/9	1,6,8	1,4,6	1,3,6	2,3,5,6	2,3,4, 5,6,8	2,3,5	2,3, 2/12	2,3,6,8, 2/12	2,3,4,6, 2/12	3,4,6	4,6	8

वर की राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका 1	कृत्तिका 2 से 4	रोहीणी	मृगशिरा 1, 2	मृगशिरा 3, 4	आर्द्रा	पुर्नवसु 1,2,3	पुर्नवसु 4	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त	चित्रा 1, 2
तुला	चित्रा	22.5	14.5	28.5	23.5	20	12	13	21	19.5	20.5	19.5	26.5	25.5	11.5	17.5	17.5	20	21
	3,4	3,4,6	3,4,6,8	3,4	3,4, 6/8	6, 6/8	6,8, 6/8	6,8, 5/9	6,5/9	3,6, 5/9	2,3, 5,6	2,3,4, 5,6,8	2,3,5	2,3,5	2,3,5, 6,8	2,3,4, 5,6	3,4,6, 2/12	4,6, 2/12	8, 2/12
	स्वाती	27.5	29.5	17.5	12.5	15.5	26	27	26	28	29	27.5	14.5	13.5	25.5	25.5	25.5	27.5	21
	दोष	3,4	3	3,6,8	3,6,8, 6/8	3,8, 6/8	6/8	5/9	5/9	5/9	2,5	2,3,5	2,3,5, 6,8	2,3,5, 6,8	2,3,5	2,3,5	3,2/12	3,2/12	3,6, 2/12
	विशाखा	22.5	22.5	20.5	15.5	10.5	18.5	19.5	21	21	22	21	18.5	17.5	19.5	17.5	17.5	18.5	27.5
	1,2,3	3,4,6	3,4,6	3,4,8	3,4,8, 6/8	3,6,8, 6/8	3,4, 6/8	3,6, 5/9	4,6, 5/9	6,5/9	2,5,6	2,4, 5,6	2,3, 5,8	2,3,5,8	2,3, 5,6	2,3,4, 5,6	3,4,6, 2/12	3,4,6, 2/12	3, 2/12
वृश्चिक	विशाखा	16.5	16.5	14.5	19.5	14.5	22.5	12	13.5	13.5	19	18	15.5	21.5	23.5	21.5	17	18	27
	4	1,3,4,6, 6/8	1,3,4,6, 6/8	1,3,4, 8,6/8	1,3,4,8	1,3,6,8	1,3,6	1,2,3,5, 6,6/8	1,2,5,6, 6/8	1,2,5,6, 6/8	6,5/9	3,6, 5/9	3,8, 5/9	1,2,3,8	1,2,3,6	1,2,3, 4,6	1,2,3, 4,5,6	1,2,3, 4,5,6	1,2,3,5
	अनुराधा	24.5	14.5	19.5	24.5	27.5	20.5	10	15	20.5	26	18	21	24.5	20.5	29.5	26	26	11
	दोष	1,3,6/8	1,3,8, 6/8	1,3,6, 6/8	1,3,6	1,3	1,3,8	1,2,3,5, 8,6/8	1,2,3,4, 5,6/8	1,2,5, 6/8	5/9	8,5/9	6,5/9	1,2,3,6	1,2,3,8	1,2,3	1,2,3,5	1,2,3,5	1,2,3,4, 5,6,8
	ज्येष्ठा	12	18.5	24.5	29.5	22.5	22.5	12	2	5	10.5	20	26	31	23.5	16.5	13	12	24
	दोष	1,6,8, 6/8	1,3,6, 6/8	1,3, 6/8	1,3	1,3,6	1,3,6	1,2,3,5, 6, 6/8	1,2,3,4, 5,6,8, 6/8	1,2,3,5, 6,8,6/8	3,6,8, 5/9	6,5/9	5/9	1,2	1,2,3,6	1,2,3, 6,8	1,2,3, 5,6,8	1,2,3, 5,6,8	1,2,3, 4,5
धनु	मूला	12	20	24.5	19	13	13	21	15	12	8	17	23	25	19	9.5	13	13	26
	दोष	6,8,5/9	6,5/9	3,5/9	1,3,5, 6/8	1,3,5, 6,6/8	1,3,5, 6,6/8	1,3, 5,6	1,3,5, 6,8	1,3,4, 5,6,8	2,3,4,5, 8,6/8	2,3,6, 6/8	2,4, 6/8	2,5/9	2,6, 5/9	2,3,6, 8,5/9	1,3,5, 6,8	1,3,5, 6,8	1,3, 4,5
	पूर्वाषाढ़ा	26	18	18	12.5	18	10	18	27	27	23	13	17	19	17	25	28.5	27	13
	दोष	5/9	8,5/9	4,6, 5/9	1,4,5, 6,6/8	1,3,4, 5,6/8	1,3,4,5 8,6/8	1,3,4, 5,8	1,3,5	1,3,5	2,3, 6/8	2,3,4, 8,6/8	2,3,6, 6/8	2,6, 5/9	2,8, 5/9	2,5/9	1,5	1,3,5	1,3,5, 6,8
	उत्तराषाढ़ा	24.5	26	12	6.5	10.5	17	25	27	27	23	23	9	8.5	24	25	28.5	28.5	21
	1	2,5/9	5/9	6,8, 5/9	1,5,6, 8,6/8	1,4,5, 8,6/8	1,3,4, 5,6/8	1,3, 4,5	1,3,5	1,3,5	2,3, 6/8	2,3, 6/8	2,3,6, 8,6/8	2,3,4,6, 8,5/9	2,4, 5/9	2,5/9	1,5	1,5	1,3, 5,6

वर की राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका 1	कृत्तिका 2 से 4	रोहीणी	मृगशिरा 1, 2	मृगशिरा 3, 4	आर्द्रा	पुर्नवसु 1,2,3	पुर्नवसु 4	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त	चित्रा 1, 2
मकर	उत्तराषाढ़ा	27	28.5	14.5	12	16	22.5	20.5	22.5	22.5	28	28	14	4.5	20	21	24.5	24.5	17
	2, 3, 4	3,5	5	5,6,8	6,8, 5/9	4,8, 5/9	3,4, 5/9	1,3,4, 6/8	1,3, 6/8	1,3, 6/8	3,5	3,5	3,5, 6,8	3,4,5,6, 8,6/8	4,5, 6/8	5,6/8	2,5/9	2,5/9	2,3,6, 5/9
	श्रवण	27	26	13.5	11	16	25	22.5	21	22	28	26	15	6.5	18.5	20	23.5	24.5	19.5
	दोष	3,5	3,5	4,5,6,8	4,6,8, 5/9	4,8, 5/9	4,5/9	1,2,3, 6/8	1,2,3, 6/8	1,2,3, 6/8	3,5	3,4,5	3,5, 6,8	3,5,6, 8,6/8	3,5, 6/8	5,6/8	2,5/9	2,5/9	2,6, 5/9
	धानिष्ठा	20	11	26	23.5	20	12	9.5	16.5	16	22	13	28	19.5	5.5	12.5	16	17.5	15.5
	1, 2	3,4,5,6	3,4,5, 6,8	3,4,5	3,4,5/9	6,5/9	6,8, 5/9	1,2,6, 8,6/8	1,2,4, 6,6/8	1,2,3, 5,6/8	3,5,6	3,4,5, 6,8	3,5	3,5, 6/8	3,5,6, 8,6/8	3,4,5, 6,6/8	2,3,4, 6,5/9	2,4,6, 5/9	2,4,8, 5/9
कुम्भ	धानिष्ठा	20	11	26	30.5	27	19	12	19	18.5	13.5	4.5	19.5	25.5	11.5	18.5	17.5	19	17
	3, 4	3,4,5,6	3,4,5, 6,8	3,4,5	3,4	6	6,8	6,8, 5/9	4,6, 5/9	3,6, 5/9	2,3,5, 6,6/8	2,3,4, 5,6,8, 6/8	2,3,5, 6/8	2,3,5	2,3,5, 6,8	2,3,4, 5,6	3,4,6, 6/8	4,6, 6/8	4,8, 6/8
	शतभिषा	15	21	28	32.5	25.5	27	20	12	13	8	14.5	20.5	26.5	20.5	12.5	11.5	8.5	25
	दोष	3,5,6,8	3,5,6	3,5	3	3,6	6	6,5/9	6,8, 5/9	6,8, 5/9	2,5,6, 8,6/8	2,3,5, 6,6/8	2,3,5, 6/8	2,3,5	2,3,5,6	2,3,5, 6,8	3,6,8, 6/8	3,4,6, 8,6/8	4,6/8
	पूर्वाभाद्रपद	18	25	20	24.5	31.5	31.5	24.5	17	18	13	20	13.5	19.5	25.5	16.5	15.5	15.5	18.5
	1, 2, 3	3,4,5,8	3,4,5	3,4,5,6	3,4,6	3	3	3,5/9	4,8, 5/9	8,5/9	2,5,8, 6/8	2,4,5, 6/8	2,3,5, 6,6/8	2,3,5, 6	2,3,5	2,3,4, 5,8	3,8, 6/8	3,4,8, 6/8	3,4,6, 6/8
मीन	पूर्वाभाद्रपद	14.5	21.5	16.5	19	26	26	25.5	18	19	18	25	18	17.5	23.5	14.5	16.5	16.5	18.5
	4	1,3,4, 8,2/12	1,3,4, 2/12	1,3,4,6, 2/12	1,3,4, 5,6	1,3,5	1,3,5	1,2,3, 5	1,2,4, 6,8	1,2,5, 8	8,5/9	4,5/9	3,6, 5/9	1,3,6, 6/8	1,3, 6/8	1,3,4, 8,6/8	1,2,3 4,5,8	1,2,3, 4,5,8	1,2,3, 4,5,6
	उत्तराभाद्रपद	24.5	16.5	18.5	21	26	18	17.5	25.5	28	27	19	21	18.5	16.5	25.5	27.5	26.5	9.5
	दोष	1,3,2/12	1,3,8, 2/12	1,3,6, 2/12	1,3,5, 6	1,3,5	1,3,5,8	1,2,3, 5,8	1,2,3,5	1,2,5	5/9	8,5/9	6,5/9	1,3,6, 6/8	1,3,8, 6/8	1,3, 6/8	1,2,3,5	1,2,3,5	1,2,3, 4,5,8
	रेवती	25	24.5	11.5	14	17	26	25.5	24.5	26.5	25.5	27	14	13	23.5	23.5	25.5	26.5	19.5
	दोष	1,2/12	1,3,2/12	1,3,6,8, 2/12	1,3,5, 6,8	1,3,5, 8	1,3,5	1,2,3, 5	1,2,3, 5	1,2,3, 5	3,5/9	5/9	6,8, 5/9	1,6,8, 6/8	1,3, 6/8	1,3, 6/8	1,2,3, 5	1,2,3,5	1,2,3,4, 5,6

वर की राशि		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका 1	कृत्तिका 2 से 4	रोहीणी	मृगशिरा 1, 2	मृगशिरा 3, 4	आर्द्रा	पुर्नवसु 1,2,3	पुर्नवसु 4	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त	चित्रा 1, 2
मकर	उत्तराषाढ़ा	27	28.5	14.5	12	16	22.5	20.5	22.5	22.5	28	28	14	4.5	20	21	24.5	24.5	17
	2, 3, 4	3,5	5	5,6,8	6,8, 5/9	4,8, 5/9	3,4, 5/9	1,3,4, 6/8	1,3, 6/8	1,3, 6/8	3,5	3,5	3,5, 6,8	3,4,5,6, 8,6/8	4,5, 6/8	5,6/8	2,5/9	2,5/9	2,3,6, 5/9
	श्रवण	27	26	13.5	11	16	25	22.5	21	22	28	26	15	6.5	18.5	20	23.5	24.5	19.5
	दोष	3,5	3,5	4,5,6,8	4,6,8, 5/9	4,8, 5/9	4,5/9	1,2,3, 6/8	1,2,3, 6/8	1,2,3, 6/8	3,5	3,4,5	3,5, 6,8	3,5,6, 8,6/8	3,5, 6/8	5,6/8	2,5/9	2,5/9	2,6, 5/9
	धानिष्ठा	20	11	26	23.5	20	12	9.5	16.5	16	22	13	28	19.5	5.5	12.5	16	17.5	15.5
	1, 2	3,4,5,6	3,4,5, 6,8	3,4,5	3,4,5/9	6,5/9	6,8, 5/9	1,2,6, 8,6/8	1,2,4, 6,6/8	1,2,3, 5,6/8	3,5,6	3,4,5, 6,8	3,5	3,5, 6/8	3,5,6, 8,6/8	3,4,5, 6,6/8	2,3,4, 6,5/9	2,4,6, 5/9	2,4,8, 5/9
कुम्भ	धानिष्ठा	20	11	26	30.5	27	19	12	19	18.5	13.5	4.5	19.5	25.5	11.5	18.5	17.5	19	17
	3, 4	3,4,5,6	3,4,5, 6,8	3,4,5	3,4	6	6,8	6,8, 5/9	4,6, 5/9	3,6, 5/9	2,3,5, 6,6/8	2,3,4, 5,6,8, 6/8	2,3,5, 6/8	2,3,5	2,3,5, 6,8	2,3,4, 5,6	3,4,6, 6/8	4,6, 6/8	4,8, 6/8
	शतभिषा	15	21	28	32.5	25.5	27	20	12	13	8	14.5	20.5	26.5	20.5	12.5	11.5	8.5	25
	दोष	3,5,6,8	3,5,6	3,5	3	3,6	6	6,5/9	6,8, 5/9	6,8, 5/9	2,5,6, 8,6/8	2,3,5, 6,6/8	2,3,5, 6/8	2,3,5	2,3,5,6	2,3,5, 6,8	3,6,8, 6/8	3,4,6, 8,6/8	4,6/8
	पूर्वाभाद्रपद	18	25	20	24.5	31.5	31.5	24.5	17	18	13	20	13.5	19.5	25.5	16.5	15.5	15.5	18.5
	1, 2, 3	3,4,5,8	3,4,5	3,4,5,6	3,4,6	3	3	3,5/9	4,8, 5/9	8,5/9	2,5,8, 6/8	2,4,5, 6/8	2,3,5, 6,6/8	2,3,5, 6	2,3,5	2,3,4, 5,8	3,8, 6/8	3,4,8, 6/8	3,4,6, 6/8
मीन	पूर्वाभाद्रपद	14.5	21.5	16.5	19	26	26	25.5	18	19	18	25	18	17.5	23.5	14.5	16.5	16.5	18.5
	4	1,3,4, 8,2/12	1,3,4, 2/12	1,3,4,6, 2/12	1,3,4, 5,6	1,3,5	1,3,5	1,2,3, 5	1,2,4, 6,8	1,2,5, 8	8,5/9	4,5/9	3,6, 5/9	1,3,6, 6/8	1,3, 6/8	1,3,4, 8,6/8	1,2,3 4,5,8	1,2,3, 4,5,8	1,2,3, 4,5,6
	उत्तराभाद्रपद	24.5	16.5	18.5	21	26	18	17.5	25.5	28	27	19	21	18.5	16.5	25.5	27.5	26.5	9.5
	दोष	1,3,2/12	1,3,8, 2/12	1,3,6, 2/12	1,3,5, 6	1,3,5	1,3,5,8	1,2,3, 5,8	1,2,3,5	1,2,5	5/9	8,5/9	6,5/9	1,3,6, 6/8	1,3,8, 6/8	1,3, 6/8	1,2,3,5	1,2,3,5	1,2,3, 4,5,8
	रेवती	25	24.5	11.5	14	17	26	25.5	24.5	26.5	25.5	27	14	13	23.5	23.5	25.5	26.5	19.5
	दोष	1,2/12	1,3,2/12	1,3,6,8, 2/12	1,3,5, 6,8	1,3,5, 8	1,3,5	1,2,3, 5	1,2,3, 5	1,2,3, 5	3,5/9	5/9	6,8, 5/9	1,6,8, 6/8	1,3, 6/8	1,3, 6/8	1,2,3, 5	1,2,3,5	1,2,3,4, 5,6

वर की राशि		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	चित्रा 3, 4	स्वाती	विशाखा 1,2,3	विशाखा 4	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू.षा.	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रवण	धनिष्ठा 1, 2	धनिष्ठा 3, 4	शतभिषा	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा.	रेवती
कर्क	पुनर्वसु	20.5	28	22	20	26	11.5	8	21	21	26	27	21	12.5	8	10	16	26	25.5
	4	3	1,2,5	1,2,5, 6	6,5/9	5/9	3,6,8, 5/9	1,2,3,4, 6,6/8	1,2,3, 6/8	1,2,3, 6/8	1,3,5	1,3,5	1,3,4, 5,6	1,2,3, 4,5,6, 6/8	1,2,5, 6,8, 6/8	1,2,4, 5,8, 6/8	4,8, 5/9	5/9	3, 5/9
	पुष्य	11.5	26.5	21	19	18	21	17	11	21	26	25	13	4.5	14.5	18	24	18	27
	दोष	1,2,3,4, 5,6,8	1,2,3, 5	1,2,4, 5,6	4,6, 5/9	8, 5/9	6, 5/9	1,2,3, 6,6/8	1,2,3, 4,8, 6/8	1,2,3, 6/8	1,3,5	1,3,4, 5	1,3,4, 5,6,8	1,2,3, 4,5,6 8,6/8	1,2,3, 5,6, 6/8	1,2,4, 5,6/8	4, 5/9	8, 5/9	5/9
	आश्लेषा	25.5	12.5	17.5	15.5	20	26	22.5	16	8	13	13	26	17.5	19.5	11.5	17.5	21	13
	दोष	1,2,3, 5	1,2,3, 5,6,8	1,2,3, 5,8	3,8, 5/9	6, 5/9	5/9	1,2,4, 6/8	1,2,3, 6,6/8	1,2,3, 6,8, 6/8	1,3,5, 6,8	1,3,5, 6,8	1,3,4, 5	1,2,3, 4,5, 6/8	1,2,3, 5,6, 6/8	1,2,3, 4,5,6, 6/8	3,4,6, 5/9	6, 5/9	6,8, 5/9
सिंह	मघा	24.5	11.5	16.5	22.5	25.5	33	25	19	8.5	3.5	4.5	18.5	24.5	25.5	18.5	18.5	19.5	13
	दोष	1,2,3,5	1,2,3 5,6,8	1,2,3, 5,8	2,3,8	2,3,6	2	2, 5/9	2,6, 5/9	2,3,4, 6,8, 5/9	1,3,4, 5,6,8, 6/8	1,3,5, 6,8, 6/8	1,3,5, 6/8	1,2,3, 5	1,2,3, 5	1,2,3, 5,6	3,6, 6/8	3,6, 6/8	6,8, 6/8
	पू.फा.	10.5	25.5	18.5	24.5	23.5	24.5	19	17	24	19	18.5	4.5	10.5	19.5	24.5	24.5	17.5	25.5
	दोष	1.2.3. 5,6,8	1.2.3. 5	1.2.3. 5,6	2.3,6	2.3,8	2.3,6	2,6. 5/9	2,8. 5/9	2,4. 5/9	1,4,5. 6/8	1,3,5. 6/8	1,3,5. 6,8. 6/8	1.2.3. 5,6,8	1.2.3. 5,6	1.2.3. 5	3,6/8	3,8. 6/8	3,6/8
	उ.फा.	16.5	25.5	16.5	22.5	31.5	17.5	9.5	25	25	20	20	19.5	17.5	11.5	15.5	15.5	26.5	25.5
	1	1,2,3, 4,5,6	1,2,3, 5	1,2,3, 4,5,6	2,3,4, 6	2,3	2,3,6, 8	2,3,6, 8,6/8	2,6/8	1,6/8	1,5, 6/8	1,5, 6/8	1,3,4, 5,6, 6/8	1,2,3, 4,5,6	1,2,3, 5,6,8	1,2,3, 4,5,8	3,4,8, 6/8	3,6/8	3,6/8
कन्या	उ.फा.	16.5	25.5	16.5	18	27	13	14	29.5	29.5	24.5	24.5	16	16.5	10.5	14.5	17.5	28.5	27.5
	2, 3, 4	1,3,4, 6,2/12	1,3, 2/12	1,3,4, 6,2/12	2,3,4, 5,6	1,3,5	1,3,5, 6,8	3,5,6, 8	5	5	2,5/9	2, 5/9	2,3,4, 6, 5/9	1,3,4, 6,6/8	1,3,6, 8, 6/8	1,3,4, 8, 6/8	2,3,4, 5,8	2,3,5	2,3,5
	हस्त	20	26.5	18.5	20	26	13	15	27	28.5	23.5	24.5	18.5	19	8.5	13.5	16.5	26.5	27.5
	दोष	1,4,6, 2/12	1,3, 2/12	1,3,4, 6, 2/12	2,3,4, 5,6	2,3,5	2,3,5, 6,8	3,5,6, 8	3,5	5	2, 5/9	2, 5/9	2,4,6, 5/9	1,4,6, 6/8	1,3,4, 6,8	1,3,4, 8,6/8	2,3,4, 5,8	2,3,5	2,3,5
	चित्रा	20	19	26.5	28	11	25	28	14	22	17	18.5	15.5	16	24	16.5	19.5	10.5	19.5
	1, 2	1,8, 2/12	1,4,6, 2/12	1,3, 2/12	2,3,5	2,3,4, 5,6,8	2,3,4, 5	3,4,5	3,5,6, 8	3,5,6	2,3,6, 5/9	2,6, 5/9	2,4,8, 5/9	1,4,8, 6/8	1,4, 6/8	1,3,4, 6, 6/8	2,3,4, 5,6	2,3,4, 5,6,8	2,3,4, 5,6

वर की राशि		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	चित्रा 3, 4	स्वाती	विशाखा 1, 2, 3	विशाखा 4	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू.षा.	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2, 3, 4	श्रवण	धनिष्ठा 1, 2	धनिष्ठा 3, 4	शतभिषा	पू.भा. 1, 2, 3	पू.भा 4	उ.भा.	रेवती
तुला	चित्रा	28	27	34.5	23.5	6.5	20.5	28	14	22	25	26.5	23.5	18.5	26	18.5	12.5	3.5	12.5
	3, 4	8	4,6	3	2,3, 2/12	2,3,4, 6,8, 2/12	2,3,4, 2/12	3,4,5	3,5,6, 8	3,5,6	2,3,6	2,6	2,4,8	4,8, 5/9	4, 5/9	3,4,6, 5/9	2,3,4, 5,6, 6/8	2,3,4, 5,6,8, 6/8	2,3,4, 5,6, 6/8
	स्वाती	28	28	20	9	21.5	16.5	23	27	19	22	23	26.5	21	20	25	19	19.5	12.5
	दोष	4,6	8	4,6,8	2,4,6, 8, 2/12	2,3, 2/12	2,3,6, 2/12	3,5,6	3,5	3,5,8	2,3,8	2,3,8	2,4,6	4,6, 5/9	4,6, 5/9	4, 5/9	2,4,5, 6/8	2,3,5, 6/8	2,3,5, 8,6/8
	विशाखा	34.5	19	28	17	16	20.5	28	22	14	17	17	30	24.5	26	20	14	13	4.5
	1, 2, 3	3	4,6,8	8	2,8,2/12	2,4,6, 2/12	2,3,4, 2/12	3,4,5	3,5,6	3,5,6, 8	2,3, 6,8	2,3, 6,8	2,3,4	3,4, 5/9	4,5/9	4,6, 5/9	2,4,5, 6,6/8	2,4,5, 6,6/8	2,3,4, 5,6,8 6/8
वृश्चिक	विशाखा	22.5	7	16	28	27	31.5	22.5	16.5	8.5	12	12	25	24	25.5	19.5	19	18	9.5
	4	1,2,3, 2/12	1,2,4, 6,8, 2/12	1,2,8 2/12	8	4,6	3,4	1,2,3, 4,2/12	1,2,3, 6, 2/12	1,2,3, 6,8, 2/12	1,3,5, 6,8	1,3,5, 6,8	1,3,4, 5	1,2,3, 4,5	1,2,4, 5	1,2,4, 5,6	4,6, 5/9	4,6, 5/9	3,4,6, 8,5/9
	अनुराधा	6.5	21.5	16	28	28	31	15.5	13.5	21.5	25	26	12	11	21	24.5	24	18	27
	दोष	1,2,3, 4,6,8, 2/12	1,2,3, 2/12	1,2,4, 6, 2/12	4,6	8	6	1,2,3, 4,6 2/12	1,2,3, 8, 2/12	1,2,3, 2/12	1,3,5	1,3,5	1,3,4, 5,6,8	1,2,3, 4,5,6, 8	1,2,3, 5,6	1,2,3, 5	4, 5/9	8, 5/9	5/9
	ज्येष्ठा	19.5	15.5	19.5	31.5	30	28	14	16.5	16.5	20	20	25	24	18	10	9.5	21	21
	दोष	1,2,3,4, 2/12	1,3,4, 5, 2/12	1,2,3, 4, 2/12	3,4	6	8	1,3,4, 8,2/12	1,2,3, 6,2/12	1,2,3, 6,2/12	1,3, 5,6	1,3, 5,6	1,3,4, 5	1,2,3, 4,5	1,2,3, 5,8	1,2,3, 4,5,6, 8	3,4,6, 8,5/9	6, 5/9	6, 5/9
धनु	मूला	27	21	27	23.5	15.5	15	28	28	26.5	15	15	20	28.5	21.5	14.5	16	25	25.5
	दोष	1,3,4, 5	1,3,5, 6	1,3,4, 5	2,3,4, 2/12	2,3,4, 6,2/12	2,4,8, 2/12	8	6	3,6	1,2,3, 6,2/12	1,2,3, 6,2/12	1,2,3, 4,2/12	1,3,4	1,3,8	1,3,4, 6,8	2,3,4, 6,8	2,3,6	2,6
	पूर्वाषाढ़ा	13	27	21	17.5	15.5	17.5	28	28	34	22.5	23	6	14.5	23.5	28.5	30	23	31
	दोष	1,3,5, 6,8	1,3,5	1,3,5, 6	2,3,6, 2/12	2,3,8, 2/12	2,3,6, 2/12	6	8		1,2, 2/12	1,2,3, 2/12	1,2,3,4, 6,8, 2/12	1,3,4, 6,8	1,3,6	1,3,4	2,3,4	2,3,8	2,3
	उत्तराषाढ़ा	21	19	13	9.5	23.5	17.5	26.5	34	28	16.5	14.5	15	23.5	23.5	29.5	31	31	23
	1	1,3,5, 6	1,3,5, 8	1,3,5, 6,8	2,3,6, 8, 2/12	2,3, 2/12	2,3,6, 2/12	3,6		8	1,2,8 2/12	1,2,8, 2/12	1,2,3, 6,2/12	1,3,6	1,3,6	1,3	2,3	2,3	2,3,8

वर की राशि		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या की राशि	नक्षत्र → ↓	चित्रा 3, 4	स्वाती	विशाखा 1, 2, 3	विशाखा 4	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू.षा.	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रवण	धनिष्ठा 1, 2	धनिष्ठा 3, 4	शतभिषा	पू.भा. 1, 2, 3	पू.भा 4	उ.भा.	रेवती
मकर	उत्तराषाढ़ा	24	22	16	13	27	21	16	23.5	17.5	28	26	26.5	17	17	23	30.5	30.5	22.5
	2, 3, 4	1,2,3, 6	1,2,3, 8	1,2,3, 6,8	3,5,6, 8	3,5	3,5,6	2,3,6, 2/12	2, 2/12	2,8, 2/12	8	8	3,6	1,2,3, 6, 2/12	1,2,3, 6, 2/12	1,2,3, 2/12	3	3	3,8
	श्रवण	26.5	22	17	14	27	22	17	23	14.5	25	28	28	18.5	18	21	28.5	29.5	22.5
	दोष	1,2,6	1,2,3, 8	1,2,3, 6,8	3,5,6, 8	3,5	3,5	2,3,6, 2/12	2,3, 2/12	2,8, 2/12	2,8	8	4,6	1,2,4, 6. 2/12	1,2,3, 6,2/12	1,2,3, 4,2/12	3,4	3	3,4,6
	धानिष्ठा	22.5	24.5	29	26	12	26	21	7	16	26.5	27	28	18.5	23.5	19	26.5	15.5	22.5
	1, 2	1,2,4, 8	1,2,4, 6	1,2,3, 4	3,4,5	3,4,5, 6,8	3,4,5, 6	2,3,4, 2/12	2,3,4, 6,8, 2/12	2,3,6, 2/12	3,6	4,6	8	1,2,8, 2/12	1,2,4, 2/12	1,2,3, 6, 2/12	3,6	3,4,6, 8	3,4,6
कुम्भ	धानिष्ठा	18	20	24.5	25	11	25	29.5	15.5	24.5	18	18.5	19.5	28	33	28.5	18	7	14
	3, 4	4,8, 5/9	4,6, 5/9	3,4, 5/9	2,3,4, 5	2,3,4, 5,6,8	2,3,4, 5	3,4	3,4,6, 8	3,6	2,3,6, 2/12	2,4,6, 2/12	2,8, 2/12	8	4	3,6	2,3,6, 2/12	2,3,4, 6,8, 2/12	2,3,4, 6,2/12
	शतभिषा	26	19	26	26.5	21	19	22.5	24.5	24.5	18	18	24.5	33	28	19	8.5	17	16
	दोष	3,5/9	3,6, 5/9	4, 5/9	2,4	2,3,5, 6	2,3,5, 8	3,8	3,6	3,6	2,3,6, 2/12	2,3,6, 2/12	2,4, 2/12	4	8	4,6,8	2,4,6, 8, 2/12	2,3,6, 2/12	2,3,6, 2/12
	पूर्वाभाद्रपद	18.5	26	20	20.5	26.5	11	15.5	29.5	30.5	24	23	20	28.5	19	28	17.5	22.5	20
	1, 2, 3	3,4,6, 5/9	4, 5/9	4,6, 5/9	2,4,5, 6	2,4,5	2,3,4, 5,6,8	3,4, 6,8	3,4	3	2,3, 2/12	2,3,4, 2/12	2,3,6, 2/12	3,6	4,6,8	8	2,8, 2/12	2,4, 2/12	2,3,4, 2/12
मीन	पूर्वाभाद्रपद	11.5	19	13	19	25	9.5	15	29	30	29.5	28.5	25.5	17	7.5	16	28	33	30.5
	4	1,2,3, 4,5,6, 6/8	1,2,4, 5, 6/8	1,2,4, 5,6, 6/8	4,6, 5/9	4, 5/9	3,4,6, 8, 5/9	1,2,3, 4,6,8	1,2,3, 4	1,2,3	1,3	1,3,4	1,3,6	1,2,3, 6,2/12	1,2,4, 6,8, 2/12	1,2,8 2/12	8	4	3,4
	उत्तराभाद्रपद	2.5	19.5	12	18	19	21	24	22	30	29.5	29.5	14.5	6	16	21.5	33	28	35
	दोष	1,2,3, 4,5,6, 8,6/8	1,2,3, 5,6/8	1,2,4, 5,6, 6/8	4,6, 5/9	8, 5/9	6, 5/9	1,2,3, 6	1,2,3, 8	1,2,3	1,3	1,3	1,3,4, 6,8	1,2,3, 4,6,8, 2/12	1,2,3, 6,2/12	1,2,4, 2/12	4	8	
	रेवती	12.5	11.5	4.5	10.5	27	22	26.5	29	21	20.5	21.5	22.5	14	16	18	29.5	34	28
	दोष	1,2,3, 4.5.6. 6/8	1,2,3, 5,8. 6/8	1,2,3, 4.5.6. 8,6/8	3,4,6, 8.5/9	5/9	6, 5/9	1,2,6	1,2,3	1,2,3, 8	1,3,8	1,3,8	1,3,4, 6	1,2,3, 4,6. 2/12	1,2,3, 6,2/12	1,2,3, 4,2/12	3,4		8

जन्माक्षर चक्र

अवकहडा चक्रम् (राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नक्षत्र नाड़ी योनी वर्ग का गणवोधक चक्र)

राशि	मेष								वृष								मिथुन								कर्क							
स्वामी	मंगल								शुक्र								बुध								चन्द्र							
वर्ण	क्षत्रिय								वैश्य								शूद्र								विप्र							
वश्य	चतुष्पाद								चतुष्पाद								मनुष्य								जलचर							
चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो	क	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
वर्ग	सिंह	सिं	सिं	मृग	मृ	मृ	मृ	मृ	गरूड़	ग	ग	ग	ग	मृग	मृ	मृ	मृ	मृ	विडा.	बि	बि	बि	बि	सिंह	वि	वि	मेढ़ा	मे	मे	मे	मे	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा
नवांश	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क	तुला	वृश्चि	धनु:	म	कु	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तुला	वृ	धन	म	कु	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृश्चि	ध	म	कु	मीन
नवांशेश	मंग	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृगशिरा				आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य			
नाड़ी	आदि				मध्या				अन्त्या				अन्त्या				मध्या				आदि				आदि				मध्या			
योनी	अश्व				गज				मेष				सर्प				सर्प				श्वान				मार्जार				मेष			
गण	देव				मनुष्य				राक्षस				मनुष्य				देव				मनुष्य				देव				देव			

राशि	सिंह								कन्या								तुला								वृश्चिक							
स्वामी	सूर्य								बुध								शुक्र								मंगल							
वर्ण	क्षत्रिय								वैश्य								शूद्र								विप्र							
वश्य	जलचर								मनुष्य								मनुष्य								कीटक							
चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
वर्ग	मृ	मृ	मृ	मृ	मृ	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा	श्वा	मू	मू	मू	मेढ़ा	श्वा	श्वा	मू	मू	मृ	मृ	मृ	मृ	मृ	सर्प	स	स	स	स	स	स	स	स	स	मृ	मृ	मृ
नवांश	मेष	वृ	मि	कर्क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
नवांशेश	मंग.	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु

नक्षत्र	मघा				पूर्वा-फाल्गुनी				उतरा फाल्गुनी				हस्त				चित्रा				स्वाति				विशाख				अनुराधा			
नाड़ी	अन्त्या				मध्या				आदि				आदि				मध्या				अन्त्या				अन्त्या				मध्या			
योनी	मूषक				मूषक				गो				महिष				व्याघ्र				महिष				व्याघ्र				मृग			
गण	राक्षस				मनुष्य				मनुष्य				देव				राक्षस				देव				राक्षस				देव			

अवकहडा चक्रम् (राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नक्षत्र नाड़ी योनी वर्ग का गणवोधक चक्र)

राशि	धनुः								मकर								कुम्भ								मीन								
स्वामी	गुरू								शनि								शनि								गुरू							
वर्ण	क्षत्रिय								वैश्य								शूद्र								विप्र							
वश्य	मनुष्य								जलचर								मनुष्य								जलचर							
चरणांक	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सु	से	सो	दा	दी	दू	थ	झा	ञ	दे	दो	चा	ची
वर्ग	मृग	मृ	मूषक	मू	मू	सर्प	मू	श्वा	मू	मू	सिं	सिं	बिड	वि	बि	वि	बि	बि	बि	बि	बि	मे	मे	मे	मे	मे	स	स	स	स	सिं	सिं	स	स	सिं	सिं
नवांश	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	कर्क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मीन
नवांशेश	मंग	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु

नक्षत्र	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती	
नाड़ी	आदि	मध्या	अन्त्या	अन्त्या	मध्या	आदि	आदि	मध्या	अन्त्या	
योनी	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज	
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	

अथ घातचक्र :– नीचे दिया हुआ घातचक्र युद्ध विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घातचक्र चन्द्र, वारादि शुभ नहीं होते परन्तु तीर्थयात्रा विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। अधिक जानकारी के लिए श्री राघवेन्द्रपञ्चाङ्ग सम्पादक से सम्पर्क करें।

राश्य:	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१/६/११	५/१०/१५	२/७/१२	२/७/१२	३/८/१३	५/१०/१५	४/९/२४	१/६/११	३/८/१३	४/९/१४	३/८/१३	५/१०/१५
घातवार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	वव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	मेष	वृष	कर्क	तुला	मकर	मीन	कन्या	वृश्चिक	धनु	कुम्भ	मिथुन	सिंह
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु घा. चन्द्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृष	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री घा. चन्द्र	मेष	धनुः	धनुः	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

नाक्षत्रयोग कष्टावली

सदैवत नक्षत्राणि	कष्टदिनानि १–च	२–च	३–च	४–च	पूज्यवृक्षाः	धार्योपधम्	पक्षिणः	कष्टलक्षणानि	होमद्रव्याणि	बलिदानम्	दानद्रव्यम्	उपास्यामन्त्राः	सदैवत योगाः	उपास्यमन्त्राः
अश्विनी (दसनासत्यै)	८	१२	१७	९	वृषः (विषः) (वासा)	अपामार्ग (ओंगा)	कपोतः	बुद्धिभ्रमः कण्डूज्वरः अनिद्रा, गात्रपीड़ा	तिलाः	आटे का अश्व गुडौदन सहित	ब्रह्मभोजनम्	ॐ यावांकशामधु मत्यश्विना सूनृतावती। यता यज्ञमिमिक्षतम्।।	विष्कुम्भः (यमः)	ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहाघर्माय स्वाहाघर्मः पित्रे।।
भरणी (यमः)	५	१२	०	१९	परूषकः (आमलकः)	अगस्ति	मयूरः	नाना व्याधि, अंगपीड़ा छर्दि रोगः, अरुचिः	घृतमधुगुड	भाषपिष्टिकामहिष खिचड़ी सहित	रक्तवस्त्रम्	ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुताहुतिः यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरङ्कृतः।।	प्रीतिः (विष्णुः)	ॐ त्रीणिपदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा-अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।
कृत्तिका (अग्नि)	९	१९	१४	१४	उदुम्बरः (रुम्बल)	कार्पासः	वकः	अतिदाहः, नेत्रपीड़ा उरूशूलंप्रलापश्च	तिलाः	मसूर का मेष पायस सहित	दुग्धमिश्रौ	ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य-नस्पतिः मूर्धा कवीरयीणाम्।।	आयुष्मान् (चन्द्रमा)	ॐ सनो महांअनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धियेवाजाय हिन्वतु।।
रोहिणी (ब्रह्मा)	११	८	१२	१२	जम्बू (जामुन)	अपामार्गः	सरटः	हिक्का, उदरशूलम्, दाहः त्रिदोषः।	घृतपायसम्	आटे का हंस तिल सहित	मधु	ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि-सीमतः। सुरुचो वेन आवः सबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्चयो निमसतश्चविवः।।	सौभाग्य (ब्रह्मा)	ॐ एष ब्रह्मा यत्रृत्वियइन्द्रो नाम श्रुतोगुणे।।
मृगशिरा (चन्द्रः)	५	१३	१५	१९	खदिरः (खैर)	जयन्ती	सरटः	दृष्टिदोषः, अर्धगात्रपीडा, क्लेश	तिलदुग्धम्	आटे का मृग दुग्ध सहित	कृष्णगौः	ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् भवावाजस्य संगथे।।	शोभनः (बृहस्पतिः)	ॐ वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम्। बृहस्पति वरेण्यम्।।
आर्द्रा (रुद्रः)	०	२	३२	११	कलिः (बहेड़ा)	चन्दनम् (अश्वत्थः)	गृधः	कटिपीड़ा, निद्राक्षयः कम्पनं, भीति	मध्वाज्य	आटे का बैल दध्योदन सहित	कृष्णवस्त्र	ॐ नमस्ते रूद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।	अतिगण्डः (राक्षसः)	ॐ वत्थाहि निऋतीनां वज्रहस्तपरि वृजम् अहरहः शुन्ध्युः परिपदामि।।
पुनर्वसु (अदितिः)	११	१३	१५	३२	वंशः (बांस)	अर्कः	वकः	शिरः पीडा, कटि पीडा नेत्रदोषः, देवदोषः	घृतपायसम्	पिष्टी दम्पती अपूप सहित	कृष्ण वस्त्र	ॐ अनागसो अदितये देव सवितुः सवे। विश्वावामानि धीमहि।।	सुकर्मा (इन्द्रः)	ॐ इन्द्रं प्रातर्हवामेह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे। इन्द्रं सोमस्य पीतये।।
पुष्य (बृहस्पतिः)	८	१२	३०	१५	अश्वत्थः (पीपल)	तुषारः	पिकः	शीतविषमज्वरः, घोरकष्टं पाणिपादशैत्यम्	घृतदुग्धम्	आटे का पुरुष पायस सहित	तिल तैल	ॐ बृहस्पते जुषस्व नो हव्यानि विश्वेदेव्य। रास्व रत्नानिदाशुषे।	धृतिः (आपः)	ॐ शन्नोदेवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।।
आश्लेषा (सर्पः)	०	०	०	०	पुन्नागः (गंगरेन)	पटोलः	कपोतः	सन्निपातः, पादपीडा औषधवैफल्यम्	घृतपायसम्	त्रिशिरा सर्पः तिलमयः दुग्धयुतः	सुवर्णम्	ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्योनमः।।	शूलम् (सर्पः)	ॐ या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीं रनु। ये वा पटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
मघा (पितरः)	६	३	१८	३०	वटः (बोढ़)	भृंगराजः	काकः	हृच्छूलं, अर्धगात्र-पीडा दाहः डाकिनी-दोषः	घृततिलाः	आटे का मनुष्य पञ्चान्न सहित	अन्नरौप्यम्	ॐ आधत्त पितरोगर्भंकुमारं पुष्कर स्रजम्। यथेह पुरुषो असत्।।	गण्डः (अग्निः)	ॐ सुसमिद्राय शोचिषेघृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।।
पूर्वाफाल्गुनी (भगः)	६०	५	१२	९	पलाशः (ढाक)	कण्टकारी	चातकः	गात्रपीडा, दाहः देवदोषः कम्पनम्	घृतौदनम्	आटे की कन्या दुग्धोदनयुक्त	लौहम्	ॐ देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या भगस्य रातिमीमहे।।	वृद्धिः (अदित्यः)	ॐ सनो विश्वाहासुक्रतुरादित्यः सुपथा करत्। प्रण आयू पितारिषत्।।
उत्तराफाल्गुनी (अर्यमा)	४	५	६	०	प्लक्षः (पिलखन)	पटोलः	शुकः	तीव्रज्वरः, महाकष्टम् हृच्छूलंम् कुलदेवदोषः	प्रयङ्गुघृतम्	आटे की दम्पती अन्न सहित	अन्नम्	ॐ वामं वामं त आसुरे देवो ददात्वर्यमा। वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूलती।।	ध्रुवः (भूमिः)	ॐ महामित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परियज्ञं निषेदथुः।।
हस्तः (सूर्यः)	२१	३०	३०	०	अरिष्टः (रीठा)	जाती	सरटः	भयंकर रोगः, प्रस्वेदः उदरदोषः	चर्वाज्यम्	आटे की स्त्री ओदनयुक्त	सुवर्णम्	ॐ सपृत्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य शोचिष्केशं विचक्षण।।	व्याघातः (वायुः)	ॐ वायोशतं हरीणां युवस्यपोसयाणाम्। अतवाते सहस्त्रिणो रथआयातु पाजस्य।।
चित्रा (त्वष्टा)	१२	२	८	१०	श्री वृक्ष (नारिकेल)	मरूबकः (मरूआ)	मालिका (मल्लिकः) हँसजाति	चित्ररोगः कर्ण, ग्रीवा, हृच्छूलं ज्वरः	तिलाज्यम्	मृन्मय पिचाच चित्रान्युक्त	वस्त्रम् दुग्धम्	ॐ आयन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा। त्वष्टा सपाणिर्दधातु वीरान्।।	हर्षणः (भगः)	ॐ भग भक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा। मूर्धानरायमारभे।।
स्वातिः	१२	६	८	७	अर्जुनः	जाती	पिङ्गलः	नाना व्याधिः श्लेष्मा,	घृतपायसम्	पिष्टिमुगमूर्तिः	कृष्णवस्त्रम्	ॐ वायोयेते सहस्त्रिणो रथा सस्ते-	वज्रः	ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वा-

नाक्षत्रयोग कष्टावली

सदैवत नक्षत्राणि	कष्टदिनानि				पूज्यवृक्षाः	धार्यौषधम्	पक्षिणः	कष्टलक्षणानि	होमद्रव्याणि	बलिदानम्	दानद्रव्यम्	उपास्यामन्त्राः	सदैवत योगाः	उपास्यमन्त्राः
	१-च	२-च	३-च	४-च										
(वायुः) विशाखा (इन्द्रग्नी)	१०	१२	३०	०	पाहिकः (पाह)	गुञ्जा	कौशिकः	अंगपीड़ा, व्रण कुक्षिशूल, श्लेष्म-व्याधिः, मुखकर्ण पीड़ा, मुग्धत्वम्	घृतौदनम्	सप्तान्नसहिता आटे का अश्व पञ्चान्न सहित	रौप्यम्	भिरागहि। नियुत्वान् सोम पतिये।। ॐ इन्द्राग्नीआगत सुतगीभिर्नमो-वरेण्यम्। अस्त पातन्धियेषितः।	(वरुणः) सिद्धिः (गणेशः)	भिरुतिभिः।। करतां नः सुराधसः।। ॐ गणनान्त्वा गणपतिं हवामहे प्रिया-णांत्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम। आहमज़ निगर्भधं त्वममजा सिगर्भधम्।।
अनुराधा (मित्रः)	१२	१३	४	१२	बकुलः (मौल श्री)	सुपुपम्	कोकिलः	मुदपीड़ा, भूतबाधा, शिर पीड़ा ज्वरः।	त्रिमधुः (गुड़, घृत,	आटे का सर्प चित्रान्न सहित	कृष्णवस्त्रम्	ॐ तानः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम्। मित्रं साधयतं धियः।।	व्यतीपात (रूद्रः)	ॐ पातं नो रूद्रा पायुभिरूत त्रायेथां सुवात्रा। तुर्यामदस्यून् तनूभिः।।
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	१५	४०	६	१०	देवदारू (दयार)	अपामार्गः	कुक्कुटः	मार्गभीतिः कम्पन पित्त कोप, व्याकुलता	तिलपायसम्	आटे का हाथी पायस सहित	रौप्यम्	ॐ यत इन्द्रभयामहे ततो नो अ अभयं कृधि। मघवंछग्धितव तन्न उतये विद्विषो विमृधो जाहि।	वरीयान् (कुबेरः)	ॐ वयंम् सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।
मूला (निर्ऋतिः)	०	२१	२६	३०	सर्जः (शल)	मन्दारः	भ्रमरः	मुख, उदरदोष, स्त्री-देवदोष, कण्ठावरोध	चर्वाज्यम्	आटे का अश्व सप्तान्नसहित	तिलर्स्वणम्	ॐ मोषुणः परा परा निर्ऋतिद्रु हणावधीत पदीष्ट तृष्णया सह।।	परिघः (त्वष्टा)	ॐ इहत्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुपह्वये। अस्माकमस्तु केवलः।।
पूर्वाषाढ़ा (आपः)	१५	२२	४	०	जलवेतस् (बैंत)	कार्पासकः	तित्तिरिः	शिरः पीड़ा, कम्पनं छर्दिः, दुर्गन्धिः अङ्गशूल		पूर्ण कुम्भ अन्नसहित	तिलतैलम्	ॐ आपः प्रणीतभेषजं वपरूथं तन्वेमम। ज्योक् च सूर्यं दृशे।।	शिवः (मित्रः)	ॐ मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोम पतिये। जज्ञानां पूतदक्षसा।
उत्तराषाढ़ा (विश्वेदेवाः)	२०	१५	१२	२५	पनसः (फालसा)	कार्पासकः	शुकः	प्रलाप, कटि उरुपीड़ा ज्वरदोषः त्रिदोषः	तिल पायसम्	आटे का मगर-मच्छ तिलौदन-सहित ०	कृष्णवस्त्रम्	ॐ विश्वेदेवास आगत श्रृणुता म इम हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।।	सिद्धः (स्कन्द)	ॐ तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमां महासेनासो अमेभिरेषाम्।।
श्रवण (विष्णुः)	२०	१५	१२	२५	अर्कः (आक)	अपामार्गः	तित्तिरिः	अतिसारः, त्रिदोषः भूतदोषः स्वकृत-व्याधिः	चर्वाज्यम्	आटे का गरूड़ पूर्णकुम्भ सहित	नवगृह	ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम्। समूढ़मस्य पाँसुरे।	साध्यः (सावित्री)	ॐ युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सर्वे। स्वर्ग्याय शक्त्या।।
धनिष्ठा (गन्धर्वा)	८	२०	१६	१०	शमी (जांटी)	भृंगराजः	काकः	मूत्रकृच्छ्रं, अतिसारः वमन, कुलदेवदोषः, ज्वरः	अश्वत्थसमित्	आटे का मकर अन्नघटसहित	तिलतैलम्	ॐ वसोः पवित्र मसिशतधारं वसो पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारण सुप्वा काम धुक्षः।।	शुभः (लक्ष्मीः)	ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णं निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण।
शतभिषा (वरुणः)	१०	१४	१४	२५	कदम्बः (कदम्ब)	कमलम्	कपोतः	सन्निपातज्वरः, व्याधिः, वाताधिक्यं, वारुण दोषः	कुष्माण्डम्	आटे का पुरुष कुम्भ सहित	तिलतैलम्	ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्याच मृडय।। त्वामवस्यु राचके।।	शुक्लः (गौरी)	ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुपी सहस्त्राक्षरापरमे व्योमन्।।
पूर्वाभाद्रपदा (अजैकपाद)	१०	१४	१९	२०	आम्रः (आम)	भृंगराजः	कलविङ्क	त्रिदोषः, छर्दि अङ्गपीडा जलदेवदोषः	चर्वाज्यम्	कुश के विश्वे-देव अष्टदल पर अन्नयुक्त?	रक्तवस्त्रम्	ॐ उतनोअहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वजएक पात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु।।	ब्रह्म (कुमारौ)	ॐ गोमदूषुणास्त्वाश्वावधातमश्विना। वर्ती रूद्रनृपाय्यम्।।
उत्तराभाद्रपदा (अहिर्बुध्न्य)	१	०	३०	८	निम्बः (नीम)	अश्वत्थ	शुकः	कामलज्वरः शूलम् अतिसारः क्षेत्रपाल-दोषः		आटे का शिव बिल्वपत्र युक्त	रोप्यम्	ॐ मा नोज हिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्यस्त्रिधदृतायोः।।	ऐन्द्रः (पितरः)	ॐ मनो न्वाह्वामहे नाराशं सेन स्तो-मेन। पितृणां च मन्मभिः।।
रेवती (पूषा)	१	११	२	३०	मधूकः (महुआ)	अश्वत्थः	वर्हिः (मायूरः)	उरूशूलम्, चित्तभ्रमः भीतिः, वातपित्तज्वर	घृतपायसम्	कुमारी प्रतिमा कुम्भ सहित	कांस्यपात्रम्	ॐ पूषन् वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इहस्मसि।	वैधृति (दितिः)	ॐ त्वमग्ने वीर वद्यशसोदेवश्च सविता भगः। दितिश्चदातिवार्यम्।।

नमोऽस्तुरामाय नमोऽस्तुरामाय

ॐ श्री गणेशाय नमः

श्रीसद्गुरवे नमः

विविधमुहूर्ताः

गर्भाधानसंस्कार मुहूर्त्त

भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च संध्याभौमार्काकीनाद्यरात्रीश्चतस्त्रः।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वाती विष्णुवस्वम्बुपे सत्॥ (मु॰चि॰ मणि)

भद्रा, षष्ठी, पर्व (अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा) एवं रिक्ता (४, ९, १४) तिथियाँ, संध्याकाल, भौमरवि और शनिवार तथा ऋतुकाल की प्रथम चार रात्रियाँ गर्भाधान के लिए त्याज्य हैं तीनों उत्तरा (उ॰फा॰, उ॰षा॰उ॰भा॰) मृग्शिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा इन सभी नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ है।

गर्भाधान में शुभ लग्न :-

लग्न से केन्द्र त्रिकोण (१, ४, ७, १०, ९, ५) में शुभग्रह और ३, ६, ११ में पाप ग्रह हों, लग्न को पुरुषग्रह देखते हों, चन्द्रमा विषम राशि और विषम राशि के नवांश में हो, समरात्रि में गर्भाधान शुभ होता है। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्विनी नक्षत्रों को गर्भाधान के लिए मध्यम कहा है।

गर्भाधान मुहूर्त्त चक्र

श्रेष्ठनक्षत्र	रो॰ हस्त, स्वाती, मृग॰ अनु॰श्र॰ध॰ शतभिषा, तीनों उत्तरा
मध्यम नक्षत्र	पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा
लग्न	१-४-५-७-९-१० पापग्रहों की स्थिति ३, ६, ११वें हो
नवांश	१, ३, ५, ७, ९, ११
रात्रियाँ	रजोदर्शन से ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं

गर्भ मासो के स्वामी तथा स्त्री पुरुष के चन्द्र बल की विशेषता।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भा-धान लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

शुक्र, भौम, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध, गर्भाधानकालिक लग्नपति चन्द्र तथा सूर्य क्रम से गर्भ के प्रथमादि मासों के अधिपति होते हैं। विवाह एवं गर्भकालिक संस्कारों में स्त्री का चन्द्रबल तथा इनसे भिन्न कार्यों में पति के चन्द्रबल को देखना चाहिए।

पुंसवन का मुहूर्त्त अथवा विष्णुपूजन मुहूर्त्त

पुंसवनसंस्कार सीमन्तोन्नयन से पूर्व किया जाता है इसका मुख्य उद्देश्य है गर्भ में पुरुष जातक हेतु संस्कार करना। 'पुमान् सूयतेऽनेन कर्मणेति पुंसवनम्', गर्भस्थ शिशु का पुत्र अथवा पुत्री सम्बंधी विभाजन तीसरे मास में हो जाता है अतः पुंसवन संस्कार तीसरे मास में ही युक्तिसंगत है सीमान्तसंस्कार के लिए बताए जाने वाले तिथि वार नक्षत्रों में गर्भ के तीसरे मास में पुंसवन संस्कार करना चाहिए। आठवें मास में श्रवन, रोहिणी औरपुष्प नक्षत्रों में, शुभ लग्न में, अष्टम भाव शुद्ध रहने पर गर्भिणी को विष्णु पूजन करना चाहिए।

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त चक्रम्

मास	गर्भ से तीसरे मास में तथा मासाधिपति के बलवान होने पर ६, ८	लग्न	१-३-५-७-११
तिथि	शुक्लपक्ष की १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ कृष्ण पक्ष के १ से १० तक	वार	रवि, मंगल, गुरु मतान्तर से सोम, बुध, शुक्र भी
नक्षत्र	रो॰ मृग्॰ पुष्य, पुन॰ हस्त, मूल श्रवन तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र छोड़कर)		

स्तनपान कराने का मुहूर्त्त

जन्म से पाँचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात वैधृति, ४, ९, १४ तिथि को त्याग कर शुभतिथि में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवारों में पुन॰ पुष्प, मृ॰ मघा श्रवण, रेवती नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान शुभ है।

स्तनपान कराने के लिए मुहूर्त्तचक्र

तिथि	२-३-५-८-१०-११-१३-१५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	पुन॰ पुष्प मृ॰ म॰ श्र॰ रे॰
त्याज्य	भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि

जल पूजन करने का मुहूर्त्त

जन्म के पश्चात प्रथम मास समाप्ति पर बुध, गुरु, चन्द्र वारों में ४-९, १४-३० तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मृ॰पुन॰ पुण्य, हस्त, अनु॰ मूल, श्रवण नक्षत्रों में प्रसूत। स्त्री द्वारा जलपूजन श्रेष्ठ है।

जल पूजन के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	१-२-३-५-६-८-१०-११-१२-१३-१५
वार	सोम, बुध, गुरु
नक्षत्र	मृ॰ पुन, पुष्य, हस्त, अनु॰ मूल, श्रवण
त्याज्य	प्रथममासोपरान्त चैत्र, पौष, अधिकमास गुरु-शुक्रास्त, रिक्ता व अमा॰ तिथि

सीमन्तसंस्कार मुहूर्त्तः

गुरु रवि और भौम वारों में, मृग्शिरा, पुष्य, मूल, श्रवण पुनर्वसु तथा हस्त नक्षत्रों में रिक्ता (४, ९, १४) अमावास्या, द्वादशी, षष्ठी और अष्टमी तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में, गर्भमासपति के बलवान रहने पर, आठवें अथवा छठे मास में शुभग्रहों के केन्द्र में (१, ४, ७, १०) एवं त्रिकोण (५, ९) भावों में स्थित होने पर, पाप ग्रहों के ३, ६, ११ भाव में होने पर सीमन्त एवं (पुंसवन) संस्कार करना चाहिए।

ध्रुव संज्ञक (उत्तरा ३, रोहिणी) एवं रेवती नक्षत्रों में शुभग्रह वारों में पुरुष लग्न के नवांश में सीमन्त करना शुभ होता है।

सीमन्त संस्कार गर्भ का ही संस्कार है, गर्भ में शिशु की स्थिति एवं विकास हेतु कोई समस्या न हो इस उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है। इसे केश उत्पन्न होने के उपलक्ष्य में होने वाला संस्कार भी कहा जाता है क्योंकि गर्भस्थ शिशु के शिर एवं शरीर में रोम उत्पत्ति गर्भ के छठे मास में होती है। सीमन्त का अर्थ भी केश ही होता है।

गर्भकालिक स्थिति में तृतीय मास महत्वपूर्ण होता है क्योंकि तीसरे मास में ही अंगों की उत्पत्ति होती है तथा कन्या अथवा पुत्र का निर्णय हो जाता है। अतः तीसरे मास में पुंसवन नामक संस्कार का विधान बताया गया है। यद्यपि कुछ आचार्यों ने पुंसवन और सीमन्त दोनों संस्कारों को एक साथ करने के लिए कहा है।

सीमन्तोननयनस्योक्ततिथिवारभराशिषु।
पुंसवं कारयेद्विद्वान सहैवैकदिनेऽथवा॥ (नृसिंहदेवज्ञः)

जम्मू तथा हिमाचल प्रदेश में भी सीमन्तपुंसवन दोनों संस्कारों को एक साथ कर लेने की प्रथा प्रचलित है।

जातकर्म-नामकरण मुहूर्त

अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या इत्यादि पर्व दिन, रिक्तातिथियों (४/९/१४) को त्याग कर शुभ दिनों में, जन्म से एकादश अथवा द्वादश दिन मृग्शिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में नवजात शिशु का जातकर्म और नामकरण करना चाहिए।

जातकर्म जातक की श्रीवृद्धि एवं ग्रहदोष निवारण हेतु किया जाता है। ×××

सूतिकास्नानमुहूर्त्त

रेवती, उत्तरात्रय, रोहिणी, मृग्शिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौमवारों में सूतीस्नान शुभ होता है।

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, विशाखा कृत्तिका, मूल और चित्रा नक्षत्रों में, बुध शनिवारों में ६, ८ तथा रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों में सूतीस्नान नहीं करना चाहिए।

दन्तोत्पत्तिफलम्

मास	दन्तोत्पत्तिफल
प्रथम	स्वयं बालक नष्ट हो
द्वितीय	अनुज (छोटे भाई) के लिए कष्टप्रद
तृतीय	भगिनी (बहन) के लिए कष्टप्रद
चतुर्थ	माता के लिए कष्ट
पञ्चम	अग्रज (बड़े भाई) के लिए अनिष्ट
षष्ठ	अतुल सुख प्राप्ति
सप्तम	पितृ सुख
अष्टम	स्वास्थ्यलाभ
नवम	धन लाभ
दशम	सुखप्राप्ति
एकादश	धनसम्पत्ति लाभ तथा सुखबाहुल्य

बालक यदि जन्मकाल में ही दान्त युक्त उत्पन्न हो तो स्वयं अपने और अपने माता पिता अथवा माता के लिए मृत्यु सूचक होता है।

जन्म के अनन्तर ऊपर की दान्त पंक्ति यदि निषिद्ध समय में (सदशन) दान्त सहित हो तब भी अपना, माता पिता के विनाश का सूचक होता है।

दोलारोहणनिष्क्रमण मुहूर्त्त

जन्म समय से बत्तीस, बारह, सोलह, अठारह एवं दश दिनों में शुभग्रहों के वासरों में (सोम, बुध, गुरु, शुक्र) मृदु-लघु और ध्रुव संज्ञक (मृग्शिरा, रेवती, चित्रा, हस्त अश्विनी, पुष्य तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में नवजात शिशु को दोला (झूला) में आरूढ़ करना चाहिए।

दोलारोहण चक्र

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनें

५ नैरुज्य	५ मरण	५ कृशता	५ रोग	७ सौख्य

निष्क्रमण के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	१-२-३-५-६-८-१०-११-१२-१३-१५
वार	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अ॰रो॰पुन॰ पुष्य, हस्त, अनु॰ स्वा॰ मूल॰ श्र॰ ध॰
त्माज्य	मंगल, शनि, रिक्ता, अमा॰ विष्टि अशुभ योग

अन्नप्राशन मुहूर्त्त

बालक के नामकरण, निष्क्रमण, भूमि उपवेशन के बाद ६, ८, १०, १२वें मास में पुत्र को और ५, ७, ९, ११वें मास में कन्या को अन्नप्राशन करावें।।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त चक्र

मास पुत्र के लिए	६, ८, १०, १२
मास कन्या के लिए	५, ७, ९, ११
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि॰ रो॰ मृ॰ पुन॰ पु॰ हस्त, चि॰ स्वा॰ अनु॰ श्र॰ ध॰ श॰ तीनों उत्तरा, रेवती
लग्न	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११
त्याज्य	जन्म लग्न से व जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा १२, १, ८ लग्न। लग्न दशम में पापग्रह भद्रा व्यतिपात दोष।

कर्ण वेध मुहूर्त्त

समवर्ष, चैत्र, पौष, जन्ममास, देवशयन जन्म नक्षत्र व तिथि, क्षयतिथि व रिक्ता को छोड़कर जन्म से १२वें या १६वें दिन तथा ६, ७, ८ वें मास में विषम वर्षों में शुभवार (सोम, बुध, गुरु, शुक्र) अश्वि॰ मृ॰ पुन॰ पुष्य, हस्त, चि॰ अनु॰ श्र॰ ध॰ रे॰ नक्षत्रों में लग्न से अष्टम शुद्धसमय में वृष, तुला, धनु, मीन लग्न में तथा गुरु केन्द्र में स्थिति होने पर कर्ण वेध श्रेष्ठ समझें।

कर्ण वेध – मुहूर्त्त चक्र

वर्षादि	विषम वर्ष। ६, ७, ८ मास में जन्म से १२वें या १६वें दिन।।
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम, बुध, शुक्र, गुरु
नक्षत्र	अश्वि॰ मृ॰ पुन॰ पु॰ हस्त, चि॰ अनु॰ श्र॰ धनि॰ रे॰
लग्न	२, ७, ९, १२
त्याज्य	समवर्ष, देवशयन (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से का॰शु॰ एकादशी तक) चैत्र, पौष, जन्ममास, तिथि, नक्षत्र, क्षय तथा रिक्त। तिथि

चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार मुहूर्त्त विचार

अपने कुल की परम्परा के अनुसार इष्टदेव या तीर्थस्थान पर मुण्डन संस्कार किया जा सकता है विषम वर्ष, उत्तरायण २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अश्वि॰ मृ॰ पुन॰ पुष्य, हस्त, चि॰ स्वा॰ ज्ये॰ श्र॰ धनि॰ शत॰ रे॰ नक्षत्रों में करना श्रेष्ठ है। अष्टम भाव शुद्ध चाहिए। ज्येष्ठ एवं चैत्र मास त्याज्य हैं बालक की माता को ४ मास की गर्भ स्थिति होने पर ५ वर्ष से न्यून अवस्था के बालक का मुण्डन न करें।

चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार हेतु मुहूर्त्त चक्र

वर्ष	विषम। सूर्य उत्तरायण होने पर
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि॰ मृ॰ पुन, पुष्य, हस्त, चि॰ स्वा॰ ज्ये॰ श्र॰ धनि॰ शत॰ रे॰
त्याज्य	लग्न से अष्टग्रह, ज्येष्ट चैत्रमास, समवर्ष, दक्षिणायन।

कन्या के नाक बिंधवाने का विचार

शुक्लपक्ष, रिक्ता (४, ९, १४) अमा॰ रहित तिथि सोम, बुध, गुरु, शुक्र, प्रथम प्रहर अशुभ योग रहित अश्वि॰ मृ॰ पुन॰ पुष्य, हस्त, चि॰ अनु॰ श्र॰ धनि॰ रे॰ ३ उत्तरा, स्वाती॰ शत इन नक्षत्रों में कन्या का नाक बींधना शुभ है।

कन्या की नासिका छेदन-मुहूर्त्त चक्र

पक्ष	शुक्ल पक्ष
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम-बुध-गुरु-शुक्र
प्रहर	प्रथम
नक्षत्र	अश्वि॰, मृ॰ पुन॰ पुष्य, हस्त॰ चि॰ अनु॰ श्र॰ धनि॰ रे॰ उत्तरा ३, स्वाती, शत॰

अक्षरारम्भ करने का विचार

बालक को विद्यारम्भ से पूर्व अक्षर अंकादि ज्ञानार्थ अक्षरारम्भ का विचार होता है। सूर्य उत्तरायण हो, जन्म से ५, ७वें वर्ष में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथि शुभवार, अश्वि, आर्द्रा, पुन॰ पुष्य, ह॰ चि॰ स्वा॰ अनु॰ श्र॰ रे॰ इन नक्षत्रों में, चर लग्नों को त्याग कर अन्य स्थिर, द्विस्वभाव लग्नों में, गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुलदेवता का पूजन करके अक्षराम्भ करवाना चाहिए।

अक्षराम्भ के लिए मुहूर्त्त चक्र

अयन	उत्तरायण
वर्ष	५वां – ७वां
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ६, ८, १०, ११, १२
लग्न	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
नक्षत्र	अश्वि॰ आर्द्रा, पुन॰ पुष्य हस्त, चि॰ स्वा॰ अनु॰ श्र॰ रे॰

विद्यारम्भ विचार

अक्षराम्भ के पश्चात् विशेष ज्ञान को वृद्धिप्रद भाषास्थ विद्या (विशेषतः संस्कृत भाषास्थविद्या) का प्रारम्भ फाल्गुनमास छोड़कर उत्तरायण २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, रवि, बुध, गुरु, शुक्र वारों में, अश्वि॰ आश्ले॰ मृ॰ आर्द्रा, पुन॰ पु॰ हस्त, चि॰ स्वा॰ अनु॰ मूल, श्र॰ ध॰ श॰ तीनों पूर्वा, रेवती इन नक्षत्रों में श्रेष्ठ है। अंग्रेजी, फारसी, उर्दू के विद्यारम्भ के लिए, रवि, मंगल, शनिवार रिक्ता (४, ९, १४) तिथि ज्ये॰ आश्ले॰ मघा, ३ पूर्वा, भ॰ कृ॰ वि॰ आर्द्रा, उ॰षा॰ शत॰ इन नक्षत्रों में शुभ है।

विद्यारम्भ कराने के लिए मुहूर्त्त चक्र

अयन	उत्तरायण	
तिथि	२, ३, ५, ६, १०, ११, १२	
संस्कृत व हिन्दी विद्यारम्भ में त्याज्य	फाल्गुनमास, रिक्ता तिथि अशुभवार	
वार	रवि, बुध, गुरु, शुक्र	
नक्षत्र ग्राह्य	अश्वि॰ रो॰ मृ॰ आर्द्रा, पुन, पुष्य आ॰ हस्त॰ चि॰ स्वा॰ अनु॰ मू॰ श्र॰ ध॰ श॰ ३ पूर्वा रे॰	
अंग्रेज़ी फ़ारसी उर्दू आदि	वार	रवि, मंगल, शनि
	तिथि	४, ९, १४
	नक्षत्र	ज्ये॰ आश्ले॰ म॰ ३ पूर्वा भ॰कृ॰वि॰ आर्द्रा, उ॰षा॰ शत॰

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार के मुहूर्त्त का विचार

यज्ञोपवीतपरिधान (उपनयनसंस्कार) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों को करना चाहिए। बाकल के जन्म से या गर्भ से ब्राह्मण ८वें, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करें। इस काल के व्यतीत हो जाने पर ब्राह्मण १६वें क्षत्रिय २२वें वैश्य २४वें वर्ष तक उपनयन करवा सकते हैं बालक का चन्द्रबल तथा गुरुबल विचार करना आवश्यक है देवशयन से पूर्व तक उत्तरायण सूर्य में, रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवारों में शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में अश्वि॰ रो॰ मृ॰ आर्द्रा, पुन॰ पुष्य, आश्ले॰ तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त॰ चि॰ स्वा॰ अनु॰मू॰ श्र॰ध॰शत॰रे॰ इन नक्षत्रों के क्रूर तथा वेध रहित होने पर पूर्वाह्न में, अभिजित् मुहूर्त्त में यज्ञोपवीत संस्कार करावें।

चैत्र में मीन के सूर्य में, वृष या कर्क के पूर्ण चन्द्रमा के लग्न में रहने पर अत्यन्त शुभफलप्रद होता है। सामवेदियों को मंगलवार भी श्रेष्ठ है परन्तु मंगल का बल विचारना आवश्यक है। उपनयन संस्कार में दक्षिणायन नहीं होना चाहिए। देवशयन, गुरु, शुक्र का बालवृद्धत्व अपराह्न काल, ज्ये॰ शुक्ल द्वितीया, आषाढ़ शुक्ल १०, पोष शु॰ ११, माघ शु॰ १२ संक्रान्ति दिन, रोगबाण, सूर्य के ८, १७, २६ गतांश, लग्नेश और चन्द्र, गुरु शुक्र की ६, ८, १२ में स्थिति, १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ होते हैं इन सबका त्याग आवश्यक है।

उपनयन करने के लिए मुहूर्त्त चक्र

वर्ष	ब्राह्मण (८ या १६)	क्षत्रिय (११ या १२)	वैश्य (१२ या २४)
अयन	देवशयन से पूर्व उत्तरायण में		
वार	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र		
पक्षतिथि	शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ कृष्णपक्ष की २, ३, ५		
नक्षत्र	अश्वि॰ रो॰ मृग॰ आर्द्रा, पुन॰ पुष्य, आश्ले॰ तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ अनु॰ मू॰ श्र॰ ध, शत रेवती		
गुरु	५, १, ९ २, ७ श्रेष्ठ	१, ३, ६, १० पूज्य	४, ८, १२ निन्दित
अन्य ग्राह्य	पूर्वाह्न, अभिजित्मुहूर्त्त (सामवेदियों को भौमबल व मंगलवार भी)		
त्याज्य	गुरु शुक्र का बाल वृद्धास्त, दक्षिणायन, संक्रान्ति दिवस, रोग बाण तथा लग्नेश, चं॰ शु॰गु॰ की ६, ८, १२वें, पापग्रहों की १, ५, ८ वें स्थिति।		

ॐ श्री गणेशायन नमः

अष्टकूट दोष परिहार

ब्रह्मर्षिवसिष्ठ द्वारा विरचित "वसिष्ठसांहता" में अष्टदश कूटों का विचार किया गया है, इन्हीं सभी कूटों का पूर्णरूपेण विवरण परमादरणीय सद्गुरु डॉ॰ बिहारी लाल वसिष्ठ जी द्वारा सम्पादित 'श्री वैष्णवविजयपञ्चाङ्गम्' में उपलब्ध है वर्त्तमान् में प्रसिद्ध अष्ट कूटों के सन्दर्भ में प्रतिपादन करते हैं।

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैंत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः॥

(१) वर्णकूट (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणकूट (७) भकूट (८) नाड़ी॥ क्रमशः एकोत्तर गुणवृद्धि कारक होते हैं जैसे वर्ण का एक गुण, वश्य के दो, तारा के तीन योनि के चार, ग्रहमैत्री के पाँच, गणमैत्री के छः, भकूट के सात नाड़ी के आठ ज्ञात करें, कुल योग ३६ गुणों का बोधक है। सरलता के लिए वर्ण ज्ञान बोधक चक्र बताते हैं।

वर्णज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	कर्क वृश्चिक मीन	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ

मीनादि क्रम से ब्राह्मणादि चारों वर्ण सुनिश्चित हैं हीनवर्णा का विवाह उत्तम वर्ण के वर से नहीं होना चाहिए ऐसे ही उत्तम वर्णा का विवाह हीन वर्ण वर से नहीं होना चाहिए।

वर्णदोष परिहार

कन्या ↓	वर :- ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

कन्या के वर्ण से वर का वर्ण उत्तम हो या समान वर्ण हो तो १ गुणोपलब्धि समझें। वर से कन्या का वर्ण उत्तम हो तो ० शून्य गुण प्राप्त होता है। वर स्वयं उत्तम वर्ण में हो तो एक गुण, वर की राशि का स्वामी वर्णोत्तम हो तो भी एक गुण जानें।

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वेवांशनाथयोः।
गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रविवर्धनः॥ (अत्रि)
न वर्ग-वर्णो न गणो न योनिः द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा।
तारा विरोधे नव-पञ्चमे वा मैत्री यदा स्यात् शुभदो विवाहः॥ (वृ॰ज्यो॰सा॰)

(2) वश्य विचार

सिंह राशि को छोड़कर सभी राशियाँ मनुष्य राशि के वश में है। जल राशियाँ (४, १०, १२) न राशियों (३, ६, ९ पू॰ ११) का भक्ष्य हें। सिंह वनचर और वृश्चिक कीट दोनों भयङ्कर मानी जाती हैं। दोनों के (कन्या एवं बालक) वश्य समान हों तो २ गुण, एक वश्य, दूसरा शत्रु होने पर एक गुण एक वश्य दूसरा भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने से शून्य गुण प्राप्ति समझें।

वश्यदोष परिहार

राशीश मित्रता, राशीश एकता, नवांशोश मैत्री एवं एकता तथा योनि मैत्री होने से वश्यदोष परिहार शास्त्रकारों ने माना है।

(३) ताराकूट

(१) जन्म (२) सम्पद् (३) विपद (४) क्षेम (५) प्रत्यरि (६) साधक (७) वध (८) मैत्र (९) अतिमैत्र ये नव ताराएँ हैं। कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक, वर नक्षत्र से कन्या नक्षत्र पर्यन्त गणना करके भिन्न-भिन्न दोनों को ९ का भाग दें शेष ३, ५, ७ बचें तो अशुभ, शेष शुभ समझें।

दोनों की तारा शुभ हो तो गुण ३

एक शुभ, दूसरे की अशुभ हो तो $१^{१}/_{२}$ गुण

दोनों की अशुभ ताराएँ हों तो गुण शून्य समझें।

तारा दोष परिहार

राशीशमैत्री एवं एकता, नवांशेश मैत्री एवं एकता होने से परिहार समझें।

(४) योनिकूट

शास्त्रकारों ने अश्विनी आदि २८ नक्षत्रों की अश्व, गज, मेष सर्पादि योनियाँ स्वीकार की हैं। कन्या एवं वर की योनियों की परस्पर शत्रुता सर्वदा त्याज्य है, जैसे शेर एवं हाथी, गाय और चीता, सर्प तथा न्यौला, अश्व-महिष, श्वान-मृग्, वानर-मेष, चूहा एवं बिल्ली हैं।

कन्या एवं वर की एक ही योनि हो तो अत्यन्त शुभ, योनियाँ परस्पर परममित्र हों तो ४ गुण, मित्र हों तो ३ गुण समान एक जैसी प्रकृति की हों तो २ गुण, सामान्य वैर हो तो १ गुण, परम शत्रुता हो तो शून्य गुण प्राप्ति समझें।

योनि दोष परिहार

राशीश मैत्री, राशीश एकता, नवांशेश मैत्री, नवांशेश एकता परिहार कारक है।

(५) राशीशमैत्री कूट

वर कन्या की राशियों में स्वामियों का एकत्व अथवा मित्रता भावादि इस कूट के मुख्य स्तम्भ हैं। (१) यदि दोनों की राशियों का एक ही स्वामी हो या राशियों के स्वामी आपस में मित्र+मित्र हों तो मिलान सर्वोत्तम समझें, (२) एक दूसरे का मित्र परन्तु दूसरा सम हो उत्तम मिलान, सम+सम हो तो मिलान सामान्य, मित्र+शत्रु तो नेष्ट, सम-शत्रु हो तो अति नेष्ठ, एवं शत्रु+शत्रु हों तो अत्यन्त नेष्ट समझें।

शत्रुमित्रंच विज्ञेयं दम्पत्योः कलहप्रदम्।
अन्योन्यसमशत्रुत्वं दम्पत्योः विरहप्रदम्॥ (वसिष्ठ)

राशीश एकत्व = ५
राशीश मित्र+मित्र = ५
राशीश मित्र+सम = ४
राशीश सम+सम = ३
राशीश मित्र+शत्रु = १
राशीश शत्रु+शत्रु = ०

राशीशमैत्री कूट परिहार

नवांशेशमैत्री एवं नवांशेश एकता, नक्षत्र एक परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों तो परिहार हो जाता है।

(३) गणकूट

अश्विनी, मृग्शिरा, पुनर्वसु, पुष्प, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों का देवगण, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा नक्षत्रों का मनुष्यगण, कृत्तिका, आश्लेषा, मधा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूला, घनिष्ठा और शतभिषा का राक्षसगण होता है।

वर कन्या के नक्षत्रों के गण यदि देव+देव = ७ गुण, मिलान सर्वोत्तम

मनुष्य-मनुष्य	–	६ गुण	–	मिलान उत्तम
मनुष्य-देव	–	६ गुण	–	मिलान उत्तम
राक्षस-राक्षस	–	६ गुण	–	मिलान उत्तम
देव-मनुष्य	–	५ गुण	–	मिलान शुभ
देव-राक्षस	–	१ गुण	–	नेष्ट मिलान
राक्षस-देव	–	० गुण	–	नेष्ट मिलान
मनुष्य-राक्षस	–	० गुण	–	नेष्ट मिलान
राक्षस-मनुष्य	–	० गुण	–	नेष्ट मिलान

गणदोष परिहार

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः।
गणादिदौष्टयेऽयुद्वाहः पुत्र-पौत्रविवर्धनः॥ *(अत्रि)*
द्विर्द्वादशे वा नवपञ्चमे वा षड्काष्टके राक्षसयोषितो वा।
एकाधिपत्ये भवनेशमैत्र्ये शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम्॥ *(वसिष्ठ)*

राशीश मैत्री, राशीश एकता, नवांशेश मित्रता एवं नवांशेश एकाधिपत्य परिहार कारक हैं।

कृत्तिका रोहिणी स्वातिर्मघाचोत्तराफाल्गुनी।
पूर्वाषाढ़ोत्तराषाढ़े न क्वचिद् गणदोष दे॥ *(वृ०दै०र०मुहूर्त्तकल्पद्रुमः)*
गणदोषोयोनिदोषो वर्ण दोषः षडष्टकम्।
चत्वारि नैवदुष्यन्ति राशि मैत्री यदाभवेत्॥ *(वृ०ज्यो०सा०)*

कृत्तिका, रोहिणी, स्वाती, मघा, उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा ये सभी नक्षत्र गणदोष परिहार करने की क्षमता रखते हैं।

गणदोष, योनि दोष, वर्ण, षडाष्टकदोष राशि मित्रता होने पर दूषित नहीं करते।

७ भकूट

भकूट का दूसरा नामान्तर राशिकूट भी है। यह तीन प्रकार का है– (१) द्विर्दादशादोष (२) नवमपञ्चमदोष (३) षडष्टकदोष – कन्या की राशि से वर की राशि दूसरी व बारहवीं (२-१२) अथवा वर की राशि से कन्या की राशि दूसरी व बारहवीं (२-१२) हो तो द्विर्द्वादश दोष होता है, इसी प्रकार दोनों (वर-कन्या) की राशियाँ नौवीं व पाँचवीं हो तो नवम-पञ्चम, तथा छठी व आठवीं हो तो षडष्टक दोष होता है। राशिकूट शुद्धि होने पर ७ गुण माने जाते हैं। षडाष्टक परिहार– १, ८, २-७, ३-१०, ४-९, ५-१२ तथा ६-११ – इन राशियों का षडाष्टक शुभ है १-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुभाव होने के कारण त्याज्य कहा है।

नवमपञ्चम परिहार :–

वरस्यपञ्चमेकन्या, कन्याया नवमेवरः
एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्र सुखावहम्॥ *(वृ०ज्यो०स्प०)*

वर से कन्या की राशि पञ्चम और कन्या की राशि से नवम वर की राशि हो तो परिहार होता है ऐसी जोड़ी पुत्रपौत्र तक सुख देखती है।

शुभ नवपञ्चम :-

मेषे च सिंहे वृषभे च कन्ये युग्मे घटे वृश्चिक कर्कटेच।
सिंहेच चापे मकरे युवल्या मित्र त्रिकोणं बहुपुत्रलाभः॥ *(चण्डेश्वर)*

१-५, २-६, ३-११, ८-४, ५-९, १०-६ ये सभी शुभ नवपञ्चम हैं ग्राह्य हैं।

अशुभववपञ्चम :-

मेषे च चापे मकरे वृषे च कुम्भे च युग्मे झषकर्कटे च।
कुम्भे तुलायां झषकीटयोश्च शत्रु त्रिकोणं बहुदुःखहानि॥ *(चण्डेश्वर)*

१-९, १०-२, ११-३, १२-४, ११-७, १२-४ ये सभी अशुभ नवपञ्चम है दुःखप्रद होते हैं।

अशुभद्विर्द्वादश दोष :-

कन्याहरौकीट तुलाधरौ वा चापेमृगे वा झषगे च कुम्भे।
कुलीर युग्मे वृषभे च मेषे द्विर्द्वादशे वै निधनं करोति॥

शुभद्विर्द्वादश :-

चापे फणीन्द्रे घटभे मृगे च अजे झषे सिंह कुलीरके च।
कन्यातुलायां वृषभे च युग्मे द्विर्द्वादशेचाथकरोतिवृद्धिम्॥

एकाधिपत्य, राशीश मैत्री तथा नवांशेश मैत्री पूर्णतः परिहार कारक मानी गई है। द्विर्द्वादशा में दारिद्रय, षडष्टक में मृत्यु, नवपञ्चम में अपत्य हानि कहा है।

षडाष्टके गोमिथुन प्रदेयं।
कास्यं सरोप्यं नवपञ्चमे च॥
नाड्यां सुवर्णान्नमथोसधेनुं।
द्विर्द्वादशे ब्राह्मनतर्पणं च॥

८. नाड़ी कूट

अष्टकूटों में शिरोमणि कूट नाड़ी कूट है।
नाड़ीकूटं तु संग्राह्य कूटानां हि शिरोमणिः।
ब्रह्माण कन्यका कण्ठे सूत्रत्वेन विनिर्मितम्॥
"एक नाड़ीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योःमरणं ध्रुवम्।" *(मुहूर्त्तप्रकाशे)*

वर कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ सूचक है मृत्युप्रद है। सुविधा के लिए त्रिनाड़ी चक्र को समझें। अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों को तीन पंक्तियों (नाड़ियों) में विभाजित किया गया है– आदि, मध्य और अन्त्य।

त्रिनाड़ीचक्रम्

आदि	अश्वि	आर्द्रा	पुन.	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत.	पू.भा.
मध्य	भरणी	मृग्	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु	पू.षा.	धनि.	उ.भा.
अन्त्य	कृति	रोहिणी	आश्ले.	मघा	स्वाती	विशा.	उ.षा.	श्रव.	रेवती

कन्या एवं वर का जन्म नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े तो विवाह अशुभ सूचक होता है, दोनों की आद्य नाड़ी हो तो विवाहोपरान्त विरहा की स्थिति हो, मध्यनाड़ी हो तो दोनों की हानि तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य योग अथवा घोर कष्ट होता है। भिन्न नाड़ी में आठ गुणों की प्राप्ति तथा समान नाड़ी होने पर शून्य गुण प्राप्त होता है।

नाड़ी दोष परिहार

नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजे॥
एवमपि ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणस्तथा।
वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा॥ *(शीघ्रबोधे)*

नाड़ीयोनौ द्विजस्योक्ते गणवर्णोंच बाहुजे।
वैश्यानां राशिकूटं स्याद्योनिवर्गस्तु पादजे॥ *(मुहूर्त्तकल्पद्रुमे)*

नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्ण दोष क्षत्रियों के लिए, गणदोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विचारणीय है।

विशेष :- अब चूकि वर्ण व्यवस्था भङ्ग होती जा रही है सभी जातियाँ अपने-अपने कर्मों से विमुख होती जा रही हैं अतः ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए भी नाड़ी दोष उपेक्षनीय नहीं है। सर्वश्रेष्ठ मिलान हेतु नाड़ी दोष परिहार देखना परमावश्यक है।

यदि वर कन्या दोनों की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों यदि दोनों का नक्षत्र एक हो राशि भिन्न-भिन्न हो, तथा नक्षत्र चरण भिन्न-भिन्न (पाद भेद) हो ऐसी स्थिति में नाड़ी दोष नहीं होता– शुभफलप्रद होता है।

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्।
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
एवं भांश व्यधोयत्र जायते वर कन्ययोः
तत्र मृत्युर्नसंदेहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥

स्वरोदये शास्त्रानुसार प्रथम पाद का चतुर्थपाद से एवं चतुर्थपाद का प्रथमपाद से वेध, द्वितीय का तृतीय से तथा तृतीय का द्वितीय से वर कन्या के नक्षत्रों का वेध समझें। शेष चरणों का परस्पर स्वल्प दोष होने से उपेक्ष्य जानें।

एक राश्यादि योगे तु नाड़ी दोषो न विद्यते।
अन्यत्र तु विचार्यैषा स्वभावाच्छोभनाश्च ते॥
सुहृदेकाधिपयोगे ताराबलेवश्य राशौ वा।
अपिनाड्यादि विरोधे विवाहो भवति हितार्थाय॥ (ज्यो॰त॰ सुधार्णवे)

श्रीपति निबंध एवं ज्योतिषत्व सुधार्णव में एकाधिपत्य एवं राशि मैत्री नाड़ी प्रभृति समस्त कूटों में पाये जाने वाले दोषों में परिहारक माने गए हैं। इसी प्रकार एक राशि भिन्न नक्षत्र एवं एक नक्षत्र में भी राशि भेद तथा चरण भेद होने से नाड़ी दोष निवृत्त हो जाता है।

एक राशिरुभयोर्भिन्नभं चेदभिन्न भमुतान्य राशिता।
पुंस्त्रियोरतिरतीव नो यदा रोहिणी शुचि भनाड़ी कोडुवत्॥ (ज्योतिर्विदाभरणे)
एक नक्षत्र जातानां नाड़ी वेधो न विद्यते।
भिन्नांशश्चैकराशीनां दम्पत्योः प्रीतिहेतवे॥
एकराशौ पृथग्धिष्ण्ये पृथग् राशौ तथैकभे।
गणनाड़ी नृदूरं च ग्रहवैरं न चिन्तयेत्॥ (वृहस्पतिः)
दम्पत्योरेक राशिश्चेद् भिन्नमृक्षं यदा तदा।
गणदोषोऽप्येकनाडायां विवाहः शुभदः स्मृतः॥ (ज्यो॰ निबंध)

रत्नकोशकार तो एक नक्षत्र गत दोनों को एक चरण होने पर भी मिलान शुभ मानते हैं।

"केचिन्नेछन्ति चैकांशे केचिदिच्छन्तिमेलकम्॥"

सप्तविंशति नक्षत्रों में कुछ नक्षत्र है जो नाड़ी दोष निरस्त करने की क्षमतारखते हैं यदि इन नक्षत्रों में वर कन्या का जन्म हो तो भी नाड़ी दोष निरस्त समझें।

वैश्वानरद्रुहिणयोरदितीशयोश्चतद्वत्करार्यमभयोर्द्वयधिपानिलेन्दोः।
छागैकपादवरुणयोः श्रुतिवैश्वयोश्चस्यादभिन्नभवनेनहिनाड़ीदोषः॥ (रत्नकोषे)

कृत्तिकारोहिणी नक्षत्रों में, पुनर्वसु आर्द्रा में, उत्तराफाल्गुनी हस्त में, स्वाती विशाखा में, शतभिषापूर्वाभाद्रपदा में, उत्तराषाढ़ा श्रवण में, इन नक्षत्रों में जन्म होने पर चाहे वे एक पाद हों या भिन्नपाद में हों, चाहे अभिन्न राशि ही क्यों न हो नाड़ी दोष नहीं हो सकता।

प्रीतिवित्तसुखदः करग्रहेस्त्वेकराशिषु च भिन्नभं यदि।
वारुणाजपादभं भवेद्यदा नाड़ी दोषगणजो न विद्यते॥
नाड़ीगणो नैकराशौचिन्त्यो भिन्नभयोर्यथा।
कृत्तिकाकभयोर्द्वींशस्वात्योः पूभाजलेशयोः॥

आचार्यलल्ल ने भी रत्नकोषकार की भान्ति कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, स्वाती, पूर्वाभाद्रपदा, शतभिषा इन नक्षत्रों को नाड़ी दोष का पूर्णरूपेण परिहार स्वीकार किया है।

विवाह वृन्दान का प्रमाण ज्योतिर्निबंध में इस प्रकार से उपलब्ध है।

नक्षत्रमेकं यदि भिन्नराश्योरभिन्नराश्योर्यदि भिन्नमृक्षम्।
प्रीतिस्तदानीं निविडानृनार्योश्चेत् कृत्तिकारोहिणीवन्न नाड़ी॥

उक्त नक्षत्रों में एक नक्षत्र यदि वर या कन्या का आ जाए जिसका परिहार कहा गया है, दूसरे का ऐसा नक्षत्र आ जाए जिसका परिहार नहीं, ऐसी स्थिति में "निमित्तायाये नैमित्तिकस्याप्यपायः" इस परिभाषा से एक का परिहार होने पर दूसरे का स्वयं परिहार हो जाता है।

इसके अतिरिक्त 'वृहद्दैवज्ञरञ्जनम्' में ऐसाप्रमाण उपलब्ध है जिसमें और भी नक्षत्रों का समावेश किया गया है।

अजैकपान्मित्रवसुद्विदैव प्रभंजनाग्न्यर्क भुजंगभानि।
मुकुन्दजीवान्तक भानि नूनं शुभानि योषिन्नरजन्मभैक्ये॥ (वृ०दै०र०)

पूर्वाभाद्रपदा, अनुराधा, धनिष्ठा, विशाखा, स्वाती, कृत्तिका, हस्त, आश्लेषा, श्रवण, पुष्य भरणी, इन नक्षत्रों में कोई भी दो नक्षत्र वर कन्या के आ जाएं तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है, वर कन्या के लिए शुभ फलप्रद हो जाता है। "एक राशि में दो नक्षत्र हों और नाड़ी भेद भी हो जाए तो विवाह में वर्जित जानना।

एकराशौद्विनक्षत्रेकृत्तिकायाम्यतारके।
धनिष्ठा शततारे च पुष्याश्लेषौ च वर्जयेत्॥
शुक्रे जीवे तथा सौम्य एक राशीश्वरेयदि।
नाड़ीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः॥ (विवाह कोतुहले)

शुक्र जीव तथा बुध यदि राशीश्वर हो जाए तो भी नाड़ी दोष परिहार हो जाता है।

दोषानुपत्तये नाड़या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् काञ्चनादिना॥
हिरण्यमयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके।
गावोऽन्नं वसनं हेमं सर्वदोषापहारकम्॥ (गुरुः)

नाड़ी दोष हो जाने पर अत्यावश्यक में महामृत्युञ्जय जप श्रेष्ठ सात्विक ब्राह्मणें द्वारा करवाकर गो, अन्न, वस्त्र, सोनादि दान करना चाहिए। **शुभम्भूभात।**

विवाह संस्कार

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्न वशेन तस्याः
तस्माद्विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः

मुहूर्तचिन्तामणि(रामदवैज्ञः)

स्त्री को प्रधान रूप से धर्म-अर्थ-काम की प्रदात्री मानकर तथा सन्तान उत्पत्ति की मुख्य स्त्रोत समझकर विवाह समय का विचार विशेष रूप से करना परमावश्यक है।

जीवन की पूर्ण रूपेण सिद्धि के लिए चारों आश्रम आवश्यक हैं– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्त और सन्यास!

ब्रह्मचर्याश्रम– जीवन की एक विशेष अवस्था है जिसमें अपने मस्तिष्क को उन्नत करके बुद्धिजन्य ज्ञान को प्राप्त करना होता है, इस प्रकार के समस्त ज्ञान हेतु शारीरिक उन्नति होना भी आवश्यक है।

गृहस्थाश्रम– चारों आश्रमों में मुख्य गृहस्थाश्रम है और गृहस्थाश्रम का मुख्य आधार है 'विवाह संस्कार'। विवाह धर्मार्थ काममोक्ष रूपी चतुर्वर्ग फलप्राप्ति करवाने में एकमात्र सहायक है। यह एक ऐसी अवस्था है कि जस समय विषयों का राग विचार पूर्वक त्याग न कर सके उस राग का यथार्थ ज्ञान करने के लिए नियम पूर्वक (जिस काम को जिसके लिए करना चाहिए) अर्थ और काम का न्यायपूर्वक संचय करना और शेष आश्रमों की द्राव्यादि से सेवा करनी होती है।

वानप्रस्थाश्रम– जीवन की वह अवस्था है कि जिस समय विषयों में अरूचि होवे फिर तपश्चर्यापूर्वक मन इन्द्रिय आदि का संयम करना और पारिवारिक जीवन का त्याग करना होता है। समस्त संसार से समभाव रखना ही सही वानप्रस्थ है।

सन्यासाश्रम– अवस्था भेद मिटाकर सभी प्रकार से निडर हो जाना अर्थात् अपने आप में स्थायी रूप से सत्य का अनुभव करना ही सन्यास आश्रम है। जीवन की पूर्णता सिद्ध करने के लिए सन्यास अत्यन्त आवश्यक है।

विवाह संस्कार के उपरान्त ही मनुष्य सन्तानोत्पत्ति के साथ देवर्षिपितृ ऋणों से मुक्ति प्राप्त करता है। धर्मशास्त्रोक्त आठ प्रकार के विवाहों में 'ब्रह्म विवाह विधि' श्रेष्ठ है। इस विधि में मुख्य रूप से वर कन्या की जाति गोत्रादि भिन्नता, मेलापक (नक्षत्र व मंगली आदि का मिलान) विचार किया जाता है। परन्तु आज अधिकांश लोगों द्वारा गान्धर्व विवाह विधि को (प्रेम विवाह) अपनाया जा रहा है और श्रेष्ठ भी समझा जा रहा है।

इससे पूर्व अष्टकूटों का विचार कर चुके हैं अब कुण्डली मिलान में मङ्गल के सन्दर्भ में विचार प्रस्तुत करते हैं कुण्डली मिलान में सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि कुण्डली मङ्गली तो नहीं है यदि दोनों कुण्डलियाँ मङ्गली हों तो विवाह शुभ होता है। कुण्डली में मङ्गल यदि १, ४, ७, ८ १२वें भाव में हो तो कुण्डली मङ्गली मानी जाती है, विशेष परिस्थितियों में मङ्गली परिहार के द्वारा ही विवाह किया जा सकता है जैसे कि एक की कुण्डली में १, ४, ७, ८ १२वें से जिस भाव में मङ्गल पड़ा हो तो दूसरे की कुण्डली में उसी भाव में शनि या अन्यपापग्रह विद्यमान हो तो मङ्गली दोष परिहार हो जाता है।

भौमेन सदृशो भौभः पापो वा तादृशो भवेत्।
विवाहः शुभदो प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः॥

चन्द्र कुण्डली में भी इसी प्रकार विचार करके तभी विवाह करना चाहिए। विशेषतः मङ्गल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या विनाशकृत॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मङ्गल से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते॥

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोष विनाशकृत्॥

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः॥

केन्द्रेकोणे शुभाढये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्त था॥

न मंगली चन्द्रभृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः न मङ्गली मंगल राहु योगे॥

तनु धन सुख मादनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥
राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

इन्हीं परिहार वाक्यों से भौम (कुज) दोष निरस्त होता है फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी लोग कुण्डली मिलान करें तो श्रेयस्कर होगा। यहाँ यह भी स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक-ठीक बनी होनी चाहिए। कन्या की कुण्डली में यदि कुयोगों द्वार वैधव्य योग हो तो शालिग्राम से, पिप्पल वृक्ष से, अर्कवृक्ष से वा कुम्भसे यथाविधि विवाह करवाकर स्वर्णदान, गोदान, महामृत्युञ्जयादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य पुत्र तथा धनधान्यादि से युक्त होती है।

जन्मोत्थं च विलोक्य वालविधवायोगं विधायव्रतम्।
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वारहः॥
सल्लग्नेऽच्युतमूर्त्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहंस्फुटम्।
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः॥

विवाह से पूर्व कन्या का नाम परिवर्तन

यदि कन्या एवं वर की जन्म कुण्डली न हो और दोनों का प्रसिद्ध नाम परस्पर मिलान में शुभ न हो तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं! कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के अनुसार यहाँ दोषांक का अभाव हो उसी आद्यक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्॥

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्मनाम, कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम लेना ऐसी विपरीत कदापि न करें। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना शास्त्रोक है और आवश्यक भी। यथा-

विवाहेसर्वमांगल्येयात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशेःप्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्॥
कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते।
सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते॥
मन्त्रेपुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते॥

नाम राशि का विचार

देशेग्रामेगृहेयुद्धेसेवायां व्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्॥
काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाम भात् चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा॥

वर वरण मुहूर्त्त

विवाह संस्कार से पूर्व पञ्चाङ्ग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में शुभतिथि वार कृत्तिका, रोहिणी, पू॰ ३ उ॰ ३ नक्षत्रों में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल पुरोहित या कन्या का भ्राता वर के घर आकर पूर्वोत्तर या पूर्वा पर दिशा में बैठे कुंकुम या केसर से वर को तिलक करें, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को देकर वर का सत्कार करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त

पञ्चाङ्ग शुद्धि देखकर कुयोग रहित दिन में कृ॰ पूर्वा॰ ३ स्वा॰ अनु॰ उ॰षा॰श्र॰ध॰ तथा विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभसमय में वस्त्रालङ्कार फल पुष्पों सहित कन्या वरण करें।

विवाह निश्चय के कुछ नियम

वधु वर की सगोत्र और माता की सात पीढ़ी में से न हो। दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाईयों से न करें। दो सगी बहनों का दो सगे भाईयों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करें। लड़की के विवाह के पश्चात् लड़के का विवाह हो सकता है पृथक् माता (सौतेली) से हुए भाई बहिनों का एक संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई बहिनों का एक ही मण्डप में विवाह करने में हानि नहीं। इसी प्रकार विवाह के पश्चात् मुण्डन, यज्ञोपवीत ६ मास तक न करें, संवत्सर भेद से मङ्गल कार्य हो सकते हैं। मङ्गल कार्य के मध्य पितृ कर्म (श्रद्धादि) न करें। वाग्दान के अनन्तर वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद अथवा सूतक निवृत्त होने पर शान्ति करके विवाह करने में हानि नहीं। नान्दीमुख श्राद्ध हो जाने के पश्चात् यदि किसी की मृत्यु हो जाए तो कन्या वर के माता पिता को अशौच नहीं लगता निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए।

विवाह में त्रिबल शुद्धि

बल	गुरु	चन्द्र	सूर्य
श्रेष्ठ	२, ५, ७, ९, ११	१, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११	३, ६, १०, ११
पूज्य	१, ३, ६, १०	१ २	१, २, ५, ७, ९
नेष्ट	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वरस्य भास्कर बलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत्॥

यहाँ वर का सूर्यबल, कन्या का गुरु बल तथा दोनों का चन्द्रबल देखना चाहिए।

विशेष :- गुरु व सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र, स्वराशि, स्वनवांश, वर्गोत्तम नवांश में होने पर ४, ८, १२वें होनें पर भी शुभ होते हैं।

स्वोच्चे स्वमैत्रे वा स्वांश वर्गोत्तमेगुरौ॥
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥

(रामदैवज्ञ)

यदि गुरु नीच या शत्रु राशि का हो तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होता है अतः नीच या शत्रु राशिस्थ गुरु कन्या की राशि से २, ५, ७, ९, ११वें होने पर भी अशुभ माना गया है यह पूजा करने पर ही श्रेयस्कर होता है। ऐसे ही सूर्य ४, ८, १२वें होने पर परिहार वाक्य–

"स्वोच्चे स्वमित्रसदने स्वगृहे स्ववर्गे।
स्वांशे ततश्च निधन व्ययतुर्यगोऽपि॥
श्रेयस्तनोति रिपुनीचगलोऽप्यनिष्टम्।
तुल्यं फलं निगदितं रवि जीवयोश्च॥

(दैवज्ञकल्पद्रुम)

सूर्य यदि तुला राशि वाले वर के लिए २, ५, ९वें हो तो भी शुभ फलप्रद होता है उसकी पूजा की आवश्यकता नहीं होती।

"धर्मधीधनगतोदिवाकरस्तौलि राशि जनितस्य शोभनः॥"

अन्य राशि वालों के लिए २, ५, ९वां सूर्य १३ अंश बीत जाने पर शुभ माना जाता है पूज्य नहीं होता।

"गर्ग्याङ्गिरो वत्सवसिष्ठगौत–।
मपराशराद्या मुनयो वदन्ति॥
द्वितीय पंचाङ्गतो दिवाकर–
स्त्रयोदशा हात्परतः शुभावहः॥"

विवाह मुहूर्त्त में दश दोषों का विचार

१. लत्तादोष चक्रम् :-

ग्रहाः	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वि.न.	१ २	२ २	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धननाशः	भयम्	मृत्यु	भयम्	बंधुनाश	कार्यहानिः	कुलक्षय	मरणम्

उदाहरण– जैसे सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लत्ता दोष वाला विवाह नक्षत्र होगा इसी भान्ति शेष ग्रहों की लत्ता दोष भी जानें।

२. पात दोष ज्ञान चक्रम् :-

रो	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे	विवाह नक्षत्राणि
आर्द्रा	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	सूर्याधिष्ठित
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	नक्षत्रानि
चि	म	ह	उभा	स्वा	ह	पूषा	मू	ऽनु	पूफा	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात दोष से दूषित हो जाता है, इन दूषित नक्षत्रों में विवाह नहीं करना चाहिए।

३. युति दोष :- जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उसी ग्रह की युति का दोष समझें, चन्द्रमा उच्च स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता। शुक्रकी युति विशेष रूप से वर्जित है, सू, मं, श, रा, के इत्यादि की युति मृत्यु, दारिद्रय एवं भयप्रद मानी गई है।

४. वेध दोष चक्रम :-

रो	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे	वि.न.
अभि	उषा	श्र	रे	उभा	श	भ	पुन	मृ	ह	उफा	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर कोई भी ग्रह हो वेध दोष होता है यह सर्वत्र निन्दित है इसका सर्वदा त्याग करना हितकारी है।

५. जामित्र दोष चक्रम :-

रो	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे	वि.न.
अनु	ज्ये	ध	पूभा	उभा	अ	कृ	मृ	पुन	उफा	ह	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है १४वें नक्षत्र में पापीग्रह का जामित्र दोष वर्जित है।

६. वाणज्ञानाय सुलभ चक्रम् :-

वाण नाम	अर्कस्य राशि प्रति गतांशाः	५ कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय परत्वेन वर्ज्या
रोग	०८/१७/२६	व्रतबंधे	रवौ	रात्रौत्याज्यम्
अग्नि	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४/१३/२२	नृपसेवा	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चारे	६/१५/२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

७. एकार्गलदोष :- व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रहदोष :- सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९. क्रान्तिसाम्य दोष चक्रम :-

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	म	ध	वृश्चिक	मी	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चंद्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रान्ति साम्य दोष आ जाता है जैसे मिथुन के सूर्य और धनु के चन्द्रमा में या धनु के सूर्य और मिथुन के चन्द्रमा में। यह दोष सर्वत्र वर्जित है विशेषतः इसकी सूक्ष्म क्रान्ति ही वर्जित है इसका निर्णय महायातगणित से किया जा सकता है।

१०. दग्धातिथिदोष :-

धनु	वृष	कर्क	कन्या	सिंह	मकर	सूर्यः
मीन	कुम्भ	मेष	मिथुन	वृश्चिक	तुला	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त सङ्क्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियाँ विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजङ्गं क्रान्तिसाम्यं च वाणवेधं तथैवच।
लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तामालवके (उज्जैनप्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र) बांगर जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। उपग्रहर्क्ष कुरुवाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त बलखबुखारा) कलिंङ्ग वंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पाततं भम्।। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शल्वे (उज्जैन प्रान्त) च लत्तितं भम्। त्यजेत्तु विदभं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं पापा	० ०	शुक्र	० ०	० ०	चं शु. लग्नेश	सर्वे	चं मं शुभा. लग्नेश	० ०	मं	० ०	श	त्याज्या ग्रहाः
चंद्रक्रूर	कुलिकं क्रांति साम्यं च				चं	मं	चंद्रभौम		विद्भभं च गौधूलौ त्याज्याः			

युति परिहार :-

स्वोच्चगे वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥

दोषापवाद ज्योतिर्निबंधे :-

दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे।
तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम् :-

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थे सितौ वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥
मुहूर्त्त लग्न षड्वर्ग कुनवांश ग्रहोद्भवाः
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥
लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेका दशालये।
सर्वग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत्।
बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्।
द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्त्रं लक्षमंगिराः॥

स्मरण रहे पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना।

विवाह काल निर्णयः

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता इसको त्रिज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम है फिर भी आवश्यश्कता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्त्तिक में विवाह हो सकते हैं।

जन्म नक्षत्र में अन्न प्राशन, यज्ञोपवीत धारण, मुण्डन (चूड़ाकरण) राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों को शुभ माना गया है परन्तु सीमन्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्मनक्षत्र अनिष्टफलप्रद होता है :-

बालान्नभुक्तौ व्रतबंधनेऽपि राज्याभिषेके रवलुजन्मधिष्ण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु वसिष्ठः॥

जन्ममास एवं जन्म नक्षत्र में बड़े लड़के या लड़की का विवाह करने का निषेध माना गया है।

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा
आद्यगर्भसुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥

परन्तु छोटे लड़के या लड़की का विवाह जन्ममास में हो सकता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्तः

विवाह संस्कार हो जाने के पश्चात् पहली बार वधु का पतिगृह में प्रवेश वधु प्रवेश कहलाता है विवाह के १६ दिन के भीतर बिना तिथि मुहूर्त्तादि का विचार किए भी स्थिर लग्न में वधु प्रवेश हो सकता है। एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त स्थिर लग्न में तीसरे, ५वें वर्ष में भी शुभ है। वधु प्रवेश में रे. अ. रोहि. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. वृ. शु. श. इन वारों में चतुर्थ अष्टमस्थान शुद्ध हो, १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में ५/८/११ लग्नों में शुभ होता है। व्यतिपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति अमा. संक्रान्ति, रिक्ता तिथियों में वधु प्रवेश वर्जित है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त चक्र

दिन	१६ दिन तक अथवा ७, ५, ९वें दिन
मास वर्ष	विषम मास, विषम वर्ष
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
नक्षत्र	रे. अ. रो. मृ. श्र. ध. हस्त. चि. स्वा. म. मूल. पुष्य, अनु. तीनों उत्तरा. आभि.
वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र
लग्न	२, ५, ८, ११ लग्न ४, ८ भाव शुद्ध हो
त्याज्य	व्यतीपात, क्षयतिथि, रिक्ता, उमा. ग्रहण. वैधृति. संक्रान्ति दिन

वधु प्रवेशो न दिवा प्रशस्तः
राजप्रवेशो न निशिप्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः
सत् कीर्त्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

द्विरागमन मुहूर्त्त– वधुप्रवेशोपरान्त द्वितीयवार पिता के घर (प्योके) से पतिगृह में प्रवेश द्विरागमन कहलाता है, १, ३, ५ विषम वर्षों में, १-८-११ राशि के सूर्य में गुरु की शुद्धि विचार कर शुभवार १, २, ३, ६, ७, १२ लग्नों में, ह. अ. रे. तीनों उत्तरा अभिजित्, रो. मृ. पुन. पु. श्र. ध. श. मू. चि. अनु. नक्षत्रों में शुभ कहा है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ होता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त चक्रम्

वर्ष	विषम (५ वर्ष तक)
मास	१, ८, ११वीं राशि के सूर्य में, सूर्य गुरु की शुद्धि
तिथि वार	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १५ सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र
लग्न	१, २, ३, ६, ७, १२
नक्षत्र	ह. चि. अ. रे. रो. स्वा. पुन. पुष्य श्र. ध. श. मृ. मू. अनु. ३ उत्तरा
त्याज्य	सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र (रेवती से मृग्शिरा तक चन्द्र के रहने पर शुक्र शुभ हो जाता है) सामान्य अवस्था में त्याज्य

विशेष :-

द्विरागमं षोडषवासरान्त एकादशाहेसमवासरेषु।
न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वार शुद्धयादि विचारनीयम्॥
रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः॥

यात्रा मुहूर्त्त का विचार

यात्रा करने में चन्द्रवास, दिक्शूल, योगिनी चन्द्रबल ये चार मुख्य बातें विचारणीय है। यात्रा में ह. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. सर्वश्रेष्ठ हैं। अत्यावश्यक में भ. कृ. आ. आश्ले, मघा. चि. स्वा. वि. ज्ये. की पहली क्रमशः ७-२१-१०-१४-११-४०-१४-१४-१४ घटियां यात्रा में त्याज्य हैं। रो. तीनों उत्तरा. पूर्वा ३ मूल नक्षत्र यात्रा में मध्यम कहे हैं। कृष्णपक्ष प्रतिपदा, शुक्ल द्वितीया यात्रा में शुभ हैं। जन्म लग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न व अष्टमनवांश में, कुभ लग्न अथवा कुम्भ के नवांश में यात्रा सदैव वर्जित है।

यात्रा में चन्द्रवास

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरेच याम्ये।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशिचोत्तरस्याम्॥

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रा फल

यात्रा काल में चंन्द्रमा सम्मुख होने पर अर्थलाभ, दक्षिण होने पर सुख सम्पत्ति, पृष्ठ होने पर मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु, वाम होने पर धन हानि करता है।

"सर्वे दोषाः लयं यान्तिपूर्ण चन्द्रे हि सम्मुखे।"

दिशा	सम्मुख	दक्षिण	पृष्ठ	वाम
फल	अर्थलाभ	सुख सम्पत्ति	मृत्यु	धनहानि कष्ट

सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥

योगिनी विचार

प्रतिपदा से शुरू करके पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान इन दिशाओं में क्रमशः योगिनी भ्रमण करती है। योगिनी दक्षिण तथा पृष्ठ में रहने पर शुभ तथा सम्मुख एवं वाम हो तो अशुभ फलप्रद होती है।

योगिनी निवास चक्रम

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

योगिनी विशेष विचार

योगिनी के शुभा-शुभत्व के सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न मत उपलब्ध हैं :-

योगिनी सम्मुखे द्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा।
अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा॥ *(मुहूर्त्तगणपति)*

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणंप्रदा॥ *(शीघ्रबोध)*

जयदा पृष्ठदक्षस्था भंगदा वामसम्मुखी।
त्रिविधं योगिनी चक्रम् इत्युक्तं ब्रह्मयामले॥ *(स्वरोदये)*

"सम्मुखवामगा न शस्ता" – मुहूर्त्त चिन्तामनि में ऐसे कहा गया है।

तथा च–

पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनी गमने हिता।
वामसम्मुखयोर्नेष्टा वामुमेवं विचिन्तयेत्॥ *(विजयकल्पलता)*

तथा :-

वामे शुभकरी देवी पृष्ठेसर्वार्थदायिनी।
वंशबंधकरी चाग्रे दक्षिणे मृत्युदायिनी॥

मुहूर्त्त चिन्तामणि, मुहूर्त्तगणपति, स्वरोदये विजयकल्पलता इत्यादि ग्रंथों के परस्पर विरोधी वचनों को देखते हुए दक्षिण तथा पुष्ठस्थ योगिनी शुभ एवं वाम और सम्मुख योगिनी अशुभ मानी गई है।

दिक्शूल विचारार्थ चक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋ	प.	वा	उ.	दिशा
चन्द्र	रवि	गुरु	बुध	वार	श	शु	गुरु	बुध	मं	चं	र	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार			संमुख काल वासवर्ज्यम्					

आवश्यकेदिक्शूलेपदार्थाः

सू	धृत	ताम्बूल
चं	पय	चन्दन
मं	गुड	मृद
बु	पुष्प	तिल
वृ	दधि	दधि
शु	धृत	यव
श	तिल	माषान
वार	भक्ष	धारण

समय	शूल
प्रातःकाल	पूर्वदिशा
मध्याह्न	दक्षिण
संध्याकाल	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

अत्यावश्यक कार्य में रविवार में धृतपान, सोम को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि, शुक्र को यवान्न शनि को उड़द या तेल की वस्तु का सेवन करके जाना शुभ है।

नक्षत्रशूल विचार

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्येष्ठा	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	नक्षत्र

यात्रा शुद्धि :- जन्मलग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हो, गुरु शुक्र अस्त, सिंहस्थगुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें।

लग्नशुद्धि :- शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १०वें, पापग्रह ३, ६, १०, ११वें श्रेष्ठ हैं चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें, लग्नेश ६, ७, ८, १२वें, शनि १०वें शुक्र ७वें नेष्ट हैं।

दिशाओं के विभाग से लग्न विचार

दिशा	शुभलग्न	मध्यम	भय	महाभय
पूर्व	१-५-९	२-६-१०	४-८-१२	३-७-११
दक्षिण	२-१०-६	३-७-११	१-५-९	४-८-१२
पश्चिम	३-७-११	४-८-१२	२-६-१०	१-५-९
उत्तर	४-८-१२	१-५-९	३-७-११	२-६-१०

दिक्शूल परिहार :-

"न वार दोषः प्रभवन्तिरात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणम् दिवा शशांकर्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधरवार दोषः।

प्रस्थान विचार :- यात्रा मुहूर्त्त में देरी हो तो यात्रा के तीन दिन के अन्दर वर्णानुसार यज्ञोपवीतादि वस्तु या मनपसन्द प्रियवस्तु को किसी के पास रख दें पुनः यात्रा में जाते समय लेते जाएँ।

यात्रा में शुभ शकुन :- विप्र २, अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धिवाक्य जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट ये सभी यात्रा समय शुभ होते हैं।

गृहारम्भमुहूर्त्त विचार

वैशख, श्रावण, मार्ग, माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्त्तिक मास मध्यम हैं २/३/५/६/७/१०/११/१२/१३/१५ और कृष्ण पक्ष की

प्रतिपदा इन तिथियों में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३, ध. श. रे. वेध रहित नक्षत्रों में २/३/५/६/८/११/१२ लग्नों में, पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३/६/११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टमस्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है।

नवीन गृहनिर्माण के पूर्व नींव खोदने के उपरान्त इष्टिका स्थापना का विचार करना चाहिए। नींव खनन करते समय राहुमुख का विचार कर राहुमुख के पीछे वाली दिशा से खात (नींव) खनन प्रारम्भ करें।

राहुमुख एवं खात दिशा ज्ञान के लिए चक्र

कोण	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	अग्नि
गृहारम्भ	सिंह, कन्या तुला	वृश्चिक, धनु मकर	कुम्भ, मीन मेष	वृष, मिथुन कर्क
देवाल्या-रम्भ	मीन, मेष वृष	मि. कर्क सिंह	कन्या, तुला वृश्चिक	धनु, म. कुम्भ
जलाश्या-रम्भ	म. कु. मीन	मेष, वृष मिथुन	कर्क, सिंह कन्या	तुला, वृ. धनु.
खातदिशा	आग्नेय	ई.	वाय.	नै.

गृहारम्भ से पूर्व भूमि के शुभाशुभत्व की भी परीक्षा करनी चाहिए। भूमि में एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर रात्रिकाल में जल से भर कर प्रात:काल निरीक्षण करें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल हो तो मध्यम, जलहीन तथा फटी हो तो भूमि अशुभ जानें।

गृहारम्भ मुहूर्त्त चक्र

नक्षत्र	रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उ. ३ ध, श. रे.
मास	वै. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन इन मासों में १ सूर्य क्रमश: १, ४, ५, ८, १०, ११ राशियों में स्थित होने पर, भाद्रपद एवं कार्तिक मध्यम है
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
तिथियाँ	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५
लग्न	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
लग्नशुद्धि	स्वामी की दृष्टि हो, लग्न से १, ४, ७, १०, ५, ९वें शुभग्रह, ३, ६, ११वें पाप ग्रह तथा ८, १२ स्थान शुभ पाप से रहित
त्याज्य	भद्रा, अशुभयोग, अष्टमचन्द्र, चक्र अशुद्धि
विशेष	शुक्लपक्ष, गुरु शुक्र के उदय में गृहारम्भ विशेष शुभ है

अन्य विशेष :- पुष्य, उ. ३. रो. म. आश्ले. पूषा नक्षत्रों में गुरु जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र में गुरुवार को गृहारम्भ पुत्रप्रद तथा लक्ष्मीप्रद कहा है। रो. ह. श्र. उफा, चित्रा इनमें जिस नक्षत्र में बुध हो उसी नक्षत्र में बुध हो उसी नक्षत्र में बुधवार गृहारम्भ पुत्र और सुखप्रद है। वि. चि. आ. ध. श. इनमें शुक्राधिष्ठित नक्षत्र में शुक्रवार को गृहारम्भ धन धान्यप्रद होता है।

चैत्रादिमास में गृहारम्भ का मास के अनुसार फल

मास	फल
चै.	शोक
वै.	धान्य
ज्ये.	पशुमरण
आषा.	हृति
श्रा.	द्रव्यवृद्धि
भाद्र.	नाश
अश्वि.	युद्ध
का.	भृत्यक्षय
मार्ग.	धन
पौ.	श्रीप्राप्ति
मा.	वह्निभय
फाल्गु.	लक्ष्मीलाभ

गृहारम्भ में शिलान्यास (प्रथम इष्टिका स्थापना) पूर्व दक्षिणकोण (अग्निकोण) में करें।

"क्षेत्रभित्तिशिलान्यासासस्तम्भस्यारोपणं तथा पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याहकश्यप:।।"

भूमि शयन विचार

नींव खोदने में भूमि शयन का भी विचार करना आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९, २६ संख्यक नक्षत्रों में भूमि खनन अशुभ है। बहुत जरूरी हो तो इन नक्षत्रों की ५, ११, ७, ६, २, १० घटियां वर्जित हैं।

वत्सचक्र विचार

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें पुनः चक्रानुसार फल विचारें।

वत्स चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
३	शीर्ष	वह्निभय
४	अग्निमपाद	रिक्त, अशुभ
४	पृष्ठपाद	स्थिरता
३	पृष्ठ	श्रीलाभ
४	दक्षिण कुक्षि	शुभलाभ
३	पुच्छ	स्वामिनाश
४	वामकुक्षि	निर्धनता
३	मुख	अशुभ, कष्ट

कुआ खोदने व नल लगाने के लिए चक्र

पूर्व	ऐश्वर्य
अग्नि	सुतहानि
दक्षिण	स्त्रीनाश
नैऋत्य	गृहपतिनाश
पश्चिम	सम्पत्ति
वायव्य	शत्रुभय
उत्तर	सुख
ईशान	पुष्टि
मध्य	अर्थहानि

द्वारस्थापन विचार

सूर्य नक्षत्र से गणना करके चक्र देखकर शुभफलदायक नक्षत्र में चक्रबल शुद्धि में द्वार (मुख्यद्वार) की स्थापना करें।

द्वारस्थापन चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
४	शिर	श्रीप्राप्ति
८	कोण	उद्वसन
८	शाखा	सौख्य
३	देहली	गृहेशनाश
४	मध्य	सौख्य

जीर्ण व नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्त चक्र

मास	वै. ज्ये. माघ. फाल्गुन
नक्षत्र	३ उ. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में कुम्भ चक्र शुद्धि होने पर
वार	चं. बु. गु. शु.
तिथियां	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३
लग्न	(२, ५, ८, ११) शुभ (३, ६, ९, १२) मध्यम
लग्नशुद्धि	लग्न से १, २, ३, ५, ७, ९, १०, ११ स्थानों पर शुभग्रह, ३, ६, ११ पाप तथा ४, ८ स्थान ग्रह रहित श्रेष्ठ हैं।
जीर्ण	उपरोक्त मास तथा श्रा. मार्ग, कार्त्तिक भी ग्राह्य हैं गुरु शुक्रास्त में भी।
गृह प्रवेश	श. पुष्य, स्वाती और धनिष्ठा नक्षत्रों में भी शुभ है।

कुम्भ चक्र

५	अशुभ
८	शुभ
८	अशुभ
६	शुभ

सूर्य नक्षत्र से गणना कर विचार करें। सूर्य नक्षत्र से गृह प्रवेश तक उक्त चक्रानुसार गणना कर शुभ फल वे समय में ही गृह प्रवेश करना चाहिए।

स्पष्टफल ज्ञान के लिए अन्य कुम्भ चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
१	मुख	अग्निदाह
४	पूर्व	उद्वसन
४	दक्षिण	लाभ
४	पश्चिम	लक्ष्मीप्राप्ति
४	उत्तर	कलह
४	गर्भ	विनाश
३	अधः	स्थिरता
३	कण्ठ	स्थिरता

दुकान (विपणि) करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	रो. तीनों उत्तरा. ह. पुष्य, चि. रे. अनु. मृ. अश्वि
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, १२, १३
अन्य	चन्द्र शुद्धि, शुभलग्न

क्रयनक्षत्र– रे. अ. शत. स्वा. श्र. चित्रा नक्षत्र बुधवार तथा रविवार श्रेष्ठ है।

विक्रय नक्षत्र– पूफा, पूषा, पूभा, वि. कृ. आश्ले. भर. ये सात नक्षत्र गुरुवार और सोमवार श्रेष्ठ हैं।

विशेष– बेचने के नक्षत्रों में खरीदना तथा खरीदने के नक्षत्रों में बेचना हानिप्रद है।

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	ह, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा
वार	बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, ११, १३

नौकरी करने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, अनु. रे. अ. मृ. पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता, अमा. को छोड़ कर नौकरी शुरू करना श्रेष्ठ है।

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	ज्ये. आर्द्रा. मघा. तीनों उत्तरा, मृ. आश्ले. भ.
वार	रवि, बु. गु. शु.
तिथि	३, ५, ८, १०, १३, १५
लग्न	३, ६, ७, ८, १२
लग्न शुद्धि	सूर्य बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष– लग्न में कोई पापग्रह बलशाली हो तो ऐसे लग्न में मुकद्दमा दायर करना अत्यन्त शुभ होता है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	धनिष्ठा, अश्वि. ह. चि. अनु, पुन. पुष्य, ज्ये. एवं रेवती
वार	बुधवार सर्वश्रेष्ठ, अन्य शुभवार
लग्नशुद्धि	श. मं. शु. चं. शुभस्थानों में हो
अन्य	शनि की होरा, चर लग्न

मन्दिर निर्माण का मुहूर्त्त

मास	माघ. फा. वै. ज्ये. मार्ग. पौष.
नक्षत्र	पुष्य उत्तरा ३. मृ. श्र. अश्वि. चि. पुन. आर्द्रा ह. ध. रो
वार	चं. बु. गुरु शुक्र
तिथि	२-३-५-७-११-१२-१३

जलाशय राम सुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त

समय	उत्तरायण, गुरु, शुक्र व मंगल के बली होने पर
तिथि	शुक्ल पक्ष की १-२-५-१०-१३-१५ कृष्ण पक्ष की १-२-५ मतान्तर से शुक्ल पक्ष की ७-११
नक्षत्र	पुष्य, उत्तरात्रय, ह. रे. रो. अश्वि. मृ. श्र. ध. पुन. मतान्तर से चि. स्वा. भ. मू. अत्यावश्यक होने पर
वार	चं. बु. गु. शु.
लग्नशुद्धि	२, ३, ५, ६, ९, ११, १२ (लग्नराशियाँ) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३, ६, ११वें पापग्रह, अष्टम शुद्ध हो।
अन्य	पूर्वाह्न अपने-अपने मास तिथि, नक्षत्र में दक्षिणायन में प्रतिष्ठा के लिए शास्त्रज्ञा (यथा चतुर्दशी में शंकर चतुर्थी में गणेश) इत्यादि।

जननाशौच एवं मरणाशौच की व्यवस्था

– पं० सुरेश शास्त्री, ज्यौतिषाचार्य

सपिण्डी के मृत्यु अथवा जन्में ब्राह्मणों को दस दिन का अशौच लगता है। क्षत्रिय को बारह दिन का अशौच होता है। वैश्य को पंद्रह दिन का तथा शूद्र को एक मास का अशौच लगता है। सातवीं पीढ़ी तक सपिण्डता रहती है, उसके बाद सपिण्डता समाप्त हो जाती है। अशौच-काल में होम, दान, प्रतिग्रह, स्वाध्याय आदि वर्जित हैं। अशौच में किसी दूसरे का अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिये तथा अशौच वाले घर जाकर अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए केवल मात्र संवेदना प्रकट करना ही कर्त्तव्य होता है।

गर्भस्राव होने पर जितने मास का गर्भ रहा हो, उतने अहोरात्र का अशौच होता है–

'मासतुल्यैरहोरात्रैर्गर्भस्रावे।'

पैदा होते ही बच्चे के मर जाने पर या मरा हुआ बच्चा जन्मने पर सद्यःशौच होता है–

'जातमृते मृतजाते वा कुलस्य सद्यः शौचम्।'

दाँत न निकले हुए बालक के मरने पर भी सद्यःशौच होता है। इसका न तो अग्नि-संस्कार होता है और न जलांजलि आदि दी जाती है–

'अदन्तजाते बाले प्रेते सद्य एव। नास्याग्निसंस्कारो नोदकक्रिया।'

दाँत निकल गये हों, किंतु चूडाकर्म नहीं हुआ हो ऐसे बालक के मरने पर एक अहोरात्र (रात-दिन) का अशौच हाता है–

'दन्तजाते त्वकृतचूडे त्वहोरात्रेण।'

चूडाकरण हो गया हो, किंतु यज्ञोपवीत न हुआ हो तो तीन दिन का अशौच होता है–

'कृतचूडे त्वसंस्कृते त्रिरात्रेण।'

स्त्रियों का विवाह ही मुख्य संस्कार है। विवाहिता स्त्री यदि ससुराल में मरे तो उसका अशैच (गोत्र आदि भिन्न हो जाने के कारण) मायके वालों को नहीं लगता, किंतु यदि वह पिता के घर आयी हो और प्रसव के कारण उसकी मृत्यु हो जाय तो परम्परानुसार एक दिन या तीन दिन का अशौच होता है–

संस्कृतासु स्त्रीषु नाशौचं भवति पितृपक्षे।
तत्प्रसवमरणे चेत् पितृगृहे स्यातां तदैकरात्रं त्रिरात्रं च।

दो अशौचों की व्यवस्था

जन्म अशौच होने पर यदि अशौच के मध्य जन्म का दूसरा अशौच हो जाय तो पहले अशौच की समाप्ति के साथ ही दूसरे अशौच की भी शुद्धि हो जाती है। इसी प्रकार दो मरणाशौचों में भी पूर्व के अशौच से दूसरा अशौच समाप्त हो जाता है–

जननाशौचमध्ये यद्यपरं जननाशौचं स्यात् तदा
पूर्वाशौचव्यपगमे शुद्धिः। मरणाशौचमध्ये ज्ञातिमरणेऽप्येवम्।

देशान्तर में जन्म या मृत्यु होने पर अशौच की व्यवस्था

घर से बाहर दूर देश में यदि मृत्यु हो या जन्म हो तो जिस दिन जन्म या मृत्यु हो उसकी सूचना 10 दिन के भीतर जिस दिन भी प्राप्त हो, उस दिन से 10वाँ दिन जब पड़े तो उसी में अशौच पूरा हो जाता है, जैसे यदि किसी की 5 तारीख को मृत्यु हो और 12 तारीख को सूचना मिले तो दो दिन बाद अर्थात् 14 तारीख को दसवें दिन अशौच पूरा हो जायगा। किंतु यदि अशौच पूरा होने के बाद (10 दिन के बाद) साल भर के अंदर जन्म-मृत्यु की सूचना मिले तो एक दिन का अशौच होता है। और यदि साल भर बाद सूचना मिले तो स्नानमात्र से शुद्धि हो जाती है–

श्रुत्वा देशान्तरस्थजननमरणे शेषेण शुध्येत्।
व्यतीतेऽशौचे संवत्सरान्तस्त्वेकरात्रेण। ततः परं स्नानेन।

तीन दिन और एक दिन का अशौच

आचार्य (गुरु) और नाना का तीन दिन का अशौच लगता है। गुरु पत्नी, गुरु पुत्र, उपाध्याय, मामा, ससुर, ससुर का पुत्र, सहपाठी, शिष्य तथा अपने देश के राजा के मरने पर एक दिन अशौच होता है। इसी प्रकार असपिण्डी के अपने घर में मरने पर भी एक दिन का अशौच लगता है–

आचार्ये मातामहे च व्यतीते त्रिरात्रेण।
आचार्यपत्नी - पुत्रोपाध्यायमातुलश्व-
शुरश्वशुर्यसहाध्यायिशिष्येष्वतीतेष्वेकरात्रेण।
स्वदेशराजनि च। असपिण्डे स्ववेश्मनि मृते च। (अ०22)

किसका अशौच नहीं लगता

जो आत्महत्यारे हैं तथा जो पतित हैं, उनका न अशौच होता है और न ही वे जलांजलि तथा श्राद्ध आदि के भागी होते हैं–

आत्मत्यागिनः पतिताश्च नाशौचोदकभाजः। (अ०22)

अथ विंशोत्तरीसूर्यमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ सूर्यांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ चंद्रांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ भौमांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ राहुंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ गुर्वंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शन्यंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ बुधांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ केत्वंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शुक्रांतरे	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	5	24	चं.	0	0	15	0	मं.	0	0	7	21	रा.	0	1	18	36	बृ.	0	1	8	24	श.	0	1	24	6	बु.	0	1	13	21	के.	0	0	7	21	शु.	0	2	0	0
चं.	0	0	9	0	मं.	0	0	10	30	रा.	0	0	18	54	बृ.	0	1	13	12	श.	0	1	15	36	बु.	0	1	18	27	के.	0	0	17	51	शु.	0	0	21	0	र.	0	0	18	0
मं.	0	0	6	18	रा.	0	0	27	0	बृ.	0	0	16	48	श.	0	1	21	18	बु.	0	1	10	48	के.	0	0	19	57	शु.	0	1	21	0	र.	0	0	6	18	चं.	0	1	0	0
रा.	0	0	16	12	बृ.	0	0	24	0	श.	0	0	19	57	बु.	0	1	15	54	के.	0	0	16	48	शु.	0	1	27	0	र.	0	0	15	18	चं.	0	0	10	30	मं.	0	0	21	0
बृ.	0	0	14	24	श.	0	0	28	30	बु.	0	0	17	51	के.	0	0	18	54	शु.	0	1	18	0	र.	0	0	17	6	चं.	0	0	25	30	मं.	0	0	7	21	रा.	0	1	24	0
श.	0	0	17	6	बु.	0	0	25	30	के.	0	0	7	21	शु.	0	1	24	0	र.	0	0	14	24	चं.	0	0	28	30	मं.	0	0	17	51	रा.	0	0	18	54	बृ.	0	1	18	0
बु.	0	0	15	18	के.	0	0	10	30	शु.	0	0	21	0	र.	0	0	16	12	चं.	0	0	24	0	मं.	0	0	19	57	रा.	0	1	15	54	बृ.	0	0	16	48	श.	0	1	27	0
के.	0	0	6	18	शु.	0	1	0	0	र.	0	0	6	18	चं.	0	0	27	0	मं.	0	0	16	48	रा.	0	1	21	18	बृ.	0	1	10	48	श.	0	0	19	57	बु.	0	1	21	0
शु.	0	0	18	0	र.	0	0	9	0	चं.	0	0	10	30	मं.	0	0	18	54	रा.	0	1	13	12	बृ.	0	1	15	36	श.	0	1	18	27	बु.	0	0	17	51	के.	0	0	21	0

अथ विंशोत्तरीचंद्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ चंद्रांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ भौमांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ राहुंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ गुर्वंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शन्यंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ बुधांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ केत्वंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शुक्रांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ सूर्यांतरे	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	0	25	0	मं.	0	0	12	15	रा.	0	2	21	0	बृ.	0	2	4	0	श.	0	3	0	15	बु.	0	2	12	15	के.	0	0	12	15	शु.	0	3	10	0	र.	0	0	9	0
मं.	0	0	17	30	रा.	0	1	1	30	बृ.	0	2	12	0	श.	0	2	16	0	बु.	0	2	20	45	के.	0	0	29	45	शु.	0	1	5	0	र.	0	1	0	0	चं.	0	0	15	0
रा.	0	1	15	0	बृ.	0	0	28	0	श.	0	2	25	30	बु.	0	2	8	0	के.	0	1	3	15	शु.	0	2	25	0	र.	0	0	10	30	चं.	0	1	20	0	मं.	0	0	10	30
बृ.	0	1	10	0	श.	0	1	3	15	बु.	0	2	16	30	के.	0	0	28	0	शु.	0	3	5	0	र.	0	0	25	30	चं.	0	0	17	30	मं.	0	1	5	0	रा.	0	0	27	0
श.	0	1	17	30	बु.	0	0	29	45	के.	0	1	1	30	शु.	0	2	20	0	र.	0	0	28	30	चं.	0	1	12	30	मं.	0	0	12	15	रा.	0	3	0	0	बृ.	0	0	24	0
बु.	0	1	12	30	के.	0	0	12	15	शु.	0	3	0	0	र.	0	0	24	0	चं.	0	1	17	30	मं.	0	0	29	45	रा.	0	1	1	30	बृ.	0	2	20	0	श.	0	0	28	30
के.	0	0	17	30	शु.	0	1	5	0	र.	0	0	27	0	चं.	0	1	10	0	मं.	0	1	3	15	रा.	0	2	16	30	बृ.	0	0	28	0	श.	0	3	5	0	बु.	0	0	25	30
शु.	0	1	20	0	र.	0	0	10	30	चं.	0	1	15	0	मं.	0	0	28	0	रा.	0	2	25	30	बृ.	0	2	8	0	श.	0	1	3	15	बु.	0	2	25	0	के.	0	0	10	30
र.	0	0	15	0	चं.	0	0	17	30	मं.	0	1	1	30	रा.	0	2	12	0	बृ.	0	2	16	0	श.	0	2	20	45	बु.	0	0	29	45	के.	0	1	5	0	शु.	0	1	0	0

अथ विंशोत्तरीभौममहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ भौमांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ राहुंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ गुर्वंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शन्यंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ बुधांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ केत्वंतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ शुक्रांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ सूर्यांतरे	व.	मा.	दि.	घ.	अथ चंद्रांतरे	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	8	35	रा.	0	1	26	42	बृ.	0	1	14	48	श.	2	3	10	30	बु.	1	20	34	30	के.	0	8	34	30	शु.	0	2	10	0	र.	0	0	6	18	चं.	0	0	17	30
रा.	0	0	22	3	बृ.	0	1	20	24	श.	0	1	23	12	बु.	1	26	31	30	के.	0	20	49	30	शु.	0	24	30	0	र.	0	0	21	0	चं.	0	0	10	30	मं.	0	0	12	15
बृ.	0	0	19	36	श.	0	1	29	51	बु.	0	1	17	36	के.	0	23	16	30	शु.	1	29	30	0	र.	0	7	21	0	चं.	0	1	5	0	मं.	0	0	7	21	रा.	0	1	1	30
श.	0	0	23	16	बु.	0	1	23	33	के.	0	0	19	36	शु.	2	6	30	0	र.	0	17	51	0	चं.	0	12	15	0	मं.	0	0	24	30	रा.	0	0	18	54	बृ.	0	0	28	0
बु.	0	0	20	50	के.	0	0	22	3	शु.	0	1	26	0	र.	0	19	57	0	चं.	0	29	45	0	मं.	0	8	34	30	रा.	0	2	3	0	बृ.	0	0	16	48	श.	0	1	3	15
के.	0	0	8	34	शु.	0	2	3	0	र.	0	0	16	48	चं.	1	3	15	0	मं.	0	20	49	30	रा.	0	22	3	0	बृ.	0	1	26	0	श.	0	0	19	57	बु.	0	0	29	45
शु.	0	0	24	30	र.	0	0	18	54	चं.	0	0	28	0	मं.	0	23	16	0	रा.	1	23	33	0	बृ.	0	19	36	0	श.	0	2	6	30	बु.	0	0	17	51	के.	0	0	12	15
र.	0	0	7	21	चं.	0	1	1	30	मं.	0	0	19	36	रा.	1	29	51	0	बृ.	1	17	36	0	श.	0	23	16	30	बु.	0	1	29	30	के.	0	0	7	21	शु.	0	1	5	0
चं.	0	0	12	15	मं.	0	0	22	3	रा.	0	1	20	24	बृ.	1	23	12	0	श.	1	26	31	30	बु.	0	20	49	30	के.	0	0	24	30	शु.	0	0	21	0	र.	0	0	10	30

अथ विंशोत्तरीराहुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ राहुंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	25	48
बृ.	0	4	9	36
श.	0	5	3	54
बु.	0	4	17	42
के.	0	1	26	42
शु.	0	5	12	0
र.	0	1	18	36
चं.	0	2	21	0
मं.	0	1	26	42

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	24	12
श.	0	4	16	48
बु.	0	4	2	24
के.	0	1	20	24
शु.	0	4	24	0
र.	0	1	13	12
चं.	0	2	12	0
मं.	0	1	20	24
रा.	0	4	9	36

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	5	12	27
बु.	0	4	25	21
के.	0	1	29	51
शु.	0	5	21	0
र.	0	1	21	18
चं.	0	2	25	30
मं.	0	1	29	51
रा.	0	5	3	54
बृ.	0	4	16	48

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	4	10	3
के.	0	1	23	33
शु.	0	5	3	0
र.	0	1	15	54
चं.	0	2	16	30
मं.	0	1	23	33
रा.	0	4	17	42
बृ.	0	4	2	24
श.	0	4	25	21

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
चं.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	0	0
र.	0	1	24	0
चं.	0	3	0	0
मं.	0	2	3	0
रा.	0	5	12	0
बृ.	0	4	24	0
श.	0	5	21	0
बु.	0	5	3	0
के.	0	2	3	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	16	12
चं.	0	0	27	0
मं.	0	0	18	54
रा.	0	1	18	36
बृ.	0	1	13	12
श.	0	1	21	18
बु.	0	1	15	54
के.	0	0	18	54
शु.	0	1	24	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	15	0
मं.	0	1	1	30
रा.	0	2	21	0
बृ.	0	2	12	0
श.	0	2	25	30
बु.	0	2	16	30
के.	0	1	1	30
शु.	0	3	0	0
र.	0	0	27	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	22	3
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
चं.	0	1	1	30

अथ विंशोत्तरीगुरुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	12	24
श.	0	4	1	36
बु.	0	3	18	48
के.	0	1	14	48
शु.	0	4	8	0
र.	0	1	8	24
चं.	0	2	4	0
मं.	0	1	14	48
रा.	0	3	25	12

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	4	24	24
बु.	0	4	6	12
के.	0	1	23	12
शु.	0	5	2	0
र.	0	1	15	36
चं.	0	2	16	0
मं.	0	1	23	12
रा.	0	4	16	48
बृ.	0	4	1	36

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	3	25	36
के.	0	1	17	36
शु.	0	4	16	0
र.	0	1	10	46
चं.	0	2	8	0
मं.	0	1	17	36
रा.	0	4	2	24
बृ.	0	3	18	48
श.	0	4	9	12

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
चं.	0	0	28	0
मं.	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24
बृ.	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	5	10	0
र.	0	1	18	0
चं.	0	2	20	0
मं.	0	1	26	0
रा.	0	4	24	0
बृ.	0	4	8	0
श.	0	5	2	0
बु.	0	4	16	0
के.	0	1	26	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	14	24
चं.	0	0	24	0
मं.	0	0	16	48
रा.	0	1	13	12
बृ.	0	1	8	24
श.	0	1	15	36
बु.	0	1	10	48
के.	0	0	16	48
शु.	0	1	18	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	10	0
मं.	0	0	28	0
रा.	0	2	12	0
बृ.	0	2	4	0
श.	0	2	16	0
बु.	0	2	8	0
के.	0	0	28	0
शु.	0	2	20	0
र.	0	0	24	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	11	36
रा.	0	1	20	24
बृ.	0	1	14	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
चं.	0	0	28	0

अथ राहुंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	9	36
बृ.	0	3	25	12
श.	0	4	16	48
बु.	0	4	2	24
के.	0	1	20	24
शु.	0	4	24	0
र.	0	1	18	36
चं.	0	2	20	0
मं.	0	1	20	24

अथ विंशोत्तरीशनिमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	5	21	28	30
बु.	0	5	3	25	30
के.	0	2	3	10	30
शु.	0	6	0	30	0
र.	0	1	24	9	0
चं.	0	3	0	15	0
मं.	0	2	3	10	30
रा.	0	5	12	27	0
बृ.	0	4	24	24	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	4	17	16	30
के.	0	1	26	31	30
शु.	0	5	11	30	0
र.	0	1	18	27	0
चं	0	2	20	45	0
मं.	0	1	26	31	30
रा.	0	4	25	31	0
बृ.	0	4	9	12	0
श.	0	5	3	25	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प
के	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0
श.	0	2	3	10	30
बु.	0	1	26	31	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	10	0
र.	0	1	27	0
चं.	0	3	5	0
मं.	0	2	6	30
रा.	0	5	21	0
बृ.	0	5	2	0
श.	0	6	0	30
बु.	0	5	11	30
के.	0	2	6	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	17	6
चं.	0	0	28	30
मं.	0	0	19	57
रा.	0	1	21	18
बृ.	0	1	15	36
श.	0	1	24	9
बु.	0	1	18	27
के.	0	0	19	57
शु.	0	1	27	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	17	30
मं.	0	1	3	15
रा.	0	2	25	30
बृ.	0	2	16	0
श.	0	3	0	15
बु.	0	2	20	45
के.	0	1	3	15
शु.	0	3	5	0
र.	0	0	28	30

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0
श.	0	2	3	10	0
बु.	0	1	26	31	30
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0

अथ राहुंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	5	3	54
बृ.	0	4	16	48
श.	0	4	24	24
बु.	0	4	25	21
के.	0	1	29	51
शु.	0	5	21	0
र.	0	1	15	36
चं.	0	2	16	0
मं.	0	1	23	12

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	4	1	36
श.	0	4	24	24
बु.	0	4	9	12
के.	0	1	23	12
शु.	0	5	2	0
र.	0	1	21	18
चं.	0	2	25	30
मं.	0	1	29	51
रा.	0	4	16	48

अथ विंशोत्तरीबुधमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	4	2	49	30
के.	0	1	20	34	30
शु.	0	4	24	30	0
र.	0	1	13	21	0
चं.	0	2	12	15	0
मं.	0	1	20	34	30
रा.	0	4	10	3	0
बृ.	0	3	25	36	0
श.	0	4	17	16	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30
बु.	0	1	20	34	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	5	20	0
र.	0	1	21	0
चं.	0	2	25	0
मं.	0	1	29	30
रा.	0	5	3	0
बृ.	0	4	16	0
श.	0	5	11	30
बु.	0	4	24	30
के.	0	1	26	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	15	18
चं.	0	0	25	30
मं.	0	0	17	51
रा.	0	1	15	54
बृ.	0	1	10	48
श.	0	1	18	27
बु.	0	1	13	21
के.	0	0	17	51
शु.	0	1	21	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	12	30
मं.	0	0	29	45
रा.	0	2	16	30
बृ.	0	2	8	0
श.	0	2	20	45
बु.	0	2	12	15
के.	0	0	29	45
शु.	0	2	25	0
र.	0	0	25	30

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बु.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30
बु.	0	1	20	34	30
के.	0	0	20	49	30
शु	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0

अथ राहुंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	4	17	42
बृ.	0	4	2	24
श.	0	4	25	21
बु.	0	4	10	3
के.	0	1	23	33
शु.	0	5	3	0
र.	0	1	15	54
चं.	0	2	16	30
मं.	0	1	23	33

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	3	18	48
श.	0	4	9	12
बु.	0	3	25	36
के.	0	1	17	36
शु.	0	4	16	0
र.	0	1	10	48
चं.	0	2	8	0
मं.	0	1	17	36
रा.	0	4	2	24

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
शु.	0	5	3	25	30
बु.	0	4	17	16	30
के.	0	1	26	31	30
शु.	0	5	11	30	0
र.	0	1	18	27	0
चं.	0	2	20	45	0
मं.	0	1	26	31	30
रा.	0	4	25	21	0
बृ.	0	4	3	12	0

अथ विंशोत्तरीकेतुमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
के.	0	0	8	34	30
शु.	0	0	24	30	0
र.	0	0	7	21	0
चं.	0	0	12	15	0
मं.	0	0	8	34	30
रा.	0	0	22	3	7
बृ.	0	0	19	36	0
श.	0	0	23	16	30
बु.	0	0	20	49	30

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	6	18
चं.	0	0	10	30
मं.	0	0	7	21
रा.	0	0	18	54
बृ.	0	0	16	48
श.	0	0	19	57
बु.	0	0	17	51
के.	0	0	7	21
शु.	0	0	21	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	0	17	30
मं.	0	0	12	15
रा.	0	1	1	30
बृ.	0	0	28	0
श.	0	1	3	15
बु.	0	0	29	45
के.	0	0	12	15
शु.	0	1	5	0
र.	0	0	10	30

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मं.	0	0	8	34	30
रा.	0	0	22	3	0
बृ.	0	0	19	36	0
श	0	0	23	16	30
बृ.	0	0	20	49	30
के.	0	0	8	34	30
शु.	0	0	24	30	0
र.	0	0	7	21	0
चं.	0	0	12	15	0

अथ राहुंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	1	26	42
बृ.	0	1	20	24
श.	0	1	29	51
बु.	0	1	23	33
के.	0	0	22	3
शु.	0	2	3	0
र.	0	0	18	54
चं.	0	1	1	30
मं.	0	0	22	3

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	1	24	48
श.	0	1	23	12
बु.	0	1	17	36
के.	0	0	19	36
शु.	0	1	26	0
र.	0	0	16	48
चं.	0	0	28	0
मं.	0	0	19	36
रा.	0	1	20	24

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
श.	0	2	3	10	30
बु.	0	1	26	31	30
के.	0	0	23	16	30
शु.	0	2	6	30	0
र.	0	0	19	57	0
चं.	0	1	3	15	0
मं.	0	0	23	16	30
रा.	0	1	29	51	0
बृ.	0	1	23	12	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
बु.	0	1	20	34	30
के.	0	0	20	49	30
शु.	0	1	29	30	0
र.	0	0	17	51	0
चं.	0	0	29	45	0
मं.	0	0	20	49	30
रा.	0	1	23	33	0
बृ.	0	1	17	36	0
श.	0	1	26	31	30

अथ विंशोत्तरीशुक्रमहादशायामन्तरेषु सर्वेषां प्रत्यन्तराणि

अथ शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
शु.	0	6	20	0
र.	0	2	0	0
चं.	0	3	10	0
मं.	0	2	10	0
रा.	0	6	0	0
बृ.	0	5	10	0
श.	0	6	10	0
बु.	0	5	20	0
के.	0	2	10	0

अथ सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
र.	0	0	18	0
चं.	0	1	0	0
मं.	0	0	21	0
रा.	0	1	24	0
बृ.	0	1	18	0
श.	0	1	27	0
बु.	0	1	21	0
के.	0	0	21	0
शु.	0	2	0	0

अथ चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
चं.	0	1	20	0
मं.	0	1	5	0
रा.	0	3	0	0
बृ.	0	2	20	0
श.	0	3	5	0
बु.	0	2	25	0
के.	0	1	5	0
शु.	0	3	10	0
र.	0	1	0	0

अथ भौमांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30
के.	0	0	24	30
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0

अथ राहुंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
रा.	0	5	12	0
बृ.	0	4	24	0
श.	0	5	21	0
बु.	0	5	3	0
के.	0	2	3	0
शु.	0	6	0	0
र.	0	1	24	0
चं.	0	3	0	0
मं.	0	2	3	0

अथ गुर्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बृ.	0	4	8	0
श.	0	5	2	0
बु.	0	4	16	0
के.	0	1	26	0
शु.	0	5	10	0
र.	0	1	18	0
चं.	0	2	20	0
मं.	0	1	26	0
रा.	0	4	24	0

अथ शन्यंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
श.	0	6	0	30
बु.	0	5	11	30
के.	0	2	6	30
शु.	0	6	10	0
र.	0	1	27	0
चं.	0	3	5	0
मं.	0	2	6	30
रा.	0	5	21	0
बृ.	0	5	2	0

अथ बुधांतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
बु.	0	4	24	30
के.	0	1	29	30
शु.	0	5	20	0
र.	0	1	21	0
चं.	0	2	25	0
मं.	0	1	29	30
रा.	0	5	3	0
बृ.	0	4	16	0
श.	0	5	11	30

अथ केत्वंतरे प्रत्यंतराणि

	व.	मा.	दि.	घ.
के.	0	0	24	30
शु.	0	2	10	0
र.	0	0	21	0
चं.	0	1	5	0
मं.	0	0	24	30
रा.	0	2	3	0
बृ.	0	1	26	0
श.	0	2	6	30
बु.	0	1	29	30

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशादिज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्यदशा वर्ष 6 कृ.उ.फा. उषा.				चंद्रदशा वर्ष 10 रोहि. ह. श्रवण				भौमदशा वर्ष 7 मृ. चि. ध.				राहुदशा वर्ष 18 आर्द्रा. स्वा. शत				गुरुदशा वर्ष 16 पुन. वि. पू. भा.				शनिदशा वर्ष 19 पुष्य अनु. उ. भा.				बुधदशा वर्ष 17 आश्ले ज्ये रेवती				केतुदशा वर्ष 7 मघा. मू. अश्वि				शुक्रदशा वर्ष 20 पू. फा. पू. षा. भ.			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	0	3	18	चं.	0	10	0	मं	0	4	27	रा.	2	8	12	बृ.	2	1	18	श.	3	0	3	बु.	2	4	27	के.	0	4	27	शु.	3	4	0
चं.	0	6	0	मं	0	7	0	रा.	1	0	18	बृ.	2	4	24	श.	2	6	12	बु.	2	8	9	के.	0	11	27	शु.	1	2	0	सू.	1	0	0
मं	0	4	6	रा.	1	6	0	बृ.	0	11	6	श.	2	10	6	बु.	2	3	6	के.	1	1	9	शु.	2	10	0	सू.	0	4	6	चं.	1	8	0
रा.	0	10	24	बृ.	1	4	0	श.	1	1	9	बु.	2	6	18	के.	0	11	6	शु.	3	2	0	सू.	0	10	6	चं.	0	7	0	मं.	1	2	0
बृ.	0	9	18	श.	1	7	0	बु.	0	11	27	के.	1	0	18	शु.	2	8	0	सू.	0	11	12	चं.	1	5	0	मं.	0	4	27	रा.	3	0	0
श.	0	11	12	बु.	1	5	0	के.	0	4	27	शु.	3	0	0	सू.	0	9	18	चं.	1	7	0	मं.	0	11	27	रा.	1	0	18	बृ.	2	8	0
बु.	0	10	6	के.	0	7	0	शु.	1	2	0	सू.	0	10	24	चं.	1	4	0	मं.	1	1	9	रा.	2	6	18	बृ.	0	11	6	श.	3	2	0
के.	0	4	6	शु.	1	8	0	सू.	0	4	6	चं.	1	6	0	मं.	0	11	6	रा.	2	10	6	बृ.	2	3	6	श.	1	1	9	बु.	2	10	0
शु.	1	0	0	सू.	0	6	0	चं.	0	7	0	मं.	1	0	18	रा.	2	4	24	बृ.	2	6	12	श.	2	8	9	बु.	0	11	27	के.	1	2	0

योगिनीदशाऽन्तर्दशा चक्र

मंगला 1 श्रवण, आर्द्रा, चित्रा चन्द्र				पिंगला 2 पुनर्वसु, स्वाति, धनिष्ठा सूर्य				धान्या 3 पुष्य, विशाखा, शतभिषा वृहस्पति				भ्रामरी 4 आश्ले, अनु. पूर्वा भा. अश्विनी मंगल				भद्रिका 5 मघा, ज्येष्ठा, उ.भा, भरणी बुध				उल्का 6 पूर्वा फा, मूला रेवती कृतिका शनि				सिद्धा 7 उ.फा., पूर्वाषाढ़ा रोहिणी शुक्र				संकटा 8 हस्त, उत्तराषाढ़ा मृगशिरा केतु			
	व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.		व.	मा.	दि.
मं	0	0	10	पि.	0	1	10	धा.	0	3	0	भ्रा.	0	5	10	भ.	0	8	10	उ.	1	0	0	सि.	1	4	10	सं.	1	9	10
पि.	0	0	20	धा.	0	2	0	भ्रा.	0	4	0	भ.	0	6	20	उ.	0	10	0	सि.	1	2	0	सं.	1	6	20	मं	0	2	20
धा.	0	1	0	भ्रा.	0	2	20	भ.	0	5	0	उ.	0	8	0	सि.	0	11	20	सं.	1	4	0	मं	0	2	10	पि.	0	5	10
भ्रा.	0	1	10	भ.	0	3	10	उ.	0	6	0	सि.	0	9	10	सं.	1	1	10	मं	0	2	0	पि.	0	4	20	धा.	0	8	0
भ.	0	1	20	उ.	0	4	0	सि.	0	7	0	सं.	0	10	20	मं	0	1	20	पि.	0	4	0	धा.	0	7	0	भ्रा.	0	10	20
उ.	0	2	0	सि.	0	4	20	सं.	0	8	0	मं	0	1	10	पि.	0	3	10	धा.	0	6	0	भ्रा.	0	9	10	भ.	1	1	10
सि.	0	2	10	सं.	0	5	10	मं	0	1	0	पि.	0	2	20	धा.	0	5	0	भ्रा.	0	8	0	भ.	0	11	20	उ.	1	4	0
सं.	0	2	20	मं	0	0	20	पि.	0	2	0	धा.	0	4	0	भ्रा.	0	6	20	भ.	0	10	0	उ.	1	2	0	सि.	1	6	20

योगिनी दशा विचार :– योगिनी दशा कुल 36 वर्ष की होती है प्रत्येक 36 वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा में पुनरावृत्ति होती है।

वर्षफल निर्माण विधि

जिस वर्ष का वर्षफल अभीष्ट हो, उस अभीष्ट संवत् में से जन्म संवत् घटाने पर जो शेष बचे वे जन्म से गत वर्ष अर्थात् 'गताब्द' होते हैं उन गताब्दों से पृष्ठ संख्या 182 पर दी गई प्राचीन एवं पृष्ठ संख्या 183 दी गई नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी के नीचे दिए गए वार, घटी, पलादि फल लेकर उसमें जन्म के वार इष्टघटी, पलादि जोड़ने पर वर्ष प्रवेशकालिक वारादि इष्टकालज्ञात होता है। पल, घटी आदि यदि 60 से अधिक हों, तो उन्हें सवर्ण

करके तथा यदि वारादि संख्या 7 से अधिक हो, तो 7 का भाग देने पर एकादि शेष रहने पर रवि आदि क्रम से वार तथा आगे वर्षेष्ट घटी पलादि होते हैं। जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राश्यंशादि की तरह वर्ष प्रवेशकालिक स्पष्ट सूर्य होता है। वर्षेष्ट के स्वदेशीय (समीपस्थ अक्षांश) लग्न सारिणी से लग्न साधन करने पर वर्ष प्रवेश कालिक लग्न सिद्ध होता है। इस प्रकार वर्ष लग्न में वर्ष प्रवेश कालिक ग्रह स्थापित करने पर वर्ष कुण्डली बनती है।

मुन्थासाधन– वर्ष कुण्डली में मुन्था भी लगाई जाती है। जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुन्था होती है, यह प्रतिवर्ष एक-एक राशि बढ़ती है। अत: गतवर्ष संख्या में जन्म लग्न जोड़ने पर यदि 12 से अधिक हो तो 12 का भाग देने पर शेष मुन्था की राशि होती है।

त्रिपताकी चक्रम् – वर्ष प्रवेश की संख्या को 9 का भाग दें जो शेष बचे जन्म कुण्डली में जिस राशि में चंद्रमा हो उससे आगे उतने स्थान गिन कर प्राप्त राशि अंक पर चंद्रमा लगायें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या को 4 का भाग दें शेष को जन्म स्थान के ग्रहों से उतने आगे गिन कर लगायें।

मुद्दादशासाधन– गत वर्ष संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर जो संख्या उपलब्ध हो, उसमें 2 घटाकर 9 का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र की दशा होती है। सूर्यादि मुद्दादशा दिन पृ॰ सं॰ -- पर दिए मुद्दादशा चक्र से जानें।

हर्षबलसाधन– वर्ष कुण्डली में स्थानबल, स्वोच्चबल, पुरुषस्त्रीबल तथा दिनरात्रिबल – ये चार वर्ष बल कहलाते हैं।

स्थानबल– वर्ष लग्न से 9 स्थान में सूर्य, 3 में चन्द्रमा, 6 में मंगल, 1 में बुध, 11 में गुरु, 5 में शुक्र तथा 12 में शनि 5 हर्षबल देते हैं।

स्वोच्चबल– प्रत्येक ग्रह अपनी तथा उच्च राशि में 5 राशि में 5 हर्षबल देते हैं। अर्थात् सूर्य 1/5 व चन्द्र 2/4, मंगल 1/8/10, बुध 3/6, गुरु 4/9/12, शुक्र 2/7/12, शनि 10/11/7 इन सवोच्च राशियों में सूर्यादि ग्रह हर्षित होते हैं।

पुरुषस्त्रीबल– स्त्रीग्रह (चं. वु. शु. श.) 1/2/3/7/8/9 स्थानों में तथा पुरुषग्रह (सू.मं.गु.) 4/5/6/10/11/12 स्थानों में 5 हर्षबल देते हैं।

दिनरात्रिबल– दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुरुषग्रह तथा रात्रि में हो तो स्त्री ग्रह 5 हर्षबल देते हैं।

यहाँ यह ध्यान देना चाहिए जहाँ बल प्राप्त हो वहाँ 5 तथा जहाँ बल प्राप्त न हो वहाँ 0 शून्य रखना चाहिए। इस प्रकार सूर्यादि सात ग्रहों के चारों स्थानादि बलों का योग हर्षबल कहलाता है।

वर्षेश-निर्णय– जन्म लग्नपति, वर्ष लग्नपति, मुन्थाधिपति, त्रिराशिपति, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी ये पञ्चाधिकारी कहलाते हैं। इन पञ्चाधिकारियों में जो बलवान् होकर लग्न को देखता हो, वह वर्षेश होता है। बलवान् होने पर भी यदि लग्न को न देखता हो तो वर्षेश नहीं होगा। समान वली होने पर जो लग्न को अधिक दृष्टि से देखता हो वह वर्षेश होगा। लग्न को देखने वाला ग्रह यदि अल्पबल हो तो मुन्थेश अर्थात् मुन्था जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होगा। यदि पञ्चाधिकारियों में कोई भी लग्न को न देखता हो तो जो गृह सबसे बलवान हो वह वर्षेश होगा। यदि चन्द्र वर्षेश प्राप्त हो तो वह पञ्चाधिकारियों में जिससे इत्थशाल करे वह वर्षेश होगा। यदि इत्थाशाल न करे तो चन्द्र जिस राशि में बैठा हो वह वर्षेश होगा।

वर्ष दृष्टि-विचार– वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में स्थित हो, उससे 5/9 स्थान को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से, 3/11 स्थान का गुप्त मित्र दृष्टि से, 1/7 स्थान को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा 4/10 स्थान को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखता है। प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि सभी कार्यों में शीघ्र सफलता देने वाली होती है, गुप्त मित्र दृष्टि कार्यों में कठिनता से सफलता देने वाली होती है। प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि शत्रुता उत्पन्न करने वाली, मित्र से शत्रुता कराने वाली, बनते काम बिगाड़ने वाली हानिकारक होती है। गुप्त शत्रु दृष्टि कार्यों को कठिनता से सफल कराने वाली तथा गुप्त रूप से शत्रु उत्पन्न कराने वाली होती है।

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५
घटी	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१
घटी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४०	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

त्रिराशिपतिचक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

विं. मुद्दादशाचक्र

सर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

योगिनीक्रमेण मुद्दादशाचक्र

यो.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मा.	०	०	१	१	१	२	२	२
दि.	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रत्यक्ष मित्र	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९
गुप्त मित्र	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११
प्रत्यक्ष शत्रु	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७
गुप्त शत्रु	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०

जन्म एवं वर्ष कुण्डली में द्वादश भाव

फलादेश में सुगमता के लिए जन्म अथवा वर्ष कुण्डली के विभिन्न भावों के अलग-अलग नाम रखे गए हैं। लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव- केन्द्र कहलाते हैं। लग्न से पंचम (5) नवम (9) भावों को **त्रिकोण** कहते हैं। केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित शुभ ग्रह शुभफलदायक होते हैं।

पणफर- लग्न से 2-5-8-11वें भावों को पणफर कहते हैं। इन भावों में स्थित ग्रह यदि उच्च, मित्रादि राशि का हो, तो शुभफलप्रद होता है।

आपोक्लिम- 3, 6, 9 तथा 12 द्वादशभाव को आपोक्लिम कहते हैं। इन भावों में नीच-शत्रु आदि राशि का ग्रह अशुभफल प्रदान करता है।

उपचय- 3, 6, 10, 11वें भावों को उपचय भाव कहते हैं। शेष भावों को अनुपचय कहते हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	०८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	०९	३२	५४	१७	४०	०३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	०८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०
गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४९	०४	१९	३५	५०	०५	२१	३६	५२	०७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	०६	२९	५२	१५	३८	०१	२३	४६	०९	३२	५५	१८	४१	०४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	०७	३०	५३
विपल	२३	१६	०९	०२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	०६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	०७	००
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	०९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	०१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	०४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	०७	३०	५३	१६	३९	०२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	०८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गण्ड – मूलादि – जन्म – विचार

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती– ये 6 नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक, माता, पिता, कुल या स्वयं को अरिष्टदायक होता हे। यदि यह अरिष्ट से बच जाये तो अपने बल-बुद्धि से संसार में सुखपूर्वक दीर्घायु प्राप्त करता है। इसलिए गण्डमूल में उत्पन्न शिशु के पिता को 27 दिन तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। और फिर प्रसूति-स्नान के बाद गण्डमूल की शान्ति गौदान आदि देकर बालक का मुख देखना चाहिए।

मूलनिवास-चक्र

मास के अनुसार	वैशा. ज्ये, मार्ग. फा.	चै.श्रा.का.पौ.	आषा.अश्वि., भाद्र, माघ
लग्न के अनुसार मूल निवास स्थान फल	2, 5, 8, 11 पाताल शुभ	3, 6, 9, 12 भूमि कुलनाश	1, 4, 7, 10 स्वर्ग शुभ

मूल-आश्लेषा चरण-फल

मूल चरण-फल		आश्लेषा चरण-फल		समय-फल	
1	पितृनाश	1	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
2	मातृनाश	2	धन नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
3	धननाश	3	मातृनाश	रात्रि में	माता को भय
4	शान्ति से शुभ	4	पितृनाश		

मूलजन्म में वृक्ष विभाग

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी फल	7 मूल नाश	8 वंशनाश	10 मातृक्लेश	11 मातुल-कष्ट	12 मन्त्री पद	5 मन्त्री पद	4 प्रचुर लाभ	3 अल्पायु

मूल-पुरुष-चक्र

विभाग	शिर	मुख	कन्धा	बाहु	हाथ	हृदय	नाभि	गुप्तांग	जानु	पैर
घटी फल	5 राजा	7 पितृ-नाश	4 वली	8 वली	3 दानी	9 मन्त्री	2 तानी	10 कामी	6 बुद्धि-मान	6 बुद्धि-मान

मूल-कन्या-चक्र

विभाग	शिर	मुख	कण्ठ	हृदय	भुजा	हाथ	गुप्तांग	जंघा	जानु	पैर
घटी फल	4 पशु नाश	6 धन नाश	5 धन लाभ	5 कुटिला	5 धन-लाभ	8 दया-वती	9 कामिनी	4 मातृ-नाश	4 भ्रातृ-नाश	10 विधवा

आश्लेषा-चक्र

विभाग	शिर	मुख	कण्ठ	हृदय	भुजा	हाथ	गुप्तांग	जंघा	जानु	पैर
घटी फल	5 पुत्रादि	7 पितृ-नाश	2 स्त्री-नाश	4 स्त्री-लाभ	4 गुरु भय	8 वली	1 आत्महा	6 भ्रम	7 तपस्वी हानि	7 धन

आश्लेषा-पुरुष-चक्र

विभाग	फल	पुष्प	पत्ता	शाखा	त्वचा	लता	स्कन्ध
घटी फल	1 धन	5 धन	9 राजभय	7 हानि	13 मानहानि	12 पितृहानि	4 अल्पायु

अभुक्त मूल-विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की 4 घटी मतान्तर से 1 घटी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की 4 घटी मतानन्तर से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इस समय में कदाचित् बालक का जन्म हो, तो बालक के पिता को 8 वर्ष तक मतान्तर से 6 मास तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। इसकी शान्ति के लिए रुद्रार्चन अभिषेक एवं महामृत्युञ्जय की विधि सहित अभुक्त मूल शान्ति कर शुभ मुहूर्त्त में बालक का मुख देखना चाहिए।

अश्विनीपाद फलम्– 1 में पाद में पितृकष्ट, 2 पाद में सुख सम्पद, 3 या में मन्त्रिसम, 4र्थ में राजा तुल्य होता है। **रेवती पाद फलम्–** 1 में राजा तुल्य, 2य में मन्त्रितुल्य, 3य में सुखसम्पद, 4र्थ में पितृकष्ट। **मघा पाद फलम्–** प्रथम में मातृ कष्ट, 2य में पितृ कष्ट, 3य में सौख्य प्राप्ति, 4र्थ में धनमान विद्याप्राप्ति। **ज्येष्ठा पाद फलम्–** प्रथम में ज्येष्ठ भातृ कष्ट, 2य में अनुज क्लेश, 3य में मातृ कष्ट, 4र्थ में पितृकष्ट।

विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने का फल एवं

शरीर पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने पर उस समय जो वस्त्र पहने हों उन वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए। जन्म नक्षत्र, दग्धा-तिथि, मृत्युयोग, पापग्रहयुक्त लग्न एवं अष्टम चन्द्रमा में पल्ली पतन अरिष्ट फलदायक होता है, अतः उसकी शान्ति के लिए पञ्चगव्य से स्नान कर छायापात्रदान, महामृत्युञ्य का जप, होमादि करना श्रेयस्कर होता है।

पल्ली-पतन के शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र :- छिपकली के 1, 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12, 13 इन तिथियों, सोम, बुध, गुरू, शुक्र इन वारों तथा अश्वि., रोहि., पुन., पुष्य, उ. फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., धनि., शत., इन नक्षत्रों में गिरने पर शुभ फलदायक है। इनके अतिरिक्त तिथि, वार एवं नक्षत्रों में गिरने पर अशुभफलदायक है।

अंग विभागवश पल्ली-पतनफल जानने के लिए चक्र

अंग	फल	अंग	फल	अंग	फल	अंग	फल
मस्तक	राज्यलाभ	कण्ठ	शत्रुनाश	पृष्ठ मध्य	झगड़ा-झंझट	कटिप्रदेश	रोग-भय
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति	दक्षिण-भुज	मान-सम्मान	दक्षिण-पृष्ठ	सुखलाभ	दक्षिण जंघा	धन-हानि
नासिकाग्र	व्याधि	वाम-भुज	राज-भय	वाम-पृष्ठ	रोग-भय	वाम जंघा	पुत्र-लाभ
मुख-प्रदेश	मिष्ठान-भोजन	दक्षिण-स्कन्ध	सफलता	दक्षिण-हस्त	धन-लाभ	गुदा	रोग-भय
दक्षिण-कर्ण	आयु-वृद्धि	वाम-स्कन्ध	शत्रुभय	वाम-हस्त	धन-हानि	गुप्तांग	मित्र-प्राप्ति
वाम-कर्ण	भूषण लाभ	स्तर-प्रदेश	दौर्भाग्य	नाभि-प्रदेश	पुत्र-प्राप्ति	दक्षिण-पाद	यात्रा
				हृदय	यश-प्राप्ति	वाम-पाद	रोग भय

अंग स्फुरण फल :- शकुन की दृष्टि से शरीर के किसी भी भाग में अचानक स्फुरण हो जाता है। यह स्फुरण यदि निरन्तर लम्बे समय तक होता रहे तो वह वायु विकार से सम्बन्धित होता है। वह स्फुरण निष्फल होता है। यदि क्षणिक अंग स्फुरण हो, तो वह शुभाशुभ फल बोधक होता है। सामान्यतया स्त्री का वामांग एवं पुरूष का दक्षिणांग स्फुरण शुभ माना गया है। विस्तृत फल निम्न प्रकार ज्ञात करें।

अंग स्फुरण फल जानने के लिए चक्र

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक (सिर)	भूमिलाभ	भृकुटि	धन प्राप्ति	कण्ठ	भूषण प्राप्ति	पृष्ठ	पराजय	बाहू-प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति
ललाट	स्थान लाभ	नासिका	सुगन्ध लाभ	ग्रीवा	शत्रु भय	नाभि	स्त्रीनाश	गुप्तांग	प्रिय-प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शनलाभ	दक्षिण कण	आयु-वुद्धि	स्कन्ध	मित्र-समागम	कुक्षि	सुप्रीति	जंघा	हानिप्रद
कपोल	स्त्री सुख	वाम-कण	भूषण लाभ	वक्षः स्थल	विजय	कटि प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति	घटना	शत्रुसन्धि
भ्रुमध्य	सुख-प्राप्ति	अधर	प्रिय प्राप्ति	हृदय	इष्ट सिद्धि	हरत	धन-प्राप्ति	पाद	स्थान-प्राप्ति

छींक (छिक्का) विचार :-

कोई शुभ कार्य प्रारम्भ करते समय अथवा यात्रा करते समय छींक आने पर अपशकुन माना जाता है। इसका विचार भारत वर्ष में प्रायः सभी प्रदेशों में होता है इसके विषय में अनेक लोकोक्ति अथवा घाघ, भड्डली इत्यादि की किवदन्तियाँ मुहावरों के रूप में प्रचलित हैं।

संकेत में सारांश यह है कि सूँघने आदि पदार्थों के द्वारा ली गई बनावटी छींक निष्फल होती है। पीछे की छींक कुशलक्षेमकारक है। बाईं ओर की छींक सभी कार्य को सिद्ध करने वाली, सामने की छींक लड़ाई कराने वाली, दाहिनी ओर की छींक धन-नाश करने वाली, ऊँची छींक विजय देने वाली, नीची छींक भय करने वाली तथा अपनी छींक बहुत दुःख देने वाली होती है। कन्या, विधवा, मालिन, श्रोबिन, रजस्वला, वैश्या की छींक बहुत अशुभफल देने वाली होती है। यदि भोजन के अन्त में छींक आए तो दूसरे दिन प्रिय भोजन प्राप्त होता है।

स्न्श्रयावन्दनादि, शयन के समय, शौच के समय, दानकाल, भोजन के समय, बाईं ओर तथा पीछे की छींक शुभफल करने वाली होती है। छींक के विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, उनमें से प्रचलित उक्ति यहाँ दी जा रही हैं–

छींकत न्हइयै छींकत खइयै, छींकत जइयै सोय। छींकत पर घर कबहूँ न जइयै सब सोने की होय। एक नाक दो छींका। इनसे सगुन हात है नीका।।

सम्पादक परिचय

नाम	: डॉ. चन्द्रमौलि रैणा
माता/पिता	: श्रीमती शान्ति देवी, पं. रामेश्वर दत्त रैणा
जन्म स्थान	: पौराकोटला (शिवखोड़ी धाम), जिला रियासी (जम्मू कश्मीर)
शिक्षा	: शास्त्री, फलितज्योतिषाचार्य, सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, विद्यावारिधि (पीएच.डी.)
भाषाज्ञान	: संस्कृत, हिन्दी, इंग्लिश, डोगरी एवं पंजाबी
सेवावृत्ति	: केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणवीर परिसर, कोट भलवाल, जम्मू से सहाचार्य ज्योतिष विभाग से सेवानिवृत।
सम्मान	: महामहिम राज्यपाल महोदय माननीय लोकसभा सदस्यों तथा गणमान्य जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में अभूतपूर्व योगदान हेतु सम्मानित।
आलेख	: विभिन्न समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं में संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में आलेख प्रकाशित।
सम्पादन	: 'धर्म भास्कर' कैलेण्डर, श्रीराघवेन्द्र पञ्चाङ्गम्, ब्रह्मवाणी पत्रिका, कैलख पत्रिका (प्रधान सम्पादक), शास्त्रसौरभम् में सम्पादक एवं वृद्ध वसिष्ठसंहिता भाग 1-2 (सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक), श्री बाबा अमरनाथ वर्फानी जी की पूजा पद्धति (सम्पादक एवं संकलनकर्ता) 'कश्यपसंहिता' हिन्दी रूपान्तर सहित प्रकाशित, प्रकाशक - चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी (उ.प्र.)
समाजसेवा	: डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, चाणक्य चौक परेड एवं बावा कैलखदेव प्रबन्धक कमेटी जम्मू में सक्रिय भूमिका तथा श्री अमरनाथ जी श्राईन बोर्ड के भूतपूर्व सदस्य, सनातन धर्म पथ परिषद् प्रधान (जम्मू-कश्मीर), श्रीशिवखोड़ी श्राईन बोर्ड के सदस्य
संचालक	: श्रीराघवेन्द्र ज्योतिष संस्थान, जम्मू
सम्पर्क सूत्र	: 09419194230, 6005569931
ई मेल	: drcmraina@gmail.com

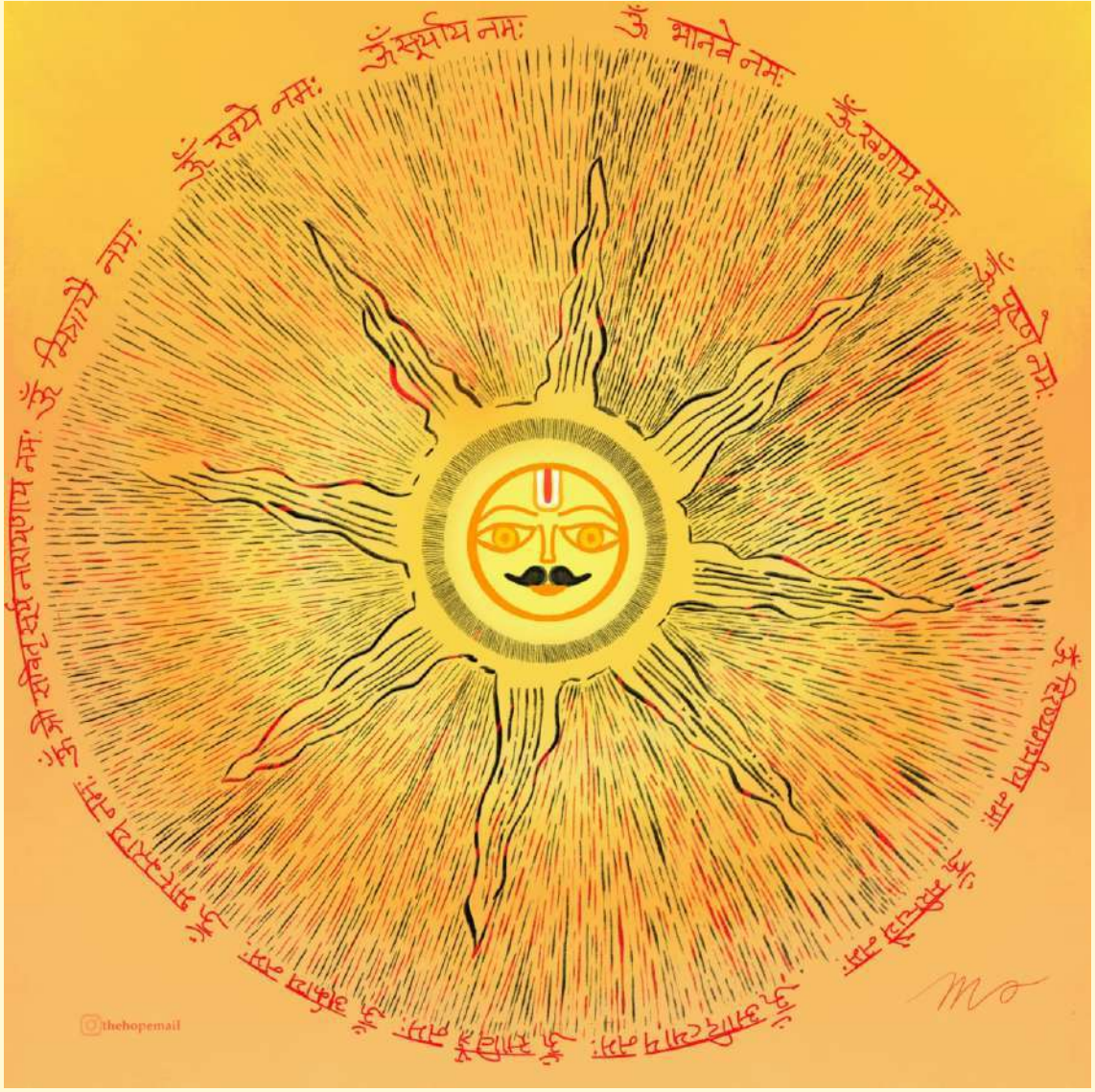

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।।

आप अज्ञान और अंधकार के नाशक, जडता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले हैं, आपका स्वरूप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले, सम्पूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप हैं, आपको नमस्कार है।

The artwork depicts the Sun that represents the guiding force and essence of this Panchang. The Sun is the symbol of Lord Shri Ram who we worship and consider as our inspiration. Shri Raghvendra Panchang is a mission dedicated to bringing Sanatan Dharma in everyday lives of people.

Artwork by : **Dr. Mahima Raina**
For more spiritual artwork, please check @thehopemail on Instagram